अंगसुत्ताणि

३

णायाधम्मकहाओ . उवासगदसाओ . अंतगडदसाओ
अणुत्तरोववाइयदसाओ . पण्हावागरणाइं . विवागसुयं

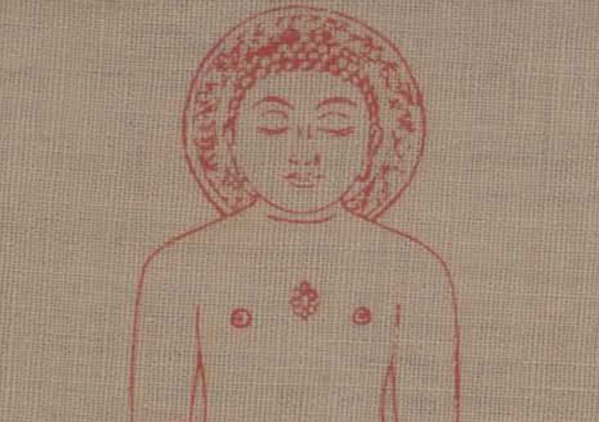

वाचना प्रमुख
आचार्य तुलसी

संपादक
मुनि नथमल

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भगवान् महावीर की पचीसवीं निर्वाण शताब्दी के उपलक्ष में

निग्गंथं पावयणं

अंगसुत्ताणि

३

नायाधम्मकहाओ • उवासगदसाओ •
अंतगडदसाओ • अणुत्तरोववाइयदसाओ •
पण्हावागरणाइं विवागसुयं

वाचना प्रमुख
आचार्य तुलसी

संपादक
मुनि नथमल

प्रकाशक
जैन विश्व भारती
लाडनूं (राजस्थान)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रबंध सम्पादक :
श्रीचन्द रामपुरिया,
निदेशक
आगम और साहित्य प्रकाशन
(जैन विश्व भारती)

आर्थिक सहायक
श्री रामलाल हंसराज गोलछा
विराटनगर (नेपाल)

प्रकाशन तिथि :
विक्रम संवत् २०३१
कार्तिक कृष्णा १३
(२५०० वां निर्वाण दिवस)

पृष्ठांक : ६२५

मूल्य : ८०/

मुद्रक :—
एस. नारायण एण्ड संस (प्रिंटिंग प्रेस)
७११७/१८, पहाड़ी धीरज, दिल्ली-६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ANGA SUTTĀNI

III

NAYĀDHAMMAKAHĀO. UWĀSAGADASĀO.
ANTAGADADASĀO. ANUTTAROWAWAIYADASAO.
PANHAWAGARANAIN. VIVĀGASUYAM.

(Original text Critically edited)

Vāćanā PRAMUKHA
ĀCĀRYA TULASI

EDITOR
MUNI NATHAMAL

Publisher
JAIN VISWA BHĀRATI
LADNUN (Rajasthan)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Managing Editor
Shreechand Rampuria.
Director :
Āgama and Sahitya Publication Dept.
JAIN VISHWA BHARATI, LADNUN

Financial Assistance
Sri Ramlal Hansraj Golchha
Biratnagar (Nepal)

V.S. 2031
Kārtic Kṛishnā 13
2500th Nirvaṇa Day

Pages 925

Rs. 80/-

Printers :
S. Narayan & Sons (Printing Press)
7117/18, Pahari Dhiraj,
Delhi-6

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समर्पण

पुट्ठो वि पण्णा-पुरिसो सुदक्खो,
आणा-पहाणो जणि जस्स निच्चं।
सच्चप्पओगे पवरासयस्स,
भिक्खुस्स तस्स प्पणिहाणपुव्वं॥

जिसका प्रज्ञा-पुरुष पुष्ट पटु,
होकर भी आगम-प्रधान था।
सत्य-योग में प्रवर चित्त था,
उसी भिक्षु को विमल भाव से।

विलोडियं आगमदुद्धमेव,
लद्धं सुलद्धं णवणीयमच्छं।
सज्झाय - सज्झाण - रयस्स निच्चं,
जयस्स तस्स प्पणिहाणपुव्वं॥

जिसने आगम-दोहन कर कर,
पाया प्रवर प्रचुर नवनीत।
श्रुत-सद्ध्यान लीन चिर चिन्तन,
जयाचार्य को विमल भाव से।

पवाहिया जेण सुयस्स धारा,
गणे समत्थे मम माणसे वि।
जो हेउभूओ स्स पवायणस्स,
कालुस्स तस्स प्पणिहाणपुव्वं॥

जिसने श्रुत की धार बहाई,
सकल संघ में मेरे मन में।
हेतुभूत श्रुत - सम्पादन में,
कालुगणी को विमल भाव से।

•

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अन्तस्तोष

अन्तस्तोष अनिर्वचनीय होता है उस माली का जो अपने हाथों से उप्त और सिंचित द्रुम-निकुंज को पल्लवित, पुष्पित और फलित हुआ देखता है, उस कलाकार का जो अपनी तूलिका से निराकार को साकार हुआ देखता है और उस कल्पनाकार का जो अपनी कल्पना को अपने प्रयत्नों से प्राणवान् बना देखता है। चिरकाल से मेरा मन इस कल्पना से भरा था कि जैन आगमों का शोध-पूर्ण सम्पादन हो और मेरे जीवन के बहुश्रमी क्षण उसमें लगे। संकल्प फलवान् बना और वैसा ही हुआ। मुझे केन्द्र मान मेरा धर्म-परिवार उस कार्य में संलग्न हो गया। अतः मेरे इस अन्तस्तोष में मैं उन सबको समभागी बनाना चाहता हूं, जो इस प्रवृत्ति में संविभागी रहे हैं। संक्षेप में वह संविभाग इस प्रकार है—

संपादक :		**मुनि नथमल**
	सहयोगी :	मुनि दुलहराज
पाठ-संशोधन :	,,	मुनि सुदर्शन
	,,	मुनि मधुकर
	,,	मुनि हीरालाल

संविभाग हमारा धर्म है। जिन-जिनने इस गुरुतर प्रवृत्ति में उन्मुक्त भाव से अपना संविभाग समर्पित किया है, उन सबको मैं आशीर्वाद देता हूं और कामना करता हूँ कि उनका भविष्य इस महान् कार्य का भविष्य बने।

आचार्य तुलसी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रकाशकीय

सन् १९६७ की बात है। आचार्यश्री बम्बई में विराज रहे थे। मैंने कलकत्ता से पहुचकर उनके दर्शन किए। उस समय श्री ऋषभदासजी रांका, श्रीमती इन्दु जैन, मोहनलालजी कठौतिया आदि आचार्यश्री की सेवा में उपस्थित थे और 'जैन विश्व भारती' को बम्बई के आस-पास किसी स्थान पर स्थापित करने पर चिन्तन चल रहा था। मैंने सुझाव रखा कि सरदारशहर में 'गांधी विद्या-मन्दिर' जैसा विशाल और उत्तम संस्थान है। 'जैन विश्व भारती' उसी के समीप सरदारशहर में ही क्यों न स्थापित की जाये? दोनों संस्थान एक दूसरे के पूरक होंगे। सुझाव पर विचार हुआ। श्री कन्हैयालालजी दूगड़ (सरदारशहर) को बम्बई बुलाया गया। सारी बातें उनके सामने रखी गई और निर्णय हुआ कि उनके साथ जाकर एक बार इसी दृष्टि से 'गांधी विद्या-मन्दिर' संस्थान को देखा जाए। निश्चित तिथि पर पहुंचने के लिए कलकत्ता से श्री गोपीचन्दजी चोपड़ा और मैं तथा दिल्ली से श्रीमती इन्दु जैन, लादूलालजी आछा सरदारशहर के लिए रवाना हुए। श्री कन्हैयालालजी दूगड़ दिल्ली से हम लोगों के साथ हुए। श्री रांकाजी बम्बई से पहुंचे। सरदारशहर में भावभीना स्वागत हुआ। श्री दूगड़जी ने 'गांधी विद्या-मन्दिर' की प्रबन्ध समिति के सदस्यों को भी आमन्त्रित किया। 'जैन विश्व भारती' सरदारशहर में स्थापित करने के विचार का उनकी ओर से भी हार्दिक स्वागत किया गया। सरदारशहर 'जैन विश्व-भारती' के लिए उपयुक्त स्थान लगा। आगे के कदम इसी ओर बढ़े।

आचार्यश्री संतगण व साध्वियों के वृन्द सहित कर्नाटक में नंदी पहाड़ी पर आरोहण कर रहे थे। आचार्यश्री ने बीच में पैर थामे और मुझ से कहा "जैन विश्वभारती के लिए प्रकृति की ऐसी सुन्दर गोद उपयुक्त स्थान है। देखो, कैसा सुन्दर शान्त वातावरण है।"

'जैन विश्व भारती' की योजना को कार्य-रूप में आगे बढ़ाने की दृष्टि से समाज के कुछ और विचारशील व्यक्ति भी नंदी पहाड़ी पर आए थे। श्री कन्हैयालालजी दूगड़ भी थे। (सरदार-शहर) प्रतिक्रमण के बाद का समय था। पहाड़ी की तलहटी में दीपक और आकाश में तारे जग-मगा रहे थे। आचार्यश्री गिरि-शिखर पर कांच महल में पूर्वाभिमुख होकर विराजित थे। मैं उनके सामने बैठा था। वचनबद्ध हुआ कि यदि 'जैन विश्व भारती' सरदारशहर में स्थापित होती है, तो उसके लिए मैं अपना जीवन लगाऊंगा। उस समय 'जैन विश्व भारती' की जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के एक विभाग के रूप में परिकल्पना की गई थी। महासभा ने स्वीकार किया और

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मैं उसका संयोजक चुना गया। सरदारशहर में स्थान के लिए श्री कन्हैयालालजी दूगड़ और मैं प्रयत्नशील हुए। आचार्यश्री ऊटी (उटकमण्ड) पधारे। वहां महासभा के सभापति श्री हनुमानमलजी बैंगाणी तथा अन्य पदाधिकारी भी उपस्थित थे। जैन विश्व भारती की स्थापना प्राकृतिक दृष्टि से साधना के अनुकूल रम्य और शान्त स्थान में होने की बात ठहरी। इस तरह नंदी गिरि की मेरी प्रतिज्ञा से मैं मुक्त हुआ, पर मन ने मुझे कभी मुक्त नहीं किया। आखिर 'जैन विश्व भारती' की मातृ-भूमि बनने का सौभाग्य सरदारशहर से ६६ मील दूर लाडनूं (राजस्थान) को प्राप्त हुआ, जो संयोग से आचार्यश्री का जन्म-स्थान भी है।

आचार्यश्री ने आगम-संशोधन का कार्य सं० २०११ की चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को हाथ में लिया। कुछ समय बाद उज्जैन में दर्शन किए। सं० २०१३ में लाडनूं में आचार्य श्री के दर्शन प्राप्त हुए। कुछ ही दिनों बाद सुजानगढ़ में दशवैकालिक सूत्र के अपने अनुवाद के दो फार्म अपने ढंग से मुद्रित कराकर सामने रखे। आचार्यश्री मुग्ध हुए। मुनिश्री नथमलजी ने फरमाया—"ऐसा ही प्रकाशन ईप्सित है।" आचार्यश्री की वाचना में प्रस्तुत आगम वैशाली से प्रकाशित हो, इस दिशा में कदम आगे बढ़े। पर अन्त में प्रकाशन कार्य महासभा से प्रारम्भ हुआ। आगम-सम्पादन की रूपरेखा इस प्रकार रही—

१. आगम-सुत्त ग्रन्थमाला : मूलपाठ, पाठान्तर, शब्दानुक्रम आदि सहित आगमों का प्रस्तुतीकरण।
२. आगम-अनुसन्धान ग्रन्थमाला : मूलपाठ, संस्कृत छाया, अनुवाद, पद्यानुक्रम, सूत्रानुक्रम तथा मौलिक टिप्पणियों सहित आगमों का प्रस्तुतीकरण।
३. आगम-अनुशीलन ग्रन्थमाला : आगमों के समीक्षात्मक अध्ययनों का प्रस्तुतीकरण।
४. आगम-कथा ग्रन्थमाला : आगमों से सम्बन्धित कथाओं का संकलन और अनुवाद।
५. वर्गीकृत-आगम ग्रन्थमाला : आगमों का संक्षिप्त वर्गीकृत रूप में प्रस्तुतीकरण।

महासभा की ओर से प्रथम ग्रंथमाला में—(१) दसवेआलियं तह उत्तरज्झयणाणि, (२) आयारो तह आयारचूला, (३) निसीहज्झयणं, (४) उववाइयं और (५) समवाओ प्रकाशित हुए। रायपसेणइयं एवं सूयगडो (प्रथम श्रुतस्कन्ध) का मुद्रण-कार्य तो प्रायः समाप्त हुआ पर वे प्रकाशित नहीं हो पाए।

दूसरी ग्रन्थमाला में—(१) दसवेआलियं एवं (२) उत्तरज्झयणाणि (भाग १ और भाग २) प्रकाशित हुए। समवायांग का मुद्रण-कार्य प्रायः समाप्त हुआ पर प्रकाशित नहीं हो पाया।

तीसरी ग्रंथमाला में दो ग्रंथ निकल चुके हैं: (१) दशवैकालिक : एक समीक्षात्मक अध्ययन और (२) उत्तराध्ययन : एक समीक्षात्मक अध्ययन।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चौथी ग्रंथमाला में कोई ग्रंथ प्रकाशित नहीं हुआ।

पाँचवीं ग्रंथमाला में दो ग्रंथ निकल चुके हैं : (१) दशवैकालिक वर्गीकृत (धर्म-प्रज्ञप्ति ख. १) और (२) उत्तराध्ययन वर्गीकृत (धर्म-प्रज्ञप्ति ख. २)।

उक्त प्रकाशन-कार्य में सरावगी चेरिटेबल फण्ड, कलकत्ता (ट्रस्टी रामकुमारजी सरावगी, गोविंदलालजी सरावगी एवं कमलनयनजी सरावगी) का बहुत बड़ा अनुदान महासभा को रहा। अनुदान स्वर्गीय महादेवलालजी सरावगी एवं उनके पुत्र पन्नालालजी सरावगी की स्मृति में प्राप्त हुआ था। भाई पन्नालालजी के प्रेरणात्मक शब्द तो आज भी कानों में ज्यों-के-त्यों गूंज रहे हैं— "धन देने वाले तो मिल सकते हैं, पर जो इस प्रकाशन-कार्य में जीवन लगाने का उत्तरदायित्व लेने को तैयार हैं, उनकी बराबरी कौन कर सकेगा ?" उन्हीं तथा समाज के अन्य उत्साहवर्धक सदस्यों के स्नेह-प्रदान से कार्य-दीपक जलता रहा।

कार्य के द्वितीय चरण में श्री रामलालजी हंसराजजी गोलछा (विराटनगर) ने अपना उदार हाथ प्रसारित किया।

आचार्यश्री की वाचना में सम्पादित आगमों के संग्रह और मुद्रण का कार्य अब 'जैन विश्व भारती' के अंचल से हो रहा है। प्रथम प्रकाशन के रूप में ११ अंगों को तीन खण्डों में 'अंगसुत्ताणि' के नाम से प्रकाशित किया जा रहा है :

प्रथम खण्ड में आचार, सूत्रकृत्, स्थान, समवाय—ये प्रथम चार अंग हैं।

दूसरे खण्ड में भगवती—पाँचवाँ अंग है।

तीसरे खण्ड में ज्ञाताधर्मकथा, उपासकदशा, अन्तकृतदशा, अनुत्तरोपपातिकदशा, प्रश्न-व्याकरण और विपाक—ये ६ अंग हैं।

इस तरह ग्यारह अंगों का तीन खण्डों में प्रकाशन 'आगम-सुत्त ग्रथमाला' की योजना को बहुत आगे बढ़ा देता है।

ठाणांग सानुवाद संस्करण का मुद्रण-कार्य भी द्रुतगति से हो रहा है और वह आगम-अनुसन्धान ग्रंथमाला के तीसरे ग्रंथ के रूप में प्रस्तुत होगा।

केवल हिन्दी अनुवाद के संस्करण के रूप में 'दशवैकालिक और उत्तराध्ययन' का प्रकाशन हुआ है; जो एक नई योजना के रूप में है। इसमें सभी आगमों का केवल हिन्दी अनुवाद प्रकाशित करने का निर्णय है।

दशवैकालिक एवं उत्तराध्ययन मूल पाठ मात्र को गुटकों के रूप में दिया जा रहा है।

'जैन विश्व भारती' की इस अंग एवं अन्य आगम प्रकाशन योजना को पूर्ण करने में जिन महानुभावों के उदार अनुदान का हाथ रहा है, उन्हें संस्थान की ओर से हार्दिक धन्यवाद है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुद्रण-कार्य में एस० नारायण एण्ड संस प्रिंटिंग प्रेस के मालिक श्री नारायणसिंह जी का विनय, श्रद्धा, प्रेम और सौजन्य से भरा जो योग रहा उसके लिए हम कृतज्ञता प्रगट किए बिना नहीं रह सकते। मुद्रण-कार्य को द्रुतगति देने में श्री देवीप्रसाद जायसवाल (कलकत्ता) ने रात-दिन सेवा देकर जो सहयोग दिया, उसके लिए वे धन्यवाद के पात्र हैं। इस सम्बन्ध में श्री मन्नालाल जी जैन (भूतपूर्व मुनि) की समर्पित सेवा भी स्मरणीय है।

इस अवसर पर मैं आदर्श साहित्य संघ के संचालकों तथा कार्यकर्त्ताओं को भी नहीं भूल सकता। उन्होंने प्रारम्भ से ही इस कार्य के लिए सामग्री जुटाने, धारने तथा अन्यान्य व्यवस्थाओं को क्रियान्वित करने में सहयोग दिया है। आदर्श साहित्य संघ के प्रबन्धक श्री कमलेश जी चतुर्वेदी सहयोग में सदा तत्पर रहे हैं, तदर्थ उन्हें धन्यवाद है।

'जैन विश्व भारती' के अध्यक्ष श्री खेमचन्दजी सेठिया, मंत्री श्री सम्पत्तरायजी भूतोड़िया तथा कार्य समिति के अन्यान्य समस्त बन्धुओं को भी इस अवसर पर धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता, जिनका सतत सहयोग और प्रेम हर कदम पर मुझे बल देता रहा।

इस खण्ड के प्रकाशन के लिए विराटनगर (नेपाल) निवासी श्री रामलालजी हंसराजजी गोलछा से उदार आर्थिक अनुदान प्राप्त हुआ है, इसके लिए संस्थान उनके प्रति कृतज्ञ है।

सन् १९७३ में मैं जैन विश्व-भारती के आगम और साहित्य प्रकाशन विभाग का निदेशक चुना गया। तभी से मैं इस कार्य की व्यवस्था में लगा। आचार्यश्री यात्रा में थे। दिल्ली में मुद्रण की व्यवस्था बैठाई गई। कार्यारंभ हुआ, पर टाइप आदि की व्यवस्था में विलंब होने से कार्य में द्रुतगति नहीं आई। आचार्यश्री का दिल्ली पधारना हुआ तभी यह कार्य द्रुतगति से आगे बढ़ा। स्वल्प समय में इतना आगमिक साहित्य सामने आ सका उसका सारा श्रेय आगम संपादन के वाचनाप्रमुख आचार्यश्री तुलसी तथा संपादक-विवेचक मुनि श्री नथमलजी को है। उनके सहकर्मी मुनि श्री सुदर्शनजी, मधुकरजी, हीरालालजी तथा दुलहराजजी भी उस कार्य के श्रेयोभागी हैं।

ब्रह्मचर्य आश्रम में ब्रह्मचारी का एक कर्त्तव्य समिधा एकत्रित करना होता है। मैंने इससे अधिक कुछ और नहीं किया। मेरी आत्मा हर्षित है कि आगम के ऐसे सुन्दर संस्करण 'जैन विश्व भारती' के प्रारंभिक उपहार के रूप में उस समय जनता के कर-कमलों में आ रहे हैं, जबकि जगत्वंद्य श्रमण भगवान् महावीर की २५००वीं निर्वाण तिथि मनाने के लिए सारा विश्व पुलकित है।

४६८४, अंसारी रोड़
२१, दरियागंज
दिल्ली-६

श्रीचन्द रामपुरिया
निदेशक
आगम और साहित्य प्रकाशन
जैन विश्व भारती

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सम्पादकीय

ग्रन्थ-बोध—

आगम सूत्रों के मौलिक विभाग दो हैं—अंग-प्रविष्ट और अंग-बाह्य। अंग-प्रविष्ट सूत्र महावीर के मुख्य शिष्य गणधर द्वारा रचित होने के कारण सर्वाधिक मौलिक और प्रामाणिक माने जाते हैं। उनकी संख्या बारह है—१. आचारांग २. सूत्रकृतांग ३. स्थानांग ४. समवायांग ५. व्याख्याप्रज्ञप्ति ६. ज्ञाताधर्मकथा ७. उपासकदशा ८. अंतकृतदशा ६. अनुत्तरोपपातिकदसा १०. प्रश्नव्याकरण ११. विपाकश्रुत १२. दृष्टिवाद। बारहवां अंग अभी प्राप्त नहीं है। शेष ग्यारह अंग तीन भागों में प्रकाशित हो रहे हैं। प्रथम भाग में चार अंग हैं—१. आचारांग २. सूत्रकृतांग ३. स्थानांग और ४. समवायांग, दूसरे भाग में केवल व्याख्याप्रज्ञप्ति और तीसरे भाग में शेष छह अंग।

प्रस्तुत भाग अंग साहित्य का तीसरा भाग है। इसमें नायाधम्मकहाओ, उवासगदसाओ, अंतगडदसाओ, अणुत्तरोववाइयदसाओ, पण्हावागरणाइं और विवागसुयं—इन ६ अंगों का पाठान्तर सहित मूल पाठ है। प्रारम्भ में संक्षिप्त भूमिका है। विस्तृत भूमिका और शब्द-सूची इसके साथ सम्बद्ध नहीं है। उनके लिए दो स्वतन्त्र भागों की परिकल्पना है। उसके अनुसार चौथे भाग में ग्यारह अंगों की भूमिका और पांचवें भाग में उनकी शब्द-सूची होगी।

प्रस्तुत पाठ और सम्पादन-पद्धति

हम पाठ-संशोधन की स्वीकृत पद्धति के अनुसार किसी एक ही प्रति को मुख्य मानकर नहीं चलते, किन्तु अर्थ-मीमांसा, पूर्वापरप्रसंग, पूर्ववर्ती पाठ और अन्य आगम-सूत्रों के पाठ तथा वृत्तिगत व्याख्या को ध्यान में रखकर मूलपाठ का निर्धारण करते हैं। लेखनकार्य में कुछ त्रुटियां हुई हैं। कुछ त्रुटियां मौलिक सिद्धान्त से सम्बद्ध हैं। वे कब हुई यह निश्चय-पूर्वक नहीं कहा जा सकता। पाठ के संक्षेप या विस्तार करने में हुई हैं, यह संभावना की जा सकती है। 'नायाधम्मकहाओ' १।५।५६ में बारह व्रत और पांच महाव्रतों का उल्लेख है। स्थानांग ४।१३६, उत्तराध्ययन २३।२३-२८ के अनुसार यह पाठ शुद्ध नहीं है। बाईस तीर्थंकरों के युग में चातुर्याम धर्म होता है, पांच महाव्रत और द्वादशव्रत रूप धर्म नहीं होता। ऐसा प्रतीत होता है कि अगार-विनय और अनगार-विनय का पाठ ओवाइय सूत्र के अगारधर्म और अनगारधर्म के आधार पर पूरा किया गया है। इसलिए जो वर्णन वहां था वह यहां आ गया। हमने इस पाठ की पूर्ति रायपसेणइय सूत्र के आधार

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पर की है, देखें—नायाधम्मकहाओ पृष्ठ १२२ का सातवां पाद-टिप्पण। इस प्रकार के आलोच्य पाठ नायाधम्मकहाओ १।१२।३६, १।१६।२१, १।१६।४६ में भी मिलता है। प्रश्नव्याकरण सूत्र १०।४ में 'कायवर' पाठ मिलता है। वृत्तिकार ने इसका अर्थ 'काचवर'—प्रधान काच दिया है, किन्तु यह पाठ शुद्ध नहीं है। लिपि-दोष के कारण मूलपाठ विकृत हो गया। निशीथाध्ययनके ग्यारहवें उद्देशक (सूत्र १) में 'कायपायाणिवा और वइरपायाणिवा' दो स्वतन्त्र पाठ हैं। वहां भी पात्र का प्रकरण है और यहां भी पात्र का प्रकरण है। काँचपात्र और वज्रपात्र—दोनों मुनि के लिए निषिद्ध हैं। इस आधार पर यहां भी 'वर' के स्थान पर 'वइर' पाठ का स्वीकार औचित्यपूर्ण है। लिपिकाल में इस प्रकार का वर्ण-विपर्यय अन्यत्र भी हुआ है। 'जात' के स्थान पर 'जाव' तथा 'पचंकमण' के स्थान पर 'एवंकमण' पाठ मिलता है। पाठ-संशोधन में इस प्रकार के अनेक विचित्र पाठ मिलते हैं। उनका निर्धारण विभिन्न स्रोतों से किया जाता है।

प्रतिपरिचय

१. नायाधम्मकहाओ—

क. ताडपत्रीय (फोटोप्रिंट) मूलपाठ—

यह प्रति जेसलमेर भंडार से प्राप्त है। यह अनुमानतः बारहवीं शताब्दी की है।

ख. नायाधम्मकहाओ (पंचपाठी) मूल पाठ वृत्ति सहित—

यह प्रति गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर की है। पत्र के चारों ओर हासियों (Margin) में वृत्ति लिखी हुई है। इसके पत्र १८६ तथा पृष्ठ ३७२ हैं। प्रत्येक पत्र १०$\frac{३}{४}$ इंच लम्बा तथा ४$\frac{३}{४}$ इंच चौड़ा है। पत्र में मूलपाठ की १ से १३ तक पंक्तियां हैं। प्रत्येक पंक्ति में ३२ से ३८ तक अक्षर हैं। प्रति स्पष्ट और कलात्मक है। बीच में तथा इधर-उधर वापिकाएं हैं। यह अनुमानतः १४-१५ शताब्दी की होनी चाहिए। प्रति के अंत में टीकाकार द्वारा उद्धृत प्रशस्ति के ११ श्लोक हैं। उनमें अन्तिम श्लोक यह है—

एकादशसु गतेष्वथ विंशत्यधिकेषु विक्रमसमानां।
अणहिलपाटकनगरे भाद्रवद्वितीयां पज्जुसणसिद्धयं ॥१॥

समाप्तेयं ज्ञाताधर्मप्रदेशटीकेति ॥छ॥ ४२५५ ग्रंथाग्रं ॥ वृत्ति। एवं सूत्र वृत्ति ६७५५ ग्रंथाग्रं ॥१॥छ॥

ग. नायाधम्मकहाओ (मूलपाठ)

यह प्रति गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर की है। इसके पत्र ११० तथा पृष्ठ २२० हैं। प्रत्येक पत्र १०$\frac{१}{४}$ इंच लम्बा तथा ४$\frac{१}{२}$ इंच चौड़ा है। प्रत्येक पत्र में १५ पंक्तियां हैं और प्रत्येक पंक्ति में ४८ से ५३ तक अक्षर हैं। प्रति जीर्ण-सी है। बीच में बावड़ी है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लिपि संवत् १५५४ है। अंतिम प्रशस्ति में लिखा है—संवत् १५५४ वर्षे प्रथम श्रावण वदि २ रवौ। श्री श्री श्री शीरोही नगरे। राया राउ श्रीजगमालराज्ये ॥ श्रीत पागच्छे गच्छनायकश्रीसुमतिसाधसूरि। तत्पट्टे श्रीहेमविमलसूरिराज्ये। महोपाध्याय श्रीअनंत-हंसगणीनां उपदेशेन ॥ साह श्री सूरा लिखापितं ॥ जोसी पोपा लिखितं ॥ भ्राति उज्जल संजुक्त घीआ लिखापितं ॥छ॥छ॥१ ॥ इसके आगे १२ श्लोक लिखे हुए हैं।

घ. टब्बा

यह प्रति १२वें अध्ययन से आगे काम में ली गई है। •

२. उवासगदसाओ—

क. उवासगदसाओ—मूल पाठ (ताडपत्रीय फोटो प्रिंट)—

इसकी पत्र संख्या २० व पृष्ठ ४० है। पत्र क्रमांक संख्या १८२ से २०२ तक है। फोटो प्रिंट पत्र संख्या ६ है व एक पत्र में ८ पृष्ठों का फोटो है। इसकी लम्बाई १४ इंच, चौड़ाई ३/४ इंच है। प्रत्येक पत्र में ४ से ६ तक पंक्तियां व प्रत्येक पंक्ति में ४५ के करीब अक्षर हैं।

प्रति के अन्त में 'ग्रन्थ ८१२' इतना ही लिखा हुआ है। संवत् वगैरह नहीं है पर विपाक सूत्र पत्र संख्या २८५ में लिपि संवत् ११८६ है। अतः उसके आधार पर यह ११८६ से पहले की ही मालूम पड़ती है। •

ख. उवासगदसाओ—टब्बेयुक्त पाठ (हस्तलिखित)—

यह प्रति गधैया पुस्तकालय सरदारशहर की है। इसके पत्र ३६ तथा पृष्ठ ७२ हैं। प्रत्येक पत्र में पाठ की आठ पंक्तियां व प्रत्येक पंक्ति में करीब ५२ अक्षर हैं। पाठ के नीचे राजस्थानी में अर्थ लिखा हुआ है। प्रत्येक पृष्ठ १० इंच लम्बा व ४१/४ इंच चौड़ा है। प्रति के अन्त में लेखक की निम्न प्रशस्ति है—

संवत् १७७८ वर्षे मिति माघमासे कृष्णपक्षे पंचमीतिथौ बुधवारे मुनिना सिवेना-लेखि स्ववाचनाय श्रीमत्फतेपुरमध्ये श्रीरस्तु कल्याणमस्तु लेखकपाठकयोः श्रीः। •

३. अंतगडदसाओ—

क. ताडपत्रीय (फोटो प्रिंट)। पत्र संख्या २०३ से २२२ तक। विपाक सूत्र के अंत में (पत्र संख्या २८५ में) लिपि संवत् ११८६ आश्विन सुदि ३ है। अतः क्रमानुसार पत्रों से यह प्रति भी ११८६ से पहले की होनी चाहिए। •

ख. हस्तलिखित—गधैया पुस्तकालय, सरदाशहर से प्राप्त तीन सूत्रों की संयुक्त प्रति (उवासगदशा, अंतगड, अणुत्तरोववाइय) परिचय—देखें अणुत्तरोववाइय 'ख' प्रति—लेखन• संवत् १४६५ है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ग. हस्तलिखित—गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर से प्राप्त।

यह प्रति पंचपाठी है। इसके पत्र २६ तथा पृष्ठ ५२ हैं। प्रत्येक पृष्ठ में १३ पंक्तिया तथा प्रत्येक पंक्ति में ४२ से ४५ तक अक्षर हैं। प्रति की लम्बाई १०$\frac{3}{4}$ इंच तथा चौड़ाई ४$\frac{3}{4}$ इंच है। अक्षर बड़े तथा स्पष्ट हैं। प्रति 'तकार' प्रधान तथा अपठित होने के कारण कहीं-कहीं अशुद्धियां भी हैं। प्रति के अंत में लेखन संवत् नहीं है। केवल इतना लिखा है—॥छ॥ ग्रंथाग्रं ८६० ॥०॥ ॥०॥ पुण्यरत्नसूरीणा ॥

•

घ. यह प्रति गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर से प्राप्त है। इसके पत्र २० हैं। प्रत्येक पत्र में पाठ की पांच पंक्तियां हैं। प्रत्येक पंक्ति के बीच में टब्बा लिखा हुआ है। प्रति सुन्दर लिखी हुई है। पत्र की लम्बाई १० इंच व चो० ४$\frac{1}{2}$ इंच है। प्रति के अंत में तीन दोहे लिखे हुए हैं।

थली हमारौ देश है, रिणी हमारो ग्राम।
गोत्र वंश है माहातमा, गणेश हमारो नाम ॥१॥
गणेश हमारा है पिता, मैं सुत मुन्नीलाल।
बड़ो गच्छ है खरत्तरो, उजियागर पोसाल ॥२॥
बीकानेर ब्रहमान है, राजपुतानां नाम।
जंगलधर बादस्या, गंगासिंहजी नाम ॥३॥
श्रीरस्तु ॥छ॥ कल्याणमस्तु ॥छ॥

•

४. अणुत्तरोववाइयदसाओ—

क. ताडपत्रीय (फोटो प्रिंट)। पत्र संख्या २२३ से २२८ तक। विपाक सूत्र पत्र संख्या २८५ में लिपि संवत् ११८६ आश्विन सुदि ३ है। अतः क्रमानुसार यह प्रति ११८६ से पहले की है।

•

ख. गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर से प्राप्त तीन सूत्रों की (उपासकदशा, अन्तकृत और अनुत्तरोपपातिक) संयुक्त प्रति है। इसके पत्र १५ तथा पृष्ठ ३० हैं। प्रत्येक पत्र १३$\frac{1}{2}$ इंच लम्बा तथा ५$\frac{1}{2}$ इंच करीब चौड़ा है। प्रत्येक पत्र में २३ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में करीब ८२ अक्षर हैं। प्रति पठित तथा स्पष्ट लिखी हुई है। प्रति के अन्त में लेखक की निम्नोक्त प्रशस्ति है। उसके अनुसार यह प्रति १४९५ की लिखी हुई है :—

ऊकेशवंशो जयति प्रशंसापदं सुपर्वा बलिदत्तशोभः।
डागाभिधा तत्र समस्ति शाखा पात्रावली वारितलोकतापा ॥१॥
मुक्ताफलतुलां बिभ्रत् सद्वृत्तः सुगुणास्पदं।
तस्यां श्रीशालभद्राख्यः सम्यग्गुरुचिरजायत ॥२॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तदन्वयस्याभरणं बभूव वांगाभिधानः सुविशुद्धबुद्धिः ।
विवेकसत्संगतिलोचनाभ्यां दृष्ट्वा सुमार्गं य उरीचकार ॥३॥
तदंगजन्माजनि वाहडाख्यः सद्धर्मकर्मार्जनबद्धकक्षः ।
वक्षो यदीयं गुरुदेवभक्तिरलंचकाराब्जमिवालिराजी ॥४॥
क्रमेण तद्वंशविशालकेतुः कर्मावधिः श्रावकपुंगवोभूत् ।
चित्रं कलावानपि यः प्रकामं बुधप्रमोदार्पणहेतुरुच्चैः ॥५॥
तदंगभूरभूत्साधु महणो द्रुहिणोपमः ।
राजहंसगतिः शश्वच्चतुराननतां दधत् ॥६॥
तस्यार्हदंह्रियुगलाब्जमधुव्रतस्य यात्रादिभूरिसुकृतोच्चयकारकस्य ।
आसीदसामयशसः किल माल्हणाद्या देविप्रिया प्रणयिनी गिरिजेव शंभोः ॥७॥
तत्कुक्षिप्रभवावभुवुरभितोप्युद्योतयंतः कुलं,
चत्वारस्तनया नयार्जितधना नाम्यर्थना भीरवः ।
आद्यस्तत्र कुमारपाल इति विख्यातः परो वर्द्धन-
स्तार्त्तीयस्त्रिभुवाभिधस्तदपरो गेलाह्वयोमा भुवि ॥८॥
चत्वारोपि व्यधुरचरितां मर्त्यधात्रीरुहस्ते,
स्वौदार्येणातनुधनभृतो बांधवा धर्मकर्म ।
अन्योन्यं स्पर्द्धयेव प्रतिदिनमनयास्तेषु गेलाख्य भार्या,
गंगा देवीति गंगावदमलहृदयास्तीह जैनांह्रिलीना ॥९॥
तत्कुक्षिभूः श्रावक ऊदराज, आद्यो द्वितीयः किल बूट नामा ।
द्वावप्यभूतां गुरुदेवभक्तौ मंदोदरी नाम सुता तथास्ति ॥१०॥
ऊदाख्यस्य सभीरीति माऊ बूटस्य च प्रिया ।
आसधरो मंडनश्च तयो पुत्रौ यथाक्रमम् ॥११॥
अमुना परिवारेण, सारेण सहिता शुभा ।
गंगादेवी गुरोर्वक्त्रादुपदेशामृतं पपौ ॥१२॥
आबाल्याद्धर्मकर्माणि तत्वान्यसौ निरंतरं ।
एकादशांगसूत्राणि लेखयामास हर्षतः ॥१३॥
विजयिनि खरतरगच्छे जिनभद्रसूरिसाम्राज्ये ।
गुण[३] निधि[९] 'वार्द्धींदु'[१४] मिते विक्रमभूपाद् व्रजति वर्षे ॥१४॥
गंगादेवी सुतोपेता, लेखयित्वांगपुस्तकं ।
दत्तेस्म श्रीतपोरत्नोपाध्यायेभ्यः प्रमोदतः ॥१५॥
॥छ॥ श्रीः ॥

ग. हस्तलिखित प्रति गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर से प्राप्त । इसके पत्र ९ तथा पृष्ठ १८ हैं । प्रत्येक पत्र में ११ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में ३५ से ४० तक अक्षर हैं । प्रति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

की लम्बाई १०$\frac{१}{४}$ इंच तथा चौड़ाई ४$\frac{१}{४}$ इंच है। अक्षर बड़े तथा स्पष्ट हैं। प्रति शुद्ध तथा 'त' प्रधान है। अंत में लेखन-संवत् तथा लिपिकर्ता का नाम नहीं है केवल निम्नोक्त वाक्य हैं--

॥छ॥ अणुत्तरोववाइयदशांगं नवमं अंगं समत्तं छ॥ श्रीः श्रीः श्रीः श्रीः श्रीः श्रीः छ छः प्रति का अनुमानित समय १६०० है।

५. पण्हावागरणाइं—

क. ताडपत्रीय (फोटो प्रिंट) मूलपाठ--

पत्र संख्या २२८ से २५६

ख. पंचपाठी। हस्तलिखित अनुमानित संवत् १२वीं सदी का उत्तरार्ध।

यह प्रति गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर की है। इसके पत्र ६८ हैं। प्रत्येक पत्र १०×४$\frac{३}{४}$ इंच है। मूलपाठ की पंक्तियां १ से १२ तथा पंक्ति में लगभग २३ से ३५ अक्षर हैं। चारों ओर वृत्ति तथा बीच में बावड़ी है। अन्तिम प्रशस्ति की जगह--
ग्रंथाग्र १२५० शुभं भवतु कल्याणमस्तु॥ लिखा है। लेखन कर्ता तथा लिपि-संवत् का उल्लेख नहीं है किन्तु अनुमानतः यह प्रति १३वीं शताब्दी की होनी चाहिए।

ग. त्रिपाठी (हस्तलिखित)--

गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर से प्राप्त। इसके पत्र १११ हैं। प्रत्येक पत्र १०×४$\frac{१}{४}$ इंच है। मूल पाठ की पंक्तियां १ से ८ तथा प्रत्येक पंक्ति में ३६ से ४६ तक लगभग अक्षर हैं। ऊपर नीचे दोनों तरफ वृत्ति तथा बीच में कलात्मक बावड़ी है। प्रति के उत्तरार्ध के बीच बीच के कई पन्ने लुप्त हैं। अंत में सिर्फ ग्रंथाग्र १२५० ।छ॥ श्री ॥ छ॥०॥ लिखा है। लिपि संवत् अनुमानतः १६वीं शताब्दी होना चाहिए।

घ. मूलपाठ (सचित्र)--

पूनमचंद दुधोड़िया, छापर द्वारा प्राप्त। इसके पत्र २७ हैं। प्रत्येक पत्र १२×५ इंच है। प्रत्येक पत्र में १५ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में ५१ से ६० तक अक्षर हैं। बीच में बावड़ी है तथा प्रथम दो पत्रों में सुनहरी कार्य किए हुए भगवान् महावीर और गौतम स्वामी के चित्र हैं। लेखन संवत् नहीं है पर यह प्रति अनुमानतः १५७० के लगभग की होनी चाहिए। अशुद्धि बहुल है।

च. मूलपाठ तथा टब्बा की प्रति---

गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर से प्राप्त। पत्र संख्या ८३।

छ. यह प्रति वर्तमान में जैन विश्व भारती, लाडनूं में है। इसके पत्र १०३ तथा पृष्ठ २०६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

है। बालावबोध पंचपाठी। पंक्तियां नीचे में १ ऊपर में ११ तक हैं। अक्षर २८ से ३५ तक हैं। लेखन संवत् १६६७। लेखक सुदर्शन। प्रति काफी शुद्ध है। •

६. विवागसुयं—

क. मदनचन्दजी गोठी सरदारशहर द्वारा प्राप्त (ताडपत्रीय फोटो प्रिंट) २६० से २८५ तक। (मुलपाठ) पंक्तियां ५ से ६ तक। कुछ पंक्तियां अधूरी तथा कुछ अस्पष्ट हैं। प्रति प्रायः शुद्ध है। लेखन संवत् ११८६ आश्विन सुदि ३ सोमवार। पुष्पिका काफी लम्बी है पर अस्पष्ट है। प्रति की लम्बाई १४ इंच तथा चौड़ाई १$\frac{3}{4}$ इंच है और तीन कोष्ठकों में लिखी हुई है। •

ख. **मूलपाठ—**

यह प्रति गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर की है। इसके पत्र ३२ तथा पृष्ठ ६४ हैं। पत्रों की लम्बाई १०$\frac{3}{4}$ तथा चौड़ाई ४$\frac{1}{2}$ इंच है। प्रत्येक पत्र में १५ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में ४० से ४५ तक अक्षर हैं। कहीं-कहीं भाषा का अर्थ लिखा हुआ है। प्रति प्रायः शुद्ध है। अन्तिम प्रशस्ति में लिखा है:—

शुभं भवतु लेखकपाठकयोः ।। संवत् १६३३ वर्षे आसो वदि ८ रवि लिखितं ।छ।। : । •

ग. मूलपाठ—

यह प्रति हनूतमलजी मांगीलालजी बेंगानी बीदासर से प्राप्त हुई। इसके पत्र ३५ तथा पृष्ठ ७० हैं। प्रत्येक पत्र ११$\frac{1}{2}$ इंच लम्बा तथा ४$\frac{1}{2}$ इंच चौड़ा है। प्रत्येक पत्र में १२ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में ४५ से ४९ तक अक्षर हैं। प्रति अशुद्धि बहुल है। अन्तिम प्रशस्ति में—

एक्कारसयं अंगं समत्तं ।। ग्रंथाग्र १२१६ ।। टीका ९०० एतस्या ।। लिपि संवत् नहीं है, पर पत्रों की जीर्णता तथा अक्षरों की लिखावट से यह प्रति करीब ४०० वर्ष पुरानी होनी चाहिए। •

वृ. एम० सी मोदी तथा वी० जी० चोकसी द्वारा सम्पादित तथा गुर्जरग्रंथरत्न कार्यालय, अहमदाबाद द्वारा प्रकाशित प्रथम संस्करण १९३५, 'विवागसुयं।

सहयोगानुभूति

जैन-परम्परा में वाचना का इतिहास बहुत प्राचीन है। आज से १५०० वर्ष पूर्व तक आगम की चार वाचनाएं हो चुकी हैं। देवर्द्धिगणी के बाद कोई सुनियोजित आगम-वाचना नहीं हुई। उनके वाचना-काल में जो आगम लिखे गए थे, वे इस लम्बी अवधि में बहुत ही अव्यवस्थित हो गए। उनकी पुनर्व्यवस्था के लिए आज फिर एक सुनियोजित वाचना की अपेक्षा थी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आचार्यश्री तुलसी ने सुनियोजित सामूहिक वाचना के लिए प्रयत्न भी किया था, परन्तु वह पूर्ण नहीं हो सका। अन्ततः हम इसी निष्कर्ष पर पहुंचे कि हमारी वाचना अनुसन्धानपूर्ण, तटस्थ-दृष्टि-समन्वित तथा सपरिश्रम होगी तो वह अपने आप सामूहिक हो जाएगी। इसी निर्णय के आधार पर हमारा यह आगम-वाचना का कार्य प्रारम्भ हुआ।

हमारी इस वाचना के प्रमुख आचार्यश्री तुलसी हैं। वाचना का अर्थ अध्यापन है। हमारी इस प्रवृत्ति में अध्यापन-कर्म के अनेक अंग हैं—पाठ का अनुसंधान, भाषान्तरण, समीक्षात्मक अध्ययन आदि-आदि। इन सभी प्रवृत्तियों में आचार्यश्री का हमें सक्रिय योग, मार्ग-दर्शन और प्रोत्साहन प्राप्त है। यही हमारा इस गुरुतर कार्य में प्रवृत्त होने का शक्ति-बीज है।

मैं आचार्यश्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित कर भार-मुक्त होऊं, उसकी अपेक्षा अच्छा है कि अग्रिम कार्य के लिए उनके आशीर्वाद का शक्ति-संबल पा और अधिक भारी बनूं।

प्रस्तुत पाठ के सम्पादन में मुनि सुदर्शनजी, मुनि मधुकरजी और मुनि हीरालालजी का पर्याप्त योग रहा है। मुनि बालचन्द्रजी, इस कार्य में क्वचित् संलग्न रहे हैं। प्रति-शोधन में मुनि दुलहराजजी का पूर्ण योग मिला है। इसका ग्रंथ-परिमाण मुनि मोहनलाल (आमेट) ने तैयार किया है।

कार्य-निष्पत्ति में इनके योगका मूल्यांकन करते हुए मैं इन सबके प्रति आभार व्यक्त करता हूं।

आगमविद् और आगम-संपादन के कार्य में सहयोगी स्व० श्री मदनचन्दजी गोठी को इस अवसर पर विस्मृत नहीं किया जा सकता। यदि वे आज होते तो इस कार्य पर उन्हें परम हर्ष होता।

आगम के प्रबन्ध-सम्पादक श्री श्रीचन्दजी रामपुरिया प्रारम्भ से ही आगम कार्य में संलग्न रहे हैं। आगम साहित्य को जन-जन तक पहुंचाने के लिए वे कृत-संकल्प और प्रयत्नशील हैं। अपने सुव्यवस्थित वकालत कार्य से पूर्ण निवृत्त होकर अपना अधिकांश समय आगम-सेवा में लगा रहे हैं। 'अंगसुत्ताणि' के इस प्रकाशन में इन्होंने अपनी निष्ठा और तत्परता का परिचय दिया है।

'जैन विश्व-भारती' के अध्यक्ष श्री खेमचन्द जी सेठिया, 'जैन विश्व-भारती' तथा 'आदर्श साहित्य संघ' के कार्यकर्त्ताओं ने पाठ-सम्पादन में प्रयुक्त सामग्री के संयोजन में बड़ी तत्परता से कार्य किया है।

एक लक्ष्य के लिए समान गति से चलने वालों की समप्रवृत्ति में योगदान की परम्परा का उल्लेख व्यवहारपूर्त्ति मात्र है। वास्तव में यह हम सब का पवित्र कर्त्तव्य है और उसी का हम सबने पालन किया है।

अणुव्रत विहार
नई दिल्ली
२५०० वां निर्वाण दिवस।

मुनि नथमल

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भूमिका

नायाधम्मकहाओ

नाम-बोध—

प्रस्तुत आगम द्वादशाङ्गी का छठा अंग है। इसके दो श्रुतस्कन्ध हैं। प्रथम श्रुतस्कन्ध का नाम 'नाया' और दूसरे श्रुतस्कन्ध का नाम 'धम्मकहाओ' है। दोनों श्रुतस्कन्धों का एकीकरण करने पर प्रस्तुत आगम का नाम 'नायाधम्मकहाओ' बनता है। 'नाया' (ज्ञात) का अर्थ उदाहरण और 'धम्मकहाओ' का अर्थ धर्म-आख्यायिका है। प्रस्तुत आगम में चरित और कल्पित—दोनों प्रकार के दृष्टान्त और कथाएं हैं।[1]

जयधवला में प्रस्तुत आगम का नाम 'नाहधम्मकहा' (नाथधर्मकथा) मिलता है। नाथ का अर्थ है स्वामी। नाथधर्मकथा अर्थात् तीर्थंकर द्वारा प्रतिपादित धर्मकथा। कुछ संस्कृत ग्रन्थों में प्रस्तुत आगम का नाम 'ज्ञातृधर्मकथा' उपलब्ध होता है। आचार्य अकलंक ने प्रस्तुत आगम का नाम 'ज्ञातृधर्मकथा' बतलाया है।[2] आचार्य मलयगिरि और अभयदेवसूरि ने उदाहरण-प्रधान धर्मकथा को ज्ञाताधर्मकथा कहा है। उनके अनुसार प्रथम अध्ययन में 'ज्ञात' और दूसरे अध्ययन में 'धर्म-कथाएं' है। दोनों ने ही ज्ञात पद के दीर्घीकरण का उल्लेख किया है।[3]

श्वेताम्बर साहित्य में भगवान् महावीर के वंश का नाम 'ज्ञात' और दिगम्बर साहित्य में 'नाथ' बतलाया गया है। इस आधार पर कुछ विद्वानों ने प्रस्तुत आगम के नाम के साथ भगवान् महावीर का सम्बन्ध जोड़ने का प्रयत्न किया है। उनके अनुसार 'ज्ञातृधर्मकथा' या 'नाथधर्मकथा'

---

१. समवाओ, पइण्णगसमवाओ, सूत्र ९४।

२. तत्त्वार्थवार्तिक १।२०, पृ० ७२ : ज्ञातृधर्मकथा।

३. (क) नंदीवृत्ति, पत्र २३०,३१ : ज्ञातानि—उदाहरणानि तत्प्रधाना धर्मकथा ज्ञाताधर्मकथाः, अथवा ज्ञातानि—ज्ञाताध्ययनानि प्रथमश्रुतस्कन्धे, धर्मकथा द्वितीयश्रुतस्कन्धे यासु ग्रन्थपद्धतिषु (ता) ज्ञाताधर्मकथाः पृषोदरादित्वात्पूर्वपदस्य दीर्घान्तता।

(ख) समवायांगवृत्ति, पत्र १०८ : ज्ञातानि—उदाहरणानि तत्प्रधाना धर्मकथा ज्ञाताधर्मकथा, दीर्घत्वं संज्ञात्वाद् अथवा प्रथमश्रुतस्कंधो ज्ञाताभिधायकत्वात् ज्ञातानि, द्वितीयस्तु तथैव धर्म्मकथाः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

का अर्थ है--भगवान् महावीर की धर्मकथा[१]। वेवर के अनुसार जिस ग्रंथ में ज्ञातृवंशी महावीर के लिए कथाएं हों उसका नाम 'नायाधम्मकहा' है[२]। किन्तु समवायांग और नंदी में जो अंगों का विवरण प्राप्त है उसके आधार पर 'नायाधम्मकहा' का 'ज्ञातृवंशी महावीर की धर्मकथा'--यह अर्थ संगत नहीं लगता। वहां बतलाया गया है कि ज्ञाताधर्मकथा में ज्ञातों (उदाहरणभूत व्यक्तियों) के नगर, उद्यान आदि का निरूपण किया गया है[३]। प्रस्तुत आगम के प्रथम अध्ययन का नाम भी 'उक्खित्तणाए' (उत्क्षिप्त ज्ञान) है। इसके आधार पर 'नाय' शब्द का अर्थ 'उदाहरण' ही संगत प्रतीत होता है।

विषय-वस्तु—

प्रस्तुत आगम के दृष्टान्तों और कथाओं के माध्यम से अहिंसा, अस्वाद, श्रद्धा, इन्द्रिय-विजय आदि आध्यात्मिक तत्त्वों का अत्यन्त सरस शैली में निरूपण किया गया है। कथावस्तु के साथ वर्णन की विशेषता भी है। प्रथम अध्ययन को पढ़ते समय कादम्बरी जैसे गद्य काव्यों की स्मृति हो आती है। नवें अध्ययन में समुद्र में डूबती हुई नौका का वर्णन बहुत सजीव और रोमांचक है। बारहवें अध्ययन में कलुषित जल को निर्मल बनाने की पद्धति वर्तमान जल-शोधन की पद्धति की याद दिलाती है। इस पद्धति के द्वारा पुद्गल द्रव्य की परिवर्तनशीलता का प्रतिपादन किया गया है।

मुख्य उदाहरणों और कथाओं के साथ कुछ अवान्तर कथाएं भी उपलब्ध होती हैं। आठवें अध्ययन में कूप-मंडूक की कथा बहुत ही सरस शैली में उल्लिखित है। परिव्राजिका चोखा जितशत्रु के पास जाती है। जितशत्रु उसे पूछता है--'तुम बहुत घूमती हो, क्या तुमने मेरे जैसा अन्तःपुर कहीं देखा है?' चोखा ने मुस्कान भरते हुए कहा--'तुम कूप-मंडूप जैसे हो।'

'वह कूप-मंडूप कौन है?' जितशत्रु ने पूछा।

चोखा ने कहा--'कुएं में एक मेंढक था। वह वहीं जन्मा, वहीं बढ़ा। उसने कोई दूसरा कूप, तालाब और जलाशय नहीं देखा। वह अपने कूप को ही सब कुछ मानता था। एक दिन एक समुद्री मेंढक उस कूप में आ गया। कूप-मंडूक ने कहा--तुम कौन हो? कहां से आए हो? उसने कहा--मैं समुद्र का मेंढक हूँ, वहीं से आया हूँ। कूप-मंडूक ने पूछा--वह समुद्र कितना बड़ा है? समुद्री मेंढक ने कहा--वह बहुत बड़ा है। कूप-मंडूक ने अपने पैर से रेखा खींचकर कहा--क्या समुद्र इतना बड़ा है? समुद्री मेंढक ने कहा--इससे बहुत बड़ा है। कूप-मंडूक ने कूप के पूर्वी तट से पश्चिमी तट तक फुदक कर कहा--क्या समुद्र इतना बड़ा है? समुद्री मेंढक ने कहा--इससे भी बहुत बड़ा है। कूप-मंडूक इस पर विश्वास नहीं कर सका। इसने कूप के सिवाय कुछ देखा ही नहीं था[४]।

इस प्रकार नाना कथाओं, अवान्तर-कथाओं, वर्णनों, प्रसंगों और शब्द-प्रयोगों की दृष्टि से प्रस्तुत आगम बहुत महत्वपूर्ण है। इसका विश्व के विभिन्न कथा-ग्रन्थों के साथ तुलनात्मक अध्ययन करने पर कुछ नए तथ्य उपलब्ध हो सकते हैं।

---

१. जैन साहित्य का इतिहास, पूर्व-पीठिका, पत्र ६६०।
२. Stories From the Dharma of NAYA इं० एं० जि० १९, पृष्ठ ६६।
३. (क) समवाओ, पइण्णगसमवाओ, सूत्र ९४।
   (ख) नंदी, सूत्र ८५।
४. नायाधम्मकहाओ ८।१५४, पृ० १८६,१८७।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उवासगदसाओ

नाम-बोध—

प्रस्तुत आगम द्वादशाङ्गी का सातवां अंग है। इसमें दस उपासकों का जीवन वर्णित है इसलिए इसका नाम 'उवासगदसाओ' है। श्रमण-परम्परा में श्रमणों की उपासना करने वाले गृहस्थों को श्रमणोपासक या उपासक कहा गया है। भगवान महावीर के अनेक उपासक थे। उनमें से दस मुख्य उपासकों का वर्णन करने वाले दस अध्ययन इसमें संकलित हैं।

विषय-वस्तु—

भगवान् महावीर ने मुनि-धर्म और उपासक धर्म—इस द्विविध धर्म का उपदेश दिया था। मुनि के लिए पांच महाव्रतों का विधान किया और उपासक के लिए बारह व्रतों का। प्रथम अध्ययन में उन बारह व्रतों का विशद वर्णन मिलता है। श्रमणोपासक आनन्द भगवान् महावीर के पास उनकी दीक्षा लेता है। व्रतों की यह सूची धार्मिक या नैतिक जीवन की प्रशस्त आचार-संहिता है। इसकी आज भी उतनी ही उपयोगिता है जितनी ढाई हजार वर्ष पहले थी। मनुष्य स्वभाव की दुर्बलता जब तक बनी रहेगी तब तक उसकी उपयोगिता समाप्त नहीं होगी।

मुनि का आचार-धर्म अनेक आगमों में मिलता है, किन्तु गृहस्थ का आचार-धर्म मुख्यत: इसी आगम में मिलता है। इसलिए आचार-शास्त्र में इसका मुख्य स्थान है। इसकी रचना का मुख्य प्रयोजन ही गृहस्थ के आचार का वर्णन करना है। प्रसंगवश इसमें नियतिवाद के पक्ष-विपक्ष की सुन्दर चर्चा हुई है। उपासकों की धार्मिक कसौटी की घटनाएं भी मिलती हैं। भगवान महावीर उपासकों की साधना का कितना ध्यान रखते थे और उन्हें समय-समय पर कैसे प्रोत्साहित करते थे यह भी जानने को मिलता है।

जयधवला के अनुसार प्रस्तुत आगम उपासकों के ग्यारह प्रकार के धर्म का वर्णन करता है। उपासक-धर्म के ग्यारह अंग ये हैं—दर्शन, व्रत, सामायिक, पौषधोपवास, सचित्तविरति, रात्रि-भोजन विरति, ब्रह्मचर्य, आरंभविरति, अनुमति विरति और उद्दिष्ट विरति[1]। आनन्द आदि श्रावकों ने उक्त ग्यारह प्रतिमाओं का आचरण किया था। व्रतों की आराधना स्वतन्त्र रूप में भी की जाती है और प्रतिमाओं के पालन के समय भी की जाती है। व्रत और प्रतिमा—ये दो पद्धतियां हैं। समवायांग और नन्दी सूत्र में व्रत और प्रतिमा दोनों का उल्लेख है। जयधवला में केवल प्रतिमाओं का उल्लेख है।

---

१. कसायपाहुड भाग १, पृष्ठ १२६, १३०।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अंतगडदसाओ

नाम-बोध—

प्रस्तुत आगम द्वादशाङ्गी का आठवां अंग है। इसमें जन्म-मरण की परम्परा का अंत करने वाले व्यक्तियों का वर्णन है, तथा इसके दस अध्ययन हैं इसलिए इसका नाम 'अंतगडदसाओ' है। समवायांग में इसके दस अध्ययन और सात वर्ग बतलाए गए हैं[1]। नंदी सूत्र में इसके अध्ययनों का कोई उल्लेख नहीं है, केवल आठ वर्गों का उल्लेख है[2]। अभयदेवसूरि ने दोनों में सामञ्जस्य स्थापित करने का प्रयत्न किया है। उन्होंने लिखा है कि प्रथम वर्ग में दस अध्ययन हैं इस अपेक्षा से समवायांग सूत्र में दस अध्ययन और अन्य वर्गों की अपेक्षा से सात वर्ग बतलाए गए हैं। नन्दी सूत्र में अध्ययनों का उल्लेख किए बिना केवल आठ वर्ग बतलाए गए हैं[3]। किन्तु इस सामञ्जस्य का अंत तक निर्वाह हो नहीं सकता, क्योंकि समवायांग में प्रस्तुत आगम के शिक्षा-काल (उद्देशन-काल) दस बतलाए गए हैं। नंदीसूत्र में उनकी संख्या आठ है। अभयदेवसूरि ने लिखा है कि उद्देशनकालों के अन्तर का आशय हमें ज्ञात नहीं[4]। नंदीसूत्र के चूर्णिकार श्री जिनदास महत्तर और वृत्तिकार श्री हरिभद्रसूरि ने भी यह लिखा है कि प्रथम वर्ग में दस अध्ययन होने के कारण प्रस्तुत आगम का नाम 'अंतगडदसाओ' है[5]। चूर्णिकार ने दसा का अर्थ अवस्था भी किया है[6]।

प्रस्तुत आगम का वर्णन करने वाली तीन परम्पराएं हैं—एक समवायांग की, दूसरी तत्त्वार्थवार्तिक आदि की और तीसरी नंदी की।

प्रथम परम्परा के अनुसार प्रस्तुत आगम के दस अध्ययन हैं। इसकी पुष्टि स्थानांग सूत्र से होती है। स्थानांग में प्रस्तुत आगम के दस अध्ययन और उनके नाम निर्दिष्ट हैं, जैसे—नमि, मातंग, सोमिल, रामगुप्त, सुदर्शन, जमाली, भगाली, किंकष, चिल्वक और फाल अंबडपुत्र[7]। तत्त्वार्थवार्तिक में कुछ पाठ-भेद के साथ ये दस नाम मिलते हैं, जैसे—नमि, मातंग, सोमिल, रामगुप्त, सुदर्शन, यमलीक, वलीक, कंबल, पाल और अंबष्ठपुत्र[8]। समवायांग में दस अध्ययनों का उल्लेख है, किन्तु उनके नाम निर्दिष्ट नहीं हैं। तत्त्वार्थवार्तिक के अनुसार प्रस्तुत आगम में प्रत्येक

---

१. समवाओ, पइण्णगसमवाओ, सूत्र ९६ :······दस अज्झयणा सत्त वग्गा।

२. नंदी, सूत्र ८८······अट्ठ वग्गा।

३. समवायांगवृत्ति, पत्र ११२ : दस अज्झयण त्ति प्रथमवर्गापेक्षयैव घटन्ते, नन्द्यां तथैव व्याख्यातत्वात्, यच्चेह पठ्यते 'सत्त वग्ग' त्ति तत् प्रथमवर्गादन्यवर्गापेक्षया, यतोऽष्ट वर्गाः, नन्द्यामपि तथा पठितत्वात्।

४. समवायांगवृत्ति, पत्र ११२ : ततो भणितं—अट्ठ उद्देसणकाला इत्यादि, इह च दश उद्देशनकाला अधीयन्ते इति नास्याभिप्रायमवगच्छामः।

५. (क) नन्दीसूत्र, चूर्णिसहित पृ० ६८ : पढमवग्गे दस अज्झयण त्ति तस्सक्खतो अंतकडदस त्ति।
   (ख) नन्दीसूत्र, वृत्तिसहित पृ० ८३ : प्रथमवर्गे दशाध्ययनानि इति तत्सङ्ख्यया अन्तकृद्दशा इति।

६. नन्दीसूत्र, चूर्णिसहित पृ० ६८ : दस त्ति—अवत्था।

७. ठाणं, १०।११३।

८. तत्त्वार्थवार्तिक १।२०, पृ० ७३।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तीर्थंकर के समय में होने वाले दस-दस अंतकृत केवलियों का वर्णन है[1]। जयधवला में भी तत्त्वार्थ-वार्तिक के वर्णन का समर्थन मिलता है[2]। नंदी सूत्र में दस अध्ययनों का उल्लेख और नाम निर्देश दोनों नहीं हैं। इस आधार पर अनुमान किया जा सकता है कि समवायांग और तत्त्वार्थवार्तिक में प्राचीन परम्परा सुरक्षित है और नंदी सूत्र में प्रस्तुत आगम के वर्तमान स्वरूप का वर्णन है। वर्तमान में उपलब्ध आठ वर्गों में प्रथम वर्ग के दस अध्ययन हैं, किन्तु इनके नाम उक्त नामों से सर्वथा भिन्न हैं, जैसे—गौतमसमुद्र, सागर, गम्भीर, स्तिमित, अचल, कांपिल्य, अक्षोभ, प्रसेनजित, और विष्णु। अभयदेवसूरि ने स्थानांग वृत्ति में इसे वाचनान्तर माना है[3]। इससे स्पष्ट होता है कि नंदी में जिस वाचना का वर्णन है वह समवायांग में वर्णित वाचना से भिन्न है।

'अंतगड' शब्द के दो संस्कृत रूप प्राप्त होते हैं—अंतकृत और अंतकृत्। अर्थ की दृष्टि से दोनों में कोई अन्तर नहीं है, किन्तु 'गड' का 'कृत' रूप छाया की दृष्टि से अधिक उपयुक्त है।

विषय-वस्तु—

वासुदेव कृष्ण और उनके परिवार के सम्बन्ध में इस आगम में विशद जानकारी मिलती है। वासुदेवकृष्ण के छोटे भाई गजसुकुमाल की दीक्षा और उनकी साधना का वर्णन बहुत ही रोमांच-कारी है।

छठे वर्ग में अर्जुनमालाकार की घटना उल्लिखित है। एक आकस्मिक घटना ने उसे हत्यारा बना दिया और एक प्रसंग ने उसे साधु बना दिया। परिस्थिति और वातावरण से मनुष्य बनता-बिगड़ता है—इसे स्वीकार न करें फिर भी यह स्वीकार किया जा सकता है कि मनुष्य के बनने-बिगड़ने में वे निमित्त बनते हैं।

अतिमुक्तक मुनि के अध्ययन में आन्तरिक साधना का महत्व समझा जा सकता है। समग्र आगम में तपस्या ही तपस्या दृष्टिगोचर होती है। ध्यान के उल्लेख नगण्य हैं। भगवान् महावीर ने उपवास और ध्यान—दोनों को स्थान दिया था। तपस्या के वर्गीकरण में उपवास बाह्य तप और ध्यान आन्तरिक तप है। भगवान् महावीर ने अपने साधना-काल में उपवास और ध्यान—दोनों का प्रयोग किया था। यह अनुसन्धेय है कि प्रस्तुत आगम में केवल उपवास पर ही इतना बल क्यों दिया गया? विस्मृति और नव-निर्माण की शृंखला में बचा हुआ प्रस्तुत आगम अनेक दृष्टियों से महत्वपूर्ण और अनुसन्धेय है।

———

१. तत्त्वार्थवार्तिक १।२०, पृ० ७३ :······इत्येते दश वर्धमानतीर्थङ्करतीर्थे। एवमृषभादीनां त्रयोविंशतेस्तीर्थेष्वन्येऽन्ये च दश दशानगारा दश दश दारुणानुपसर्गान्निर्जित्य कृत्स्नकर्मक्षयादन्तकृतः दश अस्यां वर्ण्यन्ते इति अन्तकृद्दशा।

२. कसायपाहुड भाग १ पृ० १३० : अंतयडदसा णाम अंगं चउव्विहोवसग्गे दारुणे सहिऊण पाडिहेरं लद्धूण णिव्वाणं गदे सुदंसणादि-दस-दस-साहू तित्थं पडि वण्णेदि।

३. स्थानांगवृत्ति पत्र ४८३······ततो वाचनान्तरापेक्षाणीमानीति सम्भावयामः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अणुत्तरोववाइयदसाओ

नाम-बोध—

प्रस्तुत आगम द्वादशाङ्गी का नवां अंग है। इसमें अनुत्तर नामक स्वर्ग-समूह में उत्पन्न होने वाले मुनियों से सम्बन्धित दस अध्ययन हैं, इसलिए इसका नाम 'अणुत्तरोववाइयदसाओ' है। नंदी सूत्र में केवल तीन वर्गों का उल्लेख है[1]। स्थानांग में केवल दस अध्ययनों का उल्लेख है[2]। राजवार्तिक के अनुसार इसमें प्रत्येक तीर्थंकर के समय में होने वाले दस-दस अनुत्तरोपपातिक मुनियों का वर्णन है[3]। समवायांग में दस अध्ययन और तीन वर्ग—दोनों का उल्लेख है[4]। उसमें दस अध्ययनों के नाम उल्लिखित नहीं हैं। स्थानांग और तत्त्वार्थवार्तिक के अनुसार उनके नाम इस प्रकार हैं।

(१) स्थानांग के अनुसार—

ऋषिदास, धन्य, सुनक्षत्र, कार्त्तिक, स्वस्थान, शालिभद्र, आनंद, तेतली, दशार्णभद्र और अतिमुक्त[5]।

(२) राजवार्तिक के अनुसार—

ऋषिदास, वान्य, सुनक्षत्र, कार्त्तिक, नन्द, नन्दन, शालिभद्र, अभय, वारिषेण और चिलातपुत्र[6]।

उक्त दस मुनि भगवान् महावीर के शासन में हुए थे—यह तत्वार्थवार्तिककार का मत है। धवला में कार्तिक के स्थान पर कार्तिकेय और नंद के स्थान पर आनंद मिलता है[7]।

प्रस्तुत आगम का जो स्वरूप उपलब्ध है वह स्थानांग और समवायांग की वाचना से भिन्न है। अभयदेवसूरि ने इसे वाचनान्तर बतलाया है[8]। उपलब्ध वाचना के तृतीय वर्ग में धन्य,

१. नंदी, सूत्र ८९ :······तिण्णि वग्गा।

२. ठाणं १०।११४

३. (क) तत्त्वार्थवार्तिक १।२०, पृ० ७३।

······इत्येते दश वर्धमानतीर्थंकरतीर्थे। एवमृषभादीनां त्रयोविंशतेस्तीर्थेष्वन्येऽन्ये च दश दशानगारा दश दश दारुणानुपसर्गान्निर्जित्य विजयाद्यनुत्तरेषूत्पन्ना इत्येवमनुत्तरौपपादिकाः दशास्यां वर्ण्यन्त इत्यनुत्तरौपपादिकदशा।

(ख) कसायपाहुड भाग १, पृ० १३०।

अणुत्तरोववादियदसा णाम अंगं चउव्विहोवसग्गे दारुणे सहियूण चउवीसण्हं तित्थयराणं तित्थेसु अणुत्तर-विमाणं गदे दस दस मुणिवसहे वण्णेदि।

४. समवाओ, पइण्णगसमवाओ ९७।

······दस अज्झयणा तिण्णि वग्गा······।

५. ठाणं १०।११४।

६. तत्त्वार्थवार्तिक १।२० पृ० ७३।

७. षट्खण्डागम १।१।२।

८. स्थानांगवृत्ति पत्र ४८३ :

तदेवमिहापि वाचनान्तरापेक्षयाऽध्ययनविभाग उक्तो न पुनरुपलभ्यमानवाचनापेक्षयेति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुनक्षत्र और ऋषिदास—ये तीन अध्ययन प्राप्त हैं। प्रथम वर्ग में वारिषेण और अभय—ये दो अध्ययन प्राप्त हैं, अन्य अध्ययन प्राप्त नहीं हैं।

विषय-वस्तु—

प्रस्तुत आगम में अनेक राजकुमारों तथा अन्य व्यक्तियों के वैभवपूर्ण और तपोमय जीवन का सुन्दर वर्णन है। धन्य अनगार के तपोमय जीवन और तप से कृश बने हुए शरीर का जो वर्णन है वह साहित्य और तप दोनों दृष्टियों से महत्वपूर्ण है।

पण्हावागरणाइं

नाम-बोध

प्रस्तुत आगम द्वादशाङ्गी का दसवां अंग है। समवायांग सूत्र और नंदी में इसका नाम 'पण्हावागरणाइं' मिलता है[1]। स्थानांग में इसका नाम 'पण्हावागरणदसाओ' है[2]। समवायांग में 'पण्हावागरणदसासु'–यह पाठ भी उपलब्ध है। इससे जाना जाता है कि समवायांग के अनुसार स्थानांग-निर्दिष्ट नाम भी सम्मत है। जयधवला में 'पण्हवायरणं' और तत्त्वार्थवार्तिक में 'प्रश्नव्याकरणम्' नाम मिलता है[3]।

विषय-वस्तु

प्रस्तुत आगम के विषय-वस्तु के बारे में विभिन्न मत प्राप्त होते हैं। स्थानांग में इसके दस अध्ययन बतलाए गए हैं—उपमा, संख्या, ऋषि-भाषित, आचार्य-भाषित, महावीर-भाषित, क्षौमक प्रश्न, कोमल प्रश्न, आदर्श प्रश्न, अंगुष्ठ प्रश्न और बाहु प्रश्न[4]। इनमें वर्णित विषय का संकेत अध्ययन के नामों से मिलता है।

समवायांग और नंदी के अनुसार प्रस्तुत आगम में नाना प्रकार के प्रश्नों, विद्याओं और दिव्य-संवादों का वर्णन है[5]। नंदी मे इसके पैंतालिस अध्ययनों का उल्लेख है। स्थानांग से उसकी

---

१. (क) समवाओ, पइण्णगसमवाओ सूत्र ९८।
   (ख) नंदी, सूत्र ९०।

२. ठाणं १०।११०।

३. (क) कसायपाहुड, भाग १ पृष्ठ १३१ : पण्हवायरणं णाम अंगं···।
   (ख) तत्त्वार्थवार्तिक १।२० : ···प्रश्नव्याकरणम्।

४. ठाणं १०।११६:
   पण्हावागरणदसाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—उवमा, संखा, इसिभासियाइं, आयरियभासियाइं, महावीरभासियाइं, खोमगपसिणाइं, कोमलपसिणाइं, अद्दागपसिणाइं, अंगुट्ठपसिणाइं बाहुपसिणाइं।

५. (क) समवाओ, पइण्णगसमवाओ सूत्र ९८:
   पण्हावागरणेसु अट्ठुत्तरं पसिणसयं अट्ठुत्तरं अपसिणसयं अट्ठुत्तरं पसिणापसिणयं विज्जाइसया, नागसुवण्णेहिं सद्धिं दिव्वा संवाया आघविज्जंति।
   (ख) नंदी, सूत्र ९०।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कोई संगति नहीं हैं। समवायांग में इसके अध्ययनों का उल्लेख नहीं है, किन्तु उसके 'पण्हावागरण-दसासु' इस आलापक (पैराग्राफ) के वर्णन से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता हैं कि समवायांग में प्रस्तुत आगम के दस अध्ययनों की परम्परा स्वीकृत है। उक्त आलापक में बतलाया गया है कि प्रश्नव्याकरणदसा में प्रत्येक बुद्ध भाषित, आचार्य भाषित, वीरमहर्षि भाषित, आदर्श प्रश्न, अंगुष्ठ प्रश्न, बाहु प्रश्न, असि प्रश्न, मणि प्रश्न, क्षौम प्रश्न, आदित्य प्रश्न आदि-आदि प्रश्न वर्णित हैं। इन नामों की स्थानांग में निर्दिष्ट दस अध्ययन के नामों के साथ तुलना की जा सकती है। यद्यपि उद्देशनकाल पैंतालिस बतलाए गए हैं फिर भी अध्ययनों की संख्या का स्पष्ट निर्णय नहीं किया जा सकता। गंभीर विषय वाले अध्ययन की शिक्षा अनेक दिनों तक दी जा सकती है।

तत्त्वार्थवार्तिक के अनुसार प्रस्तुत आगम में अनेक आक्षेप और विक्षेप के द्वारा हेतु और नय से आश्रित प्रश्नों का उत्तर दिया गया है, लौकिक और वैदिक अर्थों का निर्णय किया गया है[1]।

जयधवला के अनुसार प्रस्तुत आगम आक्षेपणी, विक्षेपणी, संवेजनी और निर्वेदनी—इन चारों कथाओं तथा प्रश्न के आधार पर नष्ट, मुष्टि, चिन्ता, लाभ, अलाभ, सुख, दुख, जीवन और मरण का वर्णन करता है[2]।

उक्त ग्रंथों में प्रस्तुत आगम का जो विषय वर्णित है वह आज उपलब्ध नहीं हैं। आज जो उपलब्ध है उसमें पांच आश्रवों (हिंसा, असत्य, चौर्य, अब्रह्मचर्य और परिग्रह) तथा पांच संवरों (अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह) का वर्णन है। नंदी में उसका कोई उल्लेख नहीं है। समवायांग में आचार्य भाषित आदि अध्ययनों का उल्लेख है तथा जयधवला में आक्षेपणी आदि चारों कथाओं का उल्लेख है। इससे अनुमान किया जा सकता है कि प्रस्तुत आगम का उपलब्ध विषय भी प्रश्नों के साथ रहा हो, बाद में प्रश्न आदि विद्याओं की विस्मृति हो जाने पर वह भाग प्रस्तुत आगम के रूप में बचा हो। यह अनुमान भी किया जा सकता है कि प्रस्तुत आगम के प्राचीन स्वरूप के विच्छिन्न हो जाने पर किसी आचार्य के द्वारा नए रूप से रचना की गई हो। नंदी में प्रस्तुत आगम की जिस वाचना का विवरण है, उसमें आश्रवों और संवरों का वर्णन नहीं है, किन्तु नंदी चूर्णि में उनका उल्लेख मिलता है[1]। यह संभव है कि चूर्णिकार ने उपलब्ध आकार के आधार पर उनका उल्लेख किया है।

---

१. तत्त्वार्थवार्तिक १।२०, पृ० ७३, ७४ :
आक्षेपविक्षेपैर्हेतुनयाश्रितानां प्रश्नानां व्याकरणं प्रश्नव्याकरणम्। तस्मिल्लौकिकवैदिकानामर्थानां निर्णय:।

२. कसायपाहुड, भाग १, पृ० १३१, १३२:
पण्हवायरणं णाम अंगं अक्खेवणी-विक्खेवणी-संवेयणी-णिव्वेयणीणामाओ चउव्विहं कहाओ पण्हादो णट्ठ-मुट्ठि-चिंता-लाहालाह-सुखदुक्ख-जीवियमरणाणि च वण्णेदि।

१. नंदी सूत्र, चूर्णि सहित पृ० ६६।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विवागसुयं

नाम-बोध

प्रस्तुत आगम द्वादशाङ्गी का ग्यारहवां अंग है। इसमें सुकृत और दुष्कृत कर्मों के विपाक का वर्णन किया गया है, इसलिए इसका नाम 'विवागसुयं' है[1]। स्थानांग में इसका नाम 'कम्म विवागदसा' है[2]।

विषय-वस्तु

प्रस्तुत आगम के दो विभाग हैं—दुःख विपाक और सुख विपाक। प्रथम विभाग में दुष्कर्म करने वाले व्यक्तियों के जीवन प्रसंगों का वर्णन है। उक्त प्रसंगों को पढ़ने पर लगता है कि कुछ व्यक्ति हर युग में होते हैं। वे अपनी क्रूर मनोवृत्ति के कारण भयंकर अपराध भी करते हैं। दुष्कर्म व्यक्ति की शारीरिक और मानसिक स्थितियों को किस प्रकार प्रभावित करता है, यह भी जानने को मिलता है। दूसरे विभाग में सुकृत करने वाले व्यक्तियों के जीवन-प्रसंग हैं। जैसे क्रूर कर्म करने वाले व्यक्ति हर युग में मिलते हैं वैसे ही उपशान्त मनोवृत्ति वाले लोग भी हर युग में मिलते हैं। अच्छाई और बुराई का योग आकस्मिक नहीं है।

स्थानांग सूत्र में कर्म विपाक के दस अध्ययन बतलाए गए हैं—मृगापुत्र, गोत्रास, अंड, शकट, माहन, नन्दीषेण, शौरिक, उदुम्बर, सहसोद्दाह-आमरक और कुमार लिच्छवी[3]। ये नाम किसी दूसरी वाचना के हैं।

उपसंहार

अंग सूत्रों के विवरण और उपलब्ध स्वरूप में पूर्ण संवादिता नहीं है। इस आधार पर यह अनुमान किया जा सकता है कि अंग सूत्रों का उपलब्ध स्वरूप केवल प्राचीन नहीं है, प्राचीन और अर्वाचीन दोनों संस्करणों का सम्मिश्रण है। इस विषय का अनुसन्धान बहुत ही महत्वपूर्ण हो सकता है कि अंग सूत्रों के उपलब्ध स्वरूप में कितना प्राचीन भाग है और कितना अर्वाचीन तथा किस आचार्य ने कब उसकी रचना की। भाषा, प्रतिपाद्य, विषय और प्रतिपादन शैली के आधार पर यह अनुसन्धान किया जा सकता है। यद्यपि यह कार्य बहुत ही श्रम, साध्य है, पर असंभव नहीं है।

---

१. (क) समवाओ, पइण्णगसमवाओ सूत्र ६६।
(ख) नंदी, सूत्र ६१।
(ग) तत्त्वार्थवार्तिक १।२०।
(घ) कसायपाहुड, भाग १ पृ० १३२।

२. ठाणं १०।११०।

३. ठाणं १०।१११।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कार्य-संपूर्ति

प्रस्तुत आगमों के पाठ-संशोधन में अनेक मुनियों का योग रहा है। उन सबको मैं आशीर्वाद देता हूँ कि उनकी कार्यजा शक्ति और अधिक विकसित हो।

इसके सम्पादन का बहुत कुछ श्रेय शिष्य मुनि नथमल को है, क्योंकि इस कार्य में अहर्निश वे जिस मनोयोग से लगे हैं, उसी से यह कार्य सम्पन्न हो सका है। अन्यथा यह गुरुतर कार्य बड़ा दुरूह होता। इनकी वृत्ति मूलतः योगनिष्ठ होने से मन की एकाग्रता सहज बनी रहती है। सहज ही आगम का कार्य करते-करते अन्तर्रहस्य पकड़ने में इनकी मेधा काफी पैनी हो गई है। विनयशीलता, श्रम-परायणता और गुरु के प्रति पूर्ण समर्पण भाव ने इनकी प्रगति में बड़ा सहयोग दिया है। यह वृत्ति इनकी बचपन से ही है। जब से मेरे पास आए, मैंने इनकी इस वृत्ति में क्रमशः वर्धमानता ही पाई है। इनकी कार्य-क्षमता और कर्त्तव्य-परता ने मुझे बहुत संतोष दिया है।

मैंने अपने संघ के ऐसे शिष्य साधु-साध्वियों के बल-बूते पर ही आगम के इस गुरुतर कार्य को उठाया है। अब मुझे विश्वास हो गया है कि अपने शिष्य साधु-साध्वियों के निस्वार्थ, विनीत एवं समर्पणात्मक सहयोग से इस बृहत् कार्य को असाधारण रूप से सम्पन्न कर सकूंगा।

भगवान् महावीर की पचीसवीं निर्वाण शताब्दी के अवसर पर उनकी वाणी को जनता के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अनिर्वचनीय आनन्द का अनुभव हो रहा है।

अणुव्रत विहार, नई दिल्ली-१
२५००वां निर्वाण दिवस

आचार्य तुलसी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Preface

NĀYĀ DHAMMAKAHĀO

The title

The present Āgama is the sixth Anga of Dwādaśāngī. It has two Śrutaskandhas. The first is called as 'NĀYĀ' and the second as 'DHAMMAKAHĀO'. On combining both the Śrutaskandhas, the present Āgama has the title as 'NĀYĀDHAMMAKAHĀO'. 'NĀYĀ' (Jnāta) means examples and 'DHAMMAKAHĀO' means religious fables. The present Āgama has both of historical illustrations and imaginary fables.[1]

In the Jayadhawalā the title of this Āgama is found as 'Nāhadhāmmakahā' (Nāthadharma-kathā). 'Nātha' means the Lord. 'Nāthadhamma-kahā' i.e, the dharmakathā expounded by the Tīrthankara. In some Sanskrit works the title of this Āgama is given as 'Jnātṛidharmakathā'. Āchārya Akalanka too has given the title of this Āgama as 'Jnātadharmakathā'[2]. Ācharya Malayagiri and Abhayadeva Sūri give the title of 'Jnātadharmakathā. It is a treatise mainly containing illustrative religious stories. According to them, the first Śrutasakandha has illustrations and the second Śrutaskandha has religious stories. Both of them mention the lengthening of the word 'Jnāta'.[3]

The family name of lord Mahavīra has been given as 'Jnāta' and 'Nātha' in the Śwetamber and Digamber literature respectively. On this basis, some scholars have tried to relate this Āgama with lord Mahāvīra.[4] They hold that 'Jnātadharmakathā' or 'Nātha-dharmakathā' means the 'Dharmakathā by lord Mahāvīra'. Waber says that the work having fables pertaining to the religion of Jnātṛiwanśī Mahāvīra, is titled as NĀYĀDHAMMAKAHĀ'.[5] But, on the account found in the Samwāyānga and the Nandi, the meaning

1. Samawao, painnagasamawao, Sutra 94.
2. Tatwartha Vartika, 1/20.
3. (a) Nandivritti, pages 230-31.
   (b) Samawayanga Vritti, page 108.
4. Jain sahitya ka Pitihas, Purwa-Pithika, page 660.
5. Stories from the Dharma of NAYA, I.A., Vol. 19, page 66.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'Dharmakathā of Jnātṛiwansī Mahāvīra' does not seem to be appropriate. It has been told there that in the 'Jnātadharmakathā', the cities and gardens etc. of the 'Jnātas' (the persons cited) have been described.[1] The title of the first Adhyayana of this Āgama is 'Ukkhittanâye' (Utkshiptajṇāta). On this basis also, the word 'Nātha' seems to go with the meaning as an 'illustration' only.

The content

The spiritual elements such as non-voilence, palate contral, faith, restraint of senses etc. have been expounded in an excellent style through the illustrations and fables in the present Āgama. Besides that of a plot, it has the elegance of description also. While going through the first Adhyayana, we have the reminiscense of the poetical prose-work such as the Kādambari. In the ninth Adhyayana, the description of the boat sinking in the sea, is very lively and horripilating. In the twelfth Adhyayana, the process of purifying water reminds us of the modern method. The changability of the Pudgala substance has been expounded by this illustration.

Along with the main illustrations and fables, some subsidiary fables are also found. In the eighth Adhyayana the fable of a well-frog has been recorded in an excellent style. Parivrājikā Chokha goes to Jitaśatru. Jitaśatru enquires of her—You wander a lot. Have you ever seen a harem like that of mine? With a smile Chokha said—You are like a Kūpa-Mandūka.

Who is that Kūpa Mandūka ?

Chokha said—There was a frog in a well. He was born and brought up there. He considered his well everything. One day an ocean-frog came down in that well. The well-frog said to him—Who are you ? He answered—I am a frog from the ocean. I have came from there. The well-frog asked him—How big is the ocean ? The ocean-frog said—It is very big. The well-frog, drawing a boundry with his foot, asked him—Is the ocean as big as this ? The ocean-frog answered—Far more greater than this. The well-frog had a jump, from the eastern to the western end of the well, and said—Is the ocean so big ? The ocean-frog answered—It is far more bigger than this too. The well-frog could not believe it as it had never seen any thing except the well[2].

1. (a) Samwao, painnagasamawao, Sutra 94.
   (b) Nandi, Sutra 85.
2. Nayadhammakahao, 8/154, pages 186-87.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

In this way, from the view point of various fables, insertions, illustrations, descriptions, anecdotes and word-usages, this Āgama has a great value. A comparative study of it with that of the different fable-works found the world over may well give some new facts.

UWĀSAGADASĀO

The title

The present Āgama is the seventh Anga of the Dwādaśāngī. It has the biographies of ten Upāsakas (lay devotees), therefore, it is called as 'Upāsagadasāo'. In the Śramaṇū order the laymen serving the Śramaṇas are called Śramaṇopāsakas or Upāsakas. Lord Mahāvira had large number of Upāsakas. It comprises of ten 'Adhyayanas' depicting the life of ten principal Upāsakas.

The Content

Lord Mahāvira has given twofold code of conduct, such as laws of conduct for Munis and laws of conduct for Upāsakas. Five Mahāvratas (great vows) were postulated for a Muni and twelve Vratas (vows) for a Upāsaka. Śramaṇopāsaka Anand was consecreted and initiated to his cult by him. The list of the Vratas is an excellent code of conduct pertaining to religious or ethical life. Even today, it has the same utility as it had 2500 years ago. As long as the weakness of human nature is there, its utility will always exist.

The code of conduct for Munis is found in many Āgamas but the code of conduct for laymen is found in this Āgama only. It has, therefore, its own place in the codes of conduct. The object of its composition is only to put forth the code of conduct for a layman. Incidently, Niyatiwāda has also been discussed nicely with its arguments for and against. Incidents, proving the religious touch-stone for the Upāsakas, are also found. It also throws light on the fact as to how lord Mahāvira took care of the accomplishment of the Upāsakas, and encouraged them to higher spiritual life from time to time.

According to the Jayadhawalā the present Āgama narrates eleven-fold practices of the 'Upāsakas'. They are—Darśan, Vrat, Sāmayika, Pauṣadhopawā, Saćitta-Virati, Ratri-Bhojan-Virati, Brahmaćarya, Ārambha-Virati, Parigraha-virati, Anumāti-Virati, and Uddiṣṭa Virati[1]. The Śrāwakas, beginning from

1. Kasyapahuda, part i, pages 129-30.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Ananda, had practised above said eleven Pratimās. The Vratas are practised indenpedently, and at the time of fulfilment of Pratimās also. These Vratās and Pratimās are the two religious codes for an Upāsaka. In the Samawāyānga and the Nandi Sūtra, Vratā and Pratimā both are mentioned. The Jayadhawalā gives an account of Pratimās only.

ANTAGADADASÃO

The title

The present Āgama is the eighth of the Dwādaśāngī. The illustrious ones who put an end to the cycle of death and birth, have been narrated in it, and it has ten Adhyayanas. Hence the title 'Antagadadasão'. The Samwāyānga tells us that it contained ten Adhyayanas and seven Vargas[1]. The Nandi Sūtra says nothing about its Adhyayanas and only eight Vargas have been accounted for and in it[2]. Sri Abhayadeva Sūri has tried to find consistency in these both. He tells us that the first Varga has ten Adhyayanas, therefore the Samawāyānga Sūtra mentions ten Adhyayanas and seven Vargas only. The Nandi Sūtra gives eight Vargas only with no mention of Adhyayanas[3]. But this consistency cannot be maintained to the end, because the Samawāyānga gives us ten Śiksha-kālas (Uddeśan kālas) of this Āgama and the Nandi Sūtra gives only eight. Sri Abhayadeva Sūri admits that he does not understand the purpose behind the difference in the number of the Uddeśan-kālas[4]. The Chūrṇikār of the Nandisūtra, Sri Jinadas Mahattar and the Vrittikār, Śri Haribhadra Sūri also write that the present Āgama is given the title 'Antagaḍadasão' as it has ten Adhyayanas in the first Varga[5]. The Chūrṇikār takes the meaning of 'Daśā' as 'Awasthā' (condition) also[6].

Three traditions are found to narrate the present Āgama : firstly, that of the samawāyānga; secondly, that of the Tatwārtha Vārtika, and thirdly, that of the Nandi Sūtra.

---

1. Samawao, painnagasamawao, Sutra 96.
2. Nandi Sutra, 88.
3. Samwayanga Vritti, page 112.
4. Samawayanga Vritti, page 112.
5. (a) Nandi with Churni, page 68.
   (b) Nandi with Vritti, page 83.
6. Nandi with the Churnipage 68. Dasatti Awastha.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

According to the first tradition, the present Āgama has ten Adhyayanas. The Sthānānga Sūtra supports it. The Sthānānga mentions the ten Adhyayanas and their headings, such as Nami, Mātanga, Somila, Ramagupta, Sudarśana, Jamāli, Bhagāli, Kimkaṣa, Ćilawaka, Pāla, and the Ambaṣhthaputtra.[1] These headings are fou d in the Tatwārthavartika also with some variance, such as, Nami, Mātang, Somila,Ramaguptā, Sudarśana, Yamalīka, Kambala, Pāla and Ambaṣthaputtra. Samawayanga mentions ten adhayans without giving their names. The present Āgama gives an account of the Antakṛīta Kewalīs, in groups of ten contemporaries of each Tīrthankara.[2] The Jayadhawala, too, supports this statement of the Tatwārthavrāt.ka. In the Nandisūtra mention is found neither of the ten Adhyayanas nor of their headings. On this basis, it can be inferred that the Samawāyānga and the Tatwārthavarṭika maintain the old tradition and the Nandi-Sūtra gives the Āgama in the form found at present. There are ten Adhyayanas of the first Varga out of the eight Vargas found at present, but their headings altogether differ from the above- said headings, i.e., Gautama, Samudra, Sāgara, Gambhīra, Stanita, Aćala Kāmpilya, Akśetra, Prasenjit and Viṣṇu. In the 'Sthānāngavritti' Sri Abhayadeva Suri acknowledges it as a variant 'Vācnā'[3]. This shows that the 'Vāćnā' of the 'Nandi' is different from the 'Vāćnā ' found in the 'Samawāyānga'.

The word 'Antagaḍa' has two Sanskrit forms—Antakṛita and Antakrit. Both have the same sense but 'gāda' goes more with the Sanskrit version 'Kṛita' so far as morphology is concerned.

The Content

This Āgama gives an excellent account of Vāsudeva Kṛiṣṇa and his family. The Dīkśā (initiation) and accomplishment of Gajasukamāla, the younger brother of Vāsudeva Kṛiṣṇa has been horripiliatingly narrated.

In the sixth Varga, is found an account of the incident occured with Arjuna, the gardener. An accident turned him to be a murderer and the other association made him a saint. It may not be admitted that a man changes with the circumstances and atmosphere, but, even then, it may be accepted that they are the cause of the rise and fall of a man.

1. Tatwarthavartika 1/20
2. Tatwarthavartika 1/20.
3. Sihany Vritti.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

By the Adhyayana of Atimuktaka Muni, the value of spiritual accomplishment can be well understood. Fasting alone is seen in this Āgama through out. The narrations of meditations are scanty. Lord Mahavīra had laid stress upon both—the fast and the meditation. In the classification of penance, fast is the outer penance and meditation is the inner one. Lord Mahavira in his penance-period, had observed both, fast and meditation. It is worth investigating why this Āgama lays so much stress on fasting only. This Āgama, a remanent in the succession of oblivion and reproduction, is valuable and worthy of research work from many points of view.

ANUTTAROWAWĀIYA-DASĀO

The title

This Āgama is the ninth Anga of the Dwādaśangī. As it containsten Adhyayanas regarding the Munis born in the Anuttara Swarga class, its title is given as 'Aṇuttarowawāiya-Dasāo'. The Nandi Sūtra mentions only three Vargas[1]. The Sthānānga quotes only ten Adhyayanas.[2] According to the Rajavārttika groups of ten Anuttaropapātika Munis, contemporaries of each Tīrthanker, have been narrated in it.[3] The Samawāyānga mentions the ten Adhyayanās and the three Vargas too.[4] But the headings of the ten Adhyayanas have not been given in it. According to the Sthānānga and the Tattwārthavārttika they read as, Riṣidasa, Dhanya, Sunakṣatra, Kārttika, Swasthan, Śālibhadra, Ānanda, Tetali, Daśārṇabhadra and Atimukta[5], and as Riṣidasa, Dhanya, Sunakṣatra, Kārttika, Nandanandana, Śātībhadra, Abhaya, Wāriṣeṇa, and Cilattaputra respectively. The above said Munis were the contemporaries of Lord Mahāvira, such is the opinion of the author of the Tattawārthavārttika.[6] In the Dhawalā we find Kārtikeya instead of Kārttika and Ānand instead of Nanda[7].

The present form of the Āgama is different from the 'Vaćna' of the Sthānāga and the Samawāyānga. Abhayadeva Sūrī holds that it is a different 'Vaćna'. In the form of the Āgama, that is available, three Adhyayanas, such

1. Nandi, Sutra, 89.
2. Thanam, 10/114.
3. Tattawarth varttikas 1/20, Kasayapahuda I, page 130.
4. Samawao, painnagasamawao, Sutra 97.
5. Thanam 10/114.
6. Tattwarthvarttika 1/20.
7. Satkhundagama 1/1/2.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

as Dhanya, Sunakshtra and Riṣidasa, are found. In the first Varga, only two Adhyayanas, named as Wārisṛeṇa and Abhaya, are seen.

The contents

This Āgama beautifully narrates the luxury and ascetic lives of many princes. The narration of the ascetic life of Dhanya Aṇagāra and his body emaciated due to the penance is noteworthy both from the literary and spiritual viewpoints.

PAṆHĀWĀGARAṆĀIN

The title

The present Āgama is the tenth Anga of the Dwādaśāngī. Its title has been mentioned as 'Paṇhāwāgaraṇāin' in the Samawāyanga Sūtra and the Nandī.[1] Its name is found as 'Paṇhāwāgaradasāo'[2] in the Sthānānga and the same reads as 'Paṇhāwāgaraṇadasāsu' in the Samawāyānga. It is, therefore inferred that the title mentioned in the Sthānānga is also in concurrence with the Samawāyānga. The Jayadhawalā and the Tattwārthavarttika note it as Paṇhāwāyaraṇa or Praśna-Vyākaraṇā.[3]

The Contents

Opinions differ regarding the contents of the present Āgama. The Sthānānga cites its ten Adhyayanas, such as, Upamā, Samkhyā. Riṣibhāṣita, Āċāryabhāṣitā, Mahāvira-bhāṣitā, Kṣaumaka-Praśna, Komala-Praśna, Ādarśa-Praśna, Anguṣṭha-Praśna and Bāhu-Praśna.[4] The headings of the Adhyayanas indicate well the contents they have.

According to the Samawāyānga and the Nandī, the present Āgama has various types of queries, sciences (vidyās) and the dialogues of the Devas dealt with.[5]

The Nandi notes fortyfive Adhyayanas of it, which do not accord with the Sthānānga. The Samawāyānga makes no mention of its Adhyayanas.

1. (a) Samawao painnagasamawao, Sutra 98.
   (b) Nandi, Sutra 90.
2. Thanam, 10/110.
3. (a) Kasayapahuda pt. I, page 131.
   (b) Tatwarthavarttika 1/20.
4. Thanam 10/116.
5. (a) Samawao, painnagasamawao, Sutra 98.
   (b) Nandi, Sutra, 90.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

But, from its 'Paṇhāwāgaraṇadasāsu' paragraph, it may be inferred that the Samawāyānga accepts the traditional ten Adhyayanas of the present Āgama . The said paragraph tells us that Pratyeka Buddhabhāśita, Āćārya-bhāṣita, Vīramaharṣi-Bhāṣita, Ādarśa-Praśna, Anguṣṭha-Praṣna, Bāhu-Praśna, Asi-Praśna, Maṇi-Praśna, Kṣauma-Praśna, Āditya-Praśna etc. have been dealt with in the 'Praśna-Vyākaraṇa-Dasā'. These headings can well be compared with those of ten Adhyayanas mentioned in the Sthānānga. Though the Uddeśana-Kālas have been mentioned as fortyfive, the exact number of the Adhyayanas cannot be decided definitely. The teaching of the Adhyayana on a deep topic could he spread over for many days.

According to the Tattwārthavārttika many queries have been expounded in this Āgama , depending on cause and inference by 'Ākṣepa' and 'Vikṣepa'. Also the Laukika (secular) and Vedic Arthas have been ascertained in it.[1]

The Jayadhawalā notes that this Āgama narrates the Naṣṭa, Muṣṭi, Ćintā, Lābha, Alābha, Sukha, Dukkha, Jīwan and Maraṇa with the help of the four kinds of fables, i.e. Ākṣepaṇī, Prakṣepaṇī, Samvejanī, and Nirvedanī, as well as purporting a query.[2]

The contents of the Āgama, as mentioned in the said works, is not found today. What is found covers the five Āśrawas (Hinsā, Asatya, Ćaurya, Ābrahmaćarya and Parigraha) and the five Samwaras (Ahimsa, Satya, Aćaurya, Brhmaćarya, and Aparigraha) only. The Nandi does not make mention of it at all. The Samawāyānga mentions the Adhyayanas beginning from Āćārya-Bhāṣita, while the Jayadhawala gives an account of the four kinds of fables beginning from Ākṣepanī. It may be inferred that the known contents of the Āgama formerly were in the form of the queries and subsequently, the learning of query etc. being lost, the remanent part formed the present Āgama. It is also likely that the old form of the present Āgama being lost, some Āćarya composed it a fresh. The 'Vacna' of this Āgama given in the Nandi, does not narrate the Āśrawas and the Samwaras, but the Ćūrṇi of the Nandi does it.[3] Likely it is that the Ćūrṇikāra did it on the basis of the present form of the Āgama.

---

1. Tattwarthavarttika 1/20.
2. Kasayapahuda part I, page 131.
3. Nandi Sutra with the Curni on page 12.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

VIVĀGASUYAM

The title

The present Āgama is the 11th Anga of the Dwādaśāngī. The Vipāka (fruit) of the Sukṛita and Duṣkṛita deeds has been dealt with in it. therefore the title 'Vivāgasuyam.'[1] The Sthānānnga gives its title as 'Kāmma Vivāgadasā.'[2]

The Contents

This Āgama has two divisions, i.e. the Dukha Vipāka and the Sukha Vipāka. The first division contains the topics on the lives of the individuals doing bad deeds. On going through the said contents, it appears that, in every age, there are some individuals who commit horrible crimes on account of their cruel mentality. It is also gathered how the criminal deeds affect their physical and mental states. The second division has the life-contents of those individuals who perform good deeds. As the commitant of cruel deeds are found in every age, so are the persons having the tranquil mentality. Conjunction of goodness and badness is not without cause.

Conclusion

The Sthānānga Sūtra enamurates ten Adhyayanas of the Karma-Vipāka such as, Mṛigāputra, Gotrāsa, Anḍa, Sakata, Māhan, Nandiṣeṇa, Śaurika Udumbara, Sahasoddāha-Āmaraka, and Kumar Licćhavī. These headings have been taken from some other 'Vaćna'.

The account of the Anga-Sūtras and the peculiar form they are presently found in are not fully harmonic. On this basis, it may be inferred that the obtained form of the Āgama Sūtras in not ancient only, but is a mixture of the editions of old and new, both. This will form an important subject of investigation as to how much of the present form of the Anga-Sūtra is ancient and how much modern, as well as who of the Āćaryas composed it and when. The language, the subject-matter and the style of ascertainment will surely form the basis of investigation. This is of course, highly toilsome, but not impossible.

---

1. (a) Samawao, painnagasamawao, Sutra 99
   (b) Nandi Sutra 91.
   (c) Tattawarthavarttika 1/20
   (d) Kasayapahuda, Pt I, page 132.
2. Thanam 10/110.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Accomplishment of the work

In the accomplishment of this task, there has been the contribution of many a Muni. I bless them that their devotedness to the performance be ever more developed.

For the editing of this Āgama major amount of credit goes to my learned disciple Muni Shri Nath Mali. Day in and day out he has devoted himself to this arduous task. It is because of his concentrated efforts that the work has got such a nice accomplishment. Otherwise, it would not have been an easy job. On account of his in-born Yogic temperament he was capable of attaining that concentration of mind which was essential for achieving the end. On account of his constant devotion to the work of research in the field of Āgamic literature his intellect has achieved sufficient sharpness in finding out immediately the hidden meaning and mysteries of Āgamic expositions. His keen sense of obedience, perseverance and absolute dedication have contributed much in developing his personality. The above qualities are seen in him since his early age. Right from the time when he joined the Sangha I have been an observor of these qualities of his, which have so developed. His capacity to undertake to a big task has given me ever increasing satisfaction.

I have undertaken this hard and tremendous task of editing the Āgamas relying on the strength of such learned disciples in the Sangha. I am now, quite confident that I shall be able to complete this hazardous work with the help and assistance of my obedient, selfless and devout disciples.

On the holy occasion of this 25th centinary of Lord Mahavira, I have a feeling of great pleasure in presenting to the people the teachings of the Lord.

Anuvrata Vihar

Delhi

Āchārya Tulasi

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विसयाणुक्कम

नायाधम्मकहाओ

पढमं अज्झयणं सू० १-२१३ पृ० १-७३

उक्खेव-पदं १, मेहस्स नगरपरिवारादि-वण्णग-पदं ११, धारिणीए सुमिणदंसण-पदं १८ सेणियस्स सुमिणनिवेदण-पदं १६, सेणियस्स सुमिणमहिम-निदंसण-पदं २०, धारिणीए सुमिणजागरिया-पदं २१, सुमिणपाढग-निमंतण-पदं २२, सेणियस्स सुमिणफल-पुच्छा-पदं २७, सुमिणफलकहण-पदं २६, सुमिणपाढग-विसज्जण-पदं ३०, सेणियस्स सुमिणपसंसा-पदं ३१, धारिणीए दोहल-पदं ३२, धारिणीए चिंता-पदं ३४, पडिचारियाण चिंताकारण-पुच्छा-पदं ३५, पडिचरियाणं सेणियस्स निवेदण-पदं ३६, सेणियस्स चिंताकारण-पुच्छा-पदं ४०, धारिणीए चिंताकारणनिवेदण-पदं ४५, सेणियस्स आसासण-पदं ४६, अभयकुमारस्स सेणियं पइ चिंताकारणपुच्छा-पदं ४७, सेणियस्स चिंताकारणनिवेदण-पदं ४६, अभयस्स आसासण-पदं ५०, अभयस्स देवाराहण-पदं ५२, देवागमण-पदं ५४, देवस्स अकालमेह-विउव्वण-पदं ५६, धारिणीए दोहद-पूरण-पदं ६०, अभएण देवस्स पडिविसज्जण-पदं ७०, धारिणीए गब्भचरिया-पदं ७२, मेहस्स जम्म-वद्धावण-पदं ७३। मेहस्स जम्मुस्सवकरण-पदं ७६, मेहस्स नामादिसक्कार (संस्कार) करण-पदं ८१, मेहस्स लालणपालण-पदं ८२, मेहस्स कलागहण-पदं ८४, मेहस्स पाणिग्गहण-पदं ८६, पीइदाण-पदं ६१, महावीरसमवसरण-पदं ६४, मेहस्स जिन्नासा-पदं ६५, कंचुइज्जपुरिसस्स निवेदण-पदं ६७, मेहस्स भगवओ समीवे गमण-पदं ६८, धम्मदेसणा-पदं १००, मेहस्स पव्वज्जासंकप्प-पदं १०१, मेहस्स अम्मापिऊणं निवेदण-पदं १०२, धारिणीए सोगाकुलदसा-पदं १०५, धारिणीए मेहस्स य परिसंवाद-पदं १०६, मेहस्स एगदिवसरज्ज-पदं ११४, मेहस्स निक्खमण-पाओग्ग-उवगरण-पदं १२१, कासवेण मेहस्स अग्गकेसकप्पण-पदं १२४ मेहस्स अलंकरण-पदं १२८, मेहस्स अभिनिक्खमणमहुस्सव-पदं १२६, सिस्सभिक्खादाण-पदं १४५, मेहस्स पव्वज्जागहण-पदं १४६, मेहस्स मणो-संकिलेस-पदं १५२, मेहस्स संबोध-पदं १५५, भगवया सुमेरुप्पम-भवनिरूवण-पदं १५६, भगवया मेरुप्पभ-भवनिरूवण-पदं १६३, मेरुप्पभेण मंडलनिम्माण-पदं १७४, दवग्गिभीतसावयाणं मंडलपवेस-पदं १७८, मेरुप्पभस्स पादुक्खेव-पदं १८०, तीय संदब्भे वट्टमाण-तितिक्खोवदेस-पदं १८८, मेहस्स जाइसरण-पदं १६०, मेहस्स समप्पणपुव्वं पुणो पव्वज्जा-पदं १६१, मेहस्स निग्गंठचरिया-पदं १६४, मेहस्स

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भिक्खुपडिमा-पदं १९६, मेहस्स गुणरयणसंवच्छर-पदं १९९, मेहस्स सरीरदसा-पदं २०२, मेहस्स विपुलपव्वए अणसण-पदं २०३, मेहस्स समाहिमरण-पदं २०८, थरेहिं मेहस्स आयाणभंडसमप्पण-पदं २०९, गोयमपुच्छाए भगवओ उत्तर-पदं २१०, निक्खेव-पदं २१३।

•

बीयं अज्झयणं सू० १-७७ पृ० ७४—९२

उक्खेव-पदं १, धणसत्थवाह-पदं ७, विजयतक्कर-पदं ११, भद्दाए संताणमणोरह-पदं १२, भद्दाए देवदिन्न-पुत्तपसव-पदं १६, देवदिन्नस्स कीडा-पदं २५, देवदिन्नस्स अपहार-पदं २८, देवदिन्नस्स गवेसणा-पदं २९, विजयतक्करस्स निग्गह-पदं ३३, देवदिन्नस्स नीहरण-पदं ३४, धणस्स निग्गह-पदं ३५, धणस्स घराओ आहाराणयण-पदं ३७, विजयतक्करेण संविभाग-मग्गण-पदं ३९, धणस्स तन्निसेध-पदं ४०, आबाधितस्स धणस्स विजयतक्करावेक्खा-पदं ४३, विजयतक्करेण तन्निसेध-पदं ४५, धणेण पुणो कथिते विजएण संविभागमग्गण-पदं ४७, धणेण विजयस्स संविभागदाण-पदं ५२, पंथगस्स भद्दाए साटोवं तन्निवेदण-पदं ५५, भद्दाए कोव-पदं ५७, धणस्स चारमुत्ति-पदं ५८, धणस्स सम्माण-पदं ५९, भद्दाए कोवोव-समपुव्वं सम्माण-पदं ६१, विजय-णायस्स निगमण-पदं ६७, धण-णायस्स निगमण-पदं ६९, निक्खेव-पदं ७७।

•

तच्चं अज्झयणं सू० १-३५ पृ० ९३—१०२

उक्खेव-पदं १, मयूरीअंड-पदं ५, सत्थवाहदारग-पदं ६, देवदत्ता गणिया-पदं ८, सत्थवाह-दारगाणं उज्जाणकीडा-पदं ९, सत्थवाहदारगेहिं मयूरी अंडगाणयण-पदं १७, सागरदत्त-पुत्तस्स संदेहेण अंडयविणास-पदं २१, जिणदत्तपुत्तस्स सद्धाए मयूर-लद्धि-पदं २५, निक्खेव-पदं ३५।

•

चउत्थं अज्झयणं सू० १-२३ पृ० १०३—१०८

उक्खेव-पदं १, पावसियालग-पदं ६, कुम्भ-पदं ७, पावसियालगाणं आहारगवेसण-पदं ८, कुम्माणं साहरण-पदं १०, अगुत्तकुम्मस्स मच्चु-पदं १३, गुत्तकुम्मस्स सोक्ख-पदं १९, निक्खेव-पदं २३।

•

पंचमं अज्झयणं सू० १-१३० पृ० १०९—१३९

उक्खेव-पदं १, थावच्चापुत्त-पदं ७, अरिट्ठनेमि-समवसरण-पदं १०, कण्हस्स पज्जुवासणा-पदं १२, थावच्चापुत्तस्स पव्वज्जासंकप्प-पदं १८, कण्हस्स थावच्चापुत्तस्स यपरिसंवाद-पदं २२, कण्हस्स जोगक्खेम-घोसणा-पदं २६, थावच्चापुत्तस्स अभिनिक्खमण-पदं २७, सिस्सभिक्खा-दाण-पदं ३०, थावच्चापुत्तस्स पव्वज्जागहण-पदं ३४, थावच्चापुत्तस्स अणगारचरिया-पदं ३५, थावच्चापुत्तस्स जणवयविहार-पदं ३९. सेलगराय-पदं ४२, सेलगस्स गिहिधम्म-पडिवत्ति-पदं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४५, सेलगस्स समणोवासयचरिया-पदं ४७, सुदंसणसेट्ठि-पदं ५१, सुयपरिव्वायग-पदं ५२, सोयमूलयधम्म-पदं ५५, सुदंसणस्स सोयमूलय-धम्मपडिवत्ति-पद ५६, थावच्चापुत्तस्ससुदंसणेण संवाद-पदं ५८, सुदंसणस्स विणयमूलग-धम्मपडिवत्ति-पदं ६२, सुएण सुदंसणस्स पडिसंबोध-पयत्त-पदं ६५, सुयस्स थावच्चापुत्तेण संवाद-पदं ७०, सरिसवयाणं भक्खाभक्ख-पदं ७३, कुलत्थाणं भक्खाभक्ख-पदं, ७४, मासाणं भक्खाभक्ख-पदं ७५, अत्थित्त-पण्ह-पदं ७६, सुयस्स परिव्वायगसहस्सेण पव्वज्जा-पदं ७७, सुयस्स जणवयविहार-पदं ८१, थावच्चापुत्तस्स परिनिव्वाण-पदं ८३, सेलगस्स अभिनिक्खमणाभिप्पाय-पदं ८५, मंडुयस्स रायाभिसेय-पदं ९२, सेलयस्स निक्खमणाभिसेय-पदं ९६, सेलगस्स पव्वज्जा-पदं ९९, सेलगस्स अणगारचरिया-पदं १००, सुयस्स परिनिव्वाण-पदं १०२, सेलगस्स रोगातंक-पदं १०६, सेलगस्स तिगिच्छा-पदं ११०, सेलगस्स पमत्तविहार-पदं ११७, साहूहिं सेलगस्स परिच्चाय-पदं ११८, पंथगस्स चाउम्मासिय-खामणा-पदं ११९, सेलगस्स कोव-पदं १२२, सेलगस्स अब्भुज्जयविहार-पदं १२४, निक्खेव-पदं १३० ।

●

छट्ठं अज्झयणं सू० १-५ पृ० १४०-१४२

उक्खेव-पदं १, गरुयत्त-लहुयत्त-पदं ४, निक्खेव-पदं ५

●

सत्तमं अज्झयणं सू० १-४४ पृ० १४३-१५४

उक्खेव-पदं १, धणसत्थवाह-पदं ३, धणस्स परिक्खापयोग-पदं ६ परिक्खापरिणाम-पदं २२, निक्खेव-पदं ४४ ।

●

अट्ठमं अज्झयणं सू० १-२३६ पृ० १५५-२०३

उक्खेव-पदं १, बल-राय-पदं २, महब्बलराय-पदं ९, महब्बलादीणं पव्वज्जा-पदं १६, महब्बलस्स तवविसय-माया-पदं १८, महब्बलादीणं विविहतवचरण-पदं १९, समाहिमरण-पदं २६, पच्चायाति-पदं २७, मल्लिस्स मोहणघर-निम्माण-पदं ४०, पडिबुद्धिराय-पदं ४३, चंदच्छाय-राय-पदं ६४, रुप्पि-राय-पदं ९०, संख-राय-पदं १०१, अदीणसत्तु-राय-पदं ११४, जियसत्तु-राय-पदं १३८, दूयाणं संदेस-निवेदण-पदं १५७, कुंभएण दूयाणं असक्कार-पदं १५९, जियसत्तुपामोक्खाणं कुंभएणं जुज्झ-पदं १६१, मल्लीए चिंताहेउ-पुच्छा-पदं १६९, कुंभगस्स चिंताहेउ-कहण-पदं १७२, मल्लीए उवायनिरूवण-पदं १७३, मल्लीए जियसत्तु-पामोक्खाणं संबोह-पदं १७५, जियसत्तुपामोक्खाणं जाइस्सरण-पदं १८१, मल्लीए पव्वज्जा-पदं १८२, मल्लिस्स केवलणाण-पदं २२५, जियसत्तुपामोक्खाणं पव्वज्जा-पदं २२७, मल्लिस्स सिस्ससंपदा-पदं २३० मल्लिस्स निव्वाण-पदं २३५, निक्खेव-पदं २३६ ।

●

नवमं अज्झयणं सू० १-६४ पृ० २०४-२२०

उक्खेव-पदं १, मागंदिय-दारगाणं समुद्दजत्ता-पदं ४, नावा भंग-पदं ९, रयणदीव-पदं ११, रयणदीवदेवया-पदं १६, रयणदीवदेवयाए मागंदिय-पुत्ताणं निद्देस-पदं १९, मागंदियपुत्ताणं

वणसंडगमण-पदं २१, सेलगजक्ख-पदं २९, रयणदीवदेवया-उवसग्ग-पदं ३७, जिणरक्खियविवत्ति-पदं ४१, जिणपालियस्स चंपागमण-पदं ४५, निक्खेव-पदं ५४।

दसमं अज्झयणं सू० १-६ पृ० २२१-२२३

उक्खेव-पदं १, परिहायमाण-पदं २, परिवड्ढमाण-पदं ४, निक्खेव-पदं ६।

एक्कारसमं अज्झयणं सू० १-१० पृ० २२४-२२६

उक्खेव-पदं १, देसविराहय-पदं २, देसाराहय-पदं ४, सव्वविराहय-पदं ६, सव्वाराहय-पदं निक्खेव-पदं १०।

बारसमं अज्झयणं सू० १-४९ पृ० २२७-२३६

उक्खेव-पदं १, फरिहोदग-पदं ३, जियसत्तुणा पाणभोयणपसंसा-पदं ४, सुबुद्धिस्स उवेहा-पदं, ६, जियसत्तुणा फरिहोदगस्स गरहा-पदं ११, सुबुद्धिस्स उवेहा-पदं १५, जियसत्तुस्स विरोध-पदं १८, सुबुद्धिणा जलसोधण-पदं १९, सुबुद्धिणा जलपेसण-पदं २०, जियसत्तुणा उदगरयणपसंसा-पदं २१, जियसत्तुणा उदगाणयणपुच्छा-पदं २४, सुबुद्धिस्स उत्तर-पदं २७, जियसत्तुणा जलसोधण-पदं ३०, जियसत्तुस्स जिण्णासा-पदं ३१, सुबुद्धिस्स उत्तर-पदं ३२, जियसत्तुस्स समणोवासयत्त-पदं ३४, पव्वज्जा-पदं ३८, निक्खेव-पदं ४९।

तेरसमं अज्झयणं सू० १-४५ पृ० २३७-२४७

उक्खेव-पदं १, गोयमस्स पुच्छा-पदं ४, भगवओ उत्तरे दद्दुरदेवस्स नंदभव-पदं ७, नंदस्स धम्मपडिवत्ति-पदं ९, मिच्छत्तपडिवत्ति-पदं १३, पोक्खरिणी-निम्माण-पदं १५, वणसंड-पदं १८, चित्तसभा-पदं २०, महाणससाला-पदं २१, तिगिच्छियसाला-पदं २२, अलंकारियसभा-पदं २३, नंदस्स पसंसा-पदं २४, नंदस्स रोगुप्पत्ति-पदं २८, तिगिच्छा-पदं २९, भगवओ उत्तरे दद्दुरदेवस्स दद्दुरभव-पदं ३२, दद्दुरस्स जाइसरण-पदं ३५, भगवओ रायगिहे समवसरण-पदं ३७, दद्दुरस्स समवसरणं पइ गमण-पदं ३९, दद्दुरस्स मच्चु-पदं ४१, निक्खेव-पदं ४५।

चोद्दसमं अज्झयणं सू० १-८९ पृ० २४८-२६५

उक्खेव-पदं १, पोट्टिलाए कीडा-पदं ८, तेयलिपुत्तस्स आसत्ति-पदं ९, पोट्टिलाए वरण-पदं १२ पोट्टिलाए विवाह-पदं १८, कणगरहस्स रज्जासत्ति-पदं २१, पउमावईए अमच्चेणमंतणा-पदं २२, अवच्च परिवत्तण-पदं २४, दारियाए मयकिच्च-पदं ३१, अमच्चपुत्तस्स उस्सव-पदं ३३, पोट्टिलाए अप्पियत्त-पदं ३६, पोट्टिलाए दाणसाला-पदं ३८, अज्जा-संघाडगस्स भिक्खायरियागमण-पदं ४०, पोट्टिलाए अमच्चपसायोवाय-पुच्छा-पदं ४३, अज्जा-संघाडगस्स उत्तर-पदं ४४, पोट्टिलाए सावया-पदं ४५, पोट्टिलाए पव्वज्जा-पदं ५०, कणगरहस्स

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मच्चु-पदं ५५, कणगज्झयस्स रायाभिसेय-पदं ५७, तेयलिपुत्तस्स सम्माण-पदं ६०, पोट्टिलदेवेण तेयलिपुत्तस्स संबोह-पदं ६२, तेयलिपुत्तस्स मरणचेट्ठा-पदं ७२, तेयलिपुत्तस्स विम्हयकरण-पदं ७७, पोट्टिलदेवस्स संवाद-पदं ७८, तेयलिपुत्तस्स जाईसरणपुव्वं पव्वज्जा-पदं ८१, केवलणाण-पदं ८३, कणगज्झयस्स सावगधम्म-पदं ८५, तेयलिपुत्तस्स सिद्धि-पदं ८८, निक्खेव-पदं ८९ ।

•

पण्णरसमं अज्झयणं सू० १-२२ पृ० २६६-२७१

उक्खेव-पदं १, धणस्स घोषणा-पदं ६, धणस्स निद्देस-पदं ११, निद्देसपालणस्स निगमण-पदं १३, निद्देसाऽपालगस्स निगमण-पदं १५, धणस्स अहिच्छत्ताऽगमण-पदं १७, धणस्स पव्वज्जा-पदं २०, निक्खेव-पदं २२ ।

•

सोलसमं अज्झयणं सू० १-३२७ पृ० २७२-३३५

उक्खेव-पदं १, नागसिरी-कहाणग-पदं ४, नागसिरीए तित्तालाउय-उवक्खडण-पदं ६, धम्मरुइस्स तित्तालाउय-दाण-पद ११, तित्तालाउय-परिट्ठावण-पदं १६, अहिंसट्ठं तित्तालाउय-भक्खण-पदं १९, धम्मरुइस्स समाहिमरण-पदं, २०, साहूहिं धम्मरुइस्स गवेसण-पदं २२, साहूहिं धम्मरुइस्स समाहिमरण-निवेदण-पदं २३, धम्मरुइस्स सइसभा-पदं २४, नागसिरीए गरिहापदं २५, नागसिरीए गिहनिव्वासण-पदं २८, नागसिरीए भवभमण-पदं ३०, सूमालिया-कहाणगपदं ३२, सूमालियाए सागरेण सद्धिं विवाह-पदं ३७, सागरस्स पलायण-पदं ५२, सूमालियाए चिंता-पदं ६२, सागरदत्तेण जिणदत्तस्स उवालंभ-पदं ६७, सागरस्स पुणोगमण-व्वुदास-पदं ६८, सूमालियाए दमगेण सद्धिं पुणव्विवाह-पदं ७०, दमगस्स पलायण-पदं ८० सूमालियाए पुणोचिंता-पदं ८७, सूमालियाए दाणसाला-पदं ९२, अज्जा-संघाडगस्स भिक्खारियागमण-पदं ९४, सूमालियाए सागरपसायोवाय-पुच्छा-पदं ९७, अज्जा-संघाडगस्स उत्तर-पदं९८, सूमालियाए साविया-पदं-९९, सूमालियाए पव्वज्जा-पदं १०४, सूमालियाए आतावणा-पदं १०६, सूमालियाए नियाण-पदं १०९, सूमालियाए बाउसियत्त-पदं ११४, सूमायालिए पुढोविहार-पदं ११८, दोवई-कहाणग-पदं, १२०, दोवईए सयंवर-संकप्प-पदं, १३१, बारवईए दूयपेसण- पदं १३२, कण्हस्स पत्थाण-पदं १३६, हत्थिणाउरे दूयपेसण-पदं १४२, दूयपेसण-पदं १४५, रायसहस्साणं पत्थाण-पदं १४६, दुवयस्स आतित्थ-पदं १४७, दोवईए सयंबर-पदं १५३, दोवईए पंडव-वरण-पदं १६४, पाणिग्गहण-पदं १६७, पंडुरायस्स निमंतण-पदं १७०, पंडुरायस्स आतित्थ-पदं १७२, कल्लाणकार-पदं १८१, नारदस्स आगमण-पदं १८४, नारदस्स अवरकंका-गमण-पदं १९१, दोवईए साहरण-पदं २०१, दोवईए चिंता-पदं २०७, पउमनाभस्स आसासण-पदं २०८, दोवईए गवेषणा-पदं २१२, दोवईए उवलद्धि-पदं २२६, सपंडवस्स कण्हस्स पयाण-पदं २३३, कण्हस्स देवाराधण-पदं २३७, कण्हस्स मग्गजायणा-पदं २३९, कण्हेण दूयपेसण-पदं, २४३, पउमनाभेण दूयस्स अवमाण-पदं २४५, दूयस्स पुणो आगमण-पदं २४६, पउमनाभस्स पंडवेहिं जुद्ध-पदं २४७, पंडवाणं पराजय-पदं २५२,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कण्हेण पराजय-हेउ-कहणपुव्वं जुज्भ-पदं २५४, पउमनाभस्स पलायण-पदं २६०, कण्हस्स नरसिहरूव-पदं २६१ पउमनाभस्स सरण-पदं २६३, सदोवई-पंडवस्स कण्हस्स पच्चावट्टण-पदं २६६, वासुदेव-जुयलस्स संखसद्देण मिलण-पदं २६८, कविलेण पउमनाभस्स निव्वासण-पदं २७८, अपरिक्खणीयपरिक्खा-पदं २८१, कण्हेण पंडवाणं निव्वासण-पदं २८६, पंडुमहुरा-निवेसण-पदं ३०३, पंडुसेण जम्म-पदं ३०४, पंडवाणं दोवईए य पव्वज्जा-पदं ३१०, अरिट्ठनेमिस्स निव्वाण-पदं ३१८, पंडवाणं निव्वाण-पदं ३२३, दोवईए देवत्त-पदं ३२५, निक्खेव-पदं ३२७ ।

•

सत्तरसमं अज्झयणं **सू० १-३७** **पृ० ३३६-३४६**

उक्खेव-पदं १, कालियदीव-जत्ता-पदं ५, कालियदीवे आस-पेच्छण-पदं १४, संजत्तियाणं पुणरागमण-पदं १६, आसाण आणयण-पदं १७, अमुच्छिय-आसाणं सायत्त-विहार-पदं २४, निगमण-पदं २५, मुच्छिय-आसाणं परायत्त-पदं २६, निगमण-पदं ३६ ।

•

अट्ठारसमं अज्झयणं **सू० १-६२** **पृ० ३४७-३५८**

उक्खेव-पदं १, चिलाय-दासचेडस्स विग्गह-पदं ६, चिलायस्स गिहाओ निक्कासण-पदं १०, चिलायस्स दुव्वसण-पवत्ति-पदं १६, चोरपल्ली-पदं १८, चिलायस्स चोरपल्ली-गमण-पदं २३, विजयस्स मच्चु-पदं २६, चिलायस्स चोरसेणावइत्त-पदं २८, चिलायस्स धणस्स गिहे चोरिय-पदं ३३, नगरगुत्तिएहिं चोरनिग्गह-पदं ३६, चिलायस्स चोरपल्लीतो पलायण-पदं ४४, निगमण-पदं ४८, धणस्स संसुमाकए कंदण-पदं ४६, धणेणं अडवि-लंघणट्ठं सुया-मंससोणियाहार-पदं ५१, निगमण-पदं ६० ।

•

एगूणवीसइमं अज्झयणं **सू० १-४६** **पृ० ३५६-३६७**

उक्खेव-पदं १, कंडरीयस्स पव्वज्जा-पदं ८, कंडरीयस्स वेयणा-पदं २०, कंडरीयस्स तिगिच्छा-पदं २२, कंडरीयस्स पमत्त-विहार-पदं २७, पुंडरीएण पडिबोह-पदं २६, कंडरी-यस्स पव्वज्जा-परिच्चाय-पदं ३२, पुंडरीयस्स पव्वज्जा-पदं ३८, कंडरीयस्स मच्चु-पदं ३६, निगमण-पदं ४२, पुंडरीयस्स आराहणा-पदं ४३, निगमण-पदं ४७, निक्खेव-पदं ४८,

•

बीओ सुयक्खंधो

पढमो वग्गो

१-५ अज्झयणाणि **सू० १-६३** **पृ० ३६८-३८०**

उक्खेव-पदं १, कालीदेवी-पदं १०, कालीए भगवओ वंदण-पदं ११, गोयमस्स पसिण-पदं १३, भगवओ उत्तरे काली-पदं १५, कालीए पव्वज्जा-पदं १६, कालीए बाउसियत्त-पदं ३४, कालीए पुढो विहार-पदं ३८, कालीए मच्चु-पदं ३६, निक्खेव-पदं ४५ । २-५ अज्झयणाणि

•

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संकेत निर्देशिका

• ० ये दोनों बिन्दु पाठपूर्ति के द्योतक है। पाठपूर्ति के प्रारम्भ में भरा बिन्दु [•[और उसके समापन में रिक्त बिन्दु [०] रखा गया है। देखें-पृष्ठ २ सू ६।

[?] कोष्ठकवर्ती प्रश्नचिन्ह [?] अदर्शों में अप्राप्त किन्तु आवश्यक पाठ के अस्तित्व का सूचक है। देखें—पृष्ठ ३. सूत्र ७।

' ' ये दो या इससे अधिक शब्दों के स्थान में पाठान्तर होने का सूचक है। देखें पृष्ठ २ सू० ४। 'वण्णओ' व 'जाव' शब्द के टिप्पण में उसके पूर्ति स्थल का निर्देश है। देखें—पृष्ठ १ टिप्पण ३ और पृष्ठ ३ सूत्र ८।

× क्राश [×] पाठ न होने का द्योतक है। देखें—पृष्ठ ३ टिप्पण ४।

० पाठ के पूर्व या अन्त में खाली बिन्दु [०] अपूर्ण पाठ का द्योतक है। देखें—पृ० ३ सूत्र ७ टिप्पण ५।

'जहा' 'तहेव' आदि पर टिप्पण में दिए गए सूत्रांक उसकी पूर्ति के सूचक हैं। देखें—पृष्ठ ३०१ सूत्र ७ तथा पृष्ठ ३७८ सूत्र ५०।

क, ख, ग, घ, च, छ, ब, देखें—सम्पादकीय में 'प्रति-परिचय' शीर्षक।

'व्या० वि' व्याकरण विमर्श। देखें—पृष्ठ ३६६ टिप्पण १।

'क्व' क्वचित् प्रयुक्तादर्श।

सं० पा० संक्षिप्त पाठ का सूचक है। देखें—पृष्ठ ५ टिप्पण १।

वृपा वृत्ति-सम्मत पाठान्तर। देखें—पृष्ठ १० टिप्पण ३।

वृ वृत्ति का सूचक है। देखें—पृष्ठ ६ टिप्पण १७।

पू० पूर्णपाठार्थं द्रष्टव्यम्। देखें-पृष्ठ ५२६ टिप्पण १।

अं० अंतगडदसाओ।

अ० अणुत्तरोववाइयदसाओ।

उवा० उवासगदसाओ।

ओ० ओवाइयं।

ना० नायाधम्मकहाओ।

भ०, भग०, भगवई।

राय० रायपसेणइयं।

पण्हा० पण्हावागरणाइं।

वि० विवागसूयं।

सूय० सूयगडो।

जंबू० जंबूदीवपण्णत्ति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नायाधम्मकहाओ

पढमं अज्झयणं

उक्खित्तणाए

उक्खेव-पदं

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नामं नयरी होत्था—वण्णओ[1] ।।

२. तीसे णं चंपाए नयरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए पुण्णभद्दे नामं चेइए[2] होत्था—वण्णओ[3] ।।

३. तत्थ णं चंपाए नयरीए कोणिए नामं राया होत्था—वण्णओ[4] ।।

४. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी अज्जसुहम्मे नामं थेरे जातिसंपण्णे कुलसंपण्णे बल-रूव-विणय-नाण-दंसण-चरित्त[5]-लाघव-संपण्णे ओयंसी तेयंसी वच्चंसी जसंसी जियकोहे जियमाणे जियमाए जियलोहे 'जिइंदिए[6] जियनिद्दे'[7] जियपरीसहे जीवियास[8]-मरणभयविप्पमुक्के तवप्पहाणे गुणप्पहाणे एवं—करण-चरण-निग्गह-निच्छय-अज्जव-मद्दव-लाघव-खंति-गुत्ति-मुत्ति-विज्जा-मंत-बंभ[9]-वेय-नय-नियम-सच्च-सोय-नाण-दंसण-चरित्तप्पहाणे ओराले[10] घोरे घोरव्वए[11] घोरतवस्सी घोरबंभचेरवासी उच्छूढसरीरे संखित्त-विउल-तेयलेस्से चोद्दसपुव्वी[12] चउनाणोवगए पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं संपरि-वुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे[13] सुहंसुहेणं विहरमाणे

---

१. ओ० सू० १ ।

२. चेतिए (क, ख, ग) ।

३. ओ० सू० २-१३ ।

४. ओ० सू० १४ ।

५. चरित्त लज्जा (राय० सू० ६८६) ।

६. जियइंदिए (ख) ।

७. जियनिद्दे जितिंदिए (राय० सू० ६८६) ।

८. जीवियासा (ग, घ) ।

९. बंभचेर (ख, घ) । वृत्तौ 'ब्रह्म' पदमेवव्याख्यातमस्ति, यथा—ब्रह्म—ब्रह्मचर्यं सर्वमेव वा कुशलानुष्ठानम् । कासुचित् प्रतिषु 'बंभचेर' इति मूलपाठरूपेण परिवर्तितमभूत् ।

१०. उराले (ख, घ) ।

११. घोरगुणे (राय० सू० ६८६) ।

१२. चोदस० (ख); चउद्दस० (ग) ।

१३. दूतिज्ज० (ख, ग) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'जेणेव चंपा नयरी'[1], जेणेव पुण्णभद्दे चेतिए'[2] तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति ॥

५. 'तए णं'[3] चंपाए नयरीए परिसा निग्गया'[4] । धम्मो कहिओ । परिसा जामेव दिसिं पाउब्भूया, तामेव दिसिं पडिगया ॥

६. तेणं कालेणं तेणं समएणं अज्जसुहम्मस्स अणगारस्स जेट्ठे अंतेवासी अज्जजंबू नामं अणगारे कासव[5] गोत्तेणं सत्तुस्सेहे[6] •समचउरंस-संठाण-संठिए वइररिसह-णाराय-संघयणे कणग-पुलग-निघस-पम्ह-गोरे उग्गतवे दित्ततवे तत्ततवे महातवे उराले घोरे घोरगुणे घोरतवस्सी घोरबंभचेरवासी उच्छूढसरीरे संखित्त-विउल-तेयलेस्से° अज्जसुहम्मस्स थेरस्स अदूरसामंते उड्ढंजाणू अहोसिरे झाणकोट्ठोवगए संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

७. तए णं से अज्जजंबूनामे अणगारे जायसड्ढे जायसंसए[7] जायकोउहल्ले
'संजायसड्ढे संजायसंसए संजायकोउहल्ले
उप्पण्णसड्ढे उप्पण्णसंसए उप्पण्णकोउहल्ले'[8]
समुप्पण्णसड्ढे समुप्पण्णसंसए समुप्पण्णकोउहल्ले[9] उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणामेव अज्जसुहम्मे थेरे, तेणामेव उवागच्छइ,उवागच्छित्ता 'अज्जसुहम्मे थेरे'[10] तिक्खुत्तो 'आयाहिण-पयाहिणं'[11] करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता अज्ज-

---

१. नगरी (ग) ।

२. क्वचिद् 'राजगृहे गुणसिलके' इति दृश्यते स चापपाठ इति मन्यते (वृ) ।

३. तेणं कालेणं (ख); तेणं (घ) ।

४. निग्गया । कोणितो निग्गतो (ग); निग्गया । कोणिओ निग्गओ (घ) । वृत्तौ—परिषत्-कूणिकराजादिको लोको निर्गता—निःसृता—एवं व्याख्यातमस्ति । अनेन 'परिसा निग्गया' इत्येव मूलपाठः संभाव्यते । 'कोणिओ निग्गओ' इति व्याख्यांशो मूलपाठत्वेन परिवर्तितोभूत् । उपासकदशासु (१।१६) राजनिर्गमस्य स्वतंत्र सूत्रमपि दृश्यते ।

५. विभक्तिरहितं पदम् । काश्यपो गोत्रेण इति वृत्तिः ।

६. सं० पा०—सत्तुस्सेहे जाव अज्जसुहम्मस्स ।

७. °संसते (ख, ग) ।

८. औपपातिक (८३) सूत्रे क्रमभेदोविद्यते, यथा—जायसड्ढे° उप्पण्णसड्ढे° संजायसड्ढे° समुप्पण्णसड्ढे° ।

९. °कोऊहल्ले (ख) ।

१०. अज्जसुहम्मं थेरं (वृपा) । औपपातिक (८३) सूत्रे तथा रायपसेणइय (१०) सूत्रेपि एतत्सदृशप्रकरणे 'समणं भगवं महावीरं' इति द्वितीयान्तपदं लभ्यते । अत्र सप्तम्यन्तपदं लभ्यते । वृत्तिकृता एतदेव प्रमाणीकृतम्—'अज्जसुहम्मे थेरे' इत्यत्र षष्ठ्यर्थे सप्तमी (वृ) ।

११. आताहिणपदाहिणं (ग), आयाहिणं (घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुहम्मस्स थेरस्स नच्चासण्णे नातिदूरे सुस्सूसमाणे नमंसमाणे अभिमुहे पंजलिउडे विणएणं पज्जुवासमाणे एवं वयासी[1]—जइ[2] णं भंते! समणेणं भगवया महावीरेणं 'आइगरेणं तित्थगरेणं सहसंबुद्धेणं[3] लोगनाहेणं लोगपईवेणं लोगपज्जोयगरेणं अभयदएणं सरणदएणं चक्खुदएणं मग्गदएणं धम्मदएणं धम्मदेसएणं धम्मनायगेणं[4] धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टिणा[5] अप्पडिहयवरनाण-दंसणधरेणं जिणेणं जाणएणं[6] बुद्धेणं बोहएणं मुत्तेणं मोयगेणं तिण्णेणं तारएणं सिवमयलमरुयमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावत्तयं[7] सासयं ठाणमुवगएणं'[8] [सिद्धिगइनामधेज्जं ठाणं संपत्तेणं ?][9] पंचमस्स अंगस्स[10] अयमट्ठे पण्णत्ते, छट्ठस्स णं 'भंते! अंगस्स'[11] नायाधम्मकहाणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

८. जंबु त्ति अज्जसुहम्मे थेरे अज्जजंबूनामं अणगारं एवं वयासी— एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[12] संपत्तेणं छट्ठस्स अंगस्स दो सुयक्खंधा पण्णत्ता, तं जहा—नायाणि य धम्मकहाओ य ।।

९. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[13] संपत्तेणं छट्ठस्स अंगस्स दो सुयक्खंधा पण्णत्ता, तं जहा—नायाणि य धम्मकहाओ य । पढमस्स णं भंते ! सुयक्खंधस्स समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[14] संपत्तेणं नायाणं कइ अज्झयणा पण्णत्ता ?

१०. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[15] संपत्तेणं नायाणं एगूणवीसं अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—

---

१. वदासी (ग, वृ) ।

२. जति (ख, ग) ।

३. सइ० (ख); सयं० (घ) ।

४. × (ख, घ) ।

५. ०वट्टीणं (ख, ग, घ) । अत्र प्रकरणसंगत्या तृतीयान्तं पदं युज्यते । समवायांगे (सू० २) इत्थमेव विद्यते । क्वचित् प्रयुक्तासु प्रस्तुत-सूत्रस्य प्रतिष्वपि तृतीयान्तं पदं प्राप्यते । तेन तदेव मूले स्वीकृतम् ।

६. जावएणं (ख, घ) ।

७. ०मरुत ०वत्तियं (ख, घ); ०मरुत०(ग) ।

८. अत्र चिन्हांकितपाठः औपपातिकादिसूत्रेभ्यो भिन्नो वर्तते । एन० वी० वैद्य संपादित— 'नायाधम्मकहाओ' पाठे विशेषणानि अधिकानि लभ्यन्ते, किन्तु अस्माकं पाठ-शोधार्थं प्रयुक्तासु प्रतिषु तानि न सन्ति । द्रष्टव्यं—औपपातिकसूत्रस्य तृतीयं परि-शिष्टम् ।

९. अष्टमे सूत्रे 'जाव संपत्तेणं' संक्षिप्त-पाठो लभ्यते । अत्र च 'सासयं ठाणमुवगएणं' इति पाठोस्ति । अस्य अग्रिमपाठेन संगति-र्नास्ति, औपपातिक (२१) सूत्रे 'सिद्धिगइ-णामधेज्जं ठाणं संपत्ताणं' इति पाठो विद्यते । अत्रापि तथैव युज्यते ।

१०. अंगस्स विवाहपण्णत्तीए (घ) ।

११. अंगस्स भंते ! (ख, घ) ।

१२,१३,१४,१५. ना० १।१।७ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संगहणी-गाहा

१. उक्खित्तणाए २. संघाडे, ३. अंडे ४. कुम्मे य ५. सेलगे।
६. तुंबे य ७. रोहिणी ८. मल्ली, ९. मायंदी १०. 'चंदिमा इ'[1] य ॥१॥
११. दावद्दवे १२. उदगणाए, १३. मंडुक्के[2] १४. तेयली वि य।
१५. नंदीफले १६. अवरकंका[3] १७. आइण्णे[4] १८. सुंसुमा इ य ॥ २॥
१९. अवरे य पुंडरीए, नाए एगूणवीसमे[5] ॥

मेहस्स नगरपरिवारादि-वण्णग-पदं

११. जइ णं भंते! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[6] संपत्तेणं नायाणं एगूणवीसं अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—उक्खित्तणाए जाव[7] पुंडरीए त्ति य। पढमस्स णं भंते! अज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते?

१२. एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे दाहिणड्ढभरहे रायगिहे नामं नयरे होत्था—वण्णओ[8] ॥

१३. गुणसिलए चेतिए—वण्णओ[9] ॥

१४. तत्थ णं रायगिहे नयरे सेणिए नामं राया होत्था—महताहिमवंत-महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे वण्णओ[10] ॥

१५. तस्स णं सेणियस्स रण्णो नंदा नामं देवी होत्था—सूमालपाणिपाया[11] वण्णओ[12] ॥

१६. तस्स णं सेणियस्स पुत्ते नंदाए देवीए अत्तए अभए नामं कुमारे होत्था—अहीण[13] •पडिपुण्ण[14]-पंचिंदियसरीरे लक्खण-वंजण-गुणोववेए माणुम्माण-प्पमाण-पडिपुण्ण-सुजाय-सव्वंगसुंदरंगे ससिसोमाकारे कंते पियदंसणे॰ सुरूवे, साम-दंड-भेय-उवप्पयाणनीति-सुप्पउत्त-नय-विहण्णू[15], 'ईहा-वूह'[16]-मग्गण-गवेसण-अत्थसत्थ-मइविसारए, उप्पत्तियाए वेणइयाए कम्मयाए[17] पारिणामियाए—चउव्विहाए बुद्धीए उववेए, सेणियस्स रण्णो बहूसु कज्जेसु य[18] [कारणेसु य ?]

---

१. चंदमाई (घ)।
२. मंदुक्के (ख)।
३. अमर॰ (घ)।
४. आतिण्णे (ख, ग)।
५. ॰वीसइमे (ग)।
६. ना॰ १।१।७।
७. ना॰ १।१।१०।
८. ओ॰ सू॰ १।
९. ओ॰ सू॰ २-१३।
१०. ओ॰ सू॰ १४।
११. सुकुमाल॰ (घ)।
१२. ओ॰ सू॰ १५।
१३. सं॰ पा॰—अहीण जाव सुरूवे।
१४. प्रस्तुतसूत्रस्य वृत्तौ 'पडिपुण्ण' पदं व्याख्यातं नास्ति।
१५. विहिज्जा (ख)।
१६. ईहापूह (ग); ईहापोह (घ)।
१७. कम्मइयाए (ख, घ); कम्मियाए (ग)।
१८. अतोनन्तरं उपासकदशासु (१।१३) राय-पसेणइय (६७५) सूत्रे 'कारणेसु य' इति पाठो विद्यते। प्रस्तुतसूत्रस्य पंचमाध्ययने (९०) सूत्रेपि कज्जेसु य कारणेसु य इति पाठो लभ्यते। अत्रापि तथैव युज्यते।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुडुंबेसु य मंतेसु य गुज्झेसु य रहस्सेसु य निच्छएसु य आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, मेढी पमाणं आहारे आलंबणं चक्खू, मेढीभूए पमाणभूए आहारभूए आलंबणभूए चक्खुभूए, सव्वकज्जेसु सव्वभूमियासु लद्धपच्चए विइण्णवियारे रज्जधुरचिंतए यावि होत्था, सेणियस्स रण्णो रज्जं च रट्ठं च कोसं च कोट्ठागारं च बलं च वाहणं च पुरं च अंतेउरं च सयमेव समुपेक्खमाणे-समुपेक्खमाणे विहरइ ।।

१७. तस्स णं सेणियस्स रण्णो धारिणी नामं देवी होत्था[1]—°सुकुमाल-पाणिपाया अहीण[2]-पंचेंदियसरीरा लक्खण-वंजण-गुणोववेया माणुम्माण-प्पमाण[3]-सुजाय-सव्वंगसुंदरंगी ससिसोमाकार-कंत-पियदंसणा सुरूवा करयल-'परिमित-तिवलिय'[4] वलियमज्झा 'कोमुइ-रयणियर-विमल-पडिपुण्ण-सोमवयणा कुंडलुल्लिहिय-गंडलेहा'[5] सिंगारागार-चारुवेसा संगय-गय-हसिय-भणिय-विहिय-विलास-सललिय-संलाव-निउण-जुत्तोवयारकुसला पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा, सेणियस्स रण्णो इट्ठा कंता पिया मणुण्णा नामधेज्जा[6] वेसासिया सम्मया बहुमया अणुमया भंडकरंडगसमाणा तेल्लकेला इव सुसंगोविया चेलपेडा इव सुसंपरिग्गिहीया रयणकरंडगो विव सुसारक्खिया, मा णं सीयं मा णं उण्हं मा णं दंसा मा णं मसगा मा णं वाला मा णं चोरा मा णं वाइय-पित्तिय-सिंभिय-सन्निवाइय[7] विविहा रोगायंका फुसंतु त्ति कट्टु सेणिएण रण्णा सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं पच्चणुभवमाणी° विहरइ ।।

धारिणीए सुमिणदंसण-पदं

१८. तए णं सा धारिणी देवी अण्णदा कदाइ तंसि तारिसगंसि—छक्कट्ठग-लट्ठमट्ठ-

---

१. सं० पा०—होत्था जाव सेणियस्स रण्णो इट्ठा जाव विहरइ ।

२. अहीण-पडिपुण्ण (ओ० सू० १५) ।

३. पमाण-पडिपुण्ण (ओ० सू० १५) ।

४. परिमिय-पसत्थ-तिवली (ओ० सू० १५) ।

५. कुंडलुल्लिहिय गंडलेहा कोमुइ-रयणियर··· सोमवयणा (ओ० सू० १५) ।

६. आगमेषु बहुषु स्थानेषु 'मणुण्णा मणामा' इति पाठरचना दृश्यते । द्रष्टव्यम्—१।१४।४३ । क्वचिद् 'धेज्जा' इति पाठो लभ्यते । द्रष्टव्यम्—विवागसुयं १।१।५६ । प्रस्तुतपाठः वृत्त्या पूरितोस्ति, तत्र 'नामधेज्जा' इति पाठः उल्लिखितोस्ति । विपाकश्रुतस्य संदर्भे असावपि पाठः समीचीनः प्रतिभाति । प्रस्तुतागमे (१।१।१०६) एव 'थेज्जे' इति पाठो लभ्यते । ओवाइय (११७) सूत्रे शरीरवर्णनप्रसङ्गे 'पेज्जं' इति पाठोऽस्ति । एवं विभिन्नस्थलेषु पाठावलोकनेन एतत् सुनिश्चितं भवति यत् लिपिकरणकाले पाठ-परिवर्तनं जातम् । 'धेज्ज थेज्ज' इतिपाठापेक्षया 'नामधेज्जा' इति पाठः अर्थदृष्ट्या अधिकं संगच्छते ।

७. विभक्तिरहितं पदम् ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संठिय-खंभुग्गय-पवरवर-सालभंजिय-उज्जलमणिकणगरयणथूभिय-विडंकजालद्ध-चंदनिज्जूहंतरकणयालिचंदसालियाविभत्तिकलिए 'सरसच्छधाऊवल-वण्णरइए'[१] बाहिरओ दूमिय-घट्ठ-मट्ठे अब्भिंतरओ पसत्त-सुविलिहिय[२]-चित्तकम्मे नाणाविह-पंचवण्ण-मणिरयण[३]-कोट्टिमतले पउमलया-फुल्लवल्लि-वरपुप्फजाइ-उल्लोय-चित्तिय-तले वंदण[४] - वरकणगकलससुणिम्मिय- पडिपूजिय[५]- सरसपउम-सोहंतदारभाए पयरग[६]-लंबंत-मणिमुत्तदाम-सुविरइयदारसोहे सुगंध[७]-वरकुसुम-मउय-पम्हलसयणोवयार-मणहिययनिव्वुइयरे कप्पूर- लवंग-मलय-चंदण-कालागरु-पवरकुंदुरुक्क-तुरुक्क-धूव -डज्झंत-सुरभि-मघमघेंत[८]- गंधुद्धुयाभिरामे[९] सुगंधवर [गंध ?] गंधिए गंधवट्टिभूए मणिकिरण-पणासियंधयारे किंबहुणा ? जुइगुणेहि सुरवरविमाण-विडंबियवरघरए[१०], तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि—सालिंगणवट्टिए उभओ विब्बोयणे दुहओ उण्णए 'मज्झे णय गंभीरे'[११] गंगापुलिणवालुय-उद्दालसालिसए ओयविय-खोम-दुगुल्लपट्ट[१२]-पडिच्छयणे अत्थरय-मलय-नवतय-कुसत्त-लिंब[१३]-सीहकेसरपच्चुत्थिए[१४] सुविरइयरयत्ताणे रत्तंसुयसंवुए सुरम्मे आइणग-रूय[१५]-बूर[१६]-नवणीय-तुल्लफासे पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि सुत्तजागरा ओहीरमाणी-ओहीरमाणी 'एगं महं सत्तुस्सेहं रययकूड-सन्निहं नहयलंसि सोमं सोमागारं लीलायंतं जंभायमाणं मुहमतिगयं गयं पासित्ता णं पडिबुद्धा'[१७]।

---

१. सरसच्छधाऊधवल° (घ); कैश्चित्पुनरेवं संभावितमिदम्—सरसच्छधाऊवलरत्तरए (वृ)।

२. सर्वासु प्रतिषु 'सुचि' इति पठ्यमानमस्ति। वृत्तौ 'शुचि पवित्रं' इति व्याख्यातमस्ति। प्राचीनलिप्यां चकारवकारयोः प्रायः सादृश्येनात्र वर्णविपर्ययो जातः। वृत्तिकारेण तथैव व्याख्यातः।

३. मणिरतण (ग)।

४. चंदण (ख, व); अत्र वकारस्थाने चकारो जातः।

५. पडिपुंजिय (ख, ग, घ, वृपा)।

६. पयरग्ग (ग, घ); एकस्मिन् वृत्त्यादर्शे 'प्रतरकाणि', अपरस्मिंश्च 'प्रवरकाणि' इति संस्कृतरूपं लभ्यते।

७. सुगंधि (वृ)।

८. °मघित (ग); °मघंत (घ)।

९. गंध° (ख घ)।

१०. वेलंबवर° (ग, घ)।

११. मज्झेण य गंभीरे (वृपा)।

१२ खोमदुगुल° (घ)।

१३. लिव्व (ख, ग)।

१४. °पच्चुत्थुए (ख); °पच्चुत्थए (क्व०)।

१५. रुय (ख)।

१६. पूर (ख)।

१७. वाचनान्तरे त्वेवं दृश्यते—जाव सीहं सुविणे पासित्ता णं पडिबुद्धा। यावत्करणात् इदं द्रष्टव्यम्—एगं च णं महंतं पंडुरं धवलं सेयं संखउल-विमलदहि-घणगोखीर-फेण-रयणिकरपगासं [अथवा—हार-रजत-खीरसागर-दगरय- महासेल - पंडुरतरोरु- रमणिज्ज-दरिसणिज्जं] थिर-लट्ठ-पउट्ठ-पीवर-

सेणियस्स सुमिणनिवेदण-पदं

१६. तए णं सा धारिणी देवी अयमेयारूवं उरालं कल्लाणं सिवं धण्णं मंगल्लं सस्सिरीयं महासुमिणं पासित्ता णं पडिबुद्धा समाणी हट्ठतुट्ठ[1]-चित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया[2] हरिसवस-विसप्पमाणहियया 'धाराहय-कलंबपुप्फगं पिव समूससिय-रोमकूवा'[3] तं सुमिणं ओगिण्हइ, ओगिण्हित्ता सयणिज्जाओ उट्ठेइ, उट्ठेत्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता अतुरियमचवलमसंभंताए अविलंबियाए रायहंससरिसीए गईए जेणामेव से सेणिए राया तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सेणियं रायं ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं मणुन्नाहिं मणामाहिं उरालाहिं कल्लाणाहिं सिवाहिं धण्णाहिं मंगल्लाहिं सस्सिरीयाहिं हिययगमणिज्जाहिं हिययपल्हायणिज्जाहिं मिय-महुर-रिभिय-गंभीर-सस्सिरीयाहिं गिराहिं संलवमाणी-संलवमाणी पडिबोहेइ, पडिबोहेत्ता सेणिएणं रण्णा अब्भणुण्णाया समाणी नाणा-मणिकणगरयणभत्तिचित्तंसि भद्दासणंसि निसीयइ, निसिइत्ता आसत्था वीसत्था सुहासणवरगया करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु सेणियं रायं एवं वयासी—एवं खलु अहं देवाणुप्पिया! अज्ज तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि सालिंगणवट्टिए जाव[4] नियगवयणमइवयंतं[5] गयं सुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धा—तं एयस्स णं देवाणुप्पिया! उरालस्स[6]

सुसिलिट्ठ-विसिट्ठ-तिक्खदाढाविडंबियमुहं परिकम्मियजच्चकमलकोमल-माइयसोहंतलट्ठउट्ठं रत्तुप्पलपत्तमउय-सुकुमालतालुनिल्लालियग्गजीहं महुगुलियभिसंत पिंगलच्छं मूसागयपवरकणयतावियआवत्तायंत - वट्ट - तडियविमलसरिसनयणं [अत्र'वट्ट तडड' इत्येतावदेव पुस्तके दृष्टं संभावनया तु 'वृत्ततदित' इति व्याख्यातम्। पाठांतरेण तु—वट्ट-पडिपुन्नपसत्थ-निद्ध-महुगुलिय-पिंगलच्छं] विसालपीवरभमरोरु-पडिपुन्नविमलखंधं [अथवा—पडिपुण्ण-सुजायखंधं] मिदुविसदसुहुमलक्खण-पसत्थ-विच्छिन्न-केसरसढं [अथवा—निम्मलवरकेसरधरं] ऊसिय-सुनिम्मियसुजाय अप्फोडियलंगूलं सोमं सोमागारं लीलायंतं जंभायमाणं गगनतलाओ ओवयमाणं सीहं अभिमुहं मुहे पविसमाणं पासित्ता णं पडिबुद्धा (वृ)।

१. हट्ठतुट्ठा (ख); हट्ठातुट्ठा (घ); वृत्तौ 'हृष्ट-तुष्टा—अत्यर्थं तुष्टा अथवा हृष्टा—विस्मिता, तुष्टा—तोषवती' इति व्याख्यातमस्ति किन्तु औपपातिकाद्यागमेषु 'हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिया' इति संयुक्तः पाठो लभ्यते। अत्रापि तथैव गृहीतः।

२. °सिया (ख, ग, घ)।

३. एतद् विशेषणं वृत्तौ नास्ति व्याख्यातम्।

४. ना० १।१।१८।

५. एष पाठो यत्र समर्पितोस्ति तत्र (१।१।१८) 'मुहमतिगयं' इति पाठो विद्यते, अत्रापि तथैव युज्यते किन्तु सर्वास्वपि प्रतिषु 'नियगवयणमइवयंतं' इति पाठो लभ्यते। नानयोः कश्चिदर्थभेदः तेनासावेव पाठःस्वीकृतः।

६. सं० पा०—उरालस्स क सि ध मं जाव सुमिणस्स।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

•कल्लाणस्स सिवस्स धण्णस्स मंगल्लस्स सस्सिरीयस्स° सुमिणस्स के मण्णे कल्लाणे फलवित्तिविसेसे भविस्सइ ?

सेणियस्स सुमिणमहिम-निदंसण-पदं

२०. तए णं से सेणिए राया धारिणीए देवीए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ-[1]•चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाण°हियए धाराहयनीवसुरभिकुसुम-चुंचुमालइयतणू[2] ऊसवियरोमकूवे तं सुमिणं ओगिण्हइ[3], ओगिण्हित्ता ईहं पविसइ, पविसित्ता अप्पणो साभाविएणं मइपुव्वएणं बुद्धिविण्णाणेणं तस्स सुमिणस्स अत्थोग्गहं करेइ, करेत्ता धारिणिं देविं ताहिं जाव[4] हिययपल्हायणिज्जाहिं मिय-महुर-रिभिय-गंभीर-सस्सिरीयाहिं वग्गूहिं[5] अणुवूहमाणे-अणुवूहमाणे एवं वयासी—उराले णं तुमे देवाणुप्पिए ! सुमिणे दिट्ठे। कल्लाणे णं तुमे देवाणुप्पिए ! सुमिणे दिट्ठे। सिवे धण्णे मंगल्ले सस्सिरीए णं तुमे देवाणुप्पिए ! सुमिणे दिट्ठे। आरोग्ग-तुट्ठि-दीहाउय[6]-कल्लाण-मंगल्लकारए णं तुमे देवि ! सुमिणे दिट्ठे। अत्थलाभो ते[7] देवाणुप्पिए ! पुत्तलाभो ते देवाणुप्पिए ! रज्जलाभो ते देवाणुप्पिए ! भोग-सोक्खलाभो ते देवाणुप्पिए !

एवं खलु तुमं देवाणुप्पिए ! नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्ठमाणं राइंदियाणं वीइक्कंताणं अम्हं कुलकेउं कुलदीवं[8] कुलपव्वयं कुलवडिंसयं[9] कुलतिलकं कुलकित्तिकरं कुलवित्तिकरं[10] कुलनंदिकरं कुलजसकरं कुलाधारं कुलपायवं कुलविवद्धणकरं सुकुमालपाणिपायं जाव[11] सुरूवं दारयं पयाहिसि। से वि य णं दारए उम्मुक्कबालभावे विण्णय[12]-परिणयमेत्ते जोव्वणगमणुप्पत्ते सूरे वीरे विक्कंते[13] वित्थिण्ण-विपुल-बलवाहणे रज्जवई[14] राया भविस्सइ।

तं उराले णं तुमे देवाणुप्पिए ! सुमिणे दिट्ठे[15]। •कल्लाणे णं तुमे देवाणुप्पिए ! सुमिणे दिट्ठे। सिवे धण्णे मंगल्ले सस्सिरीए णं तुमे देवाणुप्पिए ! सुमिणे दिट्ठे।°

---

१. सं० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव हियए।
२. चंचु° (ख, घ)।
३. ओगिण्हाति २ (ख)।
४. ना० १।१।१९।
५. १।१।१९ सूत्रे अत्र 'गिराहिं' पाठो विद्यते।
६. दीहाउ (ख)।
७. × (ग, घ) सर्वत्र।
८. कुलहेउं (वृपा)।
९. °वडंसयं (ख)।
१०. नासौपाठः वृत्तिसम्मतः, यथा—क्वचिद् वृत्तिकरमित्यपि दृश्यते।
११. ओ० सू० १४३।
१२. विण्णाय (क, ख, घ)।
१३. वितिक्कंते (क); वियक्कतं (ख)।
१४. रज्जयती (क)।
१५. सं० पा०—दिट्ठे जाव आरोग्ग।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आरोग्ग-तुट्ठि-दीहाउय-कल्लाण-मंगल्लकारए णं तुमे देवि! सुमिणे दिट्ठे त्ति कट्टु भुज्जो-भुज्जो अणुवूहेइ।

धारिणीए सुमिणजागरिया-पदं

२१. तए णं सा धारिणी देवी सेणिएणं रण्णा एवं वुत्ता समाणी हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिया जाव[1] हरिसवस-विसप्पमाणहियया करयल-परिग्गहियं[2]•सिरसावत्तं मत्थए° अंजलिं कट्टु एवं वयासी—एवमेयं देवाणुप्पिया! तहमेयं देवाणुप्पिया! अवितहमेयं देवाणुप्पिया! असंदिद्धमेयं देवाणुप्पिया! इच्छियमेयं देवाणुप्पिया! पडिच्छियमेयं देवाणुप्पिया! इच्छियपडिच्छियमेयं देवाणुप्पिया! सच्चे णं एसमट्ठे जं तुब्भे वयह त्ति कट्टु तं सुमिणं सम्मं पडिच्छइ, पडिच्छित्ता सेणिएणं रण्णा अब्भणुण्णाया समाणी नाणामणिकणगरयण-भत्तिचित्ताओ भद्दासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सयंसि सयणिज्जंसि निसीयइ, निसीइत्ता एवं वयासी—'मा मे'[3] से उत्तमे पहाणे मंगल्ले सुमिणे अण्णेहिं पावसुमिणेहिं पडिहम्मिहित्ति कट्टु देवय-गुरुजणसंबद्धाहिं[4] पसत्थाहिं धम्मियाहिं कहाहिं सुमिणजागरियं पडिजागरमाणी-पडिजागरमाणी विहरइ॥

सुमिणपाढग-निमंतण-पदं

२२. तए णं से[5] सेणिए राया पच्चूसकालसमयंसि कोडुंबियपुरिसे[6] सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! बाहिरियं उवट्ठाणसालं अज्ज 'सविसेसं परमरम्मं'[7] गंधोदगसित्त-सुइय[8]-सम्मज्जिओवलित्तं पंचवण्ण-सरससुरभि[9]-मुक्क-पुप्फपुंजोवयारकलियं कालागरु-पवरकुंदुरुक्क-तुरुक्क-धूव-डज्झंत-सुरभि[10]-मघमघेंत-गंधुद्धयाभिरामं सुगंधवर(गंध?)गंधियं[11] गंधवट्टिभूयं करेह, कारवेह य, एयमाणत्तियं[12] पच्चप्पिणह॥

---

१. ना० १।१।१६।
२. सं० पा०—करयलपरिग्गहियं जाव अंजलिं।
३. इमे (ख)।
४. °संबुद्धाहिं (ख)।
५. × (क, ख, ग)।
६. कोटुंबिय° (क)।
७. सविसेस° (क); सविसंसे° (ख); सविसेस-परम° (ग)।
८. सुइ (क); सुइयं (घ)।
९. °सुरभिकुसुम (क)।
१०. × (ख, ग, घ)।
११. सुयंध° (क); १।१।७६ सूत्रे पूरितपाठे 'गंध' शब्दो विद्यते। औपपातिकस्य ५५ सूत्रेपि स लभ्यते। अत्रापि तथैव युज्यते।
१२. एव° (क, ख, ग, घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२३. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा सेणिएणं रण्णा एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठ-[१] •चित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाणहियया तमाणत्तियं ° पच्चप्पिणंति ।।

२४. तए णं से सेणिए राया कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए फुल्लुप्पल-कमल-कोमलुम्मिलियम्मि अहपंडुरे[२] पभाए रत्तासोगप्पगास-किंसुय-सुयमुह-गुंजद्ध-बंधुजीवग-पारावयचलणनयण - परहुयसुरत्तलोयण-जासुमणकुसुम-जलियजलण-तवणिज्ज-कलस-हिंगुलयनिगर-रूवाइरेगरेहंत-सस्सिरीए दिवायरे अहक्कमेण उदिए तस्स 'दिणकर-करपरंपरोयारपारद्धंमि'[३] अंधयारे बालातव[४] - कुंकुमेण 'खचितेव्व'[५] जीवलोए लोयण-विसयाणुयास[६]-विगसंत-विसददंसियम्मि लोए कमलागर-संडबोहए उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते सयणिज्जाओ उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणेव अट्टणसाला, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अट्टणसालं अणुपविसइ ।

अणेगवायाम-जोग्ग[७]-वग्गण-वामद्दण-मल्लजुद्धकरणेहिं संते परिस्संते सयपागसहस्सपागेहिं सुगंधवरतेल्लमादिएहिं पीणणिज्जेहिं दीवणिज्जेहिं दप्पणिज्जेहिं मयणिज्जेहिं विंहणिज्जेहिं सव्विंदियगायपल्हायणिज्जेहिं अब्भंगेहिं[८] अब्भंगिए समाणे, तेल्लचम्मंसि पडिपुण्ण-पाणिपाय-सुकुमालकोमलतलेहिं पुरिसेहिं छेएहिं दक्खेहिं पट्ठेहिं कुसलेहिं मेहावीहिं निउणेहिं निउणसिप्पोवगएहिं जियपरिस्समेहिं अब्भंगण-परिमद्दणुव्वलण-करणगुणनिम्माएहिं, अट्ठिसुहाए मंससुहाए तयासुहाए रोमसुहाए--चउव्विहाए संवाहणाए संवाहिए समाणे अवगयपरिस्समे नरिंदे अट्टणसालाओ पडिनिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मज्जणघरं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता समत्तजालाभिरामे[९] विचित्त-मणि-रयण-कोट्टिमतले रमणिज्जे ण्हाणमंडवंसि नाणामणि-रयण-भत्तिचित्तंसि ण्हाणपीढंसि सुहनिसण्णे सुहोदएहिं 'गंधोदएहिं पुप्फोदएहिं'[१०]

---

१. सं० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव पच्चप्पिणंति ।

२. अहपंडरे (क, ख); अहा° (ग) ।

३. दिनकरपरंपरोयारपरद्धम्मि (क, ख, ग, घ, वृपा) ।

४. बालायव (क्वचित्) ।

५. खइय व्व (ख); खचियंमि (घ) ।

६. °तास (क, ख); °वास (घ) ।

७. जोग (क, ख, ग, घ) । प्रयुक्तासु सर्वास्वपि प्रतिषु 'जोग' इति पाठो लभ्यते, किन्तु वृत्तौ 'योग्या' इति व्याख्यातमस्ति तथा औपपातिक (६३) सूत्रे 'जोग्ग' इति पाठोऽस्ति । असौ च समीचीनः तेन मूले स्वीकृतः ।

८. अब्भंगिएहिं (ख) ।

९. समंत (वृ); समत्त, समुत्त (वृपा) ।

१०. पुप्फोदएहिं गंधोदएहिं (क, ख, ग, घ) । वृत्तौ पूर्वं गंधोदकं ततश्च पुष्पोदकं व्याख्यातमस्ति । औपपातिक (६३) सूत्रे पि एष एव क्रमो दृश्यते ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुद्धोदएहिं य पुणो पुणो कल्लाणग[1]-पवर-मज्जणविहीए मज्जिए तत्थ कोउय-सएहिं बहुविहेहिं कल्लाणग[2]-पवर-मज्जणावसाणे पम्हल-सुकुमाल-गंधकासाइ-लूहियंगे अहय-सुमहग्घ-दूसरयण-सुसंवुए सरस-सुरभि-गोसीस-चंदणाणुलित्त-गत्ते सुइमाला-वण्णगविलेवणे आविद्ध-मणिसुवण्णे कप्पिय-हारद्धहार-तिसरय-पालंब-पलंबमाण-कडिसुत्त-सुकयसोहे पिणद्धगेवेज्ज-अंगुलेज्जग-ललियंगय-ललियकयाभरणे[3] नाणामणि-कडग-तुडिय-थंभियभुए अहियरूवसस्सिरीए कुंडलुज्जोइयाणणे मउड-दित्तसिरए हारोत्थय-सुकय-रइयवच्छे 'मुद्दिया-पिंगलं-गुलीए पालंब-पलंबमाण-सुकय-पडउत्तरिज्जे'[4] नाणामणिकणगरयण-विमल[5]-महरिह-निउणोविय-मिसिमिसित[6]-विरइय-सुसिलिट्ठ-विसिट्ठ-लट्ठ-संठिय-पसत्थ-आविद्ध-वीरवलए, किं बहुणा ? कप्परुक्खए चेव सुअलंकिय[7]-विभूसिए नरिंदे सकोरेंटमल्लदामेणं[8] छत्तेणं धरिज्जमाणेणं चउचामरवालवीइयंगे मंगल-जय-सद्द-कयालोए[9] 'अणेगगणनायग-दंडनायग-राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-मंति-महामंति-गणग - दोवारिय-अमच्च-चेड-पीढमद्द-नगर-निगम-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह-दूय-संधिवालसद्धिं संपरिवुडे धवलमहामेहनिग्गए विव गहगण-दिप्पंत-रिक्खतारागणाण मज्झे ससि व्व पियदंसणे नरवई मज्जणघराओ पडिनिक्ख-मइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव’ बाहिरिया उवट्ठाणसाला, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सण्णिसण्णे ॥

२५. तए णं से सेणिए राया अप्पणो अदूरसामंते उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए अट्ठ भद्दा-सणाइं—सेयवत्थ-पच्चुत्थुयाइं[10] सिद्धत्थय[11]-मंगलोवयार-कय[12]-संतिकम्माइं—रयावेइ, रयावेत्ता नाणामणिरतणमंडियं अहियपेच्छणिज्जरूवं महग्घवरपट्टणु-ग्गयं सण्ह-बहुभत्तिसय-चित्तठाणं ईहामिय-उसभ-तुरय-नर-मगर-विहग-वालग-

---

१. कल्लाण (ग) ।
२. कल्लाण (क, ख, ग) ।
३. कयाभरणे (ग) ।
४. मुद्दिया-पिंगलंगुलीए पालंब-पलंबमाण-सुकय-पडउत्तरिज्जे (क, ख, ग) ।
५. °कणगरयण (क, ग) ।
६. मिसिमिसंत (क, घ) ।
७. अलंकिय (क, ख, घ) ।
८. सकोरिंट° (घ) ।
९. अत्र औपपातिकस्य पाठक्रमो अस्माद् भिन्नो वर्तते । अर्थसमीक्षया सचाधिकः संगतोप्यस्ति—'कयालोए मज्जणघराओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता अणेगगणनायग-दंडनायग-राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि -सेणावइ-सत्थवाह-दूय-संधिवाल-सद्धिं संपरिवुडे धवल-महामेहणिग्गए इव गहगण-दिप्पंत-रिक्ख-तारागणाण मज्झे ससिव्व पिअदंसणे णरवइ जेणेव (ओ० सू० ६३) ।
१०. पच्चत्थयाइं (क); पच्चत्थुयाइं (ग) ।
११. सिद्धत्थ (क, ख, ग) ।
१२. कत (ग) ।

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

किन्नर[1]-रुरु-सरभ-चमर-कुंजर-वणलय-पउमलय-भत्तिचित्तं सुखचियवरकणग-पवरपेरंतदेसभागं अब्भिंतरियं जवणियं अंछावेइ, अंछावेत्ता अत्थरग-मउअ-मसूरग[2]-उत्थइयं धवलवत्थ-पच्चुत्थुयं[3] विसिट्ठअंगसुहफासयं[4] सुमउयं धारिणीए देवीए भद्दासणं रयावेइ, रयावेत्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी — खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! अट्ठंगमहानिमित्तसुत्तत्थपाढए[5] विविहसत्थकुसले सुमिणपाढए सद्दावेह, सद्दावेत्ता एयमाणत्तियं खिप्पामेव पच्चप्पिणह ।।

२६. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा सेणिएणं रण्णा एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिया जाव[6] हरिसवस-विसप्पमाणहियया[7] करयल-परिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं देवो ! तह त्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेंति, सेणियस्स रण्णो अंतियाओ पडिनिक्खमंति,[8] रायगिहस्स नगरस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव सुमिणपाढगगिहाणि तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सुमिणपाढए सद्दावेंति ।।

सेणियस्स सुमिणफल-पुच्छा-पदं

२७. तए णं ते सुमिणपाढगा सेणियस्स रण्णो कोडुंबियपुरिसेहिं सद्दाविया समाणा हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिया जाव[9] हरिसवस-विसप्पमाणहियया ण्हाया कयबलिकम्मा[10] •कय-कोउय-मंगल°-पायच्छित्ता अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा 'हरियालिय-सिद्धत्थय-कयमुद्धाणा'[11] सएहिं-सएहिं गेहेहिंतो[12] पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता रायगिहस्स नगरस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव सेणियस्स भवणवडेंसगदुवारे, तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता एगयओ मिलंति[13], मिलित्ता सेणियस्स रण्णो भवणवडेंसगदुवारेणं अणुप्पविसंति, अणुप्पविसित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाण-साला, जेणेव सेणिए राया, तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सेणियं रायं जएणं विजएणं वद्धावेंति, सेणिएणं रण्णा अच्चिय-वंदिय-'पूइय-माणिय'[14]-सक्कारिय-सम्माणिया समाणा पत्तेयं-पत्तेयं पुव्वन्नत्थेसु भद्दासणेसु निसीयंति ।।

२८. तए णं से सेणिए राया जवणियंतरियं धारिणिं देविं ठवेइ, ठवेत्ता पुप्फफल-पडिपुण्णहत्थे परेणं विणएणं ते सुमिणपाढए एवं वयासी—एवं खलु

---

१. किंनर (ख, ग)।
२. °मसूर (क, ख, ग, घ)।
३. पच्चत्थुयं (क); पच्चत्थियं (घ)।
४. विसिट्ठं° (क, ख, घ)।
५. °सुतत्थधारए (ख)।
६. ना० १।१।१९।
७. हयहियया (क)।
८. °निक्खमंति, २ त्ता (ग, घ)।
९. ना० १।१।१९।
१०. सं० पा० — कयबलिकम्मा जाव पायच्छित्ता।
११. सिद्धत्थय-हरियालिया-कयमंगलमुद्धाणा (वृपा)।
१२. गिहेहिंतो (क)।
१३. मेलायंति (क); मिलायंति (ख, घ)।
१४. माणिय-पूइय (क, ग); पूइय (ख, घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देवाणुप्पिया ! धारिणी देवी अज्ज तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि जाव[1] महासुमिणं पासित्ता णं पडिबुद्धा । तं एयस्स णं देवाणुप्पिया ! उरालस्स जाव[2] सस्सिरीयस्स महासुमिणस्स के मण्णे कल्लाणे फलवित्तिविसेसे भविस्सइ ? ॥

सुमिणफल-कहण-पदं

२६. तए णं ते सुमिणपाढगा सेणियस्स रण्णो अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिया जाव[3] हरिसवस-विसप्पमाणहियया तं सुमिणं सम्मं 'ओगिण्हंति ओगिण्हित्ता'[4] ईहं अणुप्पविसंति, अणुप्पविसित्ता अण्णमण्णेण सद्धिं 'संचालेंति, संचालेत्ता'[5] तस्स सुमिणस्स लद्धट्ठा 'पुच्छियट्ठा गहियट्ठा'[6] विणिच्छियट्ठा अभिगयट्ठा सेणियस्स रण्णो पुरओ सुमिणसत्थाइं उच्चारेमाणा-उच्चारेमाणा एवं वयासी—एवं खलु अम्हं सामी ! सुमिणसत्थंसि बायालीसं सुमिणा, तीसं महासुमिणा—बावत्तरिं सव्वसुमिणा दिट्ठा ।

तत्थ णं सामी ! अरहंतमायरो वा चक्कवट्टिमायरो वा अरहंतंसि वा चक्क-वट्टिंसि वा गब्भं वक्कममाणंसि एएसिं तीसाए महासुमिणाणं इमे चोद्दस महासुमिणे पासित्ता णं पडिबुज्झंति, तं जहा—

संगहणी-गाहा—

१.गय २.वसह[7] ३.सीह ४ अभिसेय ५. दाम ६.ससि ७.दिणयरं ८.झयं ९. कुंभं ।
१०. पउमसर ११. सागर १२. विमाणभवण १३. रयणुच्चय १४. सिहिं च ॥

वासुदेवमायरो वा वासुदेवंसि गब्भं वक्कममाणंसि एएसिं चोद्दसण्हं महा-सुमिणाणं अण्णयरे सत्त महासुमिणे पासित्ता णं पडिबुज्झंति ।

बलदेवमायरो वा बलदेवंसि गब्भं वक्कममाणंसि एएसिं चोद्दसण्हं महासुमिणाणं अण्णयरे चत्तारि महासुविणे पासित्ता णं पडिबुज्झंति ।

मंडलियमायरो वा मंडलियंसि गब्भं वक्कममाणंसि एएसिं चोद्दसण्हं महा-सुमिणाणं अण्णयरं महासुमिणं पासित्ता णं पडिबुज्झंति ।

इमे य सामी ! धारिणीए देवीए एगे महासुमिणे दिट्ठे, तं उराले णं सामी ! धारिणीए देवीए सुमिणे दिट्ठे जाव[8] आरोग्ग-तुट्ठि-दीहाउय-कल्लाण-मंगल्लकारए णं सामी ! धारिणीए देवीए सुमिणे दिट्ठे । 'अत्थलाभो सामी ! पुत्तलाभो सामी ! रज्जलाभो सामी ! भोगलाभो सामी ! सोक्खलाभो सामी'[9] ! एवं

---

१. ना० १।१।१८,१९ ।
२, ३. ना० १।१।१९ ।
४. परिगिण्हंति २ (ख) ।
५. संवाएंति २ त्ता (क); बोलेंति २ (ख) ।
६. गहियट्ठा पुच्छियट्ठा (क, घ) ।
७. उसभ (क, ख) ।
८. ना० १।१।२० ।
९. अत्र विंशतितमं सूत्रमनुसृत्य पाठः स्वीकृतः,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खलु सामी ! धारिणी देवी नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं जाव[1] दारगं पयाहिइ। से वि य णं दारए उम्मुक्कबालभावे विण्णय[2]-परिणयमित्ते जोव्वणग-मणुप्पत्ते सूरे वीरे विक्कंते वित्थिण्ण-विपुल-बलवाहणे रज्जवई राया भविस्सइ, अणगारे वा भावियप्पा।

तं उराले णं सामी ! धारिणीए देवीए सुमिणे दिट्ठे जाव[3] आरोग्ग-तुट्ठि[4]-•दीहाउय-कल्लाण-मंगल्लकारए णं सामी ! धारणीए देवीए सुमिणे° दिट्ठे त्ति कट्टु भुज्जो-भुज्जो अणुवूहेंति ॥

सुमिणपाढग-विसज्जण-पदं

३०. तए णं से सेणिए राया तेसिं सुमिणपाढगाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिए जाव[5] हरिसवस-विसप्पमाणहियए करयल[6]•परिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु° एवं वयासी—एवमेयं देवाणुप्पिया ! जाव[7] जं णं तुब्भे वयह त्ति कट्टु तं सुमिणं सम्मं पडिच्छइ[8], ते सुमिणपाढए विपुलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-गंध-मल्लालंकारेण य सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता विपुलं जीवियारिहं पीतिदाणं दलयति[9], दलइत्ता पडिविसज्जेइ ॥

सेणियस्स सुमिणपसंसा-पदं

३१. तए णं से सेणिए राया सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता जेणेव धारिणी देवी, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता 'धारिणिं देविं'[10] एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिए ! सुमिणसत्थंसि बायालीसं सुमिणा[11]•तीसं महासुमिणा—बावत्तरिं सव्वसुमिणा दिट्ठा जाव[12] तं उराले णं तुमे देवाणुप्पिए ! सुमिणे दिट्ठे। कल्लाणे णं तुमे देवाणुप्पिए ! सुमिणे दिट्ठे। सिवे धण्णे मंगल्ले सस्सिरीए णं तुमे देवाणुप्पिए ! सुमिणे दिट्ठे। आरोग्ग-तुट्ठि-दीहाउय-कल्लाण-मंगल्ल-कारए णं तुमे देवि ! सुमिणे दिट्ठे त्ति कट्टु° भुज्जो-भुज्जो अणुवूहेइ ॥

प्रतिषु चात्र पाठस्य क्रमविपर्ययो दृश्यते—अत्थलाभो सामी ! सोक्खलाभो सामी ! भोगलाभो सामी ! पुत्तलाभो रज्जलाभो (क, ख, ग, घ)।

१. ना० १।१।२०।

२. विण्णाय (वृ); विण्णय (वृपा)।

३. ना० १।१।२०।

४. सं० पा०—आरोग्ग-तुट्ठि जाव दिट्ठे।

५. ना० १।१।१९।

६. सं० पा०—करयल जाव एवं।

७. ना० १।१।२१।

८. संपडिच्छइ (ग, घ)।

९. दलइ (क)।

१०. धारणी देवी (क); धारणीए देवीए (ख, ग), धारणीं देवीं (घ)।

११. सं० पा०—सुमिणा जाव भुज्जो २ अणुवूहति।

१२. ना० १।१।२६।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धारिणीए दोहल-पदं

३२. तए णं सा धारिणी देवी सेणियस्स रण्णो अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिया जाव[1] हरिसवस-विसप्पमाणहियया तं सुमिणं सम्मं पडिच्छति, जेणेव सए वासघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ण्हाया कयबलि-कम्मा[2] °कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ता विपुलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी° विहरइ ॥

३३. तए णं तीसे धारिणीए देवीए दोसु मासेसु वीइक्कंतेसु तइए मासे वट्टमाणे तस्स गब्भस्स दोहलकालसमयंसि अयमेयारूवे अकालमेहेसु दोहले पाउब्भवित्था--

धण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ, संपुण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ,
कयत्थाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयपुण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ,
कयलक्खणाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयविहवाओ णं ताओ अम्मयाओ, सुलद्धे णं तासिं माणुस्सए जम्मजीवियफले, जाओ णं मेहेसु अब्भुग्गएसु अब्भुज्जएसु अब्भुण्णएसु अब्भुट्ठिएसु सगज्जिएसु सविज्जुएसु सफुसिएसु सथणिएसु[3] धंतधोय-रुप्पपट्ट-अंक-संख-चंद-कुंद-सालिपिट्ठरासिसमप्पभेसु चिकुर-हरियाल-भेय-चंपग-सण-कोरेंट-सरिसव[4]-पउमरयसमप्पभेसु लक्खारस-सरस-रत्तकिंसुय-जासुमण-रत्तबंधुजीवग-जातिहिंगुलय[5]-सरस-कुंकुम-उरब्भससरुहिर-इंदगोवग-समप्पभेसु[6] वरहिण-नील-गुलिय[7]-सुगचासपिच्छ-भिंगपत्त-सासग[8]-नीलुप्पलनियर-नवसिरीसकुसुम-नवसद्दलसमप्पभेसु जच्चंजण-भिंगभेय-रिट्ठग-भमरावलि-गवलगुलिय-कज्जलसमप्पभेसु फुरंत-विज्जुय-सगज्जिएसु वायवस-विपुलगगण-चवलपरिसक्किरेसु, निम्मल-वरवारिधारा-पयलिय-पयंडमारुयसमाहय-समोत्थरंत-उवरिउवरितुरियवासं पवासिएसु,
धारा-पहकर-निवाय-निव्वाविय[9] मेइणितले हरियगगणकंचुए पल्लविय[10] पायव-

---

१. ना० १।१।१६ ।
२. सं० पा०—कयबलिकम्मा जाव विपुलाइं जाव विहरइ ॥
३. सथणिज्जेसु (क) ।
४. सरिसय (ख); सरिस (घ); वाचनान्तरे—'सण' स्थाने 'कंचण' 'सरिसव' स्थाने 'सरिस' त्ति पठ्यते (वृ) ।
५. हिंगुलिय (ग, घ) ।
६. इंदगोवसम° (क) ।
७. गुलिया (ख, घ) ।
८. सामग (क, ख); साम (वृपा) ।
९. निर्वापितशब्दाच्च सप्तम्येकवचनलोपो दृश्यः (वृ) ।
१०. इदं समस्तपदं स्यादपि तथापि वृत्तिकृता 'पल्लविय' पदं स्वतंत्ररूपेण व्याख्यातम्—इह सप्तमीबहुवचनलोपो दृश्यः, ततः पल्लवितेषु (वृ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गणेसु वल्लिवियाणेसु[1] पसरिएसु उन्नएसु[2] सोभग्गमुवगएसु[3] वेभारगिरि-प्पवाय-तड-कडगविमुक्केसु उज्झरेसु, तुरियपहाविय-पल्लोट्टफेणाउलं सकलुसं जलं वहंतीसु गिरिनदीसु सज्जज्जुण-नीव-कुडय-कंदल-सिलिंध[4]-कलिएसु उववणेसु,

मेहरसिय - हट्टतुट्टचिट्ठिय - हरिसवसपमुक्ककंठकेकारवं मुयंतेसु बरहिणेसु[5] उउवस[6]-मयजणिय-तरुणसहयरि-पणच्चिएसु नवसुरभि-सिलिंध-कुडय-कंदल-कलंब-गंधद्धणिं मुयंतेसु उववणेसु।

परहुय-रुय-रिभिय-संकुलेसु उद्दाइंत-रत्तइंदगोवय-थोवय-कारुण्णविलविएसु ओणयतणमंडिएसु दद्दुरपयंपिएसु संपिंडिय-दरिय-भमर-महुयरिपहकर-परिलिंत-मत्त-छप्पय-कुसुमासवलोल-महुर-गुंजंतदेसभाएसु उववणेसु।

परिसामिय[7]-चंद-सूर-गहगण-पणट्ठनक्खत्ततारगपहे[8] इंदाउह-बद्ध-चिंधपट्टम्मि[9] अंबरतले उड्डीणबलागपंति[10]-सोभंतमेहवंदे कारंडग-चक्कवाय-कलहंस-उस्सुयकरे संपत्ते पाउसम्मि काले ण्हायाओ[11] कयबलिकम्माओ कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ताओ 'किं ते?'[12]वरपायपत्तनेउर-मणिमेहल-हार-रइय-ओविय[13]-कडग-'खुड्डय[14]-विचित्तवरवलयथंभियभुयाओ कुंडलउज्जोवियाणणाओ'[15] रयणभूसियंगीओ, नासा[16]-नीसासवाय-वोज्झं चक्खुहरं वण्णफरिससंजुत्तं हयलालापेलवाइरेयं

---

१. °सुं (क, ख); अन्यत्रापि यत्र क्वचित् एतत् दृश्यते।

२. पाठान्तरे नगेषु पर्वतेषु नदेषु वा ह्रदेषु (वृ)।

३. सोहग्ग° (क)।

४. सिलिद्ध (ख, ग)।

५. बरिहणेसु (क)।

६. उदु° (ख); उडु° (ग, घ)।

७. परिझामिय (क, ग, घ, वृपा)।

८. °तारागपहे (क); °तारागणपहे (ग)।

९. °पटंटसि (ख, घ)।

१०. °बलागवंति (ख)।

११. किंभूता अम्मयाओ इत्याह—ण्हायाओ इत्यादि (वृ)।

१२. किन्नो (क); किन्ने (ग); किं रो (घ)। किं तत् 'यत् करोति' इति शेषः। किं च [भ० ६।१४४ सूत्रस्य पादटिप्पणं] असौ पाठः व्याख्यादृष्ट्या सरलोस्ति।

१३. उचिय (ग, घ)। वृत्तिकारेणापि 'उचिय' पदं व्याख्यातमस्ति—उचितानि योग्यानि (वृ)। किन्तु अत्र 'ओविय' पदं समीचीनमस्ति। संभवतो लिपिदोषेण परिवर्तनं जातम्। २४ सूत्रे 'ओविय' इति पाठो लभ्यते। तत्र वृत्तिकारेण 'ओविय त्ति परिकर्मितानि इति' व्याख्या कृतास्ति। अत्र वृत्तिकारेण 'उचिय' पाठो लब्धः तेन तथा व्याख्यातः।

१४. खद्दुय (घ); खड्डुय (घ)।

१५. खड्डुय- एगावलि- कंठमुरज- तिसरय-वरवलय-हेमसुत्त-कुंडलुज्जोवियाणणाओ (वृपा)।

१६. नास (क)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धवलकणय-खचियंतकम्मं आगासफलिह-सरिसप्पभं अंसुयं पवर[1] परिहियाओ, दुगूलसुकुमालउत्तरिज्जाओ[2] 'सव्वोउय-सुरभिकुसुम-पवरमल्लसोभियसिराओ'[3] कालागरुधूवधूवियाओ सिरी-समाणवेसाओ, सेयणय[4]-गंधहत्थिरयणं दुरूढाओ समाणीओ, सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं 'चंदप्पभवइरवेरुलिय-विमलदंड- संखकुंद- दगरयअमयमहियफेणपुंजसन्निगास- चउचामरवालवीजियं-गीओ'[5] सेणिएणं रण्णा सद्धिं हत्थिखंधवरगएणं पिट्ठओ-पिट्ठओ समणुगच्छमाणीओ चाउरंगिणीए सेणाए—महया हयाणीएणं गयाणीएणं रहाणीएणं पायत्ताणीएणं—सव्विड्ढीए[6] सव्वज्जुईए[7] •सव्वबलेणं सव्वसमुदएणं सव्वादरेणं सव्वविभूईए सव्वविभूसाए सव्वसंभमेणं सव्वपुप्फगंधमल्लालंकारेणं सव्वतुडिय-सद्द-सण्णि-णाएणं महया इड्ढीए महया जुईए महया बलेणं महया समुदएणं महया वरतु-डिय-जमगसमग-प्पवाइएणं संख-पणव-पडह-भेरि-झल्लरि-खरमुहि-हुडुक्क-मुरय-मुइंग-दुंदुहि°-निग्घोसनाइयरवेणं रायगिहं नयरं सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु आसित्तसित्त-सुइय-सम्मज्जिओवलित्तं[8] •पंचवण्ण-सरस-सुरभि-मुक्क-पुप्फपुंजोवयारकलियं कालागरु-पवरकुंदुरुक्क-तुरुक्क-धूव-डज्झंत-सुरभि-मघमघेंत-गंधुद्धयाभिरामं° सुगंधवर (गंध ?) गंधियं[9] गंधवट्टिभूयं अवलोएमाणीओ नागरजणेणं अभिनंदिज्जमाणीओ[10] गुच्छ-लया-रुक्ख-गुम्म-वल्लि-गुच्छोच्छाइयं सुरम्मं वेभारगिरिकडग[11]-पायमूलं सव्वओ समंता 'आहिंडमाणीओ-आहिंडमाणीओ दोहलं[12] विणिंति[13] ।

तं जइ णं अहमवि मेहेसु अब्भुग्गएसु जाव दोहलं विणिज्जामि'[14] ॥

---

१. प्रवरमिहानुस्वारलोपोदृश्यः (वृ) । 'ग' प्रतौ 'पवरं' इति पाठो पि लभ्यते ।

२. दुगुल्ल° (क) ।

३. पाठान्तरे—सर्वर्तुकसुरभिकुसुमैः सुरचिताः प्रलम्बा शोभमानाः कान्ता चित्रा माला यासां तास्तथा । एवमन्यान्यपिपदानि बहुवचनानि संस्करणीयानि । इह वर्णके बृहत्तरो वाचनाभेदः (वृ) ।

४. सेयणयं (ख) ।

५. अयमेवार्थो वाचनान्तरे इत्थमधीतः—सेयवरचामराहिं उद्धुव्वमाणीहिं-उद्धुव्वमा-णीहिं (वृ) ।

६. सव्व° (ख) ।

७. सं० पा०—सव्वजुईए जाव निग्घोसनाइय-रवेणं ।

८. सं० पा०—सामज्जिओवलित्तं जाव सुगंध-वरगंधियं ।

९. १।१।७६ सूत्रे, वृत्तेः पूरितपाठे 'गंध' शब्दो विद्यते । औपपातिकस्य ५५ सूत्रेपि स लभ्यते । अत्रापि तथैव युज्यते ।

१०. अभिनंदिज्जमाणीओ २ (क) ।

११. वेब्भार° (ख, ग) ।

१२. डोहलं (क, घ) ।

१३. विणएंति (क); विणियति (घ) ।

१४. वृत्तिकारस्य सम्मुखे सम्मता आदर्शा आसन् तेषु 'समंता आहिंडज्ज' इत्येतावानेव पाठः आसीत् । अग्रिमस्य पाठस्य वृत्तिकृता

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धारिणीए चिंता-पदं

३४. तए णं सा धारिणी देवी तंसि दोहलंसि अविणिज्जमाणंसि असंपत्तदोहला असंपुण्णदोहला असम्माणियदोहला सुक्का भुक्खा निम्मंसा ओलुग्गा ओलुग्ग-सरीरा पमइलदुब्बला किलंता ओमंथियवयण-नयणकमला पंडुइयमुही करयल-मलिय व्व चंपगमाला नित्तेया दीणविवण्णवयणा जहोचिय-पुप्फ-गंध-मल्लालं-कार-हारं[1] अणभिलसमाणी किड्डारमणकिरियं[2] परिहावेमाणी दीणा दुम्मणा निराणंदा भूमिगयदिट्ठीया ओहयमणसंकप्पा[3] °करतलपल्हत्थमुही अट्टज्झाणोव-गया° भियाइ ॥

पडिचारियाणं चिंताकारणपुच्छा-पदं

३५. तए णं तीसे धारिणीए देवीए अंगपडिचारियाओ अब्भितरियाओ दासचेडियाओ[4] धारिणिं देविं ओलुग्गं[5] भियायमाणिं[6] पासंति, पासित्ता एवं वयासी—किण्णं[7] तुमे देवाणुप्पिए ! ओलुग्गा ओलुग्गसरीरा जाव भियायसि ?

३६. तए णं सा धारिणी देवी ताहिं अंगपडिचारियाहिं अब्भितरियाहिं दासचेडि-याहिं[8] य एवं वुत्ता समाणी ताओ दासचेडियाओ[9] नो आढाइ नो परियाणइ[10], 'अणाढायमाणी अपरियाणमाणी'[11] तुसिणीया संचिट्ठइ[12] ॥

३७. तए णं ताओ अंगपडिचारियाओ अब्भितरियाओ दासचेडियाओ धारिणिं देविं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी—किण्णं तुमे[13] देवाणुप्पिए ! ओलुग्गा ओलुग्ग-सरीरा जाव[14] भियायसि ?

३८. तए णं सा धारिणी देवी ताहिं अंगपडिचारियाहिं[15] अब्भितरियाहिं दासचेडि-

---

वाचनान्तरत्वेन उल्लेखः कृतः, तस्य संगतत्वमपि प्रदर्शितम्—आहेंडज्ज त्ति आहिंडंते। अनेन चैव मुक्तव्यतिकरभाजां सामान्येन स्त्रीणां प्रशंसाद्वारेणात्मविषयेऽका-लमेघदोहदो धारिण्याः प्रादुरभूत् इत्युक्तम्। वाचनान्तरे तु—ओलोयमाणीओ २ आहिंडे-माणीओ २ डोहलं विणिंति। तं जइ णं अहमवि मेहेसु अब्भुग्गएसु जाव डोहलं विणिज्जामि। संगतश्चायं पाठ इति (वृ)।

१. मल्लालंकाराहारं (क, ख, ग)।

२. कीडा (क, ख, घ)।

३. सं० पा०—ओहयमणसंकप्पा जाव भियाइ।

४. चेडीओ (क, ग)।

५. ना० १।१।३४।

६. अत्र पाठसंक्षेपकरणे सुक्खं भुक्खं निम्मंसं इति विशेषणत्रयी न विवक्षितास्ति। एवमग्रेपि।

७. किं नं (क); किं णं (ख); किण्हं (ग)।

८. °चेडीहिं (ख, ग)।

९. चेडियाओ (ख, ग)।

१०. परियाणाइ (ग); परियाणेति (घ)।

११. °माणा अपरियाणमाणा (ख, घ)।

१२. चिट्ठइ (क)।

१३. तुमं (क, ग)।

१४. ना० १।१।३४।

१५. °परियारियाहिं (क)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

यहिं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ता समाणी नो आढाइ नो परियाणइ, अणाढाय-माणी अपरियाणमाणी तुसिणीया संचिट्ठइ ।।

पडिचारियाणं सेणियस्स निवेदण-पदं

३९. तए णं ताओ अंगपडिचारियाओ अब्भितरियाओ दासचेडियाओ धारिणीए देवीए अणाढाइज्जमाणीओ अपरिजाणिज्जमाणीओ तहेव संभंताओ समाणीओ धारिणीए देवीए अंतियाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं[1] •दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं° कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेंति, वद्धावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु सामी ! किंपि अज्ज धारिणी देवी ओलुग्गा ओलुग्गसरीरा जाव[2] अट्टज्झाणोवगया झियायइ ।।

सेणियस्स चिंताकारणपुच्छा-पदं

४०. तए णं से सेणिए राया तासिं अंगपडिचारियाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म तहेव संभंते समाणे सिग्घं तुरियं चवलं वेइयं[3] 'जेणेव धारिणी देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता'[4] धारिणिं देविं ओलुग्गं ओलुग्गसरीरं जाव[5] अट्टज्झाणोवगयं झियायमाणिं पासइ, पासित्ता एवं वयासी—किण्णं तुमं देवाणुप्पिए ! ओलुग्गा ओलुग्गसरीरा जाव अट्टज्झाणोवगया झियायसि ?

४१. तए णं सा धारिणी देवी सेणिएणं रण्णा एवं वुत्ता समाणी नो आढाइ नो परियाणइ जाव[6] तुसिणीया संचिट्ठइ ।।

४२. तए णं से सेणिए राया धारिणिं देविं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी—किण्णं तुमं देवाणुप्पिए ! ओलुग्गा ओलुग्गसरीरा जाव[7] अट्टज्झाणोवगया झियायसि ?

४३. तए णं सा धारिणी देवी सेणिएणं रण्णा दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ता समाणी नो आढाइ नो परियाणइ[8] तुसिणीया संचिट्ठइ ।।

४४. तए णं से सेणिए राया धारिणिं देविं सवह-सावियं करेइ, करेत्ता एवं वयासी—किण्णं[9] देवाणुप्पिए[10] ! अहमेयस्स अट्ठस्स अणरिहे सवणयाए ? तो[11] णं तुमं ममं अयमेयारूवं मणोमाणसियं दुक्खं रहस्सीकरेसि ।।

---

१. सं० पा०—करयलपरिग्गहियं जाव कट्टु ।
२. ना० १।१।३४ ।
३. वेइयं (क, ख, ग, घ) ।
४. जेणेव धारिणी देवी तेणेव पहारेत्थ गमणाए तएणं सेणिए राया जेणेव धारिणी देवी तेणेव उवागच्छइ २ (ग, वृपा) ।
५. ना० १।१।३४ ।
६. ना० १।१।३६ ।
७. ना० १।१।३४ ।
८. पू०—ना० १।१।३६ ।
९. किण्हकिण्णमिति वा पाठः (वृ) ।
१०. तुमं देवाणु° (क, घ) । अत्र 'तुमं' अनावश्यको विद्यते ।
११. ता (घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धारिणीए चिंताकारणनिवेदण-पदं

४५. तए णं सा धारिणी देवी सेणिएणं रण्णा सवह-साविया समाणी सेणियं रायं एवं वयासी—एवं खलु सामी ! मम तस्स उरालस्स जाव[1] महासुमिणस्स तिण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अयमेयारूवे[2] अकालमेहेसु दोहले पाउब्भूए—धण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ कयत्थाओ णं ताओ अम्मयाओ जाव[3] वेभारगिरि-कडग[4]-पायमूलं सव्वओ समंता आहिंडमाणीओ-आहिंडमाणीओ[5] दोहलं विणिंति । तं जइ णं अहमवि मेहेसु अब्भुग्गएसु जाव[6] दोहलं विणेज्जामि । 'तए णं अहं'[7] सामी ! अयमेयारूवंसि अकालदोहलंसि अविणिज्जमाणंसि ओलुग्गा जाव[8] अट्टज्झाणोवगया झियामि ।।

सेणियस्स आसासण-पदं

४६. तए णं से सेणिए राया धारिणीए देवीए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म धारिणिं देविं एवं वयासी—मा णं तुमं देवाणुप्पिए ! ओलुग्गा जाव[9] अट्टज्झाणोवगया झियाहि । अहं णं तह[10] करिस्सामि[11] जहा णं तुब्भं अयमेयारूवस्स अकाल-दोहलस्स मणोरहसंपत्ती भविस्सइ त्ति कट्टु धारिणिं देविं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं मणुन्नाहिं मणामाहिं वग्गूहिं समासासेइ, समासासेत्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सण्णिसण्णे धारिणीए देवीए एयं अकालदोहलं बहूहिं आएहि य उवाएहि य, उप्पत्तियाहि य वेणइयाहि य कम्मियाहि य पारिणामियाहि य—'चउव्विहाहिं बुद्धीहिं'[12] अणुचिंतेमाणे-अणुचिंतेमाणे तस्स दोहलस्स आयं वा उवायं वा 'ठिइं वा उप्पत्तिं वा'[13] अविंदमाणे ओहयमणसंकप्पे जाव[14] झियायइ ।।

अभयकुमारस्स सेणियं पइ चिंताकारणपुच्छा-पदं

४७. तयाणंतरं च णं अभए[15] कुमारे 'ण्हाए कयबलिकम्मे'[16] •कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ते° सव्वालंकारविभूसिए पायवंदए पहारेत्थ गमणाए ।।

---

१. ना० १।१।१९ ।
२. अतमेया° (ग)।
३. ना० १।१।३३ ।
४. वेब्भार° (ख, ग) ।
५. द्रष्टव्य : १।१।३३ सूत्रस्यासौ पाठः ।
६. ना० १।१।३३ ।
७. तए ण हं (क); तते णं हं (ख); तेणा हं(घ) ।
८, ९. ना० १।१।३४ ।
१०. तहा (घ) ।
११. घत्तीहामि (वृ); करिस्सामि (वृपा) ।
१२. चउव्विहाए बुद्धीए (ग) ।
१३. उप्पत्तिं वा ठिइं वा (क); उप्पत्तिं वा (वृपा) ।
१४. ना० १।१।३४ ।
१५. अभय (क, ग, घ) ।
१६. सं० पा०—कयबलिकम्मे जाव सव्वालंकार° ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४८. तए णं से अभए कुमारे[1] जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सेणियं रायं ओहयमणसंकप्पं जाव[2] झियायमाणं पासइ, पासित्ता अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—अण्णया[3] ममं सेणिए राया एज्जमाणं पासइ, पासित्ता आढाइ परियाणइ सक्कारेइ सम्माणेइ [इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं मणुन्नाहिं मणामाहिं ओरालाहिं वग्गूहिं ?] आलवइ संलवइ अद्धासणेणं[4] उवनिमंतेइ मत्थयंसि अग्घाइ। इयाणिं ममं सेणिए राया नो आढाइ नो परियाणइ नो सक्कारेइ नो सम्माणेइ नो इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं मणुन्नाहिं मणामाहिं ओरालाहिं वग्गूहिं आलवइ संलवइ नो अद्धासणेणं उवनिमंतेइ नो मत्थयंसि अग्घाइ[5], किं पि ओहयमणसंकप्पे जाव[6] झियायइ। तं भवियव्वं णं एत्थ कारणेणं। तं सेयं खलु ममं सेणियं रायं एयमट्ठं पुच्छित्तए—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता जेणामेव[7] सेणिए राया तेणामेव[8] उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावेत्ता एवं वयासी—तुब्भे णं ताओ! अण्णया ममं एज्जमाणं पासित्ता आढाह परियाणह[9] °सक्कारेह सम्माणेह[10] आलवह संलवह अद्धासणेणं उवणिमंतेह° मत्थयंसि अग्घायह[11]। इयाणिं ताओ! तुब्भे ममं नो आढाह जाव 'नो मत्थयंसि अग्घायह'[12] किं पि ओहयमणसंकप्पा जाव झियायह। तं भवियव्वं णं ताओ! एत्थ कारणेणं। तओ तुब्भे मम ताओ! एयं कारणं अगूहमाणा[13] असंकमाणा अनिण्हवमाणा अपच्छाएमाणा जहाभूतमवितहमसंदिद्धं एयमट्ठं आइक्खह। तए णंहं तस्स कारणस्स अंतगमणं गमिस्सामि॥

सेणियस्स चिंताकारणनिवेदण-पदं

४९. तए णं से सेणिए राया अभएणं कुमारेणं एवं वुत्ते समाणे अभयं कुमारं एवं वयासी—एवं खलु पुत्ता! तव चुल्लमाउयाए[14] धारिणीदेवीए तस्स गब्भस्स दोसु मासेसु अइक्कंतेसु तइयमासे वट्टमाणे दोहलकालसमयंसि अयमेयारूवे

---

१. × (घ)।
२. ना० १।१।३४।
३. अण्णया य (क); अण्णतो (घ)।
४. आसणेणं (क, ख, ग)। नोयुक्तपुनरावर्तने 'अद्धासणेण' पाठोस्ति, अत्रापि तथैव युज्यते।
५. अग्घायइ (क, ख, ग)।
६. ना० १।१।३४।
७. जेणेव (घ)।
८. तेणेव (घ)।
९. सं० पा०—परियाणह जाव मत्थयंसि
१०. पू०—अस्य सूत्रस्य पूर्वभागः।
११. आग्घायह आसणेणं उवनिमंतेह (क, घ)।
१२. नो आसणेणं उवनिमंतेह (क, ख, ग, घ)।
१३. अगूहेमाणा (ख, ग, घ)।
१४. तुल्ल° (ग)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दोहले पाउब्भवित्था—धण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ तहेव निरवसेसं भाणियव्वं जाव[1] वेभारगिरिकडग-पायमूलं सव्वओ समंता आहिंडमाणीओ-आहिंडमाणीओ दोहलं विणिंति। तं जइ णं अहमवि मेहेसु अब्भुग्गएसु जाव दोहलं विणिज्जामि।

तए णं अहं पुत्ता धारिणीए देवीए तस्स अकालदोहलस्स बहूहिं आएहि य उवाएहि य जाव[2] उप्पत्तिं अविंदमाणे ओहयमणसंकप्पे जाव[3] झियामि, तुमं आगयं पि न याणामि। तं एतेणं कारणेणं अहं पुत्ता! ओहयमणसंकप्पे जाव झियामि॥

अभयस्स आसासण-पदं

५०. तए णं से अभए कुमारे सेणियस्स रण्णो अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिए जाव[4] हरिसवस-विसप्पमाणहियए सेणियं रायं एवं वयासी—मा णं तुब्भे ताओ! ओहयमणसंकप्पा[5] जाव[6] झियायह। अहं णं तहा करिस्सामि जहा णं मम चुल्लमाउयाए धारिणीए देवीए अयमेयारूवस्स अकालदोहलस्स मणोरहसंपत्ती भविस्सइ त्ति कट्टु सेणियं रायं ताहिं इट्ठाहिं[7] •कंताहिं पियाहिं मणुन्नाहिं मणामाहिं वग्गूहिं° समासासेइ॥

५१. तए णं से सेणिए राया अभएणं कुमारेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठ तुट्ठ-चित्तमाणंदिए जाव[8] हरिसवस-विसप्पमाणहियए अभयं कुमारं सक्कारेइ सम्माणेइ, पडिविसज्जेइ॥

अभयस्स देवाराहण-पदं

५२. तए णं से 'अभए कुमारे'[9] 'सक्कारिए सम्माणिए'[10] पडिविसज्जिए समाणे सेणियस्स रण्णो अंतियाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणामेव सए भवणे, तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहासणे निसण्णे॥

५३. तए णं तस्स अभयस्स[11] कुमारस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए[12] •चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—नो खलु सक्का माणुस्सएणं उवाएणं मम

---

१. ना० १।१।३३।
२. ना० १।१।४६।
३. ना० १।१।३४।
४. ना० १।१।१९।
५. तोहय° (क)।
६. ना० १।१।३४।
७. सं० पा०—इट्ठाहिं जाव समासासेइ।
८. ना० १।१।१९।
९. अभयकुमारे (ख, ग, घ)।
१०. सक्कारिय ° (क); सक्कारिय सम्माणिय (ख, ग)।
११. अभय (ख, ग, घ)।
१२. सं० पा० —अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चुल्लमाउयाए[1] धारिणीए देवीए अकालदोहलमणोरहसंपत्ति करित्तए, नन्नत्थ[2] दिव्वेणं उवाएणं। अत्थि णं मज्झ[3] सोहम्मकप्पवासी पुव्वसंगइए देवे महिड्ढीए[4] •महज्जुइए महापरक्कमे महाजसे महब्बले महाणुभावे° महासोक्खे[5]। तं सेयं खलु ममं पोसहसालाए पोसहियस्स बंभचारिस्स[6] उम्मुक्कमणिसुवण्णस्स ववगयमालावण्णगविलेवणस्स निक्खित्तसत्थमुसलस्स एगस्स अबीयस्स दब्भ-संथारोवगयस्स अट्ठमभत्तं पगिण्हित्ता[7] पुव्वसंगइयं देवं मणसीकरेमाणस्स विहरित्तए।

तए णं पुव्वसंगइए देवे मम चुल्लमाउयाए धारिणीए देवीए अयमेयारूवं अकाल-मेहेसु दोहलं विणेहिति—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता जेणेव पोसहसाला तेणामेव[8] उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसालं पमज्जइ, पमज्जित्ता उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता[9] दब्भसंथारगं दुरुहइ, दुरुहित्ता अट्ठमभत्तं[10] पगिण्हइ, पगिण्हित्ता पोसहसालाए पोसहिए बंभचारी जाव पुव्वसंगइयं देवं मणसीकरेमाणे-मणसीकरेमाणे[11] चिट्ठइ॥

देवागमण-पदं

५४. तए णं तस्स अभयकुमारस्स अट्ठमभत्ते परिणममाणे पुव्वसंगइयस्स देवस्स आसणं चलइ।

५५. तए णं से पुव्वसंगइए सोहम्मकप्पवासी देवे आसणं चलियं पासइ, पासित्ता ओहिं पउंजइ।

५६. तए णं तस्स पुव्वसंगइयस्स देवस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए[12] •चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—एवं खलु मम पुव्वसंगइए जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे दाहिणड्ढभरहे रायगिहे नयरे पोसहसालाए पोसहिए अभए नामं कुमारे अट्ठमभत्तं पगिण्हित्ता णं ममं मणसीकरेमाणे-मणसीकरेमाणे चिट्ठइ। तं सेयं खलु मम अभयस्स कुमारस्स अंतिए पाउब्भवित्तए—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमइ, अवक्कमित्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं

---

१. तुल्ल° (ग) प्रायः सर्वत्र।
२. ण अण्णत्थ (क)।
३. मम (घ)।
४. सं० पा०—महिड्ढीए जाव महासोक्खे।
५. महसोक्खे (क, ख)।
६. बंभयारिस्स (घ)।
७. परिगिण्हित्ता (क, घ)।
८. तेणेव (घ)।
९. पडिलेहेत्ता दब्भसंथारयं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता (ख, घ), अत्र उपासकदशायाः प्रथमाध्ययने (६०) सूत्रे एवं पाठो विद्यते—दब्भसंथारयं संथरेइ, संथरेत्ता°।
१०. अट्ठमं° (ख)।
११. × (क, ख, घ)।
१२. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समोहण्णइ[1], समोहणित्ता संखेज्जाइं जोयणाइं दंडं[2] निसिरइ, तं जहा—रयणाणं वइराणं[3] वेरुलियाणं लोहियक्खाणं मसारगल्लाणं हंसगब्भाणं पुलगाणं सोगंधियाणं जोईरसाणं अंकाणं अंजणाणं रययाणं[4] जायरूवाणं अंजणपुलगाणं फलिहाणं रिट्ठाणं अहाबायरे पोग्गले परिसाडेइ, परिसाडेत्ता अहासुहुमे पोग्गले परिगिण्हइ, परिगिण्हित्ता अभयकुमारमणुकंपमाणे देवे 'पुव्वभवजणिय-नेह-पीइ-बहुमाणजायसोगे'[5] तओ विमाणवरपुंडरीयाओ रयणुत्तमाओ 'धरणियल-गमण-तुरिय-संजणिय-गमणपयारो'[6] 'वाघुण्णिय-विमल-कणग-पयरग-वडिंसगमउडुक्कडाडोवदंसणिज्जो अणेगमणि-कणगरयणपहकरपरिमंडिय-भत्तिचित्त-विणिउत्तग-मणुगुणजणियहरिसो पिंखोलमाणवरललियकुंडलुज्जलिय-वयणगुणजणियसोम्मरूवो'[7] उदिओ विव कोमुदीनिसाए सणिच्छरंगारकुज्जलियमज्झभागत्थो नयणाणंदो सरयचंदो दिव्वोसहिपज्जलुज्जलियदंसणाभिरामो उदुलच्छिसमत्त-जायसोहो पइट्ठगंधुद्धयाभिरामो मेरू विव नगवरो विगुव्वियविचित्तवेसो दीवसमुद्दाणं असंखपरिमाणनामधेज्जाणं मज्झकारेणं वीइवयमाणो उज्जोयंतो[8] पभाए विमलाए जीवलोयं रायगिहं पुरवरं च अभयस्स पासं ओवयइ दिव्व-रूवधारी।

५७. तए णं से देवे अंतलिक्खपडिवण्णे दसद्धवण्णाइं सखिंखिणियाइं पवर वत्थाइं परिहिए[9] अभयं कुमारं एवं वयासी—अहं णं देवाणुप्पिया! पुव्वसंगइए

---

१. समोहणति (क, ख, घ)।

२. दंडं उड्ढं (ग)।

३. वयराणं (ग, घ)।

४. रयणाणं (ग, घ) इत्यपपाठः।

५. वाचनान्तरे—पूर्वभवजनितस्नेहप्रीतिबहुमानजनितशोभः (वृ)।

६. वाचनान्तरे—धरणीतलगमनसंजनितमनःप्रचारः (वृ)।

७. °सोमरूवो (ख, घ); वाचनान्तरे पुनरेवं विशेषणत्रयं दृश्यते—वाघुन्निय-विमलकणग-पयरग-वडेंसगपकंपमाण - चललोल - ललिय-परिलंबमाण-नर-मगर-तुरग-मुहसय-विणिग्गओग्गिण्ण - पवरमोत्तियविरायमाणमउडुक्कडावडोवदरिसणिज्जो अणेगमणिकणगरयण-पहकरपरिमंडिय-भाग भत्तिचित्त-विणिउत्तग-मणुगुणजणिय-पेंखोलमाणवरललियकुंडलुज्जलियअहियआभरणजणियसोभे गयजलमल-विमलदंसणविरायमाणरूवे (वृ)।

८. उज्जोवेंतो (क, ग)।

९. 'परिहिए' इतिपाठानन्तरं आदर्शेषु 'एक्को ताव एसो गमो। अन्नो वि गमो' इत्युल्लेखोस्ति। तदनन्तरं द्वितीयो गमः साक्षाल्लिखितोस्ति, तेनादर्शेषु गमद्वयस्य सम्मिश्रणं जातम्। वृत्तावपि अस्य सूचना लभ्यते, यथा—एकस्तावदेष गमः पाठोन्यो पि द्वितीयो गमो वाचनाविशेषः पुस्तकान्तरेषु दृश्यते। अस्योल्लेखस्यानुसारेण द्वितीयगमस्य पाठः इत्थं भवति—"तएणं से देवे ताए उक्किट्ठाए तुरियाए चवलाए चंडाए सीहाए उद्धुयाए जयणाए छेयाए दिव्वाए देवगईए जेणामेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे जेणामेव दाहिणड्ढभरहे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोहम्मकप्पवासी देवे महिड्ढीए[1] जं णं तुमं पोसहसालाए अट्ठमभत्तं पगिण्हित्ता[2] णं ममं मणसीकरेमाणे-मणसीकरेमाणे चिट्ठसि, तं एस णं देवाणुप्पिया! अहं इहं हव्वमागए। संदिसाहि[3] णं देवाणुप्पिया! किं करेमि? किं दलयामि[4]? किं पयच्छामि? किं वा ते हियइच्छियं[5]?

५८. तए णं से अभए कुमारे तं पुव्वसंगइयं देवं अंतलिक्खपडिवण्णं पासित्ता हट्ठतुट्ठे पोसहं पारेइ, पारेत्ता करयल[6] °परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए° अंजलिं कट्टु एवं वयासी--एवं खलु देवाणुप्पिया! मम चुल्लमाउयाए धारिणीए देवीए अयमेयारूवे अकालदोहले पाउब्भूए—धन्नाओ णं ताओ अम्मयाओ तहेव पुव्वगमेणं जाव[7] वेभारगिरिकडग-पायमूलं सव्वओ समंता आहिंडमाणीओ-आहिंडमाणीओ दोहलं विणिंति। तं जइ णं अहमवि मेहेसु अब्भुग्गएसु जाव[8] दोहलं विणेज्जामि—तं णं तुमं देवाणुप्पिया! मम चुल्लमाउयाए धारिणीए देवीए अयमेयारूवं अकालदोहलं विणेहि॥

देवस्स अकालमेहविउव्वण-पदं

५९. तए णं से देवे अभएणं कुमारेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे अभयं कुमारं एवं वयासी—

तुमं णं देवाणुप्पिया! सुनिव्वुय-वीसत्थे अच्छाहि[9]। अहं णं तव चुल्लमाउयाए धारिणीए देवीए अयमेयारूवं अकालदोहलं[10] विणेमि त्ति कट्टु अभयस्स कुमारस्स अंतियाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता उत्तरपुरत्थिमे णं वेभारपव्वए वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णइ, समोहणित्ता संखेज्जाइं जोयणाइं दंडं निसिरइ[11] जाव[12] दोच्चंपि वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णइ, समोहणित्ता खिप्पामेव सगज्जियं सविज्जुयं सफुसियं पंचवण्णमेहनिणाओवसोहियं दिव्वं पाउससिरिं विउव्वइ, विउव्वित्ता जेणामेव[13] अभए कुमारे तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता

रायगिहे नयरे पोसहसाला अभयकुमारे तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अंतलिक्खपडिवन्ने दसद्धवण्णाइं सखिंखिणियाइं पवर वत्थाइं परिहिए"।

वृत्तिकारेण द्वितीयगमविषये एका सूचनापि दत्तास्ति—अयं द्वितीयो गमो जीवाभिगम-सूत्रवृत्त्युनुसारेण लिखितः (वृ)।

१. महड्ढिए (ख, घ); पू०—ना० १।१।५३।
२. संगिण्हित्ता (क, ख, ग)।
३. संदिसहा (क); संदिसह (घ)।
४. दलामि (ख, ग, घ)।
५. हियं° (ग)।
६. सं० पा०—करयल अंजलिं।
७,८. ना० १।१।३३।
९. अत्थाहि (ग, घ)।
१०. जावदोहलं (क)।
११. निसरति (ख, ग, घ)।
१२. ना० १।१।५६।
१३. जेणेव (ख, ग, घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अभयं कुमारं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! मए तव पियट्ठयाए 'सगज्जिया सफुसिया सविज्जुया'[1] दिव्वा पाउससिरी विउव्विया, तं विणेऊ णं देवाणुप्पिया ! तव चुल्लमाउया धारिणी देवी अयमेयारूवं अकालदोहलं ॥

धारिणीए दोहद-पूरण-पदं

६०. तए णं से अभए कुमारे तस्स पुव्वसंगइयस्स 'सोहम्मकप्पवासिस्स देवस्स'[2] अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे सयाओ भवणाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणामेव सेणिए राया तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल[3] •परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए° अंजलि कट्टु एवं वयासी—एवं खलु ताओ ! मम पुव्वसंगइएणं सोहम्मकप्पवासिणा देवेणं खिप्पामेव सगज्जिया सविज्जुया (सफुसिया ?) पंचवण्णमेहनिणाओवसोभिया दिव्वा पाउससिरी विउव्विया। तं विणेऊ णं मम चुल्लमाउया धारिणी देवी अकालदोहलं ॥

६१. तए णं से सेणिए राया अभयस्स कुमारस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे[4] कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो ! देवाणुप्पिया ! रायगिहं नगरं सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु आसित्तसित्त-सुइय-संमज्जिओवलित्तं जाव[5] सुगंधवर [गंध ?] गंधियं गंधवट्टिभूयं करेह य कारवेह य, एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ॥

६२. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा[6] •सेणिएणं रण्णा एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवसविसप्पमाणहियया तमाणत्तियं° पच्चप्पिणंति ॥

६३. तए णं से सेणिए राया दोच्चंपि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! हय-गय-रह-पवरजोह[7]-कलियं चाउरंगिणिं सेणं[8] सन्नाहेह, सेयणयं च गंधहत्थिं परिकप्पेह। तेवि तहेव करेंति जाव पच्चप्पिणंति ॥

६४. तए णं से सेणिए राया जेणेव धारिणी देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता

---

१. सगज्जिय सफुसिय सविज्जुया (क, ख, ग, घ); पूर्वपंक्तौ 'सफुसियं' अंतिमं पदमस्ति अत्र च 'सविज्जुया' इत्यंतिमं पदम्। कथमसौ विपर्ययो जातः इति न निश्चयपूर्वकं वक्तुं शक्यते।

२. देवस्स सोहम्मकप्पवासिस्स (क, ख, ग, घ)।

३. सं० पा०—करयल अंजलिं।

४. हट्ठतुट्ठ (क, ग, घ)।

५. ना० १।१।३३।

६. सं० पा०—कोडुंबियपुरिसा जाव पच्चप्पिणंति।

७. जोहपवर (क, ख, ग, घ)। अष्टमाध्ययनस्य १६१ सूत्रानुसारेण असौ पाठः परिवर्तितः।

८. सेन्नं (क, ख, ग, घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धारिणिं देविं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिए ! सगज्जिया[1] •सविज्जुया सफुसिया दिव्वा॰पाउससिरी पाउब्भूया। तं णं तुमं देवाणुप्पिए ! एयं अकाल-दोहलं विणेहि ॥

६५. तए णं सा धारिणी देवी सेणिएणं रण्णा एवं वुत्ता समाणी हट्ठतुट्ठा जेणामेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मज्जणघरं अणुप्पविसइ, अणुप्प-विसित्ता अंतो अंतेउरंसि ण्हाया कयबलिकम्मा कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ता 'किं ते'[2] वरपायपत्तनेउर-मणिमेहल-हार-रइय-ओविय-कडग-खुड्डय-विचित्त वरवलयथंभियभुया जाव[3] 'आगास-फालिय-समप्पभं'[4] अंसुयं नियत्था[5], सेयणयं गंधहत्थिं दुरूढा समाणी अमय-महिय-फेणपुंज-सन्निगासाहिं सेयचामरवाल-वीयणीहिं वीइज्जमाणी-वीइज्जमाणी संपत्थिया ॥

६६. तए णं से सेणिए राया ण्हाए कयबलिकम्मे[6] •कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ते अप्पमहग्घाभरणालंकिय॰सरीरे हत्थिखंधवरगए सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं चउचामराहिं वीइज्जमाणे धारिणिं देविं पिट्ठओ अणुगच्छइ ॥

६७. तए णं सा धारिणी देवी सेणिएणं रण्णा हत्थिखंधवरगएणं पिट्ठओ-पिट्ठओ समणुगम्ममाण-मग्गा हय-गय-रह-पवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडा महया भड-चडगर-वंदपरिक्खित्ता सव्विड्ढीए सव्वज्जुईए जाव[7] दुंदुभिनिग्घोसनाइयरवेणं रायगिहे नयरे सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर[8]-•चउम्मुह॰-महापहपहेसु नागरजणेणं अभिनंदिज्जमाणी-अभिनंदिज्जमाणी जेणामेव 'वेभारगिरि-पव्वए'[9] तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वेभारगिरि-कडग-तडपायमूले आरामेसु य 'उज्जाणेसु य'[10] काणणेसु य वणेसु य वणसंडेसु य 'रुक्खेसु य'[11] 'गुच्छेसु य'[12] गुम्मेसु य लयासु य वल्लीसु य कंदरासु य दरीसु य चुंढीसु[13] य जूहेसु[14] य कच्छेसु य नदीसु य संगमेसु य 'विवरएसु य'[15] अच्छमाणी[16]

---

१. सं० पा०—सगज्जिया जाव पाउससिरी।
२. किं तत् 'यत् करोति' इति शेषः।
३. ना० १।१।३३।
४. सप्पभं ॰फलिय॰ (क); ॰फलिहसप्पभं (ख); ॰फालिय सप्पभं (ग); ॰फालिह-सप्पभं (घ); ॰फलिह-सरिसप्पभं (१।१।३३)
५. नियच्छा (क, ग)।
६. सं० पा०—कयबलिकम्मे जाव सरीरे।
७. ना० १।१।३३।
८. सं० पा०—चच्चर जाव महापहपहेसु।
९. वेब्भार ॰(ख, ग); विब्भार॰ (घ)।
१०. × (ख, ग)।
११. × (ख)।
१२. गच्छेसु य (ख); × (ग)।
१३. चुढिसु (क); वान्हिसु (ख); चोड्ढीसु (ग, घ)।
१४. दहेसु (ख, ग, घ, वृपा)।
१५. × (क); विरयतेसु य (ख); वियरतेसु य (ग); वियारेसु य (घ)।
१६. अत्थमाणी (ख)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

य पेच्छमाणी य मज्जमाणी य पत्ताणि य पुप्फाणि य फलाणि य पल्लवाणि य गिण्हमाणी य माणेमाणी य अग्घायमाणी[1] य परिभुंजेमाणी[2] य परिभाएमाणी य वेभारगिरिपायमूले 'दोहलं विणेमाणी'[3] सव्वओ समंता आहिंडइ ॥

६८. तए णं सा धारिणी देवी सम्माणियदोहला[4] विणीयदोहला संपुण्णदोहला[5] संपत्तदोहला[6] जाया यावि होत्था ॥

६९. तए णं सा धारिणी देवी सेयणयगंधहत्थिं दुरूढा[7] समाणी सेणिएणं हत्थिखंध-वरगएणं पिट्ठओ-पिट्ठओ समणुगम्ममाण-मग्गा हय-गय[8]-•रह-पवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडा महया भड-चडगर-वंदपरिक्खित्ता सव्विड्ढीए सव्वज्जुईए जाव[9] दुंदुभिनिग्घोसनाइय°-रवेणं जेणेव रायगिहे नयरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता रायगिहं नयरं मज्झंमज्झेणं जेणामेव सए भवणे तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता विउलाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं[10] •पच्चणुभवमाणी° विहरइ ॥

अभएण देवस्स पडिविसज्जण-पदं

७०. तए णं से अभए कुमारे जेणामेव पोसहसाला तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पुव्वसंगइयं देवं सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ ॥

७१. तए णं से देवे सगज्जियं [सविज्जुयं सफुसियं ?] पंचवण्णमेहोवसोहियं दिव्वं पाउससिरिं पडिसाहरइ, पडिसाहरित्ता जामेव दिसिं[11] पाउब्भूए तामेव दिसिं[12] पडिगए ॥

धारिणीए गब्भचरिया-पदं

७२. तए णं सा धारिणी देवी तंसि अकालदोहलंसि विणीयंसि सम्माणियदोहला तस्स गब्भस्स अणुकंपणट्ठाए[13] जयं चिट्ठइ जयं आसयइ[14] जयं सुवइ, आहारं पि

---

१. × (क); अग्घाएमाणी (ख)।
२. परिभुंजमाणी (ख, ग)।
३. विणेमाणी (क, ख, ग); डोहलं विणेमाणी (घ); वृत्तिकारेणापि 'दोहलं' इति पाठो मूलतया नैव व्याख्यातः। यथा—विणेमाणी त्ति—डोहलं विनयंती (वृ)।
४. १।१।३३ सूत्रानुसारेण 'सम्माणियदोहला' इति पाठो युज्यते, यद्यपि प्रयुक्तादर्शेषु नोपलभ्यते। क्वचित्प्रयुक्तेषु आदर्शेषु लभ्यते।
५. संपन्नडोहला (घ)।
६. संपन्नडोहला (क, ख)।
७. दुरुढा (क)।
८. सं० पा०—हयगय जाव रवेणं।
९. ना० १।१।३३।
१०. सं० पा०—भोगभोगाइं जाव विहरइ।
११. दिसं (क, घ)।
१२. दिसं (क, घ)।
१३. °ट्ठयाए (क)।
१४. आसति (घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

य णं आहारेमाणी—नाइतित्तं नाइकडुयं नाइकसायं नाइअंबिलं नाइमहुरं, जं तस्स गब्भस्स हियं मियं पत्थयं देसे य काले य आहारं आहारेमाणी, नाइचिंतं नाइसोयं नाइमोहं नाइभयं नाइपरित्तासं[1] ववगयचिंता-सोय-मोह-भय-परित्तासा उदु[2]-भज्जमाण[3]-सुहेहिं भोयण-च्छायण-गंध-मल्लालंकारेहिं तं[4] गब्भं सुहंसुहेणं परिवहइ ।।

मेहस्स जम्म-वद्धावण-पदं

७३. तए णं सा धारिणी देवी नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्ठमाण[5] य[6] राइंदियाणं वीइक्कंताणं अद्धरत्तकालसमयंसि[7] सुकुमालपाणिपायं जाव[8] सव्वंगसुंदरं दारगं पयाया ।।

७४. तए णं ताओ अंगपडियारियाओ धारिणिं देविं नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं जाव[9] सव्वंगसुंदरं दारगं पयायं पासंति, पासित्ता सिग्घं तुरियं चवलं वेइयं[10] जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सेणियं रायं जएणं विजएणं वद्धावेंति, वद्धावेत्ता करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! धारिणी देवी नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं जाव सव्वंगसुंदरं दारगं पयाया। तं णं अम्हे देवाणुप्पियाणं पियं निवेएमो, पियं भे[11] भवउ ।।

७५. तए णं से सेणिए राया तासिं अंगपडियारियाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे ताओ अंगपडियारियाओ महुरेहिं वयणेहिं विउलेण य पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारेणं सक्कारेइ सम्माणेइ, मत्थयधोयाओ[12] करेइ, पुत्ताणुपुत्तियं वित्तिं कप्पेइ, कप्पेत्ता पडिविसज्जेइ ।।

मेहस्स जम्मुस्सवकरण-पदं

७६. तए णं से सेणिए राया [पच्चूसकालसमयंसि[13] ?] कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! रायगिहं नगरं आसिय[14]-●सम्मज्जिओवलित्तं सिंघाडग-तिय-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु आसित्त-सित्त-सुइ-सम्मट्ठ-रत्थंतरावण-वीहियं मंचाइमंचकलियं णाणाविहराग-

---

१. × (क, ख, ग)।
२. उडु (ग)।
३. भयमाण (क, ख, घ)।
४. × (क)।
५. अद्धट्ठ ° (ग)।
६. × (ख, ग)।
७. अड्ढरत्त° (ख)। ८. ओ० सू० १४३।
९. ना० १।१।७३।
१०. चेतियं (क, ग, घ)।
११. ते (क, ख, ग, घ)।
१२. मत्थाधोयाओ (क, ग)।
१३. क्वचित् प्रयुक्तादर्शेषु कोष्ठकवर्तिपाठो लभ्यते तथा १।१।२२ सूत्रेपि विद्यते, तेनात्र स्वीकृतः।
१४. सं० पा०—आसिय जाव परिगीयं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ऊसिय-ज्झय-पडागाइपडाग-मंडियं लाउल्लोइय-महियं गोसीस-सरस-रत्त-चंदण-दद्दर-दिण्णपंचंगुलितलं उवचियचंदणकलसं चंदणघड-सुकय-तोरण-पडिदुवारदेसभायं आसत्तोसत्तविउल-वट्ट-वग्घारिय-मल्लदाम-कलावं पंचवण्ण-सरस-सुरभिमुक्क-पुप्फपुंजोवयार-कलियं कालागुरु-पवर-कुंदुरुक्क-तुरुक्क-धूव-डज्झंत-मघमघेंत-गंधुद्धुयाभिरामं सुगंधवरगंधगंधियं गंधवट्टिभूयं नड-णटग-जल्ल-मल्ल-मुट्ठिय-वेलंबग-कहकहग-पवग-लासग-आइक्खग-लंख-मंख- तूणइल्ल-तुंबवीणिय-अणेगतालायर°परिगीयं करेह, कारवेह य, चारगपरिसोहणं[1] करेह, करेत्ता माणुम्माणवद्धणं करेह, करेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह[2] ।।

७७. •तए णं ते कोडुंबियपुरिसा सेणिएणं रण्णा एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठ-चित्त-माणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाणहियया तमाण-त्तियं° पच्चप्पिण्णंति ।।

७८. तए णं से सेणिए राया अट्ठारससेणि-प्पसेणीओ सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! रायगिहे नगरे अब्भितरबाहिरिए उस्सुंकं[3] उक्करं अभडप्पवेसं अदंडिम-कुदंडिमं अधरिमं अधारणिज्जं अणुद्धयमुइंगं अमिलायमल्लदामं गणियावरनाडइज्जकलियं अणेगतालायराणुचरियं पमुइय-पक्कीलियाभिरामं जहारिहं 'ठिइवडियं दसदेवसियं'[4] करेह, कारवेह य, एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ।।

७९. तेवि तहेव[5] करेंति, तहेव पच्चप्पिणंति ।।

८०. तए णं से सेणिए राया बाहिरियाए उवट्ठाणसालाए सीहासणवरगए पुरत्थाभि-मुहे सण्णिसण्णे 'सतिएहि य साहस्सिएहि य सयसाहस्सिएहि य दाएहिं दलय-माणे दलयमाणे'[6] पडिच्छमाणे-पडिच्छमाणे एवं च णं विहरइ ।।

मेहस्स नामादिसक्कार (संस्कार) करण-पदं

८१. तए णं तस्स अम्मापियरो 'पढमे दिवसे ठितिपडियं' करेंति, बितिए दिवसे

१. चारगारसोहणं (क); चारगसोहणं (ख, घ); चारागारपरिसोहणं (ग) एकस्मिन् हस्त-लिखितवृत्त्यादर्शे 'चारगपरिशोधनं' इति व्याख्यातमस्ति अपरस्मिंश्च 'चारागारशोधनं' इति लभ्यते ।

२. सं० पा०—पच्चप्पिणह जाव पच्चप्पिणंति ।

३. उस्सुक्कं (क, ग, घ) ।

४. ठिइवडियं (वृ); वाचनान्तरे—दसदिवसियं ठिइपडियं ।

५. × (ख, ग, घ) ।

६. सएहिं साहस्सिएहिं य सयसाहस्सिएहिं य दाएहिं भागेहिं° (क); °जाएहिं दाएहिं भागेहिं° (ख, घ), °दलमाणे २ (ग); वाचनान्तरे—शतिकांश्च इत्यादि यागान्—देवपूजाः, दायान्—दानानि, भागान्—लब्ध-द्रव्यविभागान् इति (वृ) ।

७. जायकम्मं (क, ख, ग, घ, वृ,); निरयाव-लियाओ १।१।६० 'ठितिपडियं च जहा मेहस्स' इति संकेतितमस्ति, तस्याधारेणासौ पाठः स्वीकृतः ।

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

जागरियं करेंति, ततिए दिवसे चंदसूरदंसणियं[1] करेंति, एवामेव 'निवत्ते असुइजायकम्मकरणे'[2] संपत्ते बारसाहे[3] विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडावेंति, उवक्खडावेत्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं बलं च बहवे गणनायग[4]-●दंडनायग-राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-मंति-महामंति-गणग-दोवारिय-अमच्च-चेड-पीढमद्द-नगर-निगम-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह-दूय-संधिवाले° आमंतेंति। तओ पच्छा ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउय[5]-●मंगल-पायच्छित्ता° सव्वालंकारविभूसिया[6] महइमहालयंसि भोयणमंडवंसि तं विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं मित्त-नाइ[7]-●नियग-सयण-संबंधि-परियणेहिं बलेण च बहूहिं गणनायग-दंडनायग-राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-मंति-महामंति-गणग-दोवारिय-अमच्च-चेड-पीढमद्द-नगर-निगम-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह-दूय-संधिवालेहिं° सद्धिं आसाएमाणा 'विसाएमाणा परिभाएमाणा'[8] परिभुंजेमाणा एवं च णं विहरंति। जिमियभुत्तुत्तरागयाविय णं समाणा आयंता चोक्खा परमसुइभूया तं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं बलं च बहवे गणनायग जाव संधिवाले विपुलेणं पुप्फ-गंध-मल्लालंकारेणं सक्कारेंति सम्माणेंति, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता एवं वयासी--

जम्हा णं अम्हं इमस्स दारगस्स गब्भत्थस्स चेव समाणस्स अकालमेहेसु दोहले पाउब्भूए, तं होऊ णं अम्हं दारए मेहे नामेणं। तस्स दारगस्स अम्मापियरो अयमेयारूवं गोण्णं गुणनिप्फण्णं नामधेज्जं करेंति मेहे इ॥

---

१. पाठान्तरे तु—प्रथमदिवसे स्थितिपतितां, तृतीये चन्द्रसूरदर्शनिकां, षष्ठे जागरिकां (वृ)।

२. निव्वत्ते सुइ° (क, ख, ग, वृपा); निव्वत्ते असुइ° (घ)। वृत्तिकृता 'निवृत्ते—अतिक्रान्ते अशुचीनां जातकर्मकरणे' इतिव्याख्यातम्, तेन तदनुसारी पाठः 'निवत्ते असुइजायकम्मकरणे' इत्येवंरूपः स्यात्। यत्र 'सुइजाय°' इति पाठः सम्मतस्तत्रैव 'निव्वत्ते' इति पाठः सङ्गच्छेत।

३. बारसाहदिवसे (क, ख, ग, घ)। वृत्तिकारेण—'बारसाहदिवसे' इति पाठः विकल्पद्वयेन व्याख्यातः, यथा—बारसाहदिवसे त्ति—द्वादशाख्ये दिवसे इत्यर्थः। अथवा द्वादशानामह्नां समाहारो द्वादशाहं, तस्य दिवसो येन पूर्यते (वृ)। यद्यपि वृत्तिकारेण 'बारसाहदिवसे' इति पाठो व्याख्यातस्तथाप्यस्माभिः 'बारसाहे' इतिपाठः स्वीकृतः, एतदर्थं द्रष्टव्यम्—ओवाइय (१४४) सूत्रस्य बारसाहे' पदस्य पादटिप्पणम्।

४. सं० पा०—गणनायग जाव आमंतेंति।

५. सं० पा०—कयकोउय जाव सव्वालंकारविभूसिया।

६. सव्वालंकारभूसिया (क, ख, ग)।

७. सं० पा०—मित्त-नाइ-गणनायग जाव सद्धिं।

८. पडिलाहेमाणा (क); × (ग)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मेहस्स लालणपालण-पद

८२. तए णं से मेहे कुमारे पंचधाईपरिग्गहिए, [तं जहा—खीरधाईए मज्जणधाईए कीलावणधाईए मंडणधाईए अंकधाईए][1] अण्णाहि य बहूहिं—खुज्जाहिं चिला-ईहिं[2] 'वामणीहिं वडभीहिं बब्बरीहिं बउसीहिं[3] जोणियाहिं पल्हवियाहिं ईसिणि-याहिं[4] थारुगिणियाहिं[5] लासियाहिं लउसियाहिं दामिलीहिं सिंहलीहिं आरबीहिं पुलिंदीहिं पक्कणीहिं बहलीहिं मुरुंडीहिं[6] सबरीहिं पारसीहिं[7]—नानादेसीहिं[8] विदेसपरिमंडियाहिं इंगिय-चिंतिय-पत्थिय-वियाणियाहिं सदेस-नेवत्थ-गहिय-वेसाहिं निउणकुसलाहिं विणीयाहिं[9], चेडियाचक्कवाल-वरिसधर-कंचुइज्ज-महयरग[10]-वंद-परिक्खित्ते हत्थाओ हत्थं साहरिज्जमाणे[11] अंकाओ अंकं परि-भुज्जमाणे परिगिज्जमाणे उवलालिज्जमाणे[12] रम्मंसि मणिकोट्टिमतलंसि परंगिज्जमाणे[13] निव्वाय-निव्वाघायंसि गिरिकंदरमल्लीणे व चंपगपायवे सुहंसुहेणं वड्ढइ[14] ।।

८३. तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स अम्मापियरो अणुपुव्वेणं[15] नामकरणं च पजेमणगं[16] च पचंकमणगं च चोलोवणयं च महया-महया इड्ढी-सक्कार-समुदएणं करेंसु ।।

मेहस्स कलागहण-पदं

८४. तए णं तं मेहं कुमारं अम्मापियरो साइरेगट्ठवासजायगं चेव[17] सोहणंसि तिहि-करण-मुहुत्तंसि कलायरियस्स उवणेंति ।।

---

१. असौ कोष्ठकवर्ती पाठः व्याख्यांशः प्रतीयते ।

२. चिलाइयाहिं (क, ख, ग, घ, रायपसेणइयं सू० ८०४) ।

३. पउसियाहि (ओ० सू० ७०) ।

४. इसिणियाहिं (क, ख, ग) ।

५. थारुइणियाहिं (ओ० सू० ७०) ।

६. मुरुंडीहिं (ओ० सू० ७०); मुरंडीहिं (राय० सू० ८०४) ।

७. वामणि [बावणि (ख, ग)] वडभिबब्बरि-बउसिजोणियपल्हविइसिणिथारुगिणिलासिय-लउसियदमिलिसिंहलिआरबिपुलिंदिपक्कणि-बहलिमुरंडिसबरिपारसीहिं (क, ख, ग, घ) ।

८. नानादेसी (क, ख, ग) ।

९. युक्त इति गम्यते (वृ) ।

१०. महत्तरंग (घ) ।

११. साहिज्जमाणे (ख, ग, घ) ।

१२. अतोग्रे वृत्तौ पाठान्तरस्योल्लेखो विद्यते—उवनच्चिज्जमाणे २ उवगाइज्जमाणे २ उवलालिज्जमाणे २ उवगूहिज्जमाणे २ अवयासिज्जमाणे २ परिवंदिज्जमाणे २ परिचुंबिज्जमाणे २ । द्रष्टव्यम्—(ओवाइय-सूत्रस्य परिशिष्टं पृ० १५१); रायपसेणइयं सूत्र ८०४ ।

१३. परिगिज्जमाणे २ (क, ग) ।

१४. वद्धति (घ) ।

१५. अणुपुव्विं (ख) ।

१६. एवं जेमणं च एवं चंकमणगं च (ख, ग) ।

१७. अतोग्रे 'गब्भट्ठमे वासे' इति पाठो विद्यते, किन्तु एतत् पाठान्तरं प्रतीयते । 'साइरेगट्ठ-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८५. तए णं से कलायरिए मेहं कुमारं लेहाइयाओ गणियप्पहाणाओ सउणरुय-पज्जवसाणाओ बावत्तरिं कलाओ सुत्तओ य अत्थओ य करणओ य सेहावेइ सिक्खावेइ, तं जहा—

१. लेहं २. गणियं ३. रूवं ४. नट्टं ५. गीयं ६. वाइयं ७. सरगयं ८. पोक्खर-गयं ९. समतालं १०. जूयं[1] ११. जणवायं १२. पासयं १३. अट्ठावयं १४. पोरेकव्वं १५. दगमट्टियं १६. अण्णविहिं १७. पाणविहिं १८. वत्थविहिं १९. विलेवणविहिं २०. सयणविहिं २१. अज्जं २२. पहेलियं २३. मागहियं २४. गाहं २५. गीइयं २६. सिलोयं २७. हिरण्णजुत्तिं २८. सुवण्णजुत्तिं २९. चुण्णजुत्तिं[2] ३०. आभरणविहिं ३१. तरुणीपडिकम्मं ३२. इत्थिलक्खणं ३३. पुरिसलक्खणं ३४. हयलक्खणं ३५. गयलक्खणं ३६. गोणलक्खणं ३७. कुक्कुडलक्खणं ३८. छत्तलक्खणं ३९. दंडलक्खणं ४०. असिलक्खणं ४१. मणिलक्खणं ४२. कागणिलक्खणं[3] ४३. वत्थुविज्जं[4] ४४. खंधारमाणं[5] ४५. नगरमाणं[6] ४६. वूहं ४७. पडिवूहं ४८. चारं ४९. पडिचारं ५०. चक्कवूहं ५१. गरुलवूहं ५२. सगडवूहं ५३ जुद्धं ५४. निजुद्धं ५५. जुद्धाइजुद्धं ५६. अट्ठिजुद्धं ५७. मुट्ठिजुद्धं ५८. बाहुजुद्धं ५९. लयाजुद्धं ६०. ईसत्थं ६१. छरुप्पवायं ६२. धणुवेयं[7] ६३. हिरण्णपागं ६४. सुवण्णपागं ६५. वट्टखेड्डं[8] ६६. सुत्तखेड्डं ६७. नालियाखेड्डं ६८. पत्तच्छेज्जं ६९. कडच्छेज्जं ७०. सज्जीवं ७१. निज्जीवं ७२. सउणरुतं ति ॥

८६. तए णं से कलायरिए मेहं कुमारं लेहाइयाओ गणियप्पहाणाओ सउणरुयपज्जव-साणाओ बावत्तरिं कलाओ सुत्तओ य अत्थओ य करणओ य सेहावेइ सिक्खा-वेइ, सेहावेत्ता सिक्खावेत्ता अम्मापिऊणं उवणेइ ॥

८७. तए णं मेहस्स कुमारस्स अम्मापियरो तं कलायरियं महुरेहिं वयणेहिं 'विउलेण य'[9] वत्थ-गंध-मल्लालंकारेणं सक्कारेंति[10] सम्माणेंति, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता विउलं जीवियारिहं पीइदाणं दलयंति, दलइत्ता पडिविसज्जेंति ॥

८८. तए णं से मेहे कुमारे बावत्तरि-कलापंडिए नवंगसुत्तपडिबोहिए अट्ठारस-

---

वासजायगं, इति पाठस्यानन्तरमसौ पाठो नावश्यकः प्रतिभाति । ओवाइय (१४५), रायपसेणइय (८०५) सूत्रयोरपि स्वीकृतपाठः उपलभ्यते ।

१. तूतं (ग) ।

२. तुण्णाजुत्तिं (ख) ।

३. कागिणी० (ग) ।

४. वत्थविज्जं (क, ग) ।

५. ०मारणं (क) ।

६. ०मावणं (ख) ।

७. धणुव्वेयं (ख, ग) ।

८. वेट्टखेड्डं (क) ।

९. विउलेणं (ख, घ) ।

१०. हक्कारेंति (ख) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विहिप्पगारदेसीभासाविसारए[1] गीयरई गंधव्वनट्टकुसले हयजोही गयजोही रहजोही बाहुजोही बाहुप्पमद्दी अलंभोगसमत्थे साहसिए वियालचारी जाए यावि होत्था ॥

मेहस्स पाणिग्गहण-पदं

८६. तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स अम्मापियरो मेहं कुमारं बावत्तरि-कलापंडियं जाव[2] वियालचारिं[3] जायं पासंति, पासित्ता अट्ठ पासायवडिंसए कारेंति—अब्भुग्गयमूसिय[4] पहसिए विव मणि-कणग-रयण-भत्तिचित्ते वाउद्धुय-विजय-वेजयंती-पडाग-छत्ताइच्छत्तकलिए तुंगे गगणतलमभिलंघमाणसिहरे जालंतर-रयण[5] पंजरुम्मिलिए[6] व्व मणिकणगथूभियाए वियसिय-सयवत्त-पुंडरीए तिलयरयणद्धचंदच्चिए[7] नाणामणिमयदामालंकिए अंतो बहिं च सण्हे तवणिज्ज-रुइल[8]-वालुया-पत्थरे सुहफासे सस्सिरीयरूवे पासाईए[9] •दरिसणिज्जे अभिरूवे ° पडिरूवे।

एगं च णं महं भवणं कारेंति—अणेगखंभसयसन्निविट्ठं लीलट्ठियसालभंजियागं अब्भुग्गयसुकयवइरवेइयातोरण[10]-वररइयसालभंजिय[11]-सुसिलिट्ठ-विसिट्ठ-लट्ठ-संठिय-पसत्थ-वेरुलियखंभ-नाणामणिकणगरयण-खचियउज्जलं बहुसम-सुविभत्त-निचियरमणिज्जभूमिभागं ईहामिय[12]-•उसभ-तुरय-नर-मगर-विहग-वालग-किन्नर-रुरु-सरभ-चमर-कुंजर-वणलय-पउमलय°-भत्तिचित्तं खंभुग्गयवयरवेइयापरिगयाभिरामं विज्जाहर-जमल-जुयल-जंतजुत्तं पिव अच्चीसहस्समालणीयं[13] रूवगसहस्सकलियं भिसमाणं[14] भिब्भिसमाणं चक्खुल्लोयणलेसं[15] सुहफासं सस्सिरीयरूवं कंचणमणिरयणथूभियागं नाणाविह-पंचवण्ण-घंटापडाग-परिमंडि-

---

१. अट्ठारसविह° (ख); अट्ठारसदेसीभासा° (ओ° सू० १४८); अट्ठारसविहदेसिप्पगार-भासा° (राय° सू० ८०६)। अष्टादश-विधेः प्रकाराः प्रवृत्तिप्रकाराः अष्टादशभिर्वा विधिभिर्भेदः प्रचारः प्रवृत्तिर्यस्या (वृ)।

२. ना० १।१।८८।

३. वियालचारी (क)।

४ अत्र च द्वितीयाबहुवचनलोपो दृश्यः (वृ)।

५. द्वितीयाबहुवचनलोपो दृश्यः (वृ)।

६. पंजरुम्मिल्लिय (ख, ग)।

७. °यंदच्चिए (क, ख, ग); °चंदचित्ते (वृपा); °चंदचित्ता (राय० सू० १३७)।

८. रुइर (ग)।

९. सं० पा०—पासाईए जाव पडिरूवे।

१०. °वतिरवेतिया° (ग); °वरवइरवेइया (राय० सू० १७)।

११. सालभंजिया (क, ख, घ)।

१२. सं० पा०—ईहामिय जाव भत्तिचित्त।

१३. °मीणं (क, ख, ग)।

१४. °मालिणीयं (ख)।

१५. °लेस्सं (क, ग)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

यग्गसिहरं धवल-मिरिचिकवयं विणिम्मुयंतं लाउल्लोइयमहियं जाव[1] गंधवट्टिभूयं पासाईयं दरिसणिज्जं अभिरूवं पडिरूवं ।।

९०. तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स अम्मापियरो मेहं कुमारं सोहणंसि तिहि-करण-नक्खत्त-मुहुत्तंसि सरिसियाणं सरिव्वयाणं सरित्तयाणं सरिसलावण्ण-रूव-जोव्वण-गुणोववेयाणं सरिसएहिंतो रायकुलेहिंतो आणिल्लियाणं[2] पसाहणट्ठंग-अविहववहु[3]-ओवयण-मंगलसुजंपिएहिं अट्ठहिं रायवरकन्नाहिं सद्धिं एगदिवसेणं पाणिं गिण्हाविंसु ।।

पीइदाण-पदं

९१. तए णं तस्स मेहस्स अम्मापियरो इमं एयारूवं पीइदाणं दलयंति—अट्ठ हिरण्ण-कोडीओ अट्ठ सुवण्णकोडीओ गाहाणुसारेण भाणियव्वं जाव[4] पेसणकारियाओ,

१. ना० १।१।७६ ।

२. आणतिल्लियाणं (क); आणियल्लियाणं (ग)।

३. अविधव० (क) ।

४. मूलपाठे यासां गाथानां समर्पणमस्ति ताः वृत्त्यनुसारेणेमाः—

१. अट्ठहिरण्णसुवण्णय-कोडीओ मउड-कुंडलाहारा ।
अट्ठद्धहार-एक्कावलीओ मुत्तावली अट्ठ ।।

२. कणगावलि-रयणावलि-कडगजुगा तुडिय-खोम-जुगा ।
वडजुग-पट्टजुगाइ-दुकुल्लजुगलाय अट्ठट्ठा ।।

३. सिरि-हिरि-धिइ-कित्तीओ बुद्धी लच्छी य होंति अट्टट्ठा ।
नंदा भद्दा य तला य झय-वय नाडाइं आसे य ।।

४. हत्थी जाणा जुग्गा, सीया तह संदमाणि-गिल्लीओ ।
थिल्ली य वियडजाणा, रह-गामा दास-दासीओ ।।
वाचनान्तरे—रथानन्तरमश्वा हस्तिनश्चाधीयन्ते (वृ) ।

५. किंकर-कंचुइ-मयहर-वरिसधर-तिविह दीव-थाले य ।
पाई-थासग - पल्लग-कइविय - अवएडय - अवक्का ।।

६. पावीढाभिसिय-करोडियाओ पल्लंकए य पडिसिज्जा ।
हंसाईहिं विसिट्ठा, आसण-भेया उ अट्ठट्ठ ।।

७. हंसे कोंचे गरुडे, उण्णय-पणए य दीह-भद्दे य ।
पक्खे मयरे पउमे, होइ दिसासोत्थि एक्कारे ।।

८. तेल्ले कोट्ठ-समुग्गा, पत्ते चोए तगर एला य ।
हरियाले हिंगुलए, मणोसिला सासवसमुग्गे ।।

९. खुज्जा-चिलाइ-वामणि-वडभीओ बब्बरि-वउसियाओ ।
जोणिय-पल्हवियाओ, इसिणीया थारुइणिया य ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अण्णं च विपुलं धण-कणग-रयण-मणि-मोत्तिय-संख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-संत-सार-सावएज्जं अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवंसाओ पकामं दाउं पकामं भोत्तुं पकामं परिभाएउं[1] ॥

९२. तए णं से मेहे कुमारे एगमेगाए भारियाए एगमेगं हिरण्णकोडिं दलयइ, जाव[2] एगमेगं पेसणकारिं दलयइ, अण्णं च विउलं धण-कणग[3]-•रयण-मणि-मोत्तिय-संख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-संत-सार-सावएज्जं अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवंसाओ पकामं दाउं पकामं भोत्तुं पकामं° परिभाएउं दलयइ ॥

९३. तए णं से मेहे कुमारे उप्पिं पासायवरगए फुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं वरतरुणि-संपउत्तेहिं बत्तीसइबद्धएहिं[4] नाडएहिं 'उवगिज्जमाणे-उवगिज्जमाणे'[5] उवलालिज्जमाणे-उवलालिज्जमाणे [इट्ठे][6] सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधे विउले माणुस्सए कामभोगे पच्चणुभवमाणे विहरइ ॥

महावीरसमवसरण-पदं

९४. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे जेणामेव रायगिहे नयरे गुणसिलए चेइए[7] •तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे° विहरइ ॥

---

१०. लासिय-लउसिय-दमिणी, सींहलि तह आरबी पुलिंदी य ।
पक्कणि-बहलि-मुरुंडी, सबरीओ पारसीओ य ॥
११. छत्तधरा चेडीओ, चामरधर-तालयंटयधरीओ ।
सकरोडियाधरीओ, खीराई पंच धाईओ ॥
१२. अट्ठंगमद्दियाओ, उम्मद्दग-ण्हविग-मंडियाओ य ।
वण्णय-चुण्णय-पीसिय-कीलाकारी य दवगारी ॥
१३. उत्थावियाओ तह णाडइल्ल-कोडुंबिणी-महाणसिणी ।
भंडारी अब्भ (उज्झ) धारिणि, पुप्फधरि पाणियधरी य ॥
१४. बलिकारि य सेज्जाकारियाओ अब्भंतरीओ बाहरिया ।
पडिहारी मालारी पेसणकारीओ अट्ठट्ठ ॥
भगवती (११।१५६) सूत्रे क्वचित् केचित् पाठभेदा अपि लभ्यते ।

१. भाएउं (ख, ग) ।
२. ना० १।१।९१ ।
३. सं० पा०—धण-कणग जाव परिभाएउं ।
४. °बद्धेहिं (क); बत्तीसनिबद्धेहिं (ग) ।
५. उवणच्चिज्जमाणे उवगाइज्जमाणे (राय० सू० ७१०) ।
६. एतत् पदं रायपसेणइय (७१०) सूत्रे विद्यते, अत्रापि युज्यते ।
७. सं० पा०—चेइए जाव विहरइ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मेहस्स जिन्नासा-पदं

९५. तए णं रायगिहे नयरे सिंघाडग-[1]•तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु०-महया जणसद्दे इ वा जाव[2] बहवे उग्गा भोगा [०][3] रायगिहस्स नगरस्स मज्झं-मज्झेणं एगदिसिं एगाभिमुहा निग्गच्छंति। इमं च णं मेहे कुमारे उप्पिं पासायवरगए फुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं जाव[4] माणुस्सए कामभोगे भुंजमाणे रायमग्गं च 'ओलोएमाणे-ओलोएमाणे'[5] एवं च णं विहरइ॥

९६. तए णं से मेहे कुमारे ते बहवे उग्गे भोगे जाव[6] एगदिसाभिमुहे निग्गच्छमाणे पासइ, पासित्ता कंचुइज्जपुरिसं[7] सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—किण्णं[8] भो देवाणुप्पिया! अज्ज रायगिहे नगरे इंदमहे इ वा खंदमहे इ वा एवं—रुद्द-सिव-वेसमण-नाग-जक्ख-भूय-नई- तलाय-रुक्ख - चेइय - पव्वयमहे इ वा उज्जाण-गिरिजत्ता इ वा? जओ णं बहवे उग्गा भोगा जाव एगदिसिं एगाभिमुहा निग्गच्छंति॥

कंचुइज्जपुरिसस्स निवेदण-पदं

९७. तए णं से कंचुइज्जपुरिसे समणस्स भगवओ महावीरस्स गहियागमणपवित्तीए मेहं कुमारं एवं वयासी—नो खलु देवाणुप्पिया! अज्ज रायगिहे नयरे इंदमहे इ वा जाव[9] गिरिजत्ता इ वा जं णं एए उग्गा भोगा जाव[10] एगदिसिं एगाभिमुहा निग्गच्छंति। एवं खलु देवाणुप्पिया! समणे भगवं महावीरे आइगरे तित्थगरे[11] इहमागए इह संपत्ते इह समोसढे इह चेव रायगिहे नगरे गुणसिलए चेइए अहापडिरूवं[12] •ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे॰ विहरइ॥

मेहस्स भगवओ समीवे गमण-पदं

९८. तए णं से मेहे कुमारे कंचुइज्जपुरिसस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेह।
तहत्ति उवणेंति॥

---

१. सं० पा०—सिंघाडग जाव महया।
२. ओ० सू० ५२।
३. जाव (क, ख, ग, घ)।
४. ना० १।१।९३।
५. उवलोएमाणे २ (ग)।
६. ओ० सू० ५२।
७. कंचुइ-पुरिसं (राय० सू० ६८८)।
८. किं णं (क, ख)।
९. ना० १।१।९६।
१०. ओ० सू० ५२।
११. तित्थंकरे (ख)।
१२. सं० पा०—अहापडिरूवं जाव विहरइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९९. तए णं से मेहे ण्हाए जाव[1] सव्वालंकारविभूसिए चाउग्घंटं आसरहं दुरूढे समाणे सकोरंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं महया भड-चडगर[2]-वंद-परियाल-संपरिवुडे रायगिहस्स नयरस्स मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणामेव गुणसिलए चेइए तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स छत्ताइच्छत्तं पडागाइपडागं विज्जाहर-चारणे जंभए य देवे ओवयमाणे उप्पयमाणे पासइ, पासित्ता चाउग्घंटाओ आसरहाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता समणं भगवं महावीरं पंचविहेणं अभिगमेणं अभिगच्छइ।
[तं जहा—१. सचित्ताणं दव्वाणं विउसरणयाए[3] २. अचित्ताणं दव्वाणं अविउसरणयाए ३. एगसाडिय[4]-उत्तरासंगकरणेणं ४. चक्खुफासे अंजलिपग्गहेणं ५. मणसो एगत्तीकरणेणं[5]][6]। जेणामेव समणे भगवं महावीरे तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स नच्चासन्ने नाइदूरे सुस्सूसमाणे नमंसमाणे पंजलिउडे अभिमुहे विणएणं पज्जुवासइ॥

धम्मदेसणा-पदं

१००. तए णं समणे भगवं महावीरे मेहस्स कुमारस्स तीसे य महइमहालियाए परिसाए मज्झगए विचित्तं धम्ममाइक्खइ—
जह जीवा बज्झंति, मुच्चंति जहा य संकिलिस्संति। धम्मकहा भाणियव्वा जाव[7] परिसा पडिगया॥

मेहस्स पव्वज्जासंकप्प-पदं

१०१. तए णं से मेहे कुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—
सद्दहामि णं भंते! निग्गंथं पावयणं।
पत्तियामि[8] °णं भंते! निग्गंथं पावयणं।
रोएमि णं भंते! निग्गंथं पावयणं।°
अब्भुट्ठेमि णं भंते! निग्गंथं पावयणं।

---

१. ना० १।१।८१।
२. चडगर-रह-पहकर (राय० सू० ६८३)।
३. वियोसरणयाए (वृपा)।
४. एगल्लसडियं (क)।
५. एगत्तिभावेणं (क, वृपा)।
६. असौ कोष्ठकवर्ती पाठः व्याख्यांशः प्रतीयते।
७. ओ० सू० ७१-७९।
८. सं० पा०—एवं पत्तियामि णं रोएमि णं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एयमेयं भंते ! तहमेयं भंते ! अवितहमेयं भंते ! इच्छियमेयं भंते ! पडिच्छिय-मेयं भंते ! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भंते ! से 'जहेयं तुब्भे वयह'[1]। नवरि[2] देवाणुप्पिया ! अम्मापियरो आपुच्छामि । तओ पच्छा मुंडे भवित्ता णं अगाराओ अणगारियं पव्वइस्सामि ।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेहि[3] ।।

मेहस्स अम्मापिऊणं निवेदण-पदं

१०२. तए णं से मेहे कुमारे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जेणामेव चाउग्घंटे आसरहे तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउग्घंटं आसरहं दुरूहइ, महया भड-चडगर-पहकरेणं रायगिहस्स नगरस्स मज्झंमज्झेणं जेणामेव सए भवणे तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउग्घंटाओ आसरहाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता जेणामेव अम्मापियरो तेणामेव उवागच्छइ, उवाग-च्छित्ता अम्मापिऊणं पायवडणं करेइ, करेत्ता एवं वयासी—एवं खलु अम्म-याओ ! मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मे निसंते, से वि य मे धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए ।।

१०३. तए णं तस्स मेहस्स अम्मापियरो एवं वयासी—धन्नोसि तुमं जाया ! संपुण्णो सि तुमं जाया !

कयत्थो सि तुमं जाया ! कयलक्खणो सि तुमं जाया !

जन्नं तुमे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मे निसंते, से वि य ते धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए ।।

१०४. तए णं से मेहे कुमारे अम्मापियरो दोच्चंपि[4] एवं वयासी—एवं खलु अम्म-याओ ! मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मे निसंते, से वि य मे धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए । तं इच्छामि णं अम्मयाओ ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए मुंडे भवित्ता णं अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ।।

धारिणीए सोगाकुलदसा-पदं

१०५. तए णं सा धारिणी देवी तं अणिट्ठं अकंतं अप्पियं अमणुण्णं अमणामं असुय-

---

१. जहेव तं तुब्भे वयह जं (क, ख, ग, घ); असौ पाठः सर्वासु प्रतिषु विद्यते, तथाप्यत्र 'उपासकदशा' (७।३७) नुसारी पाठः स्वीकृतः । आदर्शगतपाठापेक्षया तत्रस्थपाठः समीचीनः प्रतिभाति । प्रस्तुतादर्शेषु लिपिदोषेण परिवर्तनस्य संभावना स्यादिति नासौ स्वीकारोन्यथात्वं भजते ।

२. नवरं (घ) ।

३. × (क, ख, ग) ।

४. दोच्चंपि तच्चंपि (ख, घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुव्वं फरुसं[1] गिरं सोच्चा निसम्म इमेणं एयारूवेणं मणोमाणसिएणं महया पुत्तदुक्खेणं अभिभूया समाणी सेयागयरोमकूवपगलंत-चिलिणगाया[2] सोयभर-पवेवियंगी नित्तेया दीण-विमण-वयणा करयलमलिय व्व कमलमाला तक्खणओ-लुग्गदुब्बलसरीर-लावण्णसुन्न-निच्छाय-गयसिरीया पसिढिलभूसण-पडंतखुम्मिय-संचुण्णियधवलवलय[3]-पब्भट्ठउत्तरिज्जा सूमाल[4]-विकिण्ण-केसहत्था मुच्छावस-नट्ठचेय-गरुई[5] परसुनियत्त व्व चंपगलया निव्वत्तमहे व्व[6] इंदलट्ठी विमुक्क-संधिबंधणा कोट्टिमतलंसि सव्वंगेहिं धसत्ति पडिया ।।

धारिणीए मेहस्स य परिसंवाद-पदं

१०६. तए णं सा धारिणी देवी ससंभमोवत्तियाए तुरियं कंचणभिंगारमुहविणिग्गय-सीयलजलविमलधाराए परिसिंचमाण[7]-निव्वावियगायलट्ठी उक्खेवय[8]-तालविंट-वीयणग-जणियवाएणं सफुसिएणं अंतेउर-परिजणेणं[9] आसासिया समाणी मुत्ता-वलि-सन्निगास-पवडंत[10]-अंसुधाराहिं सिंचमाणी पओहरे, कलुण-विमण-दीणा रोयमाणी कंदमाणी तिप्पमाणी सोयमाणी विलवमाणी मेहं कुमारं एवं वयासी—

तुमं सि णं जाया ! अम्हं एगे पुत्ते इट्ठे कंते पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे[11] वेसासिए सम्मए बहुमए अणुमए भंडकरंडगसमाणे रयणे रयणभूए जीविय-उस्सासिए[12] 'हियय-णंदि-जणणे'[13] 'उंबरपुप्फं व'[14] दुल्लहे सवणयाए, किमंग पुण पासणयाए ? नो खलु जाया ! अम्हे इच्छामो खणमवि विप्पओगं सहित्तए । तं भुंजाहि ताव जाया ! विपुले माणुस्सए कामभोगे जाव ताव वयं जीवामो । तओ पच्छा अम्हेहिं कालगएहिं परिणयवए वड्ढिय-कुलवंसतंतु-कज्जम्मि निरावयक्खे[15] समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइस्ससि ।।

---

१. परुसं (क) ।
२. विलीण० (क, ख, ग, घ) ।
३. ०खुण्णिय० (भ० ६।१६८) ।
४. सुकुमाल (क, घ) ।
५. गुरुइ (ख) ।
६. व (ख) ।
७. परिसिंचमाणा (घ) ।
८. उक्खेवण (क, ख) ।
९. परियणेणं (ख, ग, घ) ।
१०. पडंत (क) ।
११. थिज्जे (ग); धेज्जे (ख); पेज्जे (ओ० सू० ११७) ।
१२. ०उस्सासए (क, ख, ग); वाचनान्तरे—जीविउस्सविए (वृ) ।
१३. हिययाणंदजणणे (क, ख, वृ); एकस्यां हस्तलिखितवृत्तावपि 'हृदयनंदिजननः' इति लिखितमस्ति ।
१४. ०पुप्फमिव (ख) ।
१५. निरवयक्खे (घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०७. तए णं से मेहे कुमारे अम्मापिऊहिं एवं वुत्ते समाणे अम्मापियरो एवं वयासी—तहेव णं तं अम्मो! जहेव णं तुब्भे ममं एवं वयह—"तुमं सि णं जाया! अम्हं एगे पुत्ते [1]•इट्ठे कंते पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे वेसासिए सम्मए बहुमए अणुमए भंडकरंडगसमाणे रयणे रयणभूए जीविय-उस्सासिए हियय-णंदि-जणणे उंबरपुप्फं व दुल्लहे सवणयाए, किमंग पुण पासणयाए? नो खलु जाया! अम्हे इच्छामो खणमवि विप्पओगं सहित्तए। तं भुंजाहि ताव जाया! विपुले माणुस्सए कामभोगे जाव ताव वयं जीवामो। तओ पच्छा, अम्हेहिं कालगएहिं परिणयवए वड्ढिय-कुलवंसतंतु-कज्जम्मि निरावयक्खे[2] समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइस्ससि।"
एवं खलु अम्मयाओ! माणुस्सए भवे अधुवे अणितिए[3] असासए वसणसओवद्दवाभिभूते विज्जुलयाचंचले अणिच्चे जलबुब्बुयसमाणे कुसग्गजलबिंदुसन्निभे संझब्भरागसरिसे सुविणदंसणोवमे[4] सडण-पडण-विद्धंसण-धम्मे पच्छा पुरं च णं अवस्सविप्पजहणिज्जे। से के णं जाणइ अम्मयाओ! के पुव्विं गमणाए के पच्छा गमणाए? तं इच्छामि णं अम्मयाओ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स[5] •भगवओ महावीरस्स अंतिए मुंडे भवित्ता णं अगाराओ अणगारियं° पव्वइत्तए॥

१०८. तए णं तं मेहं कुमारं अम्मापियरो एवं वयासी—'इमाओ ते जाया! सरिसियाओ सरित्तयाओ सरिव्वयाओ सरिसलावण्ण-रूव-जोव्वण-गुणोववेयाओ सरिसेहिंतो रायकुलेहिंतो आणिल्लियाओ[6] भारियाओ'[7]। तं भुंजाहि णं जाया! एयाहिं सद्धिं विउले माणुस्सए कामभोगे। पच्छा[8] भुत्तभोगे समणस्स[9] •भगवओ महावीरस्स अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइस्ससि॥

---

१. सं० पा०—तं चेव जाव निरावयक्खे समणस्स जाव पव्वइस्ससि।
२. निरवक्खे (क, ग); निरावेक्खे (ख); निरवयक्खे (घ)।
३. अणिइए (क); अणितिते (ग); अणियए (घ, वृ)।
४. सुविणयदंस° (क), सुविणगदंस° (घ)।
५. सं० पा०—समणस्स जाव पव्वइत्तए।
६. आणिइल्लियाओ (ख); आणियल्लियाओ (ग, घ)।
७. वाचनान्तरे मेघकुमारभार्यावर्णकमेवमुपलभ्यते—
इमाओ ते जाया विपुलकुलबालियाओ कला-कुसल-सव्वकाललालिय-सुहोइयाओ मद्दवगुण-जुत्त-निउणविणओवयार-पंडिय-वियक्खणाओ मंजुलमियमहुरभणिय-हसिय-विपेक्खिय-गइ-विलास-चेट्ठियविसारयाओ अविकलकुलसील-सालिणीओ विसुद्ध कुलवंससंताणतंतुवद्धण-पगब्भउब्भवप्पभावणीओ मणोणुकूलहियय-इच्छियाओ अट्ठ तुज्झ गुणवल्लहाओ भज्जाओ उत्तमाओ णिच्चं भावाणुरत्तसव्वंगसुंदरीओ (वृ)।
८. तओ पच्छा (क, घ); पच्छा तु (ख)।
९. सं०पा०—समणस्स जाव पव्वइस्ससि।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०९. तए णं से मेहे कुमारे अम्मापियरं एवं वयासी--तहेव णं तं अम्मयाओ! जं णं तुब्भे ममं एवं वयह[1]—"इमाओ ते जाया! सरिसियाओ[2] •सरित्तयाओ सरिव्वयाओ सरिसलावण्ण-रूव-जोव्वण-गुणोववेयाओ सरिसेहिंतो रायकुलेहिंतो आणिल्लियाओ भारियाओ। तं भुंजाहि णं जाया! एयाहिं सद्धिं विउले माणुस्सए कामभोगे। पच्छा भुत्तभोगे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइस्ससि।"

एवं खलु अम्मयाओ! माणुस्सगा कामभोगा असुई[3] वंतासवा पित्तासवा खेलासवा सुक्कासवा सोणियासवा 'दुरुय-उस्सास'[4]-नीसासा दुरुय[5]-मुत्त-पुरीस-पूय-बहुपडिपुण्णा उच्चार-पासवण-खेल[6]-सिंघाणग-वंत-पित्त-सुक्क-सोणियसंभवा अधुवा अणितिया[7] असासया सडण-पडण-विद्धंसणधम्मा पच्छा पुरं च णं अवस्स-विप्पजहणिज्जा।

से के णं जाणइ अम्मयाओ[8]! •के पुव्वि गमणाए के पच्छा गमणाए? तं इच्छामि णं अम्मयाओ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए मुंडे भवित्ता णं अगाराओ अणगारियं° पव्वइत्तइ॥

११०. तए णं तं मेहं कुमारं अम्मापियरो एवं वयासी—इमे य[9] ते जाया! अज्जय-पज्जय-पिउपज्जयागए सुबहू हिरण्णे य सुवण्णे य कंसे य दूसे य मणि-मोत्तिय[10]-संख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-संतसार[11]-सावएज्जे य अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवंसाओ पगामं दाउं पगामं भोत्तुं पगामं परिभाएउं। तं अणुहोही[12] ताव[13] जाया। विपुलं माणुस्सगं इड्ढिसक्कारसमुदयं। तओ पच्छा अणुभूयकल्लाणे

---

१. वयहा (ग)।

२. सं० पा०—सरिसियाओ जाव समणस्स पव्वइस्ससि।

३. असुइ (ख, घ); असुती (ग), अतोग्रे सर्वास्वपि प्रतिषु 'असासया' इति पाठो विद्यते किन्तु वृत्तौ नास्ति स व्याख्यातः तथा प्रस्तुतपाठक्रम एव 'अणितिया असासया' इति पाठो विद्यते, तेन नासावत्र गृहीतः।

४. दुरुस्सास (क, ख, ग, घ) एतत् पदमत्र वृत्तौ नास्ति व्याख्यातम्। अष्टमाध्ययनस्य १८० सूत्रस्य वृत्तौ व्याख्यातमस्ति, यथा—दुरूपौ विरूपौ उच्छ्वासनिःश्वासौ यस्य (वृ)। तदाधारेणासौ पाठः स्वीकृतः।

५. मुखसुखोच्चारणार्थं 'दुरूव' शब्दस्य 'दुरुय' मिति रूपं कृतं संभाव्यते, अथवा दुरूपार्थवाची देशीशब्दोसौ स्यात्? वृत्तौ 'दुरुय' शब्दस्य 'दुरूप' इत्यर्थोस्ति कृतः।

६. खेल जल्ल (घ)।

७. अणियता (ग)।

८. सं० पा०—अम्मयाओ जाव पव्वइत्तए।

९. त (क, ख, ग)।

१०. मोत्तिए य (ख)।

११. तंतसार (घ)।

१२. अणुहोहि त्ति (ख, घ); अणुहोहि (ग)

१३. ताव जाव (ख)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समणस्स भगवओ महावीरस्स[1] •अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइस्ससि ।।

१११. तए णं से मेहे कुमारे अम्मापियरं[2] एवं वयासी— तहेव णं तं अम्मयाओ ! जं णं तुब्भे ममं एवं वयह—"इमे ते जाया ! अज्जग-पज्जग[3]-•पिउपज्जयागए सुबहू हिरण्णे य सुवण्णे य कंसे य दूसे य मणि-मोत्तिय-संख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-संतसार-सावएज्जे य अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवंसाओ पगामं दाउं पगामं भोत्तुं पगामं परिभाएउं । तं अणुहोही ताव जाया ! विपुलं माणुस्सगं इड्ढि-सक्कारसमुदयं । तओ पच्छा अणुभूयकल्लाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइस्ससि ।"

एवं खलु अम्मयाओ ! हिरण्णे य जाव सावएज्जे य अग्गिसाहिए चोरसाहिए रायसाहिए दाइयसाहिए[4] मच्चुसाहिए, अग्गिसामण्णे[5] •चोरसामण्णे रायसामण्णे दाइयसामण्णे° मच्चुसामण्णे सडण-पडण-विद्धंसणधम्मे पच्छा पुरं च णं अवस्सविप्पजहणिज्जे । से के णं जाणइ अम्मयाओ ! के[6] •पुव्विं गमणाए के पच्छा° गमणाए ? तं इच्छामि णं[7] •अम्मयाओ ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए मुंडे भवित्ता णं अगाराओ अण-गारियं° पव्वइत्तए ।।

११२. तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स अम्मापियरो जाहे नो संचाएंति मेहं कुमारं बहूहिं विसयाणुलोमाहिं आघवणाहि य पण्णवणाहि य सण्णवणाहि य विण्ण-वणाहि य आघवित्तए वा पण्णवित्तए वा सण्णवित्तए वा विण्णवित्तए वा ताहे विसयपडिकूलाहिं संजमभउव्वेयकारियाहिं पण्णवणाहिं पण्णवेमाणा एवं वयासी— एस णं जाया ! निग्गंथे पावयणे सच्चे अणुत्तरे केवलिए पडिपुण्णे नेयाउए संसुद्धे सल्लगत्तणे सिद्धिमग्गे मुत्तिमग्गे निज्जाणमग्गे निव्वाणमग्गे सव्वदुक्ख-प्पहीणमग्गे, अहीव एगंतदिट्ठिए[8], खुरो इव एगंतधाराए[9], लोहमया इव जवा चावेयव्वा, वालुयाकवले इव निरस्साए, गंगा इव महानई पडिसोयगमणाए, महासमुद्दो इव भुयाहिं दुत्तरे, तिक्खं कमियव्वं[10], गरुअं लंबेयव्वं, असिधारव्वयं[11] चरियव्वं । नो[12] खलु कप्पइ जाया ! समणाणं निग्गंथाणं आहाकम्मिए वा

---

१. सं० पा०—महावीरस्स जाव पव्वइस्ससि ।
२. अम्मापियरो (क, ख, ग, घ) ।
३. सं० पा०—पज्जग जाव तओ पच्छा अणु-भूयकल्लाणे पव्वइस्ससि ।
४. दाविय° (क) ।
५. सं० पा०—अग्गिसामण्णे जाव मच्चुसामण्णे ।
६. सं० पा०—के जाव गमणाए ।
७. सं० पा०—तं इच्छामि णं जाव पव्वइत्तए ।
८. एगंतदिट्ठीए (घ) ।
९. एगधाराए (वृ); एगंतधाराए (वृपा) ।
१०. चंकमियव्व (क) ।
११. असिधारावयं (क, ग, घ) ।
१२. नो य (ख, घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उद्देसिए वा कीयगडे वा ठविए वा रइए वा दुब्भिक्खभत्ते वा कंतारभत्ते वा वद्दलियाभत्ते वा गिलाणभत्ते वा मूलभोयणे वा कंदभोयणे वा फलभोयणे वा बीयभोयणे वा हरियभोयणे वा भोत्तए वा पायए वा।

तुमं च णं जाया! सुहसमुचिए[1] नो चेव णं दुहसमुचिए[2], नालं सीयं नालं उण्हं नालं खुहं नालं पिवासं नालं वाइय-पित्तिय-सिंभिय-सन्निवाइए[3] विविहे रोगायंके, उच्चावए गामकंटए, बावीसं परीसहोवसग्गे उदिण्णे सम्मं अहियासित्तए। भुंजाहि ताव जाया! माणुस्सए कामभोगे। तओ पच्छा भुत्तभोगी समणस्स[4] •भगवओ महावीरस्स अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइस्ससि॥

११३. तए णं से मेहे कुमारे अम्मापिऊहिं एवं वुत्ते समाणे अम्मापियरं एवं वयासी—तहेव णं तं अम्मयाओ[5]! जं णं तुब्भे ममं एवं वयह—"एस णं जाया! निग्गंथे पावयणे सच्चे अणुत्तरे[6] •केवलिए पडिपुण्णे नेयाउए संसुद्धे सल्लगत्तणे सिद्धिमग्गे मुत्तिमग्गे निज्जाणमग्गे निव्वाणमग्गे सव्वदुक्खप्पहीणमग्गे, अहीव एगंतदिट्ठिए, खुरो इव एगंतधाराए, लोहमया इव जवा चावेयव्वा, वालुयाकवले इव निरस्साए, गंगा इव महानई पडिसोयगमणाए, महासमुद्दो इव भुयाहिं दुत्तरे, तिक्खं कमियव्वं, गरुअं लंबेयव्वं, असिधारव्वयं चरियव्वं। नो खलु कप्पइ जाया! समणाणं निग्गंथाणं आहाकम्मिए वा उद्देसिए वा कीयगडे वा ठविए वा रइए वा दुब्भिक्खभत्ते वा कंतारभत्ते वा वद्दलियाभत्ते वा गिलाणभत्ते वा मूलभोयणे वा कंदभोयणे वा फलभोयणे वा बीयभोयणे वा हरियभोयणे वा भोत्तए वा पायए वा।

तुमं च णं जाया! सुहसमुचिए नो चेव णं दुहसमुचिए, नालं सीयं नालं उण्हं नालं खुहं नालं पिवासं नालं वाइय-पित्तिय-सिंभिय-सन्निवाइए विविहे रोगायंके, उच्चावए गामकंटए बावीसं परीसहोवसग्गे उदिण्णे सम्मं अहियासित्तए। भुंजाहि ताव जाया! माणुस्सए कामभोगे। तओ पच्छा भुत्तभोगी समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइस्ससि।"

एवं खलु अम्मयाओ! निग्गंथे पावयणे कीवाणं कायराणं कापुरिसाणं इहलोगपडिबद्धाणं परलोगनिप्पिवासाणं दुरणुचरे पाययजणस्स, नो चेव णं धीरस्स[7]। निच्छियववसियस्स एत्थ किं दुक्करं करणयाए?

---

१. °समुच्चिए (क, ग)।
२. °समुच्चिए (घ)।
३. सन्निवाइय (ख, ग, घ)।
४. सं० पा०—समणस्स जाव पव्वइस्ससि।
५. अम्मताओ (ख, ग)।
६. सं० पा०—अणुत्तरे पुणरवि तं चेव जाव तओ पच्छा भुत्तभोगी समणस्स भगवओ जाव पव्वइस्ससि।
७. वीरस्स (ख, ग)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तं इच्छामि णं अम्मयाओ ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ[1] •महावीरस्स अंतिए मुंडे भवित्ता णं अगाराओ अणगारियं° पव्वइत्तए ॥

मेहस्स एगदिवसरज्ज-पदं

११४. तए णं तं मेहं कुमारं अम्मापियरो जाहे नो संचाएंति बहूहिं विसयाणुलोमाहि य विसयपडिकूलाहि य आघवणाहि य पण्णवणाहि य सण्णवणाहि य विण्णवणाहि य आघवित्तए वा पण्णवित्तए वा सण्णवित्तए वा विण्णवित्तए वा ताहे अकामकाइं चेव मेहं कुमारं एवं वयासी—इच्छामो ताव जाया ! एगदिवसमवि ते रायसिरिं पासित्तए ॥

११५. तए णं से मेहे कुमारे अम्मापियरमणुवत्तमाणे[2] तुसिणीए संचिट्ठइ ॥

११६. तए णं से सेणिए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! मेहस्स कुमारस्स महत्थं महग्घं महरिहं विउलं रायाभिसेयं उवट्ठवेह[3] ॥

११७. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा[4] •मेहस्स कुमारस्स महत्थं महग्घं महरिहं विउलं रायाभिसेयं° उवट्ठवेंति ॥

११८. तए णं से सेणिए राया बहूहिं गणनायगेहि य जाव[5] संधिवालेहि य सद्धिं संपरिवुडे मेहं कुमारं अट्ठसएणं सोवण्णियाणं कलसाणं एवं—रुप्पमयाणं कलसाणं मणिमयाणं कलसाणं सुवण्णरुप्पमयाणं कलसाणं, सुवण्णमणिमयाणं कलसाणं रुप्पमणिमयाणं कलसाणं सुवण्णरुप्पमणिमयाणं कलसाणं, भोमेज्जाणं कलसाणं सव्वोदएहिं सव्वमट्टियाहिं सव्वपुप्फेहिं सव्वगंधेहिं सव्वमल्लेहिं सव्वोसहीहिं[6] सिद्धत्थएहि य सव्विड्ढीए सव्वज्जुईए सव्वबलेणं जाव[7] दुंदुभि-निग्घोस-णाइयरवेणं महया-महया रायाभिसेएणं अभिसिंचइ, अभिसिंचित्ता करयल[8]•परिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं° कट्टु एवं वयासी—'जय-जय नंदा ! जय-जय भद्दा !

जय-जय नंदा ! भद्दं ते[9] अजियं जिणाहि, जियं पालयाहि[10], जियमज्झे वसाहि, [अजियं जिणाहि सत्तुपक्खं, जियं च पालेहि मित्तपक्खं[11],][12] •इंदो इव देवाणं

---

१. सं० पा०—भगवओ जाव पव्वइत्तए।
२. °मणुयत्तमाणे (क)।
३. उवट्ठावेह (ख)।
४. सं० पा०—कोडुंबियपुरिसा जाव ते वि तहेव।
५. ना० १।१।२४।
६. सव्वोसहिं (क, ख); सव्वोसहि (ग, घ)।
७. ना० १।१।३३।
८. सं० पा०—करयल जाव कट्टु।
९. जय-जय णंदा ! जय-जय भद्दा ! भद्दंते, (ओ० सू० ६८)।
१०. पालेहिं (क)।
११. सं० पा०—मित्तपक्खं जाव भरहो।
१२. कोष्ठकवर्तिवाक्यद्वयं सर्वासु प्रतिषु लभ्यते,

चमरो इव असुराणं धरणो इव नागाणं चंदो इव ताराणं° भरहो इव मणुयाणं रायगिहस्स नगरस्स अन्नेसिं च बहूणं गामागर-नगर[1]-•खेड-कब्बड-दोणमुह-मडंब-पट्टण-आसम-निगम-संबाह-सण्णिवेसाणं आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणा-ईसर-सेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे महयाहय-नट्ट-गीय-वाइय - तंती-तल - ताल-तुडिय - घण-मुइंग-पडुप्पवाइयरवेणं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे° विहराहि त्ति कट्टु जय-जय-सद्दं पउंजंति ।।

११९. तए णं से मेहे राया जाए —महयाहिमवंत-महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे जाव[2] रज्जं पसासेमाणे विहरइ ।।

१२०. तए णं तस्स मेहस्स रण्णो [तं मेहं रायं ?] अम्मापियरो एवं वयासी—भण जाया ! किं दलयामो[3] ? किं पयच्छामो ? किं वा ते हियइच्छिए[4] सामत्थे ?

मेहस्स निक्खमणपाओग्ग-उवगरण-पदं

१२१. तए णं से मेहे राया[5] अम्मापियरो एवं वयासी—इच्छामि णं अम्मयाओ ! कुत्तियावणाओ रयहरणं पडिग्गहं[6] च आणियं, कासवयं च सद्दावियं[7] ।।

१२२. तए णं से सेणिए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! सिरिघराओ तिण्णि सयसहस्साइं गहाय दोहिं सय-सहस्सेहिं कुत्तियावणाओ रयहरणं पडिग्गहं[8] च उवणेह, सयसहस्सेणं कासवयं सद्दावेह ।।

१२३. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा सेणिएणं रण्णा एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा सिरि-घराओ तिण्णि सयसहस्साइं गहाय कुत्तियावणाओ दोहिं सयसहस्सेहिं रयहरणं पडिग्गहं च उवणेंति, सयसहस्सेणं कासवयं सद्दावेंति ।।

कासवेणं मेहस्स अग्गकेसकप्पण-पदं

१२४. तए णं से कासवए तेहिं कोडुंबियपुरिसेहिं सद्दाविए समाणे हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिए जाव[9] हरिसवसविसप्पमाणहियए ण्हाए कयबलिकम्मे कय-कोउय-मंगल-

---

तथापि पुनरुक्तं व्याख्यारूपं प्रतीयते। वृत्तावपि नैतद् व्याख्यातमस्ति। 'ओवाइय' (६८) सूत्रे पि नैतल्लभ्यते। तेन नास्माभि-र्मूलपाठरूपेण स्वीकृतः।

१. सं० पा०—नगर जाव सण्णिवेसाणं आहे-वच्चं जाव विहराहि।

२. ओ० सू० १४।

३. दलामो (क)।

४. हिययइच्छिए (क); हिययपच्छिए (ख)।

५. कुमारे (क, ख, ग)।

६. पडिग्गहणं (ख)।

७. सद्दाविउं (क); सद्दावेउं(ख, ग); सद्दावित्तए (घ); वृत्तौ—'शब्दितं—आकारितम्' इति व्याख्यातं विद्यते। 'आनीतमिच्छामि' तथैव 'शब्दितमिच्छामि' इति उपयुक्तोस्ति सम्बन्धः, तस्मात् 'सद्दावियं' इति वृत्त्यनुसारी पाठः स्वीकृतः।

८. पडिग्गहगं (ख)।

९. ना० १।१।१९।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं वत्थाइं पवर[1] परिहिए अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे जेणेव सेणिए राया, तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सेणियं रायं करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी—संदिसह णं देवाणुप्पिया! जं मए करणिज्जं ॥

१२५. तए णं से सेणिए राया कासवयं एवं वयासी—गच्छाहि णं तुमं देवाणुप्पिया! सुरभिणा गंधोदएणं निक्के[2] हत्थपाए पक्खालेहि, सेयाए चउप्फलाए[3] पोत्तीए मुहं बंधित्ता मेहस्स कुमारस्स चउरंगुलवज्जे निक्खमणपाउग्गे अग्गकेसे कप्पेहि ॥

१२६. तए णं से कासवए सेणिएणं रण्णा एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिए जाव[4] हरिसवस-विसप्पमाणहियए[5] •करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं सामि! त्ति आणाए विणएणं वयणं° पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता सुरभिणा गंधोदएणं [निक्के?] हत्थपाए पक्खालेइ, पक्खालेत्ता सुद्धवत्थेणं मुहं बंधइ, बंधित्ता परेणं जत्तेणं मेहस्स कुमारस्स चउरंगुलवज्जे निक्खमण-पाउग्गे अग्गकेसे कप्पेति ॥

१२७. तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स माया महरिहेणं हंसलक्खणेणं पडसाडएणं अग्गकेसे पडिच्छइ, पडिच्छित्ता सुरभिणा गंधोदएणं पक्खालेइ, पक्खालेत्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं चच्चाओ दलयइ, दलइत्ता सेयाए पोत्तीए बंधइ, बंधित्ता रयणसमुग्गयंसि पक्खिवइ, मंजूसाए पक्खिवइ, हार-वारिधार[6]-सिंदुवार-छिन्नमुत्तावलि-प्पगासाइं अंसूइं विणिम्मुयमाणी-विणिम्मुयमाणी, रोयमाणी-रोयमाणी, कंदमाणी-कंदमाणी, विलवमाणी-विलवमाणी एवं वयासी—एस णं अम्हं मेहस्स कुमारस्स अब्भुदएसु य उस्सवेसु य पसवेसु य तिहीसु य छणेसु य जन्नेसु य पव्वणीसु य—अपच्छिमे दरिसणे भविस्सइ त्ति कट्टु उस्सीसामूले ठवेइ ॥

मेहस्स अलंकरण-पदं

१२८. तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स अम्मापियरो उत्तरावक्कमणं सीहासणं रयावेंति, मेहं कुमारं दोच्चं पि तच्चं पि सेयापीएहिं[7] कलसेहिं ण्हावेंति, ण्हावेत्ता पम्हलसूमालाए गंधकासाइयाए गायाइं लूहेंति, लूहेत्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं

---

१. विभक्तिरहितं पदम्।

२. निक्के ति सर्वथा विगतमलान् (वृ)।

३. चउप्फालाए (क्व०) अट्ठपडलाए (भ० ९।१८९)।

४. ना० १।१।१९।

५. सं० पा०—हियए जाव पडिसुणेइ।

६. वारिधारा (ग)।

७. सेयाणीएहिं (ग, घ); अत्र लिपिकरणे 'पकारो' णकाररूपेण परिवर्तितोभूत् अथवा 'सेकानीतैः' इत्यर्थस्य परिकल्पनायां 'सेयाणीएहिं' इत्यपि पाठः शुद्धस्यात्।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गायाइं अणुलिंपंति, अणुलिंपित्ता नासा-नीसासवाय-वोज्झं[1] •वरणगरपट्टणु-ग्गयं कुसलणरपसंसितं अस्सलालापेलवं छेयायरियकणगखचियंतकम्मं° हंस-लक्खणं पडसाडगं नियंसेंति, हारं पिणद्धेंति, अद्धहारं पिणद्धेंति, एवं—एगावलिं मुत्तावलिं कणगावलिं रयणावलिं पालंबं पायपलंबं कडगाइं[2] तुडिगाइं[3] केऊराइं अंगयाइं दसमुद्दियाणंतयं कडिसुत्तयं कुंडलाइं चूडामणिं रयणुक्कडं मउडं—पिणद्धेंति, पिणद्धेत्ता[4] गंथिम-वेढिम-पूरिम-संघाइमेणं[5]—चउव्विहेणं मल्लेणं कप्परुक्खगं पिव अलंकिय-विभूसियं करेंति ।।

मेहस्स अभिनिक्खमणमहुस्सव-पदं

१२९. तए णं से सेणिए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! अणेगखंभसय-सण्णिविट्ठं लीलट्ठिय-सालभंजियागं ईहामिय-उसभ-तुरय-नर-मगर-विहग-वालग-किन्नर-रुरु-सरभ-चमर-कुंजर-वणलय-पउमलय-भत्तिचित्तं घंटावलि-महुर-मणहरसरं सुभ-कंत-दरिसणिज्जं निउणोविय-मिसिमिसेंत-मणिरयणघंटियाजालपरिक्खित्तं अब्भुग्गय-वइरवेइया-परिगयाभिरामं विज्जाहरजमल-जंतजुत्तं पिव अच्चीसहस्समालणीयं[6] रूवग-सहस्सकलियं भिसमाणं[7] भिब्भिसमाणं चक्खुल्लोयणलेस्सं सुहफासं सस्सिरीयरूवं सिग्घं तुरियं चवलं वेइयं पुरिससहस्सवाहिणीयं सीयं उवट्ठवेह ।।

१३०. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा हट्ठतुट्ठा अणेगखंभसय-सण्णिविट्ठं जाव[8] सीयं उवट्ठवेंति ।।

१३१. तए णं से मेहे कुमारे सीयं दुरुहइ, दुरुहित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सण्णिसण्णे ।।

१३२. तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स माया ण्हाया कयबलिकम्मा जाव[9] अप्पमहग्घा-

---

१. सं० पा०—नासानीसासवायवोज्झं जाव हंस-लक्खणं ।

२. एतत् पदं वृत्तौ नास्ति व्याख्यातम् ।

३. × (ख, ग) ।

४. पिणद्धेत्ता दिव्वं सुमणदामं पिणद्धति, दद्दरमलयसुगंधिए गंधे पिणद्धेंति । तए णं तं मेहं कुमारं (क, ख, ग); 'घ' प्रतिं विहाय सर्वासु प्रतिषु पाठान्तररूपेणोद्धृतः पाठो लभ्यते । 'घ' प्रतौ एवं पाठोस्ति—'दिव्वं सुमणदामं पिणद्धेंति । तते णं तं मेहं कुमारं गंथिम°' । किन्तु भगवत्यां (९।२३) आचारचूलायां (१५।२८) च असौ पाठः अतीव व्यवस्थितरूपेण प्राप्तोस्ति, अतः तयोराधारेण अत्रापि पाठः स्वीकृतः । अनेन प्रस्तुतसूत्रे जातस्य पाठमिश्रणस्य परिहारः सहजमेव जातः ।

५. संजोइमेणं (ख) ।

६. °मालिणीयं (क, ख, ग) ।

७. मिसमीणं (ख, ग) ।

८. ना० १।१।२९ ।

९. ना० १। १।१।२७ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भरणालंकियसरीरा सीयं दुरुहइ, दुरुहित्ता मेहस्स कुमारस्स दाहिणपासे भद्दासणंसि[1] निसीयइ ।।

१३३. तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स अंबधाई रयहरणं च पडिग्गहं च गहाय सीयं दुरुहइ, दुरुहित्ता मेहस्स कुमारस्स वामपासे भद्दासणंसि निसीयइ ।।

१३४. तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स पिट्ठओ एगा वरतरुणी सिंगारागारचारुवेसा संगय-गय-हसिय-भणिय-चेट्ठिय-विलास - संलावुल्लाव - निउणजुत्तोवयारकुसला आमेलगजमलजुयल-वट्टिय-अब्भुण्णय-पीण-रइय-संठिय-पओहरा हिम-रयय-कुंदेंदुपगासं सकोरेंटमल्लदामं धवलं आयवत्तं गहाय सलीलं ओहारेमाणी-ओहारेमाणी चिट्ठइ ।।

१३५. तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स दुवे वरतरुणीओ सिंगारागारचारुवेसाओ[2] °संगय-गय-हसिय-भणिय-चेट्ठिय-विलास-संलावुल्लाव-निउणजुत्तोवयार° कुसलाओ सीयं दुरुहंति, दुरुहित्ता मेहस्स कुमारस्स उभओ पासं[3] नाणामणि-कणग-रयण-महरिहतवणिज्जुज्जल-विचित्तदंडाओ चिल्लियाओ सुहुमवरदीहवालाओ संख-कुंद-दगरय-अमयमहियफेणपुंज-सण्णिगासाओ चामराओ गहाय सलीलं ओहारेमाणीओ-ओहारेमाणीओ चिट्ठंति ।।

१३६. तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स एगा वरतरुणी सिंगारा[4]-°गारचारुवेसा संगय-गय-हसिय-भणिय-चेट्ठिय-विलास-संलावुल्लाव-निउणजुत्तोवयार° कुसला सीयं दुरुहइ, दुरुहित्ता मेहस्स कुमारस्स पुरओ पुरत्थिमे णं चंदप्पभवइर-वेरुलिय-विमलदंडं तालियंटं गहाय चिट्ठइ ।।

१३७. तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स एगा वरतरुणी[5] °सिंगारागारचारुवेसा संगय-गय-हसिय-भणिय-चेट्ठिय-विलास-संलावुल्लाव-निउणजुत्तोवयार° कुसला सीयं दुरुहइ, दुरुहित्ता मेहस्स कुमारस्स पुव्वदक्खिणे[6] णं सेयं रययामयं विमलसलिल-पुण्णं मत्तगयमहामुहाकितिसमाणं भिंगारं गहाय चिट्ठइ ।।

१३८. तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स पिया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सरिसयाणं सरित्तयाणं सरिव्वयाणं एगाभरण-गहिय-निज्जोयाणं कोडुंबियवरतरुणाणं सहस्सं सद्दावेह[7] ।।

---

१. भद्दासणम्मि (ख); भद्दासणे (ग) ।

२. सं० पा०—सिंगारागारचारुवेसाओ जाव कुसलाओ ।

३. पासिं (ख) ।

४. सं० पा०—सिंगारा जाव कुसला ।

५. सं० पा०—वरतरुणी जाव सुरूवा (क, ख, ग, घ) अत्र पूर्वसूत्रक्रमेण 'जाव कुसला' इति युज्यते, कथमिदं परिवर्तनं जातमिति ज्ञातुं न शक्यते ।

६. दक्खिणे (ग) ।

७. सं० पा०—सद्दावेह जाव सद्दावेंति ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१३९. •तए णं ते कोडुंबियपुरिसा सरिसयाणं सरित्तयाणं सरिव्वयाणं एगाभरण-गहिय-निज्जोयाणं कोडुंबियवरतरुणाणं सहस्सं° सद्दावेंति ॥

१४०. तए णं ते कोडुंबियवरतरुणपुरिसा सेणियस्स रण्णो कोडुंबियपुरिसेहिं सद्दाविया समाणा हट्ठा ण्हाया जाव[1] [सव्वालंकारविभूसिया ?[2]] एगाभरण-गहिय-णिज्जोया जेणामेव सेणिए राया तेणामेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सेणियं रायं एवं वयासी—संदिसह णं देवाणुप्पिया ! जं णं अम्हेहिं करणिज्जं ॥

१४१. तए णं से सेणिए राया तं कोडुंबियवरतरुणसहस्सं एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! मेहस्स कुमारस्स पुरिससहस्सवाहिणीयं[3] सीयं परिवहेह ॥

१४२. तए णं तं कोडुंबियवरतरुणसहस्सं सेणिएण रण्णा एवं वुत्तं संतं हट्ठं मेहस्स कुमारस्स पुरिससहस्सवाहिणीयं सीयं परिवहइ ॥

१४३. तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स पुरिससहस्सवाहिणीयं[4] सीयं दुरूढस्स समाणस्स इमे अट्ठट्ठमंगलया तप्पढमयाए पुरओ अहाणुपुव्वीए[5] संपत्थिया, तं जहा--सोवत्थिय[6]-सिरिवच्छ-नंदियावत्त-वद्धमाणग-भद्दासण-कलस-मच्छ-दप्पणया जाव[7]

---

१. ना० १।१।८१ ।

२. अत्र जाव शब्दस्याग्रिमो पाठो नास्ति सूचितः, किन्तु प्रसंगानुसारेण पूतिकृत एव पाठो युज्यते ।

३. °वाहिणीं (ग, घ) ।

४. °वाहिणीं (ख); वाहिणी (ग) ।

५. आणुपुव्वीए (घ) ।

६. सोत्थिय (ग) ।

७. (१) तयाणंतरं च णं पुण्णकलसभिंगारं दिव्वा य छत्तपडागा सचामरा दंसण-रइय-आलोयदरिसणिज्जा वाउद्धुयविजयवेजयंती य ऊसिया गगणतलमणुलिहंती पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया ।

(२) तयाणंतरं च णं वेरुलियभिसंतविमलदंडं पलंबकोरेंट मल्लदामोवसोहियं चंदमंडलनिभं विमलं आयवत्तं पवरं सीहासणं च मणिरयण-पायवीढं सपाउयाजुयसमाउत्तं बहुकिंकर-कम्मकर-पुरिस-पायत्त-परिक्खित्त पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठियं ।

(३) तयाणंतरं च णं बहवे लट्ठिग्गाहा कुंतग्गाहा चावग्गाहा चामरग्गाहा, पोत्थयग्गाहा फलगगाहा पीढयग्गाहा वीणग्गाहा कूवग्गाहा हडप्पग्गाहा पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया ।

(४) तयाणंतरं च णं बहवे दंडिणो मुंडिणो छिहंडिणो पिच्छिणो हासकरा डमरकरा चाडुकरा कीडंता य वायंता य गायंता य नच्चंता य हसंता य सोहंता य साविंता य रक्खंता य आलोयं च करेमाणा जयसद्दं च पउंजमाणा पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठिया ।

(५) तयाणंतरं च ण जच्चाणं तरमल्लिहाय-णाणं थासग-अहिलाण-चामर-गंड-परिमंडिय-कडीणं किंकरवरतरुणपरिग्गहियाणं अट्ठसयं वरतुरगाणं पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठियं ।

(६) तयाणंतरं च णं ईसीदंताणं ईसीमत्ताणं ईसीतुंगाणं ईसीउच्छंगविसाल-धवलदंताणं कंचणकोसी-पविट्ठदंताणं कंचण-मणिरयण-भूसियाण वरपुरिसारोहगसंपउत्ताणं अट्ठसयं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बहवे अत्थत्थिया[1] •कामत्थिया भोगत्थिया लाभत्थिया किव्विसिया कारोडिया कारवाहिया संखिया चक्किया नंगलिया मुहमंगलिया वद्धमाणा पूसमाणया खंडियगणा ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं मणुण्णाहिं मणामाहिं मणाभिरामाहिं हिययगमणिज्जाहिं वग्गूहिं जयविजयमंगलसएहिं° अणवरयं अभिनंदंता य अभिथुणंता य एवं वयासी—जय-जय नंदा ! जय-जय भद्दा !

जय-जय नंदा ! भद्दं ते ! अजियं जिणाहि इंदियाइं, जियं च पालेहि समण-धम्मं, जियविग्घो वि य वसाहि तं देव ! सिद्धिमज्झे, निहणाहि रागदोसमल्ले तवेण धिइ-धणिय[2]-वद्धकच्छो, मद्दाहि य अट्ठकम्मसत्तू झाणेणं उत्तमेणं सुक्केणं अप्पमत्तो, पावय वितिमिरमणुत्तरं केवलं नाणं, गच्छ य मोक्खं परमं पयं

गयाणं पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठियं ।

(७) तयाणंतरं च णं सच्छत्ताणं सज्झयाणं सघंटाणं सपडागाणं सतोरणवराणं सणंदिघोसाणं सखिखिणी-जाल-परिक्खित्ताणं हेमवय-चित्त-तिणिस-कणग-णिज्जुत्त-दारुयाणं कालायस-सुकयणेमि-जंतकम्माणं सुसिलिट्ठ-वत्तमंडल-धुराणं आइण्णवरतुरगसुसंपउत्ताणं कुसलनरच्छेयसारहिसुसंपग्गहियाणं बत्तीसतोण-परिमंडियाणं सकंकड-वडेंसगाणं सचावसर-पहरणावरणभरिय - जुद्धसज्जाणं अट्ठसयं रहाणं पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठियं ।

(८) तयाणंतरं च णं असि-सत्ति-कुंत-तोमर-सूल-लउल-भिंडिमाल-धणु-पाणिसज्जं पायत्ताणीयं पुरओ अहाणुपुव्वीए संपट्ठियं ।

(९) तए णं से मेहे कुमारे हारोत्थय-सुकय-रइय-वच्छे कुंडलुज्जोइयाणणे मउडदित्त-सिरए अब्भहियं रायतेयलच्छीए दिप्पमाणे सकोरेंटमल्लदामेण छत्तेणं धरिज्जमाणेणं सेयवरचामराहिं उद्धुव्वमाणीहिं-उद्धुव्वमाणीहिं हयगयपवरवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए समणुगम्ममाणमग्गे जेणेव गुणसिलए चेइए, तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।

(१०) तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स पुरओ महं आसा आसवरा उभओ पासिं णागा णागधरा (नागवरा—वृपा) पिट्ठओ रह-संवेल्लि (रहसंगेल्लि-वृपा) ।

(११) तए णं से मेहे कुमारे अब्भुग्गयभिंगारे पग्गहियतालियंटे ऊसवियसेयछत्ते पवीजियवालवीयणीए सव्विड्ढीए सव्वजुत्तीए सव्वबलेणं सव्वसमुदएणं सव्वादरेणं सव्वविभूईए सव्वविभूसाए सव्वसंभमेणं सव्वपुप्फगंध-मल्लालंकारेणं सव्वतुडिय-सद्द-सण्णिणाएणं महया इड्ढीए महया जुईए महया बलेणं महया समुदएणं महया वरतुडिय-जमगसमगप्पवाइएणं संख-पणव-पडह-भेरि-झल्लरि खरमुहि-हुडुक्क-मुरय-मुइंग-दुंदुहि - णिग्घोस-णाइयरवेणं रायगिहस्स नगरस्स मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ ।

(१२) तए णं तस्स मेहकुमारस्स रायगिहस्स नगरस्स मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छमाणस्स बहवे अत्थत्थिया कामत्थिया भोगत्थिया··· । उपरिलिखितः पाठो वृत्तेः समुद्धृतोस्ति । औपपातिकस्य ६४-६८ सूत्रेषु असौ पाठः किञ्चिच्छब्दभेदेन सहोपलभ्यते ।

१. सं० पा०—अत्थत्थिया जाव ताहिं इट्ठाहिं जाव अणवरयं ।

२. वलिक (ग, वृपा); एकस्यां वृत्तिप्रतौ 'पलिक' इत्यपि लभ्यते ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सासयं च अयलं, 'हंता परीसहचमूणं'[1], अभीओ परीसहोवसग्गाणं, धम्मे ते अविग्घं भवउ त्ति कट्टु पुणो-पुणो मंगल-जयसद्दं पउंजंति ।।

१४४. तए णं से मेहे कुमारे रायगिहस्स नगरस्स मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव गुणसिलए चेइए तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ पच्चोरुहइ[2] ।।

सिस्सभिक्ख दाण-पदं

१४५. तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स अम्मापियरो मेहं कुमारं पुरओ कट्टु जेणामेव समणे भगवं महावीरे तेणामेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेंति, करेत्ता वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी एस णं देवाणुप्पिया ! मेहे कुमारे अम्हं एगे पुत्ते इट्ठे कंते[3] •पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे वेसासिए सम्मए बहुमए अणुमए भंडकरंडगसमाणे रयणे रयणभूए° जीवियऊसासए हिययणंदिजणए उंबरपुप्फं पिव दुल्लहे सवणयाए, किमंग पुण दरिसणयाए ?

से जहानामए उप्पले ति वा पउमे ति वा कुमुदे ति वा पंके जाए जले संवड्ढिए नोवलिप्पइ पंकरएणं नोवलिप्पइ जलरएणं, एवामेव मेहे कुमारे कामेसु जाए भोगेसु संवड्ढिए[4] नोवलिप्पइ कामरएणं नोवलिप्पइ भोगरएणं। एस णं देवाणुप्पिया ! संसारभउव्विग्गे भीए जम्मण[5]-जर-मरणाणं, इच्छइ देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए। अम्हे णं देवाणुप्पियाणं सिस्सभिक्खं[6] दलयामो। पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया ! सिस्सभिक्खं ।।

१४६. तए णं समणे भगवं महावीरे मेहस्स कुमारस्स अम्मापिऊहिं एवं वुत्ते समाणे एयमट्ठं सम्मं पडिसुणेइ ।।

१४७. तए णं से मेहे कुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ[7] उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमइ, सयमेव आभरण-मल्लालंकारं ओमुयइ ।।

१४८. तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स माया हंसलक्खणेणं पडसाडएणं[8] आभरण-मल्लालंकारं पडिच्छइ, पडिच्छित्ता हार-वारिधार-सिंदुवार-छिन्नमुत्तावलिप्पगासाइं अंसूणि विणिम्मुयमाणी-विणिम्मुयमाणी रोयमाणी-रोयमाणी कंदमाणी-कंदमाणी विलवमाणी-विलवमाणी एवं वयासी--जइयव्वं जाया !

---

१. हत्वा परीसह-चमूं--परीषहसैन्यम्। णमित्यलंकारे अथवा कथंभूतः त्वम्, हंता--विनाशकः परीषह-चमूनाम् (वृ)।
२. पच्चोरुभइ (ख, ग)।
३. सं० पा०--कंते जाव जीवियऊसासए।
४. संवुड्ढे (ख, ग)।
५. जम्म (ख, ग)।
६. सीसभिक्ख (क)।
७. × (क, ग, घ)।
८. पडग° (ख)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घडियव्वं जाया ! परक्कमियव्वं जाया ! अस्सिं च णं अट्ठे नो पमाएयव्वं। अम्हंपि णं एसेव मग्गे भवउ त्ति कट्टु मेहस्स कुमारस्स अम्मापियरो समणं भगवं महावीरं वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया ॥

मेहस्स पव्वज्जागहण-पदं

१४९. तए णं से मेहे कुमारे सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ, करेत्ता जेणामेव समणे भगवं महावीरे तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी --आलित्ते णं भंते ! लोए, पलित्ते णं भंते ! लोए, आलित्त पलित्ते णं भंते ! लोए जराए मरणेण य।

से जहानामए केइ गाहावई अगारंसि झियायमाणंसि जे तत्थ भंडे भवइ अप्पभारे[1] मोल्लगरुए तं गहाय आयाए एगंतं अवक्कमइ-- एस मे नित्थारिए समाणे 'पच्छा पुरा य'[2] लोए हियाए सुहाए खमाए[3] निस्सेसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ। एवामेव मम वि एगे आयाभंडे इट्ठे कंते पिए मणुण्णे मणामे। एस मे नित्थारिए समाणे संसारवोच्छेयकरे भविस्सइ। तं इच्छामि णं देवाणुप्पिएहिं सयमेव पव्वावियं सयमेव मुंडावियं सयमेव सेहावियं सयमेव सिक्खावियं सयमेव आयार-गोयर-विणय-वेणइय-चरण-करण-जायामायावत्तियं[4] धम्ममाइक्खियं ॥

१५०. तए णं समणे भगवं महावीरे मेहं कुमारं सयमेव पव्वावेइ सयमेव[5] °मुंडावेइ सयमेव सेहावेइ सयमेव सिक्खावेइ सयमेव आयार-गोयर-विणय-वेणइय-चरण-करण-जायामायावत्तियं° धम्ममाइक्खइ—एवं देवाणुप्पिया ! गंतव्वं, एवं चिट्ठियव्वं, एवं निसीयव्वं, एवं तुयट्टियव्वं, एवं भुंजियव्वं, एवं भासियव्वं, एवं उट्ठाए उट्ठाय[6] पाणेहिं भूएहिं जीवेहिं सत्तेहिं संजमेणं संजमियव्वं, अस्सिं च णं अट्ठे नो पमाएयव्वं ॥

१५१. तए णं से मेहे कुमारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए इमं एयारूवं धम्मियं उवएसं सम्मं पडिवज्जइ-- तमाणाए तह गच्छइ, तह चिट्ठइ[7], °तह निसीयइ तह तुयट्टइ, तह भुंजइ, तह भासइ, तह° उट्ठाए उट्ठाय[8] पाणेहिं भूएहिं जीवेहिं सत्तेहिं संजमेणं संजमइ ॥

---

१. अप्पसारं (वृपा)।
२. पच्छाउरस्स (वृपा)
३. खेमाए (क्व०)।
४. °उत्तियं (क, ख, ग, घ)।
५. सं० पा० --सयमेव° आयार जाव धम्ममाइक्खइ।
६. °उट्ठाए (ग); उत्थाय उत्थाय (वृ)।
७. सं० पा०--चिट्ठइ जाव उट्ठाए।
८. उट्ठाए (क)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मेहस्स मणो-संकिलेस-पदं

१५२. जद्दिवसं[1] च णं मेहे कुमारे[2] मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए, तस्स णं दिवसस्स पच्चावरण्हकालसमयंसि[3] समणाणं निग्गंथाणं अहाराइणियाए[4] सेज्जा-संथारएसु विभज्जमाणेसु मेहकुमारस्स[5] दारमूले[6] सेज्जा-संथारए जाए यावि होत्था ।।

१५३. तए णं समणा निग्गंथा पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि वायणाए पुच्छणाए परियट्टणाए धम्माणुजोगचिंताए य उच्चारस्स वा[7] पासवणस्स वा[8] अइगच्छमाणा य निग्गच्छमाणा य अप्पेगइया मेहं कुमारं हत्थेहिं संघट्टेंति [9]•अप्पेगइया पाएहिं संघट्टेंति अप्पेगइया सीसे संघट्टेंति अप्पेगइया पोट्टे संघट्टेंति अप्पेगइया कायंसि संघट्टेंति° अप्पेगइया ओलंडेंति अप्पेगइया पोलंडेंति अप्पेगइया पाय-रय-रेणु-गुंडियं करेंति । एमहालियं[10] च रयणिं[11] मेहे कुमारे नो संचाएइ खणमवि अच्छिं[12] निमीलित्तए ।।

१५४. तए णं तस्स मेहस्स कुमारस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए[13] •चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं सेणियस्स रण्णो पुत्ते धारिणीए देवीए अत्तए मेहे[14] •इट्ठे कंते पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे वेसासिए सम्मए बहुमए अणुमए भंडकरंडगसमाणे रयणे रयणभूए जीविय-उस्सासए हियय-णंदि-जणणे उंबर-पुप्फं व दुल्लहे° सवणयाए[15] । तं जया णं अहं अगारमज्झावसामि[16] तया णं मम समणा निग्गंथा आढायंति परियाणंति[17] सक्कारेंति सम्माणेंति, अट्ठाइं हेऊइं पसिणाइं कारणाइं वागरणाइं[18] आइक्खंति, इट्ठाहिं कंताहिं वग्गूहिं आलवेंति संलवेंति । जप्पभिइं च णं अहं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए, तप्पभिइं च णं ममं समणा निग्गंथा नो आढायंति[19] •नो परियाणंति नो सक्कारेंति नो सम्माणेंति नो अट्ठाइं हेऊइं पसिणाइं कारणाइं वागरणाइं आइक्खंति,

---

१. जं दिवसं (घ) ।
२. अणगारे (क) ।
३. पुव्वा° (क, ग, घ) ।
४. आहारातिणियाए (ख, ग) ।
५. मेहस्स अणगारस्स (क) सर्वत्र ।
६. वारमूले (क, ख) ।
७,८. य (क, ख, ग, घ) । १८९ सूत्रस्य आधारेण अत्र 'वा' इति पाठो गृहीतः ।
९. सं० पा०—एवं पाएहिं सीसे पोट्टे कायंसि ।
१०. एवंमहा° (क, घ); एयमहा° (ग) ।
११. रयणी (क, घ) ।
१२. अच्छी (ख) ।
१३. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।
१४. सं० पा०—मेहे जाव सवणयाए ।
१५. समणयाए (क, ख, ग) ।
१६. °मज्झंवसामि (क); °मज्झेवसामि (ग); अगारमज्झे आवसामि (वृपा) ।
१७. परिजाणंति (ग) ।
१८. वाकरणाइं (क, ख, ग) ।
१९. सं० पा०—आढायंति जाव संलवेंति ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नो इट्ठाहिं कंताहिं वग्गूहिं आलवेंति ° संलवेंति। अदुत्तरं च णं ममं समणा निग्गंथा राओ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि वायणाए पुच्छणाए[1] •परियट्टणाए धम्माणुजोगचिंताए य उच्चारस्स वा पासवणस्स वा अइगच्छमाणा य निग्गच्छमाणा य अप्पेगइया हत्थेहिं संघट्टेंति अप्पेगइया पाएहिं संघट्टेंति अप्पेगइया सीसे संघट्टेंति अप्पेगइया पोट्टे संघट्टेंति अप्पेगइया कायंसि संघट्टेंति अप्पेगइया ओलंडेंति अप्पेगइया पोलंडेंति अप्पेगइया पाय-रय-रेणु-गुंडियं करेंति °। एमहालियं च णं रत्तिं अहं नो संचाएमि अच्छि निमिल्लावेत्तए[2] [निमीलित्तए ?]। तं सेयं खलु मज्झं[3] कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव[4] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते समणं भगवं महावीरं आपुच्छित्ता पुणरवि अगारमज्झावसित्तए[5] त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता अट्ट-दुहट्ट-वसट्ट-माणसगए निरयपडिरूवियं च णं तं रयणिं खवेइ[6], खवेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए सुविमलाए रयणीए जाव[7] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव[8] उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ जाव[9] पज्जुवासइ ॥

मेहस्स संबोध-पदं

१५५. तए णं मेहा ! इ समणे भगवं महावीरे मेहं कुमारं एवं वयासी—से नूणं तुमं[10] मेहा ! राओ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि समणेहिं निग्गंथेहिं वायणाए पुच्छणाए[11] •परियट्टणाए धम्माणुजोगचिंताए य उच्चारस्स वा पासवणस्स वा अइगच्छमाणेहि य निग्गच्छमाणेहि य अप्पेगइएहिं हत्थेहिं संघट्टिए अप्पेगइएहिं पाएहिं संघट्टिए अप्पेगइएहिं सीसे संघट्टिए अप्पेगइएहिं पोट्टे संघट्टिए अप्पेगइएहिं कायंसि संघट्टिए अप्पेगइएहिं ओलंडिए अप्पेगइएहिं पोलंडिए अप्पेगइएहिं पाय-रय-रेणु-गुंडिए कए।° एमहालियं च णं राइं तुमं नो संचाएसि मुहुत्तमवि अच्छिं निमिल्लावेत्तए। तए णं तुज्झं[12] मेहा ! इमेयारूवे अज्झत्थिए[13] •चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे ° समुप्पज्जित्था—जया णं अहं अगारमज्झावसामि तया णं ममं

---

१. सं० पा०—पुच्छणाए जाव एमहालियं।
२. १५३ सूत्रे 'निमिलित्तए' इति पाठोऽस्ति। अत्र तत्तुल्यार्थेऽपि 'निमिल्लावेत्तए' इति पाठः कथं जातः ?
३. ममं (ग)।
४. ना० १।१।२४।
५. °मज्झे वसित्तए (क)।
६. वेदेति (घ)।
७. ना० १।१।२४।
८. तेणामेव (ग)।
९. राय० सू० ६०।
१०. तुमे (ग)।
११. सं० पा०—पुच्छणाए जाव एमहालियं।
१२. तुब्भ (क); तुब्भे (ख, घ)।
१३. स० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समणा निग्गंथा आढायंति[1] •परियाणंति सक्कारेंति सम्माणेंति अट्ठाइं हेऊइं पसिणाइं कारणाइं वागरणाइं आइक्खंति, इट्ठाहिं कंताहिं वग्गूहिं आलवेंति संलवेंति°। जप्पभिइं च णं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वयामि तप्पभिइं च णं ममं समणा निग्गंथा नो आढायंति जाव[2] संलवेंति। अदुत्तरं च णं ममं समणा निग्गंथा राओ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि अप्पेगइया जाव[3] पाय-रय-रेणु-गुंडियं करेंति। तं सेयं खलु मम कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव[4] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते समणं भगवं महावीरं आपुच्छित्ता पुणरवि अगारमज्झे आवसित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेसि, संपेहेत्ता अट्ट-दुहट्ट-वसट्ट-माणसगए[5] •निरयपडिरूवियं च णं तं° रयणिं खवेसि, खवेत्ता जेणामेव अहं तेणामेव हव्वमागए।

से नूणं मेहा! एस अत्थे समत्थे।

हंता अत्थे समत्थे[6]॥

भगवया सुमेरुप्पभ-भवनिरूवण-पदं

१५६. एवं खलु मेहा! तुमं इओ तच्चे अईए भवग्गहणे वेयड्ढगिरिपायमूले वणयरेहिं निव्वत्तियनामधेज्जे सेए संख-उज्जल-विमल-निम्मल-दहिघण-गोखीर-फेण-रयणियरप्पयासे सत्तुस्सेहे नवायए दसपरिणाहे सत्तंगपइट्ठिए 'सोम-सम्मिए'[7] सुरूवे[8] पुरओ उदग्गे समूसियसिरे सुहासणे पिट्ठओ वराहे अइयाकुच्छी[9] अच्छिद्द-कुच्छी अलंबकुच्छी पलंबलंबोदराहरकरे[10] धणुपट्ठागिति-विसिट्ठपुट्ठे अल्लीण-पमाणजुत्त-वट्टिय-पीवर-गत्तावरे[11] अल्लीण-पमाणजुत्तपुच्छे पडिपुण्ण-सुचारु-कुम्मचलणे पंडुर[12]-सुविसुद्ध-निद्ध-निरुवहय-विसतिनहे छद्दंते सुमेरुप्पभे नाम हत्थिराया होत्था॥

१५७. तत्थ णं तुमं मेहा! बहूहिं हत्थीहि य हत्थिणियाहि य लोट्टएहि य लोट्टियाहि

---

१. सं० पा०—आढायंति°।

२. ना० १।१।१५४।

३. ना० १।१।१५३।

४. ना० १।१।२४।

५. सं पा०—अट्टदुहट्टवसट्टमाणसगए जाव रयणिं।

६. अट्ठे समट्ठे हंता अट्ठे समट्ठे [क्वचित्]।

७. समे सुसंठिए (वृ); सोम-सम्मिए (वृपा)।

८. वृत्तौ नास्ति व्याख्यातः।

९. अतिया° (ग, घ)।

१०. अलंब° (वृ); पलंब° (वृपा)।

११. अतोग्रे वृत्तौ वाचनान्तरस्य निर्देशोस्ति—अभ्युद्गत-मुकुल-मल्लिका-धवलदन्तः, आनामित-चाप-ललित-संवेल्लिताग्रशुंडः। उपाशकदशाया—(२।२८) मिदं विशेषणद्वयं मूलपाठे विद्यते—अब्भुग्गय - मउल-मल्लिया- विमल-धवलदंतं° आणामिय-चाव-ललिय-संवेल्लि-यग्गसोंडं।

१२. पंडर (क, च)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

य कलभएहि य कलभियाहि य सद्धिं संपरिवुडे हत्थिसहस्सनायए देसए पागट्ठी पट्ठवए जूहवई वंदपरिवड्ढए[1], अण्णेसिं च बहूणं एकल्लाणं[2] हत्थिकलभाणं आहेवच्चं[3] •पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणा-ईसर-सेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे° विहरसि ॥

१५८. तए णं तुमं मेहा ! निच्चप्पमत्ते सइं पललिए कंदप्परई मोहणसीले 'अवितण्हे कामभोगतिसिए'[4] बहूहिं हत्थीहि य[5] •हत्थिणियाहि य लोट्टएहि य लोट्टियाहि य कलभएहि य कलभियाहि य सद्धिं°संपरिवुडे वेयड्ढगिरिपायमूले गिरीसु य दरीसु य कुहरेसु य कंदरासु य उज्झरेसु य निज्झरेसु य वियरएसु[6] य गड्डासु य पल्ललेसु य चिल्ललेसु य कडगेसु य कडयपल्ललेसु य तडीसु य वियडीसु य टंकेसु य कूडेसु य सिहरेसु य पब्भारेसु य मंचेसु य मालेसु य काणणेसु य वणेसु य वणसंडेसु य वणराईसु य नदीसु य नदीकच्छेसु य जहेसु य संगमेसु य वावीसु य पोक्खरणीसु[7] य दीहियासु य गुंजालियासु य सरेसु य सरपंतियासु य सरसरपंतियासु य वणयरेहिं दिन्नवियारे बहूहिं हत्थीहि य जाव[8] सद्धिं संपरिवुडे बहुविहतरुपल्लव[9]-पउरपाणियतणे[10] निब्भए निरुव्विग्गे सुहंसुहेणं विहरसि ॥

१५९. तए णं तुमं मेहा—अण्णया[11] कयाइ पाउस-वरिसारत्त-सरद[12]-हेमंत-वसंतेसु कमेण पंचसु उऊसु समइक्कंतेसु गिम्हकालसमयंसि जेट्ठामूले मासे पायवघंससमुट्ठिएणं सुक्कतण-पत्त-कयवर-मारुय-संजोगदीविएणं महाभयंकरेणं[13] हुयवहेणं वणदव-जाल[14]-संपलित्तेसु वणंतेसु धूमाउलासु दिसासु महावाय-वेगेणं संघट्टिएसु छिण्णजालेसु आवयमाणेसु पोल्लरुक्खेसु अंतो-अंतो झियायमाणेसु मय-कुहिय-विणट्ठ-किमिय[15]-कद्दम-नईवियरगज्झीणपाणीयंतेसु वणंतेसु भिंगारकदीणकंदिय-रवेसु 'खरफरुस-अणिट्ठ-रिट्ठ-वाहित्त-विद्दुमग्गेसु'[16] दुमेसु तण्हावस-मुक्कपक्ख-पायडियजिब्भतालुय[17]-असंपुडियतुंड-पक्खिसंघेसु ससंतेसु गिम्हुम्ह[18]-

१. परियट्टए (क)।
२. कल्लाणं (ग)।
३. सं० पा०—आहेवच्चं जाव विहरसि।
४. अवितण्हकामतिसिए (क); अवितण्हकामभोगे (ग)।
५. सं० पा०—हत्थीहि य जाव संपरिवुडे।
६. वियरेसु (ख, ग, घ)।
७. पुक्खरिणीसु (क)।
८. ना० १।१।१५७।
९. °पल्लवे (क)।
१०. पाणियतले (क, ग, घ)।
११. अन्नता (ख)।
१२. सरय (ख, ग, घ)।
१३. महाभयकरेणं (क, ख, घ)।
१४. जाला (ख)।
१५. किमि (वृ); किमिय (वृपा)।
१६. खरफरुस-रिट्ठ-वाहित्त-विदुमग्गेसु (वृपा)।
१७. पयडिय° (घ)।
१८. गिम्हउम्ह (ख); गिम्ह (घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उण्हवाय-खरफरुसचंडमारुय-सुक्कतणपत्तकयवरवाउलि-भमंतदित्तसंभंतसावया-उल-मिगतण्हावद्धचिंधपट्टेसु गिरिवरेसु संवट्टइएसु[1] तत्थ-मिय-ससय[2]-सरीसिवेसु[3] अवदालियवयणविवर-निल्लालियग्गजीहे महंततुंबइय-पुण्णकण्णे संकुचिय-थोर-पीवर-करे ऊसिय-नंगूले पीणाइय[4]-विरसरडिय-सद्देणं फोडयंतेव अंबरतलं, पायदद्दरएणं कंपयंतेव मेइणितलं, विणिम्मुयमाणे य सीयरं[5], सव्वओ समंता वल्लिवियाणाइं छिंदमाणे, रुक्खसहस्साइं तत्थ सुबहूणि नोल्लयंते[6], विणट्ठरट्ठेव्व नरवरिंदे, वायाइद्धेव्व पोए, मंडलवाएव्व परिब्भमंते, अभिक्खणं-अभिक्खणं लिंडनियरं पमुंचमाणे-पमुंचमाणे बहूहिं हत्थीहि य जाव[7] सद्धिं दिसोदिसिं विप्पलाइत्था ॥

१६०. तत्थ णं तुमं मेहा ! जुण्णे जरा-जज्जरिय-देहे आउरे झंझिए[8] पिवासिए दुब्बले किलंते नट्ठसुइए मूढदिसाए सयाओ जूहाओ विप्पहूणे[9] वणदवजालापरद्धे[10] उण्हेण य तण्हाए य छुहाए य परब्भाहए समाणे भीए तत्थे तसिए उव्विग्गे संजायभए सव्वओ समंता आधावमाणे परिधावमाणे एगं च णं महं सरं अप्पोदगं[11] पंकबहुलं अतित्थेणं[12] पाणियपाए ओइण्णे ।

तत्थ णं तुमं मेहा ! तीरमइगए पाणियं असंपत्ते अंतरा चेव सेयंसि विसण्णे ।

तत्थ णं तुमं मेहा ! पाणियं पाइस्सामि त्ति कट्टु हत्थं पसारेसि । से वि य ते हत्थे उदगं न पावइ । तए णं तुमं मेहा ! पुणरवि कायं पच्चुद्धरिस्सामि त्ति कट्टु बलियतरायं पंकंसि खुत्ते ॥

१६१. तए णं तुमं मेहा ! अण्णया कयाइ एगे चिरनिज्जूढए गयवरजुवाणए सगाओ जूहाओ कर-चरण-दंत-मुसलप्पहारेहिं विप्परद्धे समाणे तं चेव महद्दहं पाणीयपाए समोयरइ । तए णं से कलभए तुमं पासइ, पासित्ता तं पुव्ववेरं सुमरइ, सुमरित्ता आसुरत्ते[13] रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसेमाणे जेणेव तुमं तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तुमं तिक्खेहिं दंतमुसलेहिं तिक्खुत्तो पिट्ठओ 'उट्ठु-

---

१. संवट्टएसु (ग) ।
२. पसय (ख, ग, घ, वृ); अनुयोगद्वारवृत्तौ पाठान्तररूपेण 'पसय' शब्दः प्राप्यते—पसयस्तु—आटविको द्विखुरः चतुष्पदविशेषः । प्रस्तुतसूत्रस्य वृत्तावपि इत्थमेव व्याख्यातमस्ति—प्रसयाश्चाटव्यचतुष्पदविशेषाः ।
३. सिरीसवेसु (ख, ग) ।
४. पिणाइय (ख); पेणाइय (ग) ।
५. सीइरं (क); सीयारं (ख०) ।
६. नोल्लवते (ग) ।
७. ना० १।१।१५७ ।
८. ज्झुसिए (क, घ); जुंजिए (ग); 'झुसियं' बुभुक्षितमित्यर्थः (अंतगडवृत्ति ३।८) ।
९. विप्पहीणे (क) ।
१०. °वरद्धे (क); °परद्धे (ख) ।
११. अप्पोययं (ख) ।
१२. अतित्थणं (ख, ग) ।
१३. आसुरुत्ते (क, ख) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भइ, उट्ठुभित्ता[1] पुव्वं[2] वेरं निज्जाएइ, निज्जाएत्ता हट्ठतुट्ठे पाणीयं 'पिबइ, पिबित्ता'[3] जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ।।

१६२. तए णं तव मेहा ! सरीरगंसि वेयणा पाउब्भवित्था—उज्जला विउला[4] कक्खडा[5] •पगाढा चंडा दुक्खा° दुरहियासा । पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाह-वक्कंतीए यावि विहरित्था ।

भगवया मेरुप्पभ-भवनिरूवण-पदं

१६३. तए णं तुमं मेहा ! तं उज्जलं[6] •विउलं कक्खडं पगाढं चंडं दुक्खं° दुरहियासं सत्तराइंदियं वेयणं वेदेसि, सवीसं वाससयं परमाउयं पालइत्ता अट्ट-'दुहट्ट-वसट्टे'[7] कालमासे कालं किच्चा इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे दाहिणड्ढभरहे गंगाए महानईए दाहिणे कूले विंझगिरिपायमूले एगेणं मत्तवरगंधहत्थिणा एगाए गयवरकरेणूए कुच्छिंसि गयकलभए जणिए ।।

१६४. तए णं सा गयकलभिया नवण्हं मासाणं वसंतमासंसि[8] तुमं पयाया ।।

१६५. तए णं तुमं मेहा ! गब्भवासाओ विप्पमुक्के समाणे गयकलभए यावि होत्था—रत्तुप्पल-रत्तसूमालए जासुमणाऽरत्तपालियत्तय[9]-लक्खारस-सरसकुंकुम-संझब्भरागवण्णे[10], इट्ठे नियगस्स जूहवइणो[11], गणियार[12]-कणेरु[13]-कोत्थ-हत्थी अणेगहत्थिसयसंपरिवुडे रम्मेसु गिरिकाणणेसु सुहंसुहेणं विहरसि ।।

१६६. तए णं तुमं मेहा ! उम्मुक्कबालभावे जोव्वणगमणुप्पत्ते जूहवइणा कालधम्मुणा संजुत्तेणं तं जूहं सयमेव पडिवज्जसि ।।

१६७. तए णं तुमं मेहा ! वणयरेहिं निव्वत्तियनामधेज्जे[14] •सत्तुस्सेहे नवायए दसपरि-णाहे सत्तंगपइट्ठिए सोम-सम्मिए सुरूवे पुरओ उदग्गे समूसियसिरे सुहासणे पिट्ठओ वराहे अइयाकुच्छी अच्छिद्दकुच्छी अलंबकुच्छी पलंबलंबोदराहरकरे धणुपट्ठागिति-विसिट्ठपुट्ठे अल्लीण-पमाणजुत्त-वट्टिय-पीवर-गत्तावरे अल्लीण-

---

१. उट्ठुभइ २ (क) ।
२. पुव्व (ख, घ) ।
३. पियइ २ (क, ख, घ) ।
४. तिउला विउला (ख); तिउला (वृपा) ।
५. सं० पा०—कक्खडा जाव दुरहियासा ।
६. सं० पा०—उज्जलं जाव दुरहियासं ।
७. वसट्ट-दुहट्टे (क, ख, ग, वृ) ।
८. °मासम्मि (क); °मासे (ग) ।
९. पालियात्तय (क, घ); पारिजत्तय (क्व०) ।
१०. °संझराग° (क) ।
११. °वइणा (ग) ।
१२. गणियायार (घ) ।
१३. करेणु (घ) ।
१४. सं० पा०—निव्वत्तियनामधेज्जे जाव चाउदंते । इह यावत् करणेन यद्यपि समग्रः पूर्वोक्तो हस्तिवर्णकः सूचितस्तथापि श्वेततावर्जो द्रष्टव्यः, इह रक्तस्य तस्य वर्णितत्वात् । अतएवाग्रे सत्तुस्सेहे इत्यादिक-मतिदेशं वक्ष्यति (वृ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पमाणजुत्तपुच्छे पडिपुण्ण-सुचारु-कुम्मचलणे पंडुर-सुविसुद्ध-निद्ध-निरुवहय-विसतिनहे° चउदंते मेरुप्पभे हत्थिरयणे होत्था[1]। तत्थ णं तुमं मेहा! सत्तसइयस्स जूहस्स आहेवच्चं[2] •पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणा-ईसर-सेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे° अभिरमेत्था ॥

१६८. तए णं तुमं मेहा! अण्णया कयाइ गिम्हकालसमयंसि जेट्ठामूले [मासे पायव-घंससमुट्ठिएणं सुक्कतण-पत्त-कयवर-मारुय-संजोगदीविएणं महाभयंकरेणं हुयवहेणं?][3] वणदव-जाला-पलित्तेसु वणंतेसु धूमाउलासु दिसासु जाव[4] मंडलवाएव्व परिब्भमंते भीए तत्थे[5] •तसिए उव्विग्गे° संजायभए बहूहिं हत्थीहि य[6] •हत्थिणियाहि य लोट्टएहि य लोट्टियाहि य कलभएहि य कलभि-याहि य सद्धिं संपरिवुडे सव्वओ समंता दिसोदिसिं विप्पलाइत्था ॥

१६९. तए णं तव मेहा! तं वणदवं पासित्ता अयमेयारूवे अज्झत्थिए[7] •चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—कहि णं मन्ने मए अयमेयारूवे अग्गिसंभमे[8] अणुभूयपुव्वे?

१७०. तए णं तव मेहा! लेस्साहिं विसुज्झमाणीहिं अज्झवसाणेणं सोहणेणं सुभेणं परिणामेणं तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं ईहा-पूह-मग्गण-गवेसणं करेमाणस्स सन्निपुव्वे जाईसरणे समुप्पज्जित्था ॥

१७१. तए णं तुमं मेहा! एयमट्ठं सम्मं[9] अभिसमेसि—एवं खलु मया[10] अईए दोच्चे भवग्गहणे इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे वेयड्ढगिरिपायमूले जाव[11] सुमेरुप्पभे नाम हत्थिराया होत्था। तत्थ णं मया[12] अयमेयारूवे अग्गिसंभमे[13] समणुभूए ॥

१७२. तए णं तुमं मेहा! तस्सेव दिवसस्स पच्चावरण्हकालसमयंसि नियएणं जूहेणं सद्धिं समण्णागए यावि होत्था ॥

१७३. तए णं तुमं मेहा! सत्तुस्सेहे जाव[14] सन्निजाईसरणे चउदंते मेरुप्पभे नामं हत्थी होत्था ॥

---

१. होत्था। सत्तगपइट्ठिए तहेव जाव पडिरूवे (क, घ)। यत् पुनरिह दृश्यते—सत्तंगेत्यादि तद् वाचनान्तरवर्णकापेक्षं कुलिखितमिति (वृ)।
२. सं० पा०—आहेवच्चं जाव अभिरमेत्था।
३. १५९ सूत्रस्य वर्णनपद्धत्यासौ पाठोऽत्र युज्यते।
४. ना० १।१।१५६।
५. सं० पा०—तत्थे जाव संजायभए।
६. सं० पा०—हत्थीहि य जाव कलभियाहि।
७. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।
८. °संभवे (ख, ग)।
९. × (ग)।
१०. मता (ख)।
११. ना० १।१।१५६।
१२. महया (क, ख, ग); एतत् पदं अशुद्धं दृश्यते।
१३. °संभवे (घ)।
१४. ना० १।१।१६७।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मेरुप्पभेण मंडलनिम्माणपदं

१७४. तए णं तुज्झं मेहा ! अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव[1] समुप्पज्जित्था—सेयं खलु मम इयाणिं गंगाए महानईए दाहिणिल्लंसि कूलंसि विंझगिरिपायमूले 'दवग्गि-संताणकारणट्ठा'[2] सएणं जूहेणं महइमहालयं मंडलं घाइत्तए[3] त्ति कट्टु एवं संपेहेसि, संपेहेत्ता सुहंसुहेणं विहरसि ॥

१७५. तए णं तुमं मेहा ! अण्णया कयाइ पढमपाउसंसि[4] महावुट्ठिकायंसि सन्निवयंसि गंगाए महानईए अदूरसामंते बहूहिं हत्थीहि य जाव[5] कलभियाहि य सत्तहि य हत्थिसएहिं संपरिवुडे एगं महं जोयणपरिमंडलं महइमहालयं मंडलं घाएसि—जं तत्थ तणं वा पत्तं वा कट्ठं वा कंटए वा लया वा वल्ली वा खाणुं वा रुक्खे वा खुवे वा, तं सव्वं तिक्खुत्तो[6] आहुणिय-आहुणिय पाएणं उद्ववेसि,[7] हत्थेणं गिण्हसि, एगंते एडेसि ॥

१७६. तए णं तुमं मेहा ! तस्सेव मंडलस्स अदूरसामंते गंगाए महानईए दाहिणिल्ले कूले विंझगिरिपायमूले गिरीसु य जाव[8] सुहंसुहेणं विहरसि ॥

१७७. तए णं तुमं मेहा ! अण्णया कयाइ मज्झिमए वरिसारत्तंसि महावुट्ठिकायंसि[9] सन्निवइयंसि जेणेव से मंडले तेणेव उवागच्छसि, उवागच्छित्ता दोच्चं पि 'मंडलघायं करेसि'[10] ।

एवं—चरिमवरिसारत्तंसि[11] महावुट्ठिकायंसि सन्निवयमाणंसि जेणेव से मंडले तेणेव उवागच्छसि, उवागच्छित्ता तच्चं पि मंडलघायं करेसि[12] जाव[13] सुहंसुहेणं विहरसि ॥

दवग्गिभीतसावयाणं मंडलपवेस-पदं

१७८. [14]तए णं तुमं मेहा ! अण्णया कयाइ कमेण पंचसु उऊसु समइक्कंतेसु

---

१. ना० १।१।१६६ ।
२. वणदवग्गिसंताण° (क); दवग्गिसंजाय° (ख, ग, घ); दवग्गिसंताण° (वृपा) ।
४. घातए (ख) ।
४. °पाउसे (ग); °पाउसम्मि (घ) ।
५. ना० १।१।१५७ ।
६. × (ग, घ) ।
७. उद्धवेसि (क); उद्धरेसि (ख, ग); उवट्ठेसि (घ); उद्धवेसित्ति उद्धरसि (वृ) ।
८. ना० १।१।१५८ ।
९. महाविट्ठि° (क, ख) ।
१०. तं मंडलं घाएसि (क, ग, घ) ।
११. °वासारत्तंसि (ख) ।
१२. करेसि, जं तत्थ तणं वा जाव (क, ख, ग, घ); गमान्तरप्रसंगे वृत्तिकारेण 'तच्चं पि मंडलघायं करेसि जाव सुहंसुहेणं विहरसि'—इति पाठः उद्धृतोस्ति, तस्याधारेणासौ पाठोत्र स्वीकृतः ।
१३. ना० १।१।१७५,१७६ ।
१४. प्रथमो गमः पादटिप्पणे विन्यस्तोस्ति, द्वितीयश्च मूलपाठे रक्षितोऽस्ति । वृत्तिकृता द्वितीयगमस्य गमान्तरत्वेन उल्लेखः कृतोस्ति, यथा—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गिम्हकालसमयंसि जेट्ठामूले मासे पायव-घंससमुट्ठिएणं[1] जाव[2] संवट्टइएसु मियपसुपंखिसरीसिवेसु[3] दिसोदिसिं विप्पलायमाणेसु तेहिं बहूहिं हत्थीहि य[4] सद्धिं जेणेव से मंडले तेणेव पहारेत्थ गमणाए।

यत् पुनः 'तए णं तुमं मेहा अण्णया कयाइ कमेणं पंचसु' इत्यादि दृश्यते, तद् गमान्तरं मन्यामहे (वृ)

आदर्शेषु गमद्वयं लिखितमस्ति। द्वितीयो गमः पूर्ववर्ति १५९ सूत्रस्य वर्णनेन सादृश्यं गच्छति, तेन तस्यैव मूले सन्निवेशः कृतः। प्रथमो गमः इत्थमस्ति—

अह मेहा! तुमं गइंदभावम्मि वट्टमाणो कमेणं नलिणिवणविहवणकरे हेमंते कुंद-लोद्ध-उद्धत-तुसारपउरम्मि अइक्कंते, अहिणवगिम्हसमयंसि पत्ते वियट्टमाणो वणेसु 'वणकरेणु - विविह - दिन्नकयपसव - घाओ'[1] उउयकुसुम[2]-चामरा[3]-कण्णपूर-परिमंडियाभिरामो मयवस-विगसंत-कडतड-किलिन्न-गंधमदवारिणा सुरभिजणियगंधो करेणुपरिवारिओ उउसमत्त[4]-जणियसोहो काले दिणयरकरपयंडे परिसोसिय-तरुवरसिहर[5]-भीमतरदंसणिज्जे भिंगार-रवंत-भेरवरवे नाणाविहपत्त-कट्ठ-तण-कयवरुद्धुत-पइमारुया-इद्ध-नहयल-दुममाणे[6] वाउलि-दारुणतरे तण्हावस - दोस - दूसिय[7]-भमंत-विविहसावय-समाउले भीमदरिसणिज्जे[8] वट्टंते दारुणम्मि-गिम्हे मारुयवस - पसर - पसरिय - वियंभिएणं अब्भहिय-भीमभेरव-रवप्पगारेणं महुधारा-पडिय-सित्त-उद्धायमाण-धगधगेंत - संदुद्धएणं[9] दित्ततर-सफुलिंगेणं धूममालाउलेण सावयसयंतकरणेणं वणदवेणं जालालोविय[10]-निरुद्धधूमंधकारभीओ आयवालोय[11]-महंततुंबइय-पुण्ण-कण्णो 'आकुंचिय-थोर-पीवरकरो भयवस-भयंत-दित्तनयणो'[12] वेगेण महामेहो व्व वाय-णोल्लिय-महल्लरूवो जेण कओ तेण[13] पुरा दवग्गि-भयभीयहियएणं अवगयतणप्पएसरुक्खो रुक्खोद्देसो दवग्गि-संताणकारणट्ठा[14] 'तेहिं बहूहिं हत्थीहि य सद्धिं'[15] जेणेव मंडले तेणेव पहारेत्थ गमणाए। एक्को ताव एस गमो।

१. संघंस॰ (क, ख, घ)।
२. ना॰ १।१।१५९।
३. १५९ सूत्रे इत्थं पाठरचनास्ति—तस्य-मिय-ससय-सरीसिवेसु।
४. पू॰—ना॰ १।१।१५७।

१. वणरेणुविविहदिन्नकयपंसुघाओ (वृपा)।
२. तुमं कुमुम (घ), कुसुम (वृ), उउयकुसुम (वृपा)।
३. चामर (क्व॰)।
४. ॰समय (क)।
५. ॰सिरिहर (घ, वृ)।
६, दुमगणे (वृपा)।
७ दोसिय (वृ)।
८. ॰दंसणिजे (ख)।
९. सद्दुद्धएणं (वृपा)।
१०. जालालेविय (वृ)।
११. आयवाले (वृ), आयवालोय (वृपा)।
१२. आकुंचियथोरपीवरकराभोयसव्वदिसिभयंतदित्तनयणो (वृपा)।
१३. ते (क, ख, घ)।
१४. कारणत्था (क, ग, घ)।
१५. एतावान् पाठः ख, ग, घ, प्रतिषु नास्ति, केवलं 'क' प्रतावेव विद्यते, वृत्त्यनुमोदितोस्ति तेनास्माभिः स्वीकृतः।

तत्थ णं अण्णे बहवे सीहा य वग्घा य विगा य दीविया य अच्छा य तरच्छा य परासरा[1] य सियाला य विराला य सुणहा य कोला य ससा य कोकंतिया य चित्ता य[2] चिल्लला[3] य पुव्वपविट्ठा अग्गिभयविद्दुया[4] एगयओ बिलधम्मेणं चिट्ठंति ॥

१७९. तए णं तुमं मेहा ! जेणेव से मंडले तेणेव उवागच्छसि, उवागच्छित्ता तेहिं बहूहिं सीहेहि य जाव[5] चिल्ललेहि य एगयओ बिलधम्मेणं चिट्ठसि ॥

मेरुप्पभस्स पादुक्खेव-पदं

१८०. तए णं तुमं[6] मेहा ! पाएणं गत्तं कंडूइस्सामो[7] ति कट्टु पाए उक्खित्ते[8]। तंसि च णं अंतरंसि अण्णेहिं बलवंतेहिं सत्तेहिं पणोलिज्जमाणे[9]-पणोलिज्जमाणे ससए अणुप्पविट्ठे ॥

१८१. तए णं तुमे[10] मेहा ! गायं कंडूइत्ता[11] पुणरवि पायं पडिनिक्खेविस्सामि[12] त्ति कट्टु तं ससयं अणुपविट्ठं पाससि, पासित्ता पाणाणुकंपयाए[13] भूयाणुकंपयाए जीवाणुकंपयाए सत्ताणुकंपयाए से पाए अंतरा[14] चेव संधारिए, नो चेव णं निक्खित्ते ॥

१८२. तए णं तुमं मेहा ! ताए पाणाणुकंपयाए[15] •भूयाणुकंपयाए जीवाणुकंपयाए° सत्ताणुकंपयाए संसारे परित्तीकए, माणुस्साउए निबद्धे ॥

१८३. तए णं से वणदवे अड्ढाइज्जाइं राइंदियाइं तं वणं झामेइ, झामेत्ता निट्ठिए उवरए उवसंते विज्झाए यावि होत्था ॥

---

१. पारासरा (घ)।
२. य चित्तलगा य (ख, ग); य चित्तला य (घ)।
३. चिल्लाला (क)। एतेषां मध्येऽधिकृत-वाचनायां कानिचिन्न दृश्यन्ते।
४. °भयाभिद्दुया (क, ख, घ)।
५. ना० १।१।१७८।
६. तुमं (क, ख, ग, घ)।
७. कडुइ° (ख)।
८. अणुक्खित्ते (क, ग, घ)।
९. पणोल्लिज्ज° (क, ग)।
१०. तुमं (क, ख, ग, घ)।
११. कंडुइत्ता (क. ख)।
१२. निक्खिमिस्सामि (क); निक्खमिस्सामि (ख, ग, घ)।
१३. °कंपाए (ग)।
१४. अंतरे (ग)।
१५. सं० पा०—पाणाणुकंपयाए जाव सत्ताणुकंपयाए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१८४. तए णं ते बहवे सीहा य जाव[1] चिल्लला य तं वणदवं निट्ठियं[2] •उवरयं उवसंतं° विज्झायं पासंति, पासित्ता अग्गिभयविप्पमुक्का तण्हाए य छुहाए य परब्भाहया समाणा तओ मंडलाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता सव्वओ समंता विप्पसरित्था।

१८५. तए णं ते बहवे हत्थी[3] •य हत्थिणीओ य लोट्टया य लोट्टिया य कलभा य कलभिया य तं वणदवं निट्ठियं उवरयं उवसंतं विज्झायं पासंति, पासित्ता अग्गिभयविप्पमुक्का तण्हाए य° छुहाए य परब्भाहया समाणा तओ मंडलाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता दिसोदिसिं विप्पसरित्था।

१८६. तए णं तुमं मेहा! जुण्णे जरा-जज्जरिय-देहे सिढिलवलितय[4]-पिणिद्धगत्ते दुब्बले किलंते जुंजिए पिवासिए अत्थामे अबले अपरक्कमे ठाणुकडे[5] वेगेण विप्पसरिस्सामि त्ति कट्टु पाए पसारेमाणे विज्जुहए विव रययगिरि[6]-पब्भारे धरणितलंसि सव्वंगेहिं सण्णिवइए॥

१८७. तए णं तव मेहा! सरीरगंसि वेयणा पाउब्भूया—उज्जला[7] •विउला कक्खडा पगाढा चंडा दुक्खा दुरहियासा। पित्तज्जरपरिगयसरीरे° दाहवक्कंतीए यावि विहरसि॥

तीय संदब्भे वट्टमाण-तितिक्खोवदेस-पदं

१८८. तए णं तुमं मेहा! तं उज्जलं जाव[8] दुरहियासं तिण्णि राइंदियाइं वेयणं वेएमाणे विहरित्ता एगं वाससयं परमाउं पालइत्ता इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे रायगिहे नयरे सेणियस्स रण्णो धारिणीए देवीए कुच्छिंसि कुमारत्ताए पच्चायाए॥

१८९. तए णं तुमं मेहा! आणुपुव्वेणं गब्भवासाओ निक्खंते[9] समाणे उम्मुक्कबालभावे जोव्वणगमणुप्पत्ते मम अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए। तं जइ ताव तुमे मेहा! तिरिक्खजोणियभावमुवगएणं अपडिलद्ध-सम्मत्तरयण-लंभेणं से पाए पाणाणुकंपयाए[10] •भूयाणुकंपयाए जीवाणुकंपयाए सत्ताणुकंपयाए°

---

१. ना० १।१।१७८।
२. सं० पा०—निट्ठियं जाव विज्झायं।
३. सं० पा०—हत्थी जाव छुहाए।
४. °तया (घ)।
५. ठाणुक्कडे (क); ठाणखंभे (घ)।
६. रेवय० (क्व०); एकस्यां हस्तलिखितवृत्तावपि 'रेवयगिरि' इति पाठो लभ्यते। वृत्तौ 'रययगिरि' पाठस्य पर्यालोचनमपि कृतमस्ति-इह प्राग्भारः ईषदवनतखंड उपमानेनास्य महत्तयैव न वर्णतो रक्तत्वात् तस्य। वाचनान्तरे तु सित एवासाविति (वृ)।
७. सं० पा०—उज्जला जाव दाहवक्कंतीए।
८. ना० १।१।१८७।
९. निक्कंते (ख)।
१०. सं० पा०—पाणाणुकंपयाए जाव अंतरा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अंतरा चेव संधारिए, नो चेव णं निक्खित्ते। किमंग पुण तुमं[1] मेहा! इयाणिं 'विपुलकुलसमुब्भवे णं'[2] निरुवहयसरीर-दंतलद्धपंचिंदिए[3] णं एवं उट्ठाण-बल-वीरिय-पुरिसगार-परक्कमसंजुत्ते णं मम अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए समाणे समणाणं निग्गंथाणं राओ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि वायणाए[4] •पुच्छणाए परियट्टणाए॰ धम्माणुओगचिंताए य उच्चारस्स वा पासवणस्स वा अइगच्छमाणाण य निग्गच्छमाणाण य हत्थसंघट्टणाणि य पायसंघट्टणाणि य[5] •सीससंघट्टणाणि य पोट्टसंघट्टणाणि य कायसंघट्टणाणि य ओलंडणाणि य पोलंडणाणि य पाय॰-रय-रेणु-गुंडणाणि य नो सम्मं सहसि खमसि तितिक्खसि अहियासेसि?

मेहस्स जाइसरण-पदं

१९०. तए णं तस्स मेहस्स अणगारस्स समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म सुभेहिं परिणामेहिं पसत्थेहिं अज्झवसाणेहिं लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं ईहापूह-मग्गण-गवेसणं करेमाणस्स सण्णिपुव्वे जाईसरणे समुप्पण्णे, एयमट्ठं सम्मं अभिसमेइ॥

मेहस्स समप्पणपुव्वं पुणो पव्वज्जा-पदं

१९१. तए णं से मेहे कुमारे समणेणं भगवया महावीरेणं संभारियपुव्वभवे[6] दुगुणाणीयसंवेगे[7] आणंदअंसुपुण्णमुहे[8] हरिसवस[9]-•विसप्पमाण हियए॰ धाराहयकलंबकं पिव समूससियरोमकूवे[10] समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—

अज्जप्पभित्ती णं भंते! मम दो अच्छीणि मोत्तूणं अवसेसे काए समणाणं निग्गंथाणं निसट्ठे त्ति कट्टु पुणरवि समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—

१. तुमे (क, ख, ग, घ)।
२. विपुलकुलसमुद्भवे ण मित्यादौ णकारो वाक्यालंकारे (वृ)।
३. पत्तलद्ध॰ (क, ख, ग, घ, वृपा)।
४. सं॰ पा॰—वायणाए जाव धम्माणुओगचिंताए।
५. सं॰ पा॰—पायसंघट्टणाणि य जाव रयरेणुगुंडणाणि।
६. 'पुव्वजाईसरणे (क, ख, ग, घ, वृ); ॰पुव्वभवे (वृपा); भगवती ११।१७२ सूत्रानुसारेण असौ वृत्तेः पाठभेदो मूले स्वीकृतः।
७. दुगुणाणिय॰ (क, ख, ग, घ)।
८. आणंदयंसु॰ (ख, ग)।
९. सं॰ पा॰—हरिसवस॰। हरिसवसत्ति अनेन हरिसवसविसप्पमाणहियए त्ति द्रष्टव्यम् (वृ)।
१०. समूसविय॰ (क, ख, घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इच्छामि णं भंते ! इयाणिं दोच्चंपि सयमेव पव्वावियं सयमेव मुंडावियं[1] •सयमेव सेहावियं सयमेव सिक्खावियं° सयमेव आयार-गोयरं जायामाया-वत्तियं[2] धम्ममाइक्खियं[3] ।।

१९२. तए णं समणे भगवं महावीरे मेहं कुमारं सयमेव पव्वावेइ[4] •सयमेव मुंडावेइ सयमेव सेहावेइ सयमेव सिक्खावेइ सयमेव आयार-गोयर-विणय-वेणइय-चरण-करण°-जायामायावत्तियं धम्ममाइक्खइ—एवं देवाणुप्पिया ! गंतव्वं, एवं चिट्ठियव्वं, एवं निसीयव्वं, एवं तुयट्टियव्वं, एवं भुंजियव्वं एवं भासियव्वं एवं उट्ठाए[5] उट्ठाय पाणाणं भूयाणं जीवाणं सत्ताणं संजमेणं संजमियव्वं ।।

१९३. तए णं से मेहे समणस्स भगवओ महावीरस्स अयमेयारूवं धम्मियं उवएसं सम्मं पडिच्छइ, पडिच्छित्ता तह गच्छइ तह चिट्ठइ[6] •तह निसीयइ तह तुयट्टइ तह भुंजइ तह भासइ तह उट्ठाए उट्ठाय पाणेहिं भूएहिं जीवेहिं सत्तेहिं° संजमेणं संजमइ ।।

मेहस्स निग्गंठचरिया-पदं

१९४. तए णं से मेहे अणगारे जाए—इरियासमिए[7] •भासासमिए एसणासमिए आयाण-भंड-मत्त-णिक्खेवणासमिए उच्चार-पासवण-खेल-सिंघाण-जल्ल-पारिट्ठावणिआ-समिए मणसमिए वइसमिए कायसमिए मणगुत्ते वइगुत्ते कायगुत्ते गुत्ते गुत्तिंदिए गुत्तबंभयारी चाई लज्जू धन्ने खंतिखमे जिइंदिए सोहिए अणियाणे अप्पुस्सुए अबहिल्लेसे सुसामण्णरए दंते इणमेव निग्गंथं पावयणं पुरओकाउं विहरंति° ।।

१९५. तए णं से मेहे अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स 'तहारूवाणं थेराणं अंतिए'[8] सामाइयमाइयाइं[9] 'एक्कारस अंगाइं'[10] अहिज्जइ, अहिज्जित्ता बहूहिं छट्ठट्ठमदसमदुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं[11] अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।।

मेहस्स भिक्खुपडिमा-पदं

१९६. तए णं समणे भगवं महावीरे रायगिहाओ नयराओ गुणसिलयाओ चेइयाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ।।

---

१. सं० पा०—मुंडावियं जाव सयमेव ।
२. °उत्तियं (क, ख, ग, घ) ।
३. °माइक्खिउं (क, ग, घ) ।
४. सं० पा०—पव्वावेइ जाव जायामाया-वत्तियं ।
५. उट्ठाय (क, ग, घ) ।
६. सं० पा०—चिट्ठइ जाव संजमेणं ।
७. सं० पा० —अणगार-वण्णओ भाणियव्वो । वृत्तावयं पाठः उल्लिखितोस्ति, तत्र 'दंते' इति विशेषणं नास्ति ।
८. अंतिए तहारूवाणं थेराणं (क, ख, ग, घ) । अत्र लेखने 'अंतिए' पदस्य विपर्ययो जातः इति संभाव्यते । (१।१।२०८) सूत्रे गि स्वीकृतपाठवत् पाठो लभ्यते—
९. °माइयाणि (क, ग); सामातियमाइयाणि (ख) ।
१०. °अंगाति (ख); एक्कारसंगाइं (घ) ।
११. °खवणेहिं (ख) । पू०—ना० १।१।२०१ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१९७. तए णं से मेहे अणगारे अण्णया कयाइ समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे मासियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए।
अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेहि ॥

१९८. तए णं से मेहे अणगारे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए[1] समाणे मासियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ।
मासियं भिक्खुपडिमं 'अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं'[2] सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोभेइ तीरेइ किट्टेइ, सम्मं काएणं फासेत्ता पालेत्ता सोभेत्ता तीरेत्ता किट्टेत्ता पुणरवि समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे दोमासियं भिक्खु-पडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए।
अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेहि।
जहा पढमाए अभिलावो तहा दोच्चाए तच्चाए चउत्थाए पंचमाए छम्मासियाए सत्तमासियाए पढमसत्तराइंदियाए दोच्चसत्तराइंदियाए[3] तच्च सत्तराइंदियाए[4] अहोराइयाए[5] एगराइयाए[6] वि ॥

मेहस्स गुणरयणसंवच्छर-पदं

१९९. तए णं से मेहे अणगारे बारस भिक्खुपडिमाओ सम्मं काएणं फासेत्ता पालेत्ता सोभेत्ता तीरेत्ता किट्टेत्ता पुणरवि वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं भंते ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे गुणरयणसंवच्छरं तवोकम्मं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए।
अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेहि ॥

२००. तए णं से मेहे अणगारे पढमं मासं चउत्थं-चउत्थेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं, दिया ठाणुक्कुडुए सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे, रत्तिं वीरासणेणं अवाउडएणं[7]। दोच्चं मासं छट्ठं-छट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं दिया ठाणु-क्कुडुए सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे, रत्तिं वीरासणेणं अवाउडएणं। तच्चं मासं अट्ठमं-अट्ठमेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं, दिया ठाणुक्कुडुए सूराभि-मुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे, रत्तिं वीरासणेणं अवाउडएणं।

---

१. अणुण्णाते (ग)।
२. स्थानाङ्गे (७।१३) एवं पाठो लभ्यते—अहासुत्तं अहाअत्थं अहातच्चं अहामग्गं अहाकप्पं।
३. दोच्चा° (ख); बीया° (घ)।
४. तच्चा° (ख); तीया° (घ)।
५. अहोराइंदियाए (ख, घ)।
६. एगराइंदियाए (ग, घ)।
७. अवाउडतेण (ख); अवाउडेणं (घ); अप्रावृतेन अविद्यमानप्रावरणेन। स एव वा अप्रावृतः णंकारस्त्वलंकारार्थः (वृ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चउत्थं मासं दसमं-दसमेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं, दिया ठाणुक्कुडुए सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे, रत्तिं वीरासणेणं अवाउडएणं ।

पंचमं मासं दुवालसमं-दुवालसमेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं, दिया ठाणुक्कुडुए सूराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे, रत्तिं वीरासणेणं अवाउडएणं ।

एवं एएणं अभिलावेणं छट्ठे चोद्दसमं-चोद्दसमेणं, सत्तमे सोलसमं-सोलसमेणं, अट्ठमे अट्ठारसमं - अट्ठारसमेणं, नवमे वीसइमं-वीसइमेणं, दसमे बावीसइमं-बावीसइमेणं, एक्कारसमे चउव्वीसइमं-चउव्वीसइमेणं, बारसमे छव्वीसइमं-छव्वीसइमेणं, तेरसमे अट्ठावीसइमं-अट्ठावीसइमेणं, चोद्दसमे तीसइमं-तीसइमेणं, पंचदसमे बत्तीसइमं-बत्तीसइमेणं, सोलसमे चउत्तीसइमं-चउत्तीसइमेणं—अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं, दिया ठाणुक्कुडुए सुराभिमुहे आयावणभूमीए आयावेमाणे, वीरासणेण[1] अवाउडएण य ॥

२०१. तए णं से मेहे अणगारे गुणरयणसंवच्छरं तवोकम्मं अहासुत्तं[2] •अहाकप्पं अहामग्गं° सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोभेइ तीरेइ किट्टेइ अहासुत्तं अहाकप्पं[3] •अहामग्गं सम्मं काएणं फासेत्ता पालेत्ता सोभेत्ता तीरेत्ता° किट्टेत्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता बहूहिं छट्ठट्ठमदसमदुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं विचित्तेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

मेहस्स सरीरदसा-पदं

२०२. तए णं से मेहे अणगारे तेणं 'ओरालेणं[4] विपुलेणं सस्सिरीएणं पयत्तेणं पग्गहिएणं[5] कल्लाणेणं सिवेणं धन्नेणं मंगल्लेणं उदग्गेणं उदारेणं उत्तमेणं महाणुभावेणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे[6] निम्मंसे किडिकिडियाभूए अट्ठिचम्मावणद्धे किसे धमणिसंतए जाए यावि होत्था—जीवंजीवेणं गच्छइ, जीवंजीवेणं चिट्ठइ, भासं भासित्ता गिलाइ, भासं भासमाणे गिलाइ, भासं भासिस्सामि त्ति गिलाइ । से जहानामए इंगालसगडिया इ वा कट्ठसगडिया इ वा पत्तसगडिया इ वा तिलंडासगडिया[7] इ वा एरंडसगडिया[8] इ वा[9] उण्हे दिन्ना सुक्का[10] समाणी

---

१. वीरासणेण य (क, ख, ग) ।
२. सं० पा०—अहासुत्तं जाव सम्मं ।
३. सं० पा०—अहाकप्पं जाव किट्टेत्ता ।
४. उरालेणं (ख, ग, घ) ।
५. परिग्गहिएणं (क, ख) ।
६. भुक्खे (क, ग, घ) ।
७. तिलसगडिया (ग) ।
८. एरंडकट्ठसगडिया (ख) ।
९. भगवती (२।१) सूत्रे स्कन्दकवर्णके कानिचित् पदानि अधिकानि विपर्ययं प्राप्तानि च वर्तन्ते, यथा—ओरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहिएणं कल्लाणेणं सिवेणं धण्णेणं मंगल्लेणं सस्सिरिएणं उदग्गेणं उदत्तेण उत्तमेणं उदारेणं महाणुभागेणं० । से जहा नामए कट्ठसगडिया इ वा पत्तसगडिया इ वा पत्ततिलभंडसगडिया इ वा एरंडकट्ठसगडिया इ वा इंगालसगडिया इ वा।
१०. सुक्खा (ख, ग) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ससद्दं गच्छइ, ससद्दं चिट्ठइ, एवामेव मेहे अणगारे ससद्दं गच्छइ, ससद्दं चिट्ठइ, उवचिए तवेणं, अवचिए मंससोणिएणं, हुयासणे इव भासरासिपरिच्छन्ने तवेणं तेएणं तवतेयसिरीए अईव-अईव उवसोभेमाणे-उवसोभेमाणे चिट्ठइ ॥

मेहस्स विपुलपव्वए अणसण-पदं

२०३. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे आइगरे तित्थगरे जाव[1] पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे जेणामेव रायगिहे नयरे जेणामेव गुणसिलए चेइए तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

२०४. तए णं तस्स मेहस्स अणगारस्स राओ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए[2] •चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे॰ समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं इमेणं ओरालेणं[3]•विपुलेणं सस्सिरीएणं पयत्तेणं पग्गहिएणं कल्लाणेणं सिवेणं धन्नेणं मंगल्लेणं उदग्गेणं उदारेणं उत्तमेणं महाणुभावेणं तवोकम्मेणं सुक्के लुक्खे निम्मंसे किडिकिडियाभूए अट्ठिचम्मा-वणद्धे किसे धमणिसंतए जाए यावि होत्था—जीवंजीवेणं गच्छामि, जीवं-जीवेणं चिट्ठामि, भासं भासित्ता गिलामि, भासं भासमाणे गिलामि॰, भासं भासिस्सामि त्ति गिलामि। तं अत्थि ता[4] मे उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिस-कार[5]-परक्कमे सद्धा-धिइ-संवेगे, तं जावता मे अत्थि उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसकार[6]-परक्कमे सद्धा-धिइ-संवेगे, जाव य मे धम्मायरिए धम्मोवएसए समणे भगवं महावीरे जिणे सुहत्थी विहरइ, ताव ता[7] मे सेयं कल्लं पाउप्प-भायाए रयणीए जाव[8] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते[9] समणं भगवं महावीरं वंदित्ता नमंसित्ता समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणु-ण्णायस्स समाणस्स सयमेव पंच महव्वयाइं आरुहित्ता गोयमादीए समणे निग्गंथे निग्गंथीओ य खामेत्ता तहारूवेहिं कडाईहिं थेरेहिं सद्धिं विउलं पव्वयं सणियं-सणियं दुरुहित्ता सयमेव मेहघणसण्णिगासं पुढविसिलापट्टयं पडिलेहित्ता संलेहणा-झूसणा-झूसियस्स भत्तपाण-पडियाइक्खियस्स पाओवगयस्स कालं अणवकंखमाणस्स विहरित्तए—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव[10] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते जेणेव समणे भगवं

---

१. ओ० १६।
२. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।
३. सं० पा०—उरालेणं तहेव जाव भासं।
४. तामेव (ख, ग)।
५. पुरिसक्कार (क, घ)।
६. पुरिसगार (क)।
७. ताव (क, ग, घ); तावताव (वृ)।
८. ना० १।१।२४।
९. जलते सूरिए (ख, ग)।
१०. ना० १।१।२४।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता नच्चासण्णे नाइदूरे सुस्सूसमाणे नमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलिउडे[1] पज्जुवासइ ॥

२०५. 'मेहा इ !'[2] समणे भगवं महावीरे मेहं अणगारं एवं वयासी—से नूणं तव मेहा ! राओ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए[3] °चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं इमेणं ओरालेणं[4] तवोकम्मेणं सुक्के जाव[5] जेणेव[6] इहं तेणेव हव्वमागए।

से नूणं मेहा ! अट्ठे समट्ठे ?

हंता अत्थि ।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेहि ॥

२०६. तए णं से मेहे अणगारे समणेणं भगवया महावीरेणं अब्भणुण्णाए समाणे हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिए जाव[7] हरिसवस-विसप्पमाणहियए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता सयमेव पंच महव्वयाइं आरुहेइ[8], आरुहेत्ता गोयमादीए[9] समणे निग्गंथे निग्गंथीओ य खामेइ, खामेत्ता तहारूवेहिं कडादीहिं थेरेहिं सद्धिं विपुलं पव्वयं सणियं-सणियं दुरुहइ, दुरुहित्ता सयमेव मेहघणसण्णिगासं[10] पुढविसिलापट्टयं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता दब्भसंथारगं संथरइ, संथरित्ता दब्भसंथारगं दुरुहइ, दुरुहित्ता पुरत्थाभिमुहे संपलियंकनिसण्णे करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी— नमोत्थु णं अरहंताणं जाव[11] सिद्धिगइनामधेज्जं ठाणं संपत्ताणं । नमोत्थु णं समणस्स जाव सिद्धिगइनामधेज्जं ठाणं संपाविउकामस्स मम धम्मायरियस्स । वंदामि णं भगवंतं तत्थगयं इहगए, पासउ मे भगवं तत्थगए इहगयं ति कट्टु वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—पुव्विं पि य णं मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए सव्वे पाणाइवाए पच्चक्खाए, मुसावाए अदिण्णादाणे मेहुणे परिग्गहे कोहे माणे माया लोहे पेज्जे दोसे कलहे

---

१. पंजलियडे (ख); अंजलियडे (घ)।
२. मेह त्ति (ख); मेघाइ (घ)।
३. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।
४. ना०—१।१।२०४।
५. पू० ना० १।१।२०४।
६. अत्र १।१।२०४ सूत्रस्य 'जेणेव समणे भगवं महावीरे' अतः पूर्ववर्ती पाठः समर्पितोस्ति।
७. ना० १।१।१९।
८. आरुभेइ (ख); आरुहति (घ)।
९. गोयमादि (क, ख, ग, घ)।
१०. अतोग्रे १।५।८३ सूत्रे 'देवसण्णिवायं' इति पदं विद्यते।
११. ओ० सू० २१।

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

अब्भक्खाणे पेसुण्णे परपरिवाए अरइरई मायामोसे मिच्छादंसणसल्ले-पच्चक्खाए ।

इयाणिं पि णं अहं तस्सेव अंतिए सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि जाव मिच्छा-दंसणसल्लं पच्चक्खामि, सव्वं असण-पाण-खाइम-साइमं चउव्विहंपि आहारं पच्चक्खामि जावज्जीवाए ।

जंपि य इमं सरीरं इट्ठं कंतं पियं[1] •मणुण्णं मणामं थेज्जं वेस्सासियं सम्मयं बहुमयं अणुमयं भंडकरंडगसमाणं मा णं सीयं मा णं उण्हं मा णं खुहा मा णं पिवासा मा णं चोरा मा णं वाला मा णं दंसा मा णं मसया मा णं वाइय-पित्तिय-संभिय-सण्णिवाइय[2]° विविहा रोगायंका परीसहोवसग्गा 'फुसंतीति कट्टु'[3] एयं[4] पि य णं चरमेहिं[5] ऊसास-नीसासेहिं वोसिरामि त्ति कट्टु संलेहणा-झूसणा-झूसिए[6] भत्तपाण-पडियाइक्खिए पाओवगए कालं अणवकंखमाणे विहरइ ॥

२०७. तए णं ते थेरा भगवंतो मेहस्स अणगारस्स अगिलाए वेयावडियं करेंति ॥

मेहस्स समाहिमरण-पदं

२०८. तए णं से मेहे अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं[7] एक्कारसअंगाइं अहिज्जित्ता, बहुपडिपुण्णाइं दुवालस-वरिसाइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता, मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झोसेत्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेएत्ता, आलोइय-पडिक्कंते उद्धियसल्ले समाहिपत्ते अणुपुव्वेणं कालगए ॥

थेरेहिं मेहस्स आयारभंडसमप्पण-पदं

२०९. तए णं ते थेरा भगवंतो मेहं अणगारं अणुपुव्वेणं कालगयं पासंति, पासित्ता परिनेव्वाणवत्तियं[8] काउस्सग्गं करेंति, करेत्ता मेहस्स आयारभंडगं गेण्हंति, विउलाओ पव्वयाओ सणियं-सणियं 'पच्चोरुहंति, पच्चोरुहित्ता'[9] जेणामेव गुणसिलए चेइए, जेणामेव समणे भगवं महावीरे, तेणामेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं

१. सं० पा०—पियं जाव विविहा ।
२. इह प्रथमाबहुवचनलोपो दृश्यः (भ० वृ) ।
३. फुसंति चिट्ठंति (ग, घ) ।
४. एवं (क, ख, ग, घ) ।
५. चरिमेहिं (घ) ।
६. संलेखनास्पर्शकः (वृ); संलेहणाझूसणाझूसिए (वृपा) ।
७. सामाइयाइं (ख) ।
८. परिनिव्वाणवत्तियं (ख, घ); परिनिव्वाण-पत्तियं (ग) ।
९. पच्चोरुभंति २ (क) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वयासी—एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी मेहे नामं अणगारे पगइभद्दए[1] •पगइउवसंते पगइपयणुकोहमाणमायालोभे मिउमद्दवसंपण्णे अल्लीणे[2]° विणीए, से णं देवाणुप्पिएहिं अब्भणुण्णाए समाणे गोयमाइए समणे निग्गंथे निग्गंथीओ य खामेत्ता अम्हेहिं सद्धिं विपुलं पव्वयं सणियं-सणियं दुरुहइ, सयमेवमेघघणसण्णिगासं पुढविसिलं पडिलेहेइ[3], भत्तपाण-पडियाइक्खिए अणुपुव्वेणं कालगए।

एस णं देवाणुप्पिया ! मेहस्स अणगारस्स आयारभंडए ।।

गोयमपुच्छाए भगवओ उत्तर-पदं

२१०. भंते ! त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पियाणं अंतेवासी मेहे नामं अणगारे से णं भंते ! मेहे अणगारे कालमासे कालं किच्चा कहिं गए ? कहिं उववण्णे ?

२११. गोयमा ! इ[4] समणे भगवं महावीरे गोयमं एवं वयासी—एवं खलु गोयमा ! मम अंतेवासी मेहे नामं अणगारे पगइभद्दए जाव[5] विणीए, से णं तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं[6] एक्कारस अंगाइं अहिज्जित्ता, बारस भिक्खु-पडिमाओ गुणरयण-संवच्छरं तवोकम्मं काएणं फासेत्ता जाव[7] किट्टेत्ता, मए अब्भणुण्णाए समाणे गोयमाइ थेरे खामेत्ता, तहारूवेहिं[8] •कडादीहिं थेरेहिं सद्धिं° विपुलं पव्वयं [सणियं-सणियं ?] दुरुहित्ता[9], दब्भसंथारगं, संथरित्ता दब्भसंथारोवगए सयमेव पंचमहव्वए उच्चारेत्ता, बारस वासाइं सामण्णपरि-यागं पाउणित्ता, मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झूसित्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता आलोइय-पडिक्कंते उद्धियसल्ले समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा उड्ढं चंदिम-सूर-गहगण-नक्खत्त-तारारूवाणं बहूइं जोयणाइं बहूइं जोयणसयाइं बहूइं जोयणसहस्साइं बहूइं जोयणसयसहस्साइं बहूओ जोयणकोडीओ बहूओ जोयणकोडाकोडीओ उड्ढं दूरं उप्पइत्ता सोहम्मीसाण-सणंकुमार-माहिंद-बंभ-[10] लंतग-महासुक्क-सहस्साराणय-पाणयारणच्चुए तिण्णि य अट्ठारसुत्तरे गेवेज्ज-विमाणवाससए वीईवइत्ता विजए महाविमाणे देवत्ताए उववण्णे।

---

१. सं० पा०—पगइभद्दए जाव विणीए।

२. प्रस्तुतसूत्रस्य वृत्तौ 'अल्लीणे' इत्यस्य अनन्तरं 'भद्दए' इति पाठोऽस्ति।

३. अत्र पुनर्लेखने अपूर्णो पाठोऽस्ति। अस्य पूर्त्तये द्रष्टव्यं १।१।२०६ सूत्रम्।

४. दि (क, ख, ग, घ)।

५. ना० १।१।२०६।

६. सामाइयाइं (ख)।

७. ना० १।१।२०१।

८. सं० पा०—तहारूवेहिं जाव विपुलं।

९. अत्र पुनर्लेखने अपूर्णो पाठोऽस्ति। अस्य पूर्त्तये द्रष्टव्यं १।१।२०६ सूत्रम्।

१०. बंभलोक (घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। तत्थ णं मेहस्स वि देवस्स तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई[1]॥

२१२. एस णं भंते ! मेहे देवे ताओ देवलोयाओ आउक्खएणं ठिइक्खएणं भवक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गच्छिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ?

गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ परिनिव्वाहिइ सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ॥

निक्खेव-पदं

२१३. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं आइगरेणं तित्थगरेणं जाव[2] सिद्धिगइनामधेज्जं ठाणं संपत्तेणं अप्पोलंभ[3]-निमित्तं पढमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते।

—त्ति बेमि।

वृत्तिकृता समुद्धृता निगमनगाथा—

महुरेहिं निउणेहिं, वयणेहिं चोययंति आयरिया।
सीसे कहिंचि खलिए, जह मेहमुणिं महावीरो॥१॥

१. × (क, ख, ग)।
२. ना० १।१।७।
३. अप्पोपालंभ (क्व०); एकस्यां वृत्तिप्रतावपि 'अप्पोपालंभ' इति लिखितमस्ति।

बीयं अज्झयणं

संघाडे

उक्खेव-पदं

१. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं पढमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, बितियस्स णं भंते ! नायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?

२. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नयरे होत्था — वण्णओ[1] ॥

३. तस्स[2] णं रायगिहस्स नयरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए गुणसिलए नामं चेइए होत्था वण्णओ[3] ।

४. तस्स णं गुणसिलयस्स चेइयस्स अदूरसामंते, एत्थ णं महं एगं जिण्णुज्जाणे यावि होत्था--विणट्ठदेवउल[4]-परिसडियतोरणघरे नाणाविहगुच्छ-गुम्म-लया-वल्लि-वच्छच्छाइए[5] अणेग-वालसय-संकणिज्जे यावि होत्था ॥

५. तस्स णं जिण्णुज्जाणस्स बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं महं एगे भग्गकूवे[6] यावि होत्था ॥

६. तस्स णं भग्गकूवस्स अदूरसामंते, एत्थ णं महं एगे मालुयाकच्छए यावि होत्था --किण्हे किण्होभासे जाव[7] रम्मे महामेहनिउरंबभूए[8] बहूहिं रुक्खेहि य गुच्छेहि य गुम्मेहि य लयाहि य वल्लीहि य तणेहि य कुसेहि[9] य खण्णुएहि[10] य संछण्णे पलिच्छण्णे अंतो झुसिरे बाहिं गंभीरे अणेग-वालसय-संकणिज्जे यावि होत्था ॥

---

१. नगरवण्णओ (क, ग); नगरस्सवण्णओ (ग); ओ० सू० १ ।
२. तत्थ (ग) ।
३. ओ० सू० २-१३ ।
४. विणट्ठदेवउले (ख, घ) ।
५. ०च्छातिए (ग) ।
६. कूवए (क, ख, ग) ।
७. ओ० सू० ४ ।
८. वाचनान्तरे त्विदमधिकं पठ्यते—पत्तिए पुप्फिए फलिए हरियगरेरिज्जमाणे सिरीए अईव-अईव उवसोभेमाणे चिट्ठइ (वृ) ।
९. कुसएहि (क); कुविएहि (वृपा) ।
१०. खाणुएहि (ख); खत्तएहि (घ, वृपा) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धणसत्थवाह-पदं

७. तत्थ णं रायगिहे नयरे धणे नामं सत्थवाहे—अड्ढे दित्ते[1] •वित्थिण्ण[2]-विउल-भवण-सयणासण-जाण-वाहणाइण्णे बहुदासी-दास-गो-महिस-गवेलगप्पभूए बहुधण-बहुजायरूवरयए आओग-पओग-संपउत्ते विच्छड्डिय•-विउल[3]-भत्तपाणे ।।

८. तस्स णं धणस्स सत्थवाहस्स भद्दा[4] नामं भारिया होत्था—सुकुमालपाणिपाया अहीणपडिपुण्ण-पंचिंदियसरीरा लक्खण-वंजण-गुणोववेया माणुम्माण-प्पमाण-पडिपुण्ण-सुजाय-सव्वंगसुंदरंगी ससिसोमागार-कंत-पियदंसणा सुरूवा करयल-परिमिय-तिवलिय[5]-वलियमज्झा[6] कुंडलुल्लिहियगंडलेहा कोमुइ-रयणियर[7]-पडिपुण्ण-सोमवयणा[8] सिंगारागार-चारुवेसा[9] •संगय-गय-हसिय-भणिय-विहिय-विलास-सललिय-संलाव-निउण-जुत्तोवयार-कुसला पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा• पडिरूवा वंझा अवियाउरी जाणुकोप्परमाया यावि होत्था ।।

९. तस्स णं धणस्स सत्थवाहस्स पंथए नामं दासचेडे होत्था—सव्वंगसुंदरंगे मंसो-वचिए बालकीलावणकुसले यावि होत्था ।।

१०. तए णं से धणे सत्थवाहे रायगिहे नयरे बहूणं नगर-निगम[10]-सेट्ठि-सत्थवाहाणं अट्ठारसण्ह य सेणिप्पसेणीणं बहूसु कज्जेसु य कुडुंबेसु य मंतेसु य जाव[11] चक्खु-भूए यावि होत्था। नियगस्स वि य णं कुडुंबस्स बहूसु कज्जेसु य जाव चक्खुभूए यावि होत्था ।।

विजयतक्कर-पदं

११. तत्थ णं रायगिहे नयरे विजए नामं तक्करे होत्था—पावचंडाल-रूवे भीमतररुद्द-कम्मे आरुसिय-दित्त-रत्तनयणे[12] खरफरुस-महल्ल-विगय-बीभच्छदाढिए असंपुडियउट्ठे उद्धय-पइण्ण-लंबंतमुद्धए भमर-राहुवण्ण निरणुक्कोसे निरणुतावे दारुणे पइभए[13] निसंसइए[14] निरणुकंपे अहीव एगंतदिट्ठीए खुरेव एगंतधाराए गिद्धेव आमिसतल्लिच्छे अग्गिमिव सव्वभक्खी जलमिव सव्वग्गाही उक्कंचण-वंचण-माया-नियडि-कूड कवड-साइ-संपओग-बहुले चिरनगरविणट्ठ-दुट्ठसीलायार-

---

१. सं० पा०—दित्ते जाव विउलभत्तपाणे ।
२. विच्छिन्न (ओ० सू० १४) ।
३. पउर (ओ० सू० १४) ।
४. सुभद्दा (ख) ।
५. पसत्थ-तिवली (ओ० सू० १५) ।
६. मज्झा (क, ख, घ) ।
७. रयणियर-विमल (१।१।१७) ।
८. सोमचंदवयणा (ग) ।
९. सं० पा०—चारुवेसा जाव पडिरूवा ।
१०. नियम (क, ग) ।
११. ना० १।१।१६ ।
१२. रत्तयनयणे (क) ।
१३. पतिभते (ग) ।
१४. नेसंसत्तिए (ख); निसंसे (वृपा) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चरित्ते जूयप्पसंगी मज्जप्पसंगी भोज्जप्पसंगी मंसप्पसंगी दारुणे हिययदारए[1] साहसिए संधिच्छेयए उवहिए विस्संभघाई आलीवग[2]-तित्थभेय-लहुहत्थसंपउत्ते परस्स दव्वहरणम्मि निच्चं अणुबद्धे तिव्ववेरे रायगिहस्स नगरस्स बहूणि अइगमणाणि य निग्गमणाणि य दाराणि य अवदाराणि य छिंडीओ य खंडीओ य नगरनिद्धमणाणि य संवट्टणाणि य निव्वट्टणाणि य जूयखलयाणि य पाणागाराणि य वेसागाराणि य तक्करट्ठाणाणि य तक्करघराणि य सिंघाडगाणि य तिगाणि य चउक्काणि य चच्चराणि य नागघराणि य भूयघराणि य जक्खदेउलाणि य सभाणि य पवाणि य पणियसालाणि य सुन्नघराणि य आभोएमाणे मग्गमाणे गवेसमाणे, बहुजणस्स छिद्देसु य विसमेसु य विहुरेसु[3] य वसणेसु य अब्भुदएसु य उस्सवेसु य पसवेसु य तिहीसु य छणेसु य जण्णेसु य पव्वणीसु य मत्तपमत्तस्स य वक्खित्तस्स य वाउलस्स य सुहियस्स य दुहियस्स य विदेसत्थस्स य विप्पवसियस्स य मग्गं च छिद्दं च विरहं[4] च अंतरं च मग्गमाणे गवेसमाणे एवं च णं विहरइ। बहिया वि य णं रायगिहस्स नगरस्स आरामेसु य उज्जाणेसु य वावि-पोक्खरणि-दीहिय-गुंजालिय-सर-सरपंतिय सरसरपंतियासु य जिण्णुज्जाणेसु य भग्गकूवेसु[5] य मालुयाकच्छएसु य सुसाणेसु य 'गिरिकंदरेसु य लेणेसु य'[6] उवट्ठाणेसु य बहुजणस्स छिद्देसु य जाव अंतरं च मग्गमाणे गवेसमाणे एवं च णं विहरइ ॥

भद्दाए संताणमणोरह-पदं

१२. तए णं तीसे भद्दाए भारियाए अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुंबजागरियं जागरमाणीए अयमेयारूवे अज्झत्थिए[7] •चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—अहं धणेणं सत्थवाहेणं सद्धिं बहूणि वासाणि सद्द-फरिस-रस-गंध[8]-रूवाणि माणुस्सगाइं कामभोगाइं पच्चणुब्भवमाणी विहरामि, नो चेव णं अहं दारगं वा दारियं[9] वा पयामि[10]।

तं धण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ[11], •संपुण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयत्थाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयपुण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ, कयलक्खणाओ

---

१. जणहियाकारए (वृपा)।
२. आलियग (क, ख)।
३. विहरेसु (क, ख, घ)।
४. विहरं (ख, ग)।
५. भग्गकूवएसु (क, ख, घ)।
६. °लेणेसु य देवउलेसु य (क); गिरिकंदरलेण (ख, ग, घ)।
७. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।
८. × (क, ग, घ)।
९. दारिगं (क, ख)।
१०. पयायामि (ग)।
११. सं० पा०—अम्मयाओ जाव सुलद्धे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णं ताओ अम्मयाओ, कयविहवाओ णं ताओ अम्मयाओ,° सुलद्धे णं माणुस्सए जम्मजीवियफले तासिं अम्मयाणं, जासिं मण्णे नियगकुच्छिसंभूयाइं थणदुद्ध-लुद्धयाइं महुरसमुल्लावगाइं मम्मणपयंपियाइं थणमूला[1] कक्खदेसभागं अभिसरमाणाइं[2] मुद्धयाइं थणयं पियंति,[3] तओ य कोमलकमलोवमेहिं हत्थेहिं गिण्हिऊणं उच्छंग[4]-निवेसियाणि देंति समुल्लावए पिए सुमहुरे पुणो-पुणो मंजुलप्पभणिए। 'तं णं अहं[5] अधण्णा अपुण्णा अकयलक्खणा एत्तो एगमवि न पत्ता। तं सेयं मम कल्लं पाउप्पभाए रयणीए जाव[6] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते धणं सत्थवाहं आपुच्छित्ता धणेणं सत्थवाहेणं अब्भणुण्णाया समाणी सुबहुं विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेत्ता सुबहुं पुप्फ-वत्थ[7]-गंध-मल्लालंकारं गहाय बहूहिं मित्त-नाइ-नियग सयण संबंधि-परियण-महिलाहिं सद्धिं संपरिवुडा जाइं इमाइं रायगिहस्स नयरस्स बहिया नागाणि य भूयाणि य जक्खाणि य इंदाणि य खंदाणि य रुद्दाणि य सिवाणि य वेसमणाणि य, तत्थ णं बहूणं नागपडिमाण य जाव वेसमणपडिमाण य महरिहं पुप्फच्चणियं करेत्ता जन्नुपायपडियाए एवं वइत्तए[8]—जइ णं अहं[9] देवाणुप्पिया! दारगं वा दारियं वा पयामि[10], तो णं[11] अहं तुब्भं जायं च दायं च भायं च अक्खयणिहिं च अणुवड्ढेमि त्ति कट्टु उवाइयं उवाइत्तए[12]—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभाए रयणीए जाव[13] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते जेणामेव धणे सत्थवाहे तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एवं वयासी—

एवं खलु अहं देवाणुप्पिया! तुब्भेहिं सद्धिं बहूइं वासाइं[14] °सद्द-फरिस-रस-गंध-रूवाइं माणुस्सगाइं कामभोगाइं पच्चणुब्भवमाणी विहरामि, नो चेव णं अहं दारगं वा दारियं वा पयामि। तं धण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ जाव कोमलकमलोवमेहिं हत्थेहिं गिण्हिऊणं उच्छंग-निवेसियाणि° देंति समुल्लावए

१. थणमूले (क)।
२. अइसर° (ख, ग)।
३. 'अंतगड' सूत्रे (३।८।२६) 'मुद्धयाइ पुणो य' इतिपाठोऽस्ति। तद्वृत्तिकृता मुग्धकानि—अव्यक्तविज्ञानानि भवन्तीति गम्यते, इति क्रियाया अध्याहारः कृतः। 'निरयावलियाओ' सूत्रे (३।४) 'पण्हयंति पुणो य' इति पाठो विद्यते।
४. उच्छंगे (क, ख)।
५. अहं णं (क, ख, ग)।
६. ना० १।१।२४।
७. × (ख, ग, घ)।
८. उवाइत्तए (क)।
९. ण अहं (घ)।
१०. पयायामि (क, ग)।
११. तेणं (क, ख, ग)।
१२. उववाइत्तए (क)।
१३. ना० १।१।२४।
१४. सं० पा०—वासाइं जाव देंति।

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

सुमहुरे पिए पुणो-पुणो मंजुलप्पभणिए। तं णं अहं अहण्णा अपुण्णा अकय-लक्खणा एत्तो एगमवि न पत्ता। तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणी विपुलं असणं[1] •पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेत्ता जाव अक्खयणिहिं च॰ अणुवड्ढेमि उवाइयं करित्तए॥

१३. तए णं धणे सत्थवाहे भद्दं भारियं एवं वयासी—ममं[2] पि य णं देवाणुप्पिए! एस चेव मणोरहे—'कहं णं'[3] तुमं दारगं वा दारियं वा पयाएज्जासि?—भद्दाए सत्थवाहीए एयमट्ठं अणुजाणइ॥

१४. तए णं सा भद्दा सत्थवाही धणेणं सत्थवाहेणं अब्भणुण्णाया समाणी हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिया जाव[4] हरिसवस-विसप्पमाण-हियया विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता सुबहुं पुप्फ-वत्थ[5]-गंधमल्लालंकारं गेण्हइ, गेण्हित्ता सयाओ गिहाओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता रायगिहं नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पोक्खरिणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पुक्खरिणीए तीरे सुबहुं पुप्फ[6]-•वत्थ-गंध॰मल्लालंकारं ठवेइ, ठवेत्ता पुक्खरिणिं ओगाहेइ, ओगाहित्ता जलमज्जणं करेइ, करेत्ता जलकीडं करेइ, करेत्ता ण्हाया कयबलिकम्मा उल्लपडसाडिगा जाइं तत्थ उप्पलाइं[7] •पउमाइं कुमुयाइं णलिणाइं सुभगाइं सोगंधियाइं पोंडरीयाइं महापोंडरीयाइं सयवत्ताइं॰ सहस्सपत्ताइं ताइं गिण्हइ, गिण्हित्ता पुक्खरिणीओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता तं पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लं [मल्लालंकारं?] गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणामेव नागघरए य जाव[8] वेसमणघरए य तेणामेव[9] उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तत्थ णं नागपडिमाण य जाव[10] वेसमणपडिमाण य आलोए पणामं करेइ. ईसिं पच्चुण्णमइ, पच्चुण्णमित्ता लोमहत्थगं परामुसइ, परामुसित्ता नागपडिमाओ य जाव वेसमणपडिमाओ य लोमहत्थएणं[11] पमज्जइ, पमज्जित्ता उदगधाराए अब्भुक्खेइ, अब्भुक्खेत्ता पम्हल-सूमालाए गंधकासाईए गायाइं लूहेइ, लूहेत्ता महरिहं 'वत्थारुहणं च मल्लारुहणं च गंधारुहणं च वण्णारुहणं'[12] च करेइ, करेत्ता धूवं डहइ, डहित्ता जन्नुपायपडिया पंजलिउडा एवं वयासी—

---

१. सं० पा०—असणं जाव अणुवड्ढेमि।
२. मम (ग)।
३. कहण्णं (क, घ); कह णं (ख)।
४. ना० १।१।१९।
५. × (ख, ग, घ)।
६. सं० पा०—पुप्फ जाव मल्लालंकारं।
७. सं० पा०—उप्पलाइं जाव सहस्सपत्ताइं।
८. ना० १।२।१२।
९. तेणेव (क, ख, ग, घ)।
१०. ना० १।२।१२।
११. ॰हत्थेणं (ख, ग, घ)।
१२. रायपसेणइय (२९१) सूत्रे असौ पाठः किंचिद् भेदेन लभ्यते—पुप्फारुहणं मल्ला-रुहणं चुण्णारुहणं वत्थारुहणं आभरणारुहणं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जइ णं अहं दारगं वा दारियं वा पयामि तो णं अहं जायं च[1] •दायं च भायं च अक्खयणिहिं च° अणुवड्ढेमि त्ति कट्टु उवाइय करेइ, करेत्ता जेणेव पोक्खरिणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं आसाएमाणी[2] •विसाएमाणी परिभाएमाणी परिभुंजेमाणी एवं च णं° विहरइ। जिमिय[3]•भुत्तुत्तरागया वि य णं समाणा आयंता चोक्खा परम° सुइभूया जेणेव सए गिहे तेणेव उवागया॥

१५. अदुत्तरं च णं भद्दा सत्थवाही चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडेइ, उवक्खडेत्ता बहवे नागा य जाव[4] वेसमणा य उवायमाणी नमंसमाणी जाव एवं च णं विहरइ॥

भद्दाए देवदिन्न-पुत्तपसव-पदं

१६. तए णं सा भद्दा सत्थवाही अण्णया कयाइ[5] केणइ कालंतरेणं आवण्णसत्ता जाया यावि होत्था॥

१७. तए णं तीसे भद्दाए सत्थवाहीए [तस्स गब्भस्स ?][6] दोसु मासेसु वीइक्कंतेसु तइए मासे वट्टमाणे इमेयारूवे दोहले पाउब्भूए—धण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ जाव[7] कयलक्खणाओ णं ताओ अम्मयाओ, जाओ णं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं सुबहुयं पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारं गहाय मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियण-महिलियाहिं[8] सद्धिं संपरिवुडाओ रायगिहं नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छंति, निग्गच्छित्ता जेणेव पुक्खरिणी तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता पोक्खरिणिं ओगाहेंति, ओगाहित्ता ण्हायाओ कयबलिकम्माओ सव्वालंकार-विभूसियाओ विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं आसाएमाणीओ[9] •विसाए-माणीओ परिभाएमाणीओ° परिभुंजेमाणीओ दोहलं विणेंति—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभाए रयणीए जाव[10] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते जेणेव धणे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धणं सत्थवाहं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! मम तस्स गब्भस्स[11]

---

१. सं० पा०—जायं च जाव अणुवड्ढेमि।
२. सं० पा०—आसएमाणी जाव विहरइ।
३. सं० पा० --जिमिय जाव सुइभूया।
४. ना० १।२।१२।
५. कयाइं (क)।
६. १।१।३३ सूत्रे 'तइए मासे वट्टमाणे तस्स गब्भस्स दोहलकालसमयंसि' इति पाठो विद्यते। प्रस्तुत सूत्रे पि किंचिदग्रे 'तस्स गब्भस्स' इति पाठोस्ति। तेनात्रापि 'तस्स गब्भस्स' इति पाठो युज्यते।
७ ना० १।२।१२।
८. १।२।१२ सूत्रे 'महिलाहिं' पाठो विद्यते।
९. सं० पा०—आसाएमाणीओ जाव परिभुंजे-माणीओ।
१०. ना० १।१।२४।
११. सं० पा०—गब्भस्स जाव विणेंति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

•दोसु मासेसु वीइक्कंतेसु तइए मासे वट्टमाणे इमेयारूवे दोहले पाउब्भूए—धण्णाओ णं ताओ अम्मयाओ जाव दोहलं° विणेंति। तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणी[1] •विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं सुबहुयं पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारं गहाय जाव दोहलं° विणित्तए। अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं करेहि॥

१८. तए णं सा भद्दा धणेणं सत्थवाहेणं अब्भणुण्णाया समाणी हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिया जाव[2] हरिसवस-विसप्पमाणहियया विपुलं 'असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता जाव[3] धूवं[4] करेइ, करेत्ता जेणेव पोक्खरिणी तेणेव उवागच्छइ॥

१९. तए णं ताओ मित्त-नाइ[5]-•नियग-सयण-संबंधि-परियण°-नगरमहिलाओ भद्दं सत्थवाहिं सव्वालंकारविभूसियं करेंति॥

२०. तए णं सा भद्दा सत्थवाही ताहिं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-'परियण-नगरमहिलियाहिं[6] सद्धिं तं विपुलं असणं[7] •पाणं खाइमं साइमं आसाएमाणी विसाएमाणी परिभाएमाणी° परिभुंजेमाणी दोहलं विणेइ, विणेत्ता जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया॥

२१. तए णं सा भद्दा सत्थवाही संपुण्णदोहला जाव[8] तं गब्भं सुहंसुहेणं परिवहइ॥

२२. तए णं सा भद्दा सत्थवाही नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्ठमाण य राइंदियाणं वीइक्कंताणं सुकुमालपाणिपायं जाव[9] दारगं पयाया॥

२३. तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो पढमे दिवसे जायकम्मं करेंति, तहेव जाव[10]

---

१. सं० पा०—समाणी जाव विहरित्तए (क, ख, ग, घ); यद्यपि पाठसंशोधनप्रयुक्तेषु सर्वेष्वपि आदर्शेषु 'विहरित्तए' इति पाठो लभ्यते किन्तु अर्थमीमांसया नासौ समीचीनः प्रतिभाति। नास्य केनापि पाठेन पूर्तिर्जायते। सम्भवतो लिपिदोषेण 'विणित्तए' इत्यस्य 'विहरित्तए' इति रूपेण परिवर्तनं जातम्। एतस्य पाठस्य स्वीकारेऽस्य पूर्तिरपि जायते। स्तबकादर्शे 'विणित्तए' इति पदस्यार्थः कृतोस्ति।

२. ना० १।१।१९।

३. ना० १।२।१४।

४. असणं जाव उल्लपडसाडिगा जेणेव नागघरए जाव धूवं (क, ख, ग, घ)। दोहदस्य उत्पत्तिः, पत्युस्तस्य निवेदनं, तस्यपूर्तिश्च—एतेषु त्रिष्वपि स्थानेषु पाठस्य समानता युज्यते, किन्तु दोहदस्य पूर्तिविषयकः पाठस्ततो भिन्नोस्ति। अत्र अनेकधा जाव शब्दः प्रयुक्तोस्ति। तदनुसारेण पाठपूरणे 'पणामं करेइ' इत्यस्य पदस्य द्विधा प्रयोगो जायते, किन्तु प्रतिप्रामाण्यात् अनन्यगतिकैरस्माभिरन्याधाराभावेन यथा लब्ध एव पाठः स्वीकृतः।

५. सं० पा०—नाइ जाव नगरमहिलाओ।

६. १२ सूत्रे—परियण-महिलाहिं। १७ सूत्रे—परियण-महिलियाहिं। १८ सूत्रे—परियण-नगरमहिलियाहिं।

७. सं० पा०—असणं जाव परिभुंजेमाणी।

८. ना० १।१।७२।

९. ना० १।१।२०।

१०. ना० १।१।८१।

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

विपुलं[1] असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेंति, तहेव[2] मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं भोयावेत्ता अयमेयारूवं गोण्णं गुणनिप्फण्णं नामधेज्जं करेंति —जम्हा णं अम्हं इमे दारए बहूणं नागपडिमाण य जाव[3] वेसमणपडिमाण य उवाइयलद्धे[4], तं होउ णं अम्हं इमे दारए देवदिन्ने नामेणं।

तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामधेज्जं करेंति देवदिन्ने त्ति ॥

२४. तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो जायं च दायं च भायं च अक्खयनिहिं च अणुवड्ढेंति ॥

देवदिन्नस्स कीडा-पदं

२५. तए णं से पंथए दासचेडए देवदिन्नस्स दारगस्स बालग्गाही जाए, देवदिन्नं दारगं कडीए गेण्हइ, गेण्हित्ता बहूहिं डिंभएहि य डिंभियाहि य दारएहि य दारियाहि य कुमारएहि य कुमारियाहि य सद्धिं संपरिवुडे अभिरमइ ॥

२६. तए णं सा भद्दा सत्थवाही अण्णया कयाइ देवदिन्नं दारयं ण्हायं कयबलिकम्मं कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्तं सव्वालंकारविभूसियं करेइ, करेत्ता पंथयस्स दासचेडगस्स हत्थयंसि दलयइ ॥

२७. तए णं से पंथए दासचेडए भद्दाए सत्थवाहीए हत्थाओ देवदिन्नं दारगं कडीए गेण्हइ, गेण्हित्ता सयाओ गिहाओ पडिनिक्खमइ, बहूहिं डिंभएहि य[5] °डिंभियाहि य दारएहि य दारियाहि य कुमारएहि य° कुमारियाहि य सद्धिं संपरिवुडे जेणेव रायमग्गे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता देवदिन्नं दारगं एगंते ठावेइ, ठावेत्ता बहूहिं डिंभएहि य जाव कुमारियाहि य सद्धिं संपरिवुडे पमत्ते[6] यावि विहरइ ॥

देवदिन्नस्स अपहार-पदं

२८. इमं च णं विजए तक्करे रायगिहस्स नगरस्स बहूणि [अइगमणाणि य निग्गमणाणि य ?] दाराणि य अवदाराणि य तहेव जाव[7] सुन्नघराणि य आभोएमाणे मग्गेमाणे गवेसमाणे जेणेव देवदिन्ने दारए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता देवदिन्नं दारगं सव्वालंकारविभूसियं पासइ, पासित्ता देवदिन्नस्स दारगस्स आभरणालंकारेसु मुच्छिए गढिए गिद्धे अज्झोववण्णे पंथयं दासचेडयं पमत्तं पासइ, पासित्ता दिसालोयं करेइ, करेत्ता देवदिन्नं दारगं गेण्हइ, गेण्हित्ता

---

१. तिपुलं (ख)।
२. पू०—ना० १।१।८१।
३. ना० १।२।१२।
४. ओवाइय° (क)।
५. सं० पा०—डिंभएहि य जाव कुमारियाहि।
६. पमग्गे (ख)।
७. ना० १।२।११।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कक्खंसि अल्लियावेइ[1], अल्लियावेत्ता उत्तरिज्जेणं पिहेइ[2], पिहेत्ता सिग्घं तुरियं चवलं वेइयं[3] रायगिहस्स नगरस्स अवद्दारेणं[4] निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव जिण्णुज्जाणे जेणेव भग्गकूवए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता देवदिन्नं दारयं जीवियाओ ववरोवेइ, ववरोवेत्ता आभरणालंकारं गेण्हइ, गेण्हित्ता देवदिन्नस्स दारगस्स सरीरं निप्पाणं निच्चेट्ठं जीवविप्पजढं भग्गकूवए पक्खिवइ[5], पक्खिवित्ता जेणेव मालुयाकच्छए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मालुयाकच्छयं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता निच्चले निप्फंदे तुसिणीए दिवसं खवेमाणे[6] चिट्ठइ ।।

देवदिन्नस्स गवेसणा-पदं

२९. तए णं से पंथए दासचेडए[7] तओ मुहुत्तंतरस्स जेणेव देवदिन्ने दारए ठविए[8] तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता देवदिन्नं दारगं तंसि ठाणंसि अपासमाणे रोयमाणे कंदमाणे [विलवमाणे ?][9] देवदिन्नस्स दारगस्स सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करेइ। देवदिन्नस्स दारगस्स कत्थइ सुइं वा खुइं वा पउत्तिं वा अलभमाणे जेणेव सए गिहे जेणेव धणे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धणं सत्थवाहं एवं वयासी—एवं खलु सामी ! भद्दा सत्थवाही देवदिन्नं दारयं ण्हायं जाव[10] सव्वालंकारविभूसियं मम हत्थंसि[11] दलयइ। तए णं अहं[12] देवदिन्नं दारयं कडीए गिण्हामि[13], •गिण्हित्ता सयाओ गिहाओ पडिनिक्खमामि, बहूहिं डिंभएहि य डिंभियाहि य दारएहि य दारियाहि य कुमारएहि य कुमारियाहि य सद्धिं संपरिवुडे जेणेव रायमग्गे तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता देवदिन्नं दारगं एगंते ठावेमि, ठावेत्ता बहूहिं डिंभएहि य जाव कुमारियाहि य सद्धिं संपरिवुडे पमत्ते यावि विहरामि।

तए णं अहं तओ मुहुत्तंतरस्स जेणेव देवदिन्ने दारए ठविए तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता देवदिन्नं दारगं तंसि ठाणंसि अपासमाणे रोयमाणे कंदमाणे [विलवमाणे ?] देवदिन्नस्स दारगस्स सव्वओ समंता° मग्गण-गवेसणं करेमि। तं न नज्जइ णं सामी ! देवदिन्ने दारए केणइ नीते[14] वा अवहिते वा अक्खित्ते वा—पायवडिए धणस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठं निवेदेइ ।।

---

१. अलियावेइ (क, ख)।
२. पेहेइ (क)।
३. चेइयं (क, ग)।
४. अववारेण (क)।
५. निक्खिवइ (ग)।
६. क्षेपयन् (वृ)।
७. चेडे (क, ख, घ)।
८. ठाविए (ख)।
९. १।२।३४ सूत्रे 'रोयमाणे जाव विलवमाणे' इति पाठोस्ति। अत्रापि तथैव युज्यते।
१०. ना० १।२।२६।
११. हत्थे (घ)।
१२. णं हं (ख, ग)।
१३. सं० पा०—गिण्हामि जाव मग्गणगवेसणं।
१४. नितिए (क, ग)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३०. तए णं से धणे सत्थवाहे पंथयस्स दासचेडगस्स एयमट्ठं सोच्चा निसम्म[1] तेण य महया पुत्तसोएणाभिभूए समाणे परसु[2]-णियत्ते व चंपगपायवे 'धसत्ति' धरणीयलंसि सव्वंगेहिं सण्णिवइए ।।

३१. तए णं से धणे सत्थवाहे तओ मुहुत्तंतरस्स आसत्थे पच्चागयपाणे देवदिन्नस्स दारगस्स सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करेइ। देवदिन्नस्स दारगस्स कत्थइ सुइं वा खुइं वा पउत्ति वा अलभमाणे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता महत्थं पाहुडं गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणेव नगरगुत्तिया[3] तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं महत्थं पाहुडं उवणेइ, उवणेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! मम पुत्ते भद्दाए भारियाए अत्तए देवदिन्ने नामं दारए इट्ठे जाव[4] उंबरपुप्फं पिव दुल्लहे सवणयाए, किमंग पुण पासणयाए? तए णं सा भद्दा देवदिन्नं ण्हायं[5] सव्वालंकारविभूसियं पंथगस्स[6] हत्थे दलाइ जाव[7] पायवडिए तं मम निवेदेइ। तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया! देवदिन्नस्स दारगस्स सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं कयं[8] ।।

३२. तए णं ते नगरगोत्तिया धणेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ता समाणा सण्णद्ध-बद्ध-वम्मिय-कवया उप्पीलिय-सरासण-पट्टिया[9] •पिणद्ध-गेविज्जा आविद्ध-विमल-वरचिंध-पट्टा° गहियाउह-पहरणा धणेणं सत्थवाहेणं सद्धिं रायगिहस्स नगरस्स 'बहुसु अइगमणेसु'[10] य जाव[11] पवासु य मग्गण-गवेसणं करेमाणा रायगिहाओ नगराओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव जिण्णुज्जाणे जेणेव भग्गकूवए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता देवदिन्नस्स दारगस्स सरीरगं निप्पाणं निच्चेट्ठं जीवविप्पजढं पासंति, पासित्ता हा हा अहो! अकज्जमित्ति कट्टु देवदिन्नं दारगं भग्गकूवाओ उत्तारेंति, धणस्स सत्थवाहस्स हत्थे दलयंति ।।

विजयतक्करस्स निग्गह-पदं

३३. तए णं ते नगरगुत्तिया विजयस्स तक्करस्स पयमग्गमणुगच्छमाणा[13] जेणेव

---

१. निसम्मा (क, ख, ग)।
२. परिसुणियत्ते (ख, घ)।
३. नगरगोत्तिए (क)।
४. ना० १।१।१०६।
५. पू०—ना० १।२।२६।
६. पंथदासस्स (ग)।
७. ना० १।२।२७,२९,
८. करेह (क)।
९. × (ग, वृपा)।
१०. सं० पा०—पट्टिया जाव गहियाउहपहरणा।
११. बहूणि अइगमणाणि (क, ख, ग, घ)। यद्यपि १।१।११ सूत्रे 'अइगमणाणि य' पाठो विद्यते, किन्तु अत्र 'मग्गण-गवेसणं' इति पदस्य संबंधेन सप्तम्यन्तो युज्यते, यथा पवासु। इदं पदं द्वितीयान्तं केन कारणेनात्र कृतमथवा संक्षेपीकरणे गृहीतमिति न ज्ञातुं शक्यते।
१२. ना० १।२।११।
१३. पयमग्गमणुगच्छमाणा २ (क); पायमग्ग° (घ)।

मालुयाकच्छए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता मालुयाकच्छगं अणुप्पविसंति, अणुप्पविसित्ता विजयं तक्करं ससक्खं सहोढं सगेवेज्जं जीवग्गाहं[1] गेण्हंति, गेण्हित्ता अट्ठि-मुट्ठि-जाणुकोप्पर-पहार-संभग्ग-महिय-गत्तं करेंति, करेत्ता अवउडा[2] बंधणं करेंति, करेत्ता देवदिन्नस्स दारगस्स आभरणं गेण्हंति, गेण्हित्ता विजयस्स तक्करस्स गीवाए बंधंति, बंधित्ता मालुयाकच्छगाओ पडिणिक्खमंति, पडिणिक्खमित्ता जेणेव रायगिहे नयरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता रायगिहं नयरं अणुप्पविसंति, अणुप्पविसित्ता रायगिहे नयरे सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु कसप्पहारे य 'छिवापहारे य लयापहारे'[3] य निवाएमाणा-निवाएमाणा छारं च धूलिं च कयवरं च उवरिं पकिरमाणा[4]-पकिरमाणा महया-महया सद्देणं उग्घोसेमाणा एवं वयंति—एस णं देवाणुप्पिया ! विजए नामं तक्करे[5]—•पावचंडालरूवे भीमतररुद्दकम्मे आरुसिय-दित्त-रत्तनयणे खरफरुस-महल्ल-विगय-बीभच्छदाढिए असंपुडियउट्ठे उद्धुय-पइण्ण-लंबंतमुद्धए भमर-राहुवण्णे निरणुक्कोसे निरणुतावे दारुणे पइभए निसंसइए निरणुकंपे अहीव एगंतदिट्ठीए खुरेव एगंतधाराए गिद्धेव आमिस-तल्लिच्छे अग्गिमिव° सव्वभक्खी बालघायए बालमारए।

तं नो खलु देवाणुप्पिया ! एयस्स केइ राया वा रायमच्चे वा अवरज्झइ, नन्नत्थ[6] अप्पणो सयाइं कम्माइं अवरज्झंति त्ति कट्टु जेणामेव चारगसाला तेणामेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता हडिबंधणं करेंति, करेत्ता भत्तपाणनिरोहं करेंति, करेत्ता तिसंझं कसप्पहारे य[7] •छिवापहारे य लयापहारे य° निवाए-माणा विहरंति ॥

देवदिन्नस्स नीहरण-पदं

३४. तए णं से धणे सत्थवाहे मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणेणं सद्धिं रोयमाणे[8] •कंदमाणे° विलवमाणे देवदिन्नस्स दारगस्स सरीरस्स[9] महया इड्ढी-सक्कार-समुदएणं नीहरणं करेति, करेत्ता बहूइं लोइयाइं मयगकिच्चाइं[10] करेति, करेत्ता केणइ कालंतरेणं अवगयसोगे जाए यावि होत्था ॥

---

१. गीवग्गाहं (घ)।
२. अवउड (ख, घ); अवउडग (वृपा)।
३. लयप्पहारे° (क); लयापहारे य छिवापहारे य (ख, ग, घ); असौ पाठः वृत्याधारेण स्वीकृतः। १।२।४५ सूत्रेपि अयमेव क्रमो लभ्यते।
४. पयरमाणा (क)।
५. सं० पा०—तक्करे जाव गिद्धे विव आमिस-भक्खी।
६. वाचनान्तरेत्विदं नाधीयते (वृ)।
७. सं० पा०—कसप्पहारे य जाव निवाएमाणा।
८. सं० पा०—रोयमाणे जाव विलवमाणे।
९. सरीरयस्स (क)।
१०. मयकिच्चाइं (क)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धणस्स निग्गह-पदं

३५. तए णं से धणे सत्थवाहे अण्णया कयाइ लहुसयंसि रायावराहंसि संपलित्ते[1] जाए यावि होत्था ।।

३६. तए णं ते नगरगुत्तिया धणं सत्थवाहं गेण्हंति, गेण्हित्ता जेणेव चारए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता चारगं अणुप्पवेसंति, अणुप्पवेसित्ता विजएणं तक्करेणं सद्धिं एगयओ हडिबंधणं करेंति ।।

धणस्स घराओ आहाराणयण-पदं

३७. तए णं सा भद्दा भारिया कल्लं पाउप्पभाए रयणीए जाव[2] उट्ठियम्मि सूरे सहस्स-रस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडेइ, 'भोयणपिडयं करेइ'[3], करेत्ता भोयणाइं पक्खिवइ, लंछिय-मुद्दियं करेइ, करेत्ता एगं च सुरभि [वर ?] वारिपडिपुण्णं दगवारयं करेइ, करेत्ता पंथयं दास-चेडयं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! इमं विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं गहाय चारगसालाए धणस्स सत्थवाहस्स उवणेहि ।।

३८. तए णं से पंथए भद्दाए सत्थवाहीए एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे तं भोयणपिडयं तं च सुरभिवरवारिपडिपुण्णं दगवारयं गेण्हइ, गेण्हित्ता सयाओ गिहाओ पडि-णिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता रायगिहं नगरं मज्झंमज्झेणं जेणेव चारगसाला जेणेव धणे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भोयणपिडयं ठवेइ, ठवेत्ता उल्लंछेइ, उल्लंछेत्ता भोयणं गेण्हइ, गेण्हित्ता भायणाइं ठावइ[4], ठावित्ता हत्थ-सोयं दलयइ, दलइत्ता धणं सत्थवाहं तेणं विपुलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं परिवेसेइ ।।

विजयतक्करेण संविभागमग्गण-पद

३९. तए णं से विजए तक्करे धणं सत्थवाहं एवं वयासी—तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! ममं एयाओ विपुलाओ असण-पाण-खाइम-साइमाओ संविभागं करेहि ।।

धणस्स तन्निसेध-पदं

४०. तए णं से धणे सत्थवाहे विजयं तक्करं एवं वयासी—अवियाइं अहं विजया ! एयं विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं कायाण वा सुणगाण वा दलएज्जा, उक्कुरुडियाए वा णं छड्डेज्जा, नो चेव णं तव पुत्तघायगस्स पुत्तमारगस्स अरिस्स वेरियस्स पडणीयस्स[5] पच्चामित्तस्स एत्तो विपुलाओ असण-पाण-खाइम-साइमाओ संविभागं करेज्जामि[6] ।।

---

१. संपलत्ते (क, वृ) ।

२. ना० १।१।२४ ।

३. भोयणं पिडए करेइ (क, वृपा); °पिडयं भरेइ (वृपा) ।

४. धावइ (ख); धोवइ (ग, घ) ।

५. पडिणीयस्स (ग, घ) ।

६. करेज्जासि (क, ग) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४१. तए णं से धणे सत्थवाहे तं विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं आहारेइ, तं पंथयं पडिविसज्जेइ ॥

४२. तए णं से पंथए दासचेडए तं भोयणपिडगं[1] गिण्हइ, गिण्हित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ॥

आबाधितस्स धणस्स विजयतक्करावेक्खा-पदं

४३. तए णं तस्स धणस्स सत्थवाहस्स तं विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं आहारियस्स समाणस्स उच्चार-पासवणे णं उव्वाहित्था ॥

४४. तए णं से धणे सत्थवाहे विजयं तक्करं एवं वयासी –एहि ताव विजया[2] ! एगंतमवक्कमामो 'जेणं अहं'[3] उच्चार-पासवणं परिट्ठवेमि ॥

विजयतक्करेण तन्निसेध-पदं

४५. तए णं से विजए तक्करे धणं सत्थवाहं एवं वयासी—तुज्झं[4] देवाणुप्पिया ! विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं आहारियस्स अत्थि उच्चारे वा[5] पासवणे वा, ममं णं देवाणुप्पिया ! इमेहिं बहूहिं कसप्पहारेहि य[6] •छिवापहारेहि य° लयापहारेहि य तण्हाए य छुहाए य परज्झमाणस्स[7] नत्थि केइ उच्चारे वा[8] पासवणे वा । तं छंदेणं तुमं देवाणुप्पिया ! एगंते अवक्कमित्ता उच्चार-पासवणं परिट्ठवेहि ॥

४६. तए णं से धणे सत्थवाहे विजएणं तक्करेणं एवं वुत्ते समाणे तुसिणीए संचिट्ठइ ॥

धणेण पुणो कथिते विजएण संविभागमग्गण-पदं

४७. तए णं से धणे सत्थवाहे मुहुत्तंतरस्स बलियतरागं उच्चार-पासवणेणं उव्वाहिज्जमाणे विजयं तक्करं एवं वयासी—एहि ताव विजया[9] ! •एगंतमवक्कमामो जेणं अहं उच्चार-पासवणं परिट्ठवेमि° ॥

४८. तए णं से विजए तक्करे धणं सत्थवाहं एवं वयासी— जइ णं तुमं देवाणुप्पिया ! ताओ विपुलाओ असण-पाण-खाइम-साइमाओ संविभागं करेहि, तओहं तुमेहिं सद्धिं एगंतं अवक्कमामि ॥

४९. तए णं से धणे सत्थवाहे विजयं तक्करं एवं वयासी—'अहं णं'[10] तुब्भं[11] ताओ विपुलाओ असण-पाण-खाइम-साइमाओ संविभागं करिस्सामि ॥

---

१. भोयणपडिग्गहं (ख) ।
२. विजया एत्तो (क) ।
३. जाव णं अहं ताव (क); जा णं ° (ख, घ) ।
४. तुज्झ ण (क) ।
५. × (क, ख, ग, घ) ।
६. सं०पा०—कसप्पहारेहि य जाव लयापहारेहि ।
७. परब्भवमाणस्स (क, घ) ।
८. × (क, ख) ।
९. स० पा०—विजया जाव अवक्कमामो ।
१०. अहण्णं (क, घ) ;
११. तुम (घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५०. तए णं से विजए तक्करे धणस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ ॥

५१. तए णं से 'धणे सत्थवाहे विजएण तक्करेण'[१] सद्धिं एगंते अवक्कमइ, उच्चार-पासवणं परिट्ठवेइ, आयंते चोक्खे परमसुइभूए तमेव ठाणं उवसंकमित्ता णं विहरइ ॥

धणेण विजयस्स संविभागदाण-पदं

५२. तए णं सा भद्दा कल्लं पाउप्पभाए रयणीए जाव[२] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते विपुलं असणं[३] •पाणं खाइमं साइमं उवक्खडेइ, भोयण-पिडयं करेइ, करेत्ता भोयणाइं पक्खिवइ, लंछिय-मुद्दियं करेइ, करेत्ता एगं च सुरभि [वर ?] वारिपडिपुण्णं दगवारयं करेइ, करेत्ता पंथयं दासचेडयं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! इमं विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं गहाय चारगसालाए धणस्स सत्थवाहस्स उवणेहि ॥

५३. तए णं से पंथए भद्दाए सत्थवाहीए एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे तं भोयणपिडयं तं च सुरभिवरवारिपडिपुण्णं दगवारयं गेण्हइ, गेण्हित्ता सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता रायगिहं नगरं मज्झंमज्झेणं जेणेव चारगसाला जेणेव धणे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भोयणपिडयं ठवेइ, ठवेत्ता उल्लंछेइ, उल्लंछेत्ता भोयणं गेण्हइ, गेण्हित्ता भायणाइं ठावइ, ठावित्ता हत्थ-सोयं दलयइ, दलइत्ता धणं सत्थवाहं तेणं विपुलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं° परिवेसेइ ॥

५४. तए णं से धणे सत्थवाहे विजयस्स तक्करस्स ताओ विपुलाओ असण-पाण-खाइम-साइमाओ संविभागं करेइ ॥

पंथगस्स भद्दाए साटोवं तन्निवेदण-पदं

५५. तए णं से धणे सत्थवाहे पंथगं दासचेडयं विसज्जेइ ॥

५६. तए णं से पंथए भोयणपिडयं गहाय चारगाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता रायगिहं नयरं मज्झंमज्झेणं जेणेव सए गिहे जेणेव भद्दा सत्थवाही तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भद्दं [सत्थवाहिं ?] एवं वयासी—एवं खलु देवाणु-प्पिए ! धणे सत्थवाहे तव पुत्तघायगस्स[४] •पुत्तमारगस्स अरिस्स वेरियस्स पडणीयस्स° पच्चामित्तस्स ताओ विपुलाओ असण-पाण-खाइम-साइमाओ संविभागं करेइ ॥

भद्दाए कोव-पदं

५७. तए णं सा भद्दा सत्थवाही पंथगस्स दासचेडगस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा

---

१. विजए वणेण सत्थवाहेण (क, ख, ग)।
२. ना० १।१।२४।
३. सं० पा०—असणं जाव परिवेसेइ।
४. सं० पा०—पुत्तघायगस्स जाव पच्चामित्तस्स।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आसुरुत्ता रुट्ठा[1] •कुविया चंडिक्किया° मिसिमिसेमाणी धणस्स सत्थवाहस्स पओसमावज्जइ ॥

धणस्स चारमुत्ति-पदं

५८. तए णं से धणे सत्थवाहे अण्णया कयाइं मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणेणं सएण य अत्थसारेणं रायकज्जाओ अप्पाणं मोयावेइ, मोयावेत्ता चारगसालाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता जेणेव अलंकारियसभा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अलंकारियकम्मं कारवेइ[2] जेणेव पोक्खरिणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहधोयमट्टियं[3] गेण्हइ, गेण्हित्ता पोक्खरिणीं ओगाहइ, ओगाहित्ता जलमज्जणं करेइ, करेत्ता ण्हाए कयबलिकम्मे[4] •कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ते सव्वालंकारविभूसिए° रायगिहं नगरं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता रायगिहस्स नगरस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव सए गिहे तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

धणस्स सम्माण-पदं

५९. तए णं तं धणं सत्थवाहं एज्जमाणं पासित्ता रायगिहे नयरे बहवे नगर[5]-निगम[6]-सेट्ठि-सत्थवाह-पभिइओ आढंति[7] परिजाणंति सक्कारेंति सम्माणेंति अब्भुट्ठेंति सरीरकुसलं पुच्छंति ॥

६०. तए णं से धणे सत्थवाहे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ।
जावि य से तत्थ बाहिरिया परिसा भवइ, तंजहा—दासा इ वा पेस्सा इ वा भयगा[8] इ वा भाइल्लगा[9] इ वा, सा वि य णं धणं सत्थवाहं एज्जमाणं पासइ, पायवडिया खेमकुसलं पुच्छइ।
जावि य से तत्थ अब्भंतरिया[10] परिसा भवइ, तंजहा—माया इ वा पिया इ वा भाया इ वा भइणी इ वा, सावि य णं धणं सत्थवाहं एज्जमाणं पासइ, आसणाओ अब्भुट्ठेइ, कंठाकंठियं अवयासिय[11] बाह-प्पमोक्खणं करेइ ॥

भद्दाए कोवोवसमपुव्वं सम्माण-पदं

६१. तए णं से धणे सत्थवाहे जेणेव भद्दा भारिया तेणेव उवागच्छइ ॥

---

१. सं० पा०—रुट्ठा जाव मिसिमिसेमाणी।
२. कारेति (ख); करावेई (घ)।
३. अहायमट्टियं (क्व०)।
४. सं० पा०—कयबलिकम्मे जाव रायगिहं।
५. नागर (ग)।
६. नियमे (क); नियग (ग)।
७. आढायंति (क)।
८. भइगा (क, ग, घ)।
९. भातिल्लगा (ग)।
१०. अब्भिंतरिया (ग, घ)।
११. अवदासिय (ग, घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६२. तए णं सा भद्दा धणं सत्थवाहं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता नो आढाइ नो परिजाणइ[1] अणाढायमाणी अपरिजाणमाणी तुसिणीया परम्मुही संचिट्ठइ ॥

६३. तए णं से धणे सत्थवाहे भद्दं भारियं एवं वयासी—किण्णं तुज्झं[2] देवाणुप्पिए ! न तुट्ठी वा न हरिसो वा नाणंदो वा, जं मए सएणं अत्थसारेणं रायकज्जाओ[3] अप्पा[4] विमोइए ॥

६४. तए णं सा भद्दा धणं सत्थवाहं एवं वयासी—कहं णं देवाणुप्पिया ! मम तुट्ठी वा[5] •हरिसो वा° आणंदो वा भविस्सइ ? जेणं तुमं मम पुत्तघायगस्स[6] •पुत्तमारगस्स अरिस्स वेरियस्स पडणीयस्स° पच्चामित्तस्स ताओ विपुलाओ असण-पाण-खाइम-साइमाओ संविभागं करेसि ॥

६५. तए णं से धणे सत्थवाहे भद्दं भारियं एवं वयासी—नो खलु देवाणुप्पिए ! धम्मो त्ति वा तवोत्ति वा 'कय-पडिकया इ वा'[7] लोगजत्ता इ वा नायए इ वा 'घाडियए इ वा'[8] सहाए इ वा सुहि त्ति वा [विजयस्स तक्करस्स ?[9]] ताओ विपुलाओ असण-पाण-खाइम-साइमाओ संविभागे कए, नण्णत्थ सरीरचिंताए ॥

६६. तए णं सा भद्दा धणेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ता समाणी हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिया जाव[10] हरिसवस-विसप्पमाणहियया आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता कंठाकंठिं[11] अवयासेइ[12] खेमकुसलं पुच्छइ, पुच्छित्ता ण्हाया[13] •कयबलिकम्मा कय-कोउय-मंगल°-पायच्छित्ता विपुलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरइ ॥

विजय-णायस्स निगमण-पदं

६७. तए णं से विजए तक्करे चारगसालाए तेहिं बंधेहि य वहेहि य कसप्पहारेहि य[14] •छिवापहारेहि य लयापहारेहि य° तण्हाए य छुहाए य परज्झमाणे कालमासे कालं किच्चा नरएसु नेरइयत्ताए उववण्णे ।

---

१. परियाणाइ (क, ख); परियाणइ (ग, घ) ।
२. तुब्भं (क्व०) ।
३. रज्जकज्जाओ (ग, घ) ।
४. अप्पाणं (ख) ।
५. सं० पा०—तुट्ठी वा जाव आणंदो ।
६. सं० पा०—पुत्तघायगस्स जाव पच्चामित्तस्स ।
७. कयपडिकइया वा (क); कयाइपडिकईया बाला (घ) ।
८. घोडयए इ वा (क ख); संघाडियाए वा (घ) ।
९. अस्मिन् सूत्रे कस्मै संविभागो दत्तः इति न स्पष्टं भवति : ७५ सूत्रे 'जाव विजयस्स तक्करस्स ताओ विपुलाओ' इति पाठो विद्यते । तस्य पूर्तिः प्रस्तुतसूत्रेणैव जायते । एतेन प्रतीयते अत्रापि 'विजयस्स तक्करस्स' इति पाठः आसीत्, किन्तु केनापि कारणेनासौ त्रुटितोभूत् ।
१०. ना० १।१।१६ ।
११. कंठाकंठि (ख, ग) ।
१२. अवभासेइ (ख); अवतासेइ (ग, घ) ।
१३. सं० पा०—ण्हाया जाव पायच्छित्ता ।
१४. सं० पा०—कसप्पहारेहि य जाव तण्हाए ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

से णं तत्थ नेरइए जाए काले कालोभासे[1] •गंभीरलोमहरिसे भीमे उत्तासणए परमकण्हे वण्णेणं।

से णं तत्थ निच्चं भीए निच्चं तत्थे निच्चं तसिए निच्चं परमऽसुहसंबद्धं नगरगति °वेयणं पच्चणुब्भवमाणे विहरइ।

से णं तओ उव्वट्टित्ता अणादीयं अणवदग्गं दीहमद्धं[2] चाउरंतं संसारकंतारं अणुपरियट्टिस्सइ॥

६८. एवामेव जंबू! जो णं अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा आयरिय-उवज्झायाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ[3] अणगारियं पव्वइए समाणे विपुलमणि-मोत्तिय[4]-धण-कणग-रयणसारेणं लुब्भइ, सो वि एवं चेव॥

धण-णायस्स निगमण-पदं

६९. तेणं कालेणं तेणं समएणं थेरा भगवंतो जाइसंपण्णा जाव[5] पुव्वाणुपुव्विं चरमाणा[6] •गामाणुगामं दूइज्जमाणा सुहंसुहेणं विहरमाणा° जेणेव रायगिहे नयरे जेणेव गुणसिलए चेइए[7] •तेणामेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता° अहा-पडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति॥

७०. परिसा निग्गया धम्मो कहिओ॥

७१. तए णं तस्स धणस्स सत्थवाहस्स बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म[8] इमेयारूवे अज्झत्थिए[9] •चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—एवं खलु थेरा भगवंतो जाइसंपण्णा[10] इहमागया इहसंपत्ता। तं गच्छामि ?[11] णं थेरे भगवंते वंदामि नमंसामि [एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता ?[12]]

---

१. सं० पा—कालोभासे जाव वेयणं।
२. × (क, ख, ग)।
३. आगाराओ (ख, घ)।
४. मुत्तय (ख, ग)।
५. ना० १।१।४।
६. सं० पा०—चरमाणा जाव जेणेव।
७. सं० पा०—चेइए जाव अहापडिरूवं।
८. निसम्मा (क, ख, ग)।
९. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।
१०. पू०—ना० १।१।४।
११,१२. इच्छामि (क, ख, ग, घ); पाठसंशोधन-प्रयुक्तेषु आदर्शेषु तथा मुद्रितपुस्तकेष्वपि 'इच्छामि' इति पाठो लभ्यते, किन्तु अन्यागमानामेतत्तुल्यप्रकरणसमीक्षयाऽत्र 'गच्छामि' इति पाठः उपयुक्तः प्रतिभाति। एवमेव 'एवं संपेहेइ, संपेहित्ता' इति संयोजकः पाठोपि बहुषु आगमेषु लभ्यते। अत्रापि इत्थमेव युज्यते। अत्र संभाव्यते लिपिदोषेण वर्णपरिवर्तनं जातम्, तेन 'गच्छामि' स्थाने 'इच्छामि' इति जातम्। उत्तरोत्तरमेष एव पाठः प्रचुरेषु आदर्शेषु संक्रान्तोभूत्। संक्षेपीकरणपद्धतेः कारणेन 'एवं संपेहेइ, संपेहित्ता' इति पाठोत्रालिखि-तोस्ति। उक्तप्रकरणानुसारी पाठः 'उवासगदसाओ' (१।२०) सूत्रे इत्थमस्ति—तं गच्छामि णं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ण्हाए[1] •कयबलिकम्मे कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ते° सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर[2] परिहिए पायविहारचारेणं जेणेव गुणसिलए चेइए जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छित्ता वंदइ नमंसइ ॥

७२. तए णं थेरा भगवंतो धणस्स विचित्तं धम्ममाइक्खंति ॥

७३. तए णं से धणे सत्थवाहे धम्मं सोच्चा एवं वयासी—
सद्दहामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं[3] ।
•पत्तियामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं ।
रोएमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं ।
अब्भुट्ठेमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं ।
एवमेयं भंते ! तहमेयं भंते ! अवितहमेयं भंते ! इच्छियमेयं भंते ! पडिच्छिय-मेयं भंते ! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भंते ! से जहेयं तुब्भे वयह त्ति कट्टु थेरे भगवंते वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता° जाव[4] पव्वइए जाव[5] बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणित्ता भत्तं पच्चक्खाइत्ता, मासियाए संलेहणाए [अप्पाणं झोसेत्ता ?], सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता[6] कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे देवत्ताए उववण्णे ।
तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता । तस्स[7] णं धणस्स देवस्स चत्तारि पलिओवमाइं ठिई[8] ॥

७४. से णं धणे देवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं ठिइक्खएणं भवक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ जाव[9] सव्वदुक्खाणमंतं करेहिइ ॥

७५. जहा णं जंबू ! धणेणं सत्थवाहेणं नो धम्मो त्ति वा[10] •तवो त्ति वा कय-पडिकया इ वा लोगजत्ता इ वा नायए इ वा घाडियए इ वा सहाए इ वा सुहि त्ति वा° विजयस्स तक्करस्स ताओ विपुलाओ असण-पाण-खाइम-साइमाओ संविभागे कए, नण्णत्थ सरीरसारक्खणट्ठाए ॥[11]

७६. एवामेव जंबू ! जे णं अम्हं निग्गंथे वा[12] निग्गंथी वा आयरिय-उवज्झायाणं

देवाणुप्पिया ! समणं भगवं महावीरं वंदामि णमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामि— एवं संपेहेइ, संपेहित्ता ण्हाए ।

१. सं० पा०—ण्हाए जाव सुद्धप्पावेसाइं ।

२. विभक्तिरहितं पदम् ।

३. सं० पा०—पावयणं जाव पव्वइए ।

४, ५. भग० ६।३३ ।

६. छेदइत्ता (ग, घ) ।

७. तत्थ (ख, ग, घ) ।

८. ठिई पण्णत्ता (क, ख) ।

९. ना० १।१।२१२ ।

१०. सं० पा०—धम्मो त्ति वा जाव विजयस्स ।

११. °सारक्खणट्ठयाए (ख); सरीररक्खणट्ठाए (ग) ।

१२. सं० पा०—निग्गथे वा जाव पव्वइए ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइए समाणे ववगय-ण्हाणुमद्दण-पुप्फ-गंध-मल्लालंकार-विभूसे[1] इमस्स ओरालिय-सरीरस्स नो वण्णहेउं वा 'नो रूवहेउं वा नो बलहेउं वा नो विसयहेउं वा'[2] तं विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं आहारमाहारेइ, नण्णत्थ नाणदंसणचरित्ताणं वहणट्ठयाए, से णं इहलोए चेव बहूणं समणाणं बहूणं[3] समणीणं बहूणं[4] सावगाणं[5] बहूणं सावियाण य अच्चणिज्जे[6] •वंदणिज्जे नमंसणिज्जे पूयणिज्जे सक्कारणिज्जे सम्माणणिज्जे कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं विणएणं° पज्जुवासणिज्जे भवइ,

परलोए वि य णं नो बहूणि हत्थच्छेयणाणि य कण्णच्छेयणाणि य नासाछेयणाणि य एवं हिययउप्पायणाणि[7] य वसणुप्पायणाणि य उल्लंबणाणि य पाविहिइ, 'पुणो अणाइयं'[8] च णं अणवदग्गं दीहमद्धं[9] •चाउरंतं संसारकंतारं° वीईवइस्सइ—जहा व से धणे सत्थवाहे ॥

निक्खेव-पदं

७७. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[10] संपत्तेणं दोच्चस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते—त्ति बेमि ॥

वृत्तिकृता समुद्धृता निगमनगाथा

सिवसाहणेसु आहार-विरहिओ जं न वट्टए देहो ।
तम्हा धणो व्व विजयं, साहू तं तेण पोसेज्जा ॥१॥

---

१. विभूसिते (ख, ग) ।
२. रूवहेउं वा बलविसयहेउं वा (क, ख, ग, घ) । असौपाठ-संघटना १।१८।६१ सूत्रस्याधारेण कृतास्ति ।
३, ४. × (क, ख, ग, घ) ।
५. सावगाण य (क, ख, ग) ।
६. सं० पा०—अच्चणिज्जे जाव पज्जुवासणिज्जे ।
७. °उप्पाडणाणि य (क) ।
८. अणाईयं (ख, घ); अणातीतं (ग) ।
९. सं० पा०—दीहमद्धं जाव वीईवइस्सइ ।
१०. ना० १।१।७ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तच्चं अज्झयणं

अंडे

उक्खेव-पद

१. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं दोच्चस्स अज्झयणस्स नायाधम्मकहाणं अयमट्ठे पण्णत्ते, तच्चस्स णं भंते ! नायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?

२. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नामं नयरी होत्था—वण्णओ[1] ।

३. तीसे णं चंपाए नयरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए सुभूमिभागे नामं उज्जाणे—'सव्वोउय-पुप्फ-फल-समिद्धे'[2] सुरम्मे नंदणवणे[3] इव सुह-सुरभि-सीयलच्छायाए समणुबद्धे ।।

४. तस्स णं सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स उत्तरओ[4] एगदेसम्मि मालुयाकच्छए होत्था—वण्णओ[5] ।।

मयूरी अंड-पदं

५. तत्थ णं एगा वणमयूरी दो पुट्ठे परियागए पिट्टुंडी[6]-पंडुरे[7] निव्वणे निरुवहए भिण्णमुट्ठिप्पमाणे मयूरी-अंडए पसवइ, पसवित्ता सएणं[8] पक्खवाएणं सारक्खमाणी संगोवेमाणी[9] संविट्ठेमाणी[10] विहरइ ।।

---

१. ओ० सू० १ ।

२. सव्वोउए (वृ); सव्वोउय (क, ख, ग, घ, वृपा); वृत्तिकृता अत्र द्वयोरपि पाठयोः समीक्षा कृतास्ति यथा—सव्वोउएत्ति—सर्वे ऋतवो वसन्तादयः, तत्संपाद्यकुसुमादिभावानां वनस्पतीनां सद्भावात्, यत्र तत्तथा । क्वचित् 'सव्वोउयत्ति' दृश्यते तेन च 'सव्वोउयपुप्फफलसमिद्धे' इत्येतत् सूचितम् (वृ) ।

३. नंदणे वणे (ख) ।

४. उत्तर (क, ख, ग) ।

५. ना० १।२।६ ।

६. पिट्ठपिंडी (क); वृत्तौ 'पिष्टस्य-शालिलोटस्य उंडी—पिंडी' इति व्याख्यातमस्ति । असौ व्याख्यांशः मूलपाठे पि संक्रान्तः ।

७. पंडरे (क, ग) ।

८. सतेणं (ख, घ) ।

९. संगोवमाणी (ख); संगोयमाणी (ग) ।

१०. संचिट्ठमाणी (क); संचिट्ठेमाणी (ख, ग, घ); असौ पाठः वृत्त्याधारेण स्वीकृतः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सत्थवाहदारग-पदं

६. तत्थ णं चंपाए नयरीए दुवे सत्थवाहदारगा परिवसंति, तं जहा—जिणदत्तपुत्ते[1] य सागरदत्तपुत्ते[2] य—सहजायया सहवड्ढियया सहपंसुकीलियया सहदारदरिसी अण्णमण्णमणुरत्तया अण्णमण्णमणुव्वयया[3] अण्णमण्णच्छंदाणुवत्तया अण्णमण्णहिय-इच्छियकारया[4] अण्णमण्णेसु गिहेसु किच्चाइं करणिज्जाइं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति ।।

७. तए णं तेसिं सत्थवाहदारगाणं अण्णया कयाइं एगयओ सहियाणं समुवागयाणं[5] सण्णिसण्णाणं सण्णिविट्ठाणं इमेयारूवे मिहोकहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था—जण्णं देवाणुप्पिया! अम्हं सुहं वा दुक्खं वा पव्वज्जा वा विदेसगमणं वा समुप्पज्जइ, तण्णं अम्हेहिं एगयओ समेच्चा[6] नित्थरियव्वं ति कट्टु अण्णमण्णमेयारूवं संगारं[7] पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता सकम्मसंपउत्ता जाया यावि होत्था ।।

देवदत्ता गणिया-पदं

८. तत्थ णं चंपाए नयरीए देवदत्ता नामं गणिया परिवसइ—अड्ढा[8] •दित्ता वित्ता वित्थिण्ण-विउल-भवण-सयणासण-जाण-वाहणा बहुधण-जायरूव-रयया आओग-पओग-संपउत्ता विच्छड्डिय-पउर°-भत्तपाणा चउसट्ठिकलापंडिया चउसट्ठि-गणियागुणोववेया अउणत्तीसं विसेसे रममाणी एक्कवीस[9]-रइगुणप्पहाणा बत्तीस-पुरिसोवयारकुसला नवंगसुत्तपडिबोहिया अट्ठारसदेसीभासाविसारया सिंगारागारचारुवेसा संगय-गय-हसिय[10]-•भणिय-चेट्ठिय-विलाससंलावुल्लाव-निउण-जुत्तोवयारकुसला° ऊसियज्झया सहस्सलंभा विदिण्णछत्त-चामर-बालवीयणिया कण्णीरहप्पयाया वि होत्था ।

बहूणं गणियासहस्साणं[11] आहेवच्चं[12] •पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणा-ईसर-सेणावच्चं कारेमाणी पालेमाणी महयाऽहय-नट्ट-गीय-वाइय-तंती-तल-ताल-तुडिय-घण-मुइंग-पडुप्पवाइयरवेणं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी° विहरइ ।।

---

१. °उत्ते (ग)।
२. °उत्ते (ग)।
३. °मणुव्वया (ग)।
४. तिच्छियकारया (ख, ग, घ)।
५. समुवगयाणं (क, ख, ग)।
६. संहिच्चा (वृपा)।
७. संगरं (वृपा)।
८. सं० पा०—अड्ढा जाव भत्तपाणा।
९. एक्कवीसं (क)।
१०. सं० पा०—संगयगयहसिय (अतोग्रे वृत्तौ वाचनान्तरं लभ्यते—वाचनान्तरे त्विदमधिकम्—सुंदरथण-जघण-वयण-चरण-नयण-लावण्ण-रूव-जोव्वणविलासकलिया (वृ)। ओवाइय-वाचनान्तरे किंचिद्भेदोस्ति-द्रष्टव्यम्—ओवाइयं पृष्ठ १३९।
११. °सहस्सीणं (ख)।
१२. सं० पा०—आहेवच्चं जाव विहरइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सत्थवाहदारगाणं उज्जाणकीडा-पदं

९. तए णं तेसिं सत्थवाहदारगाणं अण्णया कयाइ पुव्वावरण्हकालसमयंसि[1] जिमिय-भुत्तुत्तरागयाणं समाणाणं आयंताणं चोक्खाणं परमसुइभूयाणं सुहासणवर-गयाणं इमेयारूवे मिहोकहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था—सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया! कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव[2] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेत्ता तं विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं धूव-पुप्फ-गंध-वत्थ-मल्लालंकारं[3] गहाय देवदत्ताए गणियाए सद्धिं सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स उज्जाणसिरिं पच्चणुब्भव-माणाणं विहरित्तए त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते कोडुंबियपुरिसे सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं देवाणुप्पिया! विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडेह, उवक्ख-डेत्ता तं विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं धूव-पुप्फ-गंध-वत्थ-मल्लालंकारं गहाय जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे जेणेव नंदा पुक्खरिणी तेणेव[4] उवागच्छह, उवागच्छित्ता नंदाए पोक्खरिणीए[5] अदूरसामंते थूणामंडवं[6] आहणह—आसिय-सम्मज्जिओवलित्तं[7] •पंचवण्ण-सरससुरभि-मुक्क-पुप्फपुंजोवयारकलियं काला-गरु-पवरकुंदुरुक्क-तुरुक्क-धूव-डज्झंत-सुरभि-मघमघेंत-गंधुद्धयाभिरामं सुगंधवर-गंधगंधियं गंधवट्टिभूयं° करेह, करेत्ता अम्हे पडिवालेमाणा-पडिवालेमाणा चिट्ठह जाव चिट्ठंति॥

१०. तए णं ते सत्थवाहदारगा दोच्चंपि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव [भो देवाणुप्पिया!?] 'लहुकरण-जुत्त-जोइयं'[8] समखुर-वालिहाण-'समलिहिय-तिक्खग्गसिंगएहिं'[9] रययामय-घंट-सुत्तरज्जु-पवरकंचण-

---

१. पुव्वावरद्ध° (क)।

२. ना० १।१।२४।

३. × (ख, ग, घ)।

४. तेणामेव (क, ग, घ)।

५. पुक्खरिणीए (क, ख)।

६. थूण° (ख)।

७. सं० पा०—सम्मज्जिओवलित्तं सुगंधं जाव कलियं (क, ख, ग, घ); अत्र पाठसंक्षेपे कश्चिद् विपर्ययः संभाव्यते। १।१।३३ सूत्रे 'सम्मज्जिओवलित्तं जाव सुगंधवरगंधियं' अस्ति, तथैव अत्रापि 'सम्मज्जिओवलित्तं जाव गंधवट्टिभूयं' इति संक्षेपः उपयुक्तः स्यात्। 'सम्मज्जिओवलित्तं' इति पाठानन्तरं 'सुगंध' इति पदं क्वापि नोपलभ्यते।

८. लहुकरणजुत्तएहिं जोइयं (वृपा)।

९. समलिहियं तिक्खसिंगएहिं (क, घ); समलिहिय-सिंगएहिं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खचिय-नत्थपग्गहोग्गहियएहिं[1] नीलुप्पलकयामेलएहिं पवर-गोण-जुवाणएहिं 'नाना-मणि-रयण-कंचण[2]-घंटियाजालपरिक्खित्तं'[3] पवरलक्खणोववेयं जुत्तामेव पवहणं उवणेह। ते वि तहेव उवणेंति॥

११. तए णं ते सत्थवाहदारगा ण्हाया[4] •कयबलिकम्मा कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ता अप्पमहग्घाभरणालंकिय॰ सरीरा पवहणं दुरुहंति, दुरुहित्ता जेणेव देवदत्ताए गणियाए गिहे[5] तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पवहणाओ पच्चोरुहंति, पच्चोरुहित्ता देवदत्ताए गणियाए गिहं[6] अणुप्पविसंति॥

१२. तए णं सा देवदत्ता गणिया ते सत्थवाहदारए एज्जमाणे पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठा आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता ते सत्थवाहदारए एवं वयासी—संदिसंतु णं देवाणुप्पिया! किमिहागमणप्पओयणं[7]?

१३. तए णं ते सत्थवाहदारगा देवदत्तं गणियं एवं वयासी—इच्छामो णं देवाणुप्पिए! तुमे[8] सद्धिं सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स उज्जाणसिरिं पच्चणुब्भवमाणा विहरित्तए॥

१४. तए णं सा देवदत्ता तेसिं सत्थवाहदारगाणं एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता ण्हाया कयबलिकम्मा[9] जाव[10] सिरी-समाणवेसा जेणेव सत्थवाहदारगा तेणेव उवागया[11]॥

१५. तए णं ते सत्थवाहदारगा देवत्ताए गणियाए सद्धिं जाणं दुरुहंति, दुरुहित्ता चंपाए नयरीए मज्झंमज्झेणं जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे जेणेव नंदा पोक्खरिणी तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पवहणाओ पच्चोरुहंति, पच्चोरुहित्ता नंदं[12]

(जंबूणयामय-कलाव-जुत्त-पइविसिट्ठएहिं। उवासगदसाओ १।४०)। वृत्तौ—जंबूणयामय॰ इति पाठो वाचनान्तरत्वेन उल्लिखितोस्ति।

१. ॰वग्गहियएहिं (क); ॰वग्गहोवग्गहिएहिं (ख, ग)

२. × (क)।

३. नाणा-मणि-कणग-घंटियाजालपरिगयं सुजाय-जुग-जुत्त-उज्जुग-पसत्थ-सुविरइय-निम्मियं (उवासगदसाओ १।४७)। वृत्तौ—॰'सुजायजुग' ॰इति पाठः वाचनान्तरत्वेन उल्लिखितोस्ति।

४. सं॰ पा॰—ण्हाया जाव सरीरा।

५. गेहे (ख)।

६. गेहे (क, घ)।

७. पयोयणं (ख); पतोयणं (घ)।

८. तुम्हेहिं (ग); तुब्भेहिं (क्वचित्)।

९. कयबलिकम्मा किं ते (क); कयबलिकम्मा किं ते पवर (ग); कयबलिकम्मा किं ते वर (घ)।

१०. ना॰ १।१।३३।

११. उवागच्छंति (ख); समागया (घ)।

१२. नंदा (ख)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पोक्खरिणिं ओगाहेंति, ओगाहेत्ता जलमज्जणं करेंति, करेत्ता जलकिड्डं करेंति, करेत्ता ण्हाया देवदत्ताए सद्धिं [नंदाओ पोक्खरिणीओ[1] ?] पच्चुत्तरंति, जेणेव थूणामंडवे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता [थूणामंडवं[2] ?] अणुप्पविसंति, अणुप्पविसित्ता सव्वालंकारभूसिया आसत्था वीसत्था सुहासणवरगया देवदत्ताए सद्धिं तं विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं धूव-पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारं आसाएमाणा विसाएमाणा परिभाएमाणा परिभुंजेमाणा एवं च णं विहरंति। जिमियभुत्तुत्तरागया वि य णं समाणा [आयंता चोक्खा परमसुइभूया[3] ?] देवदत्ताए सद्धिं विपुलाइं कामभोगाइं भुंजमाणा विहरंति॥

१६. तए णं ते सत्थवाहदारगा पुव्वावरण्हकालसमयंसि देवदत्ताए गणियाए सद्धिं थूणामंडवाओ पडिणिक्खमंति, पडिणिक्खमित्ता हत्थसंगेल्लीए[4] सुभूमिभागे उज्जाणे बहूसु आलिघरएसु य[5] •कयलिघरएसु य लताघरएसु य अच्छणघरएसु य पेच्छणघरएसु य पसाहणघरएसु य मोहणघरएसु य सालघरएसु य जालघरएसु य° कुसुमघरएसु य उज्जाणसिरिं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति॥

सत्थवाहदारगेहिं मयूरीअंडगाणयण-पदं

१७. तए णं ते सत्थवाहदारगा जेणेव से मालुयाकच्छए तेणेव पहारेत्थ गमणाए॥

१८. तए णं सा वणमयूरी ते सत्थवाहदारए एज्जमाणे पासइ, पासित्ता भीया तत्था महया-महया सद्देणं केकारवं[6] 'विणिम्मुयमाणी-विणिम्मुयमाणी'[7] मालुयाकच्छाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता एगंसि रुक्खडालयंसि[8] ठिच्चा ते सत्थवाहदारए मालुयाकच्छगं[9] च अणिमिसाए दिट्ठीए पेच्छमाणी[10] चिट्ठइ॥

१९. तए णं ते सत्थवाहदारगा अण्णमण्णं सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—जहा[11] णं देवाणुप्पिया! एसा वणमयूरी अम्हे एज्जमाणे पासित्ता भीया तत्था तसिया उव्विग्गा पलाया महया-महया सद्देणं[12] •केकारवं विणिम्मुयमाणी-विणिम्मुयमाणी मालुयाकच्छाओ पडिणिक्खमइ पडिणिक्खमित्ता एगंसि

---

१. द्रष्टव्यम्—१।२।१४ सूत्रस्य—पुक्खरिणीओ पच्चोरुहइ—इति पदम्।

२. द्रष्टव्यम्—१।३।११ सूत्रस्य—देवदत्ताए गणियाए गिहं अणुप्पविसंति—इति पदम्।

३. द्रष्टव्यम्—१।३।६।

४. संगिल्लीए (क, घ)।

५. सं० पा०—आलिघरएसु य जाव कुसुमघरएसु। वृत्तिकृता पूर्णः पाठो व्याख्यातः, संक्षिप्तपाठस्य सूचनापि कृतास्ति, यथा—क्वचित् कदलीगृहादिपदानि यावच्छब्देन सूच्यन्ते (वृ)।

६. केक्कारवं (क, ख, घ)।

७. विणिमुयमाणी-विणिमुयमाणी (ग)।

८. °डालंसि (घ)।

९. °कच्छं (क, ख, ग, घ)।

१०. देहमाणी (क, ग, घ)।

११. जया (क)।

१२. सं० पा०—सद्देणं जाव अम्हे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रुक्खडालयंसि ठिच्चा ° अम्हे मालुयाकच्छयं[1] च [अणिमिसाए दिट्ठीए ?] पेच्छमाणी[2] चिट्ठइ, तं भवियव्वमेत्थ कारणेणं ति कट्टु मालुयाकच्छयं अंतो अणुप्पविसंति। तत्थ णं दो पुट्ठे परियागए[3] •पिट्ठुंडी-पंडुरे निव्वणे निरुवहए भिण्णमुट्ठिप्पमाणे मयूरी-अंडए° पासित्ता अण्णमण्णं सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—सेयं खलु देवाणुप्पिया! अम्हं इमे वणमयूरी-अंडए साणं जातिमंताणं[4] कुक्कुडियाणं अंडएसु पक्खिवावित्तए। तए णं ताओ जातिमंताओ कुक्कुडियाओ एए अंडए सए य अंडए सएणं पक्खवाएणं सारक्खमाणीओ संगोवेमाणीओ विहरिस्संति। तए णं अम्हं एत्थं[5] दो कीलावणगा मयूरी-पोयगा भविस्संति त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता सए सए दासचेडए[6] सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह[7] णं तुब्भे देवाणुप्पिया! इमे अंडए गहाय सगाणं जातिमंताणं कुक्कुडीणं अंडएसु पक्खिवह जाव ते वि पक्खिवेंति॥

२०. तए णं ते सत्थवाहदारगा देवदत्ताए गणियाए सद्धिं सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स उज्जाणसिरिं पच्चणुब्भवमाणा विहरित्ता तमेव जाणं दुरूढा समाणा जेणेव चंपा नयरी जेणेव देवदत्ताए गणियाए गिहे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता देवदत्ताए गिहं अणुप्पविसंति, अणुप्पविसित्ता देवदत्ताए गणियाए विउलं जीवियारिहं पीइदाणं दलयंति, दलइत्ता सक्कारेंति सम्माणेंति, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता देवदत्ताए गिहाओ पडिणिक्खमंति, पडिणिक्खमित्ता जेणेव साइं-साइं गिहाइं तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सकम्मसंपउत्ता जाया यावि होत्था॥

सागरदत्तपुत्तस्स संदेहेण अंडयविणास-पदं

२१. तत्थ णं जे से सागरदत्तपुत्ते[8] सत्थवाहदारए से णं कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव[9] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते जेणेव से वणमयूरी-अंडए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तंसि मयूरी-अंडयंसि संकिए कंखिए वितिगिच्छसमावण्णे भेयसमावण्णे कलुससमावण्णे किण्णं ममं एत्थ कीलावणए[10] मयूरी-पोयए भविस्सइ उदाहु नो भविस्सइ? त्ति कट्टु तं मयूरी-अंडयं अभिक्खणं-अभिक्खणं उव्वत्तेइ परियत्तेइ आसारेइ संसारेइ चालेइ फंदेइ घट्टेइ खोभेइ अभिक्खणं-अभिक्खणं कण्णमूलंसि टिट्टियावेइ[11]।

---

१. °कच्छकं (क); कच्छगं (ग)।
२. पेहमाणी (क, घ); पिच्छमाणी (ग)।
३. सं० पा०—परियागए जाव पासित्ता।
४. जायमेत्ताणं (क)।
५. एत्थ (घ)।
६. दासचेडे (क)।
७. एह गच्छह (क)।
८. सागरदत्तस्स पुत्ते (ग)।
९. ना० १।१।२४।
१०. किलावण (ख, ग, घ)।
११. ढिडियावेइ (क); डिट्टियावेइ (ख)। टिट्टियारेइ (ग)।

२२. तए णं से मयूरी[1]-अंडए अभिक्खणं-अभिक्खणं उव्वत्तिज्जमाणे[2] •परियत्तिज्जमाणे आसारिज्जमाणे संसारिज्जमाणे चालिज्जमाणे फंदिज्जमाणे घट्टिज्जमाणे खोभिज्जमाणे अभिक्खणं-अभिक्खणं कण्णमूलंसि° टिट्टियावेज्जमाणे पोच्चडे जाए यावि होत्था ।।

२३. तए णं से सागरदत्तपुत्ते सत्थवाहदारए अण्णया कयाइं जेणेव से मयूरी-अंडए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं मयूरी-अंडयं पोच्चडमेव[3] पासइ, अहो णं ममं एत्थ[4] कीलावणए मयूरी-पोयए न जाए त्ति कट्टु ओहयमण[5]•संकप्पे करतलपल्हत्थमुहे अट्टज्झाणोवगए° झियाइ[6] ।।

२४. एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा आयरिय-उवज्झायाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए[7] समाणे पंचमहव्वएसु[8] छज्जीवनिकाएसु निग्गंथे पावयणे संकिए[9] •कंखिए वितिगिछसमावण्णे भेयसमावण्णे°कलुससमावण्णे, से णं इहभवे चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं[10] सावगाणं बहूणं[11] सावियाण य हीलणिज्जे निंदणिज्जे खिंसणिज्जे गरहणिज्जे परिभवणिज्जे[12],
परलोए वि य णं आगच्छइ बहूणि दंडणाणि य[13] •बहूणि मुंडणाणि य बहूणि तज्जणाणि य बहूणि तालणाणि य बहूणि अंदुबंधणाणि य बहूणि घोलणाणि य बहूणि माइमरणाणि य बहूणि पिइमरणाणि य बहूणि भाइमरणाणि य बहूणि भगिणीमरणाणि य बहूणि भज्जामरणाणि य बहूणि पुत्तमरणाणि य बहूणि धूयमरणाणि य बहूणि सुण्हामरणाणि य,
बहूणं दारिद्दाणं बहूणं दोहग्गाणं बहूणं अप्पियसंवासाणं बहूणं पियविप्पओगाणं बहूणं दुक्ख-दोमणस्साणं आभागी भविस्सति, अणादियं च णं अणवयग्गं दीहमद्धं चाउरंतं संसारकंतारं भुज्जो-भुज्जो° अणुपरियट्टिस्सइ[14] ।।

---

१. वणमयूरी (ग, घ)।
२. सं० पा०—उव्वत्तिज्जमाणे जाव टिट्टियावेज्जमाणे।
३. पोच्चडमेयं (ख)।
४. सत्थवाह (क, ख, ग)।
५. सं० पा०—ओहयमण जाव झियायइ।
६. झियायइ (ख, घ); झायति (ग)।
७. पव्वज्जिते (ख); पव्वतिए (ग, घ)।
८. °महव्वए (ख, ग, घ)।
९. सं० पा०—संकिए जाव कलुससमावण्णे।
१०. × (ख, ग)।
११. × (क, ख, ग)।
१२. परभवणिज्जे (क, ख, घ); भगवती (५।८१) सूत्रे 'गरहह अवमन्नह' इति पदमस्ति।
१३. सं० पा०—दंडणाणि य जाव अणुपरियट्टइ।
१४. अणुपरियट्टइ (क, ख, ग, घ)। 'भविस्सति' इति क्रियापदस्यानन्तरं 'अणुपरियट्टिस्सइ' इति पाठो युज्यते। सप्तमाध्ययनस्य २७ सूत्रेऽपि एवमेव पाठो लभ्यते। तेनात्रापि तथैव स्वीकृतः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जिणदत्तपुत्तस्स सद्धाए मयूर-लद्धि-पदं

२५. तए णं से जिणदत्तपुत्ते जेणेव से मयूरी-अंडए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तंसि मयूरी-अंडयंसि निस्संकिए [निक्कंखिए निव्वितिगिंछे ?][1] 'सुव्वत्तए णं'[2] मम एत्थ कीलावणए मयूरी-पोयए भविस्सइ त्ति कट्टु तं मयूरी-अंडयं अभिक्खणं-अभिक्खणं नो उव्वत्तेइ[3] •नो परियत्तेइ नो आसारेइ नो संसारेइ नो चालेइ नो फंदेइ नो घट्टेइ नो खोभेइ अभिक्खणं-अभिक्खणं कण्णमूलंसि° नो टिट्टियावेइ।

२६. तए णं से मयूरी-अंडए अणुव्वत्तिज्जमाणे जाव[4] अटिट्टियाविज्जमाणे कालेणं समएणं उब्भिन्ने[5] मयूरी-पोयए एत्थ जाए॥

२७. तए णं से जिणदत्तपुत्ते तं मयूरी-पोययं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठे मयूर-पोसए सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—तुब्भे णं देवाणुप्पिया! इमं मयूर-पोयगं बहूहिं मयूर-पोसण-पाओग्गेहिं दव्वेहिं अणुपुव्वेणं सारक्खमाणा संगोवेमाणा संवड्ढेह[6], नदुल्लगं[7] च सिक्खावेह॥

२८. तए णं ते मयूर-पोसगा जिणदत्तपुत्तस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, तं मयूर-पोयगं गेण्हंति, जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छंति, तं मयूर-पोयगं[8] •बहूहिं मयूर-पोसण-पाओग्गेहिं दव्वेहिं अणुपुव्वेणं सारक्खमाणा संगोवेमाणा संवड्ढेंति°, नदुल्लगं च सिक्खावेंति॥

२९. तए णं से मयूर-पोयए उम्मुक्कबालभावे विण्णय[9]-परिणयमेत्ते जोव्वणगमणुपत्ते लक्खण-वंजण-गुणोववेए माणुम्माण-प्पमाणपडिपुण्णपक्ख-पेहुणकलावे 'विचित्त-पिच्छसतचंदए'[10] नीलकंठए नच्चणसीलए एगाए चप्पुडियाए कयाए समाणीए अणेगाइं नदुल्लगसयाइं केकाइयसयाणि[11] य करेमाणे विहरइ॥

३०. तए णं ते मयूर-पोसगा तं मयूर-पोयगं उम्मुक्कबालभावं जाव[12] केकाइय-सयाणि य करेमाणं पासित्ता णं तं मयूर-पोयगं गेण्हंति, गेण्हित्ता जिणदत्तपुत्तस्स उवणेंति॥

३१. तए णं से जिणदत्तपुत्ते सत्थवाहदारए मयूर-पोयगं उम्मुक्कबालभावं जाव[13]

---

१. द्रष्टव्यम्—३४ सूत्रम्।
२. सुव्वत्तणं (क, घ); × (ख); सुद्धत्तणं (ग)।
३. सं० पा०—उव्वत्तेइ जाव नो टिट्टियावेइ।
४. ना० १।३।२५।
५. उब्भिन्न (ग)।
६. संवट्टेह (क, ख, ग, घ)।
७. नउल्लगं (ग); नट्टुल्लगं (घ)।
८. सं० पा०—मयूरपोयगं जाव नदुल्लगं।
९. विन्नाण (क); विन्नाय (ख, ग, घ)।
१०. विचित्तपिच्छोसत्तचदए (ख, ग, वृपा)।
११. केयाणियगसइयाइं (क); केयाइग° (ख, ग); केकातित° (घ)।
१२. ना० १।३।२९।
१३. ना० १।३।२९।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

केकाइयसयाणि य करेमाणं पासित्ता हट्ठतुट्ठे तेसिं विपुलं जीवियारिहं पीइदाणं[1] •दलयइ, दलइत्ता° पडिविसज्जेइ ।।

३२. तए णं से मयूर-पोयगे जिणदत्तपुत्तेणं एगाए चप्पुडियाए कयाए समाणीए नंगोला-भंग-सिरोधरे सेयावंगे[2] ओयारिय[3]-पइण्णपक्खे उक्खित्तचंदकाइय-कलावे केक्काइयसयाणि मुंचमाणे[4] नच्चइ ।।

३३. तए णं से जिणदत्तपुत्ते[5] तेणं मयूर-पोयएणं चंपाए नयरीए सिंघाडग[6]-•तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह°पहेसु सएहि य साहस्सिएहि य सयसाहस्सिएहि य पणिएहिं[7] जयं करेमाणे विहरइ ।।

३४. एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा आयरिय-उवज्झायाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए समाणे पंचमहव्वएसु छज्जीवनिकाएसु निग्गंथे पावयणे निस्संकिए निक्कंखिए निव्वितिगिंछे[8], से णं इहभवे चेव बहूणं समणाणं[9] •बहूणं समणीणं बहूणं सावगाणं बहूणं सावियाण य अच्चणिज्जे वंदणिज्जे नमंसणिज्जे पूयणिज्जे सक्कारणिज्जे सम्माणणिज्जे कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं विणएणं पज्जुवासणिज्जे भवइ ।

परलोए वि य णं नो बहूणि हत्थच्छेयणाणि य कण्णच्छेयणाणि य नासाछेयणाणि य एवं—हिययउप्पायणाणि य वसणुप्पायणाणि य उल्लंबणाणि य पाविहिइ, पुणो अणाइयं च णं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतं संसारकंतारं° वीईवइस्सइ ।।

निक्खेव-पदं

३५. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं आइगरेणं तित्थगरेणं जाव[10] सिद्धिगइनामधेज्जं ठाणं संपत्तेणं 'तच्चस्स नायज्झयणस्स'[11] अयमट्ठे पण्णत्ते ।

—त्ति बेमि ।।

वृत्तिकृता समुद्धृता निगमनगाथा—

जिणवरभासियभावेसु, भावसच्चेसु भावओ मइमं ।
नो कुज्जा संदेहं, संदेहोऽणत्थहेउ त्ति ।।१।।

---

१. सं० पा०—पीइदाणं जाव पडिविसज्जेइ ।
२. सेयावण्णे (घ, वृ); सेयावंगे (वृपा) ।
३. ओरालिय (ग, घ) ।
४. मुच्चमाणे (क, ख, ग, घ); विमुंचमाणे (क्व०) ।
५. जिणयत्त° (क) ।
६. सं० पा०—सिंघाडग जाव पहेसु ।
७. पणिएहि य (ख, ग, घ) ।
८. निव्वितिगिच्छे (ख, घ) ।
९. सं० पा०—समणाणं जाव वीईवइस्सइ ।
१०. ना० १।१।७ ।
११. नायाणं तच्चस्स अज्झयणस्स (क, ख, ग); नायाणं तच्चस्स णायाज्झयणस्स (घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निसंदेहत्तं पुण, गुणहेउं जं तओ तयं कज्जं ।
एत्थं दो सेट्ठिसुया, अंडयगाही उदाहरणं ॥२॥

कत्थइ मइदुब्बल्लेण, तव्विहायरियविरहओ वावि ।
नेयगहणत्तणेणं, नाणावरणोदयेणं च ॥३॥

हेऊदाहरणासंभवे य, सइ सुट्ठु जं न बुज्झेज्जा ।
सव्वण्णुमयमवितहं, तहावि इइ चिंतए मइमं ॥४॥

अणुवकय-पराणुग्गह-परायणा उ जिणा जगप्पवरा ।
जिय - राग - दोस - मोहा, य नन्नहावाइणो तेण ॥५॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चउत्थं अज्झयणं

कुम्मे

उक्खेव-पदं

१. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं 'तच्चस्स नायज्झयणस्स'[1] अयमट्ठे पण्णत्ते, चउत्थस्स णं भंते ! नायज्झयणस्स[2] के अट्ठे पण्णत्ते ?

२. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणारसी[3] नामं नयरी होत्था—वण्णओ[4] ।।

३. तीसे णं वाणारसीए नयरीए उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए गंगाए महानईए मयंग-तीरद्दहे नामं दहे होत्था—अणुपुव्वसुजायवप्प[5]-गंभीरसीयलजले 'अच्छ-विमल-सलिल-पलिच्छण्णे'[6] संछण्ण-पत्त-पुप्फ-पलासे[7] बहुउप्पल-पउम-कुमुय-नलिण-सुभग-सोगंधिय-'पुंडरीय - महापुंडरीय'[8] - सयपत्त-सहस्सपत्त - केसरपुप्फोवचिए[9] पासाईए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे ।।

४. 'तत्थ णं बहूणं मच्छाण य कच्छभाण य गाहाण य मगराण य संसुमाराण य सयाणि य सहस्साणि य सयसहस्साणि य जूहाइं निब्भयाइं निरुव्विग्गाइं सुहंसुहेणं अभिरममाणाइं-अभिरममाणाइं विहरंति'[10] ।।

---

१. नायाणं तच्चस्स° (ख, ग); नायाण तच्चस्स अज्झयणस्स (घ) ।

२. नायाणं (क, ख, घ)

३. वाराणसी (ग) ।

४. ओ० सू० १ ।

५. आणुपुव्व° (घ) ।

६. × (वृ); अच्छ-विमल-सलिल-पलिच्छन्ने (वृपा) ।

७. × (वृ); क्वचित्तु संछन्नेत्यादि सूचनादिदं दृश्यम्—संछन्नपउमपत्त - विसमुणाले । क्वचिदेवं पाठः—संछन्नपत्तपुप्फपलासे (वृ) ।

८. पोंडरीय-महापोंडरीय (ग) ।

९. °चिए छप्पय-परिभुज्जमाण-कमले अच्छ-विमल-सलिल-पत्थ-पुण्णे परिहत्थभमंत-मच्छ - कच्छभ - अणेगसउणगण - मिहुणय पविचरिए (वृ); असौ पाठः आदर्शेषु नोपलभ्यते ।

१०. 'तत्थ णं' इत्यादि आदर्शगतः पाठः नास्ति वृत्तौ व्याख्यातः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५. तस्स णं मयंगतीरद्दहस्स अदूरसामंते, एत्थ णं महं एगे[1] मालुयाकच्छए होत्था--वण्णओ[2] ॥

पावसियालग-पद

६. तत्थ णं दुवे पावसियालगा परिवसंति—पावा चंडा रुद्दा तल्लिच्छा साहसिया लोहियपाणी आमिसत्थी आमिसाहारा आमिसप्पिया आमिसलोला आमिसं गवेसमाणा रत्तिवियालचारिणो दिया पच्छन्नं[3] या वि चिट्ठंति ॥

कुम्म-पदं

७. तए णं ताओ मयंगतीरद्दहाओ अण्णया कयाइ सूरियंसि चिरत्थमियंसि लुलियाए संझाए पविरलमाणुसंसि निसंत-पडिनियंतंसि समाणंसि दुवे कुम्मगा आहारत्थी आहारं गवेसमाणा सणियं-सणियं उत्तरंति, तस्सेव[4] मयंगतीरद्दहस्स परिपेरंतेणं सव्वओ समंता परिघोलमाणा-परिघोलमाणा 'वित्तिं कप्पेमाणा'[5] विहरंति ॥

पावसियालगाणं आहारगवेसण-पदं

८. तयाणंतरं च णं ते पावसियालगा आहारत्थी[6] आहारं गवेसमाणा मालुयाकच्छगाओ पडिणिक्खमंति, पडिणिक्खमित्ता जेणेव मयंगतीरद्दहे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तस्सेव मयंगतीरद्दहस्स परिपेरंतेणं परिघोलमाणा-परिघोलमाणा वित्तिं कप्पेमाणा विहरंति ॥

९. तए णं ते पावसियालगा[7] ते कुम्मए पासंति, पासित्ता जेणेव ते कुम्मए तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

कुम्माणं साहरण-पदं

१०. तए णं ते कुम्मगा ते पावसियालए एज्जमाणे पासंति, पासित्ता भीया तत्था तसिया उव्विग्गा संजायभया हत्थे य पाए य गीवाओ य सएहिं-सएहिं काएहिं साहरंति[8], साहरित्ता निच्चला निप्फंदा[9] तुसिणीया संचिट्ठंति ॥

---

१. वेगे (ग, घ) ।
२. ना० १।२।६ ।
३. पच्छन्न (क, ख); पच्छिन्नं (ग, घ) ।
४. तस्स य (ख); तस्से य (ग, घ) ।
५. एवं च णं (क) ।
६. आहारत्थी जाव (क, ख, ग, घ); सर्वास्वपि प्रतिषु जाव शब्दो लभ्यते किन्तु अर्थमीमांसया नासौ समीचीनः प्रतिभाति । यद्यत्र जाव शब्दः स्यात् तदा आमिसत्थी जाव आमिसं इति पाठः संगतः स्यात् । यदि पूर्ववर्तिसूत्रमनुश्रियते तदा जाव शब्दो नापेक्ष्यते ।
७. ०सियाला (ख, ग, घ) ।
८. संहरति (ग, घ) ।
९. निप्फंदा (ख, घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

११. तए णं ते पावसियालगा जेणेव ते कुम्मगा तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता ते कुम्मए[1] सव्वओ समंता उव्वत्तेंति परियत्तेंति आसारेंति संसारेंति चालेंति घट्टेंति फंदेंति खोभेंति नहेहिं आलुंपंति दंतेहि य अक्खोडेंति, नो चेव णं संचाएंति तेसिं कुम्मगाणं सरीरस्स किंचि[2] आबाहं वा 'वाबाहं वा'[3] उप्पाइत्तए छविच्छेयं वा करेत्तए ॥

१२. तए णं ते पावसियालगा ते कुम्मए दोच्चंपि तच्चंपि सव्वओ समंता उव्वत्तेंति[4] •परियत्तेंति आसारेंति संसारेंति चालेंति घट्टेंति फंदेंति खोभेंति नहेहिं आलुंपंति दंतेहि य अक्खोडेंति, नो चेव णं संचाएंति तेसिं कुम्मगाणं सरीरस्स किंचि आबाहं वा वाबाहं वा उप्पाइत्तए छविच्छेयं वा° करेत्तए, ताहे संता तंता परितंता निव्विण्णा समाणा सणियं-सणियं पच्चोसक्कंति, एगंतमवक्कमंति[5], निच्चला निप्फंदा तुसिणीया संचिट्ठंति ॥

अगुत्त-कुम्मस्स मच्चु-पदं

१३. तए[6] णं एगे कुम्मए ते पावसियालए चिरगए दूरंगए जाणित्ता सणियं-सणियं एगं पायं निच्छुभइ ॥

१४. तए णं ते पावसियालगा तेणं कुम्मएणं सणियं-सणियं एगं पायं नीणियं पासंति, पासित्ता सिग्घं तुरियं चवलं चंडं जइणं वेगियं[7] जेणेव से कुम्मए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तस्स णं कुम्मगस्स तं पायं नखेहिं आलुंपंति दंतेहिं अक्खोडेंति, तओ पच्छा मंसं च सोणियं च आहारेंति, आहारेत्ता तं कुम्मगं सव्वओ समंता उव्वत्तेंति जाव[8] नो चेव णं संचाएंति[9] •तस्स कुम्मगस्स सरीरस्स किंचि आबाहं वा वाबाहं वा उप्पाइत्तए छविच्छेयं वा करेत्तए ॥

१५. तए णं ते पावसियालगा तं कुम्मयं दोच्चंपि तच्चंपि सव्वओ समंता उव्वत्तेंति परियत्तेंति आसारेंति संसारेंति चालेंति घट्टेंति फंदेंति खोभेंति नहेहिं आलुंपंति दंतेहि य अक्खोडेंति, नो चेव णं संचाएंति तस्स कुम्मगस्स सरीरस्स किंचि आबाहं वा वाबाहं वा उप्पाइत्तए छविच्छेयं वा करेत्तए, ताहे संता तंता

---

१. कुम्मगा (क, ख, ग, घ); अग्रिमसूत्रे 'ते कुम्मए' इति पाठोस्ति, अत्रापि तथैव युज्यते ।
२. × (ग, घ) ।
३. × (क) ।
४. सं० पा०—उव्वत्तेंति जाव नो चेव णं संचाएंति करेत्तए ।
५. एगंते अवक्कमंति (क) ।
६. तत्थ (ख, ग, घ) ।
७. वेगितं (ख) ।
८. ना० १।४।११ ।
९. सं० पा०—संचाएंति° करेत्तए । ताहे दोच्चंपि अवक्कमंति ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परितंता निव्विण्णा समाणा सणियं-सणियं पच्चोसक्कंति, दोच्चंपि एगंत-मवक्कमंति ।°

एवं चत्तारि वि[1] पाया ।।

१६. •[2]तए णं से कुम्मए ते पावसियालए चिरगए दूरंगए जाणित्ता° सणियं-सणियं गीवं नीणेइ ।।

१७. तए णं ते पावसियालगा तेणं कुम्मएणं [सणियं-सणियं ?] गीवं नीणियं पासंति, पासित्ता सिग्घं तुरियं चवलं[3] •चंडं जइणं वेगियं जेणेव से कुम्मए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तस्स णं कुम्मगस्स तं गीवं ° नहेहिं [आलुंपंति ?] दंतेहिं कवालं विहाडेंति, विहाडेत्ता तं कुम्मगं जीवियाओ ववरोवेंति, ववरोवेत्ता मंसं च सोणियं च आहारेंति ।।

१८. एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा आयरिय-उवज्झायाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए समाणे[4], पंच य से इंदिया अगुत्ता भवंति, से णं इहभवे चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावगाणं बहूणं सावियाण य हीलणिज्जे[5] •निंदणिज्जे खिसणिज्जे गरहणिज्जे परिभवणिज्जे,° परलोए वि य णं आगच्छइ—बहूणि दंडणाणि[6] •य बहूणि मुंडणाणि य बहूणि तज्जणाणि य बहूणि तालणाणि य बहूणि अंदुबंधणाणि य बहूणि घोलणाणि य बहूणि माइमरणाणि य बहूणि पिइमरणाणि य बहूणि भाइमरणाणि य बहूणि भगिणीमरणाणि य बहूणि भज्जामरणाणि य बहूणि पुत्तमरणाणि य बहूणि धूयमरणाणि य बहूणि सुण्हामरणाणि य । बहूणं दारिद्दाणं बहूणं दोहग्गाणं बहूणं अप्पियसंवासाणं बहूणं पियविप्पओगाणं बहूणं दुक्ख-दोमणस्साणं आभागी भविस्सति, अणादियं च णं अणवयग्गं दीहमद्धं चाउरंतं संसारकंतारं भुज्जो-भुज्जो° अणुपरियट्टिस्सइ—जहा व से कुम्मए अगुत्तिदिए ।।

गुत्तकुम्मस्स सोक्ख-पदं

१९. तए णं ते पावसियालगा जेणेव से दोच्चे कुम्मए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तं कुम्मगं सव्वओ समंता उव्वत्तेंति[7] •परियत्तेंति आसारेंति संसारेंति चालेंति घट्टेंति फंदेंति खोभेंति नहेहिं आलुंपंति दंतेहि य अक्खोडेंति, नो चेव णं

---

१. × (ख, ग) ।

२. सं० पा०—जाव सणियं ।

३. सं० पा०—चवलं नहेहिं ।

४. 'समाणे' इत्यत्र विहरतीति शेषो द्रष्टव्यः (वृ) ।

५. सं० पा०—हीलणिज्जे° ।

६. सं० पा०—दंडणाणि जाव अणुपरियट्टइ ।

७. सं० पा०—उव्वत्तेंति जाव दंतेहिं निक्खुडेंति जाव करेत्तए ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संचाएंति तस्स कुम्मगस्स सरीरस्स किंचि आबाहं वा बाबाहं वा उप्पाइत्तए छविच्छेयं वा° करेत्तए ॥

२०. तए णं ते पावसियालगा तं कुम्मगं दोच्चंपि तच्चंपि उव्वत्तेंति जाव[1], नो चेव णं संचायंति तस्स कुम्मगस्स सरीरस्स किंचि आबाहं वा बाबाहं वा[2] •उप्पाइत्तए° छविच्छेयं वा करेत्तए, ताहे संता तंता परितंता निव्विण्णा समाणा जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया ॥

२१. तए णं से कुम्मए ते पावसियालए चिरगए दूरंगए[3] जाणित्ता सणियं-सणियं गीवं नीणेइ, नीणेत्ता दिसावलोयं करेइ, करेत्ता जमगसमगं चत्तारि वि पाए नीणेइ, नीणेत्ता ताए उक्किट्ठाए[4] •तुरियाए चवलाए चंडाए सिग्घाए उद्धयाए जइणाए छेयाए° कुम्मगईए वीईवयमाणे-वीईवयमाणे जेणेव मयंगतीरद्दहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणेणं सद्धिं अभिसमण्णागए यावि होत्था ॥

२२. एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं समणो वा समणी वा आयरिय-उवज्झायाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए समाणे[5] पंच य से इंदियाइं गुत्ताइं भवंति[6], •से णं इहभवे चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावगाणं बहूणं सावियाण य अच्चणिज्जे वंदणिज्जे नमंसणिज्जे पूयणिज्जे सक्कारणिज्जे सम्माणणिज्जे कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं विणएणं पज्जुवास-णिज्जे भवइ।

परलोए वि य णं नो बहूणि हत्थच्छेयणाणि य कण्णच्छेयणाणि य नासाछेयणाणि य एवं हिययउप्पायणाणि य वसणुप्पायणाणि य उल्लंबणाणि य पाविहिइ, पुणो अणाइयं च णं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतं संसारकंतारं वीईवइस्सइ°— जहा व से कुम्मए गुत्तिंदिए ॥

निक्खेव-पदं

२३. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं चउत्थस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते।

—त्ति बेमि ॥

---

१. ना० १।४।११।

२. सं० पा०—बाबाहं वा जाव छविच्छेयं।

३. दूरगए (क, ख, ग, घ)।

४. सं० पा०—उक्किट्ठाए ष्फ कुम्मगईए। अत्र पाठ संक्षेपः 'ष्फ' अनेन संकेतेन सूचितोस्ति। वृत्तौ पूर्णपाठस्य निर्देशो लभ्यते।

५. विहरतीति शेषः (वृ)।

६. सं० पा०—जाव जहा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वृत्तिकृता समुद्धृता निगमनगाथा—

विसएसु इंदियाइं, रुंभंता राग-दोस-निम्मुक्का।
पावेंति निव्वुइसुहं, कुम्मोव्व मयंगदहसोक्खं ॥१॥
इयरे उ अणत्थ-परंपराओ पावेंति पावकम्मवसा।
संसार-सागरगया, गोमाउग्गसियकुम्मोव्व ॥२॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पंचमं अज्झयणं

सेलगे

उक्खेव-पदं

१. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं चउत्थस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, पंचमस्स णं भंते ! नायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?

२. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं बारवती[1] नामं नयरी होत्था—पाईणपडीणायया उदीणदाहिणवित्थिण्णा नवजोयणवित्थिण्णा दुवालसजोयणायामा धणवइ-मइ-निम्मिया[2] चामीयर-पवर-पागारा नाणामणि-पंचवण्ण-कविसीसग-सोहिया अलकापुरि[3]-संकासा पमुइय-पक्कीलिया पच्चक्खं[4] देवलोगभूया ।।

३. तीसे णं बारवईए नयरीए बहिया[5] उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए रेवतगे[6] नामं पव्वए होत्था—तुंगे गगणतलमणुलिहंतसिहरे नाणाविहगुच्छ-गुम्म-लया-वल्लि-परिगए हंस-मिग-मयूर-कोंच-सारस-चक्कवाय-मयणसाल-कोइलकुलोववेए अणेगतड[7]-कडग-वियर-उज्झर-पवायपब्भारसिहरपउरे अच्छरगण-देवसंघ-चारण-विज्जाहरमिहुण-संविचिण्णे[8] निच्चच्छणए दसारवर-वीरपुरिस-तेलोक्क-बलवगाणं, सोमे सुभगे पियदंसणे सुरूवे पासाईए दरिसणीए अभिरूवे पडिरूवे ।।

---

१. बारवई (क) ।

२. निम्माया (क, ग, घ); निम्मया (ख); अस्माकं पार्श्वे वृत्तेः आदर्शद्वयमस्ति । तत्रैकस्मिन् धणवइमतिनिम्मियत्ति— 'धनपतिर्वैश्रमणः तन्मत्यानिर्मिता निरूपिता' इति पाठोस्ति । अपरस्मिनादर्शे 'धणवइमइ-निम्मायत्ति—धनपतिर्वैश्रमणः तन्मत्या-निर्म्मापिता निरूपिता' इति पाठोस्ति । आदर्शगत-पाठभेदानुसारेण वृत्तावपि लिपि-कर्त्रा भेद कृतः इति प्रतीयते ।

३. अलया (क, ख) ।

४. पच्चक्ख (ख) ।

५. बहिया (क, ख) ।

६. रेवयए (क); रेवए (घ) ।

७. °तडाग (क) ।

८. रायपसेणइयं (३२) सूत्रे 'संविकिण्णं' इति पाठो लभ्यते ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४. तस्स णं रेवयगस्स अदूरसामंते, एत्थ णं नंदणवणे नामं उज्जाणे होत्था—सव्वोउय-पुप्फ-फल-समिद्धे रम्मे नंदणवणप्पगासे पासाईए[1] दरिसणीए अभिरूवे पडिरूवे ॥

५. तस्स णं उज्जाणस्स बहुमज्झदेसभाए सुरप्पिए नामं जक्खाययणे होत्था—दिव्वे वण्णओ[2] ॥

६. तत्थ णं बारवईए नयरीए कण्हे नामं वासुदेवे राया परिवसइ। से णं तत्थ समुद्दविजयपामोक्खाणं दसण्हं दसाराणं, बलदेवपामोक्खाणं पंचण्हं महावीराणं, उग्गसेणपामोक्खाणं सोलसण्हं राईसाहस्सीणं[3], पज्जुन्नपामोक्खाणं अद्धट्ठाणं कुमारकोडीणं, संबपामोक्खाणं सट्ठीए[4] दुद्दंतसाहस्सीणं, वीरसेणपामोक्खाणं एक्कवीसाए वीरसाहस्सीणं, महासेणपामोक्खाणं[5] छप्पण्णाए बलवगसाहस्सीणं, रुप्पिणिप्पामोक्खाणं बत्तीसाए महिलासाहस्सीणं, अणंगसेणापामोक्खाणं अणेगाणं गणियासाहस्सीणं अण्णेसिं च बहूणं ईसर-तलवर[6]-•माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ०-सत्थवाहपभिईणं, वेयड्ढगिरि[7]-सागरपेरंतस्स य दाहिणड्ढ-भरहस्स, बारवईए नयरीए आहेवच्चं[8] •पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणा-ईसर-सेणावच्चं कारेमाणे० पालेमाणे विहरइ ॥

थावच्चापुत्त-पदं

७. तत्थ णं बारवईए नयरीए थावच्चा नामं गाहावइणी परिवसइ—अड्ढा[9] •दित्ता वित्ता वित्थिण्ण-विउल-भवण-सयणासण-जाणवाहणा बहुधण-जायरूव-रयया आओग-पओग-संपउत्ता विच्छड्डिय-पउर-भत्तपाणा बहुदासी-दास-गो-महिस-गवेलग-प्पभूया बहुजणस्स० अपरिभूया ॥

८. तीसे णं थावच्चाए गाहावइणीए पुत्ते थावच्चापुत्ते नामं सत्थवाहदारए होत्था—सुकुमालपाणिपाए[10] •अहीण-पडिपुण्ण-पंचिंदियसरीरे लक्खण-वंजण-गुणोववेए माणुम्माण-प्पमाणपडिपुण्ण-सुजाय-सव्वंगसुंदरंगे ससिसोमाकारे कंते पिय-दंसणे० सुरूवे ॥

९. तए णं सा थावच्चा गाहावइणी तं दारगं साइरेगअट्ठवासजाययं[11] जाणित्ता

---

१. पासातीए (ग, घ)।
२. ओ० सू० २।
३. रायसहस्साणं (क); रातीसहस्साणं (ग); रायासहस्साणं (घ)।
४. सट्ठी (क); सट्ठीणं (घ)।
५. महसेण० (ख, घ)।
६. सं० पा०—तलवर जाव सत्थवाह।
७. वियड्ढ० (ख)।
८. सं० पा०—आहेवच्चं जाव पालेमाणे।
९. सं० पा०—अड्ढा जाव अपरिभूया।
१०. सं० पा०—सुकुमालपाणिपाए जाव सुरूवे।
११. ०जाइं (ख); ०जायं (क्वचित्)।

Jain Education International　　　For Private & Personal Use Only　　　www.jainelibrary.org

सोहणंसि तिहि-करण-नक्खत्त-मुहुत्तंसि कलायरियस्स उवणेइ जाव[1] भोगसमत्थं जाणित्ता बत्तीसाए इब्भकुलबालियाणं एगदिवसेणं पाणिं गेण्हावेइ ।
बत्तीसओ दाओ जाव[2] बत्तीसाए इब्भकुलबालियाहिं सद्धिं विपुले सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधे[3] •पंचविहे माणुस्सए कामभोए° भुंजमाणे विहरइ ।।

अरिट्ठनेमि-समवसरण-पदं

१०. तेणं कालेणं तेणं समएणं अरहा[4] अरिट्ठनेमी आइगरे तित्थगरे सो चेव वण्णओ[5] दसधणुस्सेहे नीलुप्पल-गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासे अट्ठारसहिं समण-साहस्सीहिं[6], चत्तालीसाए अज्जियासाहस्सीहिं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे[7] •गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे° जेणेव बारवती नाम नगरी जेणेव रेवतगपव्वए जेणेव नंदणवणे उज्जाणे जेणेव सुरप्पियस्स जक्खस्स जक्खाययणे जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।।

११. परिसा निग्गया । धम्मो कहिओ ।।

कण्हस्स पज्जुवासणा-पदं

१२. तए णं से कण्हे वासुदेवे इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी -खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सभाए सुहम्माए मेघोघरसियं गंभीरमहुरसद्दं[8] कोमुइयं[9] भेरिं तालेह ।।

१३. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा कण्हेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठ[10]-•चित्तमाणंदिया जाव[11] हरिसवस-विसप्पमाणहियया करयलपरिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं° मत्थए अंजलिं कट्टु एवं सामी ! तह त्ति[12] •आणाए विणएणं वयणं° पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता कण्हस्स वासुदेवस्स अंतियाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव सभा सुहम्मा, जेणेव कोमुइया भेरी, तेणेव उवागच्छंति,

---

१. ओ० सू० १४६-१४९ ।
२. ना० १।१।९१-९३ ।
३. सं० पा०—सद्दफरिसरसरूवगंधे जाव भुंजमाणे ।
४. अरिहा (क, ख, ग) ।
५. ओ० सू० १६ तथा वाचनान्तर पृ० १४०; अत्र 'संपाविउकामे' पर्यन्तं वर्णको ग्राह्यः ।
६. °साहस्सीहिं सद्धिं संपरिवुडे (क, ख, ग, घ) (औपपातिकसूत्रे सू० १६) 'चउद्दसहिं समणसाहस्सीहिं, छत्तीसाए अज्जियासाहस्सीहिं सद्धिं संपरिवुडे' एकवारमेव सद्धिं संपरिवुडे, इतिपाठोस्ति । अन्यागमेष्वपि इत्थमेव दृश्यते । अत्रापि इत्थमेव युज्यते ।
७. सं० पा० —चरमाणे जाव जेणेव ।
८. गभीर° (ख, घ) ।
९. सामुदा (द) इयं (वृत्ता) ।
१०. सं० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव मत्थए ।
११. ना० १।१।१९ ।
१२. सं० पा०—तहत्ति जाव पडिसुणेंति ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उवागच्छित्ता तं मेघोघरसियं गंभीरमहुरसद्दं कोमुइयं[1] भेरिं तालेंति[2]। तओ निद्ध-महुर-गंभीर-पडिसुएणं पिव[3] सारइएणं बलाहएणं अणुरसियं भेरीए ।।

१४. तए णं तीसे कोमुइयाए भेरीए तालियाए समाणीए बारवईए नयरीए नव-जोयणवित्थिण्णाए दुवालसजोयणायामाए सिंघाडग-तिय-चउक्क-चच्चर-कंदर-दरी-विवर[4]-कुहर-गिरिसिहर-नगरगोउर-पासाय-दुवार-भवण-देउल-पडिस्सुया[5]-सयसहस्ससंकुलं[6] करेमाणे[7] 'बारवतिं नयरिं'[8] सब्भितर-बाहिरियं सव्वओ समंता सद्दे विप्पसरित्था ।।

१५. तए णं बारवईए नयरीए नवजोयणवित्थिण्णाए बारसजोयणायामाए समुद्द-विजयपामोक्खा दस दसारा जाव[9] गणियासहस्साइं[10] कोमुईयाए भेरीए सद्दं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिया जाव[11] हरिसवस-विसप्पमाणहियया ण्हाया आविद्ध-वग्घारिय-मल्लदाम-कलावा अहयवत्थ-चंदणोकिन्नगायसरीरा[12] अप्पेगइया हयगया एवं गयगया रह-सीया[13]-संदमाणीगया अप्पेगइया पायविहार-चारेणं पुरिसवग्गुरापरिक्खित्ता कण्हस्स वासुदेवस्स अंतियं[14] पाउब्भवित्था ।।

१६. तए णं से कण्हे वासुदेवे समुद्दविजयपामोक्खे दस दसारे जाव[15] अंतियं पाउब्भव-माणे पासित्ता हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिए जाव[16] हरिसवस-विसप्पमाणहियए कोडुं-बियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! चाउ-रंगिणिं सेणं सज्जेह[17], विजयं च गंधहत्थिं उवट्ठवेह[18]। तेवि तहत्ति उवट्ठवेंति[19] ।।

१७. [20]●तए णं से कण्हे वासुदेवे ण्हाए जाव[21] सव्वालंकारविभूसिए विजयं गंधहत्थिं दुरुढे समाणे सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं महया भड-चडगर-वंद-

---

१. कोमुदियं (ख, ग, घ)।
२. तार्डेति (ग)।
३. तिव (क)।
४. वियर (क)।
५. पडिसुया (क, घ); पडिंसुया (ख, ग)।
६. °संकुलसद्दं (क, ख)।
७. करेमाणा (क, ख, ग, घ); असौ पाठः वृत्त्याधारेण स्वीकृतः। अत्र 'करेमाणे' 'सद्दे' इति पदस्य विशेषणमस्ति। वृत्तौ-कुर्वन्निति व्याख्यातमुपलभ्यते।
८. बारवईए नयरीए (क)।
९. ना० १।५।६।
१०. अनोग्रे 'ईसरतलवर' संबन्धिपाठो विद्यते, सचात्र संक्षेपीकरणहेतुना परित्यक्तोभूदिति प्रतीयते।
११. ना० १।१।१६।
१२. °किन्नगासरीरा (ख, ग)।
१३. सिया (ख)।
१४. अंतिए (ग, घ)।
१५. ना० १।५।१५।
१६. ना० १।१।१६।
१७. सज्जेहा (ग)
१८. उट्ठवेह (ग)।
१९. उट्ठवेंति (ग)।
२०. सं० पा० —जाव पज्जुवासइ।
२१. ना० १।१।८१।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परियाल-संपरिवुडे बारवतीए नयरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव रेवतगपव्वए जेणेव नंदणवणे उज्जाणे जेणेव सुरप्पियस्स जक्खस्स जक्खाययणे जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अरहओ अरिट्ठनेमिस्स छत्ताइच्छत्तं पडागाइपडागं विज्जाहर-चारणे जंभए य देवे ओवयमाणे उप्पयमाणे पासइ, पासित्ता विजयाओ गंधहत्थीओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता अरहं अरिट्ठनेमिं पंचविहेणं अभिगमेणं अभिगच्छइ,
[तं जहा—सचित्ताणं दव्वाणं विउसरणयाए, अचित्ताणं दव्वाणं अविउसरणयाए, एगसाडिय-उत्तरासंगकरणेणं, चक्खुफासे अंजलिपग्गहेणं, मणसो एगत्तीकरणेणं][1]। जेणामेव अरहा अरिट्ठनेमी तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अरहं अरिट्ठनेमिं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता अरहओ अरिट्ठनेमिस्स नच्चासन्ने नाइदूरे सुस्सूसमाणे नमंसमाणे पंजलिउडे अभिमुहे विणएणं° पज्जुवासइ ॥

थावच्चापुत्तस्स पव्वज्जासंकप्प-पदं

१८. थावच्चापुत्ते वि निग्गए। जहा मेहे[2] तहेव धम्मं सोच्चा निसम्म[3] जेणेव थावच्चा गाहावइणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पायग्गहणं करेइ। जहा मेहस्स[4] तहा चेव निवेयणा ॥

१९. तए णं तं थावच्चापुत्तं थावच्चा गाहावइणी जाहे नो संचाएइ विसयाणुलोमाहि य विसयपडिकूलाहि य बहूहिं[5] आघवणाहि य पण्णवणाहि य सण्णवणाहि य विण्णवणाहि य आघवित्तए वा पण्णवित्तए वा सण्णवित्तए वा विण्णवित्तए वा ताहे अकामिया चेव थावच्चापुत्तस्स दारगस्स[6] निक्खमणमणुमन्नित्था ॥

२०. तए णं सा थावच्चा [गाहावइणी ?] आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता महत्थं महग्घं महरिहं रायारिहं पाहुडं गेण्हइ, गेण्हित्ता मित्त[7]-•नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणेणं सद्धिं° संपरिवुडा जेणेव कण्हस्स वासुदेवस्स भवणवर-पडिदुवार-देसभाए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पडिहारदेसिएणं मग्गेणं जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल[8]-•परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं° वद्धावेइ, वद्धावेत्ता तं महत्थं महग्घं महरिहं रायारिहं पाहुडं उवणेइ, उवणेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! मम एगे पुत्ते थावच्चापुत्ते नामं दारए—इट्ठे[9] •कंते पिए मणुण्णे

---

१. असौ कोष्ठकवर्ती पाठः व्याख्यांशः प्रतीयते।
२. पू०—ना० १।१।१०१, १०२।
३. निसम्मा (ख, ग, घ)।
४. पू०—ना० १।१।१०२-११३।
५. १।१।११४ सूत्रे 'बहूहिं' इति पदं विसयाणुलोमाहि इति पदस्य पूर्वं विद्यते।
६. ×(ख, ग, घ)।
७. सं० पा०—मित्त जाव संपरिवुडा।
८. सं० पा०—करयल वद्धावेइ।
९. सं० पा०—इट्ठे जाव से णं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मणामे थेज्जे वेसासिए सम्मए बहुमए अणुमए भंडकरंडगसमाणे रयणे रयणभूए जीवियऊसासए हिययनंदिजणए उंबरपुप्फं पिव दुल्लहे सवणयाए, किमंग पुण दरिसणयाए ?

से जहानामए उप्पले ति वा पउमे ति वा कुमुदे ति वा पंके जाए जले संवड्ढिए नोवलिप्पइ पंकरएणं नोवलिप्पइ जलरएणं, एवामेव थावच्चापुत्ते कामेसु जाए भोगेसु संवड्ढिए नोवलिप्पइ कामरएणं नोवलिप्पइ भोगरएणं।° से णं देवाणुप्पिया! संसारभउव्विग्गे भीए 'जम्मण-जर-मरणाणं'[1] इच्छइ अरहओ अरिट्ठनेमिस्स[2] •अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइत्तए। अहण्णं[3] निक्खमणसक्कारं करेमि। तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया! थावच्चापुत्तस्स निक्खममाणस्स छत्तमउड-चामराओ य विदिन्नाओ॥

२१. तए णं कण्हे वासुदेवे थावच्चं गाहावइणिं एवं वयासी—अच्छाहि णं तुमं देवाणुप्पिए! सुनिव्वुत-वीसत्था, अहण्णं सयमेव थावच्चापुत्तस्स दारगस्स निक्खमणसक्कारं करिस्सामि॥

कण्हस्स थावच्चापुत्तस्स य परिसंवाद-पदं

२२. तए णं से कण्हे वासुदेवे चाउरंगिणीए सेणाए विजयं हत्थिरयणं दुरूढे समाणे जेणेव थावच्चाए गाहावइणीए भवणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता थावच्चापुत्तं एवं वयासी—मा[4] णं तुमं देवाणुप्पिया! मुंडे भवित्ता पव्वयाहि, भुंजाहि णं देवाणुप्पिया[5]! विपुले माणुस्सए कामभोगे मम बाहुच्छाय[6]-परिग्गहिए। केवलं देवाणुप्पियस्स अहं नो संचाएमि वाउकायं[7] उवरिमेणं गच्छमाणं निवारित्तए। अण्णो[8] णं[9] देवाणुप्पियस्स जं किंचि आबाहं वा वाबाहं[10] वा उप्पाएइ, तं सव्वं निवारेमि॥

२३. तए णं से थावच्चापुत्ते कण्हेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ते समाणे कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—जइ णं देवाणुप्पिया! मम जीवियंतकरं[11] मच्चुं एज्जमाणं निवारेसि, जरं वा सरीररूव-विणासणिं सरीरं अइवयमाणिं निवारेसि, तए णं अहं तव बाहुच्छाय-परिग्गहिए विउले माणुस्सए कामभोगे भुंजमाणे विहरामि॥

२४. तए णं से कण्हे वासुदेवे थावच्चापुत्तेणं एवं वुत्ते समाणे थावच्चापुत्तं एवं

---

१. लिपिसंक्षेपेण एतवान् पाठः परित्यक्तोस्ति। स च १।१।१४५ सूत्राधारेण पूरितोस्ति।
२. सं० पा०—अरिट्ठनेमिस्स जाव पव्वइत्तए।
३. अहं णं (ख)।
४. नो (ग)।
५. °प्पिया मम जीवियणुस्सए (ख)।
६. °छाया (ख)।
७. °क्कायं (क)।
८. अन्ने (घ)।
९. ण्णं (ख, ग)।
१०. विबाहं (ख)।
११. °करणियं (क, ख, घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वयासी—एए णं देवाणुप्पिया दुरइक्कमणिज्जा, नो खलु सक्का सुबलिएणावि देवेण वा दाणवेण वा निवारित्तए, नण्णत्थ[1] अप्पणो[2] कम्मक्खएणं ।।

२५. तए णं से थावच्चापुत्ते कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—जइ णं एए दुरइक्कमणिज्जा, नो खलु सक्का[3] •सुबलिएणावि देवेण वा दाणवेण वा निवारित्तए॰, नण्णत्थ अप्पणो कम्मक्खएणं । तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! अण्णाण-मिच्छत्त-अविरइ-कसाय-संचियस्स अत्तणो कम्मक्खयं करित्तए ।।

कण्हस्स जोगक्खेम-घोसणा-पदं

२६. तए णं से कण्हे वासुदेवे थावच्चापुत्तेणं एवं वुत्ते समाणे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं देवाणुप्पिया ! बारवईए नयरीए सिंघाडग-तिग[4]-•चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह॰पहेसु हत्थिखंधवरगया महया-महया सद्देणं उग्घोसेमाणा-उग्घोसेमाणा उग्घोसणं करेह—एवं खलु देवाणुप्पिया ! थावच्चापुत्ते संसारभउव्विग्गे भीए जम्मण-जर-मरणाणं, इच्छइ अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतिए मुंडे भवित्ता पव्वइत्तए[5], तं जो खलु देवाणुप्पिया ! राया वा जुवराया वा देवी वा कुमारे वा ईसरे वा तलवरे वा कोडुंबिय-माडंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहे वा थावच्चापुत्तं पव्वयंतमणुपव्वयइ, तस्स णं कण्हे वासुदेवे अणुजाणइ[6] पच्छाउरस्स वि य से मित्त-नाइ[7]-•नियग-सयण-संबंधि-परिजणस्स॰ 'जोगक्खेम-वट्टमाणीं'[8] पडिवहइ त्ति कट्टु घोसणं घोसेह जाव घोसंति ।।

थावच्चापुत्तस्स अभिनिक्खमण-पदं

२७. तए णं थावच्चापुत्तस्स अणुराएणं पुरिससहस्सं निक्खमणाभिमुहं ण्हायं सव्वालंकारविभूसियं[9] पत्तेयं-पत्तेयं पुरिससहस्सवाहिणीसु सिवियासु दुरूढं समाणं मित्त-नाइ-परिवुडं थावच्चापुत्तस्स अंतियं पाउब्भूयं ।।

२८. तए णं से कण्हे वासुदेवे पुरिससहस्सं अंतियं पाउब्भवमाणं पासइ, पासित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—जहा मेहस्स निक्खमणाभिसेओ[10]

---

१. अन्नत्थ (ख, ग) ।
२. अप्पणा (क, ख, ग, वृ) ।
३. सं॰ पा॰—सक्का जाव नन्नत्थ ।
४. सं॰ पा॰—तिग जाव पहेसु ।
५. पव्वतित्तते (ख, घ) ।
६. अणुजाणाति (ख) ।
७. सं॰ पा॰—नाइ॰ ।
८. जोगक्खेमं वट्टमाणी (क, ख, ग); जोगक्खेम-वट्टमाणी (घ) ।
९. सव्वालंकारभूसियं (क, ख) ।
१०. ना॰ १।१।१२२-१२८ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

•'खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! अणेगखंभ-सयसन्निविट्ठं जाव' सीयं उवट्ठवेह'[3] ॥

२९. तए णं से थावच्चापुत्ते बारवतीए नयरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव रेवतगपव्वए जेणेव नंदणवणे उज्जाणे जेणेव सुरप्पियस्स जक्खस्स जक्खाययणे जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अरहओ अरिट्ठनेमिस्स छत्ताइछत्तं पडागाइपडागं विज्जाहर-चारणे जंभए य देवे ओवयमाणे उप्पयमाणे पासइ°, पासित्ता सीयाओ पच्चोरुहइ ॥

सिस्सभिक्खादाण-पदं

३०. तए णं से कण्हे वासुदेवे थावच्चापुत्तं पुरओ काउं जेणेव अरहा अरिट्ठनेमी [2]•तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता अरहं अरिट्ठनेमिं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेति, करेत्ता वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी— एस णं देवाणुप्पिया ! थावच्चापुत्ते थावच्चाए गाहावइणीए एगे पुत्ते इट्ठे कंते पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे वेसासिए सम्मए बहुमए अणुमए भंडकरंडगसमाणे रयणे रयणभूए जीवियऊसासए हिययनंदिजणए उंबरपुप्फं पिव दुल्लहे सवणयाए, किमंग पुण दरिसणयाए ?

से जहानामए उप्पले ति वा पउमे ति वा कुमुदे ति वा पंके जाए जले संवड्ढिए नोवलिप्पइ पंकरएणं नोवलिप्पइ जलरएणं, एवामेव थावच्चापुत्ते कामेसु जाए भोगेसु संवड्ढिए नोवलिप्पइ कामरएणं नोवलिप्पइ भोगरएणं। एस णं देवाणुप्पिया ! संसारभउव्विग्गे भीए जम्मण-जर-मरणाणं, इच्छइ देवाणु-प्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए। अम्हे णं देवाणुप्पियाणं सिस्सभिक्खं दलयामो। पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया ! सिस्सभिक्खं ॥

३१. तए णं अरहा अरिट्ठनेमी कण्हेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ते समाणे एयमट्ठं सम्मं पडिसुणेइ ॥

३२. तए णं से थावच्चापुत्ते अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतियाओ उत्तरपुरत्थिमं दिसीभायं अवक्कमइ, सयमेव° आभरण-मल्लालंकारं ओमुयइ।

३३. तए णं सा थावच्चा गाहावइणी हंसलक्खणेणं पडसाडएणं[5] आभरण-मल्लालंकारं पडिच्छइ, हार-वारिधार-सिंदुवार-छिन्नमुत्तावलि-प्पगासाइं अंसूणि 'विणिम्मु-

---

१. सं० पा०—तहेव सेयापीएहिं कलसेहिं ण्हावेइ जाव अरहओ अरिट्ठनेमिस्स छत्ताइछत्तं पडागाइपडागं पासइ, पासित्ता विज्जाहरचारणे जाव पासित्ता।

२. ना० १।१।१२९।

३. पू०—ना० १।१।१३०-१४३।

४. सं० पा०—सव्वं तं चेव जाव आभरणं।

५. पडगसाडगेणं (ख)।

यमाणी-विणिम्मुयमाणी'[1] •रोयमाणी-रोयमाणी कंदमाणी-कंदमाणी विलवमाणी-विलवमाणी° एवं वयासी—जइयव्वं जाया! घडियव्वं जाया! परक्कमियव्वं जाया! अस्सिं च णं अट्ठे नो पमाएयव्वं[2]। •अम्हंपि णं एसेव मग्गे भवउ त्ति कट्टु थावच्चा गाहावइणी अरहं अरिट्ठनेमिं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता° जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया॥

थावच्चापुत्तस्स पव्वज्जागहण-पदं

३४. तए णं से थावच्चापुत्ते पुरिससहस्सेणं सद्धिं सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ, करेत्ता जेणामेव अरहा अरिट्ठनेमी तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अरहं अरिट्ठनेमिं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ जाव[3] पव्वइए॥

थावच्चापुत्तस्स अणगारचरिया-पदं

३५. तए णं से थावच्चापुत्ते अणगारे जाए—इरियासमिए भासासमिए[4] •एसणासमिए आयाण-भंड-मत्त-णिक्खेवणासमिए उच्चार-पासवण-खेल-सिंघाण-जल्ल-पारिट्ठावणियासमिए मणसमिए वइसमिए कायसमिए मणगुत्ते वइगुत्ते कायगुत्ते गुत्ते गुत्तिंदिए गुत्तबंभयारी अकोहे अमाणे अमाए अलोहे संते पसंते उवसंते परिनिव्वुडे अणासवे अममे अकिंचणे निरुवलेवे,

कंसपाईव मुक्कतोए संखो इव निरंगणे जीवो विव अप्पडिहयगई गगणमिव निरालंबणे वायुरिव अप्पडिबद्धे सारयसलिलं व सुद्धहियए पुक्खरपत्तं पिव निरुवलेवे कुम्मो इव गुत्तिंदिए खग्गविसाणं व एगजाए विहग इव विप्पमुक्के भारंडपक्खीव अप्पमत्ते कुंजरो इव सोंडीरे वसभो इव जायत्थामे सीहो इव दुद्धरिसे मंदरो इव निप्पकंपे सागरो इव गंभीरे चंदो इव सोमलेस्से सूरो इव दित्ततेए जच्चकंचणं व जायरूवे वसुंधरव्व सव्वफासविसहे सुहुयहुयासणोव्व तेयसा जलंते॥

३६. नत्थि णं तस्स भगवंतस्स कत्थइ पडिबंधे भवइ। [सेय पडिबंधे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ। दव्वओ—सच्चित्ताचित्तमीसेसु। खेत्तओ—गामे वा नगरे वा रण्णे वा खले वा घरे वा अंगणे वा। कालओ—समए वा आवलियाए वा आणापाणुए वा थोवे वा लवे वा मुहुत्ते वा

---

१. विणिमुंचमाणी-विणिमुंचमाणी (ख, ग, घ); सं० पा०—विणिम्मुयमाणी २ एवं।

२. सं० पा०—पमाएयव्वं जाव जामेव।

३. ना० १।१।१४९,१५०।

४. सं० पा०—भासासमिए जाव विहरइ। औपपातिकसूत्रे स्थानद्वये (२७-२९, १६४) अनगार-वर्णको विद्यते। प्रस्तुतसूत्रस्यवृत्तौ व्याख्यातादनगार-वर्णकात् तद् द्वयमपि भिन्नमस्ति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अहोरत्ते वा पक्खे वा मासे वा अयणे वा संवच्छरे वा अण्णयरे वा दीहकाल-संजोए। भावओ—कोहे वा माणे वा माए वा लोहे वा भए वा हासे वा। एवं तस्स न भवइ[1]]॥

३७. से णं भगवं वासीचंदणकप्पे समतिणमणि-लेट्ठुकंचणे समसुहदुक्खे इहलोग-परलोग-अप्पडिबद्धे जीविय-मरण-निरवकंखे संसारपारगामी कम्मनिग्घायणट्ठाए एवं च णं° विहरइ॥

३८. तए णं से थावच्चापुत्ते अरहओ अरिट्ठनेमिस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए सामाइयमाइयाइं[2] चोद्दसपुव्वाइं अहिज्जइ, अहिज्जित्ता बहूहिं[3] •चउत्थ-छट्ठट्ठम-दसम-दुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं अप्पाणं भावेमाणे° विहरइ॥

थावच्चापुत्तस्स जणवयविहार-पदं

३९. तए णं अरहा अरिट्ठनेमि थावच्चापुत्तस्स अणगारस्स तं इब्भाइयं अणगार-सहस्सं सीसत्ताए दलयइ॥

४०. तए णं से थावच्चापुत्ते अण्णया कयाइ अरहं अरिट्ठनेमिं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं भंते! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे 'अणगारसहस्सेणं सद्धिं'[4] बहिया जणवयविहारं विहरित्तए।
अहासुहं[5]॥

४१. तए णं से थावच्चापुत्ते अणगारसहस्सेणं सद्धिं[6] बहिया जणवयविहारं विहरइ॥

---

१. असौ कोष्ठकवर्ती पाठः व्याख्यांशः प्रतीयते।

२. सामाइयाइं (ख, ग)।

३. सं० पा०—बहूहिं जाव चउत्थ विहरइ (क, ख, ग, घ)। अत्र 'चउत्थ' शब्दानंतरं 'जाव' शब्दो युज्यते। 'बहूहिं' इति पदानन्तरं 'जाव' शब्दोनर्थकोस्ति। प्रस्तुतसूत्रस्य द्वितीयश्रुतस्कन्धस्य प्रथमवर्गस्य प्रथमाध्ययने पि 'बहूहिं चउत्थ जाव विहरइ' एवं पाठो लभ्यते।

४. सहस्सेणं अणगाराणं (क, ख, घ)। सहस्सेणं अणगारेणं (ग)। अग्रिमसूत्रे 'अणगार सहस्सेणं सद्धिं' इति पाठो लभ्यते। 'क्वचित्' प्रयुक्तादर्शेषु अत्रापि इत्थमेव पाठोस्ति, तेनात्र स एव पाठः स्वीकृतः।

५. अहासुहं देवाणुप्पिया! (क)।

६. सद्धिं तेणं उरालेणं उदग्गेणं (उग्गेणं—ख, ग) पयत्तेणं पग्गहिएणं (क, ख, ग, घ)। पूर्वसूत्रे थावच्चापुत्रेण विहारस्य अनुज्ञा प्रार्थिता तत्र य. पाठोऽस्ति, तस्यानुसारेण प्रस्तुतसूत्रेऽपि 'अणगारसहस्सेणं सद्धिं बहिया जणवयविहारं विहरइ' इत्येव पाठो युक्तोस्ति। एतादृशे प्रसङ्गे सर्वत्रापि एतावानेव पाठः उपलभ्यते। 'तेणं उरालेणं° पग्गहिएणं' एतावान् पाठोऽत्र अतिरिक्त इव प्रतिभाति।
यद्यसौ पाठः स्वीक्रियेत, तदानीं 'पग्गहिएणं' इति पदस्यानन्तरं 'तवोकम्मेणं' इति पाठः आवश्यकोऽस्ति। तं विना कश्चिद् अर्थ-सम्बन्धो नोपपद्यते।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सेलगराय-पदं

४२. तेणं कालेणं तेणं समएणं सेलगपुरे नामं नगरे होत्था। सुभूमिभागे उज्जाणे। सेलए राया। पउमावई देवी। मंडुए[1] कुमारे जुवराया।

४३. तस्स णं सेलगस्स पंथगपामोक्खा[2] पंच मंतिसया होत्था—उप्पत्तियाए वेणइयाए कम्मियाए पारिणामियाए उववेया रज्जधुरं चिंतयंति॥

४४. थावच्चापुत्ते सेलगपुरे समोसढे। राया निग्गए॥

सेलगस्स गिहिधम्म-पडिवत्ति-पदं

४५. [3]•तए णं से सेलए राया थावच्चापुत्तस्स अणगारस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाण-हियए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता थावच्चापुत्तं अणगारं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—

सद्दहामि णं भंते! निग्गंथं पावयणं।

पत्तियामि णं भंते! निग्गंथं पावयणं।

रोएमि णं भंते! निग्गंथं पावयणं।

अब्भुट्ठेमि णं भंते! निग्गंथं पावयणं।

एवमेयं भंते! तहमेयं भंते! अवितहमेयं भंते! असंदिद्धमेयं भंते! इच्छिय-मेयं भंते! पडिच्छियमेयं भंते! इच्छिय-पडिच्छियमेयं भंते! जं णं तुब्भे वदह त्ति कट्टु वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए बहवे उग्गा उग्गपुत्ता भोगा जाव[4] इब्भा इब्भपुत्ता चिच्चा हिरण्णं, एवं—धणं धन्नं बलं वाहणं कोसं कोट्ठागारं पुरं अंतेउरं, चिच्चा विउलं धण-कणग-रयण-मणि-मोत्तिय-संख-सिल-प्पवाल-संतसार-सावएज्जं, विच्छड्डित्ता विगोवइत्ता, दाणं दाइयाणं परिभाइत्ता, मुंडा भवित्ता णं अगाराओ अणगारियं पव्वइया, तहा णं अहं नो संचाएमि॰ जाव[5] पव्वइत्तए, अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए चाउज्जामियं[6] •गिहिधम्मं पडिवज्जि-

१. मड्डुए (क) सर्वत्र मद्दए (ग); मद्दुए (घ)।

२. ॰मोक्खा णं (क, ग, घ)।

३. सं॰ पा॰—धम्मं सोच्चा जहा ण देवाणुप्पियाणं अंतिए बहवे उग्गा भोगा जाव चइत्ता हिरण्णं जाव पव्वइया तहा णं अहं णो संचाएमि पव्वइए।

४. राय॰ सू॰ ६८८।

५. राय॰ सू॰ ६९५।

६. अत्र 'पंचाणुव्वइयं' इति पाठः प्रवाहपतितः इवाभाति। अर्हतोऽरिष्टनेमेः समये चतुर्यामधर्मस्य प्रवृत्तिरासीत्। यथा केशिस्वामिना चित्तसारथये चतुर्यामधर्मस्य उपदेशः कृतः (रायपसेणइयं सू॰ ६९३)। चित्तसारथेर्व्रतस्वीकारेऽप्यस्य समीक्षा कृतास्ति, द्रष्टव्यं—रायपसेणइयं, ६९५ सूत्रस्य पादटिप्पणम्। अत्रापि वस्तुतः 'चाउज्जामियं गिहिधम्मं' इति पाठः समीचीनः प्रतिभाति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्सामि[1] ।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेहि[2] ॥

४६. तए णं से सेलए राया थावच्चापुत्तस्स अणगारस्स अंतिए चाउज्जामियं गिहि-धम्मं उवसंपज्जइ ॥

सेलगस्स समणोवासग-चरिया-पदं

४७. तए णं से सेलए राया समणोवासए जाए—अभिगयजीवाजीवे उवलद्धपुण्णपावे आसव-संवर-निज्जर-किरिया-अहिगरण-बंधमोक्ख-कुसले असहेज्जे देवासुर-णाग-जक्ख-रक्खस-किण्णर-किंपुरिस-गरुल-गंधव्व-महोरगाइएहिं देवगणेहिं निग्गंथाओ पावयणाओ अणइक्कमणिज्जे, निग्गंथे पावयणे णिस्संकिए णिक्कं-खिए निव्वितिगिच्छे लद्धट्ठे गहियट्ठे पुच्छियट्ठे अभिगयट्ठे विणिच्छियट्ठे अट्ठिमिंज-पेमाणुरागरत्ते 'अयमाउसो ! निग्गंथे पावयणे अट्ठे अयं परमट्ठे सेसे अणट्ठे, ऊसियफलिहे अवंगुयदुवारे चियत्तंतेउर-परघरदार-प्पवेसे चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्ण-मासिणीसु पडिपुण्णं पोसहं सम्मं अणुपालेमाणे समणे निग्गंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं ओसहभेसज्जेणं पाडिहारिएणं य पीढफलग-सेज्जा-संथारएणं पडिलाभेमाणे सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासेहिं अहापरिग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं[3] अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

४८. पंथगपामोक्खा पंच मंति-सया[4] समणोवासया जाया ॥

४९. थावच्चापुत्ते बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

५०. तेणं कालेणं तेणं समएणं सोगंधिया नामं नयरी होत्था—वण्णओ[5] । नीलासोए उज्जाणे—वण्णओ[6] ॥

सुदंसणसेट्ठि पदं

५१. तत्थ णं सोगंधियाए नयरीए सुदंसणे नामं नयरसेट्ठी परिवसइ, अड्ढे जाव[7] अपरिभूए ॥

सुयपरिव्वायग-पदं

५२. तेणं कालेणं तेणं समएणं सुए नामं परिव्वायए होत्था—'रिउव्वेय[8]-जजुव्वेय[9]-साम-

---

सं० पा०—पंचाणुव्वइयं जाव समणोवासए जाए अहिगयजीवाजीवे जाव अप्पाणं। वृत्तौ 'पंचाणुव्वइयं' इति पदस्याग्रे 'सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं' इति पाठोऽस्ति। असावपि औपपातिकसूत्रात् उद्धृतोऽस्ति वृत्तिकृता।

१. पडिवज्जित्तए (वृ)।

२. काहिसि (वृ)।

३. वृत्तौ अस्य पाठस्य पूर्तिः कृताऽस्ति। तत्र कानिचित् पदानि भिन्नानि लभ्यन्ते।

४. ०सया य (ग)।

५. ओ० सू० १।

६. ना० १।३।३।

७. ना० १।५।७।

८. रियुव्वेय (ख)।

९. यजुव्वेय (घ); जउव्वेय (क्व०)।

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

वेय-अथव्वणवेय-सट्ठितंतकुसले[1] संखसमए लद्धट्ठे पंचजम[2]-पंचनियमजुत्तं सोय-मूलयं दसप्पयारं परिव्वायगधम्मं दाणधम्मं च सोयधम्मं च तित्थाभिसेयं च आघवेमाणे पण्णवेमाणे धाउरत्त-'वत्थ-पवर'[3]-परिहिए तिदंड-कुंडिय[4]-छत्त-छन्नालय-अंकुस-पवित्तय[5]-केसरि-हत्थगए परिव्वायगसहस्सेणं सद्धिं संपरिवुडे जेणेव सोगंधिया नयरी जेणेव परिव्वायगावसहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता परिव्वायगावसहंसि भंडगनिक्खेवं करेइ, करेत्ता संखसमएणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।।

५३. तए णं सोगंधियाए नगरीए सिंघाडग[6]-•तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु° बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ—एवं खलु सुए परिव्वायए इहमागए[7] •इह संपत्ते इह समोसढे इह चेव सोगंधियाए नयरीए परिव्वायगावसहंसि संखसमएणं अप्पाणं भावेमाणे° विहरइ ।।

५४. परिसा निग्गया[8] ! सुदंसणो वि णीति ।।

सोयमूलय-धम्म-पदं

५५. तए णं से सुए परिव्वायए तीसे परिसाए सुदंसणस्स य अण्णेसिं च बहूणं संखाणं[9] परिकहेइ— एवं खलु सुदंसणा ! अम्हं सोयमूलए धम्मे पण्णत्ते । से वि य सोए दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वसोए य भावसोए य ।
दव्वसोए उदएणं मट्टियाए य । भावसोए दब्भेहि य मंतेहि य ।
जं णं अम्हं देवाणुप्पिया ! किंचि असुई भवइ तं सव्वं सज्जपुढवीए आलिप्पइ[10], तओ पच्छा सुद्धेण वारिणा पक्खालिज्जइ, तओ तं असुई सुई भवइ । एवं खलु जीवा जलाभिसेय-पूयप्पाणो अविग्घेणं सग्गं गच्छंति ।।

---

१. वृत्तिकारेणात्र वाचनान्तरं व्याख्यातमस्ति । तद् औपपातिकसूत्रे (९७) इत्थमस्ति— रिउव्वेद - यज्जुव्वेद - सामवेद-अहव्वणवेद-इतिहासपंचमाणं निघण्टुछट्ठाणं संगोवंगाणं सरहस्साणं चउण्हं वेदाणं सारगा पारगा धारगा सडंगवी सट्ठितंतविसारया संखाणे सिक्खाकप्पे वागरणे छंदे निरुत्ते जोइसामयणे अण्णेसु य बहूसु बंभण्णएसु य सत्थेसु सुपरिणिट्ठिए ।

२. पंचजाम (घ) ।

३. पवरवत्थ (ग) ।

४. वृत्तौ वाचनान्तरस्य उल्लेखो विद्यते, तदनुसारेण 'कुंडिय-कंचणिय-करोडिय-छत्त°' एवं पाठ-संरचना स्यात् । औपपातिके (११७) पि इत्थं पाठक्रमो विद्यते— कुंडियाओ य कंचणियाओ य करोडियाओ य भिसियाओ य' ।

५. परिवत्तिय (ख, ग) अशुद्धं प्रतिभाति; पवित्तिय (घ) ।

६. सं• पा०—सिंघाडग° ।

७. सं० पा०—इहमागए जाव विहरइ ।

८. निग्गए (क्व०) ।

९. संखाणं धम्मं (क्व०) ।

१०. आलिंपइ (ख) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुदंसणस्स सोयमूलय-धम्मपडिवत्ति-पदं

५६. तए णं से सुदंसणे सुयस्स अंतिए धम्मं सोच्चा हट्ठतुट्ठे[1] सुयस्स अंतियं सोयमूलयं धम्मं गेण्हइ, गेण्हित्ता परिव्वायए विउलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पडिलाभेमाणे[2] •संखसमएणं अप्पाणं भावेमाणे° विहरइ ॥

५७. तए णं से सुए परिव्वायए सोगंधियाओ नयरीओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

थावच्चापुत्तस्स सुदंसणेण संवाद-पदं

५८. तेणं कालेणं तेणं समएणं थावच्चापुत्तस्स समोसरणं। परिसा निग्गया। सुदंसणो वि णीइ[3]। थावच्चापुत्तं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—तुम्हाणं[4] किंमूलए धम्मे पण्णत्ते ?

५६. तए णं थावच्चापुत्ते सुदंसणेणं एवं वुत्ते समाणे सुदंसणं एवं वयासी—सुदंसणा ! विणयमूलए[5] धम्मे पण्णत्ते। से वि य विणए दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—अगार-विणए[6] अणगारविणए य।

तत्थ णं जे से अगारविणए, से णं 'चाउज्जामिए गिहिधम्मे। तत्थ णं जे से अणगारविणए, से णं चाउज्जामा, तं जहा—सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं, सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं सव्वाओ अदिण्णादाणाओ वेरमणं, सव्वाओ बहिद्धादाणाओ वेरमणं'[7]।

---

१. हट्ठ (क, ख, ग)।
२. सं० पा०—पडिलाभेमाणे जाव विहरइ।
३. णीओ (ग); निग्गओ (क्व०)।
४. तुब्भाणं (घ)।
५. विणयमूले (ख, ग, घ)।
६. आगार° (ख, घ)।
७. पंच अणुव्वयाइं सत्त सिक्खावयाइं एक्कारस उवासगपडिमाओ। तत्थणं जे से अणगार-विणए, से णं पंच महव्वयाइं, तं जहा—सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं सव्वाओ अदिण्णा-दाणाओ वेरमणं सव्वाओ मेहुणाओ वेरमणं सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमण सव्वाओ राइभोयणाओ वेरमणं जाव मिच्छादंसण-सल्लाओ वेरमणं, दसविहे पच्चक्खाणे बारस भिक्खुपडिमाओ (क, ख, ग, घ)। एतत् अगारानगारविनययोर्निरूपणं महावीर-कालीनं वर्तते। अर्हन्नरिष्टनेमिः द्वाविंशति-तमः तीर्थंकरो विद्यते। तच्छासने चतुर्याम धर्मस्यैव निरूपणमासीत्। मज्झिमगा बावीसं अरहंता भगवंतो चाउज्जामं धम्मं पण्णवयंति' इति स्थानाङ्गवर्ति पाठेन उक्ताभिमतस्य पुष्टिर्जायते। उत्तराध्ययने-नापि (२३।२३-२८) अस्य समर्थनं भवति। अत्र पंचमहाव्रतात्मकस्य अनगारधर्मस्य तथा पंचाणुव्रत-सप्तशिक्षाव्रतात्मकस्य अगारधर्मस्य निरूपणं जातं तद्वर्णनसंक्रमणमेव प्रतीयते। स्थानाङ्गे चतुर्यामनिरूपणं इत्थमस्ति—सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं सव्वाओ अदिण्णादा-णाओ वेरमणं सव्वाओ बहिद्धादाणाओ वेरमणं (४।१३६)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इच्चेएणं दुविहेणं विणयमूलएणं धम्मेणं आणुपुव्वेणं अट्ठकम्मपगडीओ खवेत्ता लोयग्गपइट्ठाणा भवंति ॥

६०. तए णं थावच्चापुत्ते सुदंसणं एवं वयासी—तुब्भण्णं सुदंसणा ! किंमूलए धम्मे पण्णत्ते ?

अम्हाणं देवाणुप्पिया ! सोयमूलए धम्मे पण्णत्ते[1] । •से वि य सोए दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वसोए य भावसोए य ।

दव्वसोए उदएणं मट्टियाए य । भावसोए दब्भेहि य मंतेहि य ।

जं णं अम्हं देवाणुप्पिया ! किंचि असुई भवइ तं सव्वं सज्जपुढवीए आलिप्पइ, तओ पच्छा सुद्धेण वारिणा पक्खालिज्जइ, तओ णं असुई सुई भवइ । एवं खलु जीवा जलाभिसेय-पूयप्पाणो अविग्घेणं° सग्गं गच्छंति ॥

६१. तए णं थावच्चापुत्ते सुदंसणं एवं वयासी—सुदंसणा ! से जहानामए केइ पुरिसे एगं महं रुहिरकयं वत्थं रुहिरेण चेव धोवेज्जा[2], तए णं सुदंसणा ! तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेण चेव[3] पक्खालिज्जमाणस्स अत्थि काइ[4] सोही ?

नो इणट्ठे[5] समट्ठे । एवामेव सुदंसणा ! तुब्भं पि पाणाइवाएणं जाव[6] बहिद्धा-दाणेणं[7] नत्थि सोही, जहा तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेणं चेव पक्खालिज्ज-माणस्स नत्थि सोही ।

सुदंसणा ! से जहानामए केइ पुरिसे एगं महं रुहिरकयं वत्थं सज्जिय[8]-खारेणं आलिंपइ[9], आलिंपित्ता पयणं आरुहेइ[10], आरुहेत्ता उण्हं गाहेइ, तओ पच्छा सुद्धेणं वारिणा धोवेज्जा । से नूणं सुदंसणा ! तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स सज्जिय-खारेणं अणुलित्तस्स पयणं आरुहियस्स उण्हं गाहियस्स सुद्धेणं वारिणा पक्खालिज्जमाणस्स सोही भवइ ?

हंता भवइ । एवामेव सुदंसणा ! अम्हं पि पाणाइवायवेरमणेणं जाव[11] बहिद्धा-दाणवेरमणेणं[12] अत्थि सोही, जहा वा तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स[13] •सज्जिय-खारेणं अणुलित्तस्स पयणं आरुहियस्स उण्हं गाहियस्स° सुद्धेणं वारिणा पक्खालिज्जमाणस्स अत्थि सोही ॥

---

१. सं० पा०—पण्णत्ते जाव सग्गं ।
२. धोएज्जा (क, ग, घ) ।
३. × (ख, ग) ।
४. काय (क, ग) ।
५. यणट्ठे (क, ख) ।
६. ना० १।५।५६ ।
७. मिच्छादंसणसल्लेणं (क, ख, ग, घ) । द्रष्टव्यम्—१।५।५६ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।
८. सज्जिया (क, घ) ।
९. अणुलिप्पति (ख, घ); अणुलिंपइ (ग) ।
१०. आरोहइ (घ) ।
११. ना० १।५।५६ ।
१२. मिच्छादंसणसल्लवेरमणेणं (क, ख, ग, घ) । द्रष्टव्यम्—१।५।५६ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।
१३. सं० पा०—वत्थस्स जाव सुद्धेणं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुदंसणस्स विणयमूलय-धम्मपडिवत्ति-पदं

६२. तत्थ णं सुदंसणे संबुद्धे थावच्चापुत्तं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं भंते ! [तुब्भं अंतिए ?] धम्मं सोच्चा जाणित्तए ।।

६३. [1]•तए णं थावच्चापुत्ते अणगारे सुदंसणस्स तीसे य महइमहालियाए महच्चपरिसाए चाउज्जामं धम्मं कहेइ, तं जहा—सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं, सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं, सव्वाओ अदिण्णादाणाओ वेरमणं, सव्वाओ बहिद्धादाणाओ[2] वेरमणं जाव[3] ।।

६४. तए णं से सुदंसणे समणोवासए जाए—अभिगयजीवाजीवे जाव[4] समणे निग्गंथे फासु-एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं ओसह-भेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं° पडिलाभेमाणे विहरइ ।।

सुएण सुदंसणस्स पडिसंबोध-पयत्त-पदं

६५. तए णं तस्स सुयस्स परिव्वायगस्स इमीसे कहाए लद्धट्ठस्स समाणस्स अयमेयारूवे[5] •अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—एवं खलु सुदंसणेणं सोयधम्मं विप्पजहाय विणयमूले धम्मे पडिवण्णे, तं सेयं खलु मम सुदंसणस्स दिट्ठिं वामेत्तए पुणरवि सोयमूलए धम्मे आघवित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता परिव्वायगसहस्सेणं सद्धिं जेणेव सोगंधिया नगरी जेणेव परिव्वायगावसहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता परिव्वायगावसहंसि भंडगनिक्खेवं करेइ, करेत्ता धाउरत्त-वत्थ-पवर[6]-परिहिए पविरल-परिव्वायगेणं सद्धिं संपरिवुडे परिव्वायगावसहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता सोगंधियाए नयरीए मज्झंमज्झेणं जेणेव सुदंसणस्स गिहे जेणेव सुदंसणे तेणेव उवागच्छइ ।।

६६. तए णं से सुदंसणे तं सुयं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता नो अब्भुट्ठेइ न पच्चुग्गच्छइ[7] नो आढाइ नो वंदइ तुसिणीए संचिट्ठइ ।।

६७. तए णं से सुए परिव्वायए सुदंसणं अणब्भुट्ठियं[8] पासित्ता एवं वयासी—'तुमं णं'[9] सुदंसणा ! अण्णया ममं एज्जमाणं पासित्ता अब्भुट्ठेसि[10] •पच्चुग्गच्छसि

---

१. सं० पा०—जाव समणोवासए जाए अभिगयजीवाजीवे जाव पडिलाभेमाणे ।
२. एतत् १।५।५६ सूत्रात् पूरितम् ।
३. राय० ६६४-६६७ ।
४. ना० १।५।४७ ।
५. सं० पा०—अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था ।
६. × (क, ख, ग, घ) ।
७. पत्तुगच्छइ (घ) ।
८. अणुब्भुट्ठियं (ख, ग, घ) ।
९. तुमण्णं (क) ।
१०. सं० पा०—अब्भुट्ठेसि जाव वंदसि ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आढासि° वंदसि, इयाणिं सुदंसणा! तुमं ममं एज्जमाणं पासित्ता[1] •नो अब्भुट्ठेसि नो पच्चुग्गच्छसि नो आढासि° नो वंदसि। तं कस्स णं तुमे सुदंसणा! इमेयारूवे विणयमूले धम्मे पडिवण्णे?

६८. तए णं से सुदंसणे सुएणं परिव्वायगेणं एवं वुत्ते समाणे आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता करयल[2]•परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु° सुयं परिव्वायगं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! अरहओ अरिट्ठनेमिस्स अंतेवासी थावच्चापुत्ते नामं अणगारे[3] •पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे° इहमागए इह चेव नीलासोए उज्जाणे विहरइ। तस्स णं अंतिए विणयमूले धम्मे पडिवण्णे॥

६९. तए णं से सुए परिव्वायए सुदंसणं एवं वयासी—तं गच्छामो णं सुदंसणा! तव धम्मायरियस्स थावच्चापुत्तस्स अंतियं पाउब्भवामो, इमाइं च णं एयारूवाइं अट्ठाइं हेऊइं[4] पसिणाइं कारणाइं वागरणाइं पुच्छामो। तं जइ मे से इमाइं अट्ठाइं[5] •हेऊइं पसिणाइं कारणाइं वागरणाइं° वागरेइ[6], तओ णं वंदामि नमंसामि। अह मे से इमाइं अट्ठाइं[7] •हेऊइं पसिणाइं कारणाइं वागरणाइं° नो[8] वागरेइ, तओ णं अहं एएहिं चेव अट्ठेहिं हेऊहिं निप्पट्ठ-पसिणवागरणं करिस्सामि॥

सुयस्स थावच्चापुत्तेण संवाद-पदं

७०. तए णं से सुए परिव्वायगसहस्सेणं सुदंसणेण य सेट्ठिणा सद्धिं जेणेव नीलासोए उज्जाणे जेणेव थावच्चापुत्ते अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता थावच्चापुत्तं एवं वयासी—जत्ता ते भंते? जवणिज्जं 'ते (भंते?)? अव्वाबाहं (ते भंते?)? फासुयं विहारं (ते भंते?)?'[9]

७१. तए णं से थावच्चापुत्ते अणगारे सुएणं परिव्वायगेणं एवं वुत्ते समाणे सुयं परिव्वायगं एवं वयासी—सुया! जत्ताविं मे जवणिज्जं पि मे अव्वाबाहं पि मे फासुयं विहारं पि मे॥

७२. तए णं से सुए थावच्चापुत्तं एवं वयासी—किं ते[10] भंते! जत्ता?

---

१. सं० पा०—पासित्ता जाव नो वंदसि।
२. सं० पा०—करयल°।
३. सं० पा०—अणगारे जाव इहमागए।
४. हेऊणि (क); हेऊंति (ख, ग, घ)।
५. सं० पा०—अट्ठाइं जाव वागरेइ।
६. वाकरेइ (ख, ग, घ)।
७. सं० पा०—अट्ठाइं जाव नो वागरेइ।
८. नो से (ख, ग)।
९. प्रयुक्तादर्शेषु एतेषु त्रिष्वपि प्रश्नेषु 'ते भंते?' इति पाठो नास्ति। क्वचित्प्रयुक्तादर्शे 'जवणिज्जं' इति पदस्याग्रे 'ते' इति पदं लभ्यते। तेनानुमीयते चतुर्ष्वपि प्रश्नेषु एवमासीत्। उत्तरसूत्रेणाप्यस्य पुष्टिर्जायते।
१०. आदर्शेषु 'ते' इति पदं न लभ्यते, किन्तु पूर्वप्रसंगानुसारेणात्र तद् युज्यते। भगवत्या (१८।२०७) मपि इत्थमेव पाठो लभ्यते।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुया ! जण्णं मम नाण-दंसण-चरित्त-तव-संजममाइएहिं जोएहिं जयणा, से तं जत्ता।

से किं ते भंते ! जवणिज्जं ?

सुया ! जवणिज्जे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा—इंदियजवणिज्जे य नोइंदियजवणिज्जे य।

से किं तं इंदियजवणिज्जे[1] ?

सुया ! जण्णं ममं सोतिंदिय-चक्खिंदिय-घाणिंदिय-जिब्भिंदिय-फासिंदियाइं निरुवहयाइं वसे वट्टंति[2], से तं इंदियजवणिज्जे।

से किं तं नोइंदियजवणिज्जे ?

सुया ! जण्णं मम कोह-माण-माया-लोभा खीणा उवसंता नो उदयंति, से तं नोइंदियजवणिज्जे।

से किं ते भंते ! अव्वाबाहं ?

सुया ! जण्णं मम वाइय-पित्तिय-सिंभिय-सन्निवाइया[3] विविहा रोगायंका नो उदीरेंति, से तं अव्वाबाहं।

से किं ते भंते ! फासुयं विहारं ?

सुया ! जण्णं आरामेसु उज्जाणेसु देउलेसु सभासु पवासु इत्थी-पसु-पंडग-विवज्जियासु वसहीसु पाडिहारियं पीढ-फलग-सेज्जा-संथारयं ओगिण्हित्ता णं विहरामि, से तं फासुयं विहारं॥

सरिसवयाणं भक्खाभक्ख-पदं

७३. सरिसवया[4] ते भंते ! किं भक्खेया ? अभक्खेया ?

सुया ! सरिसवया भक्खेया वि अभक्खेया वि।

से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—सरिसवया भक्खेया वि अभक्खेया वि ?

सुया ! सरिसवया दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—मित्तसरिसवया[5] य धण्णसरिसवया[6] य।

तत्थ णं जे ते मित्तसरिसवया ते तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—सहजायया सहवड्ढियया सहपंसुकीलियया[7], ते णं समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया।

अग्रवर्तिषु त्रिष्वपि प्रश्नेषु आदर्शलब्धस्य 'तं' इति पदस्य स्थाने 'ते' इति पदं स्वीकृतमस्ति।

१. जवणिज्जं (क, ख, ग, घ)। भगवत्या (१८।२०९) मपि इत्थमेव पाठो लभ्यते।

२. चिट्ठंति (ख)।

३. सन्निवाइय (क, ख, ग, घ)। १।१।११२ सूत्रे 'सन्निवाइय' पदं विभक्त्यन्तं स्वीकृतमस्ति, तदाधारेणात्रापि तथैव स्वीकृतम्।

४. सरिसवता (ख, ग)।

५. °सरिसवा (ख, ग)।

६. °सरिसवा (ख, ग)।

७. °कीलियया (क); °कीलया (ग, घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तत्थ णं जे ते धण्णसरिसवया[1] ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सत्थपरिणया य असत्थपरिणया य। तत्थ णं जेते असत्थपरिणया ते णं समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया। तत्थ णं जेते सत्थपरिणया ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—फासुया य अफासुया य। अफासुया णं सुया! [समणाणं निग्गंथाणं ?] नो भक्खेया। तत्थ णं जेते 'फासुया ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—एसणिज्जा' य अणेसणिज्जा' य। तत्थ णं जेते अणेसणिज्जा ते [णं समणाणं निग्गंथाणं ?] अभक्खेया। तत्थ णं जेते एसणिज्जा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—जाइया[2] य अजाइया[3] य'[4]। तत्थ णं जेते अजाइया ते [णं समणाणं निग्गंथाणं ?] अभक्खेया। तत्थ णं जेते जाइया ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—लद्धा य अलद्धा य। तत्थ णं जेते अलद्धा ते [णं समणाणं निग्गंथाणं ?] अभक्खेया। तत्थ णं जेते लद्धा ते णं समणाणं निग्गंथाणं भक्खेया।

एएणं अट्ठेणं सुया! एवं वुच्चइ—सरिसवया भक्खेया वि अभक्खेया वि॥

कुलत्थाणं भक्खाभक्ख-पदं

७४. "[5]कुलत्था ते भंते! किं भक्खेया? अभक्खेया?

सुया! कुलत्था भक्खेया वि अभक्खेया वि।

से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ—कुलत्था भक्खेया वि अभक्खेया वि?

सुया! कुलत्था दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—इत्थिकुलत्था य धण्णकुलत्था य। तत्थ णं जेते इत्थिकुलत्था ते तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—कुलवहुया इ य कुलमाउया इ य कुलधूया इ य। ते णं समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया।

तत्थ णं जेते धण्णकुलत्था ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सत्थपरिणया य असत्थपरिणया य। तत्थ णं जेते असत्थपरिणया ते समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया। तत्थ णं जेते सत्थपरिणया ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—फासुया य अफासुया य। अफासुया णं सुया! समणाणं निग्गंथाणं नो भक्खेया। तत्थ णं जेते

---

१. °सरिसवा (क, ख, ग, घ)।

२. जातिया (क, ख, ग, घ)।

३. अजातिया (क, ख, ग, घ)।

४. भगवतीसूत्रे सोमिलप्रश्नोत्तरप्रसंगे (१८। २१४) एसणिज्जा अणेसणिज्जा, जाइया अजाइया, असौ पाठक्रमो विद्यते। तत्र 'अफासुया फासुया' इति पाठो नास्ति। अत्र 'जाइय' इति पाठानन्तरं 'एसणिज्जा अणेसणिज्जा' इति पाठोस्ति। द्वयोस्तुलनायां भगवतीवर्तिपाठक्रमः संगतोस्ति। याचितानन्तरं एषणीयत्वस्य कापेक्षा स्यात् लिपिदोषेण अस्य परिवर्तनं जातमथवा अन्येन केनचित् कारणेन, नेति वक्तुं शक्यते।

५. सं० पा०—एवं कुलत्था वि भाणियव्वा। नवरं—इमं नाणत्तं—इत्थिकुलत्था य धन्नकुलत्था य। इत्थिकुलत्था तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—कुलवहुया इ य कुलमाउया इ य कुलधूया इ य। धन्नकुलत्था तहेव।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

फासुया ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—एसणिज्जा य अणेसणिज्जा य। तत्थ णं जेते अणेसणिज्जा ते णं समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया। तत्थ णं जेते एसणिज्जा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—जाइया य अजाइया य तत्थ णं जेते अजाइया ते णं समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया। तत्थ णं जेते जाइया ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—लद्धा य अलद्धा य। तत्थ णं जेते अलद्धा ते अभक्खेया। तत्थ णं जेते लद्धा ते णं समणाणं निग्गंथाणं भक्खेया।

एएणं अट्ठेणं सुया! एवं वुच्चइ—कुलत्था भक्खेया वि अभक्खेया वि° ॥

मासाणं भक्खाभक्ख-पदं

७५. [1]•मासा ते भंते! किं भक्खेया? अभक्खेया?

सुया! मासा भक्खेया वि अभक्खेया वि।

से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ—मासा भक्खेया वि अभक्खेया वि?

सुया! मासा तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—कालमासा य अत्थमासा य धण्णमासा य।

तत्थ णं जेते कालमासा ते दुवालसविहा पण्णत्ता, तं जहा—सावणे भद्दवए आसोए कत्तिए मग्गसिरे पोसे माहे फग्गुणे चेत्ते वइसाहे जेट्ठामूले आसाढे। ते णं समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया।

तत्थ णं जेते अत्थमासा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—हिरण्णमासा य सुवण्णमासा य। ते णं समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया।

तत्थ णं जेते धण्णमासा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—सत्थपरिणया य असत्थपरिणया य। तत्थ णं जेते असत्थपरिणया ते समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया। तत्थ णं जेते सत्थपरिणया ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—फासुया य अफासुया य। अफासुया णं सुया! समणाणं निग्गंथाणं नो भक्खेया। तत्थ णं जेते फासुया ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—एसणिज्जा य अणेसणिज्जा य। तत्थ णं जेते अणेसणिज्जा ते णं समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया।

तत्थ णं जेते एसणिज्जा ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—जाइया य अजाइया य। तत्थ णं जेते अजाइया ते णं समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया।

तत्थ णं जेते जाइया ते दुविहा पण्णत्ता, तं जहा—लद्धा य अलद्धा य। तत्थ णं जेते अलद्धा ते णं समणाणं निग्गंथाणं अभक्खेया।

---

१. सं० पा०—एवं मासा वि। नवरं—इम नाणत्तं—मासा तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—कालमासा य अत्थमासा य धन्नमासा य। तत्थ णं जे ते कालमासा ते णं दुवालस, तं जहा—सावणे जाव आसाढे। ते णं अभक्खेया। अत्थमासा दुविहा—हिरण्णमासा य सुवण्णमासा य। ते णं अभक्खेया। धन्नमासा तहेव।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तत्थ णं जेते लद्धा ते णं समणाणं निग्गंथाणं भक्खेया ।
एएणं अट्ठेणं सुया ! एवं वुच्चइ—मासा भक्खेया वि अभक्खेया वि०[1] ॥

अत्थित्त-पण्ह-पदं

७६. एगे भवं ? दुवे भवं ? अक्खए भवं ? अव्वए भवं ? अवट्ठिए भवं ? अणेगभूय-भाव-भविए भवं ?
सुया ! एगे वि अहं[2], ॰दुवेवि अहं, अक्खए वि अहं, अव्वए वि अहं, अवट्ठिए वि अहं, ॰अणेगभूय-भाव-भविए वि अहं ।
से केणट्ठेणं भंते ! एगे वि अहं[3] ? ॰दुवेवि अहं ? अक्खए वि अहं ? अव्वए वि अहं ? अवट्ठिए वि अहं ? अणेगभूय-भाव-भविए वि अहं ?॰
सुया ! दव्वट्ठयाए 'एगे वि अहं'[4], नाणदंसणट्ठयाए दुवे वि[5] अहं, पएसट्ठयाए अक्खए वि अहं, अव्वए वि अहं, अवट्ठिए वि अहं, उवओगट्ठयाए अणेगभूय-भाव-भविए वि[6] अहं ॥

सुयस्स परिव्वायगसहस्सेण पव्वज्जा-पदं

७७. एत्थ णं से सुए संबुद्धे थावच्चापुत्तं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं भंते ! तुब्भं अंतिए केवलिपण्णत्तं धम्मं निसामित्तए ॥

७८. [7]॰तए णं थावच्चापुत्ते अणगारे सुयस्स चाउज्जामं धम्मं कहेइ ॥॰

७९. तए णं से सुए परिव्वायए थावच्चापुत्तस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म एवं वयासी—इच्छामि णं भंते ! परिव्वायगसहस्सेणं सद्धिं संपरिवुडे देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता पव्वइत्तए ।
अहासुहं देवाणुप्पिया ॥

८०. ॰[8]तए णं से सुए परिव्वायए उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए अवक्कमइ, अवक्कमित्ता तिदंडयं य कुंडियाओ य छत्तए य छन्नालए य अंकुसए य पवित्तए य केसरियाओ य॰ धाउरत्ताओ य एगंते एडेइ, सयमेव सिहं उप्पाडेइ, उप्पाडेत्ता जेणेव थावच्चापुत्ते[9] ॰अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता थावच्चापुत्तं अणगारं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता थावच्चापुत्तस्स अणगारस्स अंतिए॰ मुंडे 'भवित्ता पव्वइए'[10] । सामाइयमाइयाइं चोद्दसपुव्वाइं अहिज्जइ ॥

---

१. भगवतीसूत्रे (१८।२१३-२१८) एतत्तुल्यं प्रकरणमस्ति, क्वचित्-क्वचित् किंचित् पाठभेदो विद्यते ।
२. सं० पा०—अहं जाव अणेगभूयभाव भविए ।
३. सं० पा०—अहं जाव सुया ।
४. एगेहं (क) एगे अहं (ख, ग घ) ।
५. × (ख, ग, घ) ।
६. × (घ) ।
७. सं० पा०—धम्मकहा भाणियव्वा ।
८. सं० पा०—उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए तिदंडयं जाव धाउरत्ताओ ।
९. सं० पा०—थावच्चापुत्ते जाव मुंडे ।
१०. भवित्ता जाव पव्वइए (ख, ग, घ); अत्र 'जाव' शब्दस्य विपर्ययो जातोस्ति ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुयस्स जणवयविहार-पदं

८१. तए णं थावच्चापुत्ते सुयस्स अणगारसहस्सं सीसत्ताए वियरइ ॥

८२. तए णं थावच्चापुत्ते सोगंधियाओ नयरीओ नीलासोयाओ उज्जाणाओ पडिणिक्खमइ, पडिणिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

थावच्चापुत्तस्स परिनिव्वाण-पदं

८३. तए णं से थावच्चापुत्ते अणगारसहस्सेणं सद्धिं संपरिवुडे जेणेव पुंडरीए पव्वए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पुंडरीयं पव्वयं सणियं-सणियं दुरुहइ[1], दुरुहित्ता[2] मेघघणसन्निगासं देवसन्निवायं पुढवि[3]•सिलापट्टयं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता जाव[4] संलेहणा-झूसणा-झूसिए भत्तपाण-पडियाइक्खिए° पाओवगमणंणुवन्ने ॥

८४. तए णं से थावच्चापुत्ते बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणित्ता, मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता जाव[5] केवलवर-नाणदंसणं समुप्पाडेत्ता तओ पच्छा सिद्धे[6] •बुद्धे मुत्ते अंतगडे परिनिव्वुडे सव्वदुक्ख°प्पहीणे ॥

सेलगस्स अभिनिक्खमणाभिप्पाय-पदं

८५. तए णं से सुए अण्णया कयाइ जेणेव सेलगपुरे नगरे जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे[7] तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ° ॥

८६. परिसा निग्गया। सेलओ निग्गच्छइ ॥

८७. [8]•तए णं से सेलए सुयस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे सुयं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—सद्दहामि णं भंते! निग्गंथं पावयणं[9] जाव[10] नवरं[11] देवाणुप्पिया!

---

१. द्रुहति (ख)।

२. अतोग्रे १।१।२०६ सूत्रे 'सयमेव' इति पदं विद्यते।

३. सं० पा०—पुढवि जाव पाओवगमणं।

४. ना० १।२।२०६।

५. असौ पाठः भगवती (६।१५१) सूत्रात् पूर्तिमर्हति, तद्महावीरकालीनं वर्णनमस्ति, ततो नाक्षरशोत्र घटनामर्हति।

६. सं० पा०—सिद्धे जाव प्पहीणे।

७. सं० पा०—समोसरणं।

८. सं० पा०—धम्मं सोच्चा जं नवरं।

९. अत्र पाठपूर्तिकारणेन 'निग्गंथं पावयणं' इति पदं प्राप्तं किन्तु ऐतिहासिकदृष्टयात्र 'अरहंतं पावयणं' इति पदं समीचीनं स्यात्।

१०. ना० १।१।१०१।

११. जं नवरं (क, ख, ग, घ); संभवतः 'जं' इति पदं 'जं तुब्भे वदह' इति पाठस्य संकेतरूपमस्ति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पंथगपामोक्खाइं पंच मंतिसयाइं आपुच्छामि, मंडुयं च कुमारं रज्जे ठावेमि। तओ पच्छा देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वयामि।

अहासुहं देवाणुप्पिया॥

८८. तए णं से सेलए राया सेलगपुरं नगरं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता जेणेव सए गिहे जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहासणे[1] सण्णिसण्णे॥

८९. तए णं से सेलए राया पंथगपामोक्खे पंच मंतिसए सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! मए सुयस्स अंतिए धम्मे निसंते, से वि य मे धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए[2]। 'तए णं अहं'[3] देवाणुप्पिया! संसार-भउव्विग्गे[4] •भीए जम्मण-जर-मरणाणं सुयस्स अणगारस्स अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वयामि। तुब्भे णं देवाणुप्पिया! किं करेह? किं ववसह[5]? 'किं वा भे[6] हियइच्छिए सामत्थे?'[7]

९०. तए णं ते पंथगपामोक्खा पंच मंतिसया सेलगं रायं एवं वयासी—जइ णं तुब्भे देवाणुप्पिया! संसारभउव्विग्गा जाव[8] पव्वयह, अम्हं णं देवाणुप्पिया! के[9] अण्णे आहारे वा आलंबे वा? अम्हे वि य णं देवाणुप्पिया! संसारभउव्विग्गा जाव पव्वयामो।

जहा[10] णं[11] देवाणुप्पिया! अम्हं बहूसु कज्जेसु य कारणेसु य[12] •कुडुंबेसु य मंतेसु य गुज्झेसु य रहस्सेसु य निच्छएसु य आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, मेढी पमाणं आहारे आलंबणं चक्खू, मेढीभूए पमाणभूए आहारभूए आलंबणभूए चक्खुभूए°, तहा णं पव्वइयाण वि समाणाणं[13] बहूसु कज्जेसु य जाव चक्खुभूए॥

९१. तए णं से सेलगे पंथगपामोक्खे पंच मंतिसए एवं वयासी—जइ णं देवाणुप्पिया! तुब्भे संसारभउव्विग्गा जाव[14] पव्वयह, तं गच्छह णं देवाणुप्पिया! सएसु-सएसु

---

१. सिहासण (क, ख, ग, घ)।
२. अभिरुतिते (ग)।
३. तए णं अहन्नं (ख); अहन्नं (ग)।
४. सं० पा० – संसारभउव्विग्गे जाव पव्वयामि।
५. वसह (ग, घ)।
६. ते (ख, ग)।
७. किं भे हियइच्छिए, किं भे सामत्थे (भ० १८।४५)।
८. ना० १।५।८९।
९. किं (ख, ग, घ)।
१०. जह (ख)।
११. × (क, ख, ग, घ)।
१२. सं० पा०—कारणेसु य जाव तहा।
१३. समणाणं (क, ख, ग, घ)।
१४. ना० १।५।८८।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुटुंबेसु[1] जेट्ठपुत्ते कुटुंबमज्झे[2] ठावेत्ता पुरिससहस्सवाहिणीओ[3] सीयाओ दुरूढा समाणा मम अंतियं पाउब्भवह। ते वि तहेव पाउब्भवंति ॥

मंडुयस्स रायाभिसेय-पदं

९२. तए णं से सेलए राया पंच मंतिसयाइं पाउब्भवमाणाइं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! मंडुयस्स कुमारस्स महत्थं[4] •महग्घं महरिहं विउलं॰ रायाभिसेयं उवट्ठवेह ॥

९३. [5]•तए णं ते कोडुंबियपुरिसा मंडुयस्स कुमारस्स महत्थं महग्घं महरिहं विउलं रायाभिसेयं उवट्ठवेंति ॥

९४. तए णं से सेलए राया बहूहिं गणनायगेहि य जाव[6] संधिवालेहि य सद्धिं संपरिवुडे मंडुयं कुमारं जाव[7] रायाभिसेएणं अभिसिंचइ ॥

९५. तए णं से मंडुए राया जाए—महयाहिमवंत-महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे जाव[8] रज्जं पसासेमाणे॰ विहरइ ॥

सेलयस्स निक्खमणाभिसेय-पदं

९६. तए णं से सेलए मंडुयं रायं आपुच्छइ ॥

९७. तए णं मंडुए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! सेलगपुरं नयरं आसिय[9]-•सित्त-सुइय-सम्मज्जिओवलित्तं जाव[10] सुगंधवरगंधियं॰ गंधवट्टिभूयं करेह य कारवेह य, एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ॥

९८. तए णं से मंडुए दोच्चं पि कोडुंबियपुरिसे एवं[11] वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! सेलगस्स रण्णो महत्थं[12] •महग्घं महरिहं विउलं॰ निक्खमणाभिसेयं [करेह ?] जहेव मेहस्स तहेव[13] नवरं—पउमावती देवी अग्गकेसे पडिच्छइ, सच्चेव पडिग्गहं गहाय सीयं दुरुहइ। अवसेसं तहेव जाव[14] ॥

---

१. कोडुंबेसु (ख)।
२. कोडुंब॰ (घ)।
३. ॰वाहिणीयाओ (घ)।
४. सं॰ पा॰—महत्थं जाव रायाभिसेयं।
५. सं॰ पा॰—अभिसिंचइ जाव राया जाए विहरइ।
६. ना॰१।१।२४।
७. ना॰ १।१।११८।
८. ओ॰ सू॰ १४।
९. सं॰ पा॰—आसिय जाव गंधवट्टिभूयं।
१०. ना॰ १।१।३३।
११. सद्दावेइ २ एवं (क)।
१२. सं॰ पा॰—महत्थं जाव निक्खमणाभिसेयं।
१३. ना॰ १।१।१२२-१३२।
१४. ना॰ १।१।१३४-१४३; १।५।२९-३३।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सेलगस्स पव्वज्जा-पदं

९९. [1]•तए णं से सेलगे [पंचहिं मंतिसएहिं सद्धिं[2] ?] सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ, करेत्ता जेणामेव सुए तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुयं अणगारं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ जाव[3] पव्वइए ।।

सेलगस्स अणगारचरिया-पदं

१००. तए णं से सेलए अणगारे जाए जाव[4] कम्मनिग्घायणट्ठाए एवं च णं विहरइ ।।

१०१. तए णं से सेलए सुयस्स तहारूवाणं थेराणं अंतिए° सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, अहिज्जित्ता बहूहिं चउत्थ[5]-•छट्ठट्ठम - दसम - दुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं अप्पाणं भावेमाणे° विहरइ ।।

सुयस्स परिनिव्वाण-पदं

१०२. तए णं से सुए सेलगस्स अणगारस्स ताइं पंथगपामोक्खाइं पंच अणगारसयाइं सीसत्ताए वियरइ ।।

१०३. तए णं से सुए अण्णया कयाइ सेलगपुराओ नगराओ सुभूमिभागाओ उज्जाणाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ।।

१०४. तए णं से सुए अणगारे अण्णया कयाइ[6] तेणं अणगारसहस्सेणं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे जेणेव पुंडरीयपव्वए[7] •तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पुंडरीयं पव्वयं सणियं-सणियं दुरुहइ, दुरुहित्ता मेघघणसन्निगासं देवसन्निवायं पुढविसिलापट्टयं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता जाव[8] संलेहणा-झूसणा-झूसिए भत्तपाण-पडियाइक्खिए पाओवगमणंणुवन्ने ।।

१०५. तए णं से सुए बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणित्ता, मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता जाव[9] केवलवरनाणदंसणं समुप्पाडेत्ता तओ पच्छा सिद्धे बुद्धे मुत्ते अंतगडे परिनिव्वुडे सव्वदुक्खप्पहीणे° ।।

सेलगस्स रोगातंक-पदं

१०६. तए णं तस्स सेलगस्स रायरिसिस्स तेहिं अंतेहि य पंतेहि य तुच्छेहि य लूहेहि

---

१. सं० पा०—अवसेस तहेव जाव सामाइयमाइयाइं ।

२. प्रव्रज्या-प्रसंगे मंत्रिणामुल्लेखोनोपलभ्यते, सच आवश्यकोस्ति । तेनासौ पाठः प्रकरणसादृश्येन थावच्चापुत्रवर्णनगत ३४ सूत्रात् पूरितोस्ति ।

३. ना० १।१।१४९,१५० ।

४. ना० १।५।३५-३७ ।

५. सं० पा०—चउत्थ जाव विहरइ ।

६. कयाइं (ख) ।

७. सं० पा०—पव्वए जाव सिद्धे० ।

८. ना० १।१।२०६ ।

९. भग० ६।१५१ ।

य अरसेहि य विरसेहि य सीएहि य उण्हेहि य कालाइक्कंतेहि य पमाणाइक्कंतेहि य निच्चं[1] पाणभोयणेहि य पयइ-सुकुमालस्स सुहोचियस्स[2] सरीरगंसि 'वेयणा पाउब्भूया'[3]—उज्जला[4] •विउला कक्खडा पगाढा चंडा दुक्खा° दुरहियासा। कंडु-दाह-पित्तज्जर-परिगयसरीरे यावि विहरइ॥

१०७. तए णं से सेलए तेणं रोयायंकेणं सुक्के भुक्खे जाए यावि होत्था॥

१०८. तए णं से सेलए अण्णया कयाइ पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे[5] •गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे जेणेव सेलगपुरे नयरे जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ; उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे° विहरइ॥

१०९. परिसा निग्गया। मंडुओ वि निग्गओ सेलगं अणगारं 'वंदइ नमंसइ पज्जुवासइ'[6]॥

सेलगस्स तिगिच्छा-पदं

११०. तए णं से मंडुए राया सेलगस्स अणगारस्स सरीरगं सुक्कं भुक्खं[7] सव्वाबाहं सरोगं पासइ, पासित्ता एवं वयासी—अहण्णं भंते! तुब्भं अहापवत्तेहिं[8] तेगिच्छिएहिं[9] अहापवत्तेणं[10] ओसह-भेसज्ज-भत्तपाणेणं तेगिच्छं आउट्टावेमि[11]। तुब्भे णं भंते! मम जाणसालासु समोसरह, फासु-एसणिज्जं पीढ-फलग-सेज्जा-संथारगं ओगिण्हित्ताणं विहरह॥

१११. तए णं से सेलए अणगारे मंडुयस्स रण्णो एयमट्ठं तह 'त्ति' पडिसुणेइ॥

११२. तए णं से मंडुए सेलगं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जामेव दिसिं[12] पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए॥

११३. तए णं से सेलए कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव[13] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते स-भंड-मत्तोवगरणमायाए पंथगपामोक्खेहिं पंचहिं

---

१. निच्च य (क, ख, ग, घ)।

२. सुहोइयस्स (ग)।

३. रोगायंके पाउब्भूए (वृपा)।

४. सं० पा०—उज्जला जाव दुरहियासा।

५. सं० पा०—चरमाणे जाव जेणेव सुभूमिभागे जाव विहरइ।

६. अणगारं जाव वंदइ नमंसइ, २त्ता पज्जुवासइ, २त्ता (क)।

७. भुक्खं जाव (क, ख, ग, घ) अत्र आदर्शेषु 'जाव' शब्दः उपलभ्यते, किन्तु अस्य पूर्तिस्थलमद्यापि क्वापि नोपलब्धम्।

८. अहापउत्तेहिं (ख); अहापवत्तितेहिं (घ)।

९. तिगच्छएहि (क)।

१०. अहापवित्तेणं (ख)।

११. आउंटावेमि (क, ग, घ); आउंट्टावेमि (ख); आदर्शेषु प्रायेण 'आउंटावेमि' इति पाठो लभ्यते, वृत्तावत्र नास्त्यनुस्वारः।

१२. दिसं (क)।

१३. ना० १।१।२४।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अणगारसएहिं सद्धिं[1] सेलगपुरमणुप्पविसइ, अणुपविसित्ता जेणेव 'मंडुयस्स रण्णो जाणसाला'[2] तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता फासु-एसणिज्जं[3] •पीढ-फलग-सेज्जा-संथारगं ओगिण्हित्ताणं° विहरइ ॥

११४. तए णं से मंडुए तेगिच्छिए[4] सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! सेलगस्स फासु-एसणिज्जेणं[5] •ओसह-भेसज्ज-भत्तपाणेणं° तेगिच्छं आउट्टेह[6] ॥

११५. तए णं ते तेगिच्छिया मंडुएणं रण्णा एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा सेलगस्स अहा-पवत्तेहिं ओसह-भेसज्ज-भत्तपाणेहिं तेगिच्छं आउट्टेंति, 'मज्जपाणगं च से उवदिसंति'[7] ॥

११६. तए णं तस्स सेलगस्स[8] अहापवत्तेहिं[9] •ओसह-भेसज्ज-भत्तपाणेहिं° मज्जपाण-एण य से रोगायंके उवसंते यावि होत्था—हट्ठे गल्लसरीरे[10] जाए ववगय-रोगायंके ॥

सेलगस्स पमत्तविहार-पदं

११७. तए णं से सेलए तंसि रोगायंकंसि उवसंतंसि समाणंसि तंसि विपुले असण-पाण-खाइम-साइमे मज्जपाणए य मुच्छिए गढिए गिद्धे अज्झोववन्ने ओसन्ने ओसन्न-विहारी, पासत्थे[11] •पासत्थविहारी कुसीले कुसीलविहारी पमत्ते पमत्तविहारी° संसत्ते संसत्तविहारी उउबद्ध[12]-पीढ[13]-•फलग-सेज्जा-संथारए° पमत्ते यावि विहरइ, नो संचाएइ फासु-एसणिज्जं पीढ-फलग-सेज्जा-संथारयं पच्चप्पिणित्ता मंडुयं च रायं आपुच्छित्ता बहिया[14] •जणवयविहारं° विहरित्तए ॥

साहूहिं सेलगस्स परिच्चाय-पदं

११८. तए णं तेसिं पंथगवज्जाणं पंचण्हं अणगारसयाणं अण्णया कयाइ एगयओ सहियाणं[15] •समुवागयाणं सण्णिसण्णाणं सण्णिविट्ठाणं° पुव्वरत्तावरत्तकाल-

---

१. ×(ख, ग, घ)।
२. मड्डुया जाणसाला (ग)।
३. सं० पा०—फासुयं पीढ जाव विहरइ।
४. तिगिच्छिए (क, ख)।
५. सं० पा०—फासुएसणिज्जेणं जाव तेगिच्छं।
६. आउटेह (क, ख, ग)।
७. ×(क); मज्जण °(ख, ग) सर्वत्र।
८. सेलगस्स तेहिं २ (क)।
९. सं० पा०—अहापवत्तेहिं जाव मज्जपाणएण।
१०. मल्लसरीरे (ग); बलियसरीरे (क्वचित्)। अत्र 'कल्ल' शब्दस्य ककारस्य गकारादेशो जातोस्ति।
११. सं० पा०—एवं पासत्थे कुसीले पमत्ते।
१२. ओवद्ध (क, ख)।
१३. सं० पा०—पीढं।
१४. सं० पा०—बहिया जाव विहरित्तए।
१५. सं० पा०—सहियाणं जाव पुव्वरत्ता°।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समयंसि धम्मजागरियं जागरमाणाणं अयमेयारूवे अज्झत्थिए[1] •चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—एवं खलु सेलए रायरिसी चइत्ता रज्जं जाव[2] पव्वइए विउले[3] असण-पाण-खाइम-साइमे मज्जपाणए य मुच्छिए नो संचाएइ[4] •फासु-एसणिज्जं पीढ-फलग-सेज्जा-संथारयं पच्चप्पिणित्ता मंडुयं च रायं आपुच्छित्ता बहिया जणवयविहारं° विहरित्तए। नो खलु कप्पइ देवाणुप्पिया! समणाणं[5] •निग्गंथाणं[6] ओसन्नाणं पासत्थाणं कुसीलाणं पमत्ताणं संसत्ताणं उउ-बद्ध-पीढ-फलग-सेज्जा-संथारए° पमत्ताणं विहरित्तए। तं सेयं खलु देवाणुप्पिया! अम्हं कल्लं सेलगं रायरिसिं आपुच्छित्ता पाडिहारियं पीढ-फलग-सेज्जा-संथारयं पच्चप्पिणित्ता सेलगस्स अणगारस्स पंथयं अणगारं वेयावच्चकरं ठावेत्ता बहिया अब्भुज्जएणं[7] •जणवयविहारेणं° विहरित्तए—एवं संपेहेंति, संपेहेत्ता कल्लं जेणेव सेलए रायरिसी तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सेलयं रायरिसिं आपुच्छित्ता पाडिहारियं पीढ-फलग-सेज्जा-संथारयं पच्चप्पिणंति, पच्चप्पिणित्ता पंथयं अणगारं वेयावच्चकरं ठावेंति, ठावेत्ता बहिया[8] •जणवयविहारं° विहरंति॥

पंथगस्स चाउम्मासिय-खामणा-पदं

११९. तए णं से पंथए सेलगस्स सेज्जा-संथारय-उच्चार-पासवण-खेल्ल-सिंघाणमत्त-ओसह-भेसज्ज-भत्तपाणएणं अगिलाए विणएणं वेयावडियं करेइ॥

१२०. तए णं से सेलए अण्णया कयाइ कत्तिय[9]-चाउम्मासियंसि विउलं असण-पाण-खाइम-साइमं आहारमाहारिए सुबहुं च मज्जपाणयं[10] पीए पच्चावरण्हकाल-समयंसि[11] सुहप्पसुत्ते॥

१२१. तए णं से पंथए कत्तिय-चाउम्मासियंसि कयकाउस्सग्गे देवसियं पडिक्कमणं

---

१. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।

२. ओ० सू० २३।

३. विपुलेणं (क)।

४. सं० पा०—संचाएइ जाव विहरित्तए।

५. सं० पा०—समणाणं जाव पमत्ताणं। अस्य पूर्तिः १।५।११० सूत्रे प्रदत्तसंकेतानुसारेण कृतास्ति।

६. एतत् पदं १।५।१२४ सूत्राधारेण स्वीकृतम्।

७. सं० पा०—अब्भुज्जएणं जाव विहरित्तए।

८. सं० पा०—बहिया जाव विहरंति।

९. कत्तिया (ख)।

१०. मज्जणपाययं (ख)।

११. पुव्वावरण्हकालसमयंसि (क, ख, ग, घ)। सर्वेषु आदर्शेषु 'पुव्वावरण्ह°' इति पाठो लभ्यते, किन्तु अर्थ-मीमांसया नासावत्र संगतोस्ति। अत्र सायंकालीनसमयस्य प्रसंगोस्ति, अतः 'पच्चावरण्ह°' इति पाठोस्माभिः गृहीतः। आदर्शेषु लिपिदोषेण 'पच्चा°' स्थाने 'पुव्वा°' जातमिति संभाव्यते। उपासकदशासूत्रेपि (६।१७) इत्थं जातमस्ति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पडिक्कंते, चाउम्मासियं पडिक्कमिउकामे सेलगं रायरिसिं खामणट्ठयाए सीसेणं पाएसु संघट्टेइ ॥

सेलगस्स कोव-पदं

१२२. तए णं से सेलए पंथएणं सीसेणं पाएसु संघट्टिए समाणे आसुरुत्ते[1] •रुट्ठे कुविए चंडिक्किए° मिसिमिसेमाणे उट्ठेइ, उट्ठेत्ता एवं वयासी—से केस णं भो! एस अपत्थियपत्थए[2], •दुरंत-पंत-लक्खणे, हीणपुण्णचाउद्दसिए, सिरि-हिरि-धिइ-कित्ति-परि°वज्जिए, जे णं ममं सुहपसुत्तं पाएसु संघट्टेइ ?

१२३. तए णं से पंथए सेलएणं एवं वुत्ते समाणे भीए तत्थे तसिए करयल[3]-•परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं° कट्टु एवं वयासी—'अहं णं'[4] भंते! पंथए कयकाउस्सग्गे देवसियं पडिक्कमणं पडिक्कंते[5], चाउम्मासियं खामेमाणे देवाणुप्पियं वंदमाणे सीसेणं पाएसु संघट्टेमि।

'तं खामेमि णं तुब्भे देवाणुप्पिया'[6]!

खमंतु णं देवाणुप्पिया!

खंतुमरहंति[7] णं देवाणुप्पिया! नाइ भुज्जो एवंकरणयाए त्ति कट्टु सेलयं अणगारं एयमट्ठं सम्मं विणएणं भुज्जो-भुज्जो खामेइ ॥

सेलगस्स अब्भुज्जयविहार-पदं

१२४. तए णं तस्स सेलगस्स रायरिसिस्स पंथएणं एवं वुत्तस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए[8] •चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था--एवं खलु अहं[9] •चइत्ता रज्जं जाव[10] पव्वइए ओसन्ने ओसन्नविहारी, पासत्थे पासत्थविहारी कुसीले कुसीलविहारी पमत्ते पमत्तविहारी संसत्ते संसत्तविहारी उउबद्ध-पीढ-फलग-सेज्जा-संथारए पमत्ते यावि° विहरामि। तं नो खलु कप्पइ समणाणं निग्गंथाणं[11] •ओसन्नाणं पासत्थाणं कुसीलाणं पमत्ताणं संसत्ताणं उउबद्ध-पीढ-

---

१. सं० पा०—आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे।

२. सं० पा०—अपत्थियपत्थिए जाव वज्जिए (ख, ग, घ)। अत्रापि त्रिषु आदर्शेषु अन्यत्र च उपासकदशादिषु सूत्रेषु पाठान्तरनिर्दिष्टः पाठो लभ्यते, किन्तु 'पत्थय' इति पाठे समाससारल्यमस्ति।

३. सं० पा०—करयल।

४. अहण्णं (ख)।

५. पडिक्कंते चाउम्मासिय पडिक्कंते (क)।

६. × (क, ख, ग, घ); असौ पाठः क्वचिद् प्रयुक्तादर्शाधारेण स्वीकृतः। १।१६।२६५ सूत्रेपि लभ्यते।

७. खंतुमरुहंतु (क, ग); खमन्तु ममाराहं तुमं णं (ख)।

८. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।

९. सं० पा०—अहं रज्जं च जाव ओसन्न जाव उउबद्धपीढ° विहरामि।

१०. ओ० सू० २३।

११. सं० पा०—निग्गंथाणं जाव विहरित्तए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

फलग-सेज्जा-संथारए पमत्ताणं° विहरित्तए। तं सेयं खलु मे कल्लं मंडुयं रायं आपुच्छित्ता पाडिहारियं पीढ-फलग-सेज्जा-संथारगं पच्चप्पिणित्ता पंथएणं अणगारेणं सद्धिं बहिया अब्भुज्जएणं[1] जणवयविहारेणं विहरित्तए—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं[2] •मंडुयं रायं आपुच्छित्ता पाडिहारियं पीढ-फलग-सेज्जा-संथारगं पच्चप्पिणित्ता पंथएणं अणगारेणं सद्धिं बहिया अब्भुज्जएणं जणवय-विहारेणं° विहरइ॥

१२५. एवामेव समणाउसो! जे[3] निग्गंथे वा निग्गंथी वा ओसन्ने[4] •ओसन्नविहारी, पासत्थे पासत्थविहारी कुसीले कुसीलविहारी पमत्ते पमत्तविहारी संसत्ते संसत्तविहारी उउबद्ध-पीढ-फलग-सेज्जा°-संथारए पमत्ते विहरइ, से णं इहलोए चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावयाणं बहूणं सावियाण य हीलणिज्जे[5] •निंदणिज्जे खिंसणिज्जे गरहणिज्जे परिभवणिज्जे, परलोए वि य णं आगच्छइ बहूणि दंडणाणि[6] य अणादियं च णं अणवयग्गं दीहमद्धं चाउरंत-संसार कंतारं भुज्जो-भुज्जो अणुपरियट्टिस्सइ°॥

१२६. तए णं ते पंथगवज्जा पंच अणगारसया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा अण्णमण्णं सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! सेलए रायरिसी पंथएणं[7] •अणगारेणं सद्धिं बहिया अब्भुज्जएणं जणवयविहारेणं° विहरइ। तं सेयं खलु देवाणुप्पिया! अम्हं सेलगं रायरिसिं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए—एवं संपेहेंति, संपेहेत्ता सेलगं रायरिसिं उवसंपज्जित्ता णं विहरंति॥

१२७. तए णं से सेलए रायरिसी पंथगपामोक्खा पंच अणगारसया[8] •जेणेव पुंडरीए पव्वए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पुंडरीयं पव्वयं सणियं-सणियं दुरुहंति, दुरुहित्ता मेघघणसन्निगासं देवसन्निवायं पुढविसिलापट्टयं पडिलेहंति, पडिले-हित्ता जाव[9] संलेहणा-झूसणा-झूसिया भत्तपाण-पडियाइक्खिया पाओवगमणं-णुवन्ना॥

---

१. अब्भुज्जएणं जाव (क, ख, ग, घ); अत्र जाव पदं अनावश्यकं प्रतिभाति। १।५।११८ सूत्रे संक्षिप्तपाठः आसीत् तत्र 'जाव' पदस्योपयोगित्वम्, किन्तु नात्र।
२. सं० पा०—कल्लं जाव विहरइ।
३. जाव (क, ग, घ); अत्र लिपिदोषेण 'जे' पदस्य स्थाने 'जाव' इति पदं जातम्।
४. सं० पा०—ओसन्ने जाव संथारए।
५. सं० पा०—हीलणिज्जे संसारो भाणियव्वो।
६. द्र०—ना० १।३।२४।
७. सं० पा०—पंथएणं जाव विहरइ।
८. सं० पा०—पंच अणगारसया बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणित्ता जेणेव पुंडरीए पव्वए तेणेव उवागच्छंति जहेव थावच्चापुत्ते तहेव सिद्धा°।
९. ना० १।१।२०६।

१२८. तए णं से सेलए रायरिसी पंथगपामोक्खा पंच अणगारसया बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणित्ता, मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदित्ता जाव[1] केवलवरनाणदंसणं समुप्पाडेत्ता तओ पच्छा सिद्धा बुद्धा मुत्ता अंतगडा परिनिव्वुडा सव्वदुक्खप्पहीणा° ॥

१२९. एवामेव समणाउसो ! जो निग्गंथो वा निग्गंथी वा[2] °अब्भुज्जएणं जणवय-विहारेणं विहरइ, से णं इहलोए चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावगाणं बहूणं सावियाण य अच्चणिज्जे वंदणिज्जे नमंसणिज्जे पूयणिज्जे सक्कारणिज्जे सम्माणणिज्जे कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं विणएणं पज्जुवास-णिज्जे भवइ,

परलोए वि य णं नो बहूणि हत्थच्छेयणाणि य कण्णच्छेयणाणि य नासाछेय-णाणि य एवं हिययउप्पायणाणि य वसणुप्पायणाणि य उल्लंबणाणि य पाविहिइ, पुणो अणाइयं च णं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतं संसारकंतारं° वीईवइस्सइ ॥

निक्खेव-पदं

१३०. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं पंचमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।

—त्ति बेमि ॥

वृत्तिकृता समुद्धृता निगमनगाथा—

सिढिलिय-संजम-कज्जा वि, होइउं उज्जवंति जइ पच्छा ।
संवेगाओ ते सेलओ व्व आराहया होंति ॥ १ ॥

---

१. भग० ६।३३ ।

२. सं० पा०—निग्गंथो वा २ जाव विहरिस्सइ (क, ख, ग, घ); अत्र लिपिदोषेण 'वीईवइस्सइ' स्थाने 'विहरिस्सइ' इति जातम् । यद्यत्र 'विहरिस्सइ' इति पदं स्यात्, तर्हि प्रस्तुतपाठस्य पूर्तिरपि न स्यात्, न च यच्छब्दस्योत्तरवर्त्ती तच्छब्दस्यनिर्देशोपि प्राप्तो भवेत् । तेनात्र इति कल्पना कर्तुं न्याय्या यल्लिपिदोषेण विपर्ययोसौ जातः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छट्ठं अज्झयणं

तुंबे

उक्खेव-पदं

१. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं पंचमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, छट्ठस्स णं भंते ! नायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?

२. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरणं। परिसा निग्गया ।।

३. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूई नामं अणगारे समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामंते जाव[1] सुक्कज्झाणोवगए विहरइ ।।

गरुयत्त-लहुयत्त-पदं

४. तए णं से इंदभूई नामं अणगारे जायसड्ढे जाव[2] एवं वयासी—कहण्णं[3] भंते ! जीवा गरुयत्तं वा लहुयत्तं वा हव्वमागच्छंति ?

गोयमा ! से जहानामए केइ पुरिसे एगं महं सुक्कतुंबं[4] निच्छिड्डं निरुवहयं दब्भेहि य कुसेहि य वेढेइ, वेढेत्ता मट्टियालेवेणं लिंपइ, लिंपित्ता उण्हे दलयइ, दलयित्ता सुक्कं समाणं दोच्चंपि दब्भेहि य कुसेहि य वेढेइ, वेढेत्ता मट्टियालेवेणं लिंपइ, लिंपित्ता उण्हे दलयइ, दलयित्ता सुक्कं समाणं तच्चंपि दब्भेहि य कुसेहि य वेढेइ, मट्टियालेवेणं लिंपइ, उण्हे दलयइ। एवं खलु एएणुवाएणं अंतरा वेढेमाणे

---

१. ओ० सू० ८२ ।

२. ओ० सू० ८३ ।

३. कह णं (क, ग) ।

४. सुक्कं० (क, घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अंतरा लिंपमाणे[1] अंतरा सुक्कवेमाणे[2] जाव अट्ठहिं मट्टियालेवेहिं लिंपइ[3], अत्थाहमतारमपोरिसियंसि उदगंसि पक्खिवेज्जा[4]। से नूणं गोयमा! से तुंबे तेसिं अट्ठण्हं मट्टियालेवेणं गरुययाए[5] भारिययाए[6] गरुय-भारिययाए[7] उप्पिं सलिलमइवइत्ता[8] अहे धरणियल[9]-पइट्ठाणे भवइ।

एवामेव गोयमा! जीवा वि पाणाइवाएणं[10] •मुसावाएणं अदिण्णादाणेणं मेहुणेणं परिग्गहेणं जाव[11] °मिच्छादंसणसल्लेणं अणुपुव्वेणं अट्ठकम्मपगडीओ समज्जिणित्ता तासिं गरुययाए भारिययाए[12] गरुय-भारिययाए[13] कालमासे कालं किच्चा धरणियलमइवइत्ता[14] अहे नरगतल-पइट्ठाणा भवंति। एवं खलु गोयमा! जीवा गरुयत्तं हव्वमागच्छंति। 'अह णं'[15] गोयमा! से तुंबे तंसि पढमिल्लुगंसि[16] मट्टियालेवंसि तित्तंसि कुहियंसि परिसडियंसि ईसिं धरणियलाओ उप्पतित्ता णं चिट्ठइ। तयाणंतरं दोच्चं पि मट्टियालेवे[17] •तित्ते कुहिए परिसडिए ईसिं धरणियलाओ° उप्पतित्ता णं चिट्ठइ। एवं खलु एएणं उवाएणं तेसु अट्ठसु मट्टियालेवेसु तित्तेसु[18] •कुहिएसु परिसडिएसु° [से तुंबे?] विमुक्कबंधणे[19] अहे धरणियलमइवइत्ता उप्पिं सलिलतल-पइट्ठाणे भवइ।

एवामेव गोयमा! जीवा पाणाइवायवेरमणेणं जाव मिच्छादंसणसल्लवेरमणेणं अणुपुव्वेणं अट्ठकम्मपगडीओ खवेत्ता गगणतलमुप्पइत्ता उप्पिं लोयग्ग-पइट्ठाणा भवंति। एवं खलु गोयमा! जीवा लहुयत्तं[20] हव्वमागच्छंति॥

निक्खेव-पदं

५. एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[21] संपत्तेणं छट्ठस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते।

—त्ति बेमि॥

---

१. लिंपेमाणे (ख, घ)।
२. सुक्खवेमाणे (ख, ग, घ)।
३. आलिंपइ (ख, ग)।
४. पक्खेवेज्जा (ख)।
५. गुरुय° (ख, ग)।
६. × (ख)।
७. × (ग)।
८. °मतिवतित्ता (ख, ग)।
९. धरणितल (क)।
१०. सं० पा०—पाणाइवाएणं जाव मिच्छादंसणसल्लेणं।
११. ना० १।१।२०६।
१२. × (क, ख)।
१३. × (ग)।
१४. °मतिवतित्ता (ख); °मतिवितित्ता (ग)।
१५. अहण्णं (क, ग, घ)।
१६. पढमिलुगंसि (ख)।
१७. सं० पा०—मट्टियालेवे जाव उपतित्ता।
१८. सं० पा०—तित्तेसु जाव विमुक्कबंधणे।
१९. विमुक्कबंधणेसु (क)।
२०. लहुत्तं (ख)।
२१. १।१।७।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वृत्तिकृता समुद्धृता निगमनगाथा—

जह मिउलेवालित्तं, गुरुयं तुंबं अहो वयइ।
एवं कय-कम्मगुरू, जीवा वच्चंति अहरगइं ॥१॥
तं चेव तव्विमुक्कं, जलोवरिं ठाइ जाय-लहुभावं।
जह तह कम्म-विमुक्का, लोयग्ग-पइट्ठिया होंति ॥२॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सत्तमं अज्झयणं

रोहिणी

उक्खेव-पदं

१. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं छट्ठस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, सत्तमस्स णं भंते ! नायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?

२. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नयरे होत्था। सुभूमिभागे उज्जाणे ।।

धणसत्थवाह-पदं

३. तत्थ णं रायगिहे नयरे धणे नामं सत्थवाहे परिवसइ—अड्ढे जाव[1] अपरिभूए। भद्दा भारिया—अहीणपंचिंदियसरीरा जाव[2] सुरूवा ।।

४. तस्स णं धणस्स सत्थवाहस्स पुत्ता भद्दाए भारियाए अत्तया चत्तारि सत्थवाह-दारगा होत्था, तं जहा—धणपाले धणदेवे धणगोवे धणरक्खिए ।।

५. तस्स णं धणस्स सत्थवाहस्स चउण्हं पुत्ताणं भारियाओ चत्तारि सुण्हाओ होत्था, तं जहा—उज्झिया भोगवइया रक्खिया[3] रोहिणिया ।।

धणस्स परिक्खापओग-पदं

६. तए णं तस्स धणस्स सत्थवाहस्स अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि इमेयारूवे[4] °अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं रायगिहे नयरे बहूणं ईसर[5]°-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह°पभिईणं सयस्स य कुडुंबस्स बहूसु कज्जेसु य कारणेसु

---

१. ना० १।५।७।

२. ना० १।२।८।

३. रक्खित्तिया (ग); रक्खितिया (घ)।

४. सं० पा०—इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था

५. सं० पा०—ईसर जाव पभिईणं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

य कोडुंबेसु य मंतेसु य गुज्झेसु य रहस्सेसु य निच्छएसु य ववहारेसु य आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, मेढी पमाणं आहारे आलंबणे चक्खू, मेढीभूते पमाणभूते आहारभूते आलंबणभूते चक्खूभूए सव्वकज्जवड्ढावए।

तं 'न नज्जइ'[1] णं मए[2] गयंसि वा चुयंसि वा मयंसि वा भग्गंसि वा लुग्गंसि वा सडियंसि वा पडियंसि वा विदेसत्थंसि वा विप्पवसियंसि वा इमस्स कुडुंबस्स के मन्ने आहारे वा आलंबे वा पडिबंधे वा भविस्सइ ?

तं सेयं खलु मम कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव[3] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेत्ता मित्त-नाइ[4]-•नियग-सयण-संबंधि-परियणं° चउण्ह य सुण्हाणं[5] कुलघरवग्गं आमंतेत्ता तं मित्त-नाइ-नियग[6]-•सयण-संबंधि-परियणं° चउण्ह य सुण्हाणं[7] कुलघरवग्गं विपुलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं धूव-पुप्फ-वत्थ-गंध[8]-•मल्लालंकारेण य° सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तस्सेव मित्त-नाइ[9]-•नियग-सयण-संबंधि-परियणस्स° चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरओ चउण्हं सुण्हाणं परिक्खणट्ठयाए पंच-पंच सालिअक्खए दलइत्ता जाणामि ताव का किह वा सारक्खेइ वा ? संगोवेइ वा ? संवड्ढेइ वा ? एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव[10] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते 'विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेइ, मित्त-नाइ[11]-•नियग-सयण-संबंधि-परियणं° चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गं आमंतेइ'[12], तओ पच्छा ण्हाए भोयणमंडवंसि सुहासणवरगए तेणं मित्त-नाइ[13]-•नियग-सयण-संबंधि-परियणेणं° चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गेणं सद्धिं तं विपुलं असणं पाणं खाइमं साइमं आसादेमाणे जाव[14] सक्कारेइ, सकारेत्ता तस्सेव मित्त-नाइ[15]-•नियग-सयण-संबंधि-परियणस्स° चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरओ पंच सालिअक्खए गेण्हइ, गेण्हित्ता जेट्ठं सुण्हं उज्झियं[16] सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी— तुमं णं पुत्ता ! मम

---

१. ×(ख, ग)।
२. मए त्ति मयि (वृ)।
३. ना० १।१।२४।
४. सं० पा०—नाइ°।
५. ण्हुसाणं (ख)।
६. सं० पा०—नियग°।
७. ण्हुसाणं (ख, ग)।
८. सं० पा०—गंध जाव सक्कारेत्ता।
९. सं० पा०—नाइ°।
१०. ना० १।१।२४।
११. सं० पा०—नाइ°।
१२. मित्त-नाइ° चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्ग आमंतेइ, विपुलं असणं ४ उवक्खडावेइ (क, ख, ग)।
१३. सं० पा—नाइ°।
१४. ना० १।१।८१।
१५. सं० पा०—नाइ°।
१६. उज्झितं (ख); उज्झितिं (ग); उज्झिहितितं (घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हत्थाओ इमे पंच सालिअक्खए गेण्हाहि, अणुपुव्वेणं सारक्खमाणी[1] संगोवेमाणी विहराहि। जया णं अहं[2] पुत्ता! तुमं इमे पंच सालिअक्खए जाएज्जा, तया णं तुमं मम इमे पंच सालिअक्खए पडिनिज्जाएज्जासि[3] त्ति कट्टु सुण्हाए हत्थे दलयइ, दलइत्ता पडिविसज्जेइ ॥

७. तए णं सा उज्झिया धणस्स तह त्ति एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता धणस्स सत्थवाहस्स हत्थाओ ते पंच सालिअक्खए गेण्हइ, गेण्हित्ता एगंतमवक्कमइ, एगंतमवक्कमियाए इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु तायाणं कोट्ठागारंसि बहवे पल्ला सालीणं पडिपुण्णा चिट्ठंति, तं जया णं मम ताओ इमे पंच सालिअक्खए जाएसइ[4], तया[5] णं अहं पल्लंतराओ अण्णे पंच सालिअक्खए गहाय दाहामि[6] त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता ते पंच सालिअक्खए एगंते एडेइ, सकम्मसंजुत्ता जाया यावि होत्था ॥

८. एवं भोगवइयाए वि, नवरं—सा छोल्लेइ, छोल्लेत्ता अणुगिलइ, अणुगिलित्ता सकम्मसंजुत्ता जाया यावि होत्था ॥

९. एवं रक्खियाए वि, नवरं—गेण्हइ, गेण्हित्ता एगंतमवक्कमइ, एगंतमवक्कमियाए इमेयारूवे[7] अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु ममं ताओ इमस्स मित्त-नाइ[8]-•नियग-सयण-संबंधि-परियणस्स° चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरओ सद्दावेत्ता एवं वयासी—तुमं णं पुत्ता! मम हत्थाओ[9] •इमे पंच सालिअक्खए गेण्हाहि, अणुपुव्वेणं सारक्खमाणी संगोवेमाणी विहराहि। जया णं अहं पुत्ता! तुमं इमे पंच सालिअक्खए जाएज्जा, तया णं तुमं मम इमे पंच सालिअक्खए° पडिनिज्जाएज्जासि त्ति कट्टु मम हत्थंसि पंच सालिअक्खए दलयइ। तं भवियव्वमेत्थ कारणेणं ति कट्टु एवं संपेहेइ संपेहेत्ता ते पंच सालिअक्खए सुद्धे वत्थे बंधइ, बंधित्ता रयणकरंडियाए पक्खिवइ, पक्खिवित्ता[10] उसीसामूले ठावेइ, ठावेत्ता तिसंझं पडिजागरमाणी-पडिजागरमाणी विहरइ ॥

१०. तए णं से धणे सत्थवाहे तहेव[11] मित्त[12]-•नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणस्स

---

१. संरक्खमाणी (ग)।
२. हं (क, ख)।
३. पडिदिज्जाएज्जासि (क); दलएज्जासि (ग); पडिदेज्जासि (घ)।
४. जातिसति (ख)।
५. तता (क)।
६. देहामि (ख, ग)।
७. एमेयारूवे (ख)।
८. सं० पा०—नाइ°।
९. सं० पा०—हत्थाओ जाव पडिनिज्जाएज्जासि।
१०. पक्खिवइ २ मंजूसाए पक्खिवइ २ (क, घ)।
११. तस्सेव (ख, ग)।
१२. सं० पा०—मित्त जाव चउत्थं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरओ पंच सालिअक्खए गेण्हइ, गेण्हित्ता ° चउत्थं रोहिणीयं सुण्हं सद्दावेइ,[1] •सद्दावेत्ता एवं वयासी—तुमं णं पुत्ता ! मम हत्थाओ इमे पंच सालिअक्खए गेण्हाहि, जाव[2] गेण्हइ, गेण्हित्ता एगंतमवक्कमइ, एगंतमवक्कमियाए इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु ममं ताओ इमस्स मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणस्स चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरओ सद्दावेत्ता एवं वयासी—तुमं णं पुत्ता ! मम हत्थाओ इमे पंच सालिअक्खए गेण्हाहि, अणुपुव्वेणं सारक्खमाणी संगोवेमाणी विहराहि। जया णं अहं पुत्ता ! तुमं इमे पंच सालिअक्खए जाएज्जा, तया णं तुमं मम इमे पंच सालिअक्खए पडिनिज्जाएज्जासि त्ति कट्टु मम हत्थंसि पंच सालिअक्खए दलयइ° । तं भवियव्वं एत्थ कारणेणं[3] । तं सेयं खलु मम एए पंच सालिअक्खए सारक्खमाणीए संगोवेमाणीए संवड्ढेमाणीए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कुलघर-पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! एए पंच सालिअक्खए गेण्हइ, गेण्हित्ता पढमपाउसंसि महावुट्ठिकायंसि निवइयंसि समाणंसि खुड्डागं केयारं सुपरिकम्मियं करेह, करेत्ता इमे पंच सालिअक्खए वावेह, वावेत्ता दोच्चं पि 'तच्चं पि'[4] उक्खय-निहए[5] करेह, करेत्ता वाडिपक्खेवं[6] करेह, करेत्ता सारक्खमाणा संगोवेमाणा आणुपुव्वेणं संवड्ढेह ।।

११. तए णं ते कोडुंबिया रोहिणीए एयमट्ठं पडिसुणेंति, ते पंच सालिअक्खए गेण्हंति, अणुपुव्वेणं सारक्खंति, संगोविंति[7] ।।

१२. तए णं कोडुंबिया पढमपाउसंसि महावुट्ठिकायंसि निवइयंसि समाणंसि खुड्डागं केयारं सुपरिकम्मियं करेंति, ते पंच सालिअक्खए ववंति, दोच्चं पि तच्चं पि उक्खय-निहए करेंति, वाडिपरिक्खेवं करेंति, अणुपुव्वेणं सारक्खेमाणा संगोवेमाणा संवड्ढेमाणा विहरंति ।।

१३. तए णं ते साली अणुपुव्वेणं सारक्खिज्जमाणा संगोविज्जमाणा संवड्ढिज्जमाणा साली जाया—किण्हा किण्होभासा[8] •नीला नीलोभासा हरिया हरिओभासा सीया सीओभासा णिद्धा णिद्धोभासा तिव्वा तिव्वोभासा किण्हा किण्हच्छाया नीला नीलच्छाया हरिया हरियच्छाया सीया सीयच्छाया णिद्धा णिद्धच्छाया तिव्वा तिव्वच्छाया घण-कडियकडिच्छाया रम्मा महामेह°निउरंबभूया पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ।।

---

१. स० पा०—सद्दावेइ जाव तं ।
२. ना० १।७।६,७ ।
३. कारणेणं त्ति कट्टु (क, घ) ।
४. ×(क, ग) ।
५. निक्खए (क, ख, ग, घ) ।
६. ×(क, ख, ग) ।
७. संगोविंति विहरंति (क, ख, ग, घ) ।
८. सं० पा०—किण्होभासा जाव निउरंबभूया ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१४. तए णं ते साली पत्तिया वत्तिया[1] गब्भिया पसूइया आगयगंधा[2] खीराइया[3] बद्धफला पक्का परियागया सल्लइय[4]-पत्तइया 'हरिय-फेरंडा'[5] जाया यावि होत्था।

१५. तए णं ते कोडुंबिया ते साली पत्तिए[6] •वत्तिए गब्भिए पसूइए आगयगंधे खीराइए बद्धफले पक्के परियागए° सल्लइय-पत्तइए जाणित्ता तिक्खेहिं नवपज्जणएहिं असिएहिं लुणंति, लुणित्ता करयलमलिए करेंति, करेत्ता पुणंति। तत्थ णं चोक्खाणं सूइयाणं[7] अखंडाणं अफुडियाणं छडछडापूयाणं[8] सालीणं मागहए पत्थए जाए॥

१६. तए णं ते कोडुंबिया ते साली नवएसु घडएसु पक्खिवंति पक्खिवित्ता ओलिंपंति, ओलिंपित्ता लंछिय-मुद्दिए[9] करेंति, करेत्ता कोट्ठागारस्स एगदेसंसि[10] ठावेंति, ठावेत्ता सारक्खमाणा संगोवेमाणा विहरंति॥

१७. तए णं ते कोडुंबिया दोच्चंसि वासारत्तंसि पढमपाउसंसि महावुट्ठिकायंसि निवइयंसि [समाणंसि ?] खुड्डागं केयारं सुपरिकम्मियं करेंति, ते साली ववंति[11], दोच्चंपि उक्खाय-णिहए करेंति जाव[12] असिएहिं लुणंति लुणित्ता[13] चलणतल-मलिए करेंति करेत्ता पुणंति। तत्थ णं[14] सालीणं बहवे कुडवा[15] •जाया॥

१८. तएणं ते कोडुंबिया ते साली नवएसु घडएसु पक्खिवंति, पक्खिवित्ता ओलिंपंति ओलिंपित्ता लंछिय-मुद्दिए करेंति, करेत्ता कोट्ठागारस्स° एगदेसंसि ठावेंति, ठावेत्ता सारक्खमाणा संगोवेमाणा विहरंति॥

१९. तए णं ते कोडुंबिया तच्चंसि वासारत्तंसि महावुट्ठिकायंसि निवइयंसि [समाणंसि ?] केयारे[16] सुपरिकम्मिए करेंति जाव[17] असिएहिं लुणंति, लुणित्ता संवहंति, संवहित्ता खलयं करेंति, मलेंति,[18] पुणंति। तत्थ णं[19] सालीणं बहवे कुंभा जाया॥

---

१. पाठान्तरेण तयावत्ति (वृ)।
२. आययगंधा (वृ)।
३. क्षीरकिता (वृ)।
४. सल्लइया (क, ख, ग, घ, वृपा)।
५. हरिया° (ख); °पेरंडा (ग)।
६. सं० पा०—पत्तिए जाव सल्लइयपत्तइए।
७. सूयाणं (घ)।
८. छड्डछड्डाणं पूयाणं (क); छड्डछड्डा-पूयाणं (ख); छडछडाभूयाणं (ग, वृपा); छडछडपूयाणं (घ)।
९. मुद्दियाए (क)।
१०. °देसम्मि (ग)।
११. बुप्पंति (क, ग); वुपंति (ख); बुप्पंति (घ)।
१२. ना० १।७।१२-१५।
१३. जाव (क, ख, ग, घ)।
१४. पू०—ना० १।७।१५।
१५. सं० पा०—कुडवा जाव एगदेसंसि।
१६. केदारे (ख, ग, घ)।
१७. ना० १।७।१२-१५।
१८. मेलिंति (ख); मेलेंति (ग, घ)।
१९. पू०—ना० १।७।१५।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२०. तए णं ते कोडुंबिया ते साली कोट्ठागारंसि पल्लंसि[1] •पक्खिवंति, पक्खिवित्ता ओलिपंति, ओलिंपित्ता लंछिय-मुद्दिए करेंति, करेत्ता सारक्खमाणा संगोवेमाणा° विहरंति ।।

२१. चउत्थे वासारत्ते बहवे कुंभसया जाया ।।

परिक्खा-परिणाम-पदं

२२. तए णं तस्स धणस्स पंचमयंसि संवच्छरंसि परिणममाणंसि पुव्वरत्तावरत्तकाल-समयंसि इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था— एवं खलु मए इओ अतीते[2] पंचमे संवच्छरे चउण्हं सुण्हाणं परिक्खणट्ठयाए ते पंच-पंच सालिअक्खया हत्थे दिन्ना । तं सेयं खलु मम कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव[3] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते पंच सालिअक्खए परिजाइत्तए[4] जाव[5] जाणामि ताव काए किह सारक्खिया वा संगोविया वा संवड्ढिया वत्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव[6] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते विपुलं असणं[7] •पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेत्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गं जाव[8]° सम्माणित्ता तस्सेव मित्त-नाइ[9]-•नियग-सयण-संबंधि-परियणस्स° चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरओ जेट्ठं उज्झियं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु अहं पुत्ता ! इओ अतीते पंचमम्मि संवच्छरे[10] इमस्स मित्त-[11]•नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणस्स° चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स य पुरओ तव हत्थंसि पंच सालिअक्खए दलयामि । जया णं अहं पुत्ता ! एए पंच सालिअक्खए जाएज्जा तया णं तुमं मम इमे पंच सालिअक्खए पडिनिज्जाएसि[12] । से नूणं पुत्ता ! अट्ठे समट्ठे ?

---

१. सं० पा०—पल्लंसि जाव विहरंति; घल्लंति (क) पल्लंति (ख, ग, घ); यद्यपि बहुषु आदर्शेषु 'पल्लति' इति पदं विद्यते, किन्तु नैतद् समीचीनं प्रतिभाति । यद्येतत् स्वीकृतं स्यात् तर्हि जाव शब्दस्य पूर्तेराधारस्थलं नोपलभ्यते 'पल्लंति' इति पदस्यार्थोपि नैव संगच्छते । अतएव अस्माभिः 'पल्लंसि' इति पदं स्वीकृतम् । अस्याधारः (४३) सूत्रे 'पल्ले उब्भिदइ' इति पाठे उपलभ्यते ।

२. अईए (क) ।

३. ना० १।१।२४ ।

४. परिजातित्तए (ख, ग, घ) ।

५. एवं (घ) ।

६. ना० १।१।२४ ।

७. सं० पा०—असणं मित्त-नाइ चउण्ह य सुण्हाणं कुलघर जाव सम्माणित्ता ।

८. ना० १।७।६ ।

९. सं० पा०—नाइ ° ।

१०. संवत्सरे (ग) ।

११. सं० पा०—मित्त ।

१२. °निज्जाएसि त्ति कट्टु (क) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हंता अत्थि ।

तं णं तुमं पुत्ता ! मम ते सालिअक्खए पडिनिज्जाएसि ।।

२३. तए णं सा उज्झिया एयमट्ठं धणस्स सत्थवाहस्स पडिसुणेइ, जेणेव कोट्ठागारं तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पल्लाओ पंच सालिअक्खए गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणेव धणे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धणं सत्थवाहं एवं वयासी—एए णं ताओ[1] ! पंच सालिअक्खए त्ति कट्टु धणस्स हत्थंसि ते[1] पंच सालिअक्खए दलयइ ।।

२४. तए णं धणे सत्थवाहे उज्झियं सवह-सावियं करेइ, करेत्ता एवं वयासी—किण्णं पुत्ता ! ते चेव पंच सालिअक्खए उदाहु अण्णे ?

२५. तए णं उज्झिया धणं सत्थवाहं एवं वयासी—एवं खलु तुब्भे ताओ ! इओ अतीए पंचमे संवच्छरे इमस्स मित्त-नाइ[2]-•नियग-सयण-संबंधि-परिजणस्स चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरओ पंच सालिअक्खए गेण्हह, गेण्हित्ता ममं सद्दावेह, सद्दावेत्ता एवं वयासी—तुमं णं पुत्ता ! मम हत्थाओ इमे पंच सालिअक्खए गेण्हाहि, अणुपुव्वेणं सारक्खमाणी संगोवेमाणी° विहराहि । तए णंहं तुब्भं एयमट्ठं पडिसुणेमि, ते पंच सालिअक्खए गेण्हामि, एगंतमवक्कमामि ।

तए णं मम इमेयारूवे[4] अज्झत्थिए[5] •चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—एवं खलु ताताणं कोट्ठागारंसि[6] •बहवे पल्ला सालीणं पडिपुण्णा चिट्ठंति, तं जया णं मम ताओ इमे पंच सालिअक्खए जाएसइ, तया णं अहं पल्लंतराओ अण्णे पंच सालिअक्खए गहाय दाहामि त्ति कट्टु एवं संपेहेमि, संपेहेत्ता ते पंच सालिअक्खए एगंते एडेमि, सकम्मसंजुत्ता यावि भवामि° । तं नो खलु ताओ ! ते चेव पंच सालिअक्खए, एए णं अण्णे ।।

२६. तए णं से धणे सत्थवाहे उज्झियाए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्मा[8] आसुरुत्ते जाव[7] मिसिमिसेमाणे उज्झियं तस्स मित्त-नाइ[9]-•नियग-सयण-संबंधि-परियणस्स° चउण्हं सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स य पुरओ तस्स कुलघरस्स छारुज्झियं च 'छाणुज्झियं च'[10] 'कयवरुज्झियं च संपुच्छियं च'[11] सम्मज्जियं च पाओवदाइयं

---

१. ते (क, ख, ग) ।

२. ×(क) ।

३. सं० पा०—नाइ चउण्ह य कुल जाव विहराहि ।

४. इमे एयारूवे (क) ।

५. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।

६. सं० पा०—कोट्ठागारंसि सकम्मसं ।

७. ना० १।१।१६१ ।

८. निसम्म (क्वचित्) ।

९. सं० पा०—नाइ° ।

१०. ×(ख); वृत्तावपि नास्तिव्याख्यातम् ।

११. समुक्खियं (वृ); संपुच्छियं (वृपा) ।

च ण्हाणोवदाइयं च बाहिर[1]-पेसणकारियं[2] च ठवेइ[3] ॥

२७. एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा[4] •आयरिय-उवज्झायाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइए, पंच य से महव्वयाइं उज्झियाइं भवंति, से णं इहभवे चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावयाणं बहूणं सावियाण य हीलणिज्जे जाव[5] चाउरंत-संसार-कंतारं भुज्जो-भुज्जो अणुपरियट्टिस्सइ—जहा सा उज्झिया[6] ॥

२८. एवं भोगवइया वि, नवरं[7]—•छोल्लेमि, छोल्लित्ता अणुगिलेमि, अणुगिलित्ता सकम्मसंजुत्ता यावि भवामि। तं नो खलु ताओ ! ते चेव पंच सालिअक्खए, एए णं अण्णे ।

२९. तए णं से धणे सत्थवाहे भोगवइयाए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्मा आसुरुत्ते जाव[8] मिसिमिसेमाणे भोगवइं तस्स मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणस्स चउण्हं सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स य पुरओ° तस्स कुलघरस्स कंडितियं[9] च कोट्टेंतियं च पीसंतियं च एवं—रुंधंतियं रंधंतियं परिवेसंतियं[10] परिभायंतियं[11] अब्भितरियं[12] पेसणकारिं महाणसिणिं ठवेइ ॥

३०. एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा आयरिय-उवज्झायाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए, पंच य से महव्वयाइं फालियाइं[13] भवंति, से णं इहभवे चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावयाणं बहूणं सावियाण य हीलणिज्जे जाव[14] चाउरंत-संसार-कंतारं भुज्जो-भुज्जो अणुपरियट्टिस्सइ—जहा व सा भोगवइया ॥

३१. एवं रक्खियावि[15], नवरं—जेणेव वासघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मंजूसं विहाडेइ, विहाडेत्ता रयणकरंडगाओ ते पंच सालिअक्खए गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणेव धणे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पंच सालिअक्खए धणस्स हत्थे दलयइ ॥

३२. तए णं से धणे सत्थवाहे रक्खियं एवं वयासी—किं णं पुत्ता ! ते चेव एए पंच सालिअक्खए उदाहु अण्णे ?

---

१. बाहर (ख)।
२. पेसणकारिं (क, ख)।
३. ठावेइ (क)।
४. सं० पा० — निग्गंथी वा जाव पव्वइए।
५. ना० १।३।२४।
६. उज्झिइया (ग, घ)।
७. सं० पा० —नवरं तस्स।
८. ना० १।१।१६१।
९. कुंडेतियं (ख); कंडेतियं (ग); खंडेतियं (घ)।
१०. °तियं च (ग)।
११. °तियं च (ग)।
१२. °तरियं च (ग)।
१३. फाडियाति (घ) फोडियाइं (ख)।
१४. ना० १।३।२४।
१५. रक्खितियावि (ख, ग)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३३. तए णं रक्खिया धणं सत्थवाहं एवं वयासी—ते चेव ताओ[1] ! एए पंच सालि-अक्खए, नो अण्णे ।
कहण्णं ? पुत्ता !
एवं खलु ताओ ! तुब्भे इओ अतीते पंचमे[2] •संवच्छरे इमस्स मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणस्स चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरओ पंच सालि-अक्खए गेण्हह, गेण्हित्ता ममं सद्दावेह, सद्दावेत्ता ममं एवं वयासी—तुमं णं पुत्ता ! मम हत्थाओ इमे पंच सालिअक्खए गिण्हाहि, अणुपुव्वेणं सारक्खमाणी संगोवेमाणी विहराहि। जया णं अहं पुत्ता ! तुमं इमे पंच सालिअक्खए जाएज्जा, तया णं तुमं मम इमे पंच सालिअक्खए पडिनिज्जाएज्जासि त्ति कट्टु मम हत्थंसि पंच सालिअक्खए दलयह। तं° भवियव्वं एत्थ कारणेणं ति कट्टु ते पंच सालिअक्खए सुद्धे वत्थे[3] •बंधेमि, बंधित्ता रयणकरंडियाए पक्खिवेमि, पक्खिवित्ता उसीसामूले ठावेमि, ठावेत्ता° तिसंझं पडिजागरमाणी यावि विहरामि। तओ[4] एएणं कारणेणं ताओ ! ते चेव पंच सालिअक्खए, नो अण्णे ॥

३४. तए णं से धणे सत्थवाहे रक्खियाए[5] अंतियं एयमट्ठं सोच्चा हट्ठतुट्ठे तस्स कुल-घरस्स हिरण्णस्स य कंस-दूस-विपुल-धण[6]-•कणग-रयण-मणि-मोत्तिय-संख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-संत-सार°-सावएज्जस्स[7] य भंडागारिणीं[8] ठवेइ ॥

३५. एवामेव समणाउसो[9] ! •जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा आयरिय-उवज्झा-याणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए,° पंच य से महव्व-याइं रक्खियाइं भवंति, से णं इहभवे चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावगाणं बहूणं सावियाण य अच्चणिज्जे जाव[10] चाउरंतं संसारकंतारं वीईव-इस्सइ—जहा व सा रक्खिया ॥

३६. रोहिणीया वि एवं चेव, नवरं—तुब्भे ताओ ! मम सुबहुयं सगडि-सागडं दलाह[11], जा णं[12] अहं तुब्भं ते पंच सालिअक्खए पडिनिज्जाएमि ॥

३७. तए णं से धणे सत्थवाहे रोहिणिं[13] एवं वयासी—कहं[14] णं तुमं[15] पुत्ता ! ते पंच

---

१. ताया (ख, ग); ताय (घ)।
२. सं० पा०—पंचमे जाव भवियव्वं।
३. सं० पा०—वत्थे जाव तिसंझं।
४. ततेणं (ख); तते (ग); तं (घ)।
५. रक्खितियाए (क, ख, ग, घ)।
६. सं० पा०—धण जाव सावएज्जस्स।
७. सावइज्जस्स (क); सावतेयस्स (ख, ग, घ)।
८. भंडागारिणिं (क्व)।
९. सं० पा०—समणाउसो जाव पंच।
१०. ना० १।३।३४।
११. दलयाह (घ)।
१२. जोअणं (ख)।
१३. रोहिणी (क, ख, ग)।
१४. कह (ग)।
१५. तुमं मम (क, ख, ग)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सालिअक्खए सगडि-सागडेणं निज्जाइस्ससि ? ॥

३८. तए णं सा रोहिणी धणं सत्थवाहं एवं वयासी—एवं खलु ताओ ! तुब्भे इओ अतीते पंचमे संवच्छरे इमस्स मित्त[1]-•नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणस्स चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरओ पंच सालिअक्खए गेण्हह, गेण्हित्ता ममं सद्दावेह, सद्दावेत्ता एवं वयासी—तुमं णं पुत्ता मम हत्थाओ इमे पंच सालिअक्खए गेण्हाहि, अणुपुव्वेणं सारक्खमाणी संगोवेमाणी विहराहि । जया णं अहं पुत्ता ! तुमं इमे पंच सालिअक्खए जाएज्जा, तया णं तुमं मम इमे पंच सालिअक्खए पडिनिज्जाएज्जासि त्ति कट्टु मम हत्थंसि पंच सालिअक्खए दलयह । तं भवियव्वं एत्थ कारणेणं । तं सेयं खलु मम एए पंच सालिअक्खए सारक्खमाणीए संगोवेमाणीए संवड्ढेमाणीए जाव[2] °बहवे कुंभसयाजाया तेणेव कमेण। एवं खलु ताओ ! तुब्भे ते पंच सालिअक्खए सगडि-सागडेणं निज्जाएमि ॥

३९. तए णं से धणे सत्थवाहे रोहिणीयाए सुबहुयं सगडि-सागडं दलाति[3] ॥

४०. तए णं से रोहिणी सुबहुं सगडि-सागडं गहाय जेणेव सए कुलघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कोट्ठागारे विहाडेइ, विहाडित्ता पल्ले उब्भिदइ, उब्भिदित्ता सगडि-सागडं भरेइ, भरेत्ता रायगिहं नगरं मज्झंमज्झेणं जेणेव सए गिहे जेणेव धणे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ ॥

४१. तए णं रायगिहे नयरे सिंघाडग[4]-•तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु° बहुजणो अण्णमण्णं एवमाइक्खइ—धण्णे णं देवाणुप्पिया ! धणे सत्थवाहे, जस्स णं रोहिणीया सुण्हा पंच सालिअक्खए 'सगडि-सागडेणं'[5] निज्जाएइ ॥

४२. तए णं से धणे सत्थवाहे ते पंच सालिअक्खए सगडि-सागडेणं निज्जाइए पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठे[6] पडिच्छइ, पडिच्छित्ता तस्सेव मित्त-नाइ[7]-•नियग-सयण-संबंधि-परियणस्स° चउण्ह य सुण्हाणं कुलघरवग्गस्स पुरओ रोहिणीयं सुण्हं तस्स कुलघरस्स बहूसु कज्जेसु य[8] •कारणेसु य कुडुंबेसु य मंतेसु य गुज्झेसु य •रहस्सेसु य आपुच्छणिज्जं[9] •पडिपुच्छणिज्जं मेढिं पमाणं आहारं आलंबणं चक्खुं, मेढीभूयं पमाणभूयं आहारभूयं आलंबणभूयं चक्खुभूयं सव्वकज्ज°वड्ढावियं पमाणभूयं ठवेइ ।

४३. एवामेव समणाउसो[10] ! •जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा आयरिय-उवज्झायाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए°, पंच से महव्वया

---

१. सं० पा०—मित्त जाव बहवे ।
२. ना० १।७।१०-२१ ।
३. दलयइ (ख) ।
४. सं० पा०—सिंघाडग जाव बहुजणो ।
५. सगडसागडिएणं(क); सगडिसागडिएणं (ख) ।
६. हट्ठ जाव (क, च) ।
७. सं० पा०—नाइ ।
८. सं० पा०—कज्जेसु जाव रहस्सेसु ।
९. सं० पा०—आपुच्छणिज्जं जाव वड्ढावियं ।
१०. सं० पा०—समणाउसो ! जाव पंच ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संवड्ढिया भवंति, से णं इहभवे चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावगाणं बहूणं सावियाण य अच्चणिज्जे जाव[1] चाउरंतं संसारकंतारं वीईवइस्सइ—जहा व सा रोहिणीया ॥

निक्खेव-पदं

४४. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं आइगरेणं तित्थगरेणं जाव[2] सिद्धिगइनामधेज्जं ठाणं संपत्तेणं सत्तमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।

—त्ति बेमि ॥

वृत्तिकृता समुद्धृता निगमनगाथा—

जह सेट्ठी तह गुरुणो, जह नाइ-जणो तहा समणसंघो ।
जह बहुया तह भव्वा, जह सालिकणा तह वयाइं ॥१॥

उज्झिया—

जह सा उज्झियनामा, उज्झियसाली जहत्थमभिहाणा ।
पेसणगारित्तेणं, असंखदुक्खक्खणी जाया ॥२॥
तह भव्वो जो कोई, संघसमक्खं गुरु-विदिण्णाइं ।
पडिवज्जिउं समुज्झइ, महव्वयाइं महामोहा ॥३॥
सो इह चेव भवम्मि, जणाण धिक्कार-भायणं होइ ।
परलोए उ दुहत्तो, नाणा-जोणीसु संचरइ ॥४॥

भोगवती—

जह वा सा भोगवती, जहत्थनामोवभुत्तसालिकणा ।
पेसणविसेसकारित्तणेण पत्ता दुहं चेव ॥५॥
तह जो महव्वयाइं, उवभुंजइ जीवियत्ति पालितो ।
आहाराइसु सत्तो, चत्तो सिवसाहणिच्छाए ॥६॥
सो एत्थ जहिच्छाए, पावइ आहारमाइ लिंगित्ता ।
विउसाण नाइपुज्जो, परलोयंसी दुही चेव ॥७॥

रक्खिया—

जह वा रक्खियबहुया, रक्खियसालीकणा जहत्थक्खा ।
परिजणमण्णा जाया, भोगसुहाइं च संपत्ता ॥८॥
तह जो जीवो सम्मं, पडिवज्जित्ता महव्वए पंच ।
पालेइ निरइयारे, पमाय-लेसंपि वज्जेंतो ॥९॥

---

१. ना० १।३।३४ । २. ना० १।१।७ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सो अप्पहिएक्करई, इहलोयम्मिवि विऊहिं पणयपओ।
एगंतसुही जायइ, परम्मि मोक्खंपि पावेइ ॥१०॥

रोहिणी—

जह रोहिणी उ सुण्हा, रोवियसाली जहत्थमभिहाणा।
वड्ढित्ता सालिकणे, पत्ता सव्वस्स सामित्तं ॥११॥

तह जो भव्वो पाविय, वयाइ पालेइ अप्पणा सम्मं।
अण्णेसि वि भव्वाणं, देइ अणेगेसि हियहेउं ॥१२॥

सो इह संघप्पहाणो, जुगप्पहाणोत्ति लहइ संसद्दं।
अप्पपरेंसि कल्लाण-कारओ गोयमपहुव्व ॥१३॥

तित्थस्स वुड्ढिकारी, अक्खेवणओ कुतित्थियाईणं।
विउस-नरसेविय-कमो, कमेण सिद्धिं पि पावेइ ॥१४॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अट्ठमं अज्झयणं

मल्ली

उक्खेव-पदं

१. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[1] संपत्तेणं सत्तमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, अट्ठमस्स णं भंते ! नायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?

बल-राय-पदं

२. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमेणं, निसढस्स वासहरपव्वयस्स उत्तरेणं, सोओदाए महानदीए दाहिणेणं, सुहावहस्स वक्खारपव्वयस्स पच्चत्थिमेणं, पच्चत्थिम-लवणसमुद्दस्स पुरत्थिमेणं, एत्थ णं सलिलावई[2] नामं विजए पण्णत्ते ।।

३. तत्थ णं सलिलावईविजए वीयसोगा नामं रायहाणी[3]—नवजोयणवित्थिण्णा जाव[4] पच्चक्खं देवलोगभूया ।।

४. तीसे णं वीयसोगाए रायहाणीए उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए इंदकुंभे नामं उज्जाणे ।।

५. तत्थ णं वीयसोगाए रायहाणीए बले[5] नामं राया । तस्स[6] धारिणीपामोक्खं देवीसहस्सं ओरोहे[7] होत्था ।।

६. तए णं सा धारिणी देवी अण्णया कयाइ सीहं सुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धा जाव[8] महब्बले दारए जाए—उम्मुक्कबालभावे जाव भोगसमत्थे ।।

---

१. ना० १।१।७ ।
२. नलिणावती (वृपा) ।
३. ०हाणी पण्णत्ता (क, घ) ।
४. ना० १।५।२ ।
५. धीबले (क, ख) ।
६. तस्स णं (क) ।
७. ओरोहो (क) ।
८. भग० ११।१३३-१५६ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७. तए णं तं महब्बलं अम्मापियरो सरिसियाणं कमलसिरिपामोक्खाणं पंचण्हं रायवरकन्नासयाणं[1] एगदिवसेणं पाणिं गेण्हावेंति। पंच पासायसया। पंचसओ दाओ जाव[2] माणुस्सए कामभोगे पच्चणुब्भवमाणे विहरइ।

८. [3]•तेणं कालेणं तेणं समएणं इंदकुंभे उज्जाणे थेरा° समोसढा। परिसा निग्गया। 'बलो वि'[4] निग्गओ। धम्मं सोच्चा निसम्म[5] •हट्ठतुट्ठे थेरे तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी— सद्दहामि णं भंते! निग्गंथं पावयणं जाव[6] नवरं महब्बलं कुमारं रज्जे° ठावेमि। तओ पच्छा देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वयामि।

अहासुहं देवाणुप्पिया! जाव[7] एक्कारसंगवी। बहूणि[8] वासाणि परियाओ। जेणेव चारुपव्वए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता[8] मासिएणं भत्तेणं सिद्धे॥

महब्बल-राय-पदं

९. तए णं सा कमलसिरी अण्णया कयाइ सीहं सुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धा जाव[9]। बलभद्दो कुमारो जाओ। जुवराया यावि होत्था॥

१०. तस्स णं महब्बलस्स रण्णो इमे 'छप्पि य बालवयंसगा'[10] रायाणो होत्था, तं जहा—

अयले धरणे पूरणे वसू वेसमणे अभिचंदे[11]—सहजायया[12] •सहवड्ढियया सहपंसु-कीलियया सहदारदरिसी अण्णमण्णमणुरत्तया अण्णमण्णमणुव्वयया अण्णमण्ण-च्छंदाणुवत्तया अण्णमण्णहियइच्छियकारया अण्णमण्णेसु रज्जेसु किच्चाइं करणिज्जाइं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति॥

११. तए णं तेसिं रायाणं अण्णया कयाइं एगयओ सहियाणं समुवागयाणं सण्णि-सण्णाणं सण्णिविट्ठाणं इमेयारूवे मिहोकहा-समुल्लावे समुप्पज्जित्था—जण्णं देवाणुप्पिया! अम्हं सुहं वा दुक्खं वा पवज्जा वा विदेसगमणं वा समुप्पज्जइ, तण्णं अम्मेहिं एगयओ° समेच्चा[13] नित्थरियव्वे त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति॥

---

१. °कन्नया° (ग)।
२. ना० १।१।९१-९३।
३. सं० पा०—थेरागमणं इंदकुंभे उज्जाणे समोसढा। असौ पाठः (१२) सूत्रेण नियोजितोस्ति।
४. धीबलो (क)।
५. सं० पा०—निसम्म जं० नवरं महब्बलं कुमारं रज्जे ठावेमि।
६. ना० १।१।१०१।
७. ना० १।५।८८-१०१।
८. पू०—ना० १।५।१०४, १०५।
९. भग० ११।१३३-१५६।
१०. छप्पिया° (क, ख, ग)।
११. अभियंदे (ख, घ)।
१२. सं० पा०- सहजायया जाव समेच्चा।
१३. संहिच्चाए (ख, ग, घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१२. तेणं कालेणं तेणं समएणं इंदकुंभे उज्जाणे थेरा समोसढा। परिसा निग्गया। महब्बले णं धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे[1]। जं नवरं--छप्पि य बालवयंसए आपुच्छामि, बलभद्दं च कुमारं रज्जे ठावेमि, जाव[2] ते छप्पि य बालवयंसए आपुच्छइ॥

१३. तए णं ते छप्पि य बालवयंसगा महब्बलं रायं एवं वयासी—जइ णं देवाणुप्पिया! तुब्भे पव्वयह, अम्हं के अण्णे आहारे[3] •वा आलंबे वा? अम्हे वि य णं° पव्वयामो॥

१४. तए णं से महब्बले राया ते छप्पि य बालवयंसए एवं वयासी--जइ णं तुब्भे मए सद्धिं[4] पव्वयह, तं[5] गच्छह, जेट्ठपुत्ते सएहिं-सएहिं रज्जेहिं[6] ठावेह, पुरिस-सहस्सवाहिणीओ सीयाओ दुरूढा[7] •समाणा मम अंतियं पाउब्भवह। तेवि तहेव° पाउब्भवंति॥

१५. तए णं से महब्बले राया छप्पि य बालवयंसए पाउब्भूए पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ जाव[8] बलभद्दस्स अभिसेओ। जाव[9] बलभद्दं रायं आपुच्छइ॥

महब्बलादीणं पव्वज्जा-पदं

१६. तए णं से महब्बले[10] •छहिं बालवयंसगेहिं सद्धिं° महया इड्ढीए पव्वइए। एक्कारसंगवी[11]। बहूहिं चउत्थ[12]-•छट्ठट्ठम-दसम-दुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं अप्पाणं° भावेमाणे विहरइ॥

१७. तए णं तेसिं महब्बलपामोक्खाणं सत्तण्हं अणगाराणं अण्णया कयाइ एगयओ सहियाणं इमेयारूवे मिहोकहा-समुल्लावे समुप्पज्जित्था—जण्णं[13] अम्हं देवाणुप्पिया एगे तवोकम्मं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ, तण्णं अम्हेहिं सव्वेहिं तवोकम्मं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता बहूहिं चउत्थ[14]-•छट्ठट्ठम-दसम-दुवालसेहिं मासद्धमास-खमणेहिं अप्पाणं भावेमाणा° विहरंति॥

---

१. पू०—ना० १।५।८७।
२. ना० १।५।८७-८६।
३. सं० पा०—आहारे जाव पव्वयामो।
४. सद्धिं जाव (क, ख, ग, घ)।
५. तो णं (क्व०)।
६. रज्जेहिं रट्ठेहिं (ख, ग, घ)।
७. सं० पा०—दुरूढा जाव पाउब्भवंति।
८. ना० १।५।६२-६४।
९. ना० १।५।६५,६६।
१०. सं० पा०—महब्बले जाव महया।
११. एक्कारसअंगाइं (क);एक्कारसअंगवी (ख,घ)।
१२. सं० पा०—चउत्थ जाव भावेमाणे।
१३. जण्हं (ग, घ)।
१४. सं० पा०—चउत्थ जाव विहरंति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महब्बलस्स तवविसय-माया-पद

१८. तए णं से महब्बले अणगारे इमेणं कारणेणं इत्थिनामगोयं कम्मं निव्वत्तिसु— जइ णं ते महब्बलवज्जा छ अणगारा चउत्थं उवसंपज्जित्ता णं विहरंति, तओ से महब्बले अणगारे छट्ठं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ। जइ[1] णं ते महब्बलवज्जा छ अणगारा छट्ठं उवसंपज्जित्ता णं विहरंति, तओ से महब्बले अणगारे अट्ठमं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ। एवं—अह अट्ठमं तो दसमं, अह दसमं तो दुवालसमं। 'इमेहि य'[2] णं वीसाए णं कारणेहिं आसेविय-बहुलीकएहिं तित्थयर-नामगोयं कम्मं निव्वत्तिसु, तं जहा—

संगहणी-गाहा

अरहंत-सिद्ध-पवयण-गुरु-थेर-बहुस्सुय[3]-तवस्सीसु।
वच्छल्लया य तेसिं, अभिक्ख[4] नाणोवओगे य ॥१॥
दंसण-विणए आवस्सए य सीलव्वए निरइयारो।
खणलवतवच्चियाए, वेयावच्चे समाहीए[5] ॥२॥
अपुव्वनाणगहणे, सुयभत्ती पवयण[6]-पहावणया।
एएहिं कारणेहिं, तित्थयरत्तं लहइ 'सो उ'[7] ॥३॥

महब्बलादीणं विविहतवचरण-पदं

१९. तए णं ते महब्बलपामोक्खा सत्त अणगारा मासियं भिक्खुपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरंति जाव[8] एगराइयं॥

२०. तए णं ते महब्बलपामोक्खा सत्त अणगारा खुड्डागं 'सीहनिक्कीलियं तवोकम्मं'[9] उवसंपज्जित्ता णं विहरंति, तं जहा—

चउत्थं करेंति, सव्वकामगुणियं पारेंति।
छट्ठं करेंति, चउत्थं करेंति।
अट्ठमं करेंति, छट्ठं करेंति।
दसमं करेंति, अट्ठमं करेंति।
दुवालसमं करेंति, दसमं करेंति।
चोद्दसमं करेंति, दुवालसमं करेंति।

---

१. अत्र वर्णविपर्ययेण 'यकार' स्थाने इकारो जातः। मृदूच्चारणार्थं वर्णविपर्ययो लभ्यते आर्षवाक्येषु।
२. इमेहिं च (क)।
३. बहुस्सुए (क, ख, ग, घ)।
४. अत्र अनुस्वारलोपः।
५. समाही य (क, ख, ग, घ)।
६. पवयणे (क, ख, ग, घ)।
७. जीवो (वृ); एसो (वृपा)।
८. ना० १।१।१९८।
९. °लियत्तवोकम्मं (ख)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोलसमं करेंति, चोद्दसमं करेंति।
अट्ठारसमं करेंति, सोलसमं करेंति।
वीसइमं करेंति, सोलसमं करेंति।
अट्ठारसमं करेंति, चोद्दसमं करेंति।
सोलसमं करेंति, दुवालसमं करेंति।
चोद्दसमं करेंति, दसमं करेंति।
दुवालसमं करेंति, अट्ठमं करेंति।
दसमं करेंति, छट्ठं करेंति।
अट्ठमं करेंति, चउत्थं करेंति।

छट्ठं करेंति, चउत्थं करेंति, करेत्ता सव्वत्थ सव्वकामगुणिएणं पारेंति।
एवं खलु एसा खुड्डागसीहनिक्कीलियस्स तवोकम्मस्स पढमा परिवाडी छहिं मासेहिं सत्तहि य अहोरत्तेहिं अहासुत्तं जाव[1] आराहिया भवइ॥

२१. तयाणंतरं दोच्चाए परिवाडीए चउत्थं करेंति, नवरं—विगइवज्जं[2] पारेंति॥

२२. एवं तच्चा वि परिवाडी, नवरं—पारणए अलेवाडं पारेंति॥

२३. एवं चउत्था वि परिवाडी, नवरं—पारणए आयंबिलेण पारेंति॥

२४. तए णं ते महब्बलपामोक्खा सत्त अणगारा खुड्डागं सीहनिक्कीलियं तवोकम्मं दोहिं संवच्छरेहिं अट्ठवीसाए अहोरत्तेहिं अहासुत्तं जाव[3] आणाए आराहेत्ता जेणेव थेरे भगवंते तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता थेरे भगवंते वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामो णं भंते! महालयं सीहनिक्कीलियं तवोकम्मं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए।
तहेव जहा[4] खुड्डागं, नवरं—चोत्तीसइमाओ नियत्तइ। एगाए परिवाडीए कालो एगेणं संवच्छरेणं छहिं मासेहिं अट्ठारसहि य अहोरत्तेहिं समप्पेइ[5]। सव्वंपि [महालयं ?] सीहनिक्कीलियं छहिं वासेहिं दोहिं मासेहिं बारसहि य अहोरत्तेहिं समप्पेइ॥

२५. तए णं ते महब्बलपामोक्खा सत्त अणगारा महालयं सीहनिक्कीलियं अहासुत्तं जाव[6] आराहित्ता जेणेव थेरे भगवंते तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता थेरे भगवंते वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता बहूणि चउत्थ[7]-•छट्ठट्ठम-दसम-दुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं अप्पाणं भावेमाणा° विहरंति॥

---

१. ठा० ७।१३।
२. विगति° (ख); विगय (घ)।
३. ठा० ७।१३।
४. पू०—ना० १।८।२०।
५. समप्पइ (क)।
६. ठा० ७।१३।
७. सं० पा०—चउत्थ जाव विहरंति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समाहिमरण-पदं

२६. तए णं ते महब्बलपामोक्खा सत्त अणगारा तेणं उरालेणं[1] तवोकम्मेणं सुक्का भुक्खा निम्मंसा किडिकिडियाभूया अट्ठिचम्मावणद्धा किसा धमणिसंतया जाया या वि होत्था। जहा खंदओ[2] नवरं—थेरे आपुच्छित्ता चारुपव्वयं सणियं-सणियं दुरुहंति जाव[3] दोमासियाए संलेहणाए अप्पाणं झोसेत्ता, सवीसं भत्तसयं अणसणाए छेएत्ता, चउरासीइं वाससयसहस्साइं सामण्णपरियागं पाउणित्ता, चुलसीइं पुव्वसयसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता जयंते विमाणे देवत्ताए उववण्णा। तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं बत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। तत्थ णं महब्बलवज्जाणं छण्हं देवाणं देसूणाइं बत्तीसं सागरोवमाइं ठिई। महब्बलस्स देवस्स य पडिपुण्णाइं बत्तीसं सागरोवमाइं ठिई[4]॥

पच्चायाति-पदं

२७. तए णं ते महब्बलवज्जा छप्पि देवा जयंताओ देवलोगाओ आउक्खएणं 'भवक्खएणं ठितिक्खएणं'[5] अणंतरं चयं चइत्ता इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे विसुद्धपिइमाइवंसेसु[6] रायकुलेसु पत्तेयं-पत्तेयं कुमारत्ताए पच्चायाया, तं जहा—
पडिबुद्धी इक्खागराया,
चंदच्छाए अंगराया,
संखे कासिराया,
रुप्पी कुणालाहिवई,
अदीणसत्तू कुरुराया,
जियसत्तू पंचालाहिवई॥

२८. तए णं से महब्बले देवे तिहिं नाणेहिं समग्गे 'उच्चट्ठाणगएसु गहेसु'[7], सोमासु दिसासु वितिमिरासु विसुद्धासु, जइएसु[8] सउणेसु, पयाहिणाणुकूलंसि भूमि-सप्पिंसि मारुयंसि पवायंसि, निप्फण्ण-सस्स-मेइणीयंसि कालंसि पमुइय-पक्कीलिएसु[9] जणवएसु अद्धरत्तकालसमयंसि अस्सिणीनक्खत्तेणं जोगमुवागएणं जे से 'हेमंताणं चउत्थे मासे अट्ठमे पक्खे, तस्स णं फग्गुणसुद्धस्स'[10] चउत्थीपक्खेणं जयंताओ विमाणाओ बत्तीसं सागरोवमठिइयाओ अणंतरं चयं चइत्ता इहेव

---

१. पू०—ना० १।१।२०२।
२. भग० २।१६४-६८; इहैव यथा मेघकुमारो वर्णितः (१।१।२०३-२०६)।
३. ना० १।१।२०६-२०८।
४. ठिई पण्णत्ता (क, ख, घ)।
५. ठितिक्खएणं भवक्खएणं (ख, ग, घ)।
६. पितिमाति० (ख, ग, घ)।
७. ०गएसु गहेसु (घ)।
८. जइतेसु गहेसु (क, ख, ग, घ)।
९. पकीलिएसु (ख)।
१०. वाचनान्तरेषु—गिम्हाणं पढमे मासे दोच्चे पक्खे चेत्तसुद्धे तस्स णं चेत्तसुद्धस्स (वृ)।

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे मिहिलाए रायहाणीए कुंभस्स[1] रण्णो पभावतीए देवीए कुच्छिंसि आहारवक्कंतीए भववक्कंतीए सरीरवक्कंतीए गब्भत्ताए वक्कंते ॥

२९. [2]•जं रयणिं च णं महब्बले देवे पभावतीए देवीए कुच्छिंसि गब्भत्ताए वक्कंते, तं रयणिं च णं सा पभावती देवी[3] चोद्दस महासुमिणे पासित्ता णं पडिबुद्धा[4]° । भत्तार-कहणं । सुमिणपाढगपुच्छा[5] जाव[6] •विपुलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी° विहरइ ॥

३०. तए णं तीसे पभावईए देवीए तिण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं इमेयारूवे डोहले पाउब्भूए—धण्णाओ णं 'ताओ अम्मयाओ'[7] जाओ णं जल-थलय-भासर[8]-प्पभूएणं दसद्धवण्णेणं मल्लेणं अत्थुय-पच्चत्थुयंसि सयणिज्जंसि सण्णिसण्णाओ निवण्णाओ[9] य विहरंति, एगं च महं सिरिदामगंडं पाडल-मल्लिय-चंपग-असोग-पुन्नाग-नाग-मरुयग-दमणग-अणोज्जकोज्जय[10]-पउरं परमसुहफासं[11] दरिसणिज्जं महया गंधद्धणिं मुयंतं अग्घायमाणीओ[12] डोहलं विणेंति ॥

३१. तए णं तीसे[13] पभावईए इमं एयारूवं डोहलं पाउब्भूयं पासित्ता अहासण्णिहिया वाणमंतरा देवा खिप्पामेव जल-थलय[14]-•भासरप्पभूयं दसद्धवण्णं° मल्लं कुंभग्गसो य भारग्गसो य कुंभस्स[15] रण्णो भवणंसि साहरंति, एगं च णं महं सिरिदामगंडं जाव[16] गंधद्धणिं मुयंतं उवणेंति ॥

३२. तए णं सा पभावई देवी जल-थलय[17]-•भासरप्पभूएणं दसद्धवण्णेणं° मल्लेणं[18] दोहलं विणेइ ॥

३३. तए णं सा पभावई देवी पसत्थदोहला[19] •सम्माणियदोहला विणीयदोहला संपुण्णदोहला संपत्तदोहला विउलाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं पच्चणुभवमाणी° विहरइ ॥

---

१. कुंभगस्स (क, ख, ग) ।
२. सं० पा०—तं रयणिं च णं चोद्दसमहासुमिणा वण्णओ ।
३. पू० कप्पो० सू० ४ ।
४. पू०—कप्पो० सू० ३ ।
५. सं० पा०–सुमिणपाढगपुच्छा जाव विहरइ ।
६. ना० १।१।१६-३२ ।
७. तातो अम्मयातो (ख) ।
८. पभासुर (ख, ग) ।
९. सयंणुवण्णाओ (क, ग); सयणुवण्णातो (ख, घ) ।
१०. °कुज्जय (क) ।
११. °सुह (ग, घ) ।
१२. आघाय° (क) ।
१३. तीए (ख, ग, घ) ।
१४. सं० पा०—थलय जाव दसद्धवण्णं ।
१५. कुंभगस्स (ख) ।
१६. ना० १।८।३० ।
१७. सं० पा०—थलय जाव मल्लेणं ।
१८. पू०—ना० १।८।३० ।
१९. सं० पा०—पसत्थदोहला जाव विहरइ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३४. तए णं सा पभावई देवी नवण्हं मासाणं [बहुपडिपुण्णाणं ?] अद्धट्ठमाण य राइंदियाणं [वीइक्कंताणं ?] जे से हेमंताणं पढमे मासे दोच्चे पक्खे मग्गसिर-सुद्धे, तस्स णं एक्कारसीए पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि अस्सिणीनक्खत्तेणं [जोगमुवागएणं ?] उच्चट्ठाणगएसु गहेसु जाव[1] पमुइय-पक्कीलिएसु जणवएसु आरोयारोयं[2] एगूणवीसइमं तित्थयरं पयाया ॥

३५. तेणं कालेणं तेणं समएणं अहेलोगवत्थव्वाओ अट्ठ दिसाकुमारीमहयरियाओ जहा जंबुद्दीवपण्णत्तीए[3] जम्मणुस्सवं[4], नवरं—मिहिलाए कुंभस्स पभावईए अभिलाओ संजोएयव्वो जाव नंदीसरवरदीवे महिमा ॥

३६. तया णं कुंभए राया बहूहिं भवणवइ[5]-•वाणमंतर-जोइस-वेमाणिएहिं देवेहिं तित्थयर-जम्मणाभिसेयमहिमाए कयाए समाणीए पच्चूसकालसमयंसि नगर-गुत्तिए सद्दावेइ° जायकम्मं जाव[6] नामकरणं—जम्हा[7] णं अम्हं इमीसे[8] दारियाए माऊए मल्लसयणिज्जंसि डोहले विणीए, तं होउ णं [अम्हं दारिया ?] नामेणं मल्ली[9] ॥

३७. [10]•तए णं सा मल्ली पंचधाईपरिक्खित्ता जाव[11] सुहंसुहेणं परिवड्ढई° ॥

---

१. ना०—१।८।२८।

२. आरोग्गारोग्गं (ग)।

३. वक्ष° ५।

४. जम्मणं सव्वं (क, ख, ग, घ)। अत्र 'जम्मणं सव्वं' अस्य पाठस्यार्थो नैव संगतिं गच्छति। वृत्तिकृता—'जन्मवक्तव्यता सर्वा वाच्या' इति विवृतम्, किन्तु नात्र विवरणानुसारी पाठोस्ति। अत्र 'जम्मणुस्सवं' इति पाठः स्वाभाविकः स्यात्। जंबुद्वीपप्रज्ञप्त्यामपि 'जम्मणमहिमं करेंति' इति पाठो लभ्यते। असौ 'जम्मणुस्सवं' इति पाठस्य पुष्टिं करोति। लिपिदोषेण पाठविपर्ययो जातः इति कल्पना नात्रास्वाभाविकी।

५. सं० पा०—भवणवइ° तित्थयर°।

६. कप्पो° महावीर जन्म प्रकरण।

७. जहा (ख, घ)।

८. इमीए (क, ख, ग, घ); अत्र षष्ठ्यन्तं पदमस्ति तेन 'इमीसे' इति पदं युज्यते।

९. मल्ली २ (क)।

१०. सं० पा०—जहा महब्बले जाव परिवड्ढिया। अत्र पूर्णपाठावलोकनार्थं महाबलस्य संकेतः कृतोस्ति। तस्य वर्णनं भगवत्यां (११।११) विद्यते। तत्राप्यादर्शेषु 'जहा दढपइण्णे' इति समर्पणमस्ति, तेनास्माभिरसौ पाठः दृढप्रतिज्ञप्रकरणादेव पूरितः।

अतोग्रे आदर्शेषु निम्नलिखितं गाथाद्वयं प्राप्यते, किन्तु एतत् प्रक्षिप्तमस्ति। वृत्तिकारेणापि सूचितमिदं, यथा—'सा वड्ढई भगवई' इत्यादि गाथाद्वयं आवश्यक-निर्युक्तिसंबंधिऋषभमहावीरवर्णकरूपं बहु-विशेषणसाधर्म्यादिहाधीतम्, न पुनर्गाथा-द्वयोक्तानि विशेषणानि सर्वाणि मल्लि-जिनस्य घटन्ते। तेनास्माभिः नैतत् मूलपाठे स्वीकृतम्। तच्च गाथाद्वयमिदम्—

सा वड्ढई भगवई, दियलोयचुया अणोवमसिरीया।
दासीदासपरिवुडा, परिकिण्णा पीढमद्देहिं ॥१॥

३८. तए णं सा मल्ली विदेहरायवरकन्ना उम्मुक्कबालभावा[1] •विण्णय-परिणयमेत्ता जोव्वणगमणुपत्ता° रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य अईव-अईव उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा जाया यावि होत्था ॥

३९. तए णं सा मल्ली देसूणवाससयजाया ते 'छप्पि य रायाणो'[2] विउलेणं ओहिणा आभोएमाणी-आभोएमाणी विहरइ, तं जहा—पडिबुद्धिं[3] •इक्खागरायं, चंदच्छायं अंगरायं, संखं कासिरायं, रुप्पिं कुणालाहिवइं, अदीणसत्तुं कुरुरायं° जियसत्तुं पंचालाहिवइं ॥

मल्लिस्स मोहणघर-निम्माण-पदं

४०. तए णं सा मल्ली कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! असोगवणियाए एगं महं मोहणघरं करेह—अणेगखंभसय-सण्णिविट्ठं[4]। तस्स णं मोहणघरस्स बहुमज्झदेसभाए छ गब्भघराए करेह। तेसि णं गब्भघरगाणं बहुमज्झदेसभाए जालघरयं करेह। तस्स णं जालघरयस्स बहुमज्झदेसभाए मणिपेढियं[5] करेह[6]। •एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह। तेवि तहेव° पच्चप्पिणंति ॥

असियसिरया सुनयणा, बिंबोट्ठी धवलदंतपंतीया।
वरकमलकोमलंगी, फुल्लुप्पलगंधनीसासा ॥२॥
वृत्तिकारेण स्थाने-स्थाने अनयोः पाठभेदा उल्लिखिताः।

आवश्यकनिर्युक्तौ भगवतो ऋषभस्य वर्णने इदं गाथाद्वयमित्थमस्ति—

अह वड्ढइ सो भयवं, दियलोगचुओ य अणुवमसिरीओ।
देवगणसंपरिवुडो, नंदाए सुमंगला-सहिओ ॥१८७॥
असियसिरओ सुनयणो, बिंबोट्ठो धवलदंतपंतीओ।
वरपउमगब्भगोरो, फुल्लुप्पलगंधनीसासो ॥१८८[1]॥

भगवतो महावीरस्य वर्णने तद् गाथाद्वयमित्थमस्ति—

अह वड्ढइ सो भयवं, दिवलोगचुओ अणुवमसिरीओ।
दासीदासपरिवुडो, परिकिण्णो पीढमद्देहिं ॥६९॥
असियसिरओ सुनयणो, बिंबोट्ठो धवलदंतपंतीओ।
वरपउमगब्भगोरो, फुल्लुप्पलगंधनीसासो ॥७०॥

११. राय० सू० ८०४।
१. सं० पा०—उम्मुक्कबालभावा जाव रूवेण।
२. छप्पिया° (क); छप्पि° (ख, घ)।
३. सं० पा०—पडिबुद्धि जाव जियसत्तु।
४. पू०—ना० १।१।८९।
५. °पीढियं (ख, घ); °पीढयं (ग)।
६. सं० पा०—करेह जाव पच्चप्पिणंति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४१. तए णं सा मल्ली मणिपेढियाए उवरिं अप्पणो सरिसियं सरित्तयं सरिव्वयं सरिस-लावण्ण-रूव-जोव्वण-गुणोववेयं कणगामइं[1] मत्थयच्छिड्डुं पउमुप्पल[2]-पिहाणं पडिमं करेइ, करेत्ता जं विउलं असण-पाण-खाइम-साइमं आहारेइ, तओ मणुण्णाओ असण-पाण-खाइम-साइमाओ कल्लाकल्लिं एगमेगं पिंडं गहाय तीसे कणगामईए मत्थयछिड्डाए[3] •पउमुप्पल-पिहाणाए° पडिमाए मत्थयंसि पक्खिवमाणी-पक्खिवमाणी विहरइ ।।

४२. तए णं तीसे कणगामईए मत्थयछिड्डाए[4] •पउमुप्पल-पिहाणाए° पडिमाए एगमेगंसि पिंडे पक्खिप्पमाणे-पक्खिप्पमाणे तओ गंधे[5] पाउब्भवेइ, से जहाणामए —अहिमडे इ वा[6] •गोमडे इ वा सुणहमडे इ वा मज्जारमडे इ वा मणुस्समडे इ वा महिसमडे इ वा मूसगमडे इ वा आसमडे इ वा हत्थिमडे इ वा सीहमडे इ वा वग्घमडे इ वा विगमडे इ वा दीविगमडे इ वा । मय-कुहिय-विणट्ठ-दुरभिवा-वण्ण-दुब्भिगंधे किमिजालाउलसंसत्ते असुइ-विलीण-विगय-बीभत्सदरिसणिज्जे भवेयारूवे सिया ?

नो इणट्ठे समट्ठे । एत्तो अणिट्ठतराए चेव अकंततराए चेव अप्पियतराए चेव अमणुण्णतराए चेव° अमणामतराए चेव ।।

पडिबुद्धिराय-पदं

४३. तेणं कालेणं तेणं समएणं कोसला नामं जणवए । तत्थ णं सागेए नामं नयरे ।

४४. तस्स णं उत्तरपुरत्थिमे[7] दिसीभाए, एत्थ णं महेगे नागघरए होत्था—दिव्वे सच्चे सच्चोवाए सण्णिहिय-पाडिहेरे ।।

४५. तत्थ णं सागेए नयरे पडिबुद्धी नामं इक्खागराया परिवसइ । पउमावई देवी । सुबुद्धी अमच्चे साम-दंड[8]-•भेय-उवप्पयाण-नीति-सुपउत्त-नय-विहण्णू[9] विहरई °।।

४६. तए णं पउमावईए देवीए अण्णया कयाइ नागजण्णए यावि होत्था ।।

४७. तए णं सा पउमावई देवी नागजण्णमुवट्ठियं जाणित्ता जेणेव पडिबुद्धी[10] •राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए

---

१. कणगामयं (ग) ।
२. पउमप्पल्ल (ख, ग, घ) ।
३. सं० पा०—मत्थयछिड्डाए जाव पडिमाए ।
४. सं० पा—कणगामईए जाव मत्थयछिड्डाए । अत्र जाव शब्दस्य प्रयोगोऽशुद्धोस्ति । असौ उपरितनसूत्रवत् 'मत्थयछिड्डाए जाव पडिमाए' एवं युज्यते ।
५. गंधिए (क); गंधि (ग, घ) ।
६. सं० पा०—अहिमडे इ वा जाव अणिट्ठतराए अमणामतराए ।
७. उत्तरपुरत्थिमे णं (ख, ग) ।
८. सं० पा०—साम दंड° । असौ अपूर्णः पाठः 'जाव' आदिपूर्तिसंकेतरहितोस्ति ।
९. पू०—ना० १।१।१६ ।
१०. सं० पा०—पडिबुद्धी° करयल° ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावेत्ता° एवं वयासी—एवं खलु सामी! मम कल्लं नागजण्णए भविस्सइ। तं इच्छामि णं सामी! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणी नागजण्णयं गमित्तए। तुब्भे वि णं सामी! मम नागजण्णयंसि समोसरह॥

४८. तए णं पडिबुद्धी पउमावईए एयमट्ठं पडिसुणेइ॥

४९. तए णं पउमावई पडिबुद्धिणा रण्णा अब्भणुण्णाया समाणी हट्ठतुट्ठा कोडुंबिय-पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! मम कल्लं नागजण्णं भविस्सइ, तं तुब्भे मालागारे सद्दावेह, सद्दावेत्ता एवं वदाह—एवं खलु पउमावईए देवीए कल्लं नागजण्णए भविस्सइ, तं तुब्भे णं देवाणुप्पिया! जल-थलय[1]-•भासरप्पभूयं° दसद्धवण्णं मल्लं नागघरयंसि साहरह, एगं च णं महं सिरिदामगंडं उवणेह।

तए णं जल-थलय-[2]•भासरप्पभूएणं° दसद्धवण्णेणं मल्लेणं णाणाविह-भत्ति-सुविरइयं हंस-मिय-मयूर-कोंच-सारस-चक्कवाय[3]-मयणसाल-कोइल-कुलोववेयं ईहामिय[4]-•उसभ-तुरय-नर-मगर-विहग-वालग-किनर-रुरु-सरभ-चमर-कुंजर-वणलय-पउमलय°-भत्तिचित्तं महग्घं महरिहं विउलं पुप्फमंडवं विरएह। तस्स णं बहुमज्झदेसभाए एगं महं सिरिदामगंडं जाव[5] गंधद्धणिं मुयंतं उल्लोयंसि ओलएह, पउमावइं देविं पडिवालेमाणा चिट्ठह॥

५०. तए णं ते कोडुंबिया जाव[6] पउमावतिं देविं पडिवालेमाणा चिट्ठंति॥

५१. तए णं सा पउमावई देवी कल्लं[7] •पाउप्पभायाए रयणीए जाव[8] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते° कोडुंबिए पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! सागेयं नयरं सब्भितरबाहिरियं आसिय-सम्मज्जिओवलित्तं जाव[9] गंधवट्टिभूयं करेह, कारवेह य, एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह। ते वि तहेव पच्चप्पिणंति॥

५२. तए णं सा पउमावई देवी दोच्चंपि कोडुंबिय[10]-•पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! लहुकरणजुत्तं जाव[11] धम्मियं जाणप्पवरं उवट्ठवेह। ते वि तहेव° उवट्ठवेंति॥

---

१. सं० पा०—थलय°।
२. सं० पा०—थलय°।
३. चक्काय (क)।
४. सं० पा०—ईहामिय जाव भत्तिचित्तं।
५. ना० १।८।३०।
६. ना० १।८।४९।
७. सं० पा०—कल्लं°।
८. ना० १।१।२४।
९. ना० १।१।३३।
१०. सं० पा०—कोडुंबिय जाव खिप्पामेव लहुकरणजुत्तं जाव जुत्तामेव उवट्ठवेंति।
११. उवा० १।४७।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५३. तए णं सा पउमावई देवी अंतो अंतेउरंसि ण्हाया जाव[1] धम्मियं जाणं दुरूढा ॥

५४. तए णं सा पउमावई देवी नियग-परियाल-संपरिवुडा सागेयं नयरं मज्झंमज्झेणं निज्जाइ[2], जेणेव पोक्खरणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोक्खरणिं ओगाहति, ओगाहित्ता जलमज्जणं करेइ जाव[3] परमसुइभूया उल्लपडसाडया जाइं तत्थ उप्पलाइं जाव[4] ताइं[5] गेण्हइ, जेणेव नागघरए तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

५५. तए णं पउमावईए देवीए दासचेडीओ बहूओ पुप्फपडलग-हत्थगयाओ धूवकडच्छुय-हत्थगयाओ पिट्ठओ समणुगच्छंति ॥

५६. तए णं पउमावई देवी सव्विड्ढीए जेणेव नागघरए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता नागघरं अणुप्पविसइ, लोमहत्थगं परामुसइ जाव[6] धूवं डहइ, पडिबुद्धिं पडिवालेमाणी-पडिवालेमाणी चिट्ठइ ॥

५७. तए णं से पडिबुद्धी ण्हाए[7] हत्थिखंधवरगए सकोरेंट[8]•मल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं ° सेयवरचामराहिं वीइज्जमाणे हय-गय-रह-पवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडे महया भड-चडगर-रह-पहकर-विंदपरिक्खित्ते सागेयं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव नागघरए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता हत्थिखंधाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता आलोए पणामं करेइ, करेत्ता पुप्फमंडवं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता पासइ तं एगं महं सिरिदामगंडं ॥

५८. तए णं पडिबुद्धी तं सिरिदामगंडं सुचिरं[9] कालं निरिक्खइ। तंसि सिरिदामगंडंसि जायविम्हए सुबुद्धिं अमच्चं एवं वयासी--तुमं देवाणुप्पिया ! मम दोच्चेणं बहूणि गामागर जाव[10] सण्णिवेसाइं आहिंडसि, बहूण य राईसर जाव[11] सत्थवाहपभिईणं गिहाइं अणुप्पविससि, तं अत्थि णं तुमे कहिंचि एरिसए सिरिदामगंडे दिट्ठपुव्वे, जारिसए णं इमे पउमावईए देवीए सिरिदामगंडे ?

५९. तए णं सुबुद्धी पडिबुद्धिं रायं एवं वयासी--एवं खलु सामी ! अहं अण्णया कयाइ[12] तुब्भं दोच्चेणं मिहिलं रायहाणिं गए। तत्थ णं मए कुंभयस्स रण्णो धूयाए पभावईए देवीए अत्तयाए मल्लीए संवच्छर-पडिलेहणगंसि दिव्वे

---

१. ना० १।१।६५।
२. नियाइ (क, ख); निग्गच्छइ (घ)।
३. ४. ना० १।२।१४।
५. तत्थ (क, ख, ग, घ) एतत् अशुद्धं प्रतिभाति।
६. ना० १।२.१४।
७. पू०—ना० १।१।६६।
८. सं० पा०—सकोरेंट जाव सेयवर°।
९. सुइरं (क, ख, ग)।
१०. ना० १।१।११८।
११. ना० १।५।६।
१२. कयाइं (ग)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सिरिदामगंडे दिट्ठपुव्वे । तस्स णं सिरिदामगंडस्स इमे पउमावईए देवीए सिरिदामगंडे सयसहस्सइमंपि कलं न अग्घइ ।।

६०. तए णं पडिबुद्धी सुबुद्धिं अमच्चं एवं वयासी—केरिसिया ण देवाणुप्पिया ! मल्ली विदेहरायवरकन्ना, जस्स[1] णं संवच्छर-पडिलेहणयंसि सिरिदामगंडस्स पउमावईए देवीए सिरिदामगंडे सयसहस्सइमंपि कलं न अग्घइ ?

६१. तए णं सुबुद्धी पडिबुद्धिं इक्खागरायं एवं वयासी—एवं खलु सामी ! मल्ली विदेहरायवरकन्ना सुपइट्ठियकुम्मुण्णय-चारुचरणा जाव[2] पडिरूवा ।।

६२. तए णं पडिबुद्धी सुबुद्धिस्स अमच्चस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म सिरिदाम-गंड-जणियहासे[3] दूयं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छाहि णं तुमं देवाणुप्पिया ! मिहिलं रायहाणिं । तत्थ णं कुंभगस्स रण्णो धूयं पभावईए अत्तयं[4] मल्लिं विदेहरायवरकन्नं[5] मम भारियत्ताए वरेहि, जइ वि य णं सा सयं रज्जसुंका ।।

६३. तए णं से दूए पडिबुद्धिणा रण्णा एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता जेणेव सए गिहे जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउग्घंटं आसरहं पडिकप्पावेइ, पडिकप्पावेत्ता दुरूढे हय-गय[6]-•रह-पवर-जोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडे° महया भड-चडगरेणं साएयाओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव विदेहजणवए[7] जेणेव मिहिला रायहाणी तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।।

चंदच्छाय-राय-पदं

६४. तेणं कालेणं तेणं समएणं अंगनामं[8] जणवए होत्था । तत्थ णं चंपा नामं नयरी होत्था । तत्थ णं चंपाए नयरीए चंदच्छाए अंगराया होत्था । तत्थ णं चंपाए नयरीए अरहण्णगपामोक्खा बहवे संजत्ता-नावावाणियगा परिवसंति—अड्ढा जाव[9] बहुजणस्स अपरिभूया ।।

६५. तए णं से अरहण्णगे समणोवासए यावि होत्था—अहिगयजीवाजीवे वण्णओ[10] ।।

६६. तए णं तेसिं अरहण्णगपामोक्खाणं संजत्ता-नावावाणियगाणं अण्णया कयाइ एगयओ सहियाणं इमेयारूवे मिहोकहा समुल्लावे[11] समुप्पज्जित्था—सेयं खलु

---

१. अत्र पुंस्त्वनिर्देशः मल्ल्याः तीर्थंकरत्वेन कृतः स्यात् ?
२. वण्णओ० (क, ख, ग, घ); जीवाजीवाभिगमपडिवत्ती ३ ।
३. °हरिसे (क, ख) ।
४. अत्तियं (क, ख, ग, घ) ।
५. °कन्नयं (क, ख) ।
६. सं० पा०—गय° ।
७. विदेहा° (क, ख) ।
८. अंगा° (क, ख, ग) ।
९. ना० १।५।७ ।
१०. ना० १।५।४७ ।
११. संलावे (ख, ग, घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अम्हं गणिमं च धरिमं च मेज्जं च पारिच्छेज्जं च भंडगं गहाय लवणसमुद्दं पोयवहणेणं ओगाहित्तए त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता गणिमं च धरिमं च मेज्जं च पारिच्छेज्जं च भंडगं गेण्हंति, गेण्हित्ता सगडी-सागडयं सज्जेंति, सज्जेत्ता गणिमस्स धरिमस्स मेज्जस्स पारिच्छेज्जस्स य भंडगस्स सगडी-सागडियं भरेंति, भरेत्ता सोहणंसि तिहि-करण-नक्खत्त-मुहुत्तंसि विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेंति, उवक्खडावेत्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणं भोयणवेलाए भुंजावेंति[1], •भुंजावेत्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परिजणं° आपुच्छंति, आपुच्छित्ता सगडी-सागडियं जोयंति, जोइत्ता चंपाए नयरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छंति, निग्गच्छित्ता जेणेव गंभीरए[2] पोयपट्टणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सगडी-सागडियं मोयंति, पोयवहणं सज्जेंति, सज्जेत्ता गणिमस्स[3] •धरिमस्स मेज्जस्स पारिच्छेज्जस्स य° भंडगस्स [पोयवहणं ?] भरेंति, तंदुलाण य समियस्स य तेल्लस्स य घयस्स य गुलस्स य गोरसस्स य उदगस्स य भायणाण[4] य ओसहाण य भेसज्जाण य तणस्स य कट्ठस्स य आवरणाण य पहरणाण य अण्णेसिं च बहूणं पोयवहणपाउग्गाणं दव्वाणं पोयवहणं भरेंति। सोहणंसि तिहि-करण-नक्खत्त-मुहुत्तंसि विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेंति, उवक्खडावेत्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं भोयणवेलाए भुंजावेंति, भुंजावेत्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं आपुच्छंति, जेणेव पोयट्ठाणे तेणेव उवागच्छंति ॥

६७. तए णं तेसिं अरहण्णग[5] •पामोक्खाणं बहूणं संजत्ता-नावा°वाणियगाणं[6] •मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि°-परियणा ताहिं इट्ठाहिं[7] •कंताहिं पियाहिं मणुण्णाहिं मणामाहिं ओरालाहिं° वग्गूहिं अभिनंदंता य अभिसंथुणमाणा य एवं वयासी—अज्ज! ताय! भाय! माउल! भाइणेज्ज! भगवया समुद्देणं अभिरक्खिज्जमाणा-अभिरक्खिज्जमाणा चिरं जीवह, भद्दं च भे, पुणरवि लद्धट्ठे कयकज्जे अणहसमग्गे नियगं घरं हव्वमागए पासामो त्ति कट्टु ताहिं सोमाहिं निद्धाहिं दीहाहिं सप्पिवासाहिं पप्पुयाहिं दिट्ठीहिं निरिक्खमाणा मुहुत्तमेत्तं संचिट्ठंति। तओ समाणिएसु पुप्फबलिकम्मेसु, दिन्नेसु सरस-रत्त-चंदण-दद्दर-पंचंगुलितलेसु, अणुक्खित्तंसि धूवंसि, पूइएसु[8] समुद्दवाएसु,

---

१. सं० पा०—भुंजावेंति जाव आपुच्छंति।
२. गंभीर (ख, घ)।
३. सं० पा०—गणिमस्स जाव चउव्विहभंडगस्स।
४. भायणस्स (घ)।
५. सं० पा०— अरहण्णग जाव वाणियगाणं।
६. सं० पा०—वाणियगाणं जाव परियणा।
७. सं० पा०—इट्ठाहिं जाव वग्गूहिं।
८. पूतिएसु (ख); पूईतेसु (ग, घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संसारियासु[1] वलयासु[2], ऊसिएसु सिएसु झयग्गेसु, पडुप्पवाइएसु तूरेसु[3] जइएसु[4] सव्वसउणेसु, गहिएसु रायवरसासणेसु महया उक्किट्ठ-सीहनाय[5]-•बोल-कलकल ° रवेणं पक्खुभियमहासमुद्द-रवभूयं पिव मेइणिं करेमाणा एगदिसिं[6] •एगाभिमुहा अरहण्णगपामोक्खा संजत्ता-नावा ° वाणियगा नावाए दुरूढा ।।

६८. तओ पुस्समाणवो वक्कमुदाहु—हं भो ! 'सव्वेसिमेव भे'[7] अत्थसिद्धी, उवट्ठियाइं कल्लाणाइं, पडिहयाइं सव्वपावाइं, 'जुत्तो पूसो,'[8] विजओ मुहुत्तो 'अयं देसकालो'[9] ।।

६९. ताओ पुस्समाणवेणं[10] वक्कमुदाहिए[11] हट्ठतुट्ठा 'कण्णधार-कुच्छिधार'[12]-गब्भिज्ज-संजत्ता-नावावाणियगा वावारिंसु, तं नावं पुण्णुच्छंगं[13] पुण्णमुहिं बंधणेहिंतो मुंचंति ।।

७०. तए णं सा नावा विमुक्कबंधणा पवणबल-समाहया ऊसियसिया विततपक्खा इव गरुलजुवई गंगासलिल-तिक्ख-सोयवेगेहिं 'संखुब्भमाणी-संखुब्भमाणी'[14] उम्मी-तरंग-मालासहस्साइं समइच्छमाणी-समइच्छमाणी कइवएहिं अहोरत्तेहिं लवणसमुद्दं अणेगाइं जोयणसयाइं ओगाढा ।।

७१. तए णं तेसिं अरहण्णगपामोक्खाणं संजत्ता-नावावाणियगाणं लवणसमुद्दं अणेगाइं जोयणसयाइं ओगाढाणं समाणाणं बहूइं उप्पाइयसयाइं पाउब्भूयाइं, तं जहा—अकाले गज्जिए अकाले विज्जुए अकाले थणियसद्दे अभिक्खणं-अभिक्खणं आगासे देवयाओ नच्चंति ।।

७२. [15]तए णं ते अरहण्णगवज्जा संजत्ता-नावावाणियगा एगं[16] च णं महं तालपिसायं

---

१. संचारियासु (क) ।
२. वलयवाहासु (क); वलयबाहासु (ग, घ) ।
३. भूतेसु (ग) ।
४. जतिएसु (ख); जइतेसु (ग, घ) ।
५. सं० पा०—सीहनाय जाव रवेण ।
६. सं० पा०—एगदिसिं जाव वाणियगा ।
७. सव्वेसामवि (क, ख, ग, घ) ।
८. इहावसरे इति गम्यते (वृ) ।
९. एष प्रस्तावो गमनस्येति गम्यते ।
१०. °माणएणं (ख, ग, घ) ।
११. °मुदाहरिए (क, ध) ।
१२. कुच्छिधारकण्णधार (ख, ग, घ) ।
१३. पुण्णत्थगं (ख) ।
१४. संबुज्झमाणी २ (क, ख, ग, घ) ।
१५. अत्र द्वयोर्वाचनयोः संमिश्रणं जातमस्ति । वृत्तिकारस्य सम्मुखे असौ मिश्रितपाठ एवादर्शेषु लिखितः आसीत्, तेन वृत्तिकृता द्वयोः संगतिं स्थापयितुं प्रयत्नः कृतः, यथा—तत्राऽर्हन्नकवर्जा यत् कुर्वन्ति तत् दर्शयितु-मुक्तमेव पिशाचस्वरूपं सविशेषं तेषां तद्दर्शनं चानुवदन्नाह—तए णमित्यादिः ततस्ते अर्हन्नकवर्जा सांयात्रिकाः पिशाचरूपं वक्ष्यमाणविशेषणं पश्यन्ति (वृ) । वृत्तिकारेण वैकल्पिकरूपेण 'तएणं ते अरहण्णग वज्जा' इति सूत्रांशं वाचनान्तरत्वेन स्वीकृतम्, यथा—अथवा 'तएणं ते 'अरहण्णगवज्जा'

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पासंति—तालजंघं दिवंगयाहिं बाहाहिं फुट्टसिरं भमर-निगर-वरमासरासि-महिसकालगं भरिय-मेहवण्णं सुप्पणहं फाल-सरिस-जीहं लंबोट्ठं धवलवट्ट-असिलिट्ठ-तिक्ख-थिर-पीण-कुडिल-दाढोवगूढवयणं विकोसिय-धारासिजुयल-समसरिस-तणुय - चंचल - गलंतरसलोल - चवल-फुरुफुरेंत - निल्लालियग्गजीहं अवयत्थिय[1]-महल्ल-विगय-वीभच्छ-लालपगलंत-रत्ततालुयं हिंगुलय-सगब्भ-कंदरबिलं व अंजणगिरिस्स अग्गिज्जालुग्गिलंतवयणं[2] आऊसिय[3]-अक्खचम्म-उइट्ठगंडदेसं[4] चीण-चिमिढ-वंक-भग्गनासं रोसागय-धमधमेंत[5]-मारुय-निट्ठुर-खर-फरुसझुसिरं ओभुग्ग-नासियपुडं घाडुब्भड[6]-रइय-भीसणमुहं उद्धमुहकण्ण-सक्कुलिय-महंतविगय-लोम-संखालग[7]-लंबंत-चलियकण्णं पिंगल-दिप्पंतलोयणं 'भिउडि-तडिनिडालं'[8] नरसिरमाल-परिणद्धचिंधं विचित्तगोणस-सुबद्धपरिकरं अवहोलंत-फुप्फुयायंत[9]-सप्प - विच्छुय-गोधुंदुर[10]-नउल- सरड-विरइय-विचित्त-वेयच्छमालियागं भोगकूर-कण्हसप्प-धमधमेंत-लंबंतकण्णपूरं मज्जार-सियाल-लइयखंधं दित्त-घुघुयंत[11]-घूय-कय-भुंभरसिरं[12], घंटारवेणं भीम-भयंकरं कायर-

---

इत्यादि गमान्तरं 'आगासे देवयाओ नच्चंति' इतोनन्तरं द्रष्टव्यम्, अतएव वाचनान्तरे नेदमुपलभ्यते चैवम् 'अभिमुहं आवयमाणं पासंति' (वृ)।

प्रथमवाचनापाठे कोपि कर्ता नास्ति अतोस्माभि द्वितीयवाचनापाठो मूले स्वीकृतः। प्रथमवाचना पाठः इत्थमस्ति—'एगं च णं महं पिसायरूवं पासंति—तालजंघं दिवंगयाहिं बाहाहिं मसि-मूसग-महिस-कालगं भरिय-मेहवण्णं लंबोट्ठं निग्गयग्गदंतं निल्लालिय-जमल-जुयल-जीहं आऊसिय-[आघूसिय (ख); आघूसिय, आपूसिय (वृपा)।] वयण-गंडदेसं चीण-चिमिढ-[चिविड (क); चमड (घ)।] नासियं विगय-भुग्गं-[भुग्ग-भग्ग (क, वृपा)।] भुमयं [भमयं (ख)।] खज्जोयग-दित्त-चक्खुरागं [वाचनान्तरे - विगय - भग्ग भुमय - पहसिय - पयलिय - पडिय-फुल्लिंग-खज्जोय-चक्खुरागं।] उत्तासणगं विसालवच्छं विसालकुच्छिं पलंबकुच्छिं पहसिय-पयलिय-पयडियगत्तं [पडियगत्तं (क, ख, ग)।] पणच्चमाणं अप्फोडंतं अभिवग्गंतं अभिगज्जंतं बहुसो-बहुसो य अट्टट्टहासे विणिम्मुयंतं नीलुप्पल-गवल-गुलिय-[गुडिय (ख)।] अयसिकुसुमप्पगासं खुरधारं असिं गहाय अभिमुहमावयमाणं पासति।

१६. एवं (क)।

१. अवत्थिय (वृपा)।

२. अग्गिजालो° (क); अग्गिजालु° (ख)।

३. आवूसिय० (वृपा)।

४. उट्ठ° (ख, ग)।

५. धम्मधम्मेंत (ख)।

६. घोडुब्भड (ख)।

७. संखालग्ग (वृपा)।

८. भिउडितनिडालं (वृपा)।

९. पुप्फया° (क, ख, ग, घ)।

१०. गोधुंदर (ग, घ)।

११. घुघूयंत (ख)।

१२. भुंभल° (क, ग); सुंभल° (ख)। एकस्मिन् वृत्त्यादर्शे 'बुंभलं' इति लभ्यते। कुंतलं (क्व)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जणहिययफोडणं दित्तं अट्टट्टहासं विणिम्मुयंतं, वसा-रुहिर-पूय-मंस-मल-मलिण-पोच्चडतणु उत्तासणयं विसालवच्छं पेच्छंता भिन्ननख-मुह-नयण-कण्णं वरवग्घ-चित्त-कत्ती-णियंसणं सरस-रुहिर-गयचम्म-वियय-ऊसविय-बाहुजुयलं ताहि य खर-फरुस-असिणिद्ध-दित्त-अणिट्ठ-असुभ-अप्पिय[1]-अकंत-वग्गूहि य तज्जयंतं[2]—तं तालपिसायरूवं एज्जमाणं पासंति, पासित्ता भीया[3] •तत्था तसिया उव्विग्गा° संजायभया अण्णमण्णस्स कायं समतुरंगेमाणा-समतुरंगेमाणा बहूणं इंदाण य खंदाण य रुद्दाण य सिवाण य वेसमणाण य नागाण य भूयाण य जक्खाण य अज्ज-कोट्टकिरियाण[4] य बहूणि उवाइयसयाणि उवाइमाणा चिट्ठंति ॥

७३. तए णं से अरहण्णए समणोवासए तं दिव्वं पिसायरूवं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता अभीए अतत्थे अचलिए असंभंते अणाउले अणुव्विग्गे अभिण्णमुहराग-नयणवण्णे अदीण-विमण-माणसे पोयवहणस्स एगदेसंसि वत्थंतेणं भूमिं पमज्जइ, पमज्जित्ता ठाणं ठाइ, ठाइत्ता, करयल[5]-•परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु° एवं वयासि—नमोत्थु णं अरहंताणं भगवंताणं जाव[6] सिद्धिगइनामधेज्जं ठाणं संपत्ताणं। जइ णं हं एत्तो उवसग्गाओ मुंचामि तो मे कप्पइ पारित्तए, अह णं एत्तो उवसग्गाओ न मुंचामि तो मे तहा पच्चक्खाएयव्वे त्ति कट्टु सागारं भत्तं पच्चक्खाइ ॥

७४. तए णं से पिसायरूवे जेणेव अरहण्णगे समणोवासए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अरहण्णगं एवं वयासी—हंभो अरहण्णगा! अपत्थियपत्थया[7]! •दुरंत-पंत-लक्खणा! हीणपुण्ण-चाउद्दसिया! सिरि-हिरि-धिइ-कित्ति°-परिवज्जिया! नो खलु कप्पइ तव सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासाइं चालित्तए वा[8] खोभित्तए वा खंडित्तए वा भंजित्तए वा उज्झित्तए वा परिच्चइत्तए वा। तं जइ णं तुमं सील-व्वयं[9]-•गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासाइं न चालेसि न खोभेसि न खंडेसि न भंजेसि न उज्झसि° न परिच्चयसि, तो ते अहं एयं पोयवहणं दोहिं अंगुलियाहिं[10] गेण्हामि, गेण्हित्ता सत्तट्ठतलप्पमाणमेत्ताइं उड्ढं वेहासं उव्विहामि अंतोजलंसि

---

१. अप्पियअमणुण्ण (क, घ)।
२. तज्जयंतं पासंति (क, ख, ग, घ)।
३. सं० पा०—भीया संजायभया।
४. कोटिकिरियाण (क)।
५. सं० पा०—करयल°।
६. ओ० सू० २१।
७. अपत्थियपत्थिया (ग, घ, वृपा); सं० पा—अपत्थियपत्थया जाव परिवज्जिया।
८. वा एवं (क, ख, ग, घ)।
९. सं० पा०—सीलव्वय जाव न परिच्चयसि।
१०. अंगुलीहिं (ग)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निव्वोलेमि[1], जेणं[2] तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे असमाहिपत्ते अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।।

७५. तए णं से अरहण्णगे समणोवासए तं देवं मणसा चेव एवं वयासी—अहं णं देवाणुप्पिया ! अरहण्णए नामं[3] समणोवासए अहिगयजीवाजीवे । नो खलु अहं सक्के केणइ देवेण वा[4] •दाणवेण वा जक्खेण वा रक्खसेणं वा किन्नरेण वा किंपुरिसेण वा महोरगेण वा गंधव्वेण वा॰ निग्गंथाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा, तुमं णं जा[5] सद्धा तं करेहि त्ति कट्टु अभीए जाव[6] अभिन्नमुहराग-नयणवण्णे अदीण-विमण-माणसे निच्चले निप्फंदे[7] तुसिणीए धम्मज्झाणोवगए विहरइ ।।

७६. तए णं से दिव्वे पिसायरूवे अरहण्णगं समणोवासगं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी—हंभो अरहण्णगा ! जाव[8] धम्मज्झाणोवगए विहरइ ।।

७७. तए णं से दिव्वे पिसायरूवे अरहण्णगं धम्मज्झाणोवगयं पासइ, पासित्ता बलियतरागं आसुरत्ते तं पोयवहणं दोहिं अंगुलियाहिं गेण्हइ, गेण्हित्ता सत्तट्ठतल[9]-•प्पमाणमेत्ताइं उड्ढं वेहासं उव्विहइ, उव्विहित्ता॰ अरहण्णगं एवं वयासी—हंभो अरहण्णगा ! अपत्थियपत्थया[10] ! नो खलु कप्पइ तव सील-व्वय[11]-•गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासाइं चालित्तए वा खोभित्तए वा खंडित्तए वा भंजित्तए वा उज्झित्तए वा परिच्चइत्तए वा । तं जइ णं तुमं सील-व्वय-गुण-वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासाइं न चालेसि न खोभेसि न खंडेसि न भंजेसि न उज्झसि न परिच्चयसि, तो ते अहं एयं पोयवहणं अंतो जलंसि निव्बोलेमि, जेणं तुमं अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे असमाहिपत्ते अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।।

७८. तए णं से अरहण्णगे समणोवासए तं देवं मणसा चेव एवं वयासी—अहं णं देवाणुप्पिया ! अरहण्णए नामं समणोवासए— अहिगयजीवाजीवे नो खलु अहं सक्के केणइ देवेण वा दाणवेण वा जक्खेण वा रक्खसेण वा किन्नरेण वा किंपुरिसेण वा महोरगेण वा गंधव्वेण वा निग्गंथाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा, तुमं णं जा सद्धा तं करेहि त्ति कट्टु अभीए जाव[12] अभिन्नमुहराग-नयणवण्णे अदीण-विमण-माणसे निच्चले निप्फंदे

---

१. निच्छोल्लेमि (क) ।
२. जाणं (क, ग, घ) ।
३. × (ग) ।
४. सं० पा०—देवेण वा जाव निग्गंथाओ ।
५. जाव (ख, ग, घ) अशुद्धं प्रतिभाति ।
६. ना० १।८।७३ ।
७. निप्पंदे (ख) ।
८. ना० १।८।७४,७५ ।
९. सं० पा०—सत्तट्ठतलाइं जाव अरहन्नगं ।
१०. पू०—ना० १।८।७४ ।
११. सं० पा०—सीलव्वय तहेव जाव धम्मज्झाणोवगए ।
१२. ना० १।८।७३ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तुसिणीए° धम्मज्झाणोवगए विहरइ।

७६. तए णं से पिसायरूवे अरहण्णगं जाहे नो संचाएइ निग्गंथाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा, ताहे संते[1] •तंते परितंते° निव्विण्णे तं पोयवहणं सणियं-सणियं उवरिं जलस्स ठवेइ, ठवेत्ता तं दिव्वं पिसायरूवं पडिसाहरेइ, पडिसाहरेत्ता दिव्वं देवरूवं विउव्वइ[2]–अंतलिक्ख-पडिवन्ने सखिंखिणीयाइं दसद्धवण्णाइं वत्थाइं पवर परिहिए अरहण्णगं समणोवासगं एवं वयासी—हं भो अरहण्णगा! समणोवासया! धन्नेसि णं तुमं देवाणुप्पिया[3]! •पुण्णेसि णं तुमं देवाणुप्पिया! कयत्थेसि णं तुमं देवाणुप्पिया! कयलक्खणेसि णं तुमं देवाणुप्पिया! सुलद्धे णं तव देवाणुप्पिया! माणुस्सए जम्म°जीवियफले, जस्स णं तव निग्गंथे पावयणे इमेयारूवा पडिवत्ती लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया।

एवं खलु देवाणुप्पिया! सक्के देविंदे देवराया सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडिसए विमाणे सभाए सुहम्माए बहूणं देवाणं मज्झगए महया-महया सद्देणं एवं आइक्खइ, एवं भासेइ, एवं पण्णवेइ, एवं परूवेइ—एवं खलु देवा! जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे चंपाए नयरीए अरहण्णए समणोवासए अभिगयजीवाजीवे। नो खलु सक्के[4] केणइ देवेण वा दाणवेण वा जक्खेण वा रक्खसेण वा किन्नरेण वा किंपुरिसेण वा महोरगेण वा गंधव्वेण वा निग्गंथाओ पावयणाओ चालित्तए[5] •वा खोभित्तए वा° विपरिणामित्तए वा। तए णं अहं देवाणुप्पिया! सक्कस्स देविंदस्स देवरण्णो नो एयमट्ठं सद्दहामि, पत्तियामि रोएमि। तए णं मम इमेयारूवे अज्झत्थिए[6] •चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था°— गच्छामि णं अहं अरहण्णगस्स अंतियं पाउब्भवामि, जाणामि ताव अहं अरहण्णगं—किं पियधम्मे नो पियधम्मे? दढधम्मे नो दढधम्मे? सील-व्वय-गुण[7]-•वेरमण-पच्चक्खाण-पोसहोववासाइं किं चालेइ नो चालेइ? खोभेइ नो खोभेइ? खंडेइ नो खंडेइ? भंजेइ नो भंजेइ? उज्झइ नो उज्झइ? परिच्चयइ° नो परिच्चयइ त्ति कट्टु एवं संपेहेमि, संपेहेत्ता ओहिं पउंजामि, पउंजित्ता देवाणुप्पियं ओहिणा आभोएमि, आभोएत्ता उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं

---

१. सं० पा०—संते जाव निव्विण्णे। तहेव संते जाव निव्विणे (क, ख, ग, घ)।

२. पू०—उवा° २।४०।

३. सं० पा०—देवाणुप्पिया जाव जीवियफले।

४. सक्का (क, ख, ग, घ)।

५. सं० पा०—चालित्तए जाव विपरिणामित्तए।

६. सं० पा०—अज्झत्थिए°।

७. सं० पा०—गुणे…किं चालेइ जाव नो परिच्चयइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अवक्कमामि[1] उत्तरवेउव्वियं रूवं विउव्वामि, विउव्वित्ता ताए उक्किट्ठाए[2] देवगईए[3] जेणेव लवणसमुद्दे जेणेव देवाणुप्पिए तेणेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता देवाणुपियस्स उवसग्गं करेमि, नो चेव णं देवाणुप्पिए भीए[4] •तत्थे चलिए संभंते आउले उव्विग्गे भिण्णमुहराग-नयणवण्णे दीणविमणमाणसे जाए°। तं जं णं सक्के देविंदे देवराया एवं वयइ, सच्चे णं एसमट्ठे। तं दिट्ठे णं देवाणुप्पियस्स इड्ढी[5] •जुई जसो बलं वीरियं पुरिसकार°-परक्कमे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए। तं खामेमि णं देवाणुप्पिया। खमेसु णं देवाणुप्पिया! खंतुमरिहसि णं देवाणुप्पिया! नाइ भुज्जो एवंकरणयाए त्ति कट्टु पंजलिउडे पायवडिए एयमट्ठं विणएणं भुज्जो-भुज्जो खामेइ, अरहण्णगस्स य दुवे कुंडलजुयले दलयइ, दलइत्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए॥

८०. तए णं से अरहण्णए निरुवसग्गमिति कट्टु पडिमं पारेइ॥

८१. तए णं ते अरहण्णगपामोक्खा[6] •संजत्ता-नावा°वाणियगा दक्खिणाणुकूलेणं वाएणं जेणेव गंभीरए पोयट्ठाणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पोयं लंबेंति, लंबेत्ता सगडि[7]-सागडं सज्जेंति, तं गणिमं धरिमं मेज्जं परिच्छेज्जं च सगडि-सागडं संकामेंति, संकामेत्ता सगडि-सागडं जोविंति[8] जोवित्ता जेणेव मिहिला तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता मिहिलाए रायहाणीए बहिया अग्गुज्जाणंसि सगडि-सागडं मोएंति, मोएत्ता महत्थं महग्घं महरिहं विउलं रायारिहं पाहुडं दिव्वं कुंडलजुयलं च गेण्हंति, गेण्हित्ता [मिहिलाए रायहाणीए[9] ?] अणुप्पविसंति, अणुप्पविसित्ता जेणेव कुंभए राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल[10]•परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु° महत्थं[11] •महग्घं महरिहं विउलं रायारिहं पाहुडं° दिव्वं कुंडलजुयलं च उवणेंति॥

८२. तए णं कुंभए राया तेसिं संजत्ता[12]-•नावावाणियगाणं तं महत्थं महग्घं महरिहं विउलं रायारिहं पाहुडं दिव्वं कुंडलजुयलं च° पडिच्छइ, पडिच्छित्ता मल्लिं विदेहवररायकन्नं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता तं दिव्वं कुंडलजुयलं मल्लीए विदेहरायकन्नगाए पिणद्धेइ, पिणद्धेत्ता पडिविसज्जेइ॥

---

१. २, ३. पू०—राय सू० १०।
४. सं० पा०—भीया वा···।
५. सं० पा०—इड्ढी जाव परक्कमे।
६. सं० पा०—पामोक्खा जाव वाणियगा।
७. सगड (ग, घ)।
८. जोएंति (क)।
९. 'क' प्रतौ असौ पाठः 'महत्थं' अतः प्राग् लिखितो लभ्यते, किन्तु वस्तुतः कोष्ठकस्थाने युज्यते। अन्यादर्शेषु नासौ लब्धोस्ति।
१०. सं० पा०—करयल°।
११. सं० पा०—महत्थं°।
१२. सं० पा०—संजत्तगाणं जाव पडिच्छइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८३. तए णं से कुंभए राया ते अरहण्णगपामोक्खे[1] °संजत्ता-नावा°वाणियगे विपुलेणं वत्थ-गंध[2]-°मल्लालंकारेण य सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता° उस्सुक्कं वियरइ, वियरित्ता रायमग्गमोगाढे य आवासे वियरइ, वियरित्ता पडिविसज्जेइ ।।

८४. तए णं अरहण्णग[3]°पामोक्खा संजत्ता-नावावाणियगा° जेणेव रायमग्गमोगाढे आवासे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता भंडववहरणं[4] करेंति, पडिभंडे गेण्हंति, गेण्हित्ता सगडी-सागडं भरेंति, भरेत्ता जेणेव गंभीरए पोयपट्टणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पोयवहणं सज्जेंति, सज्जेत्ता भंडं संकामेंति, संकामेत्ता दक्खिणाणुकूलेणं वाएणं जेणेव चंपाए पोयट्ठाणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पोयं लंबेंति, लंबेत्ता सगडी-सागडं सज्जेंति, सज्जेत्ता तं गणिमं धरिमं मेज्जं परिच्छेज्जं च सगडी-सागडं संकामेंति, संकामेत्ता[5] °सगडि-सागडं जोविंति, जोवित्ता जेणेव चंपानयरी तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता चंपाए रायहाणीए बहिया अग्गुज्जाणंसि सगडि-सागडं मोएंति, मोएत्ता महत्थं महग्घं महरिहं विउलं रायारिहं° पाहुडं दिव्वं च कुंडलजुयलं गेण्हंति, गेण्हित्ता जेणेव चंदच्छाए अंगराया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तं महत्थं[6] °महग्घं महरिहं विउलं रायारिहं पाहुडं दिव्वं च कुंडलजुयलं° उवणेंति ।।

८५. तए णं चंदच्छाए अंगराया तं महत्थं[7] पाहुडं दिव्वं च कुंडलजुयलं पडिच्छइ, पडिच्छित्ता ते अरहण्णगपामोक्खे एवं वयासी—तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! बहूणि गामागर जाव[8] सण्णिवेसाइं आहिंडह, लवणसमुद्दं च अभिक्खणं-अभिक्खणं पोयवहणेहिं ओगाहेह, तं अत्थियाइं भे केइ कहिंचि अच्छेरए दिट्ठपुव्वे ?

८६. तए णं ते अरहण्णगपामोक्खा चंदच्छायं अंगरायं एवं वयासी—एवं खलु सामी ! अम्हे इहेव चंपाए नयरीए अरहण्णगपामोक्खा बहवे संजत्तगा-नावा-वाणियगा परिवसामो । तए णं अम्हे अण्णया कयाइ गणिमं च धरिमं च मेज्जं च परिच्छेज्जं च गेण्हामो तहेव अहीण-अइरित्तं जाव[9] कुंभगस्स रण्णो उवणेमो । तए णं से कुंभए मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए तं दिव्वं कुंडलजुयलं पिणद्धेइ[10], पिणद्धेत्ता पडिविसज्जेइ । तं एस णं सामी ! अम्हेहिं कुंभगरायभवणंसि

---

१. सं० पा०—°पामोक्खे जाव वाणियगे ।
२. सं० पा०—गंध जाव उस्सुक्कं ।
३. सं० पा०—अरहन्नग संजत्तगा ।
४. भंडग° (ग) ।
५. सं० पा०—संकामेत्ता जाव महत्थं पाहुडं ।
६. सं० पा०—महत्थं जाव उवणेंति ।
७. पू०—ना० १।८।८१ ।
८. ना० १।१।११८ ।
९. ना० १।८।६४-८२ ।
१०. पिणिद्धइ (ख); पिणिधेइ (क) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मल्ली विदेहरायवरकन्ना अच्छेरए दिट्ठे । तं नो खलु अण्णा कावि तारिसिया देवकन्ना वा[1] •असुरकन्ना वा नागकन्ना वा जक्खकन्ना वा गंधव्वकन्ना वा रायकन्ना वा° जारिसिया णं मल्ली विदेहरायवरकन्ना ।।

८७. तए णं चंदच्छाए अरहण्णगपामोक्खे[2] सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता उस्सुक्कं वियरइ, वियरित्ता पडिविसज्जेइ ।।

८८. तए णं चंदच्छाए वाणियग-जणियहासे दूयं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी— जाव[3] मल्लिं विदेहरायवरकन्नं मम भारियत्ताए वरेहि, जइ वि य णं सा सयं रज्जसुंका[4] ।।

८९. तए णं से दूए चंदच्छाएणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे जाव[5] पहारेत्थ गमणाए ।।

रुप्पि-राय-पदं

९०. तेणं कालेणं तेणं समएणं कुणाला नाम जणवए होत्था । तत्थ णं सावत्थी नाम नयरी होत्था । तत्थ णं रुप्पी कुणालाहिवई नाम राया होत्था । तस्स णं रुप्पिस्स धूया धारिणीए देवीए अत्तया सुबाहू नाम दारिया होत्था —सुकुमाल-पाणिपाया[6] रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा जाया यावि होत्था ।।

९१. तीसे णं सुबाहूए दारियाए अण्णया चाउम्मासिय-मज्जणए जाए यावि होत्था ।।

९२. तए णं से रुप्पी कुणालाहिवई सुबाहूए दारियाए चाउम्मासिय-मज्जणयं उवट्ठियं जाणइ, जाणित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! सुबाहूए दारियाए कल्लं चाउम्मासिय-मज्जणए भविस्सइ, तं तुब्भे णं रायमग्गमोगाढंसि चउक्कंसि[7] जल-थलय-दसद्धवण्णं मल्लं साहरह[8] •जाव[9] एगं महं सिरिदामगंडं[10] गंधद्धणिं मुयंतं उल्लोयंसि ओलएह । ते वि तहेव° ओलयंति[11] ।।

९३. तए णं से रुप्पी कुणालाहिवई सुवण्णगार-सेणिं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी— खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! रायमग्गमोगाढंसि पुप्फमंडवंसि नाणाविहपंच-वण्णेहिं तंदुलेहिं नगरं आलिहह. तस्स बहुमज्झदेसभाए पट्टयं रएह, एयमाण-त्तियं पच्चप्पिणह । ते वि तहेव पच्चप्पिणंति ।।

---

१. सं० पा०—देवकन्ना वा जाव जारिसिया । देवकन्नगा (क, ख, ग, घ) ।
२. पामोक्खा (क, ख, घ) ।
३. ना० १।८।६२ ।
४. °सुक्का (घ) ।
५. ना० १।८।६३ ।
६. पू०—ना० १।१।१७ ।
७. मंडवंसि (क, ख, ग, घ) ।
८. सं० पा०—साहरह जाव ओलयंति ।
९. ना० १।८।४८ ।
१०. पू०—ना० १।८।३० ।
११. ओलेंति (क) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९४. तए णं से रुप्पी कुणालाहिवई हत्थिखंधवरगए चाउरंगिणीए सेणाए महया भड[1]-•चडगर-रह-पहकर-विंदपरिक्खित्ते• अंतेउर-परियाल-संपरिवुडे सुबाहुं दारियं पुरओ कट्टु जेणेव रायमग्गे जेणेव पुप्फमंडवे[2] तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता हत्थिखंधाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता पुप्फमंडवे अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सण्णिसण्णे ।।

९५. तए णं ताओ अंतेउरियाओ सुबाहुं दारियं पट्टयंसि दुरुहेंति[3],दुरुहेत्ता सेयापीयएहिं[4] कलसेहिं ण्हाणेंति, ण्हाणेत्ता सव्वालंकारविभूसियं[5] करेंति, करेत्ता पिउणो पायवंदियं उवणेंति ।।

९६. तए णं सुबाहू दारिया जेणेव रुप्पी राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पायग्गहणं[6] करेइ ।।

९७. तए णं से रुप्पी राया सुबाहुं दारियं अंके निवेसेइ, निवेसित्ता सुबाहूए दारियाए रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य जायविम्हए वरिसधरं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी - तुमं णं देवाणुप्पिया ! मम दोच्चेणं बहूणि गामागर-नगर[7] •जाव[8] सण्णिवेसाइं आहिंडसि, बहूण य राईसर जाव[9] सत्थवाहपभिईणं• गिहाणि अणुप्पविससि, तं अत्थियाइं ते कस्सइ रण्णो वा ईसरस्स वा कहिंचि एयारिसए मज्जणए दिट्ठपुव्वे, जारिसए णं इमीसे सुबाहूए दारियाए मज्जणए ?

९८. तए णं से वरिसधरे रुप्पिं रायं करयल[10]-•परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी—एवं खलु सामी ! अहं अण्णया तुब्भं दोच्चेणं मिहिलं गए। तत्थ णं मए कुंभगस्स रण्णो धूयाए पभावईए देवीए अत्तयाए मल्लीए विदेहरायवरकन्नगाए मज्जणए दिट्ठे । तस्स णं मज्जणगस्स इमे सुबाहूए दारियाए मज्जणए सयसहस्सइमंपि कलं न 'अग्घइ ।।

९९. तए णं से रुप्पी राया वरिसधरस्स अंतियं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म मज्जणग-जणिय-हासे[11] दूयं सद्दावेइ[12], •सद्दावेत्ता एवं वयासी—जाव[13] मल्लिं विदेहराय-वरकन्नं मम भारियत्ताए वरेहि, जइ वि य णं सा सयं रज्जसुंका ।।

---

१. सं० पा०—भड••• ।
२. •मंडवं (क) ।
३. दुरुहंति (ग, घ) ।
४. सेयावीयएहिं (क) ।
५. •भूसियं (क, ख) ।
६. पायगहणं (क) ।
७. सं० पा०—नगर गिहाणि ।
८. ना० १।१।११८ ।
९. ना० १।५।६ ।
१०. सं० पा०—करयल••• ।
११. अग्घइ सेसं तहेव मज्जणग-जणियहासे (क) ।
१२. सं० पा०—सद्दावेइ जाव जेणेव ।
१३. ना० १।८।६१ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१००. तए णं से दूए रुप्पिणा एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे जाव[1] जेणेव मिहिला नयरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

संख-राय-पदं

१०१. तेणं कालेणं तेणं समएणं कासी नामं जणवए होत्था। तत्थ णं वाणारसी नामं नयरी होत्था। तत्थ णं संखे नामं कासीराया होत्था ॥

१०२. तए णं तीसे मल्लीए विदेहवररायकन्नाए[2] अण्णया कयाइं तस्स दिव्वस्स कुंडलजुयलस्स संधी विसंघडिए यावि होत्था ॥

१०३. तए णं से कुंभए राया सुवण्णगारसेणिं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—तुब्भे णं देवाणुप्पिया! इमस्स दिव्वस्स कुंडलजुयलस्स संधिं[3] संघाडेह, [संघाडेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह[4] ?] ॥

१०४. तए णं सा सुवण्णगारसेणी एयमट्ठं तहत्ति पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता तं दिव्वं कुंडलजुयलं गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणेव सुवण्णगार-भिसियाओ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुवण्णगार-भिसियासु निवेसेइ, निवेसेत्ता बहूहिं आएहि य[5] •उवाएहि य उप्पत्तियाहि य वेणइयाहि य कम्मयाहि य पारिणामियाहि य बुद्धीहिं° परिणामेमाणा इच्छंति तस्स दिव्वस्स कुंडलजुयलस्स संधिं घडित्तए, नो चेव णं संचाएइ घडित्तए ॥

१०५. तए णं सा सुवण्णगारसेणी जेणेव कुंभए राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल[6]-•परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ°, वद्धावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु सामी! अज्ज तुम्हे[7] अम्हे सद्दावेह, जाव[8] संधिं संघाडेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह। तए णं अम्हे तं दिव्वं कुंडलजुयलं गेण्हामो, गेण्हित्ता जेणेव सुवण्णगार-भिसियाओ तेणेव उवगच्छामो जाव[9] नो संचाएमो संधिं[10] संघाडेत्तए। तए णं अम्हे सामी! एयस्स दिव्वस्स कुंडलजुयलस्स अण्णं सरिसयं कुंडलजुयलं घडेमो ॥

१०६. तए णं से कुंभए राया तीसे सुवण्णगारसेणीए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसेमाणे तिवलियं भिउडिं निडाले साहट्टु एवं वयासी—केस णं तुब्भे कलाया णं भवह, जे णं तुब्भे इमस्स

---

१. ना० १।८।६३।
२. °कन्नयाए (ख)।
३. संधी (क, ख, ग, घ)।
४. स्वर्णकारश्रेण्या राज्ञे निवेदने कोष्ठकवर्ती पाठो विद्यते। द्रष्टव्यम्—सू० १०५। तेन अत्रासौ युज्यते।
५. सं० पा०—आएहि य जाव परिणामेमाणा।
६. सं० पा—करयलवद्धावेत्ता।
७. तुब्भे (ग)।
८. ना० १।८।१०३।
९. ना० १।८।१०४।
१०. × (ख, घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दिव्वस्स कुंडलजुयलस्स नो संचाएइ संधिं संघाडित्तए ? ते सुवण्णगारे निव्विसए आणवेइ ।।

१०७. तए णं ते सुवण्णगारा कुंभगेणं रण्णा निव्विसया आणत्ता समाणा जेणेव साइं-साइं गिहाइं तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सभंडमत्तोवगरणमायाए मिहिलाए रायहाणीए मज्झंमज्झेणं निक्खमंति, निक्खमित्ता विदेहस्स जणवयस्स मज्झंमज्झेणं निक्खमंति, निक्खमित्ता जेणेव कासी जणवए जेणेव वाणारसी नयरी तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता अग्गुज्जाणंसि[1] सगडी-सागडं मोएंति, मोएत्ता महत्थं जाव[2] पाहुडं गेण्हंति, गेण्हित्ता वाणारसीए नयरीए मज्झंमज्झेणं[3] जेणेव संखे कासीराया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल[4]-•परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं• वद्धावेंति, वद्धावेत्ता पाहुडं उवणेंति, उवणेत्ता एवं वयासी—अम्हे णं सामी ! मिहिलाओ कुंभएणं रण्णा निव्विसया आणत्ता समाणा इह हव्वमागया । तं इच्छामो णं सामी ! तुब्भं बाहुच्छायापरिग्गहिया निब्भया निरुव्विग्गा सुहंसुहेणं परिवसिउं ।।

१०८. तए णं संखे कासीराया ते सुवण्णगारे एवं वयासी—किं णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! कुंभएणं रण्णा निव्विसया आणत्ता ?

१०९. तए णं ते सुवण्णगारा संखं कासीरायं एवं वयासी—एवं खलु सामी ! कुंभगस्स रण्णो धूयाए पभावईए देवीए अत्तयाए मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए कुंडल-जुयलस्स संधी विसंघडिए । तए णं से कुंभए राया सुवण्णगारसेणिं सद्दावेइ जाव[5] निव्विसया आणत्ता । तं एएणं कारणेणं सामी ! अम्हे कुंभएणं रण्णा निव्विसया आणत्ता ।।

११०. तए णं से संखे कासीराया सुवण्णगारे एवं वयासी केरिसिया णं देवाणुप्पिया ! कुंभगस्स रण्णो धूया पभावईदेवीए अत्तया मल्ली विदेहरायवरकन्ना ?

१११. तए णं ते सुवण्णगारा संखं कासीरायं एवं वयासी—नो खलु सामी ! अण्णा काचि तारिसिया देवकन्ना वा[6] •असुरकन्ना वा नागकन्ना वा जक्खकन्ना वा गंधव्वकन्ना वा रायकन्ना वा• जारिसिया णं मल्ली विदेहवररायकन्ना ।।

११२. तए णं से संखे कासीराया कुंडल-जणिय-हासे दूयं सद्दावेइ[7], •सद्दावेत्ता एवं

---

१. अंगुजाणंसि (घ) ।
२. ना० १।८।८१ ।
३. रायपसेणइय ६८३ सूत्रे अस्यानन्तरं 'अणुपविसइ' इति क्रियापदं लभ्यते ।
४. सं० पा०—करयल जाव वद्धावेहि (क); करयल ए (ख, ग) ।
५. ना० १।८।१०३-१०६ ।
६. सं० पा०—देवकन्ना वा जाव जारिसिया ।
७. सं० पा०—सद्दावेइ जाव तहेव पहारेत्थ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वयासी—जाव[1] मल्लि विदेहरायवरकन्नं मम भारियत्ताए वरेहि, जइ वि य णं सा सयं रज्जसुंका ॥

११३. तए णं से दूए संखेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे जाव[2] जेणेव मिहिला नयरी तेणेव° पहारेत्थ गमणाए ॥

अदीणसत्तु-राय-पदं

११४. तेणं कालेणं तेणं समएणं कुरु नामं जणवए होत्था। तत्थ णं हत्थिणाउरे नामं नयरे होत्था। तत्थ णं अदीणसत्तू नामं राया होत्था जाव[3] रज्जं पसासेमाणे विहरइ ॥

११५. तत्थ णं मिहिलाए तस्स णं कुंभगस्स रण्णो पुत्ते पभावईए देवीए अत्तए मल्लीए अणुमग्गजायए मल्लदिन्ने[4] नामं कुमारे सुकुमालपाणिपाए जाव[5] जुवराया यावि होत्था ॥

११६. तए णं मल्लदिन्ने कुमारे अण्णया कयाइ कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एव वयासी—गच्छह णं तुब्भे मम पमदवणंसि एगं महं चित्तसभं करेह—अणेग-खंभसयसण्णिविट्ठं[6] एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह। तेवि तहेव पच्चप्पिणंति ॥

११७. तए णं से मल्लदिन्ने कुमारे चित्तगर-सेणिं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—तुब्भे णं[7] देवाणुप्पिया! चित्तसभं हाव-भाव-विलास-बिब्बोयकलिएहिं रूवेहिं चित्तेह[8], •चित्तेत्ता एयमाणत्तियं° पच्चप्पिणह ॥

११८. तए णं सा चित्तगर-सेणी एयमट्ठं[9] तहत्ति पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता जेणेव सयाइं गिहाइं तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तूलियाओ वण्णए य गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणेव चित्तसभा तेणेव अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता भूमिभागे विरचति, विरचित्ता भूमिं सज्जेइ, सज्जेत्ता चित्तसभं हाव-भाव[10]-विलास-बिब्बोय-कलिएहिं रूवेहिं°, चित्तेउं पयत्ता यावि होत्था ॥

११९. तए णं एगस्स चित्तगरस्स इमेयारूवा चित्तगर-लद्धी लद्धा पत्ता अभिसमण्णा-गया—जस्स णं दुपयस्स वा चउप्पयस्स वा अपयस्स वा एगदेसमवि पासइ, तस्स णं देसाणुसारेणं तयाणुरूवं निव्वत्तेइ ॥

१२०. तए णं से चित्तगरे[11] मल्लीए जवणियंतरियाए[12] जालंतरेण पायंगुट्ठं पासइ। तए

---

१. ना० १।८।६२।
२. ना० १।८।६३।
३. ओ० सू० १४।
४. °दिन्नए (क, ख, ग, घ)।
५. ओ० सू० १४३।
६. पू०—ना० १।१।८६।
७. गच्छह णं तुब्भे (ख, घ)।
८. सं० पा०—चित्तेह जाव पच्चप्पिणह।
९. द्रष्टव्यम्—अस्यैवाध्ययनस्य १०४ सूत्रम्।
१०. सं० पा०—भाव जाव चित्तेउं।
११. चित्तगरदारए (क, ख, ग, घ)।
१२. जवणियंतराए (ख); जवणंतरियाए (ग)।

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

णं तस्स चित्तगरस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव[1] समुप्पज्जित्था—सेयं खलु ममं मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए पायंगुट्ठाणुसारेणं सरिसगं[2] °सरित्तयं सरिव्वयं सरिसलावण्ण-रूव-जोव्वण °गुणोववेयं रूवं निव्वत्तित्तए—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता भूमिभागं सज्जेइ, सज्जेत्ता मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए पायंगुट्ठासारेणं सरिसगं जाव रूवं निव्वत्तेइ ।।

१२१. तए णं सा चित्तगर-सेणी चित्तसभं हाव-भाव[3]-विलास-बिब्बोयकलिएहिं रूवेहिं° चित्तेइ, चित्तेत्ता जेणेव मल्लदिन्ने कुमारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणइ ।।

१२२. तए णं से मल्लदिन्ने कुमारे चित्तगर-सेणिं सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता विपुलं जीवियारिहं पीइदाणं दलयइ, दलइत्ता पडिविसज्जेइ ।।

१२३. तए णं से मल्लदिन्ने कुमारे[4] ण्हाए अंतेउर-परियाल-संपरिवुडे अम्मधाईए सद्धिं जेणेव चित्तसभा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चित्तसभं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता हाव-भाव-विलास-बिब्बोयकलियाइं रूवाइं पासमाणे-पासमाणे जेणेव मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए तयाणुरूवे रूवे निव्वत्तिए तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।।

१२४. तए णं से मल्लदिन्ने कुमारे मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए तयाणुरूवं रूवं निव्वत्तियं पासइ, पासित्ता[5] इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव[6] समुप्पज्जित्था—एस णं मल्ली विदेहरायवरकन्ने त्ति कट्टु लज्जिए विलिए[7] वेड्डे सणियं-सणियं पच्चोसक्कइ ।।

१२५. तए णं तं मल्लदिन्नं कुमारं अम्मधाई सणियं-सणियं पच्चोसक्कंतं पासित्ता एवं वयासी—किण्णं तुमं पुत्ता ! लज्जिए विलिए वेड्डे सणियं-सणियं पच्चोसक्कसि ?

१२६. तए णं से मल्लदिन्ने कुमारे अम्मधाइं[8] एवं वयासी—जुत्तं णं अम्मो ! मम जेट्ठाए भगिणीए गुरु-देवयभूयाए लज्जणिज्जाए मम चित्तसभं[9] अणुपविसित्तए ?

१२७. तए णं अम्मधाई मल्लदिन्नं कुमारं एवं वयासी—नो खलु पुत्ता ! एस मल्ली

---

१. ना० १।१।४८ ।
२. सं० पा०—सरिसगं जाव गुणोववेयं ।
३. सं० पा०—जाव हाव भावं । अत्र जाव शब्दः भावशब्दानंतरं युज्यते ।
४. कुमारे अण्णया (क, ख, ग) ।
५. अतोऽग्रे 'तस्स' इति पदमध्याहर्तव्यम् ।
६. ना० १।१।४८ ।
७. बिलए (ख); विलज्जिए (घ); व्रीडिए (क्व) ।
८. अम्मधाई (क, ख, ग, घ) ।
९. चित्तघरसभं (ख, ग, घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विदेहरायवरकन्ना। एस णं मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए चित्तगरएणं तयाणुरूवे रूवे निव्वत्तिए ॥

१२८. तए णं से मल्लदिन्ने कुमारे अम्मधाईए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते[१] एवं वयासी—केस णं भो! से चित्तारए अपत्थियर[२]•पत्थए, दुरंत-पंत-लक्खणे, हीणपुण्णचाउद्दसिए, सिरि-हिरि-धिइ-कित्ति-°परिवज्जिए, जे णं मम जेट्ठाए भगिणीए गुरु-देवयभूयाए[३] •लज्जणिज्जाए मम चित्तसभाए तयाणुरूवे रूवे निव्वत्तिए त्ति कट्टु तं चित्तगरं वज्झं आणवेइ ॥

१२९. तए णं सा चित्तगर-सेणी इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा जेणेव मल्लदिन्ने कुमारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं[४] •सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ° वद्धावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु सामी! तस्स चित्तगरस्स इमेयारूवा चित्तगर[५]-लद्धी लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया—जस्स णं दुपयस्स वा[६] •चउप्पयस्स वा अपयस्स वा एगदेसमवि पासइ, तस्स णं देसाणुसारेणं तयाणुरूवं रूवं° निव्वत्तेइ। तं मा णं सामी! तुब्भे तं चित्तगरं वज्झं आणवेह। तं तुब्भे णं सामी! तस्स चित्तगरस्स अण्णं तयाणुरूवं दंडं निव्वत्तेह[७] ॥

१३०. तए णं से मल्लदिन्ने कुमारे तस्स चित्तगरस्स संडासगं छिंदावेइ, छिंदावेत्ता निव्विसयं आणवेइ ॥

१३१. तए णं से चित्तगरे मल्लदिन्नेणं कुमारेणं निव्विसए आणत्ते समाणे सभंडमत्तोवगरणमायाए मिहिलाओ नयरीओ निक्खमइ, निक्खमित्ता 'विदेहस्स जणवयस्स'[८] मज्झंमज्झेणं[९] जेणेव कुरुजणवए जेणेव हत्थिणाउरे नयरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भंडनिक्खेवं करेइ, करेत्ता चित्तफलगं सज्जेइ, सज्जेत्ता मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए पायंगुट्ठाणुसारेण रूवं निव्वत्तेइ, निव्वत्तेता कक्खंतरंसि छुब्भइ, छुब्भित्ता महत्थं जाव[१०] पाहुडं गेण्हइ, गेण्हित्ता 'हत्थिणाउरस्स नयरस्स'[११] मज्झंमज्झेणं[१२] जेणेव अदीणसत्तू राया तेणेव उवागच्छइ,

---

१. पू०—ना० १।८।१०६।
२. सं० पा०—अपत्थिय जाव परिवज्जिए।
३. सं० पा०—देवयभूयाए जाव निव्वत्तिए।
४. सं० पा०—करयलपरिग्गहियं जाव वद्धावेत्ता।
५. चित्तकार (ख, ग)।
६. सं० पा०—दुपयस्स वा जाव निव्वत्तेति।
७. निव्वत्तएह (ख)।
८. विदेहं जणवयं (क, ख, ग, घ); १।८।१०७ सूत्रानुसारेणासौ पाठः स्वीकृतोस्ति। अत्र कियापदमन्तरा द्वितीया: विभक्तिर्नैव संगच्छते।
९. 'निक्खमइ, निक्खमित्ता' इत्यध्याहार्यम्।
१०. ना० १।८।८१।
११. हत्थिणाउरं नयरं (क, ख, ग, घ)।
१२. रायपसेणइय ६८३ सूत्रे अस्यानन्तरं 'अणुपविसइ' इति क्रियापदं लभ्यते।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उवागच्छित्ता करयल[1]•परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ° वद्धावेत्ता पाहुडं उवणेइ, उवणेत्ता एवं वयासी—एवं खलु अहं सामी ! मिहिलाओ रायहाणीओ कुंभगस्स रण्णो पुत्तेण पभावईए देवीए अत्तएणं मल्लदिन्नेणं कुमारेणं निव्विसए आणत्ते समाणे इहं हव्वमागए। तं इच्छामि णं सामी ! तुब्भं बाहुच्छाया-परिग्गहिए[2] •निब्भए निरुव्विग्गे सुहं-सुहेणं° परिवसित्तए ॥

१३२. तए णं से अदीणसत्तू राया तं चित्तगरं[3] एवं वयासी – किण्णं तुमं देवाणुप्पिया ! मल्लदिन्नेणं निव्विसए आणत्ते ?

१३३. तए णं से चित्तगरे अदीणसत्तुं रायं एवं वयासी—एवं खलु सामी ! मल्लदिन्ने कुमारे अण्णया कयाइ चित्तगर-सेणिं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! मम चित्तसभं हाव-भाव-विलास-बिब्बोयकलिएहिं रूवेहिं चित्तेह तं चेव सव्वं भाणियव्वं जाव[4] मम संडासगं छिंदावेइ, छिंदावेत्ता निव्वि-सयं आणवेइ। एवं खलु अहं सामी ! मल्लदिन्नेणं कुमारेणं निव्विसए आणत्ते ॥

१३४. तए णं अदीणसत्तू राया तं चित्तगरं एवं वयासी – से केरिसए णं देवाणुप्पिया ! तुमे मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए तयाणुरूवे रूवे निव्वत्तिए ॥

१३५. तए णं से चित्तगरे कक्खंतराओ चित्तफलगं नीणेइ, नीणेत्ता अदीणसत्तुस्स उवणेइ, उवणेत्ता एवं वयासी—एस णं सामी मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए तयाणुरूवस्स रूवस्स केइ आगार-भाव-पडोयारे निव्वत्तिए। नो खलु सक्का[5] केणइ देवेण वा[6] •दाणवेण वा जक्खेण वा रक्खसेण वा किन्नरेण वा किंपुरि-सेण वा महोरगेण वा गंधव्वेण वा° मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए तयाणुरूवे रूवे निव्वत्तित्तए ॥

१३६. तए णं से अदीणसत्तू पडिरूव-जणिय-हासे दूयं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी[7]—•जाव[8] मल्लिं विदेहरायवरकन्नं मम भारियत्ताए वरेहि, जइ वि य णं सा सयं रज्जसुंका ॥

१३७. तए णं से दूए अदीणसत्तुणा एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे जाव[9] जेणेव मिहिला नयरी तेणेव° पहारेत्थ गमणाए ॥

---

१. सं० पा०—करयल जाव वद्धावेत्ता।
२. सं० पा०—परिग्गहिए जाव परिवसित्तए।
३. चित्तगरदारयं (ख, ग, घ)।
४. ना० १।८।११७-१३०।
५. प्राकृतव्याकरणानुसारेण 'सक्क' इति पदं युज्यते, किन्तु आदर्शेषु 'सक्का' इति पदमेव लिखितमस्ति। एतद् लिपिदोषेण जात-मथवा प्राकृतशैल्या प्रयुक्तम् ?
६. सं० पा०—देवेण वा जाव मल्लीए।
७. सं० पा०—तहेव जाव पहारेत्थ।
८. ना० १।८।६२।
९. ना० १।८।६३।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जियसत्तु-राय-पदं

१३८. तेणं कालेणं तेणं समएणं पंचाले जणवए। कंपिल्लपुरे नयरे। जियसत्तू नामं राया पंचालाहिवई। तस्स णं जियसत्तुस्स धारिणीपामोक्खं देवीसहस्सं ओरोहे[1] होत्था॥

१३९. तत्थ णं मिहिलाए चोक्खा[2] नामं परिव्वाइया—रिउव्वेय[3]-॰यज्जुव्वेद-सामवेद-अहव्वणवेद-इतिहासपंचमाणं निघंटुछट्ठाणं संगोवंगाणं सरहस्साणं चउण्हं वेदाणं सारगा जाव[4] बंभण्णएसु य सत्थेसु॰ सुपरिणिट्ठिया यावि होत्था॥

१४०. तए णं सा चोक्खा परिव्वाइया मिहिलाए बहूणं राईसर जाव[5] सत्थवाहपभिईणं पुरओ दाणधम्मं च सोयधम्मं च तित्थाभिसेयं च आघवेमाणी पण्णवेमाणी परूवेमाणी उवदंसेमाणी विहरइ॥

१४१. तए णं सा चोक्खा अण्णया कयाइं तिदंडं च कुंडियं च जाव[6] धाउरत्ताओ य गेण्हइ, गेण्हित्ता परिव्वाइगावसहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता पविरल-परिव्वाइया-सद्धिं संपरिवुडा मिहिलं रायहाणिं मज्झंमज्झेणं जेणेव कुंभगस्स रण्णो भवणे जेणेव कन्नंतेउरे जेणेव मल्ली विदेहरायवरकन्ना तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता उदयपरिफोसियाए[7] 'दब्भोवरिपच्चत्थुयाए भिसियाए'[8] निसीयइ, निसीइत्ता मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए पुरओ दाणधम्मं च[9] ॰सोयधम्मं च तित्थाभिसेयं च आघवेमाणी पण्णवेमाणी परूवेमाणी उवदंसेमाणी॰ विहरइ॥

१४२. तए णं मल्ली विदेहरायवरकन्ना चोक्खं परिव्वाइयं एवं वयासी—तुब्भण्णं[10] चोक्खे! किंमूलए धम्मे पण्णत्ते?

१४३. तए णं सा चोक्खा परिव्वाइया मल्लिं विदेहरायवरकन्नं एवं वयासी—अम्हं णं देवाणुप्पिए! सोयमूलए धम्मे पण्णत्ते। जं णं अम्हं किंचि असुई भवइ तं णं उदएण य मट्टियाए[11] ॰य सुई भवइ। एवं खलु अम्हे जलाभिसेय-पूयप्पाणो॰ अविग्घेणं सग्गं गच्छामो॥

१४४. तए णं मल्ली विदेहरायवरकन्ना चोक्खं परिव्वाइयं एवं वयासी—चोक्खे[12]! से जहानामए केइ पुरिसे रुहिरकयं वत्थं रुहिरेणं चेव धोवेज्जा, अत्थि णं

---

१. ओरोहो (क); उवरोहे (ख)।
२. चोक्खी (ख)।
३. सं० पा०—रिउव्वेय जाव परिणिट्ठिया।
४. ओ० सू० ९७।
५. ना० १।५।६।
६. ओ० सू० ११७।
७. ॰फासियाए (क, ग)।
८. ॰पच्चत्थुयाते भिसियाते (ख, घ)।
९. सं० पा०—दाणधम्मं च जाव विहरइ।
१०. तुब्भेणं (ख, घ) अशुद्धं प्रतिभाति।
११. सं० पा०—मट्टियाए जाव अविग्घेणं। १।५।६० सूत्रे एतत् वर्णनं किञ्चित् परिवर्तनेन लभ्यते।
१२. चोक्खा (ख, घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चोक्खे ! तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेणं धोव्वमाणस्स काइ सोही ?
नो इणट्ठे समट्ठे ।
एवामेव चोक्खे[1] ! तुब्भण्णं पाणाइवाएणं जाव[2] मिच्छादंसणसल्लेणं नत्थि काइ सोही, जहा तस्स रुहिरकयस्स वत्थस्स रुहिरेणं चेव धोव्वमाणस्स ।।

१४५. तए णं सा चोक्खा[3] परिव्वाइया मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए एवं वुत्ता समाणी संकिया कंखिया वितिगिंछिया भेयसमावण्णा जाया यावि[4] होत्था, मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए नो संचाएइ किंचिवि पामोक्खमाइक्खित्तए[5], तुसिणीया संचिट्ठइ ।।

१४६. तए णं तं चोक्खं मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए बहूओ दासचेडीओ हीलेंति निंदंति खिसंति गरिहंति, अप्पेगइयाओ हेरुयालेंति अप्पेगइयाओ मुहमक्कडियाओ[6] करेंति अप्पेगइयाओ वग्घाडियाओ[7] करेंति अप्पेगइयाओ तज्जेमाणीओ तालेमाणीओ निच्छुहंति ।।

१४७. तए णं सा चोक्खा मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए दासचेडियाहिं[8] •हीलिज्जमाणी निंदिज्जमाणी खिसिज्जमाणी ° गरहिज्जमाणी आसुरुत्ता जाव[9] मिसिमिसेमाणी मल्लीए विदेहरायवरकन्नयाए पओसमावज्जइ, भिसियं गेण्हइ, गेण्हित्ता कन्नंतेउराओ पडिणिक्खमई, पडिणिक्खमित्ता मिहिलाओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता, परिव्वाइया-संपरिवुडा जेणेव पंचालजणवए जेणेव कंपिल्लपुरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता बहूणं राईसर[10] •जाव[11] सत्थवाहपभिईणं पुरओ दाणधम्मं च सोयधम्मं च तित्थाभिसेयं च आघवेमाणी पण्णवेमाणी परूवेमाणी उवदंसेमाणी ° विहरइ ।।

१४८. तए णं से जियसत्तू अण्णया कयाइ अंतो अंतेउर-परियाल-सद्धिं संपरिवुडे[12] •सीहासणवरगए यावि ° विहरइ ।।

१४९. तए णं सा चोक्खा, परिव्वाइया-संपरिवुडा जेणेव जियसत्तुस्स रण्णो भवणे जेणेव जियसत्तू राया तेणेव अणुपविसइ, अणुपविसित्ता जियसत्तुं जएणं विजएणं वद्धावेइ ।।

१५०. तए णं से जियसत्तू चोक्खं परिव्वाइयं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता सीहासणाओ

१. एवं चोक्खी (क, ग); एवं चोक्खा (ख) ।
२. ओ० सू० १६३ ।
३. चोक्खी (क, ख, ग, घ) ।
४. वि (ग) ।
५. °माति° (ग, घ) ।
६. मुहमक्कडियं (क) ।
७. वग्घाडिया (क); वग्घाडिओ (ख, ग); वग्घाडाओ (घ) ।
८. सं० पा०—दासचेडियाहिं जाव गरहिज्जमाणी ।
९. ना० १।८।१०६ ।
१०. सं० पा० – राईसर जाव विहरइ ।
११. ना० १।५।६ ।
१२. सं० पा०—संपरिवुडे एवं जाव विहरइ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता चोक्खं सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता आसणेणं उवनिमंतेइ ॥

१५१. तए णं सा चोक्खा उदगपरिफोसियाए[1] •दब्भोवरि पच्चत्थुयाए° भिसियाए निविसइ[2], निविसित्ता जियसत्तुं रायं रज्जे य[3] •रट्ठे य कोसे य कोट्ठागारे य बले य वाहणे य पुरे य° अंतेउरे य कुसलोदंतं पुच्छइ ॥

१५२. तए णं सा चोक्खा जियसत्तुस्स रण्णो दाणधम्मं च[4] •सोयधम्मं च तित्थाभिसेयं च आघवेमाणी पण्णवेमाणी परूवेमाणी उवदंसेमाणी° विहरइ ॥

१५३. तए णं से जियसत्तू अप्पणो ओरोहंसि जायविम्हए चोक्खं एवं वयासी—तुमं णं देवाणुप्पिया ! बहूणि गामागर जाव[5] सण्णिवेसंसि आहिंडसि, बहूण य राईसर[6]-सत्थवाहप्पभिईणं गिहाइं अणुप्पविससि, तं अत्थियाइं ते कस्सइ रण्णो वा[7] •ईसरस्स वा कहिंचि° एरिसए ओरोहे दिट्ठपुव्वे, जारिसए णं इमे मम ओरोहे[8] ?

१५४. तए णं सा चोक्खा परिव्वाइया 'जियसत्तुणा एवं वुत्ता समाणी ईसिं विहसियं'[9] करेइ, करेत्ता एवं वयासी—सरिसए णं तुमं देवाणुप्पिया ! तस्स अगडदद्दुरस्स। के णं देवाणुप्पिए ! से अगडदद्दुरे ?

जियसत्तू ! से जहानामए अगडदद्दुरे सिया। सेणं तत्थ जाए तत्थेव वुड्ढे अण्णं अगडं वा तलागं वा दहं वा सरं वा सागरं वा अपासमाणे मण्णइ—अयं चेव अगडे वा[10] •तलागे वा दहे वा सरे वा° सागरे वा।

तए णं तं कूवं अण्णे सामुद्दए दद्दुरे हव्वमागए।

तए णं से कूवदद्दुरे तं सामुद्दयं[11] दद्दुरं एवं वयासी—से के[12] तुमं देवाणुप्पिया ! कत्तो वा इह हव्वमागए ?

तए णं से सामुद्दए दद्दुरे तं कूवदद्दुरं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! अहं सामुद्दए दद्दुरे।

---

१. सं० पा०—उदगपरिफोसियाए जाव भिसियाए।
२. णिवसइ (क, ख, ग, घ)।
३. सं० पा०—रज्जे य जाव अंतेउरे।
४. सं० पा०—दाणधम्मं च जाव विहरइ।
५. ना० १।१।११८।
६. पू०—ना० १।५।६।
७. सं० पा०—रण्णो वा जाव एरिसए।
८. ओरोवे (ख)।
९. जियसत्तु एवं व ईसिं अवहसियं (क, ख, ग); जियसत्तुं एवं वयासी ईसिं अवहसिय (घ); आदर्शेषु 'एवं व' इति संक्षिप्तरूपं लिखितं लभ्यते स्तबकादर्शे तत्र 'एवं वयासी' इति जातम्। स्तबककारेण 'इम कहइ' इत्यर्थोपि कृतः। अस्य मौलिकं रूपं अस्माभिः प्रस्तुतसूत्रस्य षोडशाध्ययने लब्धम्।
१०. सं० पा०—अगडे वा जाव सागरे।
११. समुद्दयं (घ)।
१२. केसणं (घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं से कूवदद्दुरे तं सामुद्दयं दद्दुरं एवं वयासी—केमहालए णं देवाणु-प्पिया ! से समुद्दे ?

तए णं से सामुद्दए दद्दुरे तं कूवदद्दुरं एवं वयासी—महालए णं देवाणुप्पिया ! समुद्दे ।

तए णं से कूवदद्दुरे पाएणं लीहं कड्ढेइ, कड्ढेत्ता एवं वयासी—एमहालए णं देवाणुप्पिया ! से समुद्दे ?

नो इणट्ठे समट्ठे । महालए णं से समुद्दे ।

तए णं से कूवदद्दुरे पुरत्थिमिल्लाओ तीराओ उप्फिडित्ता णं 'पच्चत्थिमिल्लं तीरं'[1] गच्छइ, गच्छित्ता एवं वयासी—एमहालए णं देवाणुप्पिया ! से समुद्दे ? नो इणट्ठे समट्ठे[2] ।

एवामेव तुमंपि जियसत्तू अण्णेसिं बहूणं राईसर जाव[3] सत्थवाहप्पभिईणं भज्जं वा भगिणिं वा धूयं वा सुण्हं वा अपासमाणे जाणसि[4] जारिसए मम चेव णं ओरोहे, तारिसए नो अण्णेसिं ।

तं एवं खलु जियसत्तू ! मिहिलाए नयरीए कुंभगस्स धूया पभावईए अत्तया मल्ली नामं विदेहरायवरकन्ना रूवेण य जोव्वणेण य[5] •लावण्णेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा,° नो खलु अण्णा काइ [तारिसिया ?] देवकन्ना[6] •वा असुर-कन्ना वा नागकन्ना वा जक्खकन्ना वा गंधव्वकन्ना वा रायकन्ना वा° जारि-सिया मल्ली विदेहरायवरकन्ना [तीसे ?] छिन्नस्स वि पायंगुट्ठगस्स इमे तवोरोहे सयसहस्सइमंपि कलं न अग्घइ त्ति कट्टु जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया ।।

१५५. तए णं से जियसत्तू परिव्वाइया-जणिय-हासे दूयं सद्दावेइ[7], •सद्दावेत्ता एवं वयासी—जाव[8] मल्लिं विदेहरायवरकन्नं मम भारियत्ताए वरेहि, जइ वि य णं सा सयं रज्जसुंका ।।

१५६. तए णं से दूए जियसत्तुणा एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे जाव[9] जेणेव मिहिला नयरी तेणेव° पहारेत्थ गमणाए ।।

दूयाणं संदेस-निवेदण-पदं

१५७. तए णं तेसिं जियसत्तुपामोक्खाणं छण्हं राईणं दूया जेणेव मिहिला तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।।

---

१. × (क, ख, ग, घ) ।

२. तहेव (क, ख, ग, घ) ।

३. ना० १।५।६ ।

४. जाणासि (घ) ।

५. सं० पा०—जोव्वणेण य जाव नो खलु ।

६. सं० पा०—देवकन्ना··· ।

७. सं० पा०—सद्दावेइ जाव पहारेत्थ ।

८. ना० १।८।६२ ।

९. ना० १।८।६३ ।

१५८. तए णं छप्पि दूयगा जेणेव मिहिला तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता मिहिलाए अग्गुज्जाणंसि पत्तेयं-पत्तेयं खंधावारनिवेसं करेंति, करेत्ता मिहिलं रायहाणिं अणुप्पविसंति, अणुप्पविसित्ता जेणेव कुंभए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पत्तेयं करयल[1]•परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु° साणं-साणं राईणं वयणाइं निवेदेंति[2] ।।

कुंभएण दूयाणं असक्कार-पदं

१५९. तए णं से कुंभए तेसिं दूयाणं 'अंतियं एयमट्ठं'[3] सोच्चा आसुरुत्ते[4] •रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसेमाणे° तिवलियं भिउडिं निडाले साहट्टु एवं वयासी—न देमि णं अहं तुब्भं मल्लिं विदेहरायवरकन्नं ति कट्टु ते छप्पि दूए असक्कारिय असम्माणिय अवद्दारेणं[5] निच्छुभावेइ ।।

१६०. तए णं ते जियसत्तुपामोक्खाणं छण्हं राईणं दूया कुंभएणं रण्णा 'असक्कारिय असम्माणिय'[6] अवद्दारेणं[7] निच्छुभाविया समाणा जेणेव सगा-सगा जणवया जेणेव 'सयाइं-सयाइं नगराइं'[8] जेणेव सया-सया रायाणो तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल[9]•परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु° एवं वयासी—एवं खलु सामी! अम्हे जियसत्तुपामोक्खाणं छण्हं राईणं दूया जमगसमगं चेव जेणेव मिहिला तेणेव उवागया जाव[10] अवद्दारेणं निच्छुभावेइ। "तं न देइ णं सामी! कुंभए मल्लिं विदेहरायवरकन्नं" साणं-साणं राईणं एयमट्ठं निवेदेंति ।।

जियसत्तुपामोक्खाणं कुंभएणं जुज्झ-पदं

१६१. तए णं ते जियसत्तुपामोक्खा छप्पि रायाणो तेसिं दूयाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ता रुट्ठा कुविया चंडिक्किया मिसिमिसेमाणा अण्णमण्णस्स दूय-संपेसणं करेंति, करेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! अम्हं छण्हं राईणं दूया जमगसमगं चेव मिहिला तेणेव उवागया जाव[11] अवद्दारेणं निच्छूढा। तं सेयं खलु देवाणुप्पिया! कुंभगस्स जत्तं[12] गेण्हित्तए त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ठं

---

१. सं० पा०—करयल··· ।
२. निवेसंति (क, ग, घ) ।
३. ×(ख, ग) ।
४. सं० पा०—आसुरत्ते जाव तिवलियं ।
५. अवदारेणं (क, ख, घ) ।
६. असक्कारिय-असम्माणिया (ख, ग) ।
७. अवदारेणं (क) ।
८. सयाति-सयाति नगराति (ख) ।
९. सं० पा०—करयल° ।
१०. ना० १।८।१५८,१५९ ।
११. ना० १।८।१५८,१५९ ।
१२. जुत्तं (ख, ग) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता ण्हाया सण्णद्धा[1] हत्थिखंधवरगया सकोरेंटमल्लदामेणं[2] •छत्तेणं धरिज्जमाणेणं सेयवरचामराहिं वीइज्जमाणा° महया हय-गय-रह-पवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडा सव्विड्ढीए जाव[3] दुंदुभि-नाइयरवेणं 'सएहिंतो-सएहिंतो नगरेहिंतो निग्गच्छंति',[4] निग्गच्छित्ता एगयओ मिलायंति, जेणेव मिहिला तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।।

१६२. तए णं कुंभए राया इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे बलवाउयं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव हय[5]-•गय-रह-पवरजोहकलियं चाउरंगिणिं° सेणं सन्नाहेहि[6], सन्नाहेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि सेवि जाव पच्चप्पिणति[7] ।।

१६३. तए णं कुंभए राया ण्हाए सण्णद्धे[8] हत्थिखंधवरगए[9] •सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं° सेयवरचामराहिं वीइज्जमाणे महया हय-गय-रह-पवर-जोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए जाव[10] दुंदुभि-नाइयरवेणं मिहिलं मज्झंमज्झेणं निज्जाइ[11], निज्जावेत्ता विदेहजणवयं मज्झं-मज्झेणं जेणेव देसग्गं[12] तेणेव खंधावारनिवेसं करेइ, करेत्ता जियसत्तुपामोक्खा छप्पि य रायाणो पडिवालेमाणे जुज्झसज्जे पडिचिट्ठइ ।।

१६४. तए णं ते जियसत्तुपामोक्खा[13] छप्पि रायाणो जेणेव कुंभए राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता कुंभएणं रण्णा सद्धिं संपलग्गा[14] यावि होत्था ।।

१६५. तए णं ते जियसत्तुपामोक्खा छप्पि रायाणो कुंभयं रायं हय-महिय-पवरवीर-घाइय-'विवडियचिंध-धय'[15]-पडागं किच्छोवगयपाणं[16] दिसोदिसिं पडिसेहेंति ।।

---

१. पू०—ना० १।२।३२ ।

२. सं० पा०—सकोरेंटमल्लदाम जाव सेयवर-चामराहिं महया ।

३. ना० १।१।३३ ।

४. सएहिंतो जाव निग्गच्छंति (क); सएहिं २ नगरेहिंतो जाव निग्गच्छंति (ख, ग, घ) ।

५. सं० पा०—हय जाव सेणं ।

६. सन्नाहेह (क, ख, ग, घ) । आदर्शेषु बहुवचनान्तः प्रयोगो दृश्यते, किन्तु एकवचन-कर्तृके पाठे नासौ उपयुक्तोस्ति । ओवाइय—५६ सूत्रेपि एकवचनान्तं क्रियापदं लभ्यते ।

७. पच्चप्पिणंति (क, ख, ग, घ) ।

८. पू०—ना० १।२।३२ ।

९. सं० पा०—हत्थिखंधवरगए जाव सेयवर-चामराहिं ।

१०. ना० १।१।३३ ।

११. णिगच्छई (घ) ।

१२. देसग्गंते (क, ख, घ); देसअंते (क्व); देसमग्गे (क्व) ।

१३. जियसत्तू° (क, ख, ग, घ) ।

१४. योद्धुमिति शेषः (वृ) ।

१५. निवडियधयच्छत्तचिंध (क) ।

१६. किंछपाणोवगयं (क); किच्छपाणोवगयं (ख, ग, घ) । प्रस्तुतसूत्रस्य वृत्तौ नायं पाठो व्याख्यातोस्ति । १।१६।२५२ सूत्रस्य वृत्तावस्य व्याख्या दृश्यते । तत्रत्यः पाठो व्याख्या च सम्यक् प्रतिभाति, तेन तदनु-सारेणात्र पाठः स्वीकृतः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१६६. तए णं से कुंभए जियसत्तुपामोक्खेहिं छहिं राईहिं हय-महिय-[1]•पवरवीर-घाइय-विवडियचिंध-धय-पडागे किच्छोवगयपाणे दिसोदिसिं॰ पडिसेहिए समाणे अत्थामे अबले अवीरिए[2] •अपुरिसक्कारपरक्कमे॰ अधारणिज्जमिति कट्टु सिग्घं तुरियं[3] •चवलं चंडं जइणं॰ वेइयं जेणेव मिहिला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मिहिलं अणुपविसइ,[4] अणुपविसित्ता मिहिलाए दुवाराइं पिहेइ, पिहेत्ता रोहसज्जे चिट्ठइ ।।

१६७. तए णं ते जियसत्तुपामोक्खा छप्पि रायाणो जेणेव मिहिला तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता मिहिलं रायहाणिं निस्संचारं निरुच्चारं सव्वओ समंता ओरुंभित्ता णं चिट्ठंति ।।

१६८. तए णं से कुंभए राया मिहिलं रायहाणिं ओरुद्धं जाणित्ता अब्भितरियाए उवट्ठाणसालाए सीहासणवरगए तेसिं जियसत्तुपामोक्खाणं छण्हं राईणं अंतराणि य छिद्दाणि य 'विवराणि य'[5] मम्माणि[6] य अलभमाणे बहूहिं आएहि य उवाएहि य, उप्पत्तियाहि य वेणइयाहि य कम्मयाहि य पारिणामियाहि य—बुद्धीहिं परिणामेमाणे-परिणामेमाणे किंचि आयं वा उवायं वा अलभमाणे ओहयमणसंकप्पे[7] •करतलपल्हत्थमुहे अट्टज्झाणोवगए॰ झियायइ ।।

मल्लीए चिंताहेउ-पुच्छा-पदं

१६९. इमं च णं मल्ली विदेहरायवरकन्ना ण्हाया[8] •कयबलिकम्मा कयकोउय-मंगलपायच्छित्ता सव्वालंकारविभूसिया॰ बहूहिं खुज्जाहिं[9] संपरिवुडा जेणेव कुंभए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कुंभगस्स पायग्गहणं करेइ ।।

१७०. तए णं कुंभए मल्लिं विदेहरायवरकन्नं नो आढाइ नो परियाणाइ[10] तुसिणीए संचिट्ठइ ।।

१७१. तए णं मल्ली विदेहरायवरकन्ना कुंभगं एवं वयासी—तुब्भे णं ताओ ! अण्णया ममं एज्जमाणिं[11] •पासित्ता आढाह परियाणाह अंके निवेसेह । इयाणिं ताओ ! तुब्भे ममं नो आढाह नो परियाणाह नो अंके॰ निवेसेह । किण्णं तुब्भं अज्ज ओहय[12]•मणसंकप्पा करतलपल्हत्थमुहा अट्टज्झाणोवगया॰ झियायह ?

---

१. सं॰ पा॰—हयमहिय जाव पडिसेहिए ।
२. सं॰ पा॰—अवीरिए जाव अधारणिज्ज॰ ।
३. सं॰ पा॰ – तुरियं जाव वेइयं ।
४. ॰पवेसेइ (ख, ग, घ) ।
५. विरहाणि य (ग); विरहाणि य विवराणि (घ) ।
६. सम्माणि (क, ख, ग) अशुद्धं प्रतिभाति ।
७. सं॰ पा॰—ओहयमणसंकप्पे जाव झियायइ।
८. सं॰ पा॰ – ण्हाया जाव बहूहिं ।
९. पू॰—ओ॰ सू॰ ७० ।
१०. द्रष्टव्यम्—१।१।३६ सूत्रम् ।
११. एज्जमाणं (ख, ग, घ) । सं॰ पा॰—एज्जमाणिं जाव निवेसेह ।
१२. सं॰ पा॰—ओहय जाव झियायह ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुंभगस्स चिंताहेउ-कहण-पदं

१७२. तए णं कुंभए मल्लिं विदेहरायवरकन्नं एवं वयासी—एवं खलु पुत्ता ! तव कज्जे जियसत्तुपामोक्खेहिं छहिं राईहिं दूया संपेसिया। ते णं मए असक्कारिय[1] •असम्माणिय अवद्दारेणं° निच्छूढा। तए णं जियसत्तुपामोक्खा छप्पि रायाणो तेसिं दूयाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा परिकुविया समाणा मिहिलं रायहाणिं निस्संचारं[2] •निरुच्चारं सव्वओ समंता ओरुंभित्ता णं° चिट्ठंति। तए णं अहं पुत्ता तेसिं जियसत्तुपामोक्खाणं छण्हं राईणं अंतराणि [य छिद्दाणि य विवराणि य मम्माणि य ?] अलभमाणे जाव[3] अट्टज्झाणोवगए झियामि ॥

मल्लीए उवायनिरूवण-पदं

१७३. तए णं सा मल्ली विदेहरायवरकन्ना कुंभगं रायं एवं वयासी – मा णं तुब्भे ताओ ! ओहयमणसंकप्पा[4] •करतलपल्हत्थमुहा अट्टज्झाणोवगया ° झियायह। तुब्भे णं ताओ ! तेसिं जियसत्तुपामोक्खाणं छण्हं राईणं पत्तेयं-पत्तेयं रहस्सिए[5] दूयसंपेसे करेह, एगमेगं एवं वयह—तव देमि मल्लिं विदेहरायवरकन्नं ति कट्टु संझकालसमयंसि[6] पविरल-मणूसंसि निसंत-पडिनिसंतंसि पत्तेयं-पत्तेयं मिहिलं रायहाणिं अणुप्पवेसेह, अणुप्पवेसेत्ता गब्भघरएसु अणुप्पवेसेह, अणुप्पवेसेत्ता मिहिलाए रायहाणीए दुवाराइं पिहेह, पिहेत्ता रोहासज्जा[7] चिट्ठह ॥

१७४. तए णं कुंभए[8] •तेसिं जियसत्तुपामोक्खाणं छण्हं राईणं पत्तेयं-पत्तेयं रहस्सिए दूयसंपेसे करेइ जाव[9]° रोहासज्जे चिट्ठइ ॥

मल्लीए जियसत्तुपामोक्खाणं संबोह-पदं

१७५. तए णं ते जियसत्तुपामोक्खा छप्पि रायाणो कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव[10] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते जालंतरेहिं कणगमइं मत्थयछिड्डं पउमुप्पल-पिहाणं पडिमं पासंति—एस णं मल्ली विदेहरायवरकन्नत्ति कट्टु मल्लीए रायवरकन्नाए रूवे य जोव्वणे य लावण्णे य मुच्छिया गिद्धा गढिया अज्झोववण्णा अणिमिसाए दिट्ठीए पेहमाणा-पेहमाणा चिट्ठंति ॥

---

१. सं० पा०—असक्कारिया जाव निच्छूढा।
२. सं० पा०—निस्संचारं जाव चिट्ठंति।
३. ना० १।८।१६८।
४. सं० पा०—ओहयमणसंकप्पा जाव झियायह।
५. रहस्सियं (क, ख, ग, घ)।
६. संझा° (क, ग)।
७. °सज्जे (क, ख, ग, घ); अत्र कर्तृपदं क्रियापदं च बहुवचनान्तमस्ति अतः अनेन कर्तृपदविशेषणेन बहुवचनान्तेन भाव्यम्।
८. सं० पा०—कुंभए एवं तं चेव जाव पवेसेइ रोहासज्जे।
९. ना० १।८।१७३।
१०. ना० १।१।२४।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१७६. तए णं सा मल्ली विदेहरायवरकन्ना ण्हाया[1] •कयबलिकम्मा कयकोउय-मंगल°-पायच्छित्ता सव्वालंकारविभूसिया बहूहिं खुज्जाहिं जाव[2] परिक्खित्ता जेणेव जालघरए जेणेव कणगमई मत्थयछिड्डा पउमुप्पल-पिहाणा पडिमा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तीसे कणगमईए मत्थयछिड्डाए पउमुप्पल-पीहाणाए पडिमाए मत्थयाओ तं पउमुप्पल-पिहाणं[3] अवणेइ। तओ[4] णं गंधे निद्धावेइ[5], से जहाणामए—अहिमडे इ वा जाव[6] एत्तो असुभतराए[7] चेव ॥

१७७. तए णं ते जियसत्तुपामोक्खा छप्पि रायाणो तेणं असुभेणं गंधेणं अभिभूया समाणा सएहिं-सएहिं उत्तरिज्जेहिं आसाइं[8] पिहेंति,[9] पिहेत्ता परम्मुहा चिट्ठंति ॥

१७८. तए णं सा मल्ली विदेहरायवरकन्ना ते जियसत्तुपामोक्खे एवं वयासी—किण्णं तुब्भे देवाणुप्पिया! सएहिं-सएहिं उत्तरिज्जेहिं[10] •आसाइं पिहेत्ता° परम्मुहा चिट्ठह?

१७९. तए णं ते जियसत्तुपामोक्खा मल्लिं विदेहरायवरकन्नं एवं वयंति -एवं खलु देवाणुप्पिए! अम्हे इमेणं असुभेणं गंधेणं अभिभूया समाणा सएहिं-सएहिं उत्तरिज्जेहिं[11] •आसाइं पिहेत्ता° चिट्ठामो ॥

१८०. तए णं मल्ली विदेहरायवरकन्ना ते जियसत्तुपामोक्खे एवं वयासी—जइ ताव देवाणुप्पिया! इमीसे कणग[12]•मईए मत्थयछिड्डाए पउमुप्पल-पिहाणाए° पडिमाए कल्लाकल्लिं ताओ मणुण्णाओ असण-पाण-खाइम-साइमाओ एगमेगे पिंडे पक्खिप्पमाणे-पक्खिप्पमाणे इमेयारूवे असुभे पोग्गल[13]-परिणामे, इमस्स[14] पुण ओरालियसरीरस्स खेलासवस्स वंतासवस्स पित्तासवस्स सुक्कासवस्स सोणियपूयासवस्स दुरुय[15]-ऊसास-नीसासस्स 'दुरुय-मुत्त-पूइय-पुरीस-पुण्णस्स'[16]

---

१. सं० पा०—ण्हाया जाव पायच्छित्ता।

२. ओ० सू० ७०।

३. पउमं (क, ख, ग, घ)।

४. ततेणं (ख, घ)।

५. णिद्धाइ (क); णिद्धवेइ (ख)।

६. ना० १।८।४२।

७. प्रस्तुताध्ययनस्य ४२ सूत्रे 'एत्तो अणिट्ठतराए चेव अकंततराए चेव' इत्यादि पदानि दृश्यन्ते। तत्र 'असुभतराए चेव' इति पदं नास्ति। अत्र संभवतः 'अणिट्ठतराए' इत्यादिपदानां सारसंग्रहरूपेण 'असुभतराए' इति पदं प्रयुक्तमस्ति।

८. आसाति (ख, ग, घ)।

९. पिहिंति (क, ग)।

१०. सं० पा०—उत्तरिज्जेहिं जाव परम्मुहा।

११. सं० पा०—उत्तरिज्जेहिं जाव चिट्ठामो।

१२. सं० पा०—कणग जाव पडिमाए।

१३. पोग्गले (क, ख, घ)।

१४. अतः पूर्वं वाचनान्तरे 'किमंग पुण' इति लभ्यते। (वृ)।

१५. दुरूय (घ)। मुखसुखोच्चारणार्थं 'दुरूव' शब्दस्य 'दुरुय' मितिरूपं कृतं संभाव्यते अथवा दुरूपार्थवाची देशी शब्दः स्यात्? वृत्तौ 'दुरुय' शब्दस्य 'दुरूप' इत्यर्थोस्ति कृतः।

१६. दुरुय-मुत्त-पुरिस-पूय-बहुपडिपुण्ण(१।१।१०९)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'सडण-पडण-छेयण-विद्धंसण-धम्मस्स'[1] केरिसए य परिणामे भविस्सइ ? तं माणं तुब्भे देवाणुप्पिया ! माणुस्सएसु कामभोगेसु सज्जह रज्जह गिज्झह मुज्झह अज्झोववज्जह। एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे इमाओ[2] तच्चे भवग्गहणे अवरविदेहवासे सलिलावतिंसि[3] विजए वीयसोगाए रायहाणीए महब्बल-पामोक्खा सत्तवि[4] य बालवयंसया रायाणो होत्था—सहजाया जाव[5] पव्वइया। तए णं अहं देवाणुप्पिया ! इमेणं कारणेणं इत्थीनामगोयं कम्मं निव्वत्तेमि—जइ णं तुब्भे चउत्थं[6] उवसंपज्जित्ता णं विहरह, तए णं अहं छट्ठं उवसंपज्जित्ता णं विहरामि सेसं तहेव सव्वं[7]। तए णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! कालमासे कालं किच्चा जयंते विमाणे उववण्णा। तत्थ णं तुब्भं देसूणाइं बत्तीसं सागरोवमाइं ठिई। तए णं तुब्भे ताओ देवलोगाओ अणंतरं चयं चइत्ता इहेव जंबुद्दीवे दीवे जाव[8] साइं-साइं रज्जाइं उवसंपज्जित्ता णं विहरह। तए णं अहं ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं जाव[9] दारियत्ताए पच्चायाया।

गाहा—

किंथ तयं पम्हुट्ठं[10], जंथ तया भो ! जयंतपवरम्मि।
वुत्था समय-णिबद्धा[11], देवा तं संभरह जाइं ॥१॥

जियसत्तुपामोक्खाणं जाइसरण-पदं

१८१. तए णं तेसिं जियसत्तुपामोक्खाणं छण्हं राईणं मल्लीए विदेहरायवरकन्नाए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्मा सुभेणं परिणामेणं पसत्थेणं अज्झवसाणेणं लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं तयावर[12]•णिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं ईहापूह-मग्गण-गवेसणं करेमाणाणं सण्णिपुव्वे° जाइसरणे[13] समुप्पण्णे, एयमट्ठं सम्मं अभिसमागच्छंति[14] ॥

मल्लीए पव्वज्जा-पदं

१८२. तए णं मल्ली अरहा[15] जियसत्तुपामोक्खे छप्पि रायाणो समुप्पण्णजाईसरणे जाणित्ता गब्भघराणं दाराइं विहाडेइ ॥

---

१. सडण जाव धम्मस्स (ग)।
२. इमे (ग)।
३. सलिलावतिम्मि (ख)।
४. सत्तपि (क, ख, घ)।
५. ना० १।८।१०-१६।
६. चोत्थं (ख, ग, घ)।
७. ना० १।८।१८-२६।
८. ना० १।८।२७।
९. ना० १।८।२८-३४।
१०. पम्हुट्ठा (ख, ग)।
११. णिबद्धं (वृपा)।
१२. सं० पा०—तयावर ईहापूह जाव सण्णि-जाइसरणे।
१३. जाई° (घ)।
१४. अभिसमण्णागच्छंति (ग)।
१५. अरिहा (क)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१८३. तए णं ते जियसत्तुपामोक्खा छप्पि रायाणो जेणेव मल्ली अरहा तेणेव उवागच्छंति ॥

१८४. तए णं महब्बलपामोक्खा सत्तवि य[1] बालवयंसा एगयओ अभिसमण्णागया वि होत्था ॥

१८५. तए णं मल्ली अरहा ते जियसत्तुपामोक्खे छप्पि रायाणो एवं वयासी—एवं खलु अहं देवाणुप्पिया ! संसारभउव्विग्गा जाव[2] पव्वयामि। तं तुब्भे णं किं करेह ? किं ववसह ? 'किं वा भे हियइच्छिए सामत्थे'[3] ?

१८६. तए णं जियसत्तुपामोक्खा छप्पि रायाणो मल्लिं अरहं एवं वयासी—जइ णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! संसारभउव्विग्गा जाव[4] पव्वयह, अम्हं णं देवाणुप्पिया ! के अण्णे आलंबणे वा आहारे वा पडिबंधे वा ? जह चेव णं देवाणुप्पिया ! तुब्भे अम्हं इओ तच्चे भवग्गहणे बहूसु कज्जेसु[5] य मेढी पमाणं जाव[6] धम्मधुरा होत्था, तह[7] चेव णं देवाणुप्पिया ! इण्हिं पि जाव[8] धम्मधुरा भविस्सह। अम्हे वि णं देवाणुप्पिया ! संसारभउव्विग्गा[9] भीया जम्मणमरणाणं देवाणुप्पिया[10]-सद्धिं मुंडा भवित्ता[11] •णं अगाराओ अणगारियं॰ पव्वयामो ॥

१८७. तए णं मल्ली अरहा ते जियसत्तुपामोक्खे छप्पि रायाणो एवं वयासी—जइ णं तुब्भे संसारभउव्विग्गा जाव[12] मए सद्धिं पव्वयह, तं गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! सएहिं-सएहिं रज्जेहिं जेट्ठपुत्ते[13] ठावेह, ठावेत्ता पुरिससहस्सवाहिणीओ सीयाओ[14] दुरुहह[15], मम अंतियं पाउब्भवह ॥

१८८. तए णं ते जियसत्तुपामोक्खा छप्पि रायाणो मल्लिस्स अरहओ एयमट्ठं पडिसुणेंति ॥

१८९. तए णं मल्ली अरहा ते जियसत्तुपामोक्खा छप्पि रायाणो गहाय जेणेव कुंभए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कुंभगस्स पाएसु पाडेइ ॥

१९०. तए णं कुंभए ते जियसत्तुपामोक्खे विउलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पुप्फ-

---

१. पिय (ख)।
२. ना० १।५।८९।
३. के भे हियसामत्थे (क, ख, ग); १।५।८९ सूत्रात् किंचित् पाठः स्वीकृतः।
४. ना० १।५।८९।
५. पू०—ना० १।५।९०।
६. ना० १।५।९०।
७. तहा (ख, ग, घ)।
८. ना० १।५।९०।
९. भउव्विग्गा जाव (क, ख, ग, घ)। अशुद्धं प्रतिभाति।
१०. देवाणुप्पियाणं (क्व०)।
११. सं० पा०—भवित्ता जाव पव्वयामो।
१२. ना० १।५।८९।
१३. ०पुत्ते रज्जे (ख, ग, घ)।
१४. सीविया (क)।
१५. दुरूढा समाणा (क); अस्याध्ययनस्य १४ सूत्रेपि 'दुरूढा समाणा' इति पाठोस्ति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वत्थ-गंध-मल्लालंकारेणं सक्कारेइ सम्माणेइ[1], सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ ॥

१६१. तए णं ते जियसत्तुपामोक्खा छप्पि रायाणो कुंभएणं रण्णा विसज्जिया समाणा जेणेव साइं-साइं रज्जाइं जेणेव [साइं-साइं ?] नगराइं तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता 'सगाइं-सगाइं'[2] रज्जाइं उवसंपज्जित्ता णं विहरंति ॥

१६२. तए णं मल्ली अरहा संवच्छरावसाणे निक्खमिस्सामि त्ति मणं पहारेइ[3] ॥

१६३. तेणं कालेणं तेणं समएणं सक्कस्स आसणं चलइ ॥

१६४. तए णं से[4] सक्के देविंदे देवराया आसणं चलियं पासइ, पासित्ता ओहिं पउंजइ, पउंजित्ता मल्लिं अरहं ओहिणा आभोएइ । इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे मिहिलाए नयरीए कुंभगस्स रण्णो [धूया पभावईए देवीए अत्तया ?] मल्ली अरहा निक्खमिस्सामित्ति मणं पहारेइ । तं जीयमेयं तीय-पच्चुप्पण्ण-मणागयाणं सक्काणं अरहंताणं भगवंताणं निक्खममाणाणं इमेयारूवं अत्थ-संपयाणं दलइत्तए, [तं जहा—

संगहणी-गाहा –

तिण्णेव य कोडिसया, अट्ठासीइं च हुंति कोडीओ ।
असिइं च सयसहस्सा[5], इंदा दलयंति अरहाणं ॥१॥]

एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता वेसमणं देवं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे[6] •मिहिलाए रायहाणीए कुंभगस्स रण्णो धूया पभावईए देवीए अत्तया मल्ली अरहा निक्खमिस्सामित्ति मणं पहारेइ जाव इंदा दलयंति अरहाणं ।° तं गच्छह णं देवाणुप्पिया ! जंबुद्दीवं दीवं भारहं वासं मिहिलं रायहाणिं कुंभगस्स रण्णो भवणंसि इमेयारूवं अत्थ-संपयाणं साहराहि, साहरित्ता खिप्पामेव मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि ॥

१६५. तए णं से वेसमणे देवे सक्केणं देविंदेणं देवरण्णा एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे करयल[7] •परिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं देवो ! तहत्ति आणाए विणएणं वयणं° पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता जंभए देवे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! जंबुद्दीवं दीवं भारहं वासं मिहिलं

---

१. सम्माणेई जाव (क, ख, ग) ।
२. सयाइं २ (ख) ।
३. संपहारेइ (क); संपाहारेति (ख); पाहारेइ (ग) ।
४. × (ख) ।
५. सयसहस्सं (ग, घ) ।
६. सं० पा०—वासे जाव असीइं च सयसहस्सा दलइत्तए । अत्र संक्षेपीकरणे किञ्चित् विपर्ययो जातः इति संभाव्यते ।
७. सं० पा०—करयल जाव पडिसुणेइ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रायहाणिं कुंभगस्स रण्णो भवणंसि तिण्णि कोडिसया अट्ठासीइं च कोडीओ असीइं सयसहस्साइं—इमेयारूवं अत्थ-संपयाणं साहरह, साहरित्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ॥

१९६. तए णं ते जंभगा देवा वेसमणेणं देवेणं एवं वुत्ता समाणा जाव[1] पडिसुणेत्ता उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमंति अवक्कमित्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णंति, समोहणित्ता संखेज्जाइं जोयणाइं दंडं निसिरंति, जाव[2] उत्तरवेउव्वियाइं रूवाइं विउव्वंति, विउव्वित्ता ताए उक्किट्ठाए जाव[3] देवगईए वीईवयमाणा-वीईवयमाणा जेणेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे जेणेव मिहिला रायहाणी जेणेव कुंभगस्स रण्णो भवणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता कुंभगस्स रण्णो भवणंसि तिण्णि कोडिसया जाव[4] साहरंति, साहरित्ता जेणेव वेसमणे देवे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल[5]•परिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु तमाणत्तियं• पच्चप्पिणंति ॥

१९७. तए णं से वेसमणे देवे जेणेव सक्के देविंदे देवराया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं जाव[6] तमाणत्तियं पच्चप्पिणइ ॥

१९८. तए णं मल्ली अरहा कल्लाकल्लिं जाव मागहओ पायरासो त्ति बहूणं सणाहाण य अणाहाण य पंथियाण य पहियाण य करोडियाण[7] य कप्पडियाण य 'एगमेगं हिरण्णकोडिं अट्ठ य अणूणाइं सयसहस्साइं—इमेयारूवं अत्थ-संपयाणं'[8] दलयइ ॥

१९९. तए णं कुंभए राया मिहिलाए रायहाणीए तत्थ-तत्थ तहिं-तहिं देसे-देसे बहूओ महाणससालाओ करेइ । तत्थ णं बहवे मणुया दिण्णभइ-भत्त-वेयणा विउलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडेंति । जे जहा आगच्छंति, तं जहा—पंथिया वा पहिया वा करोडिया वा कप्पडिया वा पासंडत्था वा गिहत्था वा, तस्स य तहा आसत्थस्स वीसत्थस्स सुहासणवरगयस्स तं विउलं असण-पाण-खाइम-साइमं परिभाएमाणा परिवेसेमाणा[9] विहरंति ॥

२००. तए णं मिहिलाए नयरीए सिंघाडग[10]-•तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु• बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ—एवं खलु देवाणुप्पिया ! कुंभगस्स रण्णो भवणंसि सव्वकामगुणियं किमिच्छियं विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं

---

१. ना० १।८।१९५ ।
२, ३. राय० सू० १० ।
४. ना० १।८।१९५ ।
५. सं० पा०—करयल जाव पच्चप्पिणंति ।
६. ना० १।८।१९६ ।
७. काउडियाणं (वृपा) ।
८. एगमेगं हत्थामासं ति वाचनान्तरे दृश्यते(वृ)।
९. परिवेसमाणा (क, ख) ।
१०. सं० पा०—सिंघाडग जाव बहुजणो ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बहूणं समणाण य[1] •माहणाण य सणाहाण य अणाहाण य पंथियाण य पहियाण य करोडियाण य कप्पडियाण य परिभाइज्जइ° परिवेसिज्जइ[2]।

संगहणी-गाहा—

वरवरिया घोसिज्जइ, किमिच्छियं दिज्जए बहुविहीयं।
सुर-असुर देव-दाणव-नरिंद-महियाण निक्खमणे ॥१॥

२०१. तए णं मल्ली अरहा संवच्छरेणं तिण्णि कोडिसया अट्ठासीइं च[3] कोडीओ असीइं सयसहस्साइं[4]—इमेयारूवं अत्थ-संपयाणं दलइत्ता निक्खमामि त्ति मणं पहारेइ[5]॥

२०२. तेणं कालेणं तेणं समएणं लोगंतिया देवा बंभलोए कप्पे रिट्ठे विमाणपत्थडे[6] सएहिं-सएहिं विमाणेहिं सएहिं-सएहिं पासायवडिंसएहिं पत्तेयं-पत्तेयं चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं तिहिं परिसाहिं सत्तहिं अणिएहिं सत्तहिं अणियाहिवईहिं सोलसहिं आयरक्खदेवसाहस्सीहिं अण्णेहि य बहूहिं लोगंतिएहिं देवेहिं सद्धिं संपरिवुडा महयाऽहय-नट्ट-गीय-वाइय[7]-•तंती-तल-ताल-तुडिय-घण-मुइंग-पडुप्पवाइय° रवेणं [विउलाइं भोगभोगाइं ?] भुंजमाणा विहरंति, तं जहा—

संगहणी-गाहा

सारस्सयमाइच्चा, वण्ही वरुणा य गद्दतोया य।
तुसिया अव्वाबाहा, अग्गिच्चा चेव रिट्ठा य[8]॥१॥

२०३. तए णं तेसिं लोगंतियाणं देवाणं पत्तेयं-पत्तेयं आसणाइं चलंति तहेव जाव[9] तं जीयमेयं लोगंतियाणं देवाणं अरहंताणं भगवंताणं निक्खममाणाणं संबोहणं करित्तए त्ति। तं गच्छामो णं अम्हे वि मल्लिस्स अरहओ संबोहणं करेमो त्ति कट्टु एवं संपेहेंति, संपेहेत्ता उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमंति, अवक्कमित्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णंति, समोहणित्ता संखेज्जाइं जोयणाइं दंडं निसिरंति, एवं जहा जंभगा जाव[10] जेणेव मिहिला रायहाणी जेणेव कुंभगस्स रण्णो भवणे जेणेव मल्ली अरहा तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता अंतलिक्ख-

---

१. सं० पा०—समणाण य जाव परिवेसिज्जइ।
२. सुरासुरियं परिवेसिज्जइ—इति वाचनान्तरम् (वृ)।
३. च होंति (क, ख, ग, घ)।
४. च सयसहस्सा (क, ख, ग, घ)।
५. पधारेति (ख, घ)।
६. विमाणे पत्थडे (ख, ग, घ)।
७. सं० पा०—वाइय जाव रवेणं।
८. क्वचिद् दशविधा एते व्याख्यायन्ते, अस्माभिस्तु स्थानाङ्गानुसारेणैवमभिहिताः (वृ)।
९. ना० १।८।१९४।
१०. ना० १।८।१९६।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पडिवण्णा सखिखिणियाइं[1] •दसद्धवण्णाइं° वत्थाइं पवरं[2] परिहिया करयल[3]-•परिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु° ताहिं इट्ठाहिं[4] •कंताहिं पियाहिं मणुण्णाहिं मणामाहिं वग्गूहिं° एवं वयासी—बुज्झाहि भगवं लोगणाहा! पवत्तेहि धम्मतित्थं जीवाणं हियसुहनिस्सेयसकरं भविस्सइ त्ति कट्टु दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयंति, मल्लिं अरहं वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया ॥

२०४. तए णं मल्ली अरहा तेहिं लोगंतिएहिं देवेहिं संबोहिए समाणे जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल[5]•परिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु°एवं वयासी—इच्छामि णं अम्मयाओ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे मुंडे भवित्ता[6] •णं अगाराओ अणगारियं° पव्वइत्तए। अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिबंधं करेह ॥

२०५. तए णं कुंभए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! अट्ठसहस्सेणं सोवण्णियाणं कलसाणं जाव[7] अट्ठसहस्सेणं भोमेज्जाणं कलसाणं अण्णं च महत्थं[8] •महग्घं महरिहं विउलं° तित्थयराभिसेयं उवट्ठवेह। तेवि जाव उवट्ठवेंति ॥

२०६. तेणं कालेणं तेणं समएणं चमरे असुरिंदे जाव[9] अच्चुयपज्जवसाणा आगया ॥

२०७. तए णं सक्के देविंदे देवराया आभिओगिए देवे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! अट्ठसहस्सेणं सोवण्णियाणं कलसाणं जाव[10] अण्णं च[11] •महत्थं महग्घं महरिहं° विउलं तित्थयराभिसेयं उवट्ठवेह। तेवि जाव उवट्ठवेंति। तेवि कलसा 'तेसु चेव कलसेसु'[12] अणुपविट्ठा ॥

२०८. तए णं से सक्के देविंदे देवराया कुंभए य राया मल्लिं अरहं सीहासणंसि पुरत्थाभिमुहं निवेसेंति[13], अट्ठसहस्सेणं सोवण्णियाणं कलसाणं जाव[14] तित्थयराभिसेयं अभिसिंचंति ॥

२०९. तए णं मल्लिस्स भगवओ अभिसेए वट्टमाणे अप्पेगइया देवा मिहिलं च

---

१. सं० पा०—सखिखिणियाइं जाव वत्थाइं। अत्र वस्तुतः 'जाव परिहिए' इति संक्षेपो युज्यते। पूर्वसूत्रेष्वपि इत्थमेव लब्धत्वात् ॥
२. विभक्तिरहितं पदम्।
३. सं० पा०—करयल°।
४. सं० पा०—इट्ठाहिं जाव एवं।
५. सं० पा०—करयल°।
६. सं० पा०—भवित्ता जाव पव्वइत्तए।
७. राय० सू० २८०।
८. सं० पा०—महत्थं जाव तित्थयराभिसेयं।
९. जंबु० वक्खारो ५।
१०. ना० १।८।२०५।
११. सं० पा०—अण्णं च तं विउलं।
१२. ते चेव कलसे (ख, ग)।
१३. निवेसेइ (क, ख, ग, घ)।
१४. ना० १।८।२०५।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सब्भिंतरबाहिरियं जाव[1] सव्वओ समंता 'आधावंति परिधावंति'[2] ।।

२१०. तए णं कुंभए राया दोच्चंपि उत्तरावक्कमणं सीहासणं रयावेइ, जाव[3] सव्वालंकारविभूसियं करेइ, करेत्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! मणोरमं सीयं उवट्ठवेह । तेवि उवट्ठवेंति ।।

२११. तए णं सक्के देविंदे देवराया आभिओगिए देवे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! अणेगखंभसय-सण्णिविट्ठं जाव[4] मणोरमं सीयं उवट्ठवेह । तेवि जाव उवट्ठवेंति । सावि सीया तं चेव सीयं अणुप्पविट्ठा ।।

२१२. तए णं मल्ली अरहा सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता जेणेव मणोरमा सीया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मणोरमं सीयं अणुपयाहिणीकरेमाणे[5] मणोरमं सीयं दुरुहइ, दुरुहित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सण्णिसण्णे ।।

२१३. तए णं कुंभए अट्ठारस सेणिप्पसेणीओ सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! ण्हाया जाव[6] सव्वालंकारविभूसिया मल्लिस्स सीयं परिवहह । तेवि जाव परिवहंति ।।

२१४. तए णं सक्के देविंदे देवराया मणोरमाए सीयाए दक्खिणिल्लं[7] उवरिल्लं बाहं गेण्हइ, ईसाणे उत्तरिल्लं उवरिल्लं बाहं गेण्हइ, चमरे दाहिणिल्लं हेट्ठिल्लं, बली उत्तरिल्लं हेट्ठिल्लं, अवसेसा देवा जहारिहं मणोरमं सीयं परिवहंति ।

संगहणी-गाहा—

पुव्विं उक्खित्ता, माणुसेहिं साहट्ठरोमकूवेहिं[8] ।
पच्छा वहंति सीयं, असुरिंदसुरिंदनागिंदा ।।१।।
चलचवलकुंडलधरा, सच्छंदविउव्वियाभरणधारी ।
देविंददाणविंदा, वहंति सीयं जिणिंदस्स ।।२।।

२१५. तए णं मल्लिस्स अरहओ मणोरमं सीयं दुरुढस्स[9] समाणस्स इमे अट्ठट्ठमंगला पुरओ अहाणुपुव्वीए संपत्थिया—एवं निग्गमो जहा जमालिस्स[10] ।।

२१६. तए णं मल्लिस्स अरहओ निक्खममाणस्स अप्पेगइया देवा मिहिलं रायहाणिं

---

१. राय० सू० २८१; जंबु० वक्खारो ५ ।
२. संपरिधावंति (क, ख, ग, घ) ।
३. ना० १।१।१२८ ।
४. ना० १।१।१२९ ।
५. × (क); °करेमाणा (ग) ।
६. ना० १।८।१७६ ।
७. दक्खिणिल्लेणं (ग) ।
८. °रोमपुलएहिं (आयारचूला १५।२८ गा० १२) ।
९. दुरुहस्स (ख, घ) ।
१०. भगवत्यां (९।३३) यथा जमालेर्निष्क्रमणं तथेह वाच्यं, इहैव यथा मेघकुमारस्य, नवरं चमरधारितरुण्यादिषु शक्रेशानादीन्द्रप्रवेशतः इह विशेषः (वृ) । ओ० सू० ६४-६८ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अब्भिंतरबाहिरं आसिय-संमज्जिय-संमट्ठ-सुइ-रत्थंतरावणवीहियं करेंति 'जाव परिधावंति'[1] ॥

२१७. तए णं मल्ली अरहा जेणेव सहस्संबवणे उज्जाणे जेणेव असोगवरपायवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीयाओ पच्चोरुहइ, 'आभरणालंकारं ओमुयइ ॥

२१८. तए णं पभावई हंसलक्खणेणं पडसाडएणं आभरणालंकारं पडिच्छइ'[2] ॥

२१९. तए णं मल्ली अरहा सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ ॥

२२०. तए णं सक्के देविंदे देवराया मल्लिस्स केसे पडिच्छइ, पडिच्छित्ता खीरोदग-समुद्दे साहरइ ॥

२२१. तए णं मल्ली अरहा नमोत्थु णं सिद्धाणं ति कट्टु सामाइयचरित्तं पडिवज्जइ। जं समयं च णं मल्ली अरहा सामाइयचरित्तं पडिवज्जइ, तं समयं च णं देवाण माणुसाण य निग्घोसे तुडिय-णिणाए[3] गीय-वाइय[4]-निग्घोसे य सक्कवयणसंदेसेणं निलुक्के यावि होत्था। जं समयं च णं मल्ली अरहा सामाइयचारित्तं[5] पडिवण्णे तं समयं च मल्लिस्स अरहओ माणुसधम्माओ उत्तरिए मणपज्जवणाणे समुप्पण्णे ॥

२२२. मल्ली णं अरहा जे से हेमंताणं दोच्चे मासे चउत्थे पक्खे पोससुद्धे तस्स णं पोससुद्धस्स एक्कारसीपक्खेणं पुव्वण्हकालसमयंसि अट्ठमेणं भत्तेणं अपाणएणं अस्सिणीहिं नक्खत्तेणं जोगमुवागएणं तिहिं इत्थीसएहिं—अब्भिंतरियाए परिसाए, तिहिं पुरिससएहिं—बाहिरियाए परिसाए सद्धिं मुंडे भवित्ता पव्वइए ॥

२२३. मल्लि अरहं इमे अट्ठ नायकुमारा अणुपव्वइंसु, तं जहा—

---

१. आसिय अब्भिंतरवासविहिं, गाहा जाव परिधावंति (क, ख, ग, घ); 'अप्पेगइया देवा मंचाइमंचकलियं करेंतीत्यादिमेघकुमार-निष्क्रमणोक्तनगरवर्णकस्य' तथा 'अप्पेगइया देवा हिरण्णवासं वासिंसु एवं सुवन्नवासं वासिंसु एवं रयण-वइर-पुप्फ-मल्ल-गंध-चुण्ण-आभरणवासं वासिंसु' इत्यादि वर्षासमूहस्य तथा 'अप्पेगइया देवा हिरण्णविहिं भाइंसु एवं सुवण्णविहिं भाइंसु' इत्यादिविधिसमूहस्य तीर्थंकरजन्माभिषेकोक्त-संग्रहार्था याः क्वचिद् गाथाः सन्ति ता अनुसृत्य सूत्रमध्येयं यावदप्पेगइया देवा आधावंति परिधावंतीत्येतदवसान-मित्यर्थः। इदं च राजप्रश्नकृतादौ (सू० २८१) द्रष्टव्यमिति (वृ)। वृत्तिकृता निर्दिष्टो नगरवर्णको मेघकुमार-निष्क्रमणप्रकरणे नास्ति, किन्तु जन्मोत्सव-प्रकरणे लभ्यते। द्रष्टव्यं १।१।७६ सूत्रम्। वृत्तिकृता पाठान्तररूपेण निर्दिष्टा गाथा आदर्शेषु प्रकटरूपेण न लभ्यन्ते वृत्तावपि लिखिता न सन्ति। ना० १।८।२०६।

२. आभरणालंकारं पभावई पडिच्छइ (क, ख, ग, घ) असौ पाठः संक्षिप्तलिपिपद्धत्या कालक्रमेण अपूर्णो जातः। असौ च १।१।१४८ सूत्रमनुसृत्य पूरितः।

३. णाए (म)।

४. वाइयपणिय (ग, घ)।

५. सामाइयं (क)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गाहा—

नंदे य नंदिमित्ते, सुमित्त बलमित्त भाणुमित्ते य।
अमरवइ अमरसेणे, महसेणे चेव अट्ठमए॥

२२४. तए णं ते भवणवइ-वाणमंतर-जोइसिय-वेमाणिया देवा मल्लिस्स अरहओ निक्खमण-महिमं करेंति, करेत्ता जेणेव नंदीसरे[1] •दीवे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता अट्ठाहियं महिमं करेंति, करेत्ता जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं° पडिगया॥

मल्लिस्स केवलणाण-पदं

२२५. तए णं मल्ली अरहा जं चेव दिवसं पव्वइए, तस्सेव दिवसस्स पच्चावरण्हकाल-समयंसि[2] असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलापट्टयंसि सुहासणवरगयस्स सुहेणं परिणामेणं पसत्थाहिं लेसाहिं तयावरण-कम्मरय-विकरणकरं अपुव्वकरणं अणुपविट्ठस्स अणंते[3] •अणुत्तरे निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुण्णे° केवल-वरनाणदंसणे समुप्पण्णे॥

२२६. तेणं कालेणं तेणं समएणं सव्वदेवाणं आसणाइं चलेंति, समोसढा धम्मं सुणेंति, सुणेत्ता जेणेव नंदीसरे दीवे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता अट्ठाहियं[4] महिमं करेंति, करेत्ता जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं° पडिगया। कुंभए वि निग्गच्छइ।

जियसत्तुपामोक्खाणं पव्वज्जा-पदं

२२७. तए णं ते जियसत्तुपामोक्खा छप्पि रायाणो जेट्ठपुत्ते रज्जे ठावेत्ता पुरिससहस्स-वाहिणीयाओ [सीयाओ ?] दुरूढा [समाणा ?] सव्विड्ढीए जेणेव मल्ली अरहा तेणेव उवागच्छंति जाव[5] पज्जुवासंति॥

२२८. तए णं मल्ली अरहा तीसे महइमहालियाए परिसाए, कुंभगस्स रण्णो, तेसिं च जियसत्तुपामोक्खाणं छण्हं राईण धम्मं परिकहेइ। परिसा जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया। कुंभए समणोवासए जाव पडिगए, पभावई य॥

२२९. तए णं जियसत्तुपामोक्खा छप्पि रायाणो धम्मं सोच्चा निसम्म एवं वयासी—आलित्तए णं भंते! लोए, पलित्तए णं भंते! लोए, आलित्त-पलित्तए णं भंते!

---

१. सं० पा०—नंदीसरे अट्ठाहियं करेंति जाव पडिगया।

२. पुव्वावरण्ह° (क, ग, घ)।

३. सं० पा०—अणंते जाव समुप्पण्णे।

४. सं० पा०—अट्ठाहियं महानंदीसरं जामेव दिसं पाउ जाव पडिगए।

५. ओ० सू० ६९।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लोए जराए मरणेण य जाव[1] पव्वइया जाव[2] चोद्दसपुव्विणो। अणंते वरनाण-दंसणे केवले [समुप्पाडेत्ता तओ पच्छा ?] सिद्धा ॥

मल्लिस्स सिस्ससंपदा-पदं

२३०. तए णं मल्ली अरहा सहस्संबवणाओ उज्जाणाओ निक्खमइ, निक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

२३१. मल्लिस्स णं अरहओ भिसगपामोक्खा अट्ठावीसं गणा अट्ठावीसं गणहरा होत्था ॥

२३२. मल्लिस्स णं अरहओ चत्तालीसं समणसाहस्सीओ उक्कोसिया समणसंपया होत्था, बंधुमइपामोक्खाओ पणपन्नं अज्जियासाहस्सीओ उक्कोसिया अज्जिया-संपया होत्था, सावयाणं एगा सयसाहस्सी चुलसीइं सहस्सा, सावियाणं तिण्णि सयसाहस्सीओ पण्णट्ठिं च सहस्सा, छस्सया चोद्दसपुव्वीणं, वीसं सया ओहि-नाणीणं, बत्तीसं सया केवलनाणीणं, पणतीसं सया वेउव्वियाणं, अट्ठसया मणपज्जवनाणीणं, चोद्दससया वाईणं,[3] वीसं सया अणुत्तरोववाइयाणं ॥

२३३. मल्लिस्स णं अरहओ दुविहा अंतकरभूमी[4] होत्था, तं जहा—जुगंतकरभूमी परियायंतकरभूमी य। जाव वीसइमाओ पुरिसजुगाओ जुगंतकरभूमी दुवासपरियाए[5] अंतमकासी ॥

२३४. मल्ली णं अरहा पणुवीसं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं, वण्णेणं पियंगुसामे समचउरंस-संठाणे वज्जरिसहनाराय-संघयणे मज्झदेसे सुहंसुहेणं विहरित्ता जेणेव सम्मेए[6] पव्वए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सम्मेयसेलसिहरे पाओवगमणंणुवन्ने[7] ॥

मल्लिस्स निव्वाण-पदं

२३५. मल्ली णं अरहा एगं वाससयं अगारवासमज्झे पणपण्णं वाससहस्साइं वाससय-ऊणाइं केवलिपरियागं पाउणित्ता पणपण्णं वाससहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता जे से गिम्हाणं पढमे मासे दोच्चे पक्खे चेत्तसुद्धे, तस्स णं चेत्तसुद्धस्स चउत्थीए पक्खेणं[8] भरणीए नक्खत्तेणं [जोगमुवागएणं ?] अद्धरत्तकालसमयंसि पंचहिं अज्जियासएहिं—अब्भिंतरियाए परिसाए, पंचहिं अणगारसएहिं—बाहिरियाए

---

१. ना० १।१।१४६,१५० ।

२. भग० २।१ ।

३. वातीणं (ग) ।

४. अंतगड° (घ) ।

५. 'दुमासपरियाए' इति क्वचित् क्वचिच्च 'चउमासपरियाए' इति दृश्यते (वृ); दुबालस° (क) अशुद्धं प्रतिभाति ।

६. सम्मेते (ग, घ) ।

७. पाओवगमणुववण्णे (ख); पाओवगमणुवण्णे (ग) ।

८. × (ख, ग) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिसाए, मासिएणं भत्तेणं अपाणएणं वग्घारियपाणी 'पाए साहट्टु'[1] खीणे वेयणिज्जे आउए नामगोए सिद्धे। एवं परिनिव्वाणमहिमा भाणियव्वा जहा जंबुद्दीवपण्णत्तीए,[2] नंदीसरे अट्ठाहियाओ पडिगयाओ ॥

निक्खेव-पदं

२३६. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं अट्ठमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।

—त्ति बेमि ॥

वृत्तिकृता समुद्धृता निगमनगाथा—

उग्गतवसंजमवओ, पगिट्ठफलसाहगस्स वि जयिस्स ।
धम्मविसए वि सुहमा वि, होइ माया अणत्थाय ॥१॥
जह मल्लिस्स महाबल-भवम्मि तित्थयरनामबंधे वि ।
तव-विसय-थेवमाया जाया जुवइत्त-हेउत्ति ॥२॥

---

१. ×(ख, ग, घ) ।

२. वक्ष० २ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नवमं अज्झयणं

मायंदी

उक्खेव-पदं

१. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[1] संपत्तेणं अट्ठमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, नवमस्स णं भंते ! नायज्झयणस्स[2] के अट्ठे पण्णत्ते ?

२. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नामं नयरी[3]। पुण्णभद्दे चेइए ।।

३. तत्थ[4] णं मायंदी नाम सत्थवाहे परिवसइ—अड्ढे[5]। तस्स णं भद्दा नामं भारिया। तीसे णं भद्दाए अत्तया दुवे सत्थवाहदारया होत्था, तं जहा - जिणपालिए य जिणरक्खिए य ।।

मागंदिय-दारगाणं समुद्द-जत्ता-पदं

४. तए णं तेसिं मागंदिय-दारगाणं अण्णया कयाइ एगयओ सहियाणं[6] इमेयारूवे मिहोकहासमुल्लावे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अम्हे लवणसमुद्दं पोयवहणेणं एक्कारसवाराओ[7] ओगाढा। सव्वत्थ वि य णं लद्धट्ठा कयकज्जा अणहसमग्गा[8] पुणरवि नियघरं हव्वमागया। तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया ! दुवालसंपि[9] लवणसमुद्दं पोयवहणेणं ओगाहित्तए त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता

---

१. ना० १।१।७।

२. नायज्झयणस्स समणेणं जाव संपत्तेणं (क, ख, ग, घ)।

३. नयरी पुव्ववन्नओ (ख); नयरी पुव्वुत्त (ग)।

४. एत्थ (ख)।

५. पू०—ना० १।२।७।

६. पू०—ना० १।३।७।

७. °वारा (ख, ग, घ)।

८. अणहसमुग्गा (ख); अणट्ठ° (ग)।

९. दुवालसमंपि (क)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवं वयासी एवं खलु अम्हे अम्मयाओ ! लवणसमुद्दं पोयवहणेणं एक्कारसवाराओ[1] •ओगाढा। सव्वत्थ वि य णं लद्धट्ठा कयकज्जा अणहसमग्गा पुणरवि° नियघरं हव्वमागया। तं इच्छामो णं अम्मयाओ ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणा दुवालसंपि[2] लवणसमुद्दं पोयवहणेणं ओगाहित्तए ।।

५. तए णं ते मागंदिय-दारए अम्मापियरो एवं वयासी—इमे भे जाया ! अज्जय[3]- •पज्जय-पिउपज्जयागए सुबहु हिरण्णे य सुवण्णे य कंसे य दूसे य मणि-मोत्तिय-संख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-संतसार-सावएज्जे य अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवंसाओ पगामं दाउं पगामं भोत्तुं पगामं° परिभाएउं। तं अणुहोह ताव जाया ! विपुले माणुस्सए इड्ढीसक्कारसमुदए। किं भे सपच्चवाएणं निरालंबणेणं लवणसमुद्दोत्तारेणं ? एवं खलु पुत्ता ! दुवालसमी जत्ता सोवसग्गा यावि भवइ। तं मा णं तुब्भे दुवे पुत्ता ! दुवालसंपि[4] लवण[5]•समुद्दं पोयवहणेणं° ओगाहेह। मा हु तुब्भं सरीरस्स वावत्ती भविस्सइ ।।

६. तए णं ते मागंदिय-दारगा अम्मापियरो दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी—एवं खलु अम्हे अम्मयाओ ! एक्कारसवाराओ लवण[6] •समुद्दं पोयवहणेणं ओगाढा। सव्वत्थ वि य णं लद्धट्ठा कयकज्जा अणहसमग्गा पुणरवि नियघरं हव्वमागया। तं सेयं खलु अम्हं अम्मयाओ ! दुवालसंपि लवणसमुद्दं पोयवहणेणं° ओगाहित्तए ।।

७. तए णं ते मागंदिय-दारए अम्मापियरो जाहे नो संचाएंति बहूहिं आघवणाहि य पण्णवणाहि य आघवित्तए वा पण्णवित्तए वा ताहे अकामा चेव एयमट्ठं अणुमण्णित्था ।।

८. तए णं ते मागंदिय-दारगा अम्मापिऊहिं अब्भणुण्णाया समाणा गणिमं च धरिमं च मेज्जं च पारिच्छेज्जं च भंडगं गेण्हंति, जहा अरहन्नगस्स जाव[7] लवणसमुद्दं बहूइं जोयणसयाइं ओगाढा ।।

नावा-भंग-पदं

९. तए णं तेसिं मागंदिय-दारगाणं लवणसमुद्दं अणेगाइं जोयणसयाइं ओगाढाणं समाणाणं अणेगाइं उप्पाइयसयाइं पाउब्भूयाइं, तं जहा—अकाले[8] गज्जिए[9] •अकाले विज्जुए अकाले° थणियसद्दे कालियवाए जाव[10] समुट्ठिए ।।

---

१. सं० पा० वाराओ तं चेव जाव नियघरं।
२. दुवालस (क, ख, ग, घ)।
३. सं० पा०—अज्जग जाव परिभाएत्तए।
४. दुवालसमंपि (क, ख)।
५. सं० पा०—लवण जाव ओगाहेह।
६. सं० पा०—लवण जाव ओगाहित्तए।
७. ना० १।८।६६-७०।
८. अगाले (क); अयाले (ख)।
९. सं० पा०—गज्जियं जाव थणियसद्दे।
१०. तत्थ (क्व)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०. तए णं सा नावा तेणं कालियवाएणं आहुणिज्जमाणी-आहुणिज्जमाणी संचालिज्जमाणी-संचालिज्जमाणी संखोभिज्जमाणी-संखोभिज्जमाणी सलिल-तिक्ख-वेगेहिं अइअट्टिज्जमाणी[1]-अइअट्टिज्जमाणी कोट्टिमंसि[2] करतलाहते विव तिंदूसए[3] तत्थेव-तत्थेव ओवयमाणी य उप्पयमाणी य, उप्पयमाणी विव धरणीयलाओ सिद्धविज्जा विज्जाहरकन्नगा, ओवयमाणी विव गगणतलाओ भट्ठविज्जा विज्जाहरकन्नगा, विपलायमाणी विव महागरुल-वेग-वित्तासिय भुयगवरकन्नगा, धावमाणी विव महाजण-रसियसद्द-वित्तत्था ठाणभट्ठा आसकिसोरी, निगुंजमाणी विव गुरुजण-दिट्ठावराहा सुजणकुलकन्नगा, घुम्ममाणी विव वीचि[4]-पहार-सय-तालिया[5], गलिय-लंबणा विव गगणतलाओ[6], रोयमाणी विव सलिलगंथि[7]-विप्पइर-माण-थोरंसुवाएहिं नववहू उवरयभत्तुया, विलवमाणी विव परचक्करायाभिरोहिया परममहब्भयाभिद्दुया महापुरवरी, झायमाणी विव कवड-च्छोमण-पओगजुत्ता जोगपरिव्वाइया, नीससमाणी विव महाकंतार-विणिग्गय-परिस्संता परिणयवया अम्मया, सोयमाणी विव तव-चरण-खीण-परिभोगा चवणकाले देववरवहू, संचुण्णियकट्ठ-कूवरा, भग्गमेढि-मोडिय-सहस्समाला, सूलाइय[8]-वंकपरिमासा[9], फलहंतर-तडतडेंत-फुट्टंत-संधिवियलंत-लोहकीलिया[10], सव्वंग-वियंभिया, परिसडियरज्जुविसरंतसव्वगत्ता, आमगमल्ल-गभूया, अकयपुण्ण-जणमणोरहो विव चिंतिज्जमाणगुरुई[11] हाहाक्कय[12]-कण्णधार-नाविय-वाणियगजण-कम्मकर[13]-विलविया नाणाविह-रयण-पणिय-संपुण्णा बहूहिं पुरिससएहिं रोयमाणेहिं कंदमाणेहिं सोयमाणेहिं तिप्पमाणेहिं विलव-माणेहिं एगं महं अंतोजलगयं गिरिसिहरमासाइत्ता संभग्गकूवतोरणा मोडियज्झयदंडा वलयसयखंडिया करकरस्स तत्थेव विद्दवं उवगया ।।

११. तए णं तीए नावाए भिज्जमाणीए ते बहवे पुरिसा विपुल-पणिय-भंडमायाए अंतोजलंमि निमज्जाविया[14] यावि होत्था ।।

१२. तए णं ते मागंदिय-दारगा छेया दक्खा पत्तट्ठा कुसला मेहावी[15] निउणसिप्पो-

१. अइयट्टि° (क, ख); अइवट्टि° (क्व) ।
२. कोट्टिम (क, ख, घ) ।
३. तेंदूसए (क) ।
४. वीयी (क); वीती (ख, ग) ।
५. ताडिता हि स्त्री वेदनया घूर्णयन्तीत्येवमुपमानं द्रष्टव्यम् (वृ) ।
६. पतितेति गम्यते (वृ); क्वचित्तु 'गलिततलंबना' इत्येतावदेव दृश्यते ।
७. °गंठि (घ) ।
८. सूलातित (वृपा) ।
९. °पारिमासा (क, ख) ।
१०. °खीलिया (क, ख, ग) ।
११. °गुरुती (ख, ग, घ) ।
१२. हाहाकय (क) ।
१३. कम्मगार (क); कम्मकार (ग, घ) ।
१४. निवज्जाविया (ख) ।
१५. मेहाविणो (क) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वगया बहूसु[1] पोयवहण-संपराएसु कयकरणा लद्धविजया अमूढा अमूढहत्था एगं महं फलगखंडं आसादेंति ।।

रयणदीव-पदं

१३. जंसि[2] च णं पएसंसि से पोयवहणे विवण्णे तंसि[3] च णं पएसंसि एगे महं रयणदीवे नामं दीवे होत्था—अणेगाइं जोयणाइं आयामविक्खंभेणं अणेगाइं जोयणाइं परिक्खेवेणं नाणादुमसंड-मंडिउद्देसे सस्सिरीए पासाईए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे ।

तस्स[4] बहुमज्झदेसभाए, एत्थ[5] णं महं एगे पासायवडेंसए 'यावि होत्था'[6]—अब्भुग्गयमूसिय-पहसिए जाव[7] सस्सिरीयरूवे पासाईए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे ।

तत्थ णं पासायवडेंसए रयणदीव[8]-देवया नामं देवया परिवसइ—पावा चंडा रुद्दा खुद्दा साहस्सिया[9] ।

तस्स णं पासायवडेंसयस्स चउद्दिसिं चत्तारि वणसंडा—किण्हा किण्होभासा[10] ।।

१४. तए णं ते मार्कंदिय-दारगा तेणं फलयखंडेणं 'ओवुज्झमाणा-ओवुज्झमाणा'[11] रयणदीवंतेणं संवूढा यावि होत्था ।।

१५. तए णं ते मागंदिय[12]-दारगा थाहं लभंति,[13] मुहुत्तंतरं आससंति, फलगखंडं विसज्जेंति, रयणदीवं उत्तरंति, फलाणं मग्गण-गवेसणं करेंति, फलाइं आहारेंति, नालिएराणं मग्गण-गवेसणं करेंति, नालिएराइं[14] फोडेंति, नालिएरतेल्लेणं[15] अण्णमण्णस्स गायाइं अब्भंगेंति, पोक्खरणीओ ओगाहेंति, जलमज्जणं करेंति,[16]• पोक्खरणीओ° पच्चुत्तरंति, पुढविसिलावट्टयंसि निसीयंति, निसीइत्ता आसत्था वीसत्था सुहासणवरगया चंपं नयरिं अम्मापिउआपुच्छणं च लवण-समुद्दोत्तारणं च कालियवायसम्मुच्छणं च पोयवहणविवत्तिं च फलयखंडस्सा-

---

१. बहुसु (ग, घ) ।
२. जंसि (क, ग, घ) ।
३. तंसि (ख, ग, घ) ।
४. तस्स णं (क, ख, घ) ।
५. तत्थ (क, ख) ।
६. होत्था (क); × (ख) ।
७. ना० १।१।८६ ।
८. रयणद्दीव (ख) ।
९. साहसिया (क्व०) ।
१०. पू०—ना० १।७।१३ ।
११. ओवु° २ (ख) ।
१२. मार्कंदिय (क्व) ।
१३. लहंति (ख, ग) ।
१४. नालियराय (ख) ।
१५. °तिल्लेणं (क); नालियर° (ख), नालियररस (ग, घ) ।
१६. सं० पा० —करेंति जाव पच्चुत्तरंति ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सायणं च रयणदीवोत्तारं[1] च अणुचिंतेमाणा-अणुचिंतेमाणा ओहयमणसंकप्पा[2] •करतलपल्हत्थमुहा अट्टज्झाणोवगया° झियायंति ॥

रयणदीवदेवया-पदं

१६. तए णं सा रयणदीवदेवया ते मागंदिय-दारए ओहिणा आभोएइ, असि-खेडग[3]-वग्ग-हत्था सत्तट्ठतलप्पमाणं उड्ढं वेहासं उप्पयइ, उप्पइत्ता ताए उक्किट्ठाए जाव[4] देवगईए वीईवयमाणी-वीईवयमाणी जेणेव मागंदिय-दारया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता आसुरत्ता[5] ते मागंदिय-दारए खर-फरुस-निट्ठुर-वयणेहिं एवं वयासी—हंभो मागंदिय-दारया[6]! जइ णं तुब्भे मए सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरह, तो[7] भे अत्थि जीवियं। अहण्णं तुब्भे मए सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा नो विहरह, तो[8] भे इमेणं नीलुप्पल-गवलगुलिय[9]-•अयसिकुसुमप्पगासेणं° खुरधारेणं असिणा रत्तगंडमंसुयाइं माउआहिं उवसोहियाइं तालफलाणि[10] व सीसाइं[11] एगंते एडेमि ॥

१७. तए णं ते मागंदिय-दारगा रयणदीवदेवयाए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म भीया करयल[12]•परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु° एवं वयासी—जण्णं देवाणुप्पिया वइस्संति[13] तस्स आणा-उववाय-वयण-निद्देसे चिट्ठिस्सामो ॥

१८. तए णं सा रयणदीवदेवया ते मागंदिय-दारए गेण्हइ, जेणेव पासायवडेंसए तेणेव उवागच्छइ, असुभपोग्गलावहारं करेइ, सुभपोग्गलपक्खेवं करेइ, तओ पच्छा तेहिं[14] सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरइ, कल्लाकल्लिं च अमयफलाइं उवणेइ ॥

रयणदीवदेवयाए मागंदिय-पुत्ताणं निद्देस-पदं

१९. तए णं सा रयणदीवदेवया सक्कवयण-संदेसेणं सुट्ठिएणं लवणाहिवइणा लवण-समुद्दे तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्टेयव्वे त्ति जं किंचि तत्थ तणं वा पत्तं वा कट्ठं वा

---

१. रयणद्दीवुत्तारं (क, ख)।
२. सं० पा०—ओहयमणसंकप्पा जाव झियायंति।
३. फलग (ख, ग, घ); वृत्तौ 'खेडग' शब्दस्यार्थः फलकोस्ति। उत्तरवर्त्यादर्शेषु 'फलक' पदस्यैव मूलपाठे स्वीकृतिर्जाता।
४. राय० सू० १०।
५. आसुरुत्ता (क, ख)।
६. °दारया अप्पत्थियपत्थिया (क)।
७. ता (ग)।
८. ता (ग)।
९. सं० पा०—गवलगुलिय जाव खुरधारेणं।
१०. तालियफलाणि (क)।
११. छित्त्वेति वाक्यशेषः (वृ)।
१२. सं० पा०—करयल जाव एवं।
१३. वतिस्सइ (ग)।
१४. एहिं (ग)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कयवरं[1] वा असुइ पूइयं[2] दुरभिगंधमचोक्खं, तं सव्वं आहुणिय-आहुणिय तिसत्तखुत्तो एगंते एडेयव्वं ति कट्टु निउत्ता ॥

२०. तए णं सा रयणदीवदेवया ते मागंदिय-दारए एवं वयासी—एवं खलु अहं देवाणुप्पिया ! सक्कवयण-संदेसेणं सुट्ठिएणं लवणाहिवइणा तं चेव जाव[3] निउत्ता। तं जाव[4] अहं देवाणुप्पिया ! लवणसमुद्दे[5] •तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्टित्ता जं किंचि तत्थ तणं वा पत्तं वा कट्ठं वा कयवरं वा असुइ पूइयं दुरभिगंधमचोक्खं, तं सव्वं आहुणिय-आहुणिय तिसत्तखुत्तो एगंते॰ एडेमि ताव तुब्भे इहेव पासायवडेंसए सुहंसुहेणं अभिरममाणा चिट्ठह। जइ णं तुब्भे एयंसि अंतरंसि उव्विग्गा वा 'उस्सुया वा उप्पुया'[6] वा भवेज्जाह तो णं तुब्भे पुरत्थिमिल्लं वणसंडं गच्छेज्जाह। तत्थ णं दो उऊ सया साहीणा, तं जहा—पाउसे य वासारत्ते य।

गाहा—

तत्थ उ[7]—कंदल - सिलिंध - दंतो, निउर - वरपुप्फपीवरकरो।
कुडयज्जुण-नीव-सुरभिदाणो, पाउसउऊ गयवरो साहीणो ॥१॥
तत्थ य—सुरगोवमणि - विचित्तो, दद्दुरकुलरसिय-उज्झररवो।
वरहिणवंद[8]-परिणद्धसिहरो, वासारत्तउऊ पव्वओ साहीणो ॥२॥

तत्थ णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! बहूसु वावीसु य जाव[9] सरसरपंतियासु य बहूसु आलीघरएसु य मालीघरएसु य जाव[10] कुसुमघरएसु य सुहंसुहेणं अभिरममाणा-अभिरममाणा विहरिज्जाह। जइ णं तुब्भे तत्थ वि उव्विग्गा वा उस्सुया वा उप्पुया वा भवेज्जाह तो णं तुब्भे उत्तरिल्लं वणसंडं गच्छेज्जाह। तत्थ णं दो उऊ सया साहीणा, तं जहा—सरदो य हेमंतो य।

गाहा—

तत्थ उ—सण - सत्तिवण्ण - कउहो, नीलुप्पल - पउम - नलिण-सिंगो।
सारस - चक्काय - रवियघोसो, सरयउऊ गोवई साहीणो ॥३॥
तत्थ य—'सियकुंद-धवलजोण्हो'[11], कुसुमिय-लोद्धवणसंड-मंडलतलो।
तुसार-दगधार-पीवरकरो, हेमंतउऊ ससी सया साहीणो ॥४॥

---

१. केयवरं (क)।
२. पूयं (ख)।
३. ना० १।९।१९।
४. जाव ताव (क)।
५. सं० पा०—लवणसमुद्दे जाव एडेमि।
६. ॰उप्पया (क); उप्पित्था वा उस्सुया (वृ); उप्पुया वा उस्सुया (वृपा)।
७. य (क)।
८. ॰विंद (ग)।
९. राय० सू० १७४।
१०. राय० सू० १८२।
११. ॰जुण्हो (ख); सितकुंदविमलजोण्हो (वृपा)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तत्थ णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! बहूसु वावीसु य[1] •जाव सरसरपंतियासु य बहूसु आलीघरएसु य मालीघरएसु य जाव कुसुमघरएसु य सुहंसुहेणं अभिरममाणा-अभिरममाणा॰ विहरिज्जाह। जइ णं तुब्भे तत्थ वि उव्विग्गा वा उस्सुया वा उप्पुया वा भवेज्जाह तो णं तुब्भे अवरिल्लं वणसंडं गच्छेज्जाह। तत्थ णं दो उऊ सया साहीणा तं जहा—वसंते य गिम्हे य।

गाहा—

तत्थ उ—सहकार - चारुहारो, किंसुय - कण्णियारासोगमउडो।
ऊसियतिलग - बकुलायवत्तो, वसंतउऊ नरवई साहीणो ॥५॥
तत्थ य—पाडल - सिरीस - सलिलो, मल्लिया-वासंतिय-धवलवेलो।
सीयलसुरभि-निल[2]-मगरचरिओ, गिम्हउऊ सागरो साहीणो ॥६॥

तत्थ णं बहूसु[3] •वावीसु य जाव सरसरपंतियासु य बहूसु आलीघरएसु य मालीघरएसु य जाव कुसुमघरएसु य सुहंसुहेणं अभिरममाणा-अभिरममाणा॰ विहरेज्जाह। जइ णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! तत्थ वि उव्विग्गा वा उस्सुया वा उप्पुया वा भवेज्जाह तओ तुब्भे जेणेव पासायवडेंसए तेणेव उवागच्छेज्जाह ममं पडिवाले-माणा-पडिवालेमाणा चिट्ठेज्जाह, मा णं तुब्भे दक्खिणिल्लं वणसंडं गच्छेज्जाह। तत्थ णं महं एगे उग्गविसे[4] चंडविसे घोरविसे[5] अइकाए[6] महाकाए[7] मसि-महिस[8]-मूसा[9]-कालए नयणविसरोसपुण्णे[10] अंजणपुंज-नियरप्पगासे रत्तच्छे जमल-जुयल-चंचल-चलंतजीहे धरणितल-वेणिभूए उक्कड-फुड-कुडिल-जडुल[11]-कक्खड[12]-वियड-फडाडोव[13]-करणदच्छे लोहागर-धम्ममाण[14]-धमधमेंतघोसे अणागलिय-चंडतिव्वरोसे 'समुहिय-तुरिय-चवलं'[15] धमंते[16] दिट्ठीविसे सप्पे परिवसइ। मा णं

---

१. सं० पा०—वावीसु य जाव विहरेज्जाह।
२. अनिल (क, ख, ग, घ); इह वा अनिल-शब्दस्य अकारलोपः प्राकृतत्वात् (वृ)।
३. सं० पा०—बहूसु जाव विहरेज्जाह।
४. भोगविसे (वृपा)।
५. घोरविसे महाविसे (क)।
६. अइकाय (क, ख, ग, घ)।
७. °काए जहा तेयनिसग्गे (वृ); वृत्तिगत-व्याख्यया इति प्रतीयते वृत्तिकारस्य सम्मुखे ये आदर्शा आसंस्तेषु 'जहा तेय-निसग्गे' इति संक्षिप्तः पाठः आसीत्, अतएव वृत्तिकृता लिखितम्—जहा तेयनिसग्गेति—शेषविशेषणानि यथा गोशालकचरिते तथेहाध्येतव्यानीत्यर्थः। तानि चैतानि—मसि-महिस॰।
८. महिसा (क, ख)।
९. मूस (घ)।
१०. पुण्णए (ख)।
११. जडिल (क्व०)।
१२. कक्कड (क, ख)।
१३. फलाडोव (ख); फणाडोव (घ)।
१४. लोहमितिगम्यते।
१५. समुहिं तुरियचवलं (क, ग); समुहिं तुरियं चवलं (ख)।
१६. धमधमंते (ग)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तुब्भं सरीरगस्स वावत्ती भविस्सइ—ते मागंदिय-दारए दोच्चंपि तच्चंपि एवं वदति, वदित्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णइ, समोहणित्ता ताए उक्किट्ठाए[1] देवगईए लवणसमुद्दं तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्टेउं पयत्ता यावि होत्था ॥

मागंदियपुत्ताणं वणसंडगमण-पदं

२१. तए णं ते मागंदिय-दारया तओ मुहुत्तंतरस्स पासायवडेंसए सइं वा रइं वा धिइं वा अलभमाणा अण्णमण्णं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! रयणदीव-देवया अम्हे एवं वयासी—एवं खलु अहं सक्कवयण-संदेसेणं सुट्ठिएणं लवणा-हिवइणा[2] निउत्ता जाव[3] मा णं तुब्भं सरीरगस्स वावत्ती भविस्सइ। तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया ! पुरत्थिमिल्लं वणसंडं गमित्तए—अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता जेणेव पुरत्थिमिल्ले वणसंडे तेणेव उवागच्छंति। तत्थ णं वावीसु य जाव[4] आलीघरएसु य जाव[5] सुहंसुहेणं अभिरममाणा-अभिरम-माणा विहरंति ॥

२२. तए णं ते मागंदिय-दारगा तत्थ वि सइं वा[6] •रइं वा धिइं वा° अलभमाणा जेणेव उत्तरिल्ले वणसंडे तेणेव उवागच्छंति। तत्थ णं वावीसु य जाव[7] आली-घरएसु य[8] सुहंसुहेणं अभिरममाणा-अभिरममाणा विहरंति ॥

२३. तए णं ते मागंदिय-दारगा तत्थ वि सइं वा[9] •रइं वा धिइं वा अलभमाणा° जेणेव पच्चत्थिमिल्ले वणसंडे तेणेव उवागच्छंति। तत्थ णं वावीसु य जाव[10] आलीघरएसु य[11] सुहंसुहेणं अभिरममाणा-अभिरममाणा विहरंति ॥

२४. तए णं ते मागंदिय-दारगा तत्थ वि सइं वा[12] रइं वा धिइं वा° अलभमाणा अण्ण-मण्णं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे रयणदीवदेवया एवं वयासी—एवं खलु अहं देवाणुप्पिया ! सक्कवयण-संदेसेणं सुट्ठिएणं लवणाहिवइणा[13] निउत्ता जाव[14] मा णं तुब्भं सरीरगस्स वावत्ती भविस्सइ। तं भवियव्वं एत्थ कारणेणं। तं सेयं खलु अम्हं दक्खिणिल्लं वणसंडं गमित्तए त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता जेणेव दक्खिणिल्ले वणसंडे तेणेव पहारेत्थ गमणाए। तओ णं गंधे निद्धाइ, से जहानामए—अहिमडे इ वा जाव[15] अणिट्ठतराए चेव[16] ॥

---

१. पू०—राय० सू० १०।
२. पू०—ना० १।६।२०।
३,४,५. ना० १।६।२०।
६. सं० पा०—सइं वा जाव अलभमाणा।
७. ना० १।६।२०।
८. पू०—ना० १।६।२०।
९. सं० पा०—सइं वा जाव जेणेव।
१०. ना० १।६।२०।
११. पू०—ना० १।६।२०।
१२. सं० पा०—सइं वा जाव अलभमाणा।
१३. पू०—ना० १।६।२०।
१४. ना० १।६।२०।
१५. ना० १।८।४२।
१६. पू०—ना० १।८।४२।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२५. तए णं ते मागंदिय-दारगा तेणं असुभेणं गंधेणं अभिभूया समाणा सएहिं-सएहिं उत्तरिज्जेहिं आसाइं 'पिहेंति, पिहेत्ता'[1] जेणेव दक्खिणिल्ले वणसंडे तेणेव उवागया। तत्थ णं महं एगं आघयणं[2] पासंति—अट्ठियरासि-सय-संकुलं भीम-दरिसणिज्जं। एगं च तत्थ सूलाइयं[3] पुरिसं कलुणाइं कट्ठाइं विस्सराइं कूवमाणं[4] पासंति, भीया[5] •तत्था तसिया उव्विग्गा° संजायभया जेणेव से सूलाइए पुरिसे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तं सूलाइयं पुरिसं एवं वयासी—एस णं देवाणुप्पिया! कस्साघयणे? तुमं च णं के कओ वा इहं हव्वमागए? केण[6] वा इमेयारूवं आवयं पाविए[7]?

२६. तए णं से सूलाइए पुरिसे ते मागंदिय-दारगे एवं वयासी—एस णं देवाणुप्पिया! रयणदीवदेवयाए आघयणे। अहं णं देवाणुप्पिया! जंबुद्दीवाओ दीवाओ भारहाओ वासाओ कागंदए[8] आसवाणियए विपुलं[9] पणियभंडमायाए पोयवहणेणं लवणसमुद्दं ओयाए। तए णं अहं पोयवहण-विवत्तीए निब्बुड्ड-भंडसारे एगं फलगखंडं आसाएमि। तए णं अहं ओवुज्झमाणे-ओवुज्झमाणे रयणदीवंतेणं संवूढे। तए णं सा रयणदीवदेवया ममं पासइ, पासित्ता ममं गेण्हइ, गेण्हित्ता मए सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी विहरइ। तए णं सा रयणदीवदेवया अण्णया कयाइ अहालहुसगंसि अवराहंसि परिकुविया समाणी ममं एयारूवं आवयं[10] पावेइ। तं न नज्जइ णं देवाणुप्पिया! तुब्भं पि इमेसिं सरीरगाणं का मण्णे आवई भविस्सइ?

२७. तए णं ते मागंदिय-दारगा तस्स सूलाइगस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म बलियतरं भीया[11] •तत्था तसिया उव्विग्गा° संजायभया सूलाइयं पुरिसं एवं वयासी—कहण्णं देवाणुप्पिया! अम्हे रयणदीवदेवयाए हत्थाओ साहत्थिं नित्थरेज्जामो[12]?

२८. तए णं से सूलाइए पुरिसे ते मागंदिय-दारगे एवं वयासी—एस णं देवाणुप्पिया!

---

१. पेहेंति २ (ख)।
२. आहयणं (क); आवतेणं (ख, घ)।
३. सूलाइतयं (क); सूलाययं (ख), वृत्तौ एकस्मिन्नादर्शे 'सूलाइगं' अपरस्मिंश्च 'सूलाइयगं' इति पाठ-संकेतो दृश्यते। शूलिकाभिन्नमिति च व्याख्यातमस्ति।
४. कुव्वमाणं (ख,ग,घ)। वृत्तौ—कूजन्तंव्यक्तं शब्दायमानं, इति दृश्यते, ततः कुव्वमाणं अशुद्धं प्रतिभाति।
५. सं० पा०—भीया जाव संजायभया।
६. केणइ (क); केणे (ख)।
७. पाविएसि (क)।
८. कागंदिए (घ); काकंदए (ख)।
९. विपुल (ख, घ); विउल (ग)।
१०. आवइं (क, ख); आवंति (ग, घ)।
११. सं० पा०—भीया जाव संजायभया।
१२. नित्थरिज्जामो (ख)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुरत्थिमिल्ले वणसंडे सेलगस्स जक्खस्स जक्खाययणे सेलए नामं आसरूवधारी जक्खे परिवसइ। तए णं से सेलए जक्खे चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु आगयसमए पत्तसमए महया-महया सद्देणं एवं वदइ—कं तारयामि ? कं पालयामि ? तं गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! पुरत्थिमिल्लं वणसंडं सेलगस्स जक्खस्स महरिहं पुप्फच्चणियं करेह, करेत्ता जन्नुपायवडिया पंजलिउडा[1] विणएणं पज्जुवासमाणा विहरह[2]। जाहे णं से सेलए जक्खे आगयसमए पत्तसमए एवं वएज्जा—कं तारयामि ? कं पालयामि ? ताहे तुब्भे 'एवं वदह'[3]—अम्हे तारयाहि अम्हे पालयाहि। सेलए भे जक्खे परं रयणदीवदेवयाए हत्थाओ साहत्थिं नित्थारेज्जा। अण्णहा भे न याणामि इमेसिं सरीरगाणं का मण्णे आवई भविस्सइ ?

सेलगजक्ख-पदं

२९. तए णं ते मागंदिय-दारगा तस्स सूलाइयस्स पुरिसस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्मा सिग्घं चंडं चवलं तुरियं वेइयं जेणेव पुरत्थिमिल्ले वणसंडे जेणेव पोक्खरिणी तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पोक्खरिणिं ओगाहेंति, ओगाहेत्ता जलमज्जणं करेंति, करेत्ता जाइं तत्थ उप्पलाइं जाव[4] ताइं गेण्हंति, गेण्हित्ता जेणेव सेलगस्स जक्खस्स जक्खाययणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता आलोए पणामं करेंति, करेत्ता महरिहं पुप्फच्चणियं करेंति, करेत्ता जन्नुपायवडिया[5] सुस्सूसमाणा नमंसमाणा पज्जुवासंति॥

३०. तए णं से सेलए जक्खे आगयसमए पत्तसमए एवं वयासी—कं तारयामि ? कं पालयामि ?

३१. तए णं ते मागंदिय-दारगा उट्ठाए उट्ठेंति, उट्ठेत्ता करयल[6]°परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु° एवं वयासी—अम्हे तारयाहि अम्हे पालयाहि॥

३२. तए णं से सेलए जक्खे ते मागंदिय-दारए एवं वयासी[7]—एवं खलु देवाणुप्पिया ! तुब्भं मए सद्धिं लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीईवयमाणाणं सा रयणदीवदेवया पावा चंडा रुद्दा खुद्दा साहसिया बहूहिं खरएहि य मउएहि य अणुलोमेहि य पडिलोमेहि य सिंगारेहि य कलुणेहि य उवसग्गेहिं उवसग्गं करेहिइ। तं जइ णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! रयणदीवदेवयाए एयमट्ठं आढाह वा परियाणह वा अवयक्खह वा तो भे अहं पट्ठाओ[8] विहुणामि[9]। 'अह णं'[10] तुब्भे

१. पंजलियडा (ख); अंजलिउडा (ग)।
२. चिट्ठह (क)।
३. वदह (क); वइज्जह (ख)।
४. ना० १।२।१४।
५. °पडिया य (ग)।
६. सं० पा०—करयल°।
७. वदइ (क)।
८. पट्ठतो (ख); पुट्ठाओ (घ)।
९. विधुणामि (क); विहूणामि (ख)।
१०. अहण्णं (ग)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रयणदीवदेवयाए एयमट्ठं नो आढाह नो परियाणह नो अवयक्खह तो भे रयणदीवदेवयाए हत्थाओ साहत्थिं नित्थारेमि ।।

३३. तए णं ते मागंदिय-दारगा सेलगं जक्खं एवं वयासी—जं णं देवाणुप्पिया वइस्संति[1] तस्स णं [आणा ?] उववाय-वयण-निद्देसे चिट्ठिस्सामो ।।

३४. तए णं से सेलए जक्खे उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमइ, अवक्कमित्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णइ, समोहणित्ता संखेज्जाइं जोयणाइं दंडं निस्सिरइ, दोच्चंपि वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णइ, समोहणित्ता एगं महं आसरूवं विउव्वइ, विउवित्ता मागंदिय-दारए एवं वयासी—हं भो मागंदिय-दारया ! आरुहह णं देवाणुप्पिया ! मम पट्ठंसि ।।

३५. तए णं ते मागंदिय-दारया हट्ठा सेलगस्स जक्खस्स पणामं करेंति, करेत्ता सेलगस्स पट्ठं दुरूढा ।।

३६. तए णं से सेलए ते मागंदिय-दारए पट्ठे दुरूढे जाणित्ता सत्तट्ठतलप्पमाणमेत्ताइं उड्ढं वेहासं उप्पयइ[2], उप्पइत्ता ताए उक्किट्ठाए तुरियाए चवलाए चंडाए दिव्वाए देवगईए लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं जेणेव जंबुद्दीवे दीवे जेणेव भारहे वासे जेणेव चंपा नयरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।।

रयणदीवदेवया-उवसग्ग-पदं

३७. तए णं सा रयणदीवदेवया लवणसमुद्दं तिसत्तखुत्तो अणुपरियट्टइ, जं तत्थ तणं वा जाव[3] एगंते एडेइ, जेणेव पासायवडेंसए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ते मागंदिय-दारए पासायवडेंसए अपासमाणी जेणेव पुरत्थिमिल्ले वणसंडे तेणेव उवागच्छइ जाव[4] सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करेइ, करेत्ता तेसिं मागंदिय-दारगाणं कत्थइ सुइं वा[5] °खुइं वा पउत्तिं वा° अलभमाणी जेणेव उत्तरिल्ले, एवं चेव पच्चत्थिमिल्ले वि जाव अपासमाणी ओहिं पउंजइ, ते मागंदिय-दारए सेलएणं सद्धिं लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीईवयमाणे पासइ, पासित्ता आसुरुत्ता असिखेडगं गेण्हइ, गेण्हित्ता सत्तट्ठ[6]°तलप्पमाणमेत्ताइं उड्ढं वेहासं° उप्पयइ, उप्पइत्ता ताए उक्किट्ठाए[7] देवगईए जेणेव मागंदिय-दारया तेणेव] उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एवं वयासी—हंभो मागंदिय-दारगा ! अपत्थियपत्थया ! किण्णं तुब्भे जाणह ममं विप्पजहाय सेलएणं जक्खेणं सद्धिं लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीईवयमाणा ? तं एवमवि गए । जइ णं तुब्भे ममं

---

१. वतंति (ख); वत्तंति (ग, घ) ।

२. पाउप्पयइ (क) ।

३. ना० १।९।१९ ।

४. ना० १।९।२१ ।

५. स० पा०—सुइ वा० ।

६. सं० पा०—सत्तट्ठ जाव उप्पयइ ।

७. पू०—ना० १।९।३६ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अवयक्खह तो भे अत्थि जीवियं। अह णं नावयक्खह तो भे इमेणं नीलुप्पल-गवल[1]•गुलिय-अयसिकुसुमप्पगासेणं खुरधारेणं असिणा रत्तगंडमंसुयाइं माउ-आहिं उवसोहियाइं तालफलाणि व सीसाइं एगंते° एडेमि ॥

३८. तए णं ते मागंदिय-दारगा रयणदीवदेवयाए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म अभीया अतत्था अणुव्विग्गा अक्खुभिया असंभंता रयणदीवदेवयाए एयमट्ठं नो आढंति[2] नो परियाणंति 'नो अवयक्खंति'[3] अणाढामाणा[4] अपरियाणमाणा अणवयक्खमाणा सेलएणं जक्खेणं सद्धिं लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीईवयंति ॥

३९. तए णं सा रयणदीवदेवया ते मागंदिय-दारए जाहे नो संचाएइ बहूहिं पडि-लोमेहिं उवसग्गेहिं[5] चालित्तए वा 'लोभित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा'[6] ताहे महुरेहिं सिंगारेहि य कलुणेहि य उवसग्गेहिं[7] 'उवसग्गेउं पयत्ता'[8] यावि होत्था—हंभो मागंदिय-दारगा! जइ णं तुब्भेहिं देवाणुप्पिया! मए सद्धिं हसियाणि य रमियाणि य ललियाणि य कीलियाणि य हिंडियाणि य मोहियाणि[9] य ताहे णं तुब्भे सव्वाइं अगणेमाणा ममं विप्पजहाय सेलएणं सद्धिं लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीईवयह ॥

४०. तए णं सा रयणदीवदेवया जिणरक्खियस्स मणं ओहिणा आभोएइ, आभोएत्ता एवं वयासी—निच्चंपि य णं अहं जिणपालियस्स अणिट्ठा अकंता अप्पिया अमणुण्णा अमणामा। निच्चं मम जिणपालिए अणिट्ठे अकंते अप्पिए अमणुण्णे अमणामे। निच्चंपि य णं अहं जिणरक्खियस्स इट्ठा कंता पिया मणुण्णा मणामा। निच्चंपि य णं ममं जिणरक्खिए इट्ठे कंते पिए मणुण्णे मणामे। जइ णं ममं जिणपालिए रोयमाणिं कंदमाणिं[10] सोयमाणिं तिप्पमाणिं[11] विलवमाणिं नाव-यक्खइ, किण्णं तुमंपि जिणरक्खिया! ममं रोयमाणिं[12] •कंदमाणिं सोयमाणिं

---

१. सं० पा०—गवल जाव एडेमि।
२. आढायंति (क)।
३. नावयक्खंति (क)।
४. अणाढायमाणा (क); अणाढेमाणा (ख); अणाढामीणा (ग)।
५. उवसग्गेहि य (ख, ग, घ)।
६. लोभित्तए वा (क); खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा लोभित्तए वा (ख)।
७. °सग्गेहि य (ख)।
८. उवसग्गेहि य पत्ता (क); उवसग्गे उपयत्ता (ख); उवसग्गेहि य उपयत्ता (ग)।
९. एतच्च वाक्यं काक्वा व्याख्येयम्, ततः उपालंभः प्रतीयते (वृ)।
१०. × (क)।
११. × (ख, घ)।
१२. सं० पा०—रोयमाणिं जाव नावयक्खसि।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तिप्पमाणिं विलवमाणिं° नावयक्खसि' ?

१. अतोग्रे आदर्शेषु 'तए णं इति पदमस्ति। ततश्चाष्टौ श्लोकाः उल्लिखिताः सन्ति। वृत्त्यनुसारेण ते श्लोका वाचनान्तरवर्तिनः सन्ति, यथा—तए णं सा रयणदीवेत्यादि सूत्रं वाचनान्तरे रूपकविशेषेण द्वयं भ्रान्ति करोति' (वृ)। तए णं सा रयणदीवेत्यस्मिन् सूत्रे 'जिणरक्खियस्स मणं ओहिणा आभोएइ', इति वाक्यमस्ति, प्रथम श्लोकेपि 'ओहिणा जिणरक्खियस्स नाऊण' इति पदमस्ति। अष्टमे श्लोके 'सप्पणयसरलमहुराइं' इति पदमस्ति, 'ततेणं से जिणरक्खिए' इत्यस्मिन् सूत्रे 'ते हि य सप्पणयसरलमहुरभणिएहिं' इति वाक्यमस्ति। एतादृश पौनरुक्त्यं द्वयोर्वाचनयोः सम्मिश्रणेन जातमस्ति। अतएव एते श्लोकाः वाचनान्तरत्वेनादृताः। तए णं—

'सा पवररयणदीवस्स, देवया ओहिणा जिणरक्खियस्स नाऊण।'[1]
वधनिमित्तं उवरिं, मागंदिय-दारगाण दोण्हंपि ॥१॥

दोसकलिया सललियं[2], नाणाविह-चुण्णवास-मीसं[3] दिव्वं।
घाण-मण-निव्वुइकरं, सव्वोउय-सुरभिकुसुम-वुट्ठिं पमुंचमाणी ॥२॥

नाणामणि-कणग-रयण-घंटियखिखिणि नेउर-मेहल-भूसणरवेणं।
दिसाओ विदिसाओ पूरयंती वयणमिणं बेइ सा सकलुसा ॥३॥

होल! वसुल! गोल! नाह! दइत! पिय! रमण! कंत! सामिय! निग्घिण! निरत्थक्क![4]।
थिण्ण! निक्किव[5]! अकयण्णुय! सिढिलभाव!, निल्लज्ज! लुक्ख!
अकलुण! जिणरक्खिय! मज्झं! हिययरक्खगा[6] ॥४॥

न हु जुज्जसि एक्कयं[7] अणाहं, अबंधवं तुज्झ चलण-ओवायकारियं[8] उज्झिउमधन्नं।
गुणसंकर! हं तुमे विहूणा, न समत्था जीविउं खणंपि ॥५॥

इमस्स उ अणेगझस-मगर-विविधसावय-सयाउलघरस्स रयणागरस्स मज्झे[9]।
अप्पाणं वहेमि तुज्झ पुरओ, एहि नियत्ताहि जइ सि कुविओ खमाहि एगावराहं[10] मे ॥६॥

तुज्झ य 'विगयघण-विमलससिमंडलागार'[11]-सस्सिरीयं,
सारयनवकमल-कुमुद-कुवलय[12]-दलनिकरसरिस निभनयणं।

वयणं पिवासागयाए सद्धा मे पेच्छिउं जे,
अवलोएहि ता इओ ममं नाह! जा ते पेच्छामि वयणकमलं ॥७॥

एव सप्पणय-सरल-महुराइं पुणो-पुणो कलुणाइं।
वयणाइं जंपमाणी, सा पावा मग्गओ समण्णेइ पावहियया ॥८॥

एते श्लोकाः सन्ति अथवा गद्यभागोसौ इति सुनिर्णीतं नासीत्। वृत्तिकृता एते श्लोकाः इति मतं प्रदर्शितम्—पद्यबन्धं विना तुकारादिनिपातानां पादपूर्णार्थानां निर्देशो न घटते। अपरिमितानि च छन्दःशास्त्राणि (वृ)।

१. सा रयणदीवदेवता, ओहिणा जिणरक्खियस्स मणं नाऊण(क); ज्ञात्वाभावमिति शेषः (वृ)।
२. सलिलियं (क); सलिलयं (घ)।
३. मीसियं (क्व०)।
४. नित्थिक्क (क)।
५. निक्कव (ख)।
६. ०रक्खग (ख)।
७. एक्किय (क, ग, घ)।
८. उववाय० (घ)।
९. मज्झेणं [ग]।
१०. एक्का० (क, ख, घ)।
११. विगयघण-विउल० (ग), विगयघणविमलससिमंडल (वृपा)।
१२. कुवलय-विमउल (क, ख); कुवलय-विमल (ग, घ); विमउल (वृपा)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जिणरक्खियविवत्ति-पदं

४१. तए णं से जिणरक्खिए चलमणे तेणेव भूसणरवेणं कण्णसुहमणहरेणं तेहि य सप्पणय-सरल-महुर-भणिएहिं संजाय-विउण-राए रयणदीवस्स देवयाए तीसे सुंदरथण-जहण[1]-वयण-कर-चरण-नयण-लावण्ण[2]-रूव-जोवणसिरिं च दिव्वं सरभस-उवगूहियाइं बिब्बोय-विलसियाणि[3] य विहसिय-सकडक्खदिट्ठि[4]-निस्स-सिय-मलिय[5]-उवललिय[6]-थिय-गमण-पणयखिज्जिय-पसाइयाणि य सरमाणे रागमोहियमती अवसे कम्मवसगए[7] अवयक्खइ मग्गतो सविलियं[8] ।।

४२. तए णं जिणरक्खियं समुप्पण्णकलुणभावं मच्चु-गलत्थल्ल[9]-णोल्लियमइं अवय-क्खंतं तहेव[10] जक्खे उ सेलए जाणिऊण सणियं-सणियं[11] उव्विहइ नियगपट्ठाहि विगयसद्धे[12] ।।

४३. तए णं सा रयणदीवदेवया निस्संसा कलुणं जिणरक्खियं सकलुसा[13] सेलगपट्ठाहि[14] ओवयंतं—दास ! मओसि त्ति जंपमाणी अपत्तं सागरसलिलं गेण्हिय बाहाहिं आरसंतं उड्ढं उव्विहइ अंबरतले ओवयमाणं च मंडलग्गेण पडिच्छित्ता नीलुप्पल-गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासेण[15] असिवरेण खंडाखंडिं करेइ, करेत्ता तत्थेव[16] विलवमाणं तस्स य सरस-वहियस्स घेत्तूणं अंगमंगाइं सरुहिराइं उक्खित्तबलिं चउद्दिसिं[17] करेइ, सा पंजली पहिट्ठा[18] ।।

४४. एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा आयरिय-उवज्झायाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए समाणे पुणरवि माणुस्सए कामभोगे आसयइ पत्थयइ पीहेइ अभिलसइ, से णं इहभवे चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावयाणं बहूणं सावियाण य हीलणिज्जे जाव[19] चाउरंतं संसारकंतारं भुज्जो-भुज्जो अणुपरियट्टिस्सइ—जहा व से जिणरक्खिए ।

---

१. जघण (ख) ।
२. लायण्ण (क, ख) ।
३. बिलवियाणि (क, ख) ।
४. कडक्ख° (क, ख) ।
५. मणिय (वृपा) ।
६. ललिय (वृपा) ।
७. कम्मवसवेगनडिए (वृपा) ।
८. सविलवियं (ग) ।
९. गलत्थ (क); गल्लत्थल्ल (ख) ।
१०,११. 'तहेव, सणियं' इत्येतद् पदद्वयं वाचनान्तरे नोपलभ्यते (वृपा) ।
१२. विगयसत्थे (वृ); विगयसद्धे (वृपा) ।
१३. अकलुणा (क) ।
१४. °पुट्ठाहिं (घ) ।
१५. असीयप्पगासेण (ग) ।
१६. तत्थ (ग, घ) ।
१७. चाउद्दिसिं (क) ।
१८. पहट्ठा (क, ख) ।
१९. ना० १।३।२४ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गाहा—

छलिओ अवयक्खंतो, निरवयक्खो[1] गओ अविग्घेणं ।
तम्हा पवयणसारे[2], निरावयक्खेण भवियव्वं ॥१॥
भोगे अवयक्खंता, पडंति संसारसागरे घोरे ।
भोगेहिं निरवयक्खा, तरंति संसारकंतारं ॥२॥

जिणपालियस्स चंपागमण-पदं

४५. तए णं सा रयणदीवदेवया जेणेव जिणपालिए तेणेव उवागच्छइ, बहूहिं अणुलोमेहि य पडिलोमेहि य खरएहि य मउएहि य सिंगारेहि य कलुणेहि य उवसग्गेहि जाहे नो संचाएइ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा ताहे संता तंता परितंता निव्विण्णा समाणा[3] जामेव दिसिं[4] पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया ॥

४६. तए णं से सेलए जक्खे जिणपालिएण सद्धिं लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीईवयइ, वीईवइत्ता जेणेव चंपा नयरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चंपाए नयरीए अग्गुज्जाणंसि जिणपालियं पट्ठाओ ओयारेइ, ओयारेत्ता एवं वयासी—एस णं देवाणुप्पिया ! चंपा नयरी दीसइ त्ति कट्टु जिणपालियं पुच्छइ, जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ॥

४७. तए णं से जिणपालिए चंपं नयरिं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता जेणेव सए गिहे जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अम्मापिऊणं रोयमाणे[5] •कंदमाणे सोयमाणे तिप्पमाणे° विलवमाणे जिणरक्खिय-वावत्तिं[6] निवेदेइ ॥

४८. तए णं जिणपालिए अम्मापियरो [य ?] मित्त-नाइ[7]-•नियग-सयण-संबंधि° परियणेण सद्धिं रोयमाणा कंदमाणा सोयमाणा तिप्पमाणा विलवमाणा[8] बहूइं लोइयाइं मयकिच्चाइं करेंति, करेत्ता कालेणं विगयसोया जाया ॥

४९. तए णं जिणपालियं अण्णया कयाइं सुहासणवरगयं अम्मापियरो एवं वयासी—कहण्णं पुत्ता ! जिणरक्खिए कालगए ?

५०. तए णं से जिणपालिए अम्मापिऊणं लवणसमुद्दोत्तारं च कालियवाय-संमुच्छणं च पोयवहण-विवत्तिं च फलहखंड[9]-आसायणं च रयणदीवुत्तारं च रयणदीव-

---

१. निरवेक्खो (ग) ।
२. °सारेण (ग); चारित्रे लब्धे सतीति गम्यते (वृ) ।
३. समाणी (क) ।
४. दिसं (क) ।
५. सं० पा०—रोयमाणे जाव विलवमाणे ।
६. वावित्ति (ख, ग) ।
७. सं० पा०—नाइ जाव परियणेण ।
८. रोयमाणाइं (क, ख, ग, घ) ।
९. फलगखंड (क) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देवया—गिण्हणं च भोगविभूइं च रयणदीवदेवया-आघयणं[1] च सूलाइयपुरिस-दरिसणं च सेलगजक्खआरुहणं च रयणदीवदेवया-उवसग्गं च जिणरक्खिय-वावत्तिं[2] च लवणसमुद्दउत्तरणं च 'चंपागमणं च सेलगजक्खआपुच्छणं च'[3] जहाभूयमवितहमसंदिद्धं परिकहेइ ।।

५१. तए णं से जिणपालिए 'अप्पसोगे [जाए ?] जाव'[4] विपुलाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ ।।

५२. तेणं कालेणं तेणं समएणं 'समणे भगवं महावीरे'[5] समोसढे। जिणपालिए[6] धम्मं सोच्चा पव्वइए। एगारसंगवी। मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झोसेत्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेएत्ता कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे देवत्ताए उववण्णे। दो सागरोवमाइं ठिई। महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ जाव[7] सव्व-दुक्खाणमंतं काहिइ ।।

५३. एवामेव समणाउसो[8] ! •जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा आयरिय-उवज्झा-याणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए समाणे° माणुस्सए कामभोगे नो पुणरवि आसयइ पत्थयइ पीहेइ, सेणं इह भवे चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावयाणं बहूणं सावियाण य अच्चणिज्जे जाव[9] चाउरंतं संसारकंतारं वीईवइस्सइ—जहा व से जिणपालिए ।।

निक्खेव-पदं

५४. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं आइगरेणं तित्थगरेणं जाव[10]

१. अप्पाहणं (क, ख, ग, घ)। अत्र पूर्वक्रमानुसारेण 'आघयणं' इति पाठो युज्यते, द्रष्टव्यम्—२५ सूत्रम्। सम्भवतो लिपिदोषेण 'आघयणं' इत्यस्य स्थाने 'अप्पाहणं' इति जातम्। अत्र अस्यार्थोपि नावगम्यते।

२. विवत्तिं (क, ख, ग, घ)। ४७ सूत्रानुसारेण अत्र परिवर्तनं कृतम्।

३. सेलगजक्खआपुच्छणं च चंपागमणं च (क); सेलगजक्खआपुच्छणं च (ग)।

४. जाव अप्पसोगे जाव (क, ख, ग, घ); अस्यैवाध्ययनस्य ४८ सूत्रे 'विगयसोया जाया' इत्युल्लेखोस्ति। अत्र पुनरपि 'अप्पसोगे' इत्युल्लेखो विद्यते। द्वयोरपि 'जाव' पदयोः पूतिस्थलं एतत् तुल्यप्रकरणेषु नोपलब्धम्। अत्र प्रथमं 'जाव' पदं अनावश्यकं प्रतिभाति। 'अप्पसोगे जाए जाव' यद्येवं पाठः परिकल्पेत तदा 'जाव' पदं न पूर्तिसूचकं भवति।

५. समणे भगवया महावीरेणं (क); समणे (ख, ग,); समणे भगवं महावीरे जाव जेणेव चंपा नयरी पुण्णभद्दे चेइए तेणेव समोसढे परिसा निग्गया कूणिओ वि राया निग्गओ (घ)।

६. × (क, ख, ग)।

७. ना० १।१।२१२।

८. सं० पा०—समणाउसो जाव माणुस्सए।

९. ना० १।२।७३।

१०. ना० १।१।७।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सिद्धिगइनामधेज्जं ठाणं संपत्तेणं नवमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।
—त्ति बेमि ॥

वृत्तिकृता समुद्धृता निगमनगाथा —

जह रयणदीवदेवी, तह एत्थं अविरई महापावा ।
जह लाहत्थी वणिया, तह सुहकामा इहं जीवा ॥१॥
जह तेहिं भीएहिं, दिट्ठो आघायमंडले पुरिसो ।
संसारदुक्खभीया, पासंति तहेव धम्मकहं ॥२॥
जह तेण तेसि कहिया, देवी दुक्खाण कारणं घोरं ।
तत्तो च्चिय नित्थारो, सेलगजक्खाउ नन्नत्तो ॥३॥
तह धम्मकही भव्वाण, साहए दिट्ठअविरइसहावा ।
सयलदुहहेउभूया, विसया विरयंति जीवा णं ॥४॥
सत्ताण दुहत्ताणं, सरणं चरणं जिणिंदपण्णत्तं ।
आणंदरूव-निव्वाण-साहणं तह य दंसेइ ॥५॥
जह तेसिं तरियव्वो, रुद्दसमुद्दो तहेह संसारो ।
जह तेसि सगिहगमणं, निव्वाणगमो तहा एत्थ ॥६॥
जह सेलगपट्ठाओ, भट्ठो देवीए मोहियमई उ ।
सावय-सहस्सपउरम्मि, सायरे पाविओ निहणं ॥७॥
तह अविरईइ नडिओ, चरणचुओ दुक्खसावयाइण्णो ।
निवडइ 'अगाह-संसार-सागरं अणंतमविकालं'[1] ॥८॥
जह देवीए अक्खोहो, पत्तो सट्ठाण-जीवियसुहाइं ।
तह चरणठिओ साहू, अक्खोहो जाइ निव्वाणं ॥९॥

---

१. अपारसंसारसायरे दारुणसरूवे (ख) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दसमं अज्झयणं

चंदिमा

उक्खेव-पदं

१. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं नवमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, दसमस्स णं भंते ! नायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?

परिहायमाण-पदं

२. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे[1] गोयमो एवं वयासी—कहण्णं[2] भंते ! जीवा वड्ढंति वा हायंति वा ?

गोयमा ! से जहानामए बहुलपक्खस्स पाडिवय[3]-चंदे पुण्णिमा-चंदं पणिहाय हीणे वण्णेणं हीणे सोम्माए[4] हीणे निद्धयाए हीणे कंतीए एवं—दित्तीए जुत्तीए छायाए पभाए ओयाए लेसाए[5] हीणे मंडलेणं ।

तयाणंतरं च णं बीयाचंदे पाडिवय[6]-चंदं पणिहाय हीणतराए वण्णेणं जाव हीणतराए मंडलेणं ।

तयाणंतरं च णं तइया[7]-चंदे बीया[8]-चंदं पणिहाय हीणतराए वण्णेणं जाव हीणतराए मंडलेणं ।

एवं खलु एएणं कमेणं परिहायमाणे-परिहायमाणे जाव अमावसा-चंदे चाउद्दसि-चंदं पणिहाय नट्ठे वण्णेणं जाव नट्ठे मंडलेणं ।।

---

१. नयरे सामी समोसढे परिसा निग्गया (घ) ।
२. कहणं (ख, ग) ।
३. पडिवय (क); पडिवया (ख, घ); पाडिवया (ग) ।
४. सम्मेताए (क) ।
५. लेस्साए (क, ख) ।
६. पडिवयं (घ) ।
७. ततिया (ख, ग, घ) ।
८. बितिया (क, ख, ग, घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३. एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा[1] •आयरिय-उवज्झायाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइए समाणे हीणे खंतीए एवं—मुत्तीए गुत्तीए अज्जवेणं मद्दवेणं लाघवेणं सच्चेणं तवेणं चियाए अकिंचणयाए हीणे बंभचेरवासेणं ।
तयाणंतरं च णं हीणतराए खंतीए जाव हीणतराए बंभचेरवासेणं ।
एवं खलु एएणं कमेणं परिहायमाणे-परिहायमाणे नट्ठे खंतीए जाव नट्ठे बंभचेर-वासेणं ।।

परिवड्ढमाण-पदं

४. से जहा वा सुक्कपक्खस्स पाडिवय[2]-चंदे अमावसा-चंदं पणिहाय अहिए वण्णेणं[3] •अहिए सोम्माए अहिए निद्धयाए अहिए कंतीए एवं—दित्तीए जुत्तीए छायाए पभाए ओयाए लेसाए° अहिए मंडलेणं ।
तयाणंतरं च णं बीया-चंदे पाडिवय-चंदं पणिहाय अहिययराए वण्णेणं जाव अहिययराए मंडलेणं ।
एवं खलु एएणं कमेणं परिवड्ढेमाणे-परिवड्ढेमाणे जाव पुण्णिमा-चंदे चाउद्दसि-चंदं पणिहाय पडिपुण्णे वण्णेणं जाव पडिपुण्णे मंडलेणं ।।

५. एवामेव समणाउसो[4] ! •जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा आयरिय-उवज्झायाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइए समाणे अहिए खंतीए[5] •एवं—मुत्तीए गुत्तीए अज्जवेणं मद्दवेणं लाघवेणं सच्चेणं तवेणं चियाए अकिंचणयाए अहिए° बंभचेरवासेणं ।
तयाणंतरं च णं अहिययराए खंतीए जाव अहिययराए बंभचेरवासेणं ।
एवं खलु एएणं कमेणं परिवड्ढेमाणे-परिवड्ढेमाणे पडिपुण्णे खंतीए जाव पडि-पुण्णे बंभचेरवासेणं ।
एवं खलु जीवा वड्ढंति वा हायंति वा ।।

निक्खेव-पदं

६. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं दसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।

—त्ति बेमि ।।

---

१. सं० पा०—निग्गंथी वा जाव पव्वइए ।
२. पाडिवया (क, ख); पडिवया (ग, घ) ।
३. सं० पा०—वण्णेणं जाव अहिए ।
४. सं० पा०—समणाउसो ! जाव पव्वइए ।
५. सं० पा०—खंतीए जाव बंभचेरवासेणं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वृत्तिकृता समुद्धृता निगमनगाथा—

जह चंदो तह साहू, राहुवरोहो जहा तह पमाओ।
वण्णाइगुणगणो जह, तहा खमाइसमणधम्मो ॥१॥

पुण्णोवि पइदिणं जह, हायंतो सव्वहा ससी नस्से।
तह पुण्णचरित्तो वि हु, कुसीलसंसग्गिमाईहिं ॥२॥

जणिय-पमाओ साहू, हायंतो पइदिणं खमाईहिं।
जायइ नट्ठचरित्तो, ततो दुक्खाइ पावेइ ॥३॥

हीणगुणो वि हु होउं, सुहगुरुजोगाइ-जणियसंवेगो।
पुण्णसरूवो जायइ, विवड्ढमाणो ससहरोव्व ॥४॥

———

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एक्कारसमं अज्झयणं

दावद्दवे

उक्खेव-पदं

१. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं दसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, एक्कारसमस्स णं भंते ! नायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?

देसविराहय-पदं

२. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नगरे गोयमो एवं वयासी—कहण्णं[1] भंते ! जीवा आराहगा वा विराहगा वा भवंति ?
गोयमा ! से जहानामए एगंसि समुद्दकूलंसि दावद्दवा नामं रुक्खा पण्णत्ता—किण्हा जाव[2] निउरंबभूया पत्तिया पुप्फिया फलिया हरियग-रेरिज्जमाणा[3] सिरीए अईव उवसोभेमाणा-उवसोभेमाणा चिट्ठंति ।
जया णं दीविच्चगा[4] ईसिं[5] पुरेवाया पच्छावाया मंदावाया महावाया वायंति, तया णं बहवे दावद्दवा रुक्खा पत्तिया[6] •पुप्फिया फलिया हरियग-रेरिज्जमाणा सिरीए अईव उवसोभेमाणा-उवसोभेमाणा° चिट्ठंति । अप्पेगइया दावद्दवा रुक्खा जुण्णा झोडा[7] परिसडिय-पंडुपत्त-पुप्फ-फला सुक्करुक्खओ विव मिलायमाणा-मिलायमाणा चिट्ठंति ।।

३. एवामेव समणाउसो[8] ! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा[9] •आयरिय-

---

१. कह णं (ख, ग, घ) ।
२. ना० १।७।१३ ।
३. रेरिज्जमाणा-रेरिज्जमाणा (क, ग) ।
४. दीविव्वगा (ख, ग, घ) ।
५. इसिं (क, घ) ।
६. सं० पा०—पत्तिया जाव चिट्ठंति ।
७. ज्झोडा (क, ख); झोट्टा (ग) ।
८. समणातोसो (ग) ।
९. सं० पा०—निग्गंथी जाव पव्वइए ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उवज्झायाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं ° पव्वइए समाणे बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावयाणं बहूणं सावियाण य सम्मं सहइ[1] •खमइ तितिक्खइ ° अहियासेइ, बहूणं अण्णउत्थियाणं बहूणं गिहत्थाणं नो सम्मं सहइ जाव नो अहियासेइ—एस णं मए पुरिसे देसविराहए पण्णत्ते ।।

देसाराहय-पदं

४. समणाउसो ! जया णं सामुद्दगा[2] ईसिं पुरेवाया पच्छावाया मंदावाया महावाया वायंति, तया णं बहवे दावद्दवा रुक्खा जुण्णा झोडा[3] •परिसडिय-पंडुपत्त-पुप्फ-फला सुक्करुक्खओ विव ° मिलायमाणा-मिलायमाणा चिट्ठंति। अप्पेगइया दावद्दवा रुक्खा पत्तिया पुप्फिया फलिया[4] •हरियग-रेरिज्जमाणा सिरीए अईव ° उवसोभेमाणा-उवसोभेमाणा चिट्ठंति ।।

५. एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा[5] •आयरिय-उवज्झायाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं ° पव्वइए समाणे बहूणं अण्णउत्थियाणं बहूणं गिहत्थाणं सम्मं सहइ खमइ तितिक्खइ अहियासेइ, बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावयाणं बहूणं सावियाण य नो सम्मं सहइ जाव नो अहियासेइ—एस णं मए पुरिसे देसाराहए पण्णत्ते ।।

सव्वविराहय-पदं

६. समणाउसो ! जया णं नो दीविच्चगा नो सामुद्दगा ईसिं पुरेवाया पच्छावाया मंदावाया महावाया वायंति, तया णं सव्वे दावद्दवा रुक्खा जुण्णा झोडा परिसडिय-पंडुपत्त-पुप्फ-फला सुक्करुक्खओ विव मिलायमाणा-मिलायमाणा चिट्ठंति। अप्पेगइया दावद्दवा रुक्खा पत्तिया पुप्फिया फलिया हरियग-रेरिज्ज-माणा सिरीए अईव उवसोभेमाणा-उवसोभेमाणा चिट्ठंति ।।

७. एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा आयरिय-उवज्झायाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए समाणे बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावयाणं बहूणं सावियाणं बहूणं अण्णउत्थियाणं बहूणं गिहत्थाणं नो सम्मं सहइ जाव[6] नो अहियासेइ—एस णं मए पुरिसे सव्व-विराहए पण्णत्ते ।।

सव्वाराहय-पदं

८. समणाउसो ! जया णं दीविच्चगा वि सामुद्दगा वि ईसिं पुरेवाया पच्छावाया

---

१. सं० पा०—सहइ जाव अहियासेइ।
२. समुद्दगा (ख, घ)।
३. सं० पा०—झोडा जाव मिलायमाणा।
४. सं० पा०—फलिया जाव उवसोभेमाणा।
५. सं० पा०—निग्गंथी वा जाव पव्वइए।
६. ना० १।११।३।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मंदावाया महावाया वायंति, तया णं सव्वे दावद्दवा रुक्खा पत्तिया पुप्फिया फलिया हरियग-रेरिज्जमाणा सिरीए अईव उवसोभेमाणा-उवसोभेमाणा चिट्ठंति ॥

९. एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा आयरिय-उवज्झायाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए समाणे बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावयाणं बहूणं सावियाणं बहूणं अण्णउत्थियाणं बहूणं गिहत्थाणं सम्मं सहइ खमइ तितिक्खइ अहियासेइ—एस णं मए पुरिसे सव्व-आराहए पण्णत्ते । एवं खलु गोयमा ! जीवा आराहगा वा विराहगा वा भवंति ॥

निक्खेव-पदं

१०. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं एक्कारसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।

—त्ति बेमि ॥

वृत्तिकृता समुद्धृता निगमनगाथा—

जह दावद्दव-तरुणो, एवं[1] साहू जहेह दीविच्चा ।
वाया तह समणा इय, सपक्ख-वयणाइं दुसहाइं ॥१॥
जह सामुद्दय-वाया, तहण्णतित्थाइ-कडुयवयणाइं ।
कुसुमाइं संपया जह, सिवमग्गाराहणा तह उ ॥२॥
जह कुसुमाइ-विणासो, सिवमग्ग-विराहणा तहा णेया ।
जह दीववायु-जोगे, बहु इड्ढी ईसि य अणिड्ढी ॥३॥
तह साहम्मिय-वयणाण, सहणमाराहणा भवे बहुया ।
इयराणमसहणे, पुण सिवमग्ग-विराहणा थोवा ॥४॥
जह जलहिवाय-जोगे, थेविड्ढी बहुयरा अणिड्ढी य ।
तह परपक्खक्खमणे, आराहणमीसि बहु इयरं ॥५॥
जह उभयवाय-विरहे, सव्वा तरुसंपया विणट्ठत्ति ।
अणिमित्तोभय-मच्छर-रूवेह विराहणा तह य ॥६॥
जह उभयवाय-जोगे, सव्वसमिद्धी वणस्स संजाया ।
तह उभयवयण-सहणे सिवमग्गाराहणा पुण्णा ॥७॥
ता पुण्णसमणधम्माराहणचित्तो सया महापुण्णो[2] ।
सव्वेण वि कीरंतं, सहेज्ज सव्वं पि पडिकूलं ॥८॥

---

१. तरुणमेवं [क्व] । २. महासत्तो [क्व] ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बारसमं अज्झयणं

उदगणाए

उक्खेव-पदं

१. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं एक्कारसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, बारसमस्स णं भंते ! नायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?

२. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नाम नयरी। पुण्णभद्दे चेइए। जियसत्तू राया। धारिणी देवी। अदीणसत्तू कुमारे जुवराया वि होत्था। सुबुद्धी अमच्चे जाव[1] रज्जधुराचिंतए, समणोवासए ।।

फरिहोदग-पदं

३. तीसे णं चंपाए नयरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमेणं एगे फरिहोदए यावि होत्था—मेय-वसा-रुहिर-मंस-पूय-पडल-पोच्चडे मयग-कलेवर-संछण्णे अमणुण्णे वण्णेणं[2] °अमणुण्णे गंधेणं अमणुण्णे रसेणं अमणुण्णे° फासेणं, से जहानामए—अहिमडे इ वा गोमडे इ वा जाव[3] मय-कुहिय-विणट्ठ-किमिण-वावण्ण-दुरभिगंधे किमि-जालाउले संसत्ते असुइ-विगय-बीभच्छ-दरिसणिज्जे। भवेयारूवे सिया ?
नो इणट्ठे समट्ठे। एत्तो अणिट्ठतराए चेव[4] °अकंततराए चेव अप्पियतराए चेव अमणुण्णतराए चेव अमणामतराए चेव° गंधेणं पण्णत्ते ।।

जियसत्तुणा पाणभोयणपसंसा-पदं

४. तए णं से जियसत्तू राया अण्णया कयाइ ण्हाए कयबलिकम्मे जाव[5]

---

१. ना० १।८।४२।

२. सं० पा०—वण्णेणं जाव फासेणं।

३. ना० १।८।४२।

४. सं० पा०—अणिट्ठतराए चेव जाव गंधेणं।

५. ना० १।१।२७।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे बहूहिं ईसर[1] जाव[2] सत्थवाहपभिईहिं सद्धिं भोयणमंडवंसि भोयणवेलाए सुहासणवरगए विउलं असणं[3] •पाणं खाइमं साइमं आसाएमाणे विसाएमाणे परिभाएमाणे परिभुंजेमाणे एवं च णं° विहरइ। जिमियभुत्तुत्तरागए[4] वि य णं समाणे आयंते चोक्खे परम° सुइभूए तंसि विपुलंसि असण-पाण-खाइम-साइमंसि जायविम्हए ते बहवे ईसर जाव[5] सत्थवाहपभिइओ एवं वयासी—अहो णं देवाणुप्पिया! इमे मणुण्णे असण-पाण-खाइम-साइमे वण्णेणं उववेए[6] •गंधेणं उववेए रसेणं उववेए° फासेणं उववेए अस्सायणिज्जे विसायणिज्जे 'पीणणिज्जे दीवणिज्जे'[7] दप्पणिज्जे मयणिज्जे बिंहणिज्जे सव्विंदियगाय-पल्हायणिज्जे ॥

५. तए णं ते बहवे ईसर जाव[8] सत्थवाहपभिइओ जियसत्तुं रायं एवं वयासी—तहेव णं सामी! जण्णं तुब्भे[9] वयह—अहो णं इमे मणुण्णे असण-पाण-खाइम-साइमे वण्णेणं उववेए जाव[10] सव्विंदियगाय-पल्हायणिज्जे ॥

सुबुद्धिस्स उवेहा-पदं

६. तए णं जियसत्तू राया सुबुद्धिं अमच्चं एवं वयासी—अहो णं देवाणुप्पिया सुबुद्धी! इमे मणुण्णे असण-पाण-खाइम-साइमे जाव[11] सव्विंदियगाय-पल्हायणिज्जे ॥

७. तए णं सुबुद्धी जियसत्तुस्स रण्णो एयमट्ठं नो आढाइ[12] •नो परियाणाइ° तुसिणीए संचिट्ठइ॥

८. तए णं जियसत्तू राया सुबुद्धिं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी—अहो णं देवाणुप्पिया सुबुद्धी! इमे मणुण्णे[13] •असण-पाण-खाइम-साइमे जाव[14] सव्विंदियगाय°-पल्हायणिज्जे ॥

९. तए णं से सुबुद्धी अमच्चे जियसत्तुणा रण्णा दोच्चंपि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे

---

१. राईसर (ग)।
२. ना० १।७।६।
३. सं० पा०—असणं जाव विहरइ।
४. सं० पा०—°भुत्तुत्तरागए जाव सुइभूए।
५. ना० १।७।६।
६. सं० पा०—उववेए जाव फासेणं।
७. दीवणिज्जे पीणणिज्जे (क, घ); दीवणिज्जे (ख); वीयणिज्जे दीवणिज्जे परियणिज्जे (ग)।
८. ना० १।७।६।
९. तुम्हे (ख); तुम्हं (ग, घ)।
१०. ना० १।१२।४।
११. ना० १।१२।४।
१२. सं० पा०—आढाइ जाव तुसिणीए।
१३. सं० पा०—मणुण्णे तं चेव जाव पल्हायणिज्जे।
१४. ना० १।१२।४।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जियसत्तुं रायं एवं वयासी—नो खलु सामी ! अम्हं एयंसि मणुण्णंसि असण-पाण-खाइम-साइमंसि केइ विम्हए ।

एवं खलु सामी ! सुब्भिसद्दा वि पोग्गला दुब्भिसद्दत्ताए परिणमंति, दुब्भिसद्दा वि पोग्गला सुब्भिसद्दत्ताए परिणमंति । सुरूवा वि पोग्गला दुरूवत्ताए परिणमंति, दुरूवा वि पोग्गला सुरूवत्ताए परिणमंति । सुब्भिगंधा वि पोग्गला दुब्भिगंधत्ताए परिणमंति, दुब्भिगंधा वि पोग्गला सुब्भिगंधत्ताए परिणमंति । सुरसा वि पोग्गला दुरसत्ताए परिणमंति, दुरसा वि पोग्गला सुरसत्ताए परिणमंति । सुहफासा वि पोग्गला दुहफासत्ताए परिणमंति, दुहफासा वि पोग्गला सुहफासत्ताए परिणमंति, पओग-वीससा-परिणया वि य णं सामी ! पोग्गला पण्णत्ता ।।

१०. तए णं जियसत्तू राया सुबुद्धिस्स अमच्चस्स एवमाइक्खमाणस्स भासमाणस्स पण्णवेमाणस्स परूवेमाणस्स एयमट्ठं नो आढाइ नो परियाणइ तुसिणीए संचिट्ठइ ।।

जियसत्तुणा फरिहोदगस्स गरहा-पदं

११. तए णं से जियसत्तू राया अण्णया कयाइ ण्हाए आसखंधवरगए महयाभड-चडगर-आसवाहिणिआए[1] निज्जायमाणे तस्स फरिहोदयस्स अदूरसामंतेणं वीईवयइ ।।

१२. तए णं जियसत्तू राया तस्स फरिहोदगस्स असुभेणं गंधेणं अभिभूए समाणे सएणं उत्तरिज्जगेणं आसगं 'पिहेइ, पिहेत्ता'[2] एगंतं अवक्कमइ, अवक्कमित्ता बहवे ईसर जाव[3] सत्थवाहपभियओ एवं वयासी—अहो णं देवाणुप्पिया ! इमे फरिहोदए अमणुण्णे वण्णेणं अमणुण्णे गंधेणं अमणुण्णे रसेणं अमणुण्णे फासेणं, से जहानामए—अहिमडे इ वा जाव[4] अमणामतराए चेव गंधेणं पण्णत्ते ।।

१३. तए णं ते बहवे ईसर[5] जाव[6] सत्थवाहपभियओ एवं वयासी—तहेव णं तं सामी ! जं णं तुब्भे[7] वयह—अहो णं इमे फरिहोदए अमणुण्णे वण्णेणं अमणुण्णे गंधेणं अमणुण्णे रसेणं अमणुण्णे फासेणं, से जहानामए—अहिमडे इ वा जाव[8] अमणाम-तराए चेव गंधेणं पण्णत्ते ।।

१४. तए णं से जियसत्तू राया सुबुद्धिं अमच्चं एवं वयासी—अहो णं सुबुद्धी ! इमे फरिहोदए अमणुण्णे वण्णेणं अमणुण्णे गंधेणं अमणुण्णे रसेणं अमणुण्णे फासेणं, से जहानामए—अहिमडे इ वा जाव[9] अमणामतराए चेव गंधेणं पण्णत्ते ।।

---

१. °वाहणियाए (क) ।
२. पिहइ (क) ।
३. ना० १।७।६ ।
४. ना० १।१२।३ ।
५. राईसर (क, ख, घ) ।
६. ना० १।७।६ ।
७. तुब्भे एवं (क, ख, ग, घ) ।
८,९. ना० १।१२।३ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुबुद्धिस्स उवेहा-पदं

१५. तए णं से सुबुद्धी अमच्चे[1] •जियसत्तुस्स रण्णो एयमट्ठं नो आढाइ नो परियाणाइ° तुसिणीए संचिट्ठइ ।।

१६. तए णं से जियसत्तू राया सुबुद्धिं अमच्चं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी—अहो णं[2] •सुबुद्धी ! इमे फरिहोदए अमणुण्णे वण्णेणं अमणुण्णे गंधेणं अमणुण्णे रसेणं अमणुण्णे फासेणं, से जहानामए—अहिमडे इ वा जाव[3] अमणामतराए चेव गंधेणं पण्णत्ते° ।।

१७. तए णं से सुबुद्धी अमच्चे जियसत्तुणा रण्णा दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्ते समाणे एवं वयासी—नो खलु सामी ! अम्हं एयंसि फरिहोदगंसि केइ विम्हए । एवं खलु सामी ! सुब्भिसद्दा वि पोग्गला दुब्भिसद्दत्ताए परिणमंति[4], •दुब्भिसद्दा वि पोग्गला सुब्भिसद्दत्ताए परिणमंति । सुरूवा वि पोग्गला दुरूवत्ताए परिणमंति, दुरूवा वि पोग्गला सुरूवत्ताए परिणमंति । सुब्भिगंधा वि पोग्गला दुब्भिगंधत्ताए परिणमंति, दुब्भिगंधा वि पोग्गला सुब्भिगंधत्ताए परिणमंति । सुरसा वि पोग्गला दुरसत्ताए परिणमंति, दुरसा वि पोग्गला सुरसत्ताए परिणमंति । सुहफासा वि पोग्गला दुहफासत्ताए परिणमंति, दुहफासा वि पोग्गला सुहफासत्ताए परिणमंति° । पओग-वीससा-परिणया वि य णं सामी ! पोग्गला पण्णत्ता ।।

जियसत्तुस्स विरोध-पदं

१८. तए णं जियसत्तू राया सुबुद्धिं अमच्चं एवं वयासी—मा णं तुमं देवाणुप्पिया ! अप्पाणं च परं च तदुभयं च बहूणि य असब्भावुब्भावणाहिं मिच्छत्ताभिनिवेसेण य वुग्गाहेमाणे वुप्पाएमाणे विहराहि ।।

सुबुद्धिणा जलसोधण-पदं

१९. तए णं सुबुद्धिस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—अहो णं जियसत्तू राया संते[5] तच्चे तहिए अवितहे सब्भूए जिणपण्णत्ते भावे नो[6] उवलभइ । तं सेयं खलु मम जियसत्तुस्स रण्णो संताणं तच्चाणं तहियाणं अवितहाणं सब्भूयाणं जिणपण्णत्ताणं भावाणं अभिगमणट्ठयाए एयमट्ठं उवाइणावेत्तए—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता पच्चइएहिं पुरिसेहिं सद्धिं अंतरावणाओ[7]

---

१. सं० पा०—अमच्चे जाव तुसिणीए ।
२. सं० पा०—अहो णं तं चेव ।
३. ना० १।१२।३ ।
४. सं० पा०—परिणमंति तं चेव ।
५. सच्चे (ख) ।
६. नो सद्दहइ (क) ।
७. अब्भितरावणाओ (क) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नवए घडए य पडए य गेण्हइ, गेण्हित्ता संझाकालसमयंसि विरलमणूसंसि निसंत-पडिनिसंतंसि जेणेव फरिहोदए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं फरिहोदगं गेण्हावेइ, गेण्हावित्ता नवएसु पडएसु[1] गालावेइ[2], गालावेत्ता नवएसु घडएसु पक्खिवावेइ, पक्खिवावेत्ता सज्जखारं पक्खिवावेइ, पक्खिवावेत्ता लंछिय[3]-मुद्दिए कारावेइ[4], कारावेत्ता सत्तरत्तं परिवसावेइ[5], परिवसावेत्ता दोच्चंपि नवएसु पडएसु[6] गालावेइ, गालावेत्ता नवएसु घडएसु पक्खिवावेइ, पक्खिवावेत्ता सज्जखारं पक्खिवावेइ, पक्खिवावेत्ता लंछिय-मुद्दिए कारावेइ, कारावेत्ता सत्तरत्तं परिवसावेइ[7], परिवसावेत्ता तच्चंपि नवएसु पडएसु[8] •गालावेइ, गालावेत्ता नवएसु घडएसु पक्खिवावेइ, पक्खिवावेत्ता सज्जखारं पक्खिवावेइ, पक्खिवावेत्ता लंछिय-मुद्दिए कारावेइ, कारावेता सत्तरत्तं° संवसावेइ[9]। एवं खलु एएणं उवाएणं अंतरा गालावेमाणे अंतरा पक्खिवावेमाणे अंतरा य संवसावेमाणे[10] सत्तसत्त य राइंदियाइं परिवसावेइ। तए णं से फरिहोदए सत्तमंसि[11] सत्तयंसि परिणममाणंसि उदगरयणे जाए यावि होत्था—अच्छे पत्थे जच्चे तणुए फालियवण्णाभे वण्णेणं उववेए गंधेणं उववेए रसेणं उववेए फासेणं उववेए आसायणिज्जे[12] •विसायणिज्जे पीणणिज्जे दीवणिज्जे दप्पणिज्जे मयणिज्जे बिंहणिज्जे° सव्विंदियगाय-पल्हायणिज्जे ॥

सुबुद्धिणा जलपेसण-पदं

२०. तए णं सुबुद्धी जेणेव से उदगरयणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलंसि आसादेइ, आसादेत्ता तं उदगरयणं वण्णेणं उववेयं गंधेणं उववेयं रसेणं उववेयं फासेणं उववेयं आसायणिज्जं[13] •विसायणिज्जं पीणणिज्जं दीवणिज्जं दप्पणिज्जं मयणिज्जं बिंहणिज्जं° सव्विंदियगाय-पल्हायणिज्जं जाणित्ता हट्ठतुट्ठे बहूहिं

---

१. घडएसु (क, ख, ग, घ)। अस्मिन्नेव सूत्रे 'अंतरावणाओ नवए घडए य पडए य गेण्हइ' इति पाठोस्ति तथा 'गालावेइ' इति क्रियापदस्यार्थोऽपि 'पडए' इति पदेन सम्बद्धोस्ति, तेन 'घडएसु गालावेइ' इत्यस्य स्थाने सर्वत्र 'पडएसु गालावेइ' इति पाठो युज्यते। सम्भवतो लिपिदोषेण अत्र वर्ण-विपर्ययो जातः।

२. गलावेइ (ख)।

३. लंछिए (ख)।

४. करावेइ (ख)।

५. परिसवेइ (ख)।

६. पडएसु (क, ख, ग, घ)।

७. परिसावेइ (ख)।

८. सं० पा०—घडएसु जाव संवसावेइ। सर्वासु प्रतिषु 'घडएसु' इत्येव पाठो लभ्यते।

९. पूर्वं 'परिवसावेइ' पाठो विद्यते, अत्र 'संवसावेइ' पाठोस्ति। एतत् परिवर्तनं किमर्थं कृतमिति न ज्ञायते।

१०. वसावेमाणे (ख, ग, घ)।

११. सत्तम (ख)।

१२. सं० पा०—आसायणिज्जे जाव सव्विंदिय°।

१३. सं० पा०—आसायणिज्जं जाव सव्विंदिय°।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उदगसंभारणिज्जेहिं दव्वेहिं संभारेइ, संभारेत्ता जियसत्तुस्स रण्णो पाणिय-घरियं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—तुमं णं देवाणुप्पिया ! इमं उदगरयणं गेण्हाहि, गेण्हित्ता जियसत्तुस्स रण्णो भोयणवेलाए उवणेज्जासि ।।

जियसत्तुणा उदगरयणपसंसा-पदं

२१. तए णं से पाणिय-घरिए सुबुद्धिस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ[1], पडिसुणेत्ता तं उदगरयण गेण्हइ, गेण्हित्ता जियसत्तुस्स रण्णो भोयणवेलाए उवट्ठवेइ ।।

२२. तए णं से जियसत्तू राया तं विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं आसाएमाणे[2] •विसाएमाणे परिभाएमाणे परिभुंजेमाणे एवं च णं° विहरइ। जिमियभुत्तुत्तरागए वि य णं[3] •समाणे आयंते चोक्खे° परमसुइभूए तंसि उदगरयणंसि जायविम्हए ते बहवे राईसर जाव[4] सत्थवाहपभिइओ एवं वयासी—अहो णं देवाणुप्पिया ! इमे उदगरयणे अच्छे जाव[5] सव्विदियगाय-पल्हायणिज्जे ।।

२३. तए णं ते बहवे राईसर जाव[6] सत्थवाहपभिइओ एवं वयासी—तहेव णं सामी ! जण्णं तुब्भे वयह[7]—•इमे उदगरयणे अच्छे जाव[8] सव्विदियगाय°-पल्हायणिज्जे ।।

जियसत्तुणा उदगाणयणपुच्छा-पदं

२४. तए णं जियसत्तू राया पाणिय-घरियं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एस णं तुमे देवाणुप्पिया ! उदगरयणे कओ[9] आसादिते ?

२५. तए णं से पाणिय-घरिए जियसत्तुं एवं वयासी—एस णं सामी ! मए उदगरयणे सुबुद्धिस्स अंतियाओ आसादिते ।।

२६. तए णं जियसत्तू सुबुद्धिं अमच्चं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—अहो णं सुबुद्धी ! केणं कारणेणं अहं तव अणिट्ठे अकंते अप्पिए अमणुण्णे अमणामे जेणं तुमं मम कल्लाकल्लिं भोयणवेलाए इमं उदगरयणं न उवट्ठवेसि ? तं एस णं तुमे देवाणुप्पिया ! उदगरयणे कओ उवलद्धे ?

सुबुद्धिस्स उत्तर-पदं

२७. तए णं सुबुद्धी जियसत्तुं एवं वयासी—एस णं सामी ! से फरिहोदए ।।

---

१. पडिसुणाति (ख)।
२. सं० पा०—आसाएमाणे जाव विहरइ।
३. सं० पा०—य णं जाव परमसुइभूए।
४. ना० १।७।६।
५. ना० १।१२।१६।
६. ना० १।७।६।
७. सं० पा०—जाव एवं चेव पल्हायणिज्जे।
८. ना० १।१२।१६।
९. कत्तो (ख); कतो (ग)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२८. तए णं से जियसत्तू सुबुद्धिं एवं वयासी—केणं कारणेणं सुबुद्धी ! एस से फरिहोदए ?

२९. तए णं सुबुद्धी जियसत्तुं एवं वयासी—एवं खलु सामी ! तुब्भे तया मम एवमाइक्खमाणस्स भासमाणस्स पण्णवेमाणस्स परूवेमाणस्स एयमट्ठं नो सद्दहह। तए णं मम इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—अहो णं जियसत्तू राया संते[1] •तच्चे तहिए अवितहे सब्भूए जिणपण्णत्ते° भावे नो सद्दहइ नो पत्तियइ नो रोएइ। तं सेयं खलु मम जियसत्तुस्स रण्णो संताणं[2] •तच्चाणं तहियाणं अवितहाणं° सब्भूयाणं जिणपण्णत्ताणं भावाणं अभिगमणट्ठयाए एयमट्ठं उवाइणावेत्तए—एवं संपेहेमि, संपेहेत्ता तं चेव जाव[3] पाणिय-घरियं सद्दावेमि, सद्दावेत्ता एवं वदामि—तुमं णं देवाणुप्पिया ! उदगरयणं जियसत्तुस्स रण्णो भोयणवेलाए उवणेहि। तं एएणं कारणेणं सामी ! एस से फरिहोदए॥

जियसत्तुणा जलसोधण-पदं

३०. तए णं जियसत्तू राया सुबुद्धिस्स एवमाइक्खमाणस्स भासमाणस्स पण्णवेमाणस्स परूवेमाणस्स एयमट्ठं नो सद्दहइ नो पत्तियइ नो रोएइ, असद्दहमाणे अपत्तियमाणे अरोएमाणे अब्भिंतरठाणिज्जे पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! अंतरावणाओ नवए घडए पडए य गेण्हह जाव[4] उदगसंभारणिज्जेहिं दव्वेहिं संभारेह। तेवि तहेव संभारेंति, संभारेत्ता जियसत्तुस्स उवणेंति॥

जियसत्तुस्स जिण्णासा-पदं

३१. तए णं से जियसत्तू राया तं उदगरयणं करयलंसि आसाएइ, आसाएत्ता आसायणिज्जं जाव[5] सव्विंदियगाय-पल्हायणिज्जं जाणित्ता सुबुद्धिं अमच्चं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—सुबुद्धी ! एए णं तुमे संता तच्चा[6] तहिया अवितहा °सब्भूया भावा कओ उवलद्धा ?

सुबुद्धिस्स उत्तर-पदं

३२. तए णं सुबुद्धी जियसत्तुं एवं वयासी—एए णं सामी ! मए संता[7] •तच्चा तहिया अवितहा सब्भूया° भावा जिणवयणाओ उवलद्धा॥

---

१. सं० पा०—संते जाव भावे।
२. सं० पा०—संताणं जाव सब्भूयाणं।
३. ना० १।१२।१९,२०।
४. ना० १।१२।१९,२०।
५. ना० १।१२।४।
६. सं० पा०—तच्चा जाव सब्भूया।
७. सं० पा०—संता जाव भावा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३३. तए णं जियसत्तू सुबुद्धिं एवं वयासी—तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! तव अंतिए जिणवयणं निसामित्तए ॥

जियसत्तुस्स समणोवासयत्त-पदं

३४. तए णं सुबुद्धी जियसत्तुस्स विचित्तं केवलिपण्णत्तं चाउज्जामं धम्मं परिकहेइ[1] ।

३५. तए णं जियसत्तू सुबुद्धिस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे सुबुद्धिं अमच्चं एवं वयासी—सद्दहामि णं देवाणुप्पिया ! निग्गंथं पावयणं[2] । •पत्तियामि णं देवाणुप्पिया ! निग्गंथं पावयणं । रोएमि णं देवाणुप्पिया ! निग्गंथं पावयणं । अब्भुट्ठेमि णं देवाणुप्पिया ! निग्गंथं पावयणं । एवमेयं देवाणुप्पिया ! तहमेयं देवाणुप्पिया ! अवितहमेयं देवाणुप्पिया ! इच्छियमेयं देवाणुप्पिया ! पडिच्छियमेयं देवाणुप्पिया ! इच्छिय-पडिच्छियमेयं देवाणुप्पिया ! ° से जहेयं तुब्भे वयह । तं इच्छामि णं तव अंतिए 'चाउज्जामियं गिहिधम्मं'[3] उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए ।
अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेह ॥

३६. तए णं से जियसत्तू सुबुद्धिस्स अंतिए चाउज्जामियं[4] गिहिधम्मं पडिवज्जइ ॥

३७. तए णं जियसत्तू समणोवासए जाए—अहिगयजीवाजीवे जाव[5] पडिलाभेमाणे विहरइ ॥

पव्वज्जा-पदं

३८. तेणं कालेणं तेणं समएणं थेरागमणं । जियसत्तू राया सुबुद्धी य निग्गच्छइ[6] । सुबुद्धी धम्मं सोच्चा निसम्म एवं वयासी[7]—जं नवरं—जियसत्तुं आपुच्छामि[8] •तओ पच्छा मुंडे भवित्ता णं अगाराओ अणगारियं ° पव्वयामि ।
अहासुहं देवाणुप्पिया !

३९. तए णं सुबुद्धी जेणेव जियसत्तू तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एवं वयासी—एवं खलु सामी ! मए थेराणं अंतिए धम्मे निसंते । से वि य धम्मे 'इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए'[9] । तए णं अहं सामी ! संसारभउव्विग्गे भीए[10] •जम्मण-

---

१. परिकहेइ तमाइक्खइ, जहा—जीवा बज्झंति जाव पंचाणुव्वयाइं । द्रष्टव्यम्—१।५।४५ सूत्रस्य प्रथमं पादटिप्पणम् ।
२. सं० पा०—पावयणं जाव से जहेयं ।
३. पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं जाव (क, ख, ग, घ) । द्रष्टव्यम्—१।५।४५ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।
४. पंचाणुव्वइयं जाव दुवालसविहं (क,ख,ग,घ) । द्रष्टव्यम्—१।५।४५ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।
५. ना० १।५।४७ ।
६. निग्गच्छंति (क, ग) ।
७. पू०—ना० १।१।१०१ ।
८. सं० पा०—आपुच्छामि जाव पव्वयामि ।
९. इच्छिए पडिच्छिए ३ (क); इच्छियपडिच्छिए (ख, ग) ।
१०. सं० पा०—भीए जाव इच्छामि ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जर-मरणाणं° इच्छामि णं तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए[1] •समाणे थेराणं अंतिए मुंडे भवित्ता णं अगाराओ अणगारियं° पव्वइत्तए ॥

४०. तए णं जियसत्तू राया सुबुद्धिं एवं वयासी—अच्छसु[2] ताव देवाणुप्पिया! कइवयाइं[3] वासाइं उरालाइं[4] •माणुस्सगाइं भोगभोगाइं° भुंजमाणा तओ पच्छा एगयओ[5] थेराणं अंतिए मुंडे भवित्ता[6] •णं अगाराओ अणगारियं° पव्वइस्सामो ॥

४१. तए णं सुबुद्धी जियसत्तुस्स रण्णो एयमट्ठं पडिसुणेइ ॥

४२. तए णं तस्स जियसत्तुस्स रण्णो सुबुद्धिणा सद्धिं विपुलाइं माणुस्सगाइं काम-भोगाइं[7] पच्चणुब्भवमाणस्स दुवालस वासाइं वीइक्कंताइं ॥

४३. तेणं कालेणं तेणं समएणं थेरागमणं। जियसत्तू राया धम्मं सोच्चा निसम्म एवं वयासी—जं नवरं—देवाणुप्पिया! सुबुद्धिं अमच्चं आमंतेमि, जेट्ठपुत्तं रज्जे ठावेमि[8], तए णं तुब्भण्णं[9] •अंतिए मुंडे भवित्ता णं अगाराओ अणगारियं° पव्वयामि।

अहासुहं देवाणुप्पिया!

४४. तए णं जियसत्तू राया जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुबुद्धिं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु मए थेराणं अंतिए धम्मे निसंते जाव[10] पव्वयामि। तुमं णं किं करेसि[11]?

४५. तए णं सुबुद्धी जियसत्तुं रायं एवं वयासी[12]—•जइ णं तुब्भे देवाणुप्पिया! संसारभउव्विग्गा जाव[13] पव्वयह, अम्हं णं देवाणुप्पिया! के अण्णे आहारे वा आलंबे वा? अहं वि य णं देवाणुप्पिया! संसारभउव्विग्गे जाव° पव्वयामि[14]। तं जइ णं देवाणुप्पिया! जाव पव्वाहि। गच्छह णं देवाणुप्पिया! जेट्ठपुत्तं[15] कुडुंबे ठावेहि, ठावेत्ता पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं दुरुहित्ता णं ममं अंतिए पाउब्भवउ। सो वि तहेव पाउब्भवइ ॥

---

१. सं० पा०—अब्भणुण्णाए जाव पव्वइत्तए।
२. तत्थ (क); अच्छासु (ख, ग); अच्छ (घ)।
३. कतिवयांति (ख, ग)।
४. सं० पा०—उरालाइं जाव भुंजमाणा।
५. एगओ (ख, ग)।
६. सं० पा०—भवित्ता जाव पव्वइस्सामो।
७. जाव (क)।
८. ठवेमि (ख, ग, घ)।
९. तुब्भे णं (ख, घ); सं० पा०—तुब्भण्णं जाव पव्वयामि।
१०. ना० १।१२।३६।
११. पू०—ना० १।५।८६।
१२. सं० पा०—वयासी जाव के अन्ने आहारे वा जाव पव्वयामि।
१३. ना० १।५।८६।
१४. पव्वामि (क, ग)।
१५. °पुत्तं च (क, ख, ग)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४६. तए णं जियसत्तू राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! अदीणसत्तुस्स कुमारस्स रायाभिसेयं उवट्ठवेह । ते वि तहेव उवट्ठवेंति जाव[1] अभिसिंचति[2] जाव[3] पव्वइए ।।

४७. तए णं जियसत्तू रायरिसी[4] एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, अहिज्जित्ता[5], बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणित्ता, मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता जाव[6] सिद्धे ।।

४८. तए णं सुबुद्धी एक्कारस अंगाइं अहिज्जित्ता, बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणित्ता, मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसित्ता जाव[7] सिद्धे ।।

निक्खेव-पदं

४९. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं बारसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।

—त्ति बेमि ।।

वृत्तिकृता समुद्धृता निगमनगाथा—

मिच्छत्त-मोहियमणा, पावपसत्ता वि पाणिणो विगुणा ।
फरिहोदगं व गुणिणो, हवंति वरगुरुपसायाओ ।।१।।

---

१. ना० १।५।९३,९४ ।
२. अभिसिंचंति (क, ख, ग) ।
३. ना० १।५।९५-९९ ।
४. × (क, ख, ग) ।
५. अहिज्जिऊण (ख) ।
६. ना० १।५।१०५ ।
७. ना० १।५।१०५ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तेरसमं अज्झयणं

मंडुक्के

उक्खेव-पदं

१. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं बारसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, तेरसमस्स णं भंते ! नायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?

२. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं 'रायगिहे नयरे । गुणसिलए चेइए । समोसरणं'[1] । परिसा निग्गया ।।

३. तेणं कालेणं तेणं समएणं सोहम्मे कप्पे दद्दुरवडिंसए विमाणे सभाए सुहम्माए दद्दुरंसि सीहासणंसि दद्दुरे देवे चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं चउहिं अग्ग-महिसीहिं सपरिसाहिं एवं जहा सूरियाभे जाव[2] दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ । इमं च णं केवलकप्पं जंबुद्दीवं दीवं विउलेणं ओहिणा आभोएमाणे जाव[3] नट्टविहिं उवदंसित्ता पडिगए, जहा—सूरियाभे ।।

गोयमस्स पुच्छा-पदं

४. भंतेति ! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—अहो णं भंते ! दद्दुरे देवे महिड्ढिए महज्जुईए महब्बले महायसे महासोक्खे महाणुभागे ।।

५. दद्दुरस्स णं भंते ! देवस्स सा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुती दिव्वे देवाणुभावे कहिं गए ? कहिं अणुपविट्ठे ?
गोयमा ! सरीरं गए सरीरं अणुपविट्ठे कूडागारदिट्ठंतो[4] ।।

---

१. 'घ' प्रतौ अत्र विस्तृतः पाठो विद्यते ।
२. राय० सू० ७ ।
३. राय० सू० ७-१२० ।
४. राय० सू० १२३ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६. दद्दुरेणं भंते! देवेणं सा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुती दिव्वे देवाणुभावे किण्णा लद्धे ? किण्णा पत्ते ? किण्णा अभिसमण्णागए[1] ?

भगवओ उत्तरे दद्दुरदेवस्स नंदभव-पदं

७. एवं खलु गोयमा ! इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे रायगिहे नयरे। गुणसिलए चेइए। सेणिए राया ।।

८. तत्थ णं रायगिहे नंदे नामं मणियारसेट्ठी—अड्ढे दित्ते[2] ।।

नंदस्स धम्मपडिवत्ति-पदं

९. तेणं कालेणं तेणं समएणं अहं गोयमा ! समोसढे। परिसा निग्गया। 'सेणिए वि निग्गए'[3] ।।

१०. तए णं से नंदे मणियारसेट्ठी इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे पायविहारचारेणं[4] जाव[5] पज्जुवासइ ।।

११. नंदे मणियारसेट्ठी धम्मं सोच्चा समणोवासए जाए ।।

१२. तए णंऽहं रायगिहाओ पडिनिक्खंते बहिया जणवयविहारेणं[6] विहरामि ।।

मिच्छत्तपडिवत्ति-पदं

१३. तए णं से नंदे मणियारसेट्ठी अण्णया कयाइ असाहुदंसणेण य अपज्जुवासणाए य अणणुसासणाए य असुस्सूसणाए य सम्मत्तपज्जवेहिं परिहायमाणेहिं-परिहायमाणेहिं मिच्छत्तपज्जवेहिं परिवड्ढमाणेहिं-परिवड्ढमाणेहिं मिच्छत्तं विप्पडिवण्णे जाए यावि होत्था ।।

१४. तए णं नंदे मणियारसेट्ठी अण्णया कयाइ[7] गिम्हकालसमयंसि जेट्ठामूलंसि मासंसि अट्ठमभत्तं परिगेण्हइ, परिगेण्हित्ता पोसहसालाए[8] •पोसहिए बंभचारी उमुक्कमणिसुवण्णे ववगयमालावण्णगविलेवणे निक्खित्तसत्थमुसले एगे अबीए दब्भसंथारोवगए• विहरइ ।।

पोक्खरिणी-निम्माण-पदं

१५. तए णं नंदस्स अट्ठमभत्तंसि परिणममाणंसि तण्हाए[9] छुहाए य अभिभूयस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था— धण्णा णं ते[10] •ईसरपभियओ, संपुण्णा णं ते ईसरपभियओ, कयत्था णं ते

---

१. पू०—राय० सू० ६६७।
२. पू०—ना० १।५।७।
३. सेणिए राया निग्गए (क); राया निग्गओ (ख); राया निग्गए (ग)।
४. पायचारेणं (क, ख, ग)।
५. उवा० १।२०।
६. °विहारं (ख)।
७. × (क, ख, ग)।
८. सं० पा०—पोसहसालाए जाव विहरइ।
९. तण्हा (ग)।
१०. सं० पा०—धण्णा णं ते जाव ईसरपभियओ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ईसरपभियओ, कयपुण्णा णं ते ईसरपभियओ, कयलक्खणा णं ते ईसरपभियओ कयविभवा णं ते° ईसरपभियओ, जेसिं णं रायगिहस्स बहिया बहूओ वावीओ पोक्खरिणीओ[1] •दीहियाओ गुंजालियाओ सरपंतियाओ° सरसरपंतियाओ, जत्थ णं बहुजणो 'ण्हाइ य पियइ य'[2] पाणियं च संवहइ। तं सेयं खलु मम कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव[3] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते सेणियं रायं आपुच्छित्ता रायगिहस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभागे वेब्भारपव्वयस्स अदूरसामंते वत्थुपाढग-रोइयंसि भूमिभागंसि नंदं पोक्खरिणिं खणावेत्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते पोसहं पारेइ, पारेत्ता ण्हाए कयबलिकम्मे मित्त-नाइ[4]-•नियग-सयण-संबंधि-परियणेणं सद्धिं° संपरिवुडे महत्थं[5] •महग्घं महरिहं रायारिहं° पाहुडं गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणेव सेणिए राया तेणेव उवागच्छइ जाव[6] पाहुडं उवट्ठवेइ, उवट्ठवेत्ता एवं वयासी—इच्छामि णं सामी! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे रायगिहस्स बहिया[7] •उत्तरपुरत्थिमे दिसीभागे वेब्भारपव्वयस्स अदूरसामंते वत्थुपाढग-रोइयंसि भूमिभागंसि नंदं पोक्खरिणिं° खणावेत्तए।

अहासुहं देवाणुप्पिया!

१६. तए णं से नंदे मणियारसेट्ठी सेणिएणं रण्णा अब्भणुण्णाए समाणे हट्ठतुट्ठे रायगिहं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता वत्थुपाढय-रोइयंसि भूमिभागंसि नंदं पोक्खरिणिं खणावेउं पयत्ते यावि होत्था॥

१७. तए णं सा नंदा पोक्खरणी अणुपुव्वेणं खम्ममाणा-खम्ममाणा[8] पोक्खरणी जाया यावि होत्था—चाउक्कोणा[9] समतीरा अणुपुव्वं सुजायवप्पसीयलजला संछन्न[10]-पत्त-भिसमुणाला[11] बहुउप्पल-पउम-कुमुद-नलिण-सुभग-सोगंधिय-पुंडरीय-महापुंडरीय-सयपत्त-सहस्सपत्त-पप्फुल्लकेसरोववेया[12] परिहत्थ-भमंत-मत्तछप्पय[13]-

---

१. सं० पा०—पोक्खरिणीओ जाव सरसरपंतियाओ।

२. ण्हायइ पियइ (क, ख)।

३. ना० १।१।२४।

४. सं० पा०—नाइ जाव संपरिवुडे।

५. सं० पा०—महत्थं जाव पाहुडं रायारिहं (क, ख, ग, घ); पाहुडं रायारिहं—अत्र लिपिदोषेण व्यत्ययो जात इति संभाव्यते।

६. ना० १।५।२०।

७. सं० पा०—बहिया जाव खणावेत्तए।

८. खणमाणा (घ)।

९. चउक्कोणा (क)।

१०. संच्छन्न (क, ख, ग, घ)।

११. बिस० (ख, ग)।

१२. पुप्फफलकेसरोविया (क); प्फुल्लप्पलकेसरोवचिया (ख); फुल्लकेसरोववेया (घ)।

१३. महुच्छप्पय (क)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अणेग-सउणगण-मिहुण-वियरिय-सद्दुन्नइय[1]-महुरसरनाइया पासाईया दरिस-णिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ॥

वणसंड-पदं

१८. तए णं से नंदे मणियारसेट्ठी नंदाए पोक्खरिणीए चउदिसिं चत्तारि वणसंडे रोवावेइ ॥

१९. तए णं ते वणसंडा अणुपुव्वेणं सारक्खिज्जमाणा संगोविज्जमाणा संवड्ढिज्ज-माणा य वणसंडा जाया—किण्हा जाव[2] महामेह-निउरंबभूया पत्तिया पुप्फिया[3]-•फलिया हरियग-रेरिज्जमाणा सिरीए अईव° उवसोभेमाणा-उवसोभेमाणा चिट्ठंति ॥

चित्तसभा-पदं

२०. तए णं नंदे मणियारसेट्ठी पुरत्थिमिल्ले वणसंडे एगं महं चित्तसभं कारावेइ[4]-अणेगखंभसयसण्णिविट्ठं[5] पासाईयं दरिसणिज्जं अभिरूवं पडिरूवं। तत्थ णं बहूणि किण्हाणि य[6] •नीलाणि य लोहियाणि य हालिद्दाणि य° सुक्किलाणि य कट्ठकम्माणि य पोत्थकम्माणि य चित्त-लेप्प-गंथिम-वेढिम-पूरिम-संघाइमाइं[7] उवदंसिज्जमाणाइं-उवदंसिज्जमाणाइं चिट्ठंति।

तत्थ णं बहूणि आसणाणि य सयणाणि य अत्थुय-पच्चत्थुयाइं चिट्ठंति।

तत्थ णं बहवे 'नडा य'[8] नट्टा य[9] •जल्ल-मल्ल-मुट्ठिय-वेलंबग-कहग-पवग-लासग-आइक्खग-लंख-मंख-तूणइल्ल-तुंबवीणिया य° दिन्नभइ-भत्त-वेयणा तालायर-कम्मं करेमाणा-करेमाणा विहरंति।

रायगिहविणिग्गओ एत्थ[10] णं बहुजणो तेसु पुव्वन्नत्थेसु आसण-सयणेसु सण्णि-सण्णो[11] य संतुयट्टो य सुयमाणो य 'पेच्छमाणो य'[12] 'साहेमाणो य'[13] सुहंसुहेणं विहरइ ॥

---

१. सद्दुनइय (क, ग); सद्दनइय (ख, घ)। असौ पाठः जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति (मुद्रित प्रति सू० ७४) राधारेण स्वीकृतः।

२. ना० १।७।१३।

३. सं० पा०—पुप्फिया जाव उवसोभेमाणा।

४. करावेइ (ख)।

५. पू०—ना० १।१।८९।

६. सं० पा०—किण्हाणि य जाव सुक्किलाणि।

७. संघातिम (क, ख, ग, घ)।

८. × (ग, घ)।

९. सं० पा०—नट्टा य जाव दिन्न°।

१०. तत्थ (क)।

११. उच्चत्थुयसंनिसण्णो (क)।

१२. × (ख, ग, घ)।

१३. × (ख, ग); सोहेमाणो य (घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महाणससाला-पदं

२१. तए णं नंदे मणियारसेट्ठी दाहिणिल्ले वणसंडे एगं महं महाणससालं कारावेइ—अणेगखंभसयसण्णिविट्ठं जाव[1] पडिरूवं। तत्थ णं बहवे पुरिसा दिन्नभइ-भत्त-वेयणा[2] विउलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडेंति, बहूणं समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमगाणं परिभाएमाणा-परिभाएमाणा विहरंति॥

तिगिच्छियसाला-पदं

२२. तए णं नंदे मणियारसेट्ठी पच्चत्थिमिल्ले वणसंडे एगं महं तिगिच्छियसालं कारावेइ[3]—अणेगखंभसयसण्णिविट्ठं जाव[4] पडिरूवं। तत्थ णं बहवे वेज्जा य वेज्जपुत्ता य 'जाणुया य जाणुयपुत्ता य'[5] कुसला य कुसलपुत्ता य दिन्नभइ-भत्त-वेयणा बहूणं वाहियाण य गिलाणाण य रोगियाण य दुब्बलाण य तेइच्छ-कम्मं करेमाणा-करेमाणा विहरंति। अण्णे य एत्थ बहवे पुरिसा दिन्नभइ-भत्त-वेयणा तेसिं बहूणं वाहियाण य गिलाणाण य रोगियाण य दुब्बलाण य ओसह-भेसज्ज-भत्तपाणेणं पडियारकम्मं करेमाणा विहरंति॥

अलंकारियसभा-पदं

२३. तए णं नंदे मणियारसेट्ठी उत्तरिल्ले वणसंडे एगं महं अलंकारियसभं कारावेइ[6]—अणेगखंभसयसण्णिविट्ठं जाव[7] पडिरूवं। तत्थ णं बहवे अलंकारिय-मणुस्सा दिन्नभइ-भत्त-वेयणा बहूणं समणाण य[8] अणाहाण य गिलाणाण य रोगियाण य दुब्बलाण य अलंकारियकम्मं करेमाणा-करेमाणा विहरंति॥

नंदस्स पसंसा-पदं

२४. तए णं तीए नंदाए पोक्खरिणीए बहवे सणाहा य अणाहा य पंथिया य पहिया य करोडिया[9] य तणहारा य पत्तहारा य कट्ठहारा य—अप्पेगइया ण्हायंति अप्पे-गइया पाणियं पियंति अप्पेगइया पाणियं संवहंति[10] अप्पेगइया विसज्जियसेय-जल्ल-मल-परिस्सम-निद्द-खुप्पिवासा सुहंसुहेणं विहरंति। रायगिहविणिग्गओ[11]

---

१. ना० १।१।८९।
२. दिन्नभय० (ग) सर्वत्र।
३. कारेइ (क, ग, घ)।
४. ना० १।१।८९।
५. × (क)।
६. करेइ (ख, ग); कारेति (घ)।
७. ना० १।१।८९।
८. य माहणाण य सनाहाण य (वृ०)।
९. करोडिकारवा (ख, ग)।
१०. संवाहंति (क, ख)।
११. रायगिहनिग्गओ (ख, ग)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वि यत्थ[1] बहुजणो 'किं ते'[2] जलरमण-विविहमज्जण-कयलिलयाहरय[3]-कुसुम-सत्थरय-अणेगसउणगण-कयरिभियसंकुलेसु सुहंसुहेणं अभिरममाणो-अभिरम-माणो[4] विहरइ ॥

२५. तए णं नंदाए पोक्खरिणीए[5] बहुजणो ण्हायमाणो य पियमाणो य पाणियं च[6] संवहमाणो य अण्णमण्णं एवं वयासी—धण्णे[7] णं देवाणुप्पिया ! नंदे मणियार-सेट्ठी, कयत्थे[8] •णं देवाणुप्पिया ! नंदे मणियारसेट्ठी, कयलक्खणे णं देवाणु-प्पिया ! नंदे मणियारसेट्ठी, कयपुण्णे णं देवाणुप्पिया ! नंदे मणियारसेट्ठी, कया णं लोया ! सुलद्धे माणुस्सए° जम्मजीवियफले [नंदस्स मणियारस्स ?] ? जस्स णं इमेयारूवा नंदा पोक्खरिणी चाउक्कोणा जाव[9] पडिरूवा[10] जाव[11] रायगिहविणिग्गओ जत्थ बहुजणो आसणेसु य सयणेसु य सण्णिसण्णो य संतुयट्टो य पेच्छमाणो य साहेमाणो य सुहंसुहेणं विहरइ। तं धन्ने णं देवाणुप्पिया ! नंदे मणियारसेट्ठी, कयत्थे णं देवाणुप्पिया ! नंदे मणियारसेट्ठी, कयलक्खणे णं देवाणुप्पिया ! नंदे मणियारसेट्ठी, कयपुण्णे णं देवाणुप्पिया ! नंदे मणियारसेट्ठी, कया णं लोया ! सुलद्धे माणुस्सए जम्मजीवियफले नंदस्स मणियारस्स ?

२६. तए णं रायगिहे सिंघाडग[12]-•तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह-पहेसु° बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ एवं भासइ एवं पण्णवेइ एवं परूवेइ - धन्ने णं देवाणुप्पिया ! नंदे मणियारसेट्ठी सो चेव गमओ जाव सुहंसुहेणं विहरइ ॥

२७. तए णं से नंदे मणियारसेट्ठी बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे 'धाराहत - कलंबगं विव'[13] समूसवियरोमकूवे परं सायासोक्खमणुभवमाणे विहरइ ॥

नंदस्स रोगुप्पत्ति-पदं

२८. तए णं तस्स नंदस्स मणियारसेट्ठिस्स अण्णया कयाइ सरीरगंसि सोलस रोगा-यंका[14] पाउब्भूया। [तं जहा—

---

१. जत्थ (क, ख); तत्थ (घ)।
२. किं तत् 'यत् करोति' इति शेषः।
३. °घरय (क)।
४. अभिरममाणे (क)।
५. पुक्खरणीए (क); पोक्खरणीए (ख)।
६. वा (क)।
७. धण्णेसि (क, घ)।
८. सं० पा०—कयत्थे जाव जम्म°।
९. ना० १।१३।१७।
१०. पडिरूवा जस्स णं पुरत्थिमिल्ले तं चेव चउसु वि वणसंडेसु (क, ख, ग, घ)।
११. ना० १।१३।१८-२४।
१२. सं० पा०—सिंघाडग जाव बहुजणो।
१३. धाराहयकलंबकं पिव (ख, ग); °कयंबकं पिव (घ)।
१४. रोगातंका (क); रोयायंका (ख)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गाहा—

सासे कासे जरे दाहे, कुच्छिसूले भगंदरे ।
अरिसा[1] अजीरए दिट्ठी-मुद्धसूले[2] अकारए ।।
अच्छिवेयणा कण्णवेयणा कंडू दउदरे[3] कोढे[4] ।।१।।]

तिगिच्छा-पदं

२९. तए णं से नंदे मणियारसेट्ठी सोलसहिं रोयायंकेहिं अभिभूए समाणे कोडुंबिय-पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! रायगिहे नयरे सिंघाडग[5]-•तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह°पहेसु महया-महया सद्देणं उग्घोसेमाणा-उग्घोसेमाणा एवं वयह—एवं खलु देवाणुप्पिया ! नंदस्स मणियारस्स सरीरगंसि सोलस रोयायंका पाउब्भूया । [तं जहा—सासे जाव कोढे[6]] । तं जो णं इच्छइ देवाणुप्पिया ! विज्जो वा विज्जपुत्तो वा जाणओ वा जाणुअपुत्तो वा कुसलो वा कुसलपुत्तो वा नंदस्स मणियारस्स तेसिं च णं सोलसण्हं रोगायंकाणं एगमवि रोगायंकं उवसामित्तए, तस्स णं नंदे मणियार-सेट्ठी विउलं अत्थसंपयाणं दलयइ त्ति कट्टु दोच्चंपि तच्चंपि घोसणं[7] घोसेह, घोसेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह । तेवि तहेव पच्चप्पिणंति ।।

३०. तए णं रायगिहे नगरे इमेयारूवं घोसणं सोच्चा निसम्म बहवे वेज्जा य[8] •वेज्ज-पुत्ता य जाणुया य जाणुयपुत्ता य कुसला य° कुसलपुत्ता य सत्थकोसहत्थगया य सिलियाहत्थगया य गुलियाहत्थगया य ओसह-भेसज्जहत्थगया य सएहिं-सएहिं गिहेहिंतो निक्खमंति, निक्खमित्ता रायगिहं मज्झंमज्झेणं जेणेव नंदस्स मणियारसेट्ठिस्स गिहे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता नंदस्स मणियारसेट्ठिस्स सरीरं[9] पासंति, पासित्ता तेसिं रोगायंकाणं नियाणं पुच्छंति, पुच्छित्ता नंदस्स मणियारसेट्ठिस्स बहूहिं उव्वलणेहि[10] य उव्वट्टणेहि य सिणेहपाणेहि[11] य वमणेहि य विरेयणेहि य सेयणेहि य अवदहणेहि[12] य अवण्हावणेहि[13] य अणुवासणाहि[14] य वत्थिकम्मेहि य निरूहेहि[15] य सिरावेहेहि य तच्छणाहि य पच्छणाहि य

---

१. आयारो ६।८ सूत्रे षोडशरोगविवरणे भिन्नः क्रमो विद्यते ।
२. मुद्धिसूले (क); पुट्ठसूले (ग) ।
३. दओदरे (ख) ।
४. असौ कोष्ठकवर्ती पाठः व्याख्यांशः प्रतीयते ।
५. सं० पा०—सिंघाडग जाव पहेसु ।
६. असौ कोष्ठकवर्ती पाठः व्याख्यांशः प्रतीयते ।
७. उग्घोसणं (क)
८. सं० पा०—वेज्जा य जाव कुसलपुत्ता ।
९. सरीरं हस्स (क) ।
१०. उव्वेलणेहि (ग) ।
११. सिणेहि य पाणेहि य (ख) ।
१२. अवद्धाणाहि (क); अववहणेहि (ख)। अवद्दवेयणाहि (ग) ।
१३. अवण्हावणाहि (क); अवण्हाणेहि (ख, घ)।
१४. °वासणेहि (घ) ।
१५. निरूवेहि (ख) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सिरावत्थीहि[1] य तप्पणाहि य पुडवाएहि य 'छल्लीहि य वल्लीहि य'[2] मूलेहि य कंदेहि य पत्तेहि य पुप्फेहि य फलेहि य बीएहि य सिलियाहि य गुलियाहि य ओसहेहि य भेसज्जेहि य[3] इच्छंति तेसिं सोलसण्हं रोगायंकाणं एगमवि रोगायंकं[4] उवसामित्तए, नो चेव णं संचाएंति उवसामेत्तए ।।

३१. तए णं ते बहवे वेज्जा[5] य वेज्जपुत्ता य जाणुया य जाणुयपुत्ता य कुसला य कुसलपुत्ता य जाहे नो संचाएंति तेसिं सोलसण्हं रोगायंकाणं एगमवि रोगायंकं उवसामित्तए, ताहे संता तंता परितंता[6] •निव्विण्णा समाणा जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं° पडिगया ।।

भगवओ उत्तरे दद्दुरदेवस्स दद्दुरभव-पदं

३२. तए णं नंदे मणियारसेट्ठी तेहिं सोलसेहिं रोगायंकेहिं अभिभूए समाणे नंदाए पुक्खरिणीए मुच्छिए गढिए गिद्धे अज्झोववण्णे तिरिक्खजोणिएहिं निबद्धाउए बद्धपएसिए अट्ट-दुहट्ट-वसट्टे कालमासे कालं किच्चा नंदाए पोक्खरिणीए दद्दुरीए कुच्छिंसि दद्दुरत्ताए उववण्णे ।।

३३. तए णं नंदे[7] दद्दुरे[8] गब्भाओ विणिमुक्के समाणे उम्मुक्कबालभावे[9] विण्णय-परिणयमित्ते[10] जोव्वणगमणुप्पत्ते नंदाए पोक्खरिणीए अभिरममाणे-अभिरममाणे विहरइ ।।

३४. तए णं नंदाए पोक्खरिणीए बहुजणो ण्हायमाणो य पियमाणो य पाणियं च संवहमाणो य अण्णमण्णं[11] एवमाइक्खइ एवं भासइ एवं पण्णवेइ एवं परूवेइ— धन्ने णं देवाणुप्पिया ! नंदे मणियारे, जस्स णं इमेयारूवा नंदा पुक्खरिणी— चाउक्कोणा जाव[12] पडिरूवा[13] ।।

दद्दुरस्स जाइसरण-पदं

३५. तए णं तस्स दद्दुरस्स तं अभिक्खणं-अभिक्खणं बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं

---

१. सिरावेहेहि (क); अवरहसिरावत्थीहि (ख); सिरावेढेहि य (ग) ।
२. छल्लीहि य (ख); वल्लीहि य छल्लीहि य (घ) ।
३. य आसज्जेहि य (क, ग); आइज्जेहि य (घ) ।
४. रोगातंकं (क, ग) ।
५. विज्जा (क, ख, ग) ।
६. सं० पा०—परितंता जाव पडिगया ।
७. नंदे जीवे (घ) ।
८. दद्दुरीए (घ) ।
९. उमुक्क° (ख, घ) ।
१०. विण्णाय° (घ) ।
११. अण्णमण्णस्स (क, ग, घ) ।
१२. ना० १।१३।१७ ।
१३. पडिरूवा जस्स णं पुरत्थिमिल्ले वणसंडे चित्तसभा अणेगखंभ(क, ख, ग, घ); पू०— ना० १।१३।१८-२४ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोच्चा निसम्म[1] इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—कहिं[2] मन्ने मए इमेयारूवे सद्दे निसंतपुव्वे[3] त्ति कट्टु सुभेणं परिणामेणं[4] •पसत्थेणं अज्झवसाणेणं लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं ईहापूह-मग्गण-गवेसणं करेमाणस्स सण्णिपुव्वे॰ जाईसरणे समुप्पण्णे, पुव्वजाइं सम्मं समागच्छइ ॥

३६. तए णं तस्स दद्दुरस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं इहेव रायगिहे नयरे नंदे नामं मणियारे—अड्ढे[5]। तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसढे। तए णं मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए पंचाणुव्वइए सत्तसिक्खावइए[6]—•दुवालसविहे गिहिधम्मे॰ पडिवण्णे। तए णं अहं अण्णया कयाइ असाहुदंसणेण य जाव[7] मिच्छत्तं विप्पडिवण्णे।

तए णं अहं अण्णया कयाइं गिम्हकालसमयंसि जाव[8] पोसहं उवसंपज्जित्ता णं विहरामि। एवं जहेव चिंता। आपुच्छणा। नंदापुक्खरिणी। वणसंडा। सभाओ। तं चेव सव्वं जाव[9] नंदाए दद्दुरत्ताए उववण्णे। तं अहो णं अहं अधण्णे[10] अपुण्णे[11] अकयपुण्णे निग्गंथाओ पावयणाओ नट्ठे भट्ठे परिब्भट्ठे। तं सेयं खलु ममं सयमेव पुव्वपडिवण्णाइं पंचाणुव्वयाइं[12] उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता पुव्वपडिवण्णाइं पंचाणुव्वयाइं आरुहेइ[13], आरुहेत्ता इमेयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हइ—कप्पइ मे जावज्जीवं छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणस्स विहरित्तए, छट्ठस्स वि य णं पारणगंसि कप्पइ मे नंदाए पोक्खरिणीए परिपेरंतेसु फासुएणं ण्हाणोदएणं उम्मद्दणालोलियाहि[14] य[15] वित्तिं कप्पेमाणस्स विहरित्तए—इमेयारूवं अभिग्गहं अभिगेण्हइ, जावज्जीवाए छट्ठंछट्ठेणं[16] •अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणे॰ विहरइ ॥

भगवओ रायगिहे समवसरण-पदं

३७. तेणं कालेणं तेणं समएणं अहं गोयमा ! गुणसिलए समोसढे। परिसा निग्गया ॥

---

१. निसम्मा (ख, ग)।
२. से कहिं (क्व०)।
३. ॰पुव्व (ख)।
४. सं॰ पा॰—परिणामेण जाव जाईसरणे।
५. पू॰—ना॰ १।५।७।
६. सं॰ पा॰—सिक्खावइए जाव पडिवण्णे।
७. ना॰ १।१३।१३।
८. ना॰ १।१३।१४।
९. ना॰ १।१३।१५-३२।
१०. अहन्ने (ख, ग)।
११. अकयत्थे (घ)।
१२. पंचाणुव्वयाइं सत्तसिक्खावयाइं (घ)।
१३. आरुहइ (ख)।
१४. उम्मद्दणो॰ (क, ख, ग); उम्मद्दणाइं लोलियाहि (घ)।
१५. 'मट्टियाए' इति शेषः।
१६. सं॰ पा॰—छट्ठंछट्ठेणं जाव विहरइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३८. तए णं नंदाए पोक्खरिणीए बहुजणो 'ण्हायमाणो य पियमाणो य पाणियं च संवहमाणो य'[1] अण्णमण्णं[2] •एवमाइक्खइ—एवं खलु° समणे भगवं महावीरे इहेव गुणसिलए चेइए समोसढे। तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया। समणं भगवं महावीरं वंदामो[3] •णमंसामो सक्कारेमो सम्माणेमो कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं° पज्जुवासामो। एयं णे इहभवे परभवे य हियाए[4] •सुहाए खमाए निस्सेयसाए° आणुगामियत्ताए भविस्सइ॥

दद्दुरस्स समवसरणं पइ गमण-पदं

३९. तए णं तस्स दद्दुरस्स बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु समणे भगवं महावीरे समोसढे। तं गच्छामि णं समणं भगवं महावीरं वंदामि[5]—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता नंदाओ पोक्खरिणीओ सणियं-सणियं पच्चुत्तरेइ[6], जेणेव रायमग्गे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ताए उक्किट्ठाए[7] दद्दुरगईए वीईवयमाणे-वीईवयमाणे जेणेव ममं अंतिए तेणेव पहारेत्थ गमणाए॥

४०. इमं च णं सेणिए राया भंभसारे[8] ण्हाए जाव[9] सव्वालंकारविभूसिए हत्थिखंधवरगए सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं सेयवरचामरेहि य उद्धुव्वमाणेहिं महयाहय-गय-रह-भड-चडगर-[कलियाए ?] चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडे मम पायवंदए हव्वमागच्छइ॥

दद्दुरस्स मच्चु-पदं

४१. तए णं से दद्दुरे सेणियस्स रण्णो एगेणं आसकिसोरएणं वामपाएणं अक्कंते समाणे अंतनिग्घाइए कए यावि होत्था॥

४२. तए णं से दद्दुरे अथामे अबले अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे अधारणिज्जमित्ति कट्टु एगंतमवक्कमइ, करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी—नमोत्थु णं अरहंताणं जाव[10] सिद्धिगइनामधेज्जं ठाणं संपत्ताणं। नमोत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव[11] सिद्धिगइनामधेज्जं ठाणं

---

१. ण्हाइ ३ (क, ख, ग); ण्हाणे य ३ (घ)। असौ पाठः ३४ सूत्रेण पूरितः।
२. सं० पा०—अण्णमण्णं जाव समणे।
३. सं० पा०—वंदामो जाव पज्जुवासामो।
४. हियाए (क, ख, ग) सं० पा०—हियाए जाव आणुगामियत्ताए।
५. पू०—ना० १।१३।३७।
६. उत्तरेइ, २ (ख)।
७. उक्किट्ठाए ५ (क, ख)।
८. भिंभिसारे (क); भिंभसारे (ख); भिंभासारे (घ)।
९. ना० १।१।८१।
१०,११. ओ० सू० २१।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संपाविउकामस्स। पुव्विंपि य णं मए समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए थूलए पाणाइवाए पच्चक्खाए[1], •थूलए मुसावाए पच्चक्खाए, थूलए अदिण्णादाणे पच्चक्खाए, थूलए मेहुणे पच्चक्खाए°, थूलए परिग्गहे पच्चक्खाए। तं इयाणिं पि तस्सेव अंतिए सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि जाव सव्वं परिग्गहं पच्चक्खामि जावज्जीवं, सव्वं असण-पाण-खाइम-साइमं पच्चक्खामि जावज्जीवं। जंपि य इमं सरीरं इट्ठं कंतं जाव[2] मा णं विविहा रोगायंका परीसहोवसग्गा फुसंतु एयंपि य णं चरिमेहिं ऊसासेहिं वोसिरामि त्ति कट्टु ।।

४३. तए णं से दद्दुरे कालमासे कालं किच्चा जाव[3] सोहम्मे कप्पे दद्दुरवडिंसए विमाणे उववायसभाए दद्दुरदेवत्ताए उववण्णे। एवं खलु गोयमा ! दद्दुरेणं सा दिव्वा देविड्ढी लद्धा पत्ता अभिसमण्णागया ।।

४४. दद्दुरस्स णं भंते ! देवस्स केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ?
गोयमा ! चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। से णं दद्दुरे देवे महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ[4] •मुच्चिहिइ परिनिव्वाहिइ सव्वदुक्खाणं° अंतं करेहिइ ।।

निक्खेव-पदं

४५. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[5] संपत्तेणं तेरसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते।

—त्ति बेमि ।।

वृत्तिकृता समुद्धृता निगमनगाथा—

संपन्नगुणो वि जओ[6], सुसाहु-संसग्गवज्जिओ पायं।
पावइ गुणपरिहाणिं, दद्दुरजीवोव्व मणियारो ।।१।।

अथवा—

तित्थयर-वंदणत्थं, चलिओ भावेण पावए सग्गं।
जह दद्दुरदेवेणं, पत्तं वेमाणिय-सुरत्तं ।।२।।

---

१. सं० पा०—पच्चक्खाए जाव थूलए।
२. ना० १।१।२०६।
३. ना० १।१।२११।
४. सं० पा०—बुज्झिहिइ जाव अंतं।
५. ना० १।१।७।
६. जिओ (ख, ग)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चोद्दसमं अज्झयणं

तेयली

उक्खेव-पदं

१. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[1] संपत्तेणं तेरसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, चोद्दसमस्स णं भंते ! नायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?

२. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं तेयलिपुरं नाम नयरं। पमयवणे उज्जाणे। कणगरहे राया।।

३. तस्स णं कणगरहस्स पउमावई देवी ।।

४. तस्स णं कणगरहस्स तेयलिपुत्ते नामं अमच्चे—'साम-दंड'[2]-•भेय-उवप्पयाण-नीति-सुपउत्त-नयविहण्णू[3] विहरइ ।।

५. तत्थ णं तेयलिपुरे कलादे नामं मूसियारदारए होत्था—अड्ढे जाव[4] अपरिभूए।।

६. तस्स णं भद्दा नामं भारिया ।।

७. तस्स णं कलायस्स मूसियारदारगस्स धूया भद्दाए अत्तया[5] पोट्टिला नामं दारिया होत्था—रूवेण य जोव्वणेण[6] य लावण्णेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठ-सरीरा ।।

पोट्टिलाए कीडा-पदं

८. तए णं सा पोट्टिला दारिया अण्णया कयाइ ण्हाया सव्वालंकारविभूसिया चेडिया-चक्कवाल-संपरिवुडा उप्पिं पासायवरगया आगासतलगंसि कणग[7]-तिंदूसएणं कीलमाणी-कीलमाणी विहरइ ।।

---

१. ना० १।१।७।

२. सं० पा०—साम-दंड०। असौ अपूर्णः पाठः 'जाव' आदिपूर्तिसंकेत-रहितोस्ति।

३. पू०—ना० १।१।१६।

४. ना० १।५।७।

५. अत्तिया (क, ख, ग)।

६. × (ग)।

७. कणगमयेण (घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तेयलिपुत्तस्स आसत्ति-पदं

९. इमं च णं तेयलिपुत्ते अमच्चे ण्हाए आसखंधवरगए महया-भड-चडगर-आसवाहणियाए निज्जायमाणे कलायस्स मूसियारदारगस्स गिहस्स अदूरसामंतेणं वीईवयइ ।।

१०. तए णं से तेयलिपुत्ते अमच्चे मूसियारदारगस्स गिहस्स अदूरसामंतेणं वीईवयमाणे-वीईवयमाणे पोट्टिलं दारियं उप्पिं आगासतलगंसि कणग-तिंदूसएणं कीलमाणिं पासइ, पासित्ता पोट्टिलाए दारियाए रूवे य जोव्वणे य लावण्णे य अज्झोववण्णे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एस णं देवाणुप्पिया ! कस्स दारिया किं नामधेज्जा वा ?

११. तए णं कोडुंबियपुरिसा तेयलिपुत्तं एवं वयासी—एस णं सामी ! कलायस्स मूसियारदारयस्स धूया भद्दाए अत्तया पोट्टिला नामं दारिया—रूवेण य[1] •जोव्वणेण य लावण्णेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठ°सरीरा ।।

पोट्टिलाए वरण-पदं

१२. तए णं से तेयलिपुत्ते आसवाहणियाओ पडिणियत्ते समाणे अब्भितरठाणिज्जे पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! कलायस्स मूसियारदारयस्स धूयं भद्दाए अत्तयं पोट्टिलं दारियं मम भारियत्ताए वरेह ।।

१३. तए णं ते अब्भितरठाणिज्जा पुरिसा तेयलिणा एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा करयल[2]•परिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु "एवं सामी"! तहत्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता तेयलिस्स अंतियाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता° जेणेव कलायस्स मूसियारदारयस्स गिहे तेणेव उवागया ।।

१४. तए णं से कलाए मूसियारदारए ते पुरिसे एज्जमाणे पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठे आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता आसणेणं उवणिमंतेइ, उवणिमंतेत्ता आसत्थे वीसत्थे सुहासणवरगए एवं वयासी—संदिसंतु णं देवाणुप्पिया ! किमागमणपओयणं ?

१५. तए णं ते अब्भितरठाणिज्जा पुरिसा कलायं मूसियारदारयं एवं वयासी—अम्हे णं देवाणुप्पिया ! तव धूयं भद्दाए अत्तयं पोट्टिलं दारियं तेयलिपुत्तस्स भारियत्ताए वरेमो । तं जइ णं जाणसि[3] देवाणुप्पिया ! जुत्तं वा पत्तं वा

---

१. सं० पा०—रूवेण य जाव सरीरा ।

२. सं० पा०—करयल तहत्ति जेणेव ।

३. जाणासि (ग) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सलाहणिज्जं वा सरिसो वा संजोगो वा दिज्जउ णं पोट्टिला दारिया तेयलिपुत्तस्स। तो[1] भण देवाणुप्पिया ! किं दलामो सुंकं[2] ॥

१६. तए णं कलाए मूसियारदारए ते अब्भितरठाणिज्जे पुरिसे एवं वयासी—एस चेव णं देवाणुप्पिया ! मम सुंके जण्णं तेयलिपुत्ते मम दारियानिमित्तेणं अणुग्गहं करेइ। ते अब्भितरठाणिज्जे पुरिसे विपुलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पुप्फ-वत्थ-गंध[3]-मल्लालंकारेणं सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ ॥

१७. [तए णं ते अब्भितरठाणिज्जा पुरिसा[4] ?] कलायस्स मूसियारदारयस्स गिहाओ पडिनियत्तंति[5], जेणेव तेयलिपुत्ते अमच्चे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तेयलिपुत्तं अमच्चं एयमट्ठं निवेइंति[6] ॥

पोट्टिलाए विवाह-पदं

१८. तए णं कलाए मूसियारदारए अण्णया कयाइ सोहणंसि तिहि-करण-नक्खत्त-मुहुत्तंसि पोट्टिलं दारियं ण्हायं सव्वालंकारविभूसियं सीयं दुरुहेत्ता मित्त-नाइ[7]-•नियग-सयण-संबंधि-परियणेणं सद्धिं॰ संपरिवुडे साओ गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता सव्विड्ढीए[8] तेयलिपुरं नयरं मज्झंमज्झेणं जेणेव तेयलिस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, पोट्टिलं दारियं तेयलिपुत्तस्स सयमेव भारियत्ताए दलयइ ॥

१९. तए णं तेयलिपुत्ते पोट्टिलं दारियं भारियत्ताए उवणीयं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठे पोट्टिलाए सद्धिं पट्टयं दुरुहइ, दुरुहित्ता सेयापीएहिं[9] कलसेहिं अप्पाणं मज्जावेइ, मज्जावेत्ता अग्गिहोमं कारेइ, कारेत्ता पाणिग्गहणं करेइ, करेत्ता पोट्टिलाए भारियाए[10] मित्त-नाइ[11]-•नियग-सयण-संबंधि॰-परियणं विउलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पुप्फ-वत्थ[12]-•गंध-मल्लालंकारेणं सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता॰ पडिविसज्जेइ ॥

२०. तए णं से तेयलिपुत्ते पोट्टिलाए भारियाए अणुरत्ते अविरत्ते उरालाइं[13] •माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे॰ विहरइ ॥

---

१. ता (क, घ)।
२. सुक्कं (घ)।
३. जाव (ख, घ)।
४. कोष्ठकान्तर्गतः पाठः प्रतिषु नोपलभ्यते।
५. नियत्तंति २ (क, ख, ग); पडिनिक्खमइ (घ)।
६. निवेयंति (ख); निवेत्तेति (ग)।
७. सं० पा०—नाइ०।
८. पू०—ना० १।१।३३।
९. सेयपीएहिं (ग)।
१०. भारियाए सद्धिं (घ)।
११. सं० पा०—नाइ जाव परियणं।
१२. सं० पा०—वत्थ जाव पडिविसज्जेइ।
१३. सं० पा०—उरालाइं जाव विहरइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कणगरहस्स रज्जासत्ति-पदं

२१. तए णं से कणगरहे राया रज्जे य रट्ठे य बले य वाहणे य कोसे य कोट्ठागारे य 'पुरे य'[1] अंतेउरे य मुच्छिए गढिए गिद्धे अज्झोववण्णे जाए, जाए पुत्ते वियंगेइ— अप्पेगइयाणं हत्थंगुलियाओ छिंदइ, अप्पेगइयाणं हत्थंगुट्ठए छिंदइ, [2]•अप्पेगइयाणं पायंगुलियाओ छिंदइ, अप्पेगइयाणं पायंगुट्ठए छिंदइ, अप्पेगइयाणं कण्णसक्कुलीओ छिंदइ, अप्पेगइयाणं° नासापुडाइं फालेइ, अप्पेगइयाणं अंगोवंगाइं वियत्तेइ[3] ॥

पउमावईए अमच्चेण मंतणा-पदं

२२. तए णं तीसे पउमावईए देवीए अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु कणगरहे राया रज्जे य[4] •रट्ठे य बले य वाहणे य कोसे य कोट्ठागारे य पुरे य अंतेउरे य मुच्छिए गढिए गिद्धे अज्झोववण्णे जाए, जाए पुत्ते वियंगेइ— अप्पेगइयाणं हत्थंगुलियाओ छिंदइ, अप्पेगइयाणं हत्थंगुट्ठए छिंदइ, अप्पेगइयाणं पायंगुलियाओ छिंदइ, अप्पेगइयाणं पायंगुट्ठए छिंदइ, अप्पेगइयाणं कण्णसक्कुलीओ छिंदइ, अप्पेगइयाणं नासापुडाइं फालेइ, अप्पेगइयाणं° अंगमंगाइं वियत्तेइ[5]। तं जइ णं अहं दारयं पयायामि, सेयं खलु मम तं दारगं कणगरहस्स रहस्सिययं[6] चेव सारक्खमाणीए संगोवेमाणीए विहरित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता तेयलिपुत्तं अमच्चं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! कणगरहे राया रज्जे य[7] •रट्ठे य बले य वाहणे य कोसे य कोट्ठागारे य पुरे य अंतेउरे य मुच्छिए गढिए गिद्धे अज्झोववण्णे जाए, जाए पुत्ते वियंगेइ— अप्पेगइयाणं हत्थंगुलियाओ छिंदइ, अप्पेगइयाणं हत्थंगुट्ठए छिंदइ, अप्पेगइयाणं पायंगुलियाओ छिंदइ, अप्पेगइयाणं पायंगुट्ठए छिंदइ, अप्पेगइयाणं कण्णसक्कुलीओ छिंदइ, अप्पेगइयाणं नासापुडाइं फालेइ, अप्पेगइयाणं अंगोवंगाइं° वियत्तेइ। तं जइ णं अहं देवाणुप्पिया! दारगं पयायामि, तए णं तुमं कणगरहस्स रहस्सिययं चेव अणुपुव्वेणं सारक्खमाणे संगोवेमाणे संवड्ढेहि। तए णं से

---

१. × (क, ख, ग, घ)। १।१।१६ सूत्रवद् अत्रापि 'पुरे य' इति पाठो युज्यते।

२. सं० पा०—एवं पायंगुलियाओ पायंगुट्ठए वि कण्णसक्कुलीओ वि नासापुडाइं।

३. वियंगेइ (क, घ)।

४. सं० पा०—रज्जे य जाव वियंगेइ जाव अंगमंगाइं।

५. वियंगेइ (क, ख, ग, घ); २१ सूत्रानुसारेण अत्र 'वियत्तेइ' त्ति पाठेन भवितव्यम्। अतोऽस्माभिः स एव स्वीकृतः।

६. रहस्सिगतं (क); रहसिययं (ख, ग)।

७. सं० पा०—रज्जे य जाव वियत्तेइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दारए उम्मुक्कबालभावे[1] •विण्णय-परिणयमेत्ते° जोव्वणगमणुप्पत्ते 'तव मम य'[2] भिक्खाभायणे[3] भविस्सइ ।।

२३. तए णं से तेयलिपुत्ते अमच्चे पउमावईए देवीए एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता पडिगए ।।

अवच्च-परिवत्तण-पदं

२४. तए णं पउमावई देवी पोट्टिला य अमच्ची सममेव गब्भं गेण्हंति, सममेव परिवहंति ।।

२५. तए णं सा पउमावई देवी नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं जाव[4] पियदंसणं सुरूवं दारगं पयाया । जं रयणिं च णं पउमावई देवी दारयं पयाया तं रयणिं च णं पोट्टिला वि अमच्ची नवण्हं मासाणं विणिहायमावन्नं दारियं पयाया ।।

२६. तए णं सा पउमावई देवी अम्मधाइं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुमं अम्मो ! तेयलिपुत्तं रहस्सिययं[5] चेव सद्दावेहि ।।

२७. तए णं सा अम्मधाई तहत्ति पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता अंतेउरस्स अवदारेणं[6] निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव तेयलिस्स गिहे जेणेव तेयलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल[7]•परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु° एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! पउमावई देवी सद्दावेइ ।।

२८. तए णं तेयलिपुत्ते अम्मधाईए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा हट्ठतुट्ठे अम्मधाईए सद्धिं साओ गिहाओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता अंतेउरस्स अवदारेणं रहस्सिययं चेव अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता जेणेव पउमावई देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल[8]•परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु° एवं वयासी—संदिसंतु णं देवाणुप्पिया ! जं[9] मए कायव्वं ।।

२९. तए णं पउमावई देवी तेयलिपुत्तं एवं वयासी—एवं खलु कणगरहे राया जाव[10] पुत्ते वियंगेइ । अहं च णं देवाणुप्पिया ! दारगं पयाया । तं तुमं णं देवाणुप्पिया ! एयं दारगं गेण्हाहि जाव[11] तव मम य भिक्खाभायणे[12] भविस्सइ त्ति कट्टु तेयलिपुत्तस्स हत्थे दलयइ ।।

---

१. सं० पा०—उम्मुक्कबालभावे जाव जोव्वणगमणुप्पत्ते ।
२. तव य मम य (क); तव मम (ग, घ) ।
३. भिक्खायभातणे (ग) ।
४. ओ० सू० १४३ ।
५. रहस्सियं (क, ग) ।
६. अवद्दारेणं (ग) ।
७. सं० पा०—करयल जाव एवं ।
८. सं० पा०—करयल जाव एवं ।
९. देवाणुप्पिए (घ) ।
१०. ना० १।१४।२१ ।
११. ना० १।१४।२३ ।
१२. भिक्खायभायणे (ग) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३०. तए णं तेयलिपुत्ते पउमावईए हत्थाओ दारगं गेण्हइ, उत्तरिज्जेणं पिहेइ, अंतेउरस्स रहस्सिययं अवदारेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव सए गिहे जेणेव पोट्टिला भारिया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोट्टिलं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिए ! कणगरहे राया जाव[1] पुत्ते वियंगेइ। अयं च णं दारए कणगरहस्स पुत्ते पउमावईए अत्तए। तन्नं तुमं देवाणुप्पिए ! इमं दारगं कणगरहस्स रहस्सिययं चेव अणुपुव्वेणं सारक्खाहि य संगोवेहि[2] य संवड्ढेहि य। तए णं एस दारए उम्मुक्कबालभावे तव य मम य पउमावईए य आहारे भविस्सइ त्ति कट्टु पोट्टिलाए पासे निक्खिवइ, निक्खिवित्ता पोट्टिलाए पासाओ तं विणिहायमावण्णियं दारियं गेण्हइ, गेण्हित्ता उत्तरिज्जेणं पिहेइ, पिहेत्ता अंतेउरस्स अवदारेणं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता जेणेव पउमावई देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पउमावईए देवीए पासे ठावेइ जाव पडिनिग्गए ।।

दारियाए मयकिच्च-पदं

३१. तए णं तीसे पउमावईए देवीए अंगपडियारियाओ पउमावइं देविं विणिहायमावण्णियं च दारियं पयायं पासंति, पासित्ता जेणेव कणगरहे राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल[3]•परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु° एवं वयासी—एवं खलु सामी ! पउमावई देवी मएल्लियं दारियं पयाया ।।

३२. तए णं कणगरहे राया तीसे मएल्लियाए दारियाए नीहरणं करेइ, बहूइं लोगियाइं मयकिच्चाइं करेइ, करेत्ता कालेणं विगयसोए जाए ।।

अमच्चपुत्तस्स उस्सव-पद

३३. तए णं से तेयलिपुत्ते कल्लं कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! चारगसोहणं[4] •करेह जाव[5] ठिइपडियं दसदेवसियं करेह, कारवेह य, एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ।।

३४. तेवि तहेव करेंति, तहेव पच्चप्पिणंति° ।।

३५. जम्हा णं अम्हं एस दारए कणगरहस्स रज्जे जाए तं होउ णं दारए नामेणं कणगज्झए जाव[6] अलंभोगसमत्थे जाए ।।

पोट्टिलाए अप्पियत्त-पदं

३६. तए णं सा पोट्टिला अण्णया कयाइ तेयलिपुत्तस्स अणिट्ठा अकंता अप्पिया

---

१. ना० १।१४।२१।
२. संगोवाहि (ख, ग, घ)।
३. सं० पा०—करयल°।
४. सं० पा०—चारगसोहणं जाव ठिइपडियं।
५. ना० १।१।७६-७८।
६. ना० १।१।८१-८८।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अमणुण्णा अमणामा जाया यावि होत्था—नेच्छइ णं तेयलिपुत्ते पोट्टिलाए नामगोयमवि सवणयाए, किं पुण दंसणं वा परिभोगं वा ?

३७. तए णं तीसे पोट्टिलाए अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं तेयलिस्स पुव्विं इट्ठा कंता पिया मणुण्णा मणामा आसि, इयाणि अणिट्ठा अकंता अप्पिया अमणुण्णा अमणामा जाया। नेच्छइ णं तेयलिपुत्ते मम नाम[1] •गोयमवि सवणयाए, किं पुण दंसणं वा° परिभोगं वा ? [ति कट्टु ?] ओहयमणसंकप्पा[2] •करतलपल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया° झियायइ ।।

पोट्टिलाए दाणसाला-पदं

३८. तए णं तेयलिपुत्ते पोट्टिलं ओहयमणसंकप्पं[3] •करतलपल्हत्थमुहिं अट्टज्झाणोवगयं° झियायमाणिं पासइ, पासित्ता एवं वयासी—मा णं तुमं देवाणुप्पिए ! ओहयमणसंकप्पा[4] •करतलपल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया° झियाहि। तुमं णं मम महाणसंसि विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडावेहि, उवक्खडावेत्ता बहूणं समण-माहण[5]-•अतिहि-किवण-°-वणीमगाणं देयमाणी य दवावेमाणी[6] य विहराहि ।।

३९. तए णं सा पोट्टिला तेयलिपुत्तेणं अमच्चेणं एवं वुत्ता समाणी[7] हट्ठा तेयलिपुत्तस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता कल्लाकल्लिं महाणसंसि विपुलं असण-[8] •पाण-खाइम-साइमं उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता बहूणं समण-माहण-अतिहि किवण-वणीमगाणं देयमाणी य° दवावेमाणी य विहरइ ।।

अज्जा-संघाडगस्स भिक्खायरियागमण-पदं

४०. तेणं कालेणं तेणं समएणं सुव्वयाओ नामं अज्जाओ इरियासमियाओ[9] •भासासमियाओ एसणासमियाओ आयाण-भंड-मत्त-णिक्खेवणासमियाओ उच्चार-पासवण-खेल-सिंघाण-जल्ल-पारिट्ठावणियासमियाओ मणसमियाओ वइसमियाओ कायसमियाओ मणगुत्ताओ वइगुत्ताओ कायगुत्ताओ गुत्ताओ गुत्तिंदियाओ° गुत्तबंभचारिणीओ बहुस्सुयाओ बहुपरिवाराओ पुव्वाणुपुव्विं

---

१. सं० पा०—नाम जाव परिभोगं।
२. सं० पा०—ओहयमणसंकप्पा जाव झियायइ।
३. सं० पा०—ओहयमणसंकप्पं जाव झियायमाणिं।
४. सं० पा०—ओहयमणसंकप्पा°।
५. सं० पा०—माहण जाव वणीमगाणं।
६. देवावेमाणी (क)।
७. समाणा (ख, ग)।
८. सं० पा०—असणं जाव दवावेमाणी।
९. सं० पा०—इरियासमियाओ जाव गुत्तबंभचारिणीओ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चरमाणीओ जेणामेव तेयलिपुरे नयरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हंति, ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणीओ विहरंति ॥

४१. तए णं तासिं सुव्वयाणं अज्जाणं एगे संघाडए पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेइ[1], •बीयाए पोरिसीए झाणं झियाइ, तइयाए पोरिसीए अतुरियमचवल-मसंभंते मुहपोत्तियं पडिलेहेइ, भायणवत्थाणि पडिलेहेइ, भायणाणि पमज्जेइ, भायणाणि ओग्गाहेइ, जेणेव सुव्वयाओ अज्जाओ तेणेव उवागच्छइ, सुव्वयाओ अज्जाओ वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामो णं तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए तेयलीपुरे नयरे उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडित्तए ।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेहि ॥

४२. तए णं ताओ अज्जाओ सुव्वयाहिं अज्जाहिं अब्भणुण्णाया समाणीओ सुव्वयाणं अज्जाणं अंतियाओ पडिस्सयाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता अतुरियम-चवलमसंभंताए गतीए जुगंतरपलोयणाए दिट्ठीए पुरओ रियं सोहेमाणीओ तेयलीपुरे नयरे उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियं॰ अडमाणीओ तेयलिस्स गिहं अणुपविट्ठाओ ॥

पोट्टिलाए अमच्चपसायोवाय-पुच्छा-पदं

४३. तए णं सा पोट्टिला ताओ अज्जाओ एज्जमाणीओ पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठा आसणाओ अब्भुट्ठेइ, वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता विपुलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पडिलाभेइ, पडिलाभेत्ता एवं वयासी—एवं खलु अहं अज्जाओ ! तेयलिपुत्तस्स अमच्चस्स पुव्विं इट्ठा कंता पिया मणुण्णा मणामा आसि, इयाणिं अणिट्ठा[2] •अकंता अप्पिया अमणुण्णा अमणामा जाया । नेच्छइ णं तेयलीपुत्ते मम नामगोयमवि सवणयाए, किं पुण॰ दंसणं वा परिभोगं वा ? तं तुब्भे णं अज्जाओ बहुनायाओ बहुसिक्खियाओ[3] बहुपढियाओ बहूणि गामागर[4]-•णगर-खेड-कब्बड-दोणमुह-मडंब-पट्टण-आसम-निगम-संबाह-सण्णि-वेसाइं॰ आहिंडह, बहूणं राईसर[5]-•तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणा-वइ-सत्थवाहपभिईणं॰ गिहाइं अणुपविसह । तं अत्थियाइं भे अज्जाओ ! केइ कहिंचि चुण्णजोए वा 'मंतजोगे वा कम्मणजोए'[6] वा 'कम्मजोए वा'[7]

---

१. सं० पा०—करेइ जाव अडमाणीओ ।
२. सं० पा०—अणिट्ठा जाव दंसणं ।
३. × (क) ।
४. सं० पा०—गामागर जाव आहिंडह ।
५. सं० पा०—राईसर जाव गिहाइं ।
६. × (ग) ।
७. × (क, ख) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हियउड्डावणे वा काउड्डावणे[1] वा आभिओगिए वा वसीकरणे वा कोउयकम्मे वा भूइकम्मे वा मूले वा कंदे वा छल्ली वल्ली सिलिया वा गुलिया वा ओसहे वा भेसज्जे वा उवलद्धपुव्वे, जेणाहं तेयलिपुत्तस्स पुणरवि इट्ठा कंता पिया मणुण्णा मणामा भवेज्जामि ?

अज्जा-संघाडगस्स उत्तर-पदं

४४. तए णं ताओ अज्जाओ पोट्टिलाए एवं वुत्ताओ समाणीओ दोवि कण्णे ठएंति[2], ठवेत्ता पोट्टिलं एवं वयासी—अम्हे णं देवाणुप्पिए ! समणीओ निग्गंथीओ जाव[3] गुत्तबंभचारिणीओ। नो खलु कप्पइ अम्हं एयप्पगारं कण्णेहिं वि निसामित्तए, किमंग पुण उवदंसित्तए वा आयरित्तए वा ?अम्हे णं तव देवाणुप्पिए! विचित्तं केवलिपण्णत्तं धम्मं परिकहिज्जामो ॥

पोट्टिलाए साविया-पदं

४५. तए णं सा पोट्टिला ताओ अज्जाओ एवं वयासी—इच्छामि णं अज्जाओ ! तुब्भं अंतिए केवलिपण्णत्तं धम्मं निसामित्तए ॥

४६. तए णं ताओ अज्जाओ पोट्टिलाए विचित्तं केवलिपण्णत्तं धम्मं परिकहेंति ॥

४७. तए णं सा पोट्टिला धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठा एवं वयासी—सद्दहामि णं अज्जाओ ! निग्गंथं पावयणं जाव[4] से जहेयं तुब्भे वयह। इच्छामि णं अहं तुब्भं अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं—दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जित्तए।

अहासुहं देवाणुप्पिए !

४८. तए णं सा पोट्टिला तासिं अज्जाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं जाव[5] गिहिधम्मं पडिवज्जइ, ताओ अज्जाओ वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता पडिविसज्जेइ ॥

४९. तए णं सा पोट्टिला समणोवासिया जाया जाव[6] °समणे निग्गंथे फासुएणं एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं ओसहभेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं° पडिलाभेमाणी विहरइ ॥

पोट्टिलाए पव्वज्जा-पदं

५०. तए णं तीसे पोट्टिलाए अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुंबजागरियं

---

१. कायउड्डावणे वा निण्हवणे वा (क, ख); × (ग)।

२. अंगुलियं ठावेंति (ख); अंगुलियं छाएति (ख०)।

३. ना० १।१४।४०।

४. ना० १।१।१०१।

५. ना० १।१४।४७।

६. ना० १।५।४७। सं० पा०—जाया जाव पडिलाभेमाणी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जागरमाणीए अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुपज्जित्था—एवं खलु अहं तेयलिपुत्तस्स पुव्विं इट्ठा कंता पिया मणुण्णा मणामा आसि, इयाणिं अणिट्ठा[1] •अकंता अप्पिया अमणुण्णा अमणामा जाया। नेच्छइ णं तेयलीपुत्ते मम नामगोयमवि सवणयाए किं पुण दंसणं वा° परिभोगं वा? तं सेयं खलु ममं सुव्वयाणं अज्जाणं अंतिए पव्वइत्तए—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव[2] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते जेणेव तेयलिपुत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल[3]-•परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु° एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! मए सुव्वयाणं अज्जाणं अंतिए धम्मे निसंते[4], •से वि य मे धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए। तं इच्छामि णं तुब्भेहिं° अब्भणुण्णाया पव्वइत्तए॥

५१. तए णं तेयलिपुत्ते पोट्टिलं एवं वयासी—एवं खलु तुमं देवाणुप्पिए! मुंडा पव्वइया समाणी कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववज्जिहिसि। तं जइ णं तुमं देवाणुप्पिए! ममं ताओ देवलोगाओ आगम्म केवलिपण्णत्ते धम्मे बोहेहि, तो[5] हं विसज्जेमि। अह णं तुमं ममं न संबोहेसि, तो ते न विसज्जेमि॥

५२. तए णं सा पोट्टिला तेयलिपुत्तस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ॥

५३. तए णं तेयलिपुत्ते विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता मित्त-नाइ[6]-•नियग-सयण-संबंधि-परियणं° आमंतेइ जाव[7] सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पोट्टिलं ण्हायं[8] •सव्वालंकारविभूसियं° पुरिससहस्स-वाहिणीयं सीयं दुरुहित्ता मित्त-नाइ[9]-•नियग-सयण-संबंधि-परियणेणं सद्धिं° संपरिवुडे सव्विड्ढीए जाव[10] दुंदुहिनिग्घोसनाइय-रवेणं तेयलिपुरं मज्झंमज्झेणं जेणेव सुव्वयाणं उवस्सए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीयाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता पोट्टिलं पुरओ कट्टु जेणेव सुव्वया अज्जा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणु-प्पिया! मम पोट्टिला भारिया इट्ठा कंता पिया मणुण्णा मणामा। एस णं संसारभउव्विग्गा[11] •भीया जम्मण-जर-मरणाणं इच्छइ देवाणुप्पियाणं अंतिए

---

१. सं० पा०—अणिट्ठा जाव परिभोगं।
२. ना० १।१।२४।
३. सं० पा०—करयल°।
४. सं० पा०—निसंते जाव अब्भणुण्णाया।
५. ता (क, ख, ग)।
६. सं० पा०—नाइ जाव आमंतेइ।
७. ना० १।७।६।
८. सं० पा०—ण्हायं जाव पुरिससहस्सवाहिणीयं।
९. सं० पा०—नाइ जाव संपरिवुडे।
१०. ना० १।१।३३।
११. सं० पा०—संसारभउव्विग्गा जाव पव्वइत्तए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइत्तए। पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया! सिस्सिणिभिक्खं।

अहासुहं, मा पडिबंधं करेहि ॥

५४. तए णं सा पोट्टिला सुव्वयाहिं अज्जाहिं एवं वुत्ता समाणी हट्ठा उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमइ, अवक्कमित्ता सयमेव आभरणमल्लालंकारं ओमुयइ, ओमुइत्ता सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ, जेणेव सुव्वयाओ अज्जाओ तेणेव उवागच्छइ, वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—आलित्ते णं अज्जा! लोए एवं जहा देवाणंदा जाव[1] एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झोसेत्ता, सट्ठिं भत्ताइं अणसणेणं छेएत्ता आलोइय-पडिक्कंता समाहिपत्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववण्णा ॥

कणगरहस्स मच्चु-पदं

५५. तए णं से कणगरहे राया अण्णया कयाइ कालधम्मुणा संजुत्ते यावि होत्था ॥

५६. तए णं ते ईसर[2]-•तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह-पभिइणो रोयमाणा कंदमाणा विलवमाणा तस्स कणगरहस्स सरीरस्स महया इड्ढी-सक्कार-समुदएणं°नीहरणं करेंति, करेत्ता अण्णमण्णं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! कणगरहे राया रज्जे य जाव[3] मुच्छिए पुत्ते वियंगित्था। अम्हे णं देवाणुप्पिया! रायाहीणा रायाहिट्ठिया रायाहीणकज्जा। अयं च णं तेयली अमच्चे कणगरहस्स रण्णो सव्वट्ठाणेसु सव्वभूमियासु लद्धपच्चए दिन्नवियारे सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था। तं सेयं खलु अम्हं तेयलिपुत्तं अमच्चं कुमारं जाइत्तए त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता जेणेव तेयलिपुत्ते अमच्चे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तेयलिपुत्तं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! कणगरहे राया रज्जे य जाव मुच्छिए पुत्ते वियंगित्था[4]। अम्हे णं देवाणुप्पिया! रायाहीणा[5]• रायाहिट्ठिया° रायाहीणकज्जा। तुमं च णं देवाणुप्पिया! कणगरहस्स रण्णो सव्वठाणेसु[6]• सव्वभूमियासु लद्धपच्चए दिन्नवियारे° रज्जधुराचिंतए होत्था। तं जइ णं देवाणुप्पिया! अत्थि केइ

---

१. भग० ९।१५२, १५४, १५५।

२. सं० पा०—ईसर जाव नीहरणं।

३. ना० १।१४।२१।

४. वियंगेइ (क, ख, ग, घ)। यद्यपि सर्वासु प्रतिषु अत्र 'वियंगेइ' इति पाठः उपलभ्यते। अस्मिन्नेव सूत्रे 'वियंगित्था' इति पाठः वर्तते, तदनुसारेण स एव पाठः अस्माभिरत्र स्वीकृतः।

५. सं० पा०—रायाहीणा जाव रायाहीणकज्जा।

६. सं० पा०—सव्वठाणेसु जाव रज्जधुराचिंतए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुमारे रायलक्खणसंपण्णे अभिसेयारिहे तण्णं तुमं अम्हं[1] दलाहि, जण्णं[2] अम्हे महया-महया रायाभिसेएणं अभिसिंचामो ।।

कणगज्झयस्स रायाभिसेय-पदं

५७. तए णं तेयलिपुत्ते तेसिं ईसरपभिईणं एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता कणगज्झयं कुमारं ण्हायं जाव[3] सस्सिरीयं करेइ, करेत्ता तेसिं ईसरपभिईणं उवणेइ, उवणेत्ता एवं वयासी—एस णं देवाणुप्पिया! कणगरहस्स रण्णो पुत्ते पउमावईए देवीए अत्तए कणगज्झए नामं कुमारे अभिसेयारिहे रायलक्खणसंपण्णे, मए कणगरहस्स रण्णो रहस्सिययं संवड्ढिए[4]। एयं णं तुब्भे महया-महया रायाभिसेएणं अभिसिंचह। सव्वं च से[5] उट्ठाणपरियावणियं परिकहेइ ।।

५८. तए णं ते ईसरपभिइओ कणगज्झयं कुमारं महया-महया रायाभिसेएणं अभिसिंचंति ।।

५९. तए णं से कणगज्झए कुमारे राया जाए—महयाहिमवंत-महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे जाव[6] रज्जं पसासेमाणे[7] विहरइ ।।

तेयलिपुत्तस्स सम्माण-पदं

६०. तए णं सा पउमावई देवी कणगज्झयं रायं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एस णं पुत्ता! तव रज्जे[8] ● य रट्ठे य बले य वाहणे य कोसे य कोट्ठागारे य पुरे य ● अंतेउरे य, तुमं च तेयलिपुत्तस्स अमच्चस्स पभावेणं[9]। तं तुमं णं तेयलिपुत्तं अमच्चं आढाहि परिजाणाहि सक्कारेहि सम्माणेहि, इंतं अब्भुट्ठेहि, ठियं पज्जुवासेहि[10], वच्चंतं[11] पडिसंसाहेहि[12], अद्धासणेणं उवणिमंतेहि, भोगं च से अणुवड्ढेहि ।।

६१. तए णं से कणगज्झए पउमावईए तहत्ति वयणं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता तेयलिपुत्तं अमच्चं आढाइ[13] ●परिजाणाइ सक्कारेइ सम्माणेइ, इंतं अब्भुट्ठेइ, ठियं पज्जुवासेइ, वच्चंतं पडिसंसाहेइ, अद्धासणेणं उवणिमंतेइ●, भोगं च से अणुवड्ढेइ ।।

---

१. × (ग, घ)।
२. जाणं (ग, घ)।
३. ओ० सू० ६३।
४. संचिट्ठिए (ग)।
५. तेसिं (क, ख, ग)।
६. वण्णओ जाव (क, ख, ग, घ)। ओ० सू० १४।
७. पसाहेमाणे (ख)।
८. सं० पा०—रज्जे जाव अंतेउरे।
९. पहावेणं (क, घ)।
१०. पज्जुवासाहि (ख, ग)।
११. वयंतं (ग, घ)।
१२. पडिसाहेहि (क, ख)।
१३. सं० पा०—आढाइ जाव भोगं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पोट्टिलदेवेण तेयलिपुत्तस्स संबोह-पदं

६२. तए णं से पोट्टिले देवे तेयलिपुत्तं अभिक्खणं-अभिक्खणं केवलिपण्णत्ते धम्मे संबोहेइ, नो चेव णं से तेयलिपुत्ते संबुज्झइ ।।

६३. तए णं तस्स पोट्टिलदेवस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु कणगज्झए राया तेयलिपुत्तं आढाइ जाव[1] भोगं च से अणुवड्ढेइ[2], तए णं से तेयलिपुत्ते अभिक्खणं-अभिक्खणं संबोहिज्जमाणे वि धम्मे नो संबुज्झइ। तं सेयं खलु मम कणगज्झयं तेयलिपुत्ताओ विप्परिणामित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कणगज्झयं तेयलिपुत्ताओ विप्परिणामेइ ।।

६४. तए णं तेयलिपुत्ते कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव[3] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते ण्हाए[4] •कयबलिकम्मे कयकोउय-मंगल°-पायच्छित्ते आसखंधवरगए बहूहिं पुरिसेहिं सद्धिं संपरिवुडे साओ गिहाओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव कणगज्झए राया तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।।

६५. तए णं तेयलिपुत्तं अमच्चं जे जहा बहवे राईसर-तलवर[5] •माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाह°पभियओ[6] पासंति ते तहेव आढायंति परियाणंति अब्भुट्ठेंति, अंजलिपग्गहं[7] करेंति, इट्ठाहिं कंताहिं जाव[8] वग्गूहिं 'आलवमाणा य संलवमाणा'[9] य पुरओ य पिट्ठओ य पासओ य[10] समणुगच्छंति ।।

६६. तए णं से तेयलिपुत्ते जेणेव कणगज्झए तेणेव उवागच्छइ ।।

६७. तए णं से कणगज्झए तेयलिपुत्तं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता नो आढाइ[11] नो परियाणाइ नो अब्भुट्ठेइ, अणाढायमाणे[12] अपरियाणमाणे अणब्भुट्ठेमाणे परम्मुहे संचिट्ठइ ।।

६८. तए णं से तेयलिपुत्ते अमच्चे कणगज्झयस्स रण्णो अंजलिं करेइ। 'तओ य णं'[13] से कणगज्झए राया अणाढायमाणे[14] अपरियाणमाणे अणब्भुट्ठेमाणे तुसिणीए परम्मुहे संचिट्ठइ ।।

---

१. ना० १।१४।६० ।

२. वड्ढेइ (क, ख, ग, घ) ।

३. ना० १।१।२४ ।

४. सं० पा०—ण्हाए जाव पायच्छित्ते ।

५. सं० पा०—तलवर जाव पभियओ ।

६. पभितयो (क); पभिइओ (ग, घ) ।

७. °परिग्गहिए (क); °परिग्गहिय (घ); °परिग्गहं (ख, ग) ।

८. ना० १।१।४८ ।

९. आलवमाणे य संलवमाणे (ग) ।

१०. य मग्गओ (क, ख, ग, घ) । अत्र 'मग्गओ य' इति पाठोऽतिरिक्तः सम्भाव्यते। पिट्ठओ य मग्गओ य' एते द्वे अपि पदे समानार्थके स्तः। अस्याध्ययनस्यैव ७० सूत्रे 'मग्गओ य' इति पाठो नोपलभ्यते ।

११. आयाणति (क) ।

१२. अणायणमाणे ३(क); अणाढामीणे ३ (ग) ।

१३. तए णं (क, ख, घ) ।

१४. अणाढाइज्जमाणे ३ (क); अणाढामीणे (ख, ग); अणादिज्जमाणे (घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६९. तए णं तेयलिपुत्ते कणगज्झयं रायं विप्परिणयं जाणित्ता भीए[1] •तत्थे तसिए उव्विग्गे° संजायभए एवं वयासी—रुट्ठे णं मम कणगज्झए राया। हीणे[2] णं मम कणगज्झए राया। अवज्झाए[3] णं मम कणगज्झए राया। तं न नज्जइ णं मम केणइ कु-मारेण मारेहिइ त्ति कट्टु भीए तत्थे जाव सणियं-सणियं 'पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कित्ता'[4] तमेव आसखंधं दुरूहइ, दुरूहित्ता तेयलिपुरं मज्झंमज्झेणं जेणेव सए गिहे तेणेव पहारेत्थ गमणाए॥

७०. तए णं तेयलिपुत्तं जे जहा ईसर जाव[5] सत्थवाहप्पभियओ पासंति ते तहा नो आढायंति नो परियाणंति नो अब्भुट्ठेंति नो अंजलिपग्गहं करेंति, इट्ठाइं जाव[6] वग्गूहिं नो आलवंति नो संलवंति नो पुरओ य पिट्ठओ य पासओ य समणु-गच्छंति॥

७१. तए णं तेयलिपुत्ते अमच्चे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागए। जा वि य से तत्थ बाहिरिया परिसा भवइ, तं जहा—दासे इ वा पेसे इ वा भाइल्लए इ वा, सा वि य णं नो आढाइ नो परियाणाइ नो अब्भुट्ठेइ। जा वि य से अब्भिंतरिया परिसा भवइ, तं जहा—पिया इ वा माया इ वा[7] •भाया इ वा भगिणी इ वा भज्जा इ वा पुत्ता इ वा धूया इ वा° सुण्हा इ वा, सा वि य णं नो आढाइ नो परियाणाइ नो अब्भुट्ठेइ॥

तेलियपुत्तस्स मरणचेट्ठा-पदं

७२. तए णं से तेयलिपुत्ते जेणेव वासघरे जेणेव सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, उवा-गच्छित्ता सयणिज्जंसि निसीयइ, निसीइत्ता एवं वयासी—एवं खलु अहं सयाओ गिहाओ निग्गच्छामि तं चेव जाव[8] अब्भिंतरिया परिसा नो आढाइ नो परिया-णाइ नो अब्भुट्ठेइ। तं सेयं खलु मम अप्पाणं जीवियाओ ववरोवित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता तालउडं विसं आसगंसि पक्खिवइ। से य विसे नो कमइ॥

७३. तए णं से तेयलिपुत्ते अमच्चे नीलुप्पल[9]-•गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासं खुर-धारं° असिं खंधंसि ओहरइ। तत्थ वि य से धारा ओएल्ला[10]॥

७४. तए णं से तेयलिपुत्ते जेणेव असोगवणिया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पासगं गीवाए बंधइ, बंधित्ता रुक्खं दुरुहइ, दुरुहित्ता पासगं रुक्खे बंधइ, बंधित्ता अप्पाणं मुयइ। तत्थ वि य से रज्जू छिन्ना॥

---

१. सं० पा०—भीए जाव संजायभए।
२. प्रोत्स्येति गम्यते (वृ)।
३. पाठान्तरेण दुर्ध्यातोहं (वृ)।
४. पच्चोरुहइ २ (ग)।
५. ना० १।१४।६५।
६. ना० १।१।४८।
७. सं० पा०—माया इ वा जाव सुण्हा।
८. ना० १।१४।६४-७१।
९. सं० पा०—नीलुप्पल जाव असिं।
१०. ओइल्ला (ख); ओपल्ला (ग, घ); अवदीर्णा कुंठीभूता इत्यर्थः (वृ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७५. तए णं से तेयलिपुत्ते महइमहालियं सिलं गीवाए बंधइ, बंधित्ता अत्थाहमतारम-पोरिसीयंसि उदगंसि अप्पाणं मुयइ। तत्थ वि से थाहे जाए॥

७६. तए णं से तेयलिपुत्ते सुक्कंसि तणकूडंसि अगणिकायं पक्खिवइ, पक्खिवित्ता अप्पाणं मुयइ। तत्थ वि य से अगणिकाए विज्झाए[1]।

---

१. आवश्यकचूर्णौ (पृष्ठ ४९९,५००) समुद्धृते प्रस्तुताध्ययने अरण्यगमनस्य निर्देशोऽस्ति। तथा अन्योपि क्रमभेदो वर्तते। स च अतीव मननीयोस्ति, यथा—

ताहे तणकूडे अग्गि दातुं पविट्ठो, तत्थवि न झ्झति, ताहे अडविं पविसति, तत्थ पुरतो छिण्णगिरिसिहरकंदरप्पवाते पिट्ठतो कंपेमाणेव्व मेदिणितलं आकड्ढंतव्व पादवगणे विफोडेमाणेव्व अंबरतलं सव्वतमोरासिव्व पिंडिते पच्चक्खमिव सतं कतंते भीमे भीमारवं करेंते महावारणे समुट्ठिते, दोसु चक्खुनिवातेसु पयंडघणुजुत्तविप्पमुक्को पुंखमेत्तवसेसा धरणितलपवेसाणि सराणि पतंति हुतवहजालासहस्ससंकुलं समंततो पलित्तंव धगधगेति सव्वारण्णं, अइरुग्गतबालसूरगुंजद्धपुंजनिगरप्पगासं झियाति इंगालभूतं गिहं, ताहे चिंतेति—पोट्टिला जदि मे नित्थारेज्जति, एवं वयासी—आउसो पोट्टिला! आहता आयाणाहि।

ततेणं सा पोट्टिला पंचवण्णाइं सखिखिणीयाइं जाव एवं वयासी—आउसो तेतलिपुत्ता! एहि ता आदाणाहि, पुरतो छिण्णगिरिसिहरकंदरप्पवाते तं चेव जाव इंगालभूतं गिहं तं आउसो तेतलिपुत्ता! कहिं वयामो?

ततेणं से तेतली एवं वयासी—सद्धेतं खलु भो समणा वयंति, सद्धेयं खलु भो माहणा वयंति, अहमेगो असद्धेयं वदिस्सामि, एवं खलु अहं सह पुत्तेहिं अपुत्तो को मे तं सद्दहिस्सति? एवं सह मित्तेहिं० सह दारेहिं० सह वित्तेण०, सह परिग्गहेण० सह दासेहिं जाव दाणमाणसक्कारोवयारसंगहिते तेतलिपुत्तस्स सयणपरियणेवि तगं गते को मे तं सद्दहिस्सति?

एवं खलु तेतलिपुत्ते कणगज्झतेणं अवज्झातके को मे तं सद्दहिस्सति?

कालक्कमणीतिसत्थविसारदे तेतलिपुत्ते विसादं गतेति को मे तं सद्दहिस्सति?

ततेणं तेतलिपुत्तेणं तालपुडे विसे खइते सेविय पडिहतेत्ति को मे तं सद्दहिस्सति?

एवं असी वेहासे जले अग्गी जाव रण्णेवि पुरतो पवाते एमादि को मे तं सद्दहिस्सति? जातिकुलरूवविणओवयारसालिणी पोट्टिला मुसिकारधूता मिच्छं विपडिवण्णा को मे तं सद्दहिस्सति?

ताहे पोट्टिला भणति—एहि ता आदाणाहि, भीतस्स खलु भो पवज्जा ताणं, आतुरस्स भेसज्जं किच्चं अभिउत्तस्स पच्चयकरणं संतस्स वाहणकिच्चं महाजले वाहणकिच्चं माइस्स रहस्सकिच्चं उक्कंठितस्स देसगमणकिच्चं छुहितस्स भोयणकिच्चं पिवासितस्स पाणकिच्चं सोहातुरस्स जुवतिकिच्चं परं अभियुंजितुकामस्स सहायकिच्चं खंतस्स दंतस्स गुत्तस्स जितेंदियस्स एत्तो एगमवि न भवति। सुट्ठु-सुट्ठु तण्णं तुमं तेतलिपुत्ता। एयमट्ठं आदाणाहित्ति कट्टु दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयति, वइत्ता जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगता।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तेयलिपुत्तस्स विम्हयकरण-पदं

७७. तए णं से तेयलिपुत्ते एवं वयासी—सद्धेयं खलु भो ! समणा वयंति । सद्धेयं खलु भो ! माहणा वयंति । सद्धेयं खलु भो ! समण-माहणा वयंति । अहं एगो असद्धेयं वयामि । एवं खलु—

अहं सह पुत्तेहिं अपुत्ते । को मेदं सद्दहिस्सइ ?
सह मित्तेहिं अमित्ते । को मेदं सद्दहिस्सइ ?
[1]•सह अत्थेणं अणत्थे । को मेदं सद्दहिस्सइ ?
सह दारेणं अदारे । को मेदं सद्दहिस्सइ ?
सह दासेहिं अदासे । को मेदं सद्दहिस्सइ ?
सह पेसेहिं अपेसे । को मेदं सद्दहिस्सइ ?
सह परिजणेणं अपरिजणे । को मेदं सद्दहिस्सइ ? °

एवं खलु तेयलिपुत्तेणं अमच्चेणं कणगज्झएणं रण्णा अवज्झाएणं समाणेणं तालपुडगे विसे आसगंसि पक्खित्ते । से वि य नो कमइ । को मेयं सद्दहिस्सइ ? तेयलिपुत्तेणं नीलुप्पल[2]-•गवलगुलिय-अयसि-कुसुमप्पगासे खुरधारे असी° खंधंसि ओहरिए । तत्थ वि य से धारा ओएल्ला । को मेयं सद्दहिस्सइ ? तेयलिपुत्तेणं पासगं गीवाए बंधित्ता[3] •रुक्खं दुरूढे, पासगं रुक्खे बंधित्ता अप्पा मुक्के । तत्थ वि य से° रज्जू छिन्ना । को मेयं सद्दहिस्सइ ? तेयलिपुत्तेणं महइमहालियं[4] •सिलं गीवाए बंधित्ता अत्थाहमतारमपोरिसीयंसि° उदगंसि अप्पा मुक्के । तत्थ वि य णं से थाहे जाए । को मेयं सद्दहिस्सइ ? तेयलिपुत्तेणं सुक्कंसि तणकूडंसि[5] •अगणिकायं पक्खिवित्ता अप्पा मुक्के । तत्थ वि य से° अग्गी विज्झाए । को मेयं सद्दहिस्सइ ?—ओहयमणसंकप्पे[6] •करतलपल्हत्थमुहे अट्टज्झाणोवगए° झियायइ[7] ॥

पोट्टिलदेवस्स संवाद-पदं

७८. तए णं से पोट्टिले देवे पोट्टिलारूवं विउव्वइ, विउव्वित्ता तेयलिपुत्तस्स अदूर-सामंते ठिच्चा एवं वयासी—हं भो तेयलिपुत्ता ! पुरओ पवाए, पिट्ठओ हत्थि-भयं, दुहओ अचक्खुफासे, मज्झे सराणि वरिसंति[8] । गामे पलित्ते रण्णे झियाइ, रण्णे पलित्ते गामे झियाइ । आउसो तेयलिपुत्ता ! कओ वयामो ?

---

१. सं० पा०—एवं अत्थेणं दारेणं दासेहिं पेसेहिं परिजणेणं ।
२. सं० पा०—नीलुप्पल जाव खंधंसि ।
३. सं० पा०—बंधित्ता जाव रज्जू ।
४. सं० पा०—महालियं जाव बंधित्ता अत्थाह जाव उदगंसि ।
५. सं० पा०—तणकूडे °
६. स० पा०—ओहयमणसंकप्पे जाव झियायइ ।
७. झियाति (क, ख, ग) ।
८. पतंति (वृ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७९. तए णं से तेयलिपुत्ते पोट्टिलं एवं वयासी—भीयस्स खलु भो ! पव्वज्जा[1], उक्कंठियस्स सदेसगमणं, छुहियस्स[2] अन्नं, तिसियस्स पाणं, आउरस्स भेसज्जं माइयस्स रहस्सं, अभिजुत्तस्स पच्चयकरणं, अद्धाणपरिसंतस्स वाहणगमणं, तरिउकामस्स पवहणकिच्चं, परं अभिउंजिउकामस्स सहायकिच्चं। खंतस्स दंतस्स जिइंदियस्स एत्तो एगमवि न भवइ ॥

८०. तए णं से पोट्टिले देवे तेयलिपुत्तं अमच्चं एवं वयासी—सुट्ठु णं तुमं तेयलिपुत्ता ! एयमट्ठं आयाणाहि त्ति कट्टु दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयइ, वइत्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ॥

तेयलिपुत्तस्स जाईसरणपुव्वं पव्वज्जा-पदं

८१. तए णं तस्स तेयलिपुत्तस्स सुभेणं परिणामेणं जाईसरणे समुप्पन्ने ॥

८२. तए णं तेयलिपुत्तस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं इहेव जंबुद्दीवे दीवे महाविदेहे वासे पोक्खलावईए विजए पोंडरीगिणीए रायहाणीए महापउमे नामं राया होत्था। तए णं हं थेराणं अंतिए मुंडे भवित्ता[3] •पव्वइए सामाइयमाइयाइं° चोद्दसपुव्वाइं अहिज्जित्ता बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए महासुक्के कप्पे 'देवत्ताए उववण्णे'[4]। तए णं हं ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता इहेव तेयलिपुरे तेयलिस्स अमच्चस्स भद्दाए भारियाए दारगत्ताए पच्चायाए। तं सेयं खलु मम पुव्वुद्दिट्ठाइं[5] महव्वयाइं[6] सयमेव उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता सयमेव महव्वयाइं[7] आरुहेइ, आरुहेत्ता जेणेव पमयवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलापट्टयंसि सुहनिसण्णस्स अणुचिंतेमाणस्स पुव्वाहीयाइं सामाइयमाइयाइं चोद्दसपुव्वाइं सयमेव अभिसमण्णागयाइं ॥

केवलणाण-पदं

८३. तए णं तस्स तेयलिपुत्तस्स अणगारस्स सुभेणं परिणामेणं[8] •पसत्थेणं अज्झवसाणेणं लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं° तयावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं कम्मरयविकरणकरं अपुव्वकरणं पविट्ठस्स केवलवरनाणदंसणे समुप्पण्णे ॥

---

१. सरणं इति गम्यते (वृ)।
२. छायस्स (क, ख, ग)।
३. सं० पा०—भवित्ता जाव चोद्दसपुव्वाइं।
४. देवे (क, ख, ग)।
५. पुव्वदिट्ठाइं (ख)।
६. पंच महव्वयाइं (घ)।
७. पंच महव्वयाइं (घ)।
८. सं० पा०—परिणामेणं जाव तयावरणिज्जाणं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८४. तए णं तेयलिपुरे नयरे अहासन्निहिएहिं वाणमंतरेहिं देवेहिं देवीहि य देवदुंदुहीओ समाहयाओ, दसद्धवण्णे कुसुमे निवाइए, चेलुक्खेवे[१] दिव्वे गीयगंधव्वनिनाए कए यावि होत्था ।।

कणगज्झयस्स सावगधम्म-पदं

८५. तए णं से कणगज्झए राया इमोसे[२] कहाए लद्धट्ठे समाणे एवं वयासी—एवं खलु तेयलिपुत्ते मए अवज्झाए मुंडे भवित्ता पव्वइए। तं गच्छामि णं तेयलिपुत्तं अणगारं वंदामि नमंसामि, वंदित्ता नमंसित्ता एयमट्ठं विणएणं भुज्जोभुज्जो खामेमि—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता ण्हाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं जेणेव पमयवणे उज्जाणे जेणेव तेयलिपुत्ते अणगारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तेयलिपुत्तं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एयमट्ठं 'च णं'[३] विणएणं भुज्जोभुज्जो खामेइ, खामेत्ता नच्चासण्णे[४] •नाइदूरे सुस्सूसमाणे नमंसमाणे पंजलिउडे अभिमुहे विणएणं° पज्जुवासइ ।।

८६. तए णं से तेयलिपुत्ते अणगारे कणगज्झयस्स रण्णो तीसे य महइमहालियाए परिसाए धम्मं परिकहेइ ।।

८७. तए णं से कणगज्झए राया तेयलिपुत्तस्स केवलिस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्मा पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं--दुवालसविहं सावगधम्मं पडिवज्जइ, पडिवज्जित्ता समणोवासए जाए—अभिगयजीवाजीवे[५] ।।

तेयलिपुत्तस्स सिद्धि-पदं

८८. तए णं तेयलिपुत्ते केवली बहूणि वासाणि केवलिपरियागं पाउणित्ता जाव सिद्धे ।।

निक्खेव-पदं

८९. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[६] संपत्तेणं चोद्दसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।

—त्ति बेमि ।।

वृत्तिकृता समुद्धृता निगमनगाथा—

जाव न दुक्खं पत्ता, माणब्भंसं च पाणिणो पायं ।
ताव न धम्मं गेण्हंति भावओ तेयलिसुयव्व ।।१।।

---

१. × (ग, घ) ।
२. इमीसे कहाए लद्धट्ठे कणगज्झए माताए समं निग्गते सव्विड्ढीए (आवश्यकचूर्णि पृ० ५०१) ।
३. × (ख, ग, घ) ।
४. सं० पा०—नच्चासण्णे जाव पज्जुवासइ ।
५. पू०-ना० १।५।४७ ।
६. ना० १।१।७ ।

पण्णरसमं अज्झयण

नंदीफले

उक्खेव-पदं

१. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं चोद्दसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, पण्णरसमस्स णं भंते ! नायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?

२. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नाम नयरी होत्था। पुण्णभद्दे चेइए। जियसत्तू राया ॥

३. तत्थ णं चंपाए नयरीए धणे नामं सत्थवाहे होत्था—अड्ढे जाव[1] अपरिभूए ॥

४. तीसे णं चंपाए नयरीए उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए अहिच्छत्ता नाम[2] नयरी होत्था—रिद्धत्थिमिय-समिद्धा वण्णओ[3] ॥

५. तत्थ णं अहिच्छत्ताए नयरीए कणगकेऊ नामं राया होत्था—महया वण्णओ[4] ॥

धणस्स घोसणा-पदं

६. तए णं तस्स धणस्स सत्थवाहस्स अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—सेयं खलु मम विपुलं पणियभंडमायाए अहिच्छत्तं नयरिं वाणिज्जाए गमित्तए—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता गणिमं च धरिमं च मेज्जं च पारिच्छेज्जं च - चउव्विहं भंडं गेण्हइ, गेण्हित्ता सगडी-सागडं सज्जेइ, सज्जेत्ता सगडी-सागडं भरेइ, भरेत्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! चंपाए नयरीए सिंघाडग जाव[5] महापहपहेसु [उग्घोसेमाणा-उग्घोसेमाणा ?]

---

१. ना० १।५।७।

२. नामं (ख, घ)।

३. ओ० सू० १।

४. ओ० सू० १४।

५. ना० १।१।६५।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवं वयह—एवं खलु देवाणुप्पिया ! धणे सत्थवाहे विपुलं पणियं आदाय इच्छइ अहिच्छत्तं नयरिं वाणिज्जाए गमित्तए। तं जो णं देवाणुप्पिया ! चरए वा चीरिए वा चम्मखंडिए वा भिच्छुंडे वा पंडुरंगे[1] वा गोयमे वा गोव्वतिए वा 'गिहिधम्मे वा धम्मचिंतए'[2] वा अविरुद्ध-विरुद्ध-वुड्ढसावग-रत्तपड[3]-निग्गंथप्पभिई पासंडत्थे वा गिहत्थे वा धणेणं सत्थवाहेणं सद्धिं अहिच्छत्तं नयरिं गच्छइ, तस्स णं धणे सत्थवाहे अच्छत्तगस्स छत्तगं दलयइ, अणुवाहणस्स उवाहणाओ दलयइ, अकुंडियस्स कुंडियं दलयइ, अपत्थयणस्स पत्थयणं दलयइ, अपक्खेवगस्स पक्खेवं दलयइ, अंतरा वि य से पडियस्स वा भग्गलुग्गस्स साहेज्जं दलयइ, सुहंसुहेण य अहिच्छत्तं संपावेइ त्ति कट्टु दोच्चंपि तच्चंपि घोसणं[4] घोसेह, घोसेत्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ॥

७. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा[5] •धणेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा चंपाए नयरीए सिंघाडग जाव[6] महापहपहेसु° एवं वयासी—हंदि सुणंतु भगवंतो ! चंपानयरीवत्थव्वा ! बहवे चरगा ! वा[7] जाव[8] •गिहत्था ! वा, जो णं धणेणं सत्थवाहेणं सद्धिं अहिच्छत्तं नयरिं गच्छइ, तस्स णं धणे सत्थवाहे अच्छत्तगस्स छत्तगं दलयइ जाव[9] सुहंसुहेण य अहिच्छत्तं संपावेइ त्ति कट्टु दोच्चंपि तच्चंपि घोसणं घोसेत्ता तमाणत्तियं° पच्चप्पिणंति ॥

८. तए णं तेसिं कोडुंबियपुरिसाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा चंपाए नयरीए बहवे चरगा य जाव[10] गिहत्था य जेणेव धणे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छंति ॥

९. तए णं धणे सत्थवाहे तेसिं चरगाण य जाव[11] गिहत्थाण य अच्छत्तगस्स छत्तं दलयइ जाव[12] अपत्थयणस्स पत्थयणं दलयइ, दलयित्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! चंपाए नयरीए बहिया अग्गुज्जाणंसि ममं पडिवालेमाणा-पडिवालेमाणा चिट्ठह ॥

१०. तए णं ते चरगा य जाव[13] गिहत्था य धणेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ता समाणा[14] •चंपाए नयरीए बहिया अग्गुज्जाणंसि धणं सत्थवाहं पडिवालेमाणा-पडिवालेमाणा° चिट्ठंति ॥

---

१. पंडरंगे (क, ख); पंडुरागे (घ)।
२. गिहत्थधम्मचिंतए (क); गिहधम्मचिंतए (ख, ग)।
३. रत्तपडी (क)।
४. घोसणयं (क); × (ख, ग); उग्घोसणं (घ)।
५. सं० पा०—कोडुंबियपुरिसा जाव एवं।
६. ना० १।१।९५।
७. सं० पा०—चरगा वा जाव पच्चप्पिणंति।
८. ना० १।१५।६।
९,१०,११,१२. ना० १।१५।६।
१३. ना० १।१५।६।
१४. सं० पा०—समाणा जाव चिट्ठंति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धणस्स निद्देस-पदं

११. तए णं धणे सत्थवाहे सोहणंसि तिहि-करण-नक्खत्तंसि विउलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता मित्त-नाइ[1]-°नियग-सयण-संबंधि-परियणं° आमंतेइ, आमंतेत्ता भोयणं भोयावेइ, भोयावेत्ता आपुच्छइ, आपुच्छित्ता सगडी-सागडं जोयावेइ[2], जोयावेत्ता चंपाओ नयरीओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता नाइविप्पगिट्ठेहिं अद्धाणेहिं वसमाणे-वसमाणे सुहेहिं वसहि-पायरासेहिं अंगं जणवयं मज्झंमज्झेणं जेणेव देसग्गं तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सगडी-सागडं मोयावेइ, सत्थनिवेसं करेइ, करेत्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—तुब्भे णं देवाणुप्पिया! मम सत्थनिवेसंसि महया-महया सद्देणं उग्घोसेमाणा-उग्घोसेमाणा एवं वयह—एवं खलु देवाणुप्पिया! इमीसे आगामियाए[3] छिण्णावायाए दीहमद्धाए अडवीए बहुमज्झदेसभाए, एत्थ णं बहवे नंदिफला नामं रुक्खा[4]—किण्हा जाव[5] पत्तिया पुप्फिया फलिया हरिया रेरिज्जमाणा सिरीए अईव-अईव उवसोभेमाणा चिट्ठंति—मणुण्णा वण्णेणं मणुण्णा गंधेणं मणुण्णा रसेणं मणुण्णा फासेणं मणुण्णा छायाए।

तं जो णं देवाणुप्पिया! तेसिं नंदिफलाणं रुक्खाणं मूलाणि वा कंदाणि वा तयाणि वा पत्ताणि वा पुप्फाणि वा फलाणि वा बीयाणि वा हरियाणि वा आहारेइ, छायाए वा वीसमइ, तस्स णं आवाए भद्दए भवइ। तओ पच्छा परिणममाणा-परिणममाणा अकाले चेव जीवियाओ ववरोवेंति। तं मा णं देवाणुप्पिया! केइ तेसिं नंदिफलाणं मूलाणि वा जाव हरियाणि वा आहरउ, छायाए वा वीसमउ, मा णं से वि अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जिस्सउ[6]। तुब्भे णं देवाणुप्पिया! अण्णेसिं रुक्खाणं मूलाणि य जाव हरियाणि य आहारेह, छायासु वीसमह त्ति घोसणं घोसेह, घोसेत्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह। ते वि तहेव घोसणं घोसेत्ता तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति।

१२. तए णं धणे सत्थवाहे सगडी-सागडं जोएइ, जोएत्ता जेणेव नंदिफला रुक्खा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तेसिं नंदिफलाणं अदूरसामंते सत्थनिवेसं करेइ, करेत्ता दोच्चंपि तच्चंपि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—तुब्भे णं देवाणुप्पिया! मम सत्थनिवेसंसि महया-महया सद्देणं उग्घोसेमाणा-उग्घोसेमाणा एवं वयह—एए णं देवाणुप्पिया! ते नंदिफला रुक्खा किण्हा जाव[7] मणुण्णा छायाए।

---

१. सं० पा०—नाइ०।
२. जोएइ (क)।
३. द्रष्टव्यम्—१।१८।४४ सूत्रम्।
४. रुक्खा पण्णत्ता (क, ख, ग, घ)।
५. ना० १।१३।१६।
६. ववरोविज्जिस्सइ (क, ख, ग)।
७. ना० १।१५।११।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तं जो णं देवाणुप्पिया! एएसिं नंदिफलाणं रुक्खाणं मूलाणि वा कंदाणि वा तयाणि वा पत्ताणि वा पुप्फाणि वा फलाणि वा बीयाणि वा हरियाणि वा आहारेइ जाव[1] अकाले चेव जीवियाओ ववरोवेइ। तं मा णं तुब्भे तेसिं नंदिफलाणं मूलाणि वा जाव आहारेह, छायाए वा वीसमह, मा णं अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जिस्सह[2], अण्णेसिं रुक्खाणं मूलाणि य जाव[3] आहारेह, छायाए वा वीसमह त्ति कट्टु घोसणं घोसेह, घोसेत्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह। ते वि तहेव घोसणं घोसेत्ता तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति॥

निद्देसपालणस्स निगमण-पदं

१३. तत्थ णं अत्थेगइया पुरिसा धणस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठं सद्दहंति[4] °पत्तियंति° रोयंति, एयमट्ठं सद्दहमाणा पत्तियमाणा रोयमाणा तेसिं नंदिफलाणं दूरंदूरेणं परिहरमाणा-परिहरमाणा अण्णेसिं रुक्खाणं मूलाणि य जाव[5] आहारंति, छायासु वीसमंति। तेसि णं आवाए नो भद्दए भवइ, तओ पच्छा परिणममाणा-परिणममाणा सुभरूवत्ताए[6] °सुभगंधत्ताए सुभरसत्ताए सुभफासत्ताए सुभछायत्ताए° भुज्जो-भुज्जो परिणमंति॥

१४. एवामेव समणाउसो! जो अम्हं निग्गंथो वा[7] °निग्गंथी वा आयरिय-उवज्झायाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए समाणे° पंचसु कामगुणेसु नो सज्जइ नो रज्जइ नो गिज्झइ नो मुज्झइ नो अज्झोववज्जइ, से णं इहभवे चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावगाणं बहूणं सावियाण य अच्चणिज्जे[8] भवइ, परलोए[9] °वि य णं नो बहूणि हत्थछेयणाणि य कण्णछेयणाणि य नासाछेयणाणि य एवं—हिययउप्पायणाणि य वसणुप्पायणाणि उल्लंबणाणि य पाविहिइ, पुणो अणाइयं च णं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतं संसारकंतारं° वीईवइस्सइ—जहा व ते पुरिसा॥

निद्देसाऽपालणस्स निगमण-पदं

१५. तत्थ णं अप्पेगइया पुरिसा धणस्स एयमट्ठं नो सद्दहंति नो पत्तियंति नो रोयंति, धणस्स एयमट्ठं असद्दहमाणा अपत्तियमाणा अरोयमाणा जेणेव ते नंदिफला तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तेसिं नंदिफलाणं मूलाणि य जाव[10]

---

१. ना० १।१५।११।
२. ववरोविज्जिस्सति(क,ग); ववरोविस्संति(ख)।
३. ना० १।१५।११।
४. सं० पा०—सद्दहंति जाव रोयंति।
५. ना० १।१५।११।
६. सं० पा०—सुभरूवत्ताए।
७. सं० पा०—निग्गंथो वा जाव पंचसु।
८. पू०—ना० १।२।७६।
९. सं० पा०—परलोए नो आगच्छइ जाव वीईवइस्सइ (क, ख, ग, घ)।
१०. ना० १।१५।११।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आहारेंति, छायासु वीसमंति। तेसि णं आवाए भद्दए भवइ, तओ पच्छा परिणममाणा-परिणममाणा[1] •अकाले चेव जीवियाओ° ववरोवेंति ॥

१६. एवामेव समणाउसो! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा आयरिय-उवज्झायाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए समाणे पंचसु कामगुणेसु सज्जइ[2] •रज्जइ गिज्झइ मुज्झइ अज्झोववज्जइ, सेणं इहभवे जाव[3] अणादियं च णं अणवयग्गं दीहमद्धं संसारकंतारं भुज्जो-भुज्जो° अणुपरियट्टिस्सइ—जहा व ते पुरिसा ॥

धणस्स अहिच्छत्ताऽऽगमण-पदं

१७. तए णं से धणे सत्थवाहे सगडी-सागडं जोयावेइ, जोयावेत्ता जेणेव अहिच्छत्ता नयरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अहिच्छत्ताए नयरीए बहिया अग्गुज्जाणे सत्थनिवेसं करेइ, करेत्ता सगडी-सागडं मोयावेइ ॥

१८. तए णं से धणे सत्थवाहे महत्थं महग्घं महरिहं रायारिहं पाहुडं गेण्हइ, गेण्हित्ता बहुपुरिसेहिं सद्धिं संपरिवुडे अहिच्छत्तं नयरिं मज्झंमज्झेणं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता जेणेव कणगकेऊ राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल[4]•परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं° वद्धावेइ, वद्धावेत्ता तं महत्थं महग्घं महरिहं रायारिहं पाहुडं उवणेइ ॥

१९. तए णं से कणगकेऊ राया हट्ठतुट्ठे धणस्स सत्थवाहस्स तं महत्थं महग्घं महरिहं रायारिहं पाहुडं पडिच्छइ, पडिच्छित्ता धणं सत्थवाहं सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता उस्सुक्कं वियरइ, वियरित्ता पडिविसज्जेइ, भंडविणिमयं करेइ, करेत्ता पडिभंडं गेण्हइ, गेण्हित्ता सुहंसुहेणं जेणेव चंपा नयरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मित्त-नाइ[5]-•नियग-सयण-संबंधि-परियणेणं सद्धिं° अभिसमण्णागए विपुलाइं माणुस्सगाइं[6] •भोगभोगाइं पच्चणुभवमाणे° विहरइ ॥

धणस्स पव्वज्जा-पदं

२०. तेणं कालेणं तेणं समएणं थेरागमणं ॥

२१. धणे सत्थवाहे धम्मं सोच्चा जेट्ठपुत्तं कुडुंबे ठावेत्ता पव्वइए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जित्ता, बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणित्ता, मासियाए संलेहणाए अत्ताणं झूसेत्ता, अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववण्णे।

---

१. सं० पा०—परिणममाणा जाव ववरोवेंति।

२. सं० पा०—सज्जइ जाव अणुपरियट्टिस्सइ।

३. ना० १।३।२४।

४. सं० पा०—करयल जाव वद्धावेइ।

५. सं० पा०—नाइ०।

६. सं० पा०—माणुस्सगाइं जाव विहरइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ[1] •बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ परिनिव्वाहिइ सव्वदुक्खाण• मंतं करेहिइ ॥

निक्खेव-पदं

२२. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[2] संपत्तेणं पण्णरसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।

—त्ति बेमि ॥

वृत्तिकृता समुद्धृता निगमनगाथा—

चंपा इव मणुयगई, धणोव्व भयवं जिणो दएक्करसो ।
अहिच्छत्ता नयरिसमं, इह निव्वाणं मुणेयव्वं ॥१॥
घोसणया इव तित्थंकरस्स सिवमग्गदेसणमहग्घं ।
चरगाइणो व्व एत्थं, सिवसुहकामा जिया बहवे ॥२॥
नंदिफलाइ व्व इहं, सिवपहपडिपण्णगाण विसया उ ।
तब्भक्खणाओ मरणं, जह तह विसएहिं संसारो ॥३॥
तव्वज्जणेण जह इट्ठपुरगमो विसयवज्जणेण तहा ।
परमानंदनिबंधण-सिवपुरगमणं मुणेयव्वं ॥४॥

---

१. सं० पा०—सिज्झिहिइ जाव मंतं । २. ना० १।१।७ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोलसमं अज्झयणं

अवरकंका

उक्खेव-पदं

१. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[1] संपत्तेणं पण्णरसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, सोलसमस्स णं भंते ! नायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?

२. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं चंपा नामं नयरी होत्था ।।

३. तीसे णं चंपाए नयरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए सुभूमिभागे नामं उज्जाणे होत्था ।।

नागसिरी-कहाणग-पदं

४. तत्थ णं चंपाए नयरीए तओ माहणा भायरो परिवसंति, तं जहा —सोमे सोमदत्ते सोमभूई—अड्ढा जाव[2] अपरिभूया रिउव्वेय-जउव्वेय-सामवेय-अथव्वणवेय जाव[3] बंभण्णएसु य सत्थेसु सुपरिनिट्ठिया ।।

५. तेसि णं माहणाणं तओ भारियाओ होत्था, तं जहा—नागसिरी भूयसिरी जक्खसिरी—सुकुमालपाणिपायाओ जाव[4] तेसि णं माहणाणं इट्ठाओ[5], तेहिं माहणेहिं सद्धिं विउले माणुस्सए कामभोए पच्चणुभवमाणीओ विहरंति ।।

नागसिरीए तित्तालाउय-उवक्खडण-पदं

६. तए णं तेसिं माहणाणं अण्णया कयाइ एगयओ समुवागयाणं जाव[6] इमेयारूवे मिहोकहा-समुल्लावे समुप्पज्जित्था—एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं इमे विउले

---

१. ना० १।१।७ ।
२. ना० १।५।७ ।
३. ना० १।८।१३६ ।
४. ना० १।१।१७ ।
५. पू०—ना० १।१।१७ ।
६. ना० १।३।७ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धण[1]-•कणग - रयण - मणि - मोत्तिय-संख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-संत-सार°-सावएज्जे, अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवंसाओ पकामं दाउं पकामं भोत्तुं पकामं परिभाएउं। तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया! अण्णमण्णस्स गिहेसु कल्लाकल्लिं विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडेउं परिभुंजेमाणाणं विहरित्तए। अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, कल्लाकल्लिं अण्णमण्णस्स गिहेसु[2] विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडावेंति, परिभुंजेमाणा विहरंति॥

७. तए णं तीसे नागसिरीए माहणीए अण्णया कयाइ भोयणवारए जाए यावि होत्था॥

८. तए णं सा नागसिरी विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडेइ, एगं महं सालइयं तित्तालाउयं[3] बहुसंभारसंजुत्तं नेहावगाढं उवक्खडेइ[4], एगं बिंदुयं करयलंसि आसाएइ[5], तं खारं कडुयं अखज्जं विसभूयं[6] जाणित्ता एवं वयासी—धिरत्थु णं मम नागसिरीए अधन्नाए अपुण्णाए दूभगाए दूभगसत्ताए दूभगनिंबो-लियाए[7], जाए णं मए सालइए तित्तालाउए बहुसंभारसंभिए नेहावगाढे उवक्ख-डिए[8], सुबहुदव्वक्खए नेहक्खए य कए। तं जइ णं ममं जाउयाओ जाणिस्संति तो[9] णं मम खिंसिस्संति। तं जाव[10] ममं जाउयाओ न जाणंति ताव मम सेयं एयं सालइयं तित्तालाउयं 'बहुसंभारसंभियं नेहावगाढं'[11] एगंते गोवित्तए, अण्णं सालइयं महुरालाउयं[12] •बहुसंभारसंभियं° नेहावगाढं उवक्खडित्तए—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता तं सालइयं[13] •तित्तालाउयं बहुसंभारसंभियं नेहावगाढं एगंते° गोवेइ, गोवेत्ता अण्णं सालइयं महुरालाउयं बहुसंभारसंभियं नेहावगाढं उवक्खडेइ, उवक्खडेत्ता तेसिं माहणाणं ण्हायाणं[14] •भोयणमंडवंसि° सुहासण-वरगयाणं तं विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं परिवेसेइ॥

९. तए णं ते माहणा जिमियभुत्तुत्तरागया समाणा आयंता चोक्खा परमसुइभूया सकम्मसंपउत्ता जाया यावि होत्था॥

१०. तए णं ताओ माहणीओ ण्हायाओ जाव[15] विभूसियाओ तं विपुलं असण-पाण-

---

१. सं० पा०—धण जाव सावएज्जे।
२. गिहे (ग)।
३. तित्त° (ग)।
४. उवक्खडावेइ (क, ख, ग, घ)।
५. आसएइ (ग)।
६. विसभूयमिति (क); विसब्भूयं (ख, ग)।
७. दूभगनिंबोलियाए (ग)।
८. उवक्खडियाए (ख, ग)।
९. ता (ख); ताओ (घ)।
१०. जावताव (क, ख, घ)।
११. बहुसंभारनेहकयं (क, ख, ग, घ)।
१२. सं० पा०—महुरालाउयं जाव नेहावगाढं।
१३. सं० पा०—सालइयं जाव गोवेइ।
१४. सं० पा०—ण्हायाणं जाव सुहासण°।
१५. ना० १।१।८१।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खाइम-साइमं आहारेंति, जेणेव सयाइं गिहाइं तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सकम्मसंपउत्ताओ जायाओ ॥

धम्मरुइस्स तित्तालाउय-दाण-पदं

११. तेणं कालेणं तेणं समएणं धम्मघोसा नामं थेरा जाव[1] बहुपरिवारा जेणेव चंपा नयरी जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता अहापडि-रूवं[2] •ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा° विहरंति। परिसा निग्गया। धम्मो कहिओ। परिसा पडिगया ॥

१२. तए णं तेसिं धम्मघोसाणं थेराणं अंतेवासी धम्मरुई[3] नामं अणगारे ओराले[4] •घोरे घोरगुणे घोरतवस्सी घोरबंभचेरवासी उच्छूढसरीरे संखित्त-विउल°-तेयलेस्से मासंमासेणं खममाणे विहरइ ॥

१३. तए णं से धम्मरुई अणगारे मासखमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए[5] सज्झायं करेइ, बीयाए पोरिसीए झाणं झियाइ, एवं जहा गोयमसामी तहेव[6] भायणाइं ओगाहेइ, तहेव धम्मघोसं थेरं आपुच्छइ जाव[7] चंपाए नयरीए उच्च-नीअ-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडमाणे जेणेव नागसिरीए माहणीए गिहे तेणेव अणुपविट्ठे ॥

१४. तए णं सा नागसिरी माहणी धम्मरुइं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता तस्स सालइ-यस्स तित्तालाउयस्स[8] बहुसंभारसंभियस्स नेहावगाढस्स एडणट्ठयाए हट्ठतुट्ठा उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणेव भत्तघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं सालइयं 'तित्तालाउयं बहुसंभारसंभियं नेहावगाढं'[9] धम्मरुइस्स अणगारस्स पडिग्गहंसि[10] सव्वमेव निसिरइ[11] ॥

१५. तए णं से धम्मरुई अणगारे अहापज्जत्तमित्ति कट्टु नागसिरीए माहणीए गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता चंपाए नयरीए मज्झंमज्झेणं पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव सुभूमिभागे उज्जाणे जेणेव धम्मघोसा थेरा तेणेव

---

१. ना० १।१४।४०।
२. सं० पा०—अहापडिरूवं जाव विहरंति।
३. धम्मरुती (ग)।
४. सं० पा०—उराले जाव तेयलेस्से।
५. पोरुसीए (क); पोरसीए (ख); पोरसी-याए (ग)।
६. पू०—भग० २।१०७।
७. भग० २।१०७-१०९।
८. तित्तकडुयस्स (क, ख, ग, घ); पूर्ववर्तिसूत्रेषु 'तित्तालाउयं' इति पाठोऽस्ति। अस्मिन् सूत्रे तस्य परिवर्तनं जातम्। अत्रापि 'अला-उय' पदमपेक्षितमस्ति, तेनात्र पूर्ववर्तिपाठ एव स्वीकृतः।
९. तित्तकडुयं च बहुनेहावगाढं (क, ख, ग, घ)।
१०. पडिग्गहगे (ख, ग); पडिग्गहए (घ)।
११. निस्सरइ (घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उवागच्छइ, धम्मघोसस्स [धम्मघोसाणं ?] अदूरसामंते[1] अन्नपाणं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता अन्नपाणं करयलंसि पडिदंसेइ ॥

तित्तालाउय-परिट्ठावण-पदं

१६. तए णं धम्मघोसा थेरा तस्स सालइयस्स तित्तालाउयस्स बहुसंभारसंभियस्स नेहावगाढस्स गंधेणं अभिभूया समाणा तओ सालइयाओ तित्तालाउयाओ बहुसंभारसंभियाओ नेहावगाढाओ एगं बिंदुयं गहाय करयलंसि आसादेंति[2], तित्तगं[3] खारं कडुयं अखज्जं अभोज्जं[4] विसभूयं[5] जाणित्ता धम्मरुइं अणगारं एवं वयासी—जइ णं तुमं देवाणुप्पिया ! एयं सालइयं[6] •तित्तालाउयं बहुसंभार-संभियं° नेहावगाढं आहारेसि तो णं तुमं अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि । तं मा णं तुमं देवाणुप्पिया ! इमं सालइयं[7] •तित्तालाउयं बहुसंभार-संभियं नेहावगाढं° आहारेसि, मा णं तुमं अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि । तं गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! इमं सालइयं तित्तालाउयं बहुसंभार-संभियं नेहावगाढं एगंतमणावाए अचित्ते थंडिले[8] परिट्ठवेहि, अण्णं फासुयं एसणिज्जं असण-पाण-खाइम-साइमं पडिगाहेत्ता आहारं आहारेहि ॥

१७. तए णं से धम्मरुई अणगारे धम्मघोसेणं थेरेणं एवं वुत्ते समाणे धम्मघोसस्स थेरस्स अंतियाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता सुभूमिभागाओ उज्जाणाओ अदूरसामंते थंडिलं पडिलेहेइ, पडिलेहेत्ता तओ[9] सालइयाओ तित्तालाउयाओ बहुसंभारसंभियाओ नेहावगाढाओ एगं बिंदुगं[10] गहाय थंडिलंसि निसिरइ ॥

१८. तए णं तस्स सालइयस्स 'तित्तालाउयस्स बहुसंभारसंभियस्स नेहावगाढस्स'[11] गंधेणं बहूणि पिपीलिगासहस्साणि पाउब्भूयाणि[12]। जा जहा य णं पिपीलिगा आहारेइ, सा तहा अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जइ॥

अहिंसट्ठं तित्तालाउय-भक्खण-पदं

१९. तए णं तस्स धम्मरुइस्स अणगारस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था – जइ ताव इमस्स सालइयस्स[13] •तित्तालाउयस्स बहुसंभारसंभियस्स° एगंमि बिंदुगंमि पक्खित्तंमि अणेगाइं पिपीलिगासहस्साइं

---

१. अदूरसामंते इरियावहियं पडिक्कमइ (घ)।
२. आसाएंति (क): आसाइंति (घ)।
३. तित्तं (ख)।
४. अपिज्जं (क)।
५. विसभूयमित्ति (ख)।
६. सं० पा०—सालइयं जाव नेहावगाढं ।
७. सं० पा०—सालइयं जाव आहारेसि ।
८. थंडिल्ले (ख)।
९. ताओ (क, ख)।
१०. बिंदु (क, ख)।
११. तित्तकडुयस्स बहुनेहावगाढस्स(क, ख, ग, घ)।
१२. पाउ (क, ग, घ); पाउब्भूया (ख)।
१३. सं० पा०—सालइयस्स जाव एगंमि ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ववरोविज्जंति, तं जइ णं अहं एयं सालइयं तित्तालाउयं बहुसंभारसंभियं नेहावगाढं थंडिलंसि सव्वं निसिरामि तो[1] णं बहूणं पाणाणं भूयाणं जीवाणं सत्ताणं वहकरणं भविस्सइ। तं सेयं खलु ममेयं सालइयं[2] •तित्तालाउयं बहुसंभारसंभियं° नेहावगाढं सयमेव आहारित्तए, ममं चेव एएणं सरीरएणं निज्जाउ त्ति कट्टु एवं संपेहेइ संपेहेत्ता मुहपोत्तियं पडिलेहेइ, ससीसोवरियं कायं पमज्जेइ, तं सालइयं 'तित्तालाउयं बहुसंभारसंभियं नेहावगाढं'[3] बिलमिव पन्नगभूएणं अप्पाणेणं सव्वं सरीरकोट्ठगंसि पक्खिवइ ॥

धम्मरुइस्स समाहिमरण-पदं

२०. तए णं तस्स धम्मरुइस्स तं सालइयं[4] •तित्तालाउयं बहुसंभारसंभियं° नेहावगाढं आहारियस्स समाणस्स मुहुत्तंतरेणं परिणममाणंसि सरीरगंसि वेयणा पाउब्भूया—उज्जला[5] •विउला कक्खडा पगाढा चंडा दुक्खा° दुरहियासा ॥

२१. तए णं से धम्मरुई अणगारे अथामे अबले अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे[6] अधारणिज्जमिति कट्टु आयारभंडगं एगंते ठवेइ, थंडिलं पडिलेहेइ, दब्भसंथारगं संथरेइ[7], दब्भसंथारगं दुरूहइ, पुरत्थाभिमुहे संपलियंकनिसण्णे करयल-परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी—नमोत्थु णं अरहंताणं जाव[8] सिद्धिगइनामधेज्जं ठाणं संपत्ताणं। नमोत्थु णं धम्मघोसाणं थेराणं मम धम्मायरियाणं धम्मोवएसगाणं। पुव्विं पि णं मए धम्मघोसाणं थेराणं अंतिए[9] सव्वे पाणाइवाए पच्चक्खाए जावज्जीवाए जाव[10] बहिद्धादाणे[11] [पच्चक्खाए जावज्जीवाए ?], इयाणिं पि णं अहं तेसिं चेव भगवंताणं अंतियं सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि जाव बहिद्धादाणं पच्चक्खामि जावज्जीवाए जहा खंदओ जाव[12] चरिमेहिं उस्सासेहिं वोसिरामि त्ति कट्टु आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते कालगए ॥

साहूहिं धम्मरुइस्स गवेसणा-पदं

२२. तए णं ते धम्मघोसा थेरा धम्मरुइं अणगारं चिरगयं जाणित्ता समणे निग्गंथे सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! 'धम्मरुई अणगारे'[13]

---

१. ता (क, ग); तए (ख)।
२. सं० पा०—सालइयं जाव नेहावगाढं।
३. तित्तकडुयं बहुनेहावगाढं (क, ख, ग, घ)।
४. सं० पा०—सालइय जाव नेहावगाढं।
५. सं० पा०—उज्जला जाव दुरहियासा।
६. अपुरिसकार° (ग)।
७. संथारेइ (ग)।
८. ओ० सू० २१।
९. अंतियं (क)।
१०. ना० १।५।५९।
११. परिग्गहे (क, ख, ग, घ) अत्रापि १।५।५९ वत् पाठरचना समालोचनीयास्ति। द्रष्टव्यम्—१।५।५९ सूत्रस्य पादटिप्पणम्।
१२. भग० २।६८,६९।
१३. धम्मरुइस्स अणगारस्स (ख)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मासक्खमणपारणगंसि सालइयस्स[1] •तित्तालाउयस्स बहुसंभारसंभियस्स° नेहावगाढस्स निसिरणट्ठयाए बहिया निग्गए चिरावेइ[2]। तं गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! धम्मरुइस्स अणगारस्स सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करेह॥

साहूहिं धम्मरुइस्स समाहिमरण-निवेदण-पदं

२३. तए णं ते समणा निग्गंथा[3] •धम्मघोसाणं थेराणं जाव[4] तहत्ति आणाए विणएणं वयणं° पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता धम्मघोसाणं थेराणं अंतियाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता धम्मरुइस्स अणगारस्स सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करेमाणा जेणेव थंडिले तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता धम्मरुइस्स अणगारस्स सरीरगं निप्पाणं निच्चेट्ठं जीवविप्पजढं पासंति, पासित्ता हा हा अहो! अकज्जमिति कट्टु धम्मरुइस्स अणगारस्स परिनिव्वाणवत्तियं काउस्सग्गं करेंति, धम्मरुइस्स आयारभंडगं गेण्हंति, गेण्हित्ता जेणेव धम्मघोसा थेरा तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता गमणागमणं पडिक्कमंति, पडिक्कमित्ता एवं वयासी—एवं खलु अम्हे तुब्भं अंतियाओ पडिनिक्खमामो, सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स परिपेरंतेणं धम्मरुइस्स अणगारस्स सव्वओ[5] •समंता मग्गण-गवेसणं° करेमाणा जेणेव थंडिले तेणेव उवागच्छामो जाव इहं हव्वमागया। तं कालगए णं भंते! धम्मरुई अणगारे। इमे से आयारभंडए॥

धम्मरुइस्स सइसभा-पदं

२४. तए णं ते धम्मघोसा थेरा पुव्वगए उवओगं गच्छंति, समणे निग्गंथे निग्गंथीओ य सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु अज्जो! मम अंतेवासी धम्मरुई नामं अणगारे पगइभद्दए[6] •पगइउवसंते पगइपयणुकोहमाणमायालोभे मिउ-मद्दव-संपण्णे अल्लीणे भद्दए° विणीए मासंमासेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणे जाव[7] नागसिरीए माहणीए गिहं अणुपविट्ठे। तए णं सा नागसिरी माहणी[8] जाव[9] •तं सालइयं तित्तालाउयं बहुसंभारसंभियं नेहावगाढं धम्मरुइस्स अणगारस्स पडिग्गहंसि सव्वमेव° निसिरइ।

तए णं से धम्मरुई अणगारे अहापज्जत्तमित्ति कट्टु नागसिरीए माहणीए गिहाओ पडिनिक्खमइ जाव[10] 'समाहिपत्ते कालगए'[11]।

---

१. सं० पा०—सालइयस्स जाव नेहावगाढस्स।
२. चिरादते (क); चिरगए (घ)।
३. सं० पा०—निग्गंथा जाव पडिसुणेंति।
४. ना० १।१।२६।
५. सं० पा०—सव्वओ जाव करेमाणा।
६. सं० पा०—पगइभद्दए जाव विणीए।
७. ना० १।१६।१३।
८. सं० पा०—माहणी जाव निसिरइ।
९. ना० १।१६।१४।
१०. ना० १।१६।१५-२१।
११. अत्र 'कालं अणवकंखमाणे विहरइ' इति पाठो लभ्यते, किन्तु जाव शब्दसमर्पिते २१ सूत्रे 'समाहिपत्ते कालगए' इति पाठो वर्तते। तदनुसारेण अत्रास्माभिः स एव पाठः स्वीकृतः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

से णं धम्मरुई अणगारे बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणित्ता आलोइय-पडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा उड्ढं जाव[1] सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे देवत्ताए उववण्णे। तत्थ णं अजहण्णमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। तत्थ णं धम्मरुइस्स वि देवस्स तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। से णं धम्मरुई देवे ताओ देवलोगाओ[2] •आउक्खएणं ठिइक्खएणं भवक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता° महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ॥

नागसिरीए गरिहा-पदं

२५. तं धिरत्थु णं अज्जो! नागसिरीए माहणीए अधन्नाए अपुण्णाए[3] •दूभगाए दूभगसत्ताए दूभग°निंबोलियाए, जाए णं तहारूवे साहू साहुरूवे धम्मरुई अणगारे मासक्खमणपारणगंसि सालइएणं[4] •तित्तालाउएणं बहुसंभारसंभिएणं° नेहावगाढेणं अकाले चेव जीवियाओ ववरोविए॥

२६. तए णं ते समणा निग्गंथा धम्मघोसाणं थेराणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म[5] चंपाए सिंघाडग-तिग[6]-•चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु° बहुजणस्स एवमाइक्खंति एवं भासंति एवं पण्णवेंति एवं परूवेंति—धिरत्थु णं देवाणुप्पिया! नागसिरीए जाव[7] दूभगनिंबोलियाए, जाए णं तहारूवे साहू साहुरूवे धम्मरुई अणगारे सालइएणं[8] •तित्तालाउएणं बहुसंभारसंभिएणं° नेहावगाढेणं अकाले चेव जीवियाओ ववरोविए॥

२७. तए णं तेसिं समणाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ एवं भासइ एवं पण्णवेइ एवं परूवेइ—धिरत्थु णं नागसिरीए माहणीए जाव[9] जीवियाओ ववरोविए॥

नागसिरीए गिहनिव्वासण-पदं

२८. तए णं ते माहणा चंपाए नयरीए बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ता[10] •रुट्ठा कुविया चंडिक्किया° मिसिमिसेमाणा जेणेव नागसिरी माहणी तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता नागसिरिं माहणिं एवं वयासी—"हंभो नागसिरी! अपत्थियपत्थिए! दुरंतपंतलक्खणे! हीणपुण्णचाउद्दसे! [सिरि-हिरि-धिइ-कित्तिपरिवज्जिए?] धिरत्थु णं तव अधन्नाए अपुण्णाए

---

१. ना० १।१।२११।
२. सं०पा०—देवलोगाओ जाव महाविदेहे।
३. सं० पा०—अपुण्णाए जाव निंबोलियाए।
४. सं० पा०—सालइएणं जाव नेहावगाढेणं।
५. निसम्मा (क, ख, ग)।
६. सं० पा०—तिग जाव बहुजणस्स।
७. ना० १।१६।२५।
८. सं० पा०—सालइएणं जाव नेहावगाढेणं।
९. ना० १।१६।२६।
१०. सं० पा०—आसुरुत्ता जाव मिसिमिसेमाणा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दूभगाए दूभगसत्ताए दूभगनिंबोलियाए, जाए णं तुमे तहारूवे साहू साहुरूवे धम्मरुई अणगारे मासखमणपारणगंसि सालइएणं तित्तालाउएणं जाव[1] जीवियाओ ववरोविए।" उच्चावयाहिं अक्कोसणाहिं अक्कोसंति, उच्चावयाहिं उद्धंसणाहिं उद्धंसेंति, उच्चावयाहिं निब्भंच्छणाहिं निब्भंच्छेंति,[2] उच्चावयाहिं निच्छोडणाहिं निच्छोडेंति, तज्जेंति तालेंति, तज्जित्ता तालित्ता सयाओ गिहाओ निच्छुभंति ॥

२९. तए णं सा नागसिरी सयाओ गिहाओ निच्छूढा समाणी चंपाए नयरीए सिंघाडग-तिय-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु बहुजणेणं हीलिज्जमाणी खिसिज्जमाणी निंदिज्जमाणी गरहिज्जमाणी तज्जिज्जमाणी पव्वहिज्जमाणी[3] धिक्कारिज्जमाणी थुक्कारिज्जमाणी कत्थइ ठाणं वा निलयं वा अलभमाणी दंडीखंड-निवसणा[4] खंडमल्लय-खंडघडग-हत्थगया फुट्ट[5]-हडाहड-सीसा मच्छियाचडगरेणं अन्निज्जमाणमग्गा गेहंगेहेणं देहंबलियाए[6] वित्तिं कप्पेमाणी विहरइ ॥

नागसिरीए भवभमण-पदं

३०. तए णं तीसे नागसिरीए माहणीए तब्भवंसि चेव सोलस रोगायंका[7] पाउब्भूया। [तं जहा—

सासे कासे[8] •जरे दाहे, जोणिसूले भगंदरे।
अरिसा अजीरए दिट्ठी-मुद्धसूले अकारए॥
अच्छिवेयणा कण्णवेयणा कंडू दउदरे° कोढे[9] ॥१॥]

३१. तए णं सा नागसिरी माहणी सोलसेहिं रोगायंकेहिं अभिभूया समाणी अट्ट-दुहट्ट-वसट्टा कालमासे कालं किच्चा छट्ठाए पुढवीए उक्कोसं बावीससागरोवमट्ठिइएसु नरएसु नेरइयत्ताए उववण्णा।
सा णं तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता मच्छेसु उववण्णा[10]। तत्थ णं सत्थवज्झा दाहवक्कंतीए कालमासे कालं किच्चा अहेसत्तमाए पुढवीए 'उक्कोसं तेत्तीस-सागरोवमट्ठिईएसु'[11] नेरइएसु नेरइयत्ताए उववण्णा।

---

१. ना० १।१६।२५।
२. १।१८।८ सूत्रे निब्भच्छेइ।
३. तालिज्जमाणी वहिज्जमाणी (घ)।
४. वसणा (क, ख, ग)।
५. फट्ट (ख)।
६. देहबलियाए (क, ख, ग, घ); देहबलिका तया, अनुस्वारो नैपातिकः (वृ)।
७. रोयायंका (ख)।
८. सं० पा०—कासे जोणिसूले जाव कोढे।
९. असौ कोष्ठकवर्ती पाठः व्याख्यांशः प्रतीयते।
१०. उववज्जइ (क, ख)।
११. उक्कोससागरोवम° (क, ख)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सा णं तओणंतरं उव्वट्टित्ता दोच्चंपि मच्छेसु उववज्जइ[1]। तत्थ वि य णं सत्थवज्झा दाहवक्कंतीए कालमासे कालं किच्चा दोच्चंपि अहेसत्तमाए पुढवीए उक्कोसं तेत्तीससागरोवमट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववज्जइ। सा णं तओहिंतो[2] उव्वट्टित्ता तच्चंपि मच्छेसु उववण्णा। तत्थ वि य णं सत्थवज्झा[3] •दाहवक्कंतीए• कालमासे कालं किच्चा दोच्चंपि छट्ठाए पुढवीए उक्कोसं[4] बावीससागरोवमट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववण्णा।

तओणंतरं उव्वट्टित्ता उरगेसु, एवं जहा गोसाले[5] तहा नेयव्वं जाव रयणप्पभाओ पुढवीओ उव्वट्टित्ता [6]सण्णीसु उववण्णा।

तओ उव्वट्टित्ता असण्णीसु उववण्णा। तत्थ वि य णं सत्थवज्झा दाहवक्कंतीए कालमासे कालं किच्चा दोच्चं पि रयणप्पभाए पुढवीए पलिओवमस्स असंखेज्जइभागट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववण्णा।

तओ उव्वट्टित्ता जाइं इमाइं खहयरविहाणाइं[6] जाव[7] अदुत्तरं च खरबायर-पुढविकाइयत्ताए, तेसु अणेगसयसहस्सखुत्तो॥

सूमालिया-कहाणग-पदं

३२. सा णं तओणंतरं उव्वट्टित्ता इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे चंपाए नयरीए सागरदत्तस्स सत्थवाहस्स भद्दाए भारियाए कुच्छिंसि दारियत्ताए पच्चायाया॥

३३. तए णं सा भद्दा सत्थवाही नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं[8] दारियं पयाया—सुकुमालकोमलियं गयतालुयसमाणं॥

३४. तए णं तीसे णं दारियाए निव्वत्तबारसाहियाए अम्मापियरो इमं एयारूवं गोण्णं गुणनिप्फण्णं नामधेज्जं करेंति—जम्हा णं अम्हं एसा दारिया सुकुमालकोमलिया गयतालुयसमाणा, तं होउ णं अम्हं इमीसे दारियाए नामधेज्जं सुकुमालिया-सुकुमालिया॥

---

१. अत्रापि पूर्वोक्तक्रमानुसारेण भूतकालक्रियाप्रयोगो युज्यते, किन्तु आदर्शेषु तथा नोपलभ्यते।

२. तओहिंतो जाव (क, ख, ग, घ)। एतत् पदमनावश्यकं प्रतिभाति।

३. सं० पा०—सत्थवज्झा जाव कालमासे।

४. उक्कोसेणं (क, ख, ग, घ)।

५. भग० १५।१८६।

६. सण्णीसु उववण्णा तओ उव्वट्टित्ता जाइं इमाइं खहयरविहाणाइं (क, ख, ग, घ) एष संक्षिप्तपाठोऽस्ति। भगवत्यनुसारेण अस्य स्थाने पाठः पूरितोस्ति। समर्पणसूत्रे प्रायः पाठस्य संक्षेपः कृतो लभ्यते। अत्रापि स एव क्रमः अनुसृतोस्ति, किन्तु संज्ञिभवानन्तरं खेचरयोनौ जन्म नाभूत्। स्वीकृतपाठावलोकनेन एतत् स्पष्टं भवति।

७. भग० १५।१८६।

८. पू०—ना० १।१६।१२४।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३५. तए णं तीसे दारियाए अम्मापियरो नामधेज्जं करेंति सूमालियत्ति ॥

३६. तए णं सा सूमालिया दारिया पंचधाईपरिग्गहिया [तं जहा—खीरधाईए[1] •मज्जणधाईए मंडावणधाईए खेल्लावणधाईए अंकधाईए][2] अंकाओ अंकं साहरिज्जमाणी रम्मे मणिकोट्टिमतले° गिरिकंदरमल्लीणा इव चंपगलया निवाय[3]-निव्वाघायंसि[4] •सुहंसुहेणं° परिवड्ढइ ॥

सूमालियाए सागरेण सद्धिं विवाह-पदं

३७. तए णं सा सूमालिया दारिया उम्मुक्कबालभावा[5] •विण्णय-परिणयमेत्ता जोव्वणगमणुपत्ता° रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठसरीरा जाया यावि होत्था ।

३८. तत्थ णं चंपाए नयरीए जिणदत्ते नामं सत्थवाहे—अड्ढे ॥

३९. तस्स णं जिणदत्तस्स भद्दा भारिया—सूमाला इट्ठा[6] माणुस्सए कामभोगे पच्चणुब्भवमाणा विहरइ ॥

४०. तस्स णं जिणदत्तस्स पुत्ते भद्दाए भारियाए अत्तए सागरए नामं दारए—सुकुमालपाणिपाए जाव[7] सुरूवे ॥

४१. तए णं से जिणदत्ते सत्थवाहे अण्णया कयाइ सयाओ[8] गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता सागरदत्तस्स सत्थवाहस्स अदूरसामंतेणं वीईवयइ ।
इमं च णं सूमालिया दारिया ण्हाया चेडिया-'चक्कवाल-संपरिवुडा'[9] उप्पिं आगासतलगंसि कणग-तिंदूसएणं 'कीलमाणी-कीलमाणी'[10] विहरइ ॥

४२. तए णं से जिणदत्ते सत्थवाहे सूमालियं दारियं पासइ, पासित्ता सूमालियाए दारियाए रूवे य जोव्वणे य लावण्णे य जायविम्हए कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एस णं देवाणुप्पिया ! कस्स दारिया ? किं वा नामधेज्जं से ?

४३. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जिणदत्तेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा करयल[11]•परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु° एवं वयासी—एस णं देवाणुप्पिया ! सागरदत्तस्स सत्थवाहस्स धूया भद्दाए भारियाए अत्तया

---

१. सं० पा०—खीरधाईए जाव गिरिकंदरमल्लीणा ।
२. असौ कोष्ठकवर्ती पाठः व्याख्यांशः प्रतीयते ।
३. × (ख) ।
४. सं० पा०—निव्वाघायंसि जाव परिवड्ढइ ।
५. सं० पा०—उम्मुक्कबालभावा जाव रूवेण ।
६. इट्ठा जाव (ख, घ) ।
७. ना० १।१।१७ ।
८. साओ (क, ख, ग) ।
९. संघपरिवुडा (ग) ।
१०. कीलमाणी (ख, ग) ।
११. सं० पा०—करयल जाव एवं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सूमालिया नामं दारिया—सुकुमालपाणिपाया जाव[1] रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य उक्किट्ठा ॥

४४. तए णं जिणदत्ते सत्थवाहे तेसिं कोडुंबियाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ण्हाए मित्त-नाइ-परिवुडे चंपाए नयरीए मज्झंमज्झेणं जेणेव सागरदत्तस्स गिहे तेणेव उवागए ॥

४५. तए णं से सागरदत्ते सत्थवाहे जिणदत्तं सत्थवाहं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता आसणेणं उवनिमंतेइ, उवनिमंतेत्ता आसत्थं वीसत्थं सुहासणवरगयं एवं वयासी—भण देवाणुप्पिया ! किमागमण-पओयणं ?

४६. तए णं से जिणदत्ते सागरदत्तं एवं वयासी—एवं खलु अहं देवाणुप्पिया ! तव धूयं भद्दाए अत्तियं सूमालियं सागरस्स[2] भारियत्ताए वरेमि। जइ णं जाणह देवाणुप्पिया ! जुत्तं वा पत्तं वा सलाहणिज्जं वा सरिसो वा संजोगो, ता दिज्जउ णं सूमालिया सागरदारगस्स। तए णं देवाणुप्पिया ! भण किं दलयामो[3] सुंकं[4] सूमालियाए ?

४७. तए णं से सागरदत्ते सत्थवाहे जिणदत्तं सत्थवाहं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! सूमालिया दारिया एगा[5] एगजाया[6] इट्ठा कंता पिया मणुण्णा मणामा जाव[7] उंबरपुप्फं व दुल्लहा सवणयाए, किमंग पुण पासणयाए ? तं नो खलु अहं इच्छामि सूमालियाए दारियाए खणमवि विप्पओगं। तं जइ णं देवाणुप्पिया ! सागरए दारए मम घरजामाउए भवइ, तो णं अहं सागरस्स सूमालियं दलयामि ॥

४८. तए णं से जिणदत्ते सत्थवाहे सागरदत्तेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ते समाणे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सागरगं[8] दारगं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु पुत्ता ! सागरदत्ते सत्थवाहे ममं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! सूमालिया दारिया—इट्ठा[9] •कंता पिया मणुण्णा मणामा जाव[10] उंबरपुप्फं व दुल्लहा सवणयाए, किमंग पुण पासणयाए ? तं नो खलु अहं इच्छामि सूमालियाए दारियाए खणमवि विप्पओगं॰। तं जइ णं सागरए दारए मम घरजामाउए भवइ, 'तो णं'[11] दलयामि ॥

---

१. ना० १।८।६०।
२. सागरदत्तस्स दारगस्स (ख, ग)।
३. दलामो (क)।
४. सुकं (ख); सुक्कं (घ)।
५. मम एगा धूया (क)
६. एगा जाया (ख, घ)।
७. ना० १।१।१०६।
८. सागरं (ग, घ)।
९. सं० पा०—इट्ठा तं चेव।
१०. ना० १।१।१०६।
११. जाव (ख, घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४९. तए णं से सागरए दारए जिणदत्तेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ते समाणे तुसिणीए ॥

५०. तए णं[1] जिणदत्ते सत्थवाहे अण्णया कयाइ सोहणंसि तिहि-करण-नक्खत्त-मुहुत्तंसि विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता मित्त-नाइ[2]-•नियग-सयण-संबंधि-परियणं° आमंतेइ, जाव[3] सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता सागरं दारगं ण्हायं जाव[4] सव्वालंकारविभूसियं करेइ, करेत्ता पुरिससहस्स-वाहिणीयं सीयं दुरूहावेइ[5], मित्त-नाइ[6]-•नियग-सयण-संबंधि-परियणेणं सद्धिं° परिवुडे सव्विड्ढीए सयाओ[7] गिहाओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता चंपं नयरिं मज्झंमज्झेणं जेणेव सागरदत्तस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीयाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता सागरगं दारगं सागरदत्तस्स सत्थवाहस्स उवणेइ ॥

५१. तए णं से सागरदत्ते सत्थवाहे विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता जाव[8] सम्माणेत्ता सागरगं दारगं सूमालियाए दारियाए सद्धिं पट्टयं दुरूहावेइ, दुरूहावेत्ता सेयापीएहिं[9] कलसेहिं मज्जावेइ, मज्जावेत्ता अग्गिहोमं[10] करावेइ, करावेत्ता 'सागरगं दारयं'[11] सूमालियाए दारियाए पाणिं गेण्हावेइ ॥

सागरस्स पलायण-पदं

५२. तए णं सागरए सूमालियाए दारियाए इमं एयारूवं 'पाणिफासं पडिसंवेदेइ'[12], से जहानामए—असिपत्ते इ वा[13] •करपत्ते इ वा खुरपत्ते इ वा कलंबचीरिगा-पत्ते इ वा सत्तिअग्गे इ वा कोंतग्गे इ वा तोमरग्गे इ वा भिंडिमालग्गे इ वा सूचिकलावए इ वा विच्छुयडंके इ वा कविकच्छू इ वा इंगाले इ वा मुम्मुरे इ वा अच्ची इ वा जाले इ वा अलाए इ वा सुद्धागणी इ वा भवे एयारूवे ? नो इणट्ठे समट्ठे । एत्तो अणिट्ठतराए चेव अकंततराए चेव अप्पियतराए चेव अमणुण्णतराए चेव अमणामतराए चेव° पाणिफासं संवेदेइ ॥

५३. तए णं से सागरए अकामए अवसवसे[14] मुहुत्तमेत्तं संचिट्ठइ ॥

५४. तए णं सागरदत्ते सत्थवाहे सागरस्स अम्मापियरो मित्त-नाइ[15]-•नियग-सयण-

---

१. णं से (ख, घ) ।
२. सं० पा०—नाइ० ।
३. ना० १।१४।५३ ।
४. ना० १।१।४७ ।
५. दुहावेइ (क, ख) ।
६. सं० पा०—नाइ जाव पडिवुडे ।
७. सातो (क, ख, ग, घ) ।
८. ना० १।१६।५० ।
९. सीयापीयएहिं (ख, ग); सीयापीएहिं (घ) ।
१०. होमं (क, ख, ग, घ) ।
११. सागरस्स (क) ।
१२. संपडिवेदेति (ख); पाणिं फासेंति संपडिवेदेंति (ग); संवेदेइ (क्व) ।
१३. सं० पा०—असिपत्ते इ वा जाव मुम्मुरे इ वा एत्तो अणिट्ठतराए चेव ।
१४. अवसव्वसे (ख, ग); अपस्ववशः अपगतात्म-तंत्र इत्यर्थः (वृ) ।
१५. सं० पा०—नाइ० ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संबंधि-परियणं° विपुलेणं[1] असण-पाण-खाइम-साइमेणं पुप्फ-वत्थ[2]-•गंध-मल्लालंकारेण य सक्कारेत्ता° सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ ॥

५५. तए णं सागरए सूमालियाए सद्धिं जेणेव वासघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सूमालियाए दारियाए सद्धिं तलिमंसि[3] निवज्जइ ॥

५६. तए णं से सागरए दारए सूमालियाए दारियाए इमं एयारूवं अंगफासं पडिसंवेदेइ, से जहानामए—असिपत्ते इ वा जाव[4] एत्तो अमणामतरागं चेव अंगफासं पच्चणुब्भवमाणे विहरइ ॥

५७. तए णं से सागरए दारए सूमालियाए दारियाए अंगफासं असहमाणे अवसवसे[5] मुहुत्तमेत्तं संचिट्ठइ ॥

५८. तए णं से सागरदारए सूमालियं दारियं सुहपसुत्तं जाणित्ता सूमालियाए दारियाए पासाओ उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सयणिज्जंसि[6] निवज्जइ ॥

५९. तए णं सा सूमालिया दारिया तओ मुहुत्तंतरस्स पडिबुद्धा समाणी पइव्वया[7] पइमणुरत्ता पइं पासे अपस्समाणी तलिमाओ[8] उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणेव से सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सागरस्स पासे णुवज्जइ ॥

६०. तए णं से सागरदारए सूमालियाए दारियाए दोच्चंपि इमं एयारूवं अंगफासं पडिसंवेदेइ जाव[9] अकामए अवसवसे मुहुत्तमेत्तं संचिट्ठइ ॥

६१. तए णं से सागरदारए सूमालियं दारियं सुहपसुत्तं जाणित्ता सयणिज्जाओ उट्ठेइ, उट्ठेत्ता वासघरस्स दारं विहाडेइ, विहाडेत्ता मारामुक्के विव काए जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ॥

सूमालियाए चिंता-पदं

६२. तए णं सा सूमालिया दारिया तओ मुहुत्तंतरस्स पडिबुद्धा पतिव्वया[10] •पइमणुरत्ता पइं पासे° अपासमाणी सयणिज्जाओ उट्ठेइ, सागरस्स दारगस्स सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करेमाणी-करेमाणी वासघरस्स दारं विहाडियं पासइ, पासित्ता एवं वयासी—गए णं से सागरए त्ति कट्टु ओहयमणसंकप्पा[11] •करतल-पल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया° झियायइ ॥

---

१. विपुलं (क, ख, ग, घ)।
२. सं० पा०—वत्थ जाव सम्माणेत्ता।
३. तलिगंसि (ख, ग)।
४. ना० १।१६।५२।
५. अवसव्वसे (क, ख, ग)।
६. सयणीयंसि (क, ख, घ)।
७. पतिवया (ख, ग, घ)।
८. तलिगाओ (ख); तलियग्गतो (ग)।
९. ना० १।१६।५२,५३।
१०. सं० पा०—पतिवया जाव अपासमाणी। पतिवया० (ग, घ)।
११. सं० पा०—ओहयमणसंकप्पा जाव झियायइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६३. तए णं सा भद्दा सत्थवाही कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए[1] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते दासचेडिं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिए ! बहूवरस्स मुहधोवणियं[2] उवणेहि ।।

६४. तए णं सा दासचेडी भद्दाए सत्थवाहीए एवं वुत्ता समाणी एयमट्ठं तहत्ति पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता मुहधोवणियं गेण्हइ,गेण्हित्ता जेणेव वासघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सूमालियं दारियं[3] •ओहयमणसंकप्पं करतलपल्हत्थमुहिं अट्टज्झाणोवगयं ° झियायमाणिं पासइ, पासित्ता एवं वयासी—किण्णं तुमं देवाणुप्पिए ! ओहयमणसंकप्पा[4] •करतलपल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया ° झियाहि ?

६५. तए णं सा सूमालिया दारिया तं दासचेडिं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिए ! सागरए दारए ममं सुहपसुत्तं जाणित्ता मम पासाओ उट्ठेइ, उट्ठेत्ता वासघरदुवारं अवंगुणेइ[5] •अवंगुणेत्ता मारामुक्के विव काए जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं° पडिगए । तए णंहं तओ मुहुत्तंतरस्स पडिबुद्धा[6] •पतिव्वया पइमणुरत्ता पइं पासे अपासमाणी सयणिज्जाओ उट्ठेमि सागरस्स दारगस्स सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करेमाणी-करेमाणी वासघरस्स दारं° विहाडियं पासामि, पासित्ता गए णं से सागरए ति कट्टु ओहयमणसंकप्पा[7] •करतलपल्हत्थमुहा अट्टज्झाणोवगया° झियायामि ।।

६६. तए णं सा दासचेडी सूमालियाए दारियाए एयमट्ठं सोच्चा जेणेव सागरदत्ते सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सागरदत्तस्स एयमट्ठं निवेदेइ ।।

सागरदत्तेण जिणदत्तस्स उवालंभ-पदं

६७. तए णं से सागरदत्ते दासचेडीए अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसेमाणे जेणेव जिणदत्तस्स सत्थवाहस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जिणदत्तं सत्थवाहं एवं वयासी—किण्णं देवाणुप्पिया ! एयं जुत्तं वा पत्तं वा कुलाणुरूवं वा कुलसरिसं वा जण्णं सागरए दारए सूमालियं दारियं अदिट्ठदोसवडियं[8] पइव्वयं[9] विप्पजहाय इहमागए ? बहूहिं खिज्जणियाहि य रुंटणियाहि[10] य उवालभइ ।।

---

१. पू०—ना० १।१।२४ ।

२. मुहसोवणियं (क); °सोहणियं (ख); °सोयणियं (ग) ।

३. सं० पा०—दारियं जाव झियायमाणिं ।

४. सं० पा०—ओहयमणसंकप्पा जाव झियाहि ।

५. अपंगुणेइ (ग) । सं० पा०—अवंगुणेइ जाव पडिगए ।

६. सं० पा०—पडिबुद्धा जाव विहाडियं ।

७. सं० पा०—ओहयमणसकप्पा जाव झियायामि ।

८. अदिट्ठदोसं (क, ग) ।

९. पइवयं (क, ख, ग, घ) ।

१०. × (क); कंटणियाहि (ग); रुंढणियाहि (घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सागरस्स पुणोगमण-ब्वुदास-पदं

६८. तए णं जिणदत्ते सागरदत्तस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठं सोच्चा जेणेव सागरए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सागरयं दारयं एवं वयासी—दुट्ठु णं पुत्ता ! तुमे कयं सागरदत्तस्स गिहाओ इहं हव्वमागच्छंतेणं[1]। तं गच्छह णं तुमं पुत्ता ! 'एवमवि[2] गए'[3] सागरदत्तस्स गिहे ॥

६९. तए णं से सागरए दारए जिणदत्तं सत्थवाहं एवं वयासी—अवियाइं अहं ताओ ! गिरिपडणं वा तरुपडणं वा मरुप्पवायं[4] वा जलप्पवेसं वा जलणप्पवेसं वा विसभक्खणं वा सत्थोवाडणं वा वेहाणसं[5] वा गिद्धपट्ठं[6] वा पव्वज्जं वा विदेसगमणं वा अब्भुवगच्छेज्जा, नो खलु अहं सागरदत्तस्स गिहं गच्छेज्जा[7] ॥

सूमालियाए दमगेण सद्धिं पुणव्विवाह-पदं

७०. तए णं से सागरदत्ते सत्थवाहे कुडुंतरियाए सागरस्स एयमट्ठं निसामेइ, निसामेत्ता लज्जिए विलीए विड्डे जिणदत्तस्स सत्थवाहस्स गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुकुमालियं दारियं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता अंके निवेसेइ, निवेसेत्ता एवं वयासी—किण्णं तव पुत्ता ! सागरएणं दारएणं[8] ? अहं णं तुमं तस्स दाहामि, जस्स णं तुमं इट्ठा[9] •कंता पिया मणुण्णा° मणामा भविस्ससि त्ति सूमालियं दारियं ताहिं इट्ठाहिं कंताहिं पियाहिं मणुण्णाहिं मणामाहिं वग्गूहिं[10] समासासेइ, समासासेत्ता पडिविसज्जेइ ॥

७१. तए णं से सागरदत्ते सत्थवाहे अण्णया उप्पिं आगासतलगंसि सुहनिसण्णे रायमग्गं ओलोएमाणे-ओलोएमाणे चिट्ठइ ॥

७२. तए णं से सागरदत्ते एगं महं दमगपुरिसं पासइ—दंडिखंड-निवसणं[11] खंडमल्लग-खंडघडग-हत्थगयं 'फुट्ट-हडाहड-सीसं मच्छियासहस्सेहिं'[12] अन्निज्जमाणमग्गं ॥

७३. तए णं से सागरदत्ते सत्थवाहे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! एयं दमगपुरिसं विपुलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं

---

१. हव्वमागए (ख, घ)।
२. एयमवि (क)।
३. इत्थमपिगते—अस्मिन् कार्ये (१।१६।२६६ सूत्रस्य वृत्तिः)।
४. मरुप्पवेसं (क)
५. विहुणसं (ख)।
६. गेद्धपट्ठं (ख, ग)।
७. अणुगच्छेज्जा (क)।
८. दारएणं मुक्का (घ)।
९. सं० पा०—इट्ठा जाव मणामा।
१०. बहूहिं वग्गूहिं (घ)।
११. वसणं (ख, ग)।
१२. मच्छियासहस्सेहिं जाव (क, ख, ग, घ)। आदर्शेषु पाठान्तररूपेण निदर्शितः पाठः उपलभ्यते, किन्तु अस्मिन् 'जाव' पदस्य विपर्ययो जातः। हत्थगयं जाव' इति पाठरचना युक्तास्ति। प्रस्तुताध्ययनस्य २९ सूत्रावलोकनेन एतत् स्पष्टं जायते।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पलोभेह[1], गिहं अणुप्पवेसेह[2], अणुप्पवेसेत्ता खंडमल्लगं खंडघडगं च से एगंते एडेह, एडेत्ता अलंकारियकम्मं करेह, ण्हायं कयबलिकम्मं[3] •कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्तं॰ सव्वालंकारविभूसियं करेह, करेत्ता मणुण्णं असण-पाण-खाइम-साइमं भोयावेह, मम अंतियं उवणेह ।।

७४. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव[4] पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता जेणेव से दमगपुरिसे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तं दमगं असण-पाण-खाइम-साइमेणं उवप्पलोभेंति[5], उवप्पलोभेत्ता सयं गिहं अणुप्पवेसंति, अणुप्पवेसेत्ता तं खंडमल्लगं खंडघडगं च तस्स दमगपुरिसस्स एगंते एडेंति ।।

७५. तए णं से दमगे तंसि खंडमल्लगंसि खंडघडगंसि य एडिज्जमाणंसि महया-महया सद्देणं आरसइ ।।

७६. तए णं से सागरदत्ते सत्थवाहे तस्स दमगपुरिसस्स तं महया-महया आरसिय-सद्दं सोच्चा निसम्म कोडुंबियपुरिसे एवं वयासी—किन्नं देवाणुप्पिया ! एस दमगपुरिसे महया-महया सद्देणं आरसइ ?

७७. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा एवं वयंति—एस णं सामी ! तंसि खंडमल्लगंसि खंडघडगंसि य एडिज्जमाणंसि महया-महया सद्देणं आरसइ ।।

७८. तए णं से सागरदत्ते सत्थवाहे ते कोडुंबियपुरिसे एवं वयासी—मा णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! एयस्स दमगस्स तं खंड[6]•मल्लगं खंडघडगं च एगंते॰ एडेह, पासे से ठवेह जहा 'अपत्तियं न'[7] भवइ । ते वि तहेव ठवेंति[8], ठवेत्ता तस्स दमगस्स अलंकारियकम्मं करेंति, करेत्ता सयपागसहस्सपागेहिं तेल्लेहिं अब्भंगेंति, अब्भंगिए[9] समाणे सुरभिणा गंधट्टएणं[10] गायं उव्वटेंति, उव्वट्टेत्ता उसिणोदग-गंधोदएणं ण्हाणेंति, सीओदगेणं ण्हाणेंति, पम्हल-सुकुमालाए गंधकासाईए गायाइं लूहेंति, लूहेत्ता हंसलक्खणं पडगसाडगं परिहेंति, सव्वालंकारविभूसियं करेंति, विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं भोयावेंति, भोयावेत्ता सागरदत्तस्स उवणेंति[11]।।

---

१. पडिलाभेह (घ) अशुद्धं प्रतिभाति ।
२. अणुपविसेह (ग)।
३. सं० पा०—कयबलिकम्मं जाव सव्वालंकार-विभूसियं ।
४. ना० १।१।१२६ ।
५. उवलोभेंति (क) ।
६. सं० पा०—खंड जाव एडेह ।
७. णं पत्तियं (ख, ग, घ) ।
८. ठावेंति (ख, ग) ।
९. अब्भिगिए (ग) ।
१०. गंधोद्धुएणं (क, घ); गंधुदएणं (ख); गंध-टूएणं (ग); गंधवट्टएणं (वृ०) । अत्र लिपिदोषेण वर्णपरिवर्तनं जातम् । उद्वर्तन-प्रकरणे उद्वर्तकवस्तुनिर्देशो युज्यते । अतः एवात्र 'गंधट्टएणं' इति पाठः स्वीकृतः । स्थानाङ्गे (३।८७) पि एतत् तुल्यप्रकरणे असौ पाठ उपलभ्यते ।
११. समीवे उवणेंति (वृ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७९. तए णं से सागरदत्ते सत्थवाहे सूमालियं दारियं ण्हायं जाव[1] सव्वालंकारविभूसियं करेत्ता तं दमगपुरिसं एवं वयासी—एस णं देवाणुप्पिया ! मम धूया इट्ठा कंता पिया मणुण्णा मणामा। एयं णं अहं तव भारियत्ताए दलयामि[2], भद्दियाए भद्दओ भवेज्जासि[3] ।।

दमगस्स पलायण-पदं

८०. तए णं से दमगपुरिसे सागरदत्तस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता सूमालियाए दारियाए सद्धिं वासघरं अणुपविसइ, सूमालियाए दारियाए सद्धिं तलिमंसि निवज्जइ ।।

८१. तए णं से दमगपुरिसे सूमालियाए इमेयारूवं अंगफासं पडिसंवेदेइ[4], •से जहानामए—असिपत्ते इ वा जाव[5] एत्तो अमणामतरागं चेव अंगफासं पच्चणुब्भवमाणे विहरइ ।।

८२. तए णं से दमगपुरिसे सूमालियाए दारियाए अंगफासं असहमाणे अवसवसे मुहुत्तमेत्तं संचिट्ठइ ।।

८३. तए णं से दमगपुरिसे सूमालियं दारियं सुहपसुत्तं जाणित्ता सूमालियाए दारियाए पासाओ उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणेव सए सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सयणिज्जंसि निवज्जइ ।।

८४. तए णं सा सूमालिया दारिया तओ मुहुत्तंतरस्स पडिबुद्धा समाणी पइव्वया पइमणुरत्ता पइं पासे अपस्समाणी तलिमाओ उट्ठेइ, उट्ठेत्ता जेणेव से सयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता दमगपुरिसस्स पासे णुवज्जइ ।।

८५. तए णं से दमगपुरिसे सूमालियाए दारियाए दोच्चंपि इमं एयारूवं अंगफासं पडिसंवेदेइ जाव[6] •अकामए अवसवसे मुहुत्तमेत्तं संचिट्ठइ ।।

८६. तए णं से दमगपुरिसे सूमालियं दारियं सुहपसुत्तं जाणित्ता° सयणिज्जाओ 'अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता[7] वासघराओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता खंडमल्लगं खंडघडगं च गहाय मारामुक्के विव काए जामेव दिसिं[8] पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ।।

सूमालियाए पुणोचिंता-पदं

८७. तए णं सा सूमालिया[9] •दारिया तओ मुहुत्तंतरस्स पडिबुद्धा पतिव्वया पइमणु-

---

१. ना० १।१।४७ ।
२. दलामि (क) ।
३. भवेज्जाहि (ग) ।
४. सं० पा०—सेसं जहा सागरस्स जाव सयणिज्जाओ ।
५. ना० १।१६।५२ ।
६. ना० १।१६।५२,५३ ।
७. पब्भुट्ठेइ २ (क, ग) ।
८. दिसं (क, ख) ।
९. सं० पा०—सूमालिया जाव गए ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रत्ता पइं पासे अपासमाणी सयणिज्जाओ उट्ठेइ, दमगपुरिसस्स सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करेमाणी-करेमाणी वासघरस्स दारं विहाडियं पासइ, पासित्ता एवं वयासी°—गए णं से दमगपुरिसे त्ति कट्टु ओहयमणसंकप्पा[1] •करतल-पल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया° झियायइ ॥

८८. तए णं सा भद्दा कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए[2] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते दासचेडिं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं[3] •वयासी—गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिए! बहूवरस्स मुहधोवणियं उवणेहि ॥

८९. तए णं सा दासचेडी भद्दाए सत्थवाहीए एवं वुत्ता समाणी एयमट्ठं तहत्ति पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता मुहधोवणियं गेण्हइ, गेण्हित्ता जेणेव वासघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सूमालियं दारियं ओहयमणसंकप्पं करतलपल्हत्थमुहिं अट्टज्झाणोवगयं झियायमाणिं पासइ, पासित्ता एवं वयासी—किण्णं तुमं देवाणुप्पिए! ओहयमणसंकप्पा करतलपल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया झियाहि?

९०. तए णं सा सूमालिया दारिया तं दासचेडिं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिए! दमगपुरिसे ममं सुहपसुत्तं जाणित्ता मम पासाओ उट्ठेइ, उट्ठेत्ता वासघरदुवारं अवंगुणेइ, अवंगुणेत्ता मारामुक्के विव काए जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए। तए णं हं तओ मुहुत्तंतरस्स पडिबुद्धा पतिव्वया पइमणुरत्ता पइं पासे अपासमाणी सयणिज्जाओ उट्ठेमि, दमगपुरिसस्स सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करेमाणी-करेमाणी वासघरस्स दारं विहाडियं पासामि, पासित्ता गए णं से दमगपुरिसे त्ति कट्टु ओहयमणसंकप्पा करतलपल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया झियायामि ॥

९१. तए णं सा दासचेडी सूमालियाए दारियाए एयमट्ठं सोच्चा जेणेव सागरदत्ते सत्थवाहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता° सागरदत्तस्स एयमट्ठं निवेदेइ ॥

सूमालियाए दाणसाला-पदं

९२. तए णं से सागरदत्ते तहेव संभंते समाणे जेणेव वासघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सूमालियं दारियं अंके निवेसेइ, निवेसेत्ता एवं वयासी—अहो णं तुमं पुत्ता! पुरापोराणाणं[4] •दुच्चिण्णाणं दुप्परक्कंताणं कडाणं पावाणं कम्माणं पावगं फलवित्तिविसेसं° पच्चणुब्भवमाणी विहरसि। तं मा णं तुमं पुत्ता! ओहयमणसंकप्पा[5] •करतलपल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया° झियाहि।

---

१. सं० पा०—ओहयमणसंकप्पा जाव झियायइ।

२. पू०—ना० १।१।२४।

३. सं० पा०—एवं जाव सागरदत्तस्स।

४. सं० पा०—पुरापोराणाणं जाव पच्चणुब्भमाणी।

५. सं० पा०—ओहयमणसंकप्पा जाव झियाहि।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तुमं णं पुत्ता ! मम महाणसंसि विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं [1]•उवक्खडा-वेहि, उवक्खडावेत्ता बहूणं समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमगाणं देयमाणी य दवावेमाणी य° परिभाएमाणी विहराहि ।।

६३. तए णं सा सूमालिया दारिया एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता [कल्लाकल्लिं ?] महाणसंसि विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं[2] •उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता बहूणं समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमगाणं देयमाणी य दवावेमाणी य° परिभाएमाणी[3] विहरइ ।।

अज्जा-संघाडगस्स भिक्खायरियागमण-पदं

६४. तेणं कालेणं तेणं समएणं गोवालियाओ अज्जाओ[4] बहुस्सुयाओ [5]•बहुपरिवाराओ पुव्वाणुपुव्विं चरमाणीओ जेणेव चंपा नयरी तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हंति, ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावे-माणीओ विहरंति ।

६५. तए णं तासिं गोवालियाणं अज्जाणं एगे संघाडए[6] जेणेव गोवालियाओ अज्जाओ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता गोवालियाओ अज्जाओ वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामो णं तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए चंपाए नयरीए उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडित्तए । अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेहि ।।

६६. तए णं ताओ अज्जाओ गोवालियाहिं अज्जाहिं अब्भणुण्णाया समाणीओ[7] भिक्खायरियं अडमाणीओ सागरदत्तस्स गिहं अणुप्पविट्ठाओ ।

सूमालियाए सागरपसायोवाय-पुच्छा-पदं

६७. तए णं सूमालिया ताओ अज्जाओ एज्जमाणीओ पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठा आसणाओ अब्भुट्ठेइ, वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता विपुलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पडिलाभेइ°, पडिलाभेत्ता एवं वयासी—एवं खलु अज्जाओ ! अहं सागरस्स अणिट्ठा[8] •अकंता अप्पिया अमणुण्णा° अमणामा ! नेच्छइ णं सागरए दारए मम नामं[9]•गोयमवि सवणयाए, किं पुण दंसणं वा° परिभोगं वा ?

---

१. सं० पा०—जहा पोट्टिला जाव परिभाए-माणी ।
२. सं० पा०—साइमं जाव परिभाएमाणी ।
३. दलयमाणी (क, ग); दलमाणी (ख, घ) ।
४. पू०—ना० १।१४।४० ।
५. सं० पा०—एवं जहेव तेयलिणाए सुव्वयाओ तहेव समोसढाओ तहेव संघाडओ जाव अणुपविट्ठे तहेव जाव सूमालिया ।
६. पू०—ना० १।१४।४१ ।
७ पू०—ना० १।१४।४२ ।
८. सं० पा०—अणिट्ठा जाव अमणामा ।
९. सं० पा०—नामं वा जाव परिभोगं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जस्स-जस्स वि य णं देज्जामि[1] तस्स-तस्स वि य णं अणिट्ठा[2] •अकंता अप्पिया अमणुण्णा° अमणामा भवामि।

तुब्भे य णं अज्जाओ! बहुनायाओ[3] •बहुसिक्खियाओ बहुपढियाओ बहूणि गामागर-णगर-खेड-कब्बड-दोणमुह-मडंब-पट्टण-आसम-निगम-संबाह-सण्णि-वेसाइं आहिंडह, बहूणं राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहपभिईणं गिहाइं अणुपविसह। तं अत्थियाइं भे अज्जाओ! केइ कहिंचि चुण्णजोए वा मंतजोगे वा कम्मणजोए वा कम्मजोए वा हियउड्डावणे वा काउड्डावणे वा आभिओगिए वा वसीकरणे वा कोउयकम्मे वा भूइकम्मे वा मूले वा कंदे वा छल्ली वल्ली सिलिया वा गुलिया वा ओसहे वा भेसज्जे वा° उवलद्धपुव्वे, जेणं अहं सागरस्स दारगस्स इट्ठा कंता[4] •पिया मणुण्णा मणामा° भवेज्जामि?

अज्जा-संघाडगस्स उत्तर-पदं

९८. [5]•तए णं ताओ अज्जाओ सूमालियाए एवं वुत्ताओ समाणीओ दोवि कण्णे ठएंति, ठएत्ता सूमालियं एवं वयासी—अम्हे णं देवाणुप्पिए! समणीओ निग्गंथीओ जाव[6] गुत्तबंभचारिणीओ नो खलु कप्पइ अम्हं एयप्पगारं कण्णेहिं वि निसामित्तए, किमंग पुण उवदंसित्तए वा आयरित्तए वा अम्हे णं तव देवाणुप्पिए! विचित्तं केवलिपण्णत्तं धम्मं परिकहिज्जामो॥

सूमालियाए साविया-पदं

९९. तए णं सा सूमालिया ताओ अज्जाओ एवं वयासी—इच्छामि णं अज्जाओ! तुब्भं अंतिए केवलिपण्णत्तं धम्मं निसामित्तए॥

१००. तए णं ताओ अज्जाओ सूमालियाए विचित्तं केवलिपण्णत्तं धम्मं परिकहेंति॥

१०१. तए णं सा सूमालिया धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठा एवं वयासी—सद्दहामि णं अज्जाओ! निग्गंथं पावयणं जाव[7] से जहेयं तुब्भे वयह। इच्छामि णं अहं तुब्भं अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं—दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिव-ज्जित्तए।

अहासुहं देवाणुप्पिए!

१०२. तए णं सा सूमालिया तासिं अज्जाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं जाव[8] गिहिधम्मं पडिवज्जइ, ताओ अज्जाओ वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता पडिविसज्जेइ॥

---

१. देज्जाहि (क)।
२. सं० पा०—अणिट्ठा जाव अमणामा।
३. सं० पा०—बहुनायाओ एवं जहा पोट्टिला जाव उवलद्धे।
४. सं० पा०—कंता जाव भवेज्जामि।
५. सं० पा०—अज्जाओ तहेव भणंति तहेव साविया जाया तहेव चिंता तहेव सागरदत्तं आपुच्छति।
६. ना० १।१४।४०।
७. ना० १।१।१०१।
८. ना० १।१४।४७।

१०३. तए णं सा सूमालिया समणोवासिया जाया जाव[1] समणे निग्गंथे फासुएणं एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुंछणेणं ओसहभेसज्जेणं पाडिहारिएण य पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं पडिलाभेमाणी विहरइ ॥

सूमालियाए पव्वज्जा-पदं

१०४. तए णं तीसे सूमालियाए अण्णया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुंबजागरियं जागरमाणीए अयमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—एवं खलु अहं सागरस्स पुव्वि इट्ठा कंता पिया मणुण्णा मणामा आसि, इयाणिं अणिट्ठा अकंता अप्पिया अमणुण्णा अमणामा। नेच्छइ णं सागरए मम नामगोयमवि सवणयाए, किं पुण दंसणं वा परिभोगं वा? जस्स-जस्स वि य णं देज्जामि तस्स-तस्स वि य णं अणिट्ठा अकंता अप्पिया अमणुण्णा अमणामा भवामि। तं सेयं खलु ममं गोवालियाणं अज्जाणं अंतिए पव्वइत्तए—एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव[2] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते जेणेव सागरदत्ते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु॰ एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिया! मए गोवालियाणं अज्जाणं अंतिए धम्मे निसंते, से वि य मे धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए। तं इच्छामि णं तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया पव्वइत्तए जाव[3] गोवालियाणं अज्जाणं अंतिए पव्वइया ॥

१०५. तए णं सा सूमालिया अज्जा जाया—इरियासमिया जाव[4] गुत्तबंभयारिणी बहूहिं चउत्थ-छट्ठट्ठम[5]-॰दसम दुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं अप्पाणं भावेमाणी॰ विहरइ ॥

सूमालियाए आतावणा-पदं

१०६. तए णं सा सूमालिया अज्जा अण्णया कयाइ जेणेव गोवालियाओ अज्जाओ तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—इच्छामि णं अज्जाओ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणी चंपाए नयरीए बाहिं सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूरसामंते छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं सूराभिमुही आयावेमाणी विहरित्तए ॥

१०७. तए णं ताओ गोवालियाओ अज्जाओ सूमालियं अज्जं एवं वयासी—अम्हे णं

१. ना० १।५।४७।
२. ना० १।१।२४।
३. ना० १।१४।५३,५४।
४. ना० १।१४।४०।
५. सं० पा०—छट्ठट्ठम जाव विहरइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अज्जो ! समणीओ निग्गंथीओ इरियासमियाओ जाव[1] गुत्तबंभचारिणीओ। नो खलु अम्हं कप्पइ बहिया गामस्स वा जाव[2] सण्णिवेसस्स वा छट्ठंछट्ठेणं[3] •अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं सूराभिमुहीणं आयावेमाणीणं॰ विहरित्तए। कप्पइ णं अम्हं अंतोउवस्सयस्स वइपरिक्खित्तस्स संघाडिबद्धियाए णं समतलपइयाए[4] आयावेत्तए ॥

१०८. तए णं सा सूमालिया गोवालियाए एयमट्ठं नो सद्दहइ नो पत्तियइ नो रोएइ, एयमट्ठं असद्दहमाणी अपत्तियमाणी अरोयमाणी सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स अदूरसामंते छट्ठंछट्ठेणं[5] •अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं सुराभिमुही आयावेमाणी॰ विहरइ ॥

सूमालियाए नियाण-पदं

१०९. तत्थ णं चंपाए ललिया नाम गोट्ठी परिवसइ—'नरवइ-दिन्न-पयारा'[6] अम्मापिइ॰[7]-नियण-निप्पिवासा वेसविहार-कय-निकेया[8] नाणाविह-अविणयप्पहाणा अड्ढा जाव[9] बहुजणस्स अपरिभूया ॥

११०. तत्थ णं चंपाए देवदत्ता नामं गणिया होत्था—सूमाला जहा अंड-नाए[10] ॥

१११. तए णं तीसे ललियाए गोट्ठीए अण्णया कयाइ पंच गोट्ठिल्लगपुरिसा देवदत्ताए गणियाए सद्धिं सुभूमिभागस्स उज्जाणस्स[11] उज्जाणसिरिं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति ॥

११२. तत्थ णं एगे गोट्ठिल्लगपुरिसे देवदत्तं गणियं उच्छंगे धरेइ, एगे पिट्ठओ आयवत्तं धरेइ, एगे पुप्फपूरगं रएइ, एगे पाए रएइ[12], एगे चामरुक्खेवं करेइ ॥

११३. तए णं सा सूमालिया अज्जा देवदत्तं गणियं तेहिं[13] पंचहिं गोट्ठिल्लपुरिसेहिं सद्धिं उरालाइं माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणिं[14] पासइ, पासित्ता इमेयारूवे संकप्पे समुप्पज्जित्था—अहो णं इमा इत्थिया पुरापोराणाणं[15] •सुचिण्णाणं सुपरक्कंताणं कडाणं कल्लाणाणं कम्माणं कल्लाणं फलवित्तिविसेसं पच्च-

---

१. ना० १।१४।४०।
२. ना० १।१।११८।
३. सं० पा०—छट्ठंछट्ठेणं जाव विहरित्तए।
४. समतलवइयाए (क); ॰पतिथाए (ख, घ); ॰वत्तियाए (ग)।
५. सं० पा०—छट्ठंछट्ठेणं जाव विहरइ।
६. नरवइविदिण्णवियारा (क, ख)।
७. अम्मापिई॰ (क, ख, ग)।
८. निवकेया (क); विक्किया (ख); निक्किया (ग)।
९. ना० १।५।७।
१०. ना० १।३।८।
११. × (ख, घ)।
१२. पाठान्तरे पाए रोवेइत्ति घृतजलाभ्यां आर्द्रयति (वृ)।
१३. एहिं (क)।
१४. भुंजमाणी (क, ख, ग, घ)।
१५. सं० पा०—पुरापोराणाणं जाव विहरइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णुब्भवमाणी• विहरइ। तं जइ णं केइ इमस्स सुचरियस्स तव-नियम-बंभचेरवासस्स कल्लाणे फलवित्तिविसेसे अत्थि, तो णं अहमवि आगमिस्सेणं भवग्गहणेणं इमेयारूवाइं उरालाइं[1] •माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी° विहरिज्जामि त्ति कट्टु नियाणं करेइ, करेत्ता आयावणभूमीओ[2] पच्चोरुभइ ॥

सूमालियाए बाउसियत्त-पदं

११४. तए णं सा सूमालिया अज्जा सरीरबाउसिया[3] जाया यावि होत्था—अभिक्खणं-अभिक्खणं हत्थे धोवेइ, पाए धोवेइ, सीसं धोवेइ, मुहं धोवेइ, थणंतराइं धोवेइ, कक्खंतराइं धोवेइ, गुज्झंतराइं धोवेइ, जत्थ णं ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेएइ, तत्थ वि य णं पुव्वामेव उदएणं अब्भुक्खेत्ता तओ पच्छा ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेएइ ॥

११५. तए णं ताओ गोवालियाओ अज्जाओ सूमालियं अज्जं एवं वयासी—एवं खलु अज्जे ! अम्हे समणीओ निग्गंथीओ इरियासमियाओ जाव[4] बंभचेरधारिणीओ। नो खलु कप्पइ अम्हं सरीरबाउसियाए[5] होत्तए। तुमं च णं अज्जे ! सरीरबाउसिया[6] अभिक्खणं-अभिक्खणं हत्थे धोवेसि[7], •पाए धोवेसि, सीसं धोवेसि, मुहं धोवेसि, थणंतराइं धोवेसि, कक्खंतराइं धोवेसि, गुज्झंतराइं धोवेसि, जत्थ णं ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेएसि, तत्थ वि य णं पुव्वामेव उदएणं अब्भुक्खेत्ता तओ पच्छा ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा° चेएसि। तं तुमं णं देवाणुप्पिए ! एयस्स ठाणस्स आलोएहि[8] •निंदाहि गरिहाहि पडिक्कमाहि विउट्टाहि विसोहेहि अकरणयाए अब्भुट्ठेहि, अहारिहं तवोकम्मं पायच्छित्तं° पडिवज्जाहि ॥

११६. तए णं सा सूमालिया गोवालियाणं अज्जाणं एयमट्ठं नो आढाइ नो परियाणाइ, 'अणाढायमाणी अपरियाणमाणी'[9] विहरइ ॥

११७. तए णं ताओ अज्जाओ सूमालियं अज्जं अभिक्खणं-अभिक्खणं हीलेंति[10] •निंदेंति खिंसेंति गरिहंति° परिभवंति, अभिक्खणं-अभिक्खणं एयमट्ठं निवारेंति ॥

---

१. सं० पा०—उरालाइं जाव विहरिज्जामि।
२. °भूमीए (ख, ग, घ)।
३. °बाउसा (क); °पाउसा (ख, ग); पाउसिया (घ)।
४. ना० १।१४।४०।
५. °पाउसिया (ख, ग, घ)।
६. पाउसिया (ख, घ)।
७. सं० पा०—धोवेसि जाव चेएसि।
८. सं० पा०—आलोएहि जाव पडिवज्जाहि।
९. अणाढाइमाणा अपरिजाणमाणा (क, घ); अणाढायमाणा अप्परियाणमाणा (ख); अपरिजाणमाणा (ग)।
१०. सं० पा०—हीलेंति जाव परिभवंति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सूमालियाए पुढोविहार-पदं

११८. तए णं तीसे सूमालियाए समणीहिं निग्गंथीहिं हीलिज्जमाणीए[1] •निंदिज्जमाणीए खिसिज्जमाणीए गरिहिज्जमाणीए परिभविज्जमाणीए अभिक्खणं-अभिक्खणं एयमट्ठं ° निवारिज्जमाणीए इमेयारूवे अज्झत्थिए[2] •चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था --जया णं अहं अगारमज्झे[3] वसामि[4], तया णं अहं अप्पवसा। जया णं अहं मुंडा भवित्ता पव्वइया, तया णं अहं परवसा। पुव्विं च णं ममं समणीओ आढंति परिजाणंति, इयाणिं नो आढंति नो परिजाणंति। तं सेयं खलु मम कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए[5] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते गोवालियाणं अज्जाणं अंतियाओ पडिनिक्खमित्ता पाडिएक्कं उवस्सयं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते गोवालियाणं अज्जाणं अंतियाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता पाडिएक्कं उवस्सयं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ ॥

११९. तए णं सा सूमालिया अज्जा अणोहट्टिया[6] अनिवारिया सच्छंदमई अभिक्खणं-अभिक्खणं हत्थे धोवेइ[7], •पाए धोवेइ, सीसं धोवेइ, मुहं धोवेइ, थणंतराइं धोवेइ, कक्खंतराइं धोवेइ, गुज्झंतराइं धोवेइ, जत्थ णं ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेएइ, तत्थ वि य णं पुव्वामेव उदएणं अब्भुक्खेत्ता तओ पच्छा ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा° चेएइ।

तत्थ वि य णं पासत्था पासत्थविहारिणी ओसन्ना ओसन्नविहारिणी कुसीला कुसीलविहारिणी संसत्ता संसत्तविहारिणी बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता अद्धमासियाए संलेहणाए अप्पाणं झोसेत्ता, तीसं भत्ताइं अणसणाए छेएत्ता, तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंता कालमासे कालं किच्चा ईसाणे कप्पे अण्णयरंसि विमाणंसि देवगणियत्ताए उववण्णा। तत्थेगइयाणं[8] देवीणं नवपलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। तत्थ णं सूमालियाए देवीए नवपलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ॥

दोवई-कहाणग-पदं

१२०. तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे पंचालेसु जणवएसु कंपिल्लपुरे नामं नयरे होत्था--वण्णओ[9] ॥

---

१. सं० पा०—हीलिज्जमाणीए जाव निवारिज्जमाणीए।
२. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।
३. अगारवास° (ख)।
४. परिवसामि (क)।
५. पू०—ना० १।१।२४।
६. अणाहट्टिया (ख, घ)।
७. सं० पा०—धोवेइ जाव चेएइ।
८. तत्थगतियाणं (क, ग)।
९. ओ० सू० १।

१२१. तत्थ णं दुवए नामं राया होत्था—वण्णओ[1] ।।

१२२. तस्स णं चुलणी देवी । धट्ठज्जुणे कुमारे जुवराया ।।

१२३. तए णं सा सूमालिया देवी ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं[2] •ठिइक्खएणं भवक्खएणं अणंतरं चयं• चइत्ता इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे पंचालेसु जणवएसु कंपिल्लपुरे नयरे दुवयस्स[3] रण्णो चुलणीए देवीए कुच्छिंसि दारियत्ताए पच्चायाया[4] ।।

१२४. तए णं सा चुलणी देवी नवण्हं मासाणं[5] •बहुपडिपुण्णाणं अद्धट्ठमाण य राइंदियाणं वीइक्कंताणं सुकुमाल-पाणिपायं जाव[6]• दारियं पयाया ।।

१२५. तए णं तीसे दारियाए निव्वत्तबारसाहियाए इमं एयारूवं नामं—जम्हा णं एसा दारिया दुपयस्स रण्णो धूया चुलणीए देवीए अत्तया, तं होउ णं अम्हं इमीसे दारियाए नामधेज्जे[7] दोवई ।।

१२६. तए णं तीसे अम्मापियरो इमं एयारूवं गोण्णं गुणनिप्फन्नं नामधेज्जं करेंति—दोवई-दोवई ।।

१२७. तए णं सा दोवई दारिया पंचधाईपरिग्गहिया जाव[8] गिरिकंदरमल्लीणा इव चंपगलया निवाय[9]-निव्वाघायंसि सुहंसुहेणं परिवड्ढइ ।।

१२८. तए णं सा दोवई रायवरकण्णा उम्मुक्कबालभावा[10] •विण्णय-परिणयमेत्ता जोव्वणगमणुपत्ता रूवेण य जोव्वणेण य लावण्णेण य उक्किट्ठा• उक्किट्ठसरीरा जाया यावि होत्था ।।

१२९. तए णं तं दोवइं रायवरकण्णं अण्णया कयाइ अंतेउरियाओ ण्हायं जाव[11] सव्वालंकारविभूसियं करेंति, करेत्ता दुवयस्स रण्णो पायवंदियं पेसेंति ।।

१३०. तए णं सा दोवई रायवरकण्णा जेणेव दुवए राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता दुवयस्स रण्णो पायग्गहणं करेइ ।।

दोवईए सयंवर-संकप्प-पदं

१३१. तए णं से दुवए राया दोवइं दारियं अंके निवेसेइ, निवेसेत्ता दोवईए रायवरकण्णाए रूवे य जोवण्णे य लावण्णे य जायविम्हए दोवइं रायवरकण्णं एवं वयासी—जस्स णं अहं तुमं पुत्ता ! रायस्स वा जुवरायस्स वा भारियत्ताए

---

१. ओ० सू० १४ ।
२. सं० पा०—आउक्खएणं जाव चइत्ता ।
३. दुपयस्स (ख, ग) ।
४. पयाया (क) ।
५. सं० पा०—मासाणं जाव दारियं ।
६. ना० १।१।२० ।
७. नामधेज्जं (ख, घ) ।
८. ना० १।१६।३६ ।
९. निव्वाय (क) ।
१०. सं० पा०—उम्मुक्कबालभावा जाव उक्किट्ठसरीरा ।
११. ना० १।१।४७ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सयमेव दलइस्सामि, तत्थ णं तुमं सुहिया वा दुहिया वा भवेज्जासि। तए णं मम जावज्जीवाए हिययदाहे भविस्सइ। तं णं अहं तव पुत्ता! अज्जयाए सयंवरं वियरामि। अज्जयाए णं तुमं दिन्नसयंवरा। जं णं तुमं सयमेव रायं वा जुवरायं वा वरेहिसि, से णं तव भत्तारे भविस्सइ त्ति कट्टु ताहिं इट्ठाहिं[1] •कंताहि पियाहिं मणुण्णाहिं मणामाहिं वग्गूहिं° आसासेइ, आसासेत्ता पडिविसज्जेइ॥

बारवईए दूयपेसण-पदं

१३२. तए णं से दुवए राया दूयं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया! बारवइं नयरिं। तत्थ णं तुमं कण्हं वासुदेवं समुद्दविजयपामोक्खे दस दसारे, बलदेवपामोक्खे पंच महावीरे, उग्गसेणपामोक्खे सोलस रायसहस्से, पज्जुन्नपामोक्खाओ अद्धट्ठाओ कुमारकोडीओ, संबपामोक्खाओ सट्ठि दुद्दंत-साहस्सीओ, वीरसेणपामोक्खाओ एक्कवीसं वीरपुरिससाहस्सीओ[2], महासेण-पामोक्खाओ छप्पन्नं बलवगसाहस्सीओ, अण्णे य बहवे राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहपभिइओ करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेहि, वद्धावेत्ता एवं वयाहि[3]—एवं खलु देवाणुप्पिया! कंपिल्लपुरे नयरे दुवयस्स रण्णो धूयाए, चूलणीए अत्तयाए, धट्ठज्जुणकुमारस्स[4] भइणीए, दोवईए रायवरकण्णाए सयंवरे भविस्सइ। तं[5] णं तुब्भे दुवयं रायं अणुगिण्हेमाणा[6] अकालपरिहीणं[7] चेव कंपिल्लपुरे नयरे समोसरह॥

१३३. तए णं से दूए करयल[8]•परिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं° कट्टु दुवयस्स रण्णो एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेह। 'ते वि तहेव उवट्ठवेंति'[9]॥

१३४. तए णं से दूए ण्हाए जाव[10] अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे चाउग्घंटं आसरहं

---

१. सं० पा०—इट्ठाहिं जाव आसासेइ।
२. रायवरवीर° (ख, ग); वीरसाहस्सीणं (१।५।६)।
३. वयह (क)।
४. धिट्ठ° (ग)।
५. ते (ख)।
६. अणुगिण्हमाणा (क, ग, घ)।
७. °परिहीणा (ख, घ)।
८. सं० पा०—करयल जाव कट्टु।
९. सो वि तहेव उवट्ठवेति (क, ख, ग, घ); 'कोडुंबियपुरिसे' तथा 'उवट्ठवेह' एते क्रियापदे बहुवचनान्ते स्तः, तेनात्रापि बहुवचनान्ते क्रियापदे युज्येते। एवं प्रतीयते पाठपूरणे कश्चिद् विपर्ययो जातः।
१०. ना० १।१।२७।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दुरुहइ, दुरुहित्ता बहूहिं पुरिसेहिं—सण्णद्ध[1]-•बद्ध-वम्मिय-कवएहिं उप्पीलिय-सरासण-पट्टिएहिं पिणद्ध-गेविज्जेहिं आविद्ध-विमल-वरचिंध-पट्टेहिं° गहियाउह-पहरणेहिं—सद्धिं संपरिवुडे कंपिल्लपुरं नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, पंचाल-जणवयस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव देसप्पंते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुरट्ठाजणवयस्स[2] मज्झंमज्झेणं जेणेव बारवई नयरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता बारवइं नयरिं मज्झंमज्झेणं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता जेणेव कण्हस्स वासुदेवस्स बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउग्घंटं आसरहं ठावेइ, ठावेत्ता रहाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता मणुस्स-वग्गुरापरिक्खित्ते पायचारविहारेणं जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कण्हं वासुदेवं, समुद्दविजयपामोक्खे य दस दसारे जाव[3] 'छप्पन्नं बलवगसाहस्सीओ'[4] करयल[5]•परिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावेत्ता एवं वयइ—एवं खलु देवाणुप्पिया ! कंपिल्लपुरे नयरे दुवयस्स रण्णो धयाए, चुलणीए अत्तयाए, धट्ठज्जुणकुमारस्स भइणीए, दोवईए रायवरकण्णाए सयंवरे अत्थि। तं णं तुब्भे दुवयं रायं अणुगिण्हेमाणा अकालपरिहीणं चेव कंपिल्लपुरे नयरे° समोसरह ॥

१३५. तए णं से कण्हे वासुदेवे तस्स दूयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ-[6] •चित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाण°-हियए तं दूयं सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ ॥

कण्हस्स पत्थाण-पदं

१३६. तए णं से कण्हे वासुदेवे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! सभाए सुहम्माए सामुदाइयं भेरिं तालेहि ॥

१३७. तए णं से कोडुंबियपुरिसे करयल[7]•परिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं° कट्टु कण्हस्स वासुदेवस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता जेणेव सभाए सुहम्माए सामुदाइया[8] भेरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सामुदाइयं भेरिं महया-महया सद्देणं तालेइ ॥

१३८. तए णं ताए सामुदाइयाए भेरीए तालियाए समाणीए समुद्दविजयपामोक्खा दस

---

१. सं० पा०—सण्णद्ध जाव गहिया° ।
२. सुरट्ठ° (क, घ) ।
३. ना० १।१६।१३२ ।
४. १३२ सूत्रानुसारेणाऽत्र 'सत्थवाहप्पभिइओ' इति पाठः संगच्छते ।
५. सं० पा०—करयल तं चेव जाव समोसरह ।
६. सं० पा०—हट्ठतुट्ठ जाव हियए ।
७. सं० पा०—करयल० ।
८. सामुदाणिया (ख, घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दसारा जाव[1] 'महासेणपामोक्खाओ छप्पन्नं बलवगसाहस्सीओ'[2] ण्हाया जाव[3] सव्वालंकारविभूसिया जहाविभवइड्ढिसक्कारसमुदएणं अप्पेगइया हयगया[4] •एवं गयगया रह-सीया-संदमाणीगया॰ अप्पेगइया पायविहारचारेणं[5] जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल[6]•परिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु॰ कण्हं वासुदेवं जएणं विजएणं वद्धावेंति ।।

१३९. तए णं से कण्हे वासुदेवे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी— खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! आभिसेक्कं[7] हत्थिरयणं पडिकप्पेह हय-गय[8]- •रह-पवरजोहकलियं चाउरंगिणिं सेणं सण्णाहेह, सण्णाहेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह । ते वि तहेव॰ पच्चप्पिणंति ।।

१४०. तए णं से कण्हे वासुदेवे जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समत्तजालाकुलाभिरामे[9] •विचित्तमणि-रयणकुट्टिमतले रमणिज्जे ण्हाणमंडवंसि णाणामणि-रयण-भत्ति-चित्तंसि ण्हाणपीढंसि सुहणिसण्णे सुहोदएहिं गंधोदएहिं पुप्फोदएहिं सुद्धोदएहिं पुणो-पुणो कल्लाणग-पवर मज्जणविहीए मज्जिए जाव[10]॰ अंजणगिरिकूडसन्निभं गयवइं नरवई दुरूढे ।।

१४१. तए णं से कण्हे वासुदेवे समुद्दविजयपामोक्खेहिं दसहिं दसारेहिं जाव[11] अणंगसेणापामोक्खाहिं अणेगाहिं गणियासाहस्सीहिं सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए जाव[12] दुंदुहि-निग्घोसनाइयरवेणं बारवइं नयरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता सुरट्ठाजणवयस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव देसप्पंते तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पंचालजणवयस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव कंपिल्लपुरे नयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।।

हत्थिणाउरे दूयपेसण-पदं

१४२. तए णं से दुवए राया दोच्चं पि दूयं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउरं[13] नयरं । तत्थ णं तुमं पंडुरायं सपुत्तयं—

---

१. ना० १।१६।१३२ ।

२. १३२ सूत्रानुसारेणाऽत्र 'सत्थवाहप्पभिइओ' इति पाठः संगच्छते ।

३. ना० १।१।४७ ।

४. सं० पा०—हयगया जाव अप्पेगइया ।

५. पायचारविहारेणं (क, ख, ग) ।

६. सं० पा०—करयल जाव कण्हं ।

७. अभिसेक्कं (क, ख, घ) ।

८. सं० पा०—हयगय जाव पच्चप्पिणंति ।

९. सं० पा०—समत्तजालाकुलाभिरामे जाव अंजणगिरि० ।

१०. ओ० सू० ६३ ।

११. ना० १।५।६ ।

१२. ना० १।१।३३ ।

१३. हत्थिणपुरं (ख, घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जुहिट्ठिलं[1] भीमसेणं अज्जुणं नउलं सहदेवं, दुज्जोहणं भाइसय[2]-समग्गं, गंगेयं विदुरं दोणं जयद्दहं सउणिं कीवं आसत्थामं करयल[3]•परिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेहि, वद्धावेत्ता एवं वयाहि—एवं खलु देवाणुप्पिया! कंपिल्लपुरे नयरे दुवयस्स रण्णो धूयाए, चुलणीए अत्तयाए धट्ठज्जुणकुमारस्स भइणीए, दोवईए रायवरकण्णाए सयंवरे भविस्सइ। तं णं तुब्भे दुवयं रायं अणुगिण्हेमाणा अकालपरिहीणं चेव कंपिल्लपुरे नयरे° समोसरह॥

१४३. तए णं से दूए[4] •जेणेव हत्थिणाउरे नयरे जेणेव पंडुराया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पंडुरायं सपुत्तयं—जुहिट्ठिलं भीमसेणं अज्जुणं नउलं सहदेवं, दुज्जोहणं भाइसय-समग्गं, गंगेयं विदुरं दोणं जयद्दहं सउणिं कीवं आसत्थामं[5] एवं वयइ—एवं खलु देवाणुपिया! कंपिल्लपुरे नयरे दुवयस्स रण्णो धूयाए, चुलणीए अत्तयाए, धट्ठज्जुणकुमारस्स भइणीए दोवईए रायवरकण्णाए सयंवरे अत्थि। तं णं तुब्भे दुवयं रायं अणुगिण्हेमाणा अकालपरिहीणं चेव कंपिल्लपुरे नयरे समोसरह॥

१४४. तए णं से पंडुराया जहा वासुदेवे नवरं—भेरी नत्थि जाव[6]° जेणेव कंपिल्लपुरे नयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए॥

दूयपेसण-पदं

१४५. एएणेव कमेणं—

तच्चं दूयं[7] •एवं वयासी—गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया! चंपं नयरिं। तत्थ णं

---

१. जुहिट्ठिल्लं (घ)।

२. भायसय° (ख, घ)।

३. सं० पा०—करयल जाव कट्टु तहेव जाव समोसरह।

४. सं० पा०—तए णं से दूए एवं वयासी जहा वासुदेवे नवरं भेरी नत्थि जाव जेणेव; पू०—ना० १।१६।१३३,१३४।

५. पू०—ना० १।१६।१३४।

६. ना० १।१६। १३५-१४१।

७. सं० पा०—तच्चं दूयं चंपं नयरिं। तत्थ णं तुमं कण्णं अंगरायं सल्लं नंदिरायं करयल तहेव जाव समोसरह। चउत्थं दूयं सोत्तिमइं नयरिं। तत्थ णं तुमं सिसुपालं दमघोससुयं पंचभाइसयसंपरिवुडं करयल तहेव जाव समोसरह। पंचमं दूयं हत्थिसीसं नयरिं। तत्थ णं तुमं दमदंतं रायं करयल जाव समोसरह। छट्ठं दूयं महुरं नयरिं। तत्थ णं तुमं धरं रायं करयल जाव समोसरह। सत्तमं दूयं रायगिहं नयरं। तत्थ णं तुमं सहदेवं जरासंधसुयं करयल जाव समोसरह। अट्ठमं दूयं कोडिण्णं नयरं। तत्थ णं तुमं रुप्पिं भेसगसुयं करयल तहेव जाव समोसरह। नवमं दूयं विराटं नयरिं। तत्थ णं तुमं कीयगं भाउसयसमग्गं करयल जाव समोसरह। दसमं दूयं अवसेसेसु गामागर-नगरेसु अणेगाइं रायसहस्साइं जाव समोसरह। तए णं से दूए तहेव निग्गच्छइ जेणेव गामागर तहेव जाव समोसरह।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तुमं कण्णं[1] अंगरायं, सल्लं नंदिरायं एवं वयाहि—कंपिल्लपुरे नयरे समोसरह[2]। चउत्थं दूयं एवं वयासी—गच्छह णं तुमं देवाणप्पिया ! सोत्तिमइं नयरिं। तत्थ णं तुमं सिसुपालं दमघोससुयं पंचभाइसय-संपरिवुडं एवं वयाहि—कंपिल्लपुरे नयरे समोसरह[3]।

पंचमं दूयं एवं वयासी—गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! हत्थिसीसं नयरिं। तत्थ णं तुमं दमदंतं रायं एवं वयाहि—कंपिल्लपुरे नयरे समोसरह[4]।

छट्ठं दूयं एवं वयासी—गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! महुरं नयरिं। तत्थ णं तुमं धरं रायं एवं वयाहि—कंपिल्लपुरे नयरे समोसरह[5]।

सत्तमं दूयं एवं वयासी—गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! रायगिहं नयरिं। तत्थ णं तुमं सहदेवं जरासंधसुयं एवं वयाहि—कंपिल्लपुरे नयरे समोसरह[6]।

अट्ठमं दूयं एवं वयासी—गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! कोडिण्णं नयरं। तत्थ णं तुमं रुप्पिं भेसगसुयं एवं वयाहि—कंपिल्लपुरे नयरे समोसरह[7]।

नवमं दूयं एवं वयासी—गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! विराटं नयरं। तत्थ णं कीयगं भाउसय-समग्गं एवं वयाहि—कंपिल्लपुरे नयरे समोसरह[8]।

दसमं दूयं एवं वयासी—गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! अवसेसेसु गामागर-नगरेसु। तत्थ णं तुमं अणेगाइं रायसहस्साइं एवं वयाहि—कंपिल्लपुरे नयरे° समोसरह[9]।

रायसहस्साणं पत्थाणं-पदं

१४६. तए णं ते[10] बहवे रायसहस्सा पत्तेयं-पत्तेयं ण्हाया सण्णद्ध-बद्ध-वम्मिय-

---

१. कण्हं (क्व)।

२. शेष १३२-१३४ सूत्रवत् पूरणीयम्।

३-८. शेष १३२-१३४ सूत्रवत् पूरणीयम्।

९. शेषं १३२-१३४ सूत्रवत् पूरणीयम्। अन्तिमात् 'समोसरह' इति पदादग्रे निम्नलिखितः पाठो लभ्यते, किन्तु पूर्वक्रमानुसारेण असौ संक्षिप्तपाठपद्धतावेव गर्भितोस्ति, तेनात्रास्माभिः पाठान्तररूपेण स्वीकृतः। 'तए णं से दूए तहेव निग्गच्छइ जेणेव गामागर-नगराइं जेणेव अणेगाइं रायसहस्साइं तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एवं वयासी—कंपिल्लपुरे नयरे समोसरह। तए णं ताइं अणेगाइं रायसहस्साइं तस्स दूयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठा तं दूयं सक्कारेंति सम्माणेंति, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेंति' [ख, ग, घ]। १३४ सूत्र त् १४५ सूत्रपर्यन्तं 'क' प्रतौ एतावान् एव पाठः उपलभ्यते · गच्छह णं तुमं देवाणु रायगिहं नयरं। तत्थ णं तुमं सहदेवं रायाणं अण्णे य जाव बहवे जाव बद्धावेत्ता एवं वयह—एवं खलु देवाणुप्पिया। कंपिल्लपुरे जाव समोसरह। एवं महुराए उग्गेणं उग्गसेण वा रायं। हत्थिणाउरे पंडु सपुत्तयं। वइराडए णगरे दुज्जोहणं भाइसतसमग्गं सउणि सल्लगिं च जयद्दहं दोणं आसत्थामं अण्णे य। दंतपुरी दंतवक्को। चंपाए पउमराया। तए णं से दूए तहत्ति जाव पडिसुणेइ।

१०. ते वासुदेवपामोक्खा [क, ख, ग, घ]।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कवया[1] हत्थिखंधवरगया[2] हय-गय-रह[3]-•पवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडा महयाभड-चडगर-रह-पहकर-विंदपरिक्खित्ता° सएहिं-सएहिं नगरेहिंतो अभिनिग्गच्छंति, अभिनिग्गच्छित्ता जेणेव पंचाले जणवए तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।

दुवयस्स आतिथ्य-पद

१४७. तए णं से दुवए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! कंपिल्लपुरे नयरे बहिया गंगाए महानईए अदूरसामंते एगं महं सयंवरमंडवं करेह—अणेगखंभ-सयसन्निविट्ठं लीलट्ठिय-सालिभंजियागं जाव[4] पासाईयं दरिसणिज्जं अभिरूवं पडिरूवं—करेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह । ते वि तहेव पच्चप्पिणंति ॥

१४८. तए णं से दुवए राया [दोच्चंपि ?] कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! वासुदेवपामोक्खाणं बहूणं रायसहस्साणं आवासे करेह, करेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह । ते वि तहेव पच्चप्पिणंति ॥

१४९. तए णं से दुवए राया वासुदेवपामोक्खाणं बहूणं[5] रायसहस्साणं आगमणं जाणेत्ता पत्तेयं-पत्तेयं हत्थिखंध[6]•वरगए सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं सेयवरचामराहिं वीइज्जमाणे हय-गय-रह-पवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडे महयाभड-चडगर-रह-पहकर-विंदपरिक्खित्ते° अग्घं च पज्जं च गहाय सव्विड्ढीए कंपिल्लपुराओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव ते वासुदेवपामोक्खा बहवे रायसहस्सा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ताइं वासुदेवपामोक्खाइं अग्घेण य पज्जेण य सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तेसिं वासुदेवपामोक्खाणं पत्तेयं-पत्तेयं आवासे वियरइ ॥

१५०. तए णं ते वासुदेवपामोक्खा जेणेव सया-सया आवासा तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता हत्थिखंधेहिंतो पच्चोरुहंति, पच्चोरुहित्ता पत्तेयं-पत्तेयं खंधावारनिवेसं करेंति, करेत्ता सएसु-सएसु आवासेसु अणुप्पविसंति, अणुप्पविसित्ता सएसु-सएसु आवासेसु[7] आसणेसु य सयणेसु य सन्निसण्णा य संतुयट्टा य बहूहिं गंधव्वेहि य नाडएहि य उवगिज्जमाणा य उवनच्चिज्जमाणा य विहरंति ॥

१५१. तए णं से दुवए राया कंपिल्लपुरं नयरं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता विपुलं

वासुदेवस्य प्रस्थानविषयकं सूत्रं पूर्वं साक्षात् उल्लिखितमस्ति, तथैव पाण्डुराजस्यापि, तेनासौ पाठः पाठान्तररूपेण स्वीकृतः ।

१. पू०—ना० १।१६।१३४ ।

२. पू०—ना० १।८।५७; १।१६।१५३ ।

३. सं० पा०—रह महया ।

४. ना० १।१ ८९ ।

५. × (ग, घ) ।

६. सं० पा०—हत्थिखंध जाव परिवुडे ।

७. आवासेसु य (क, ख, ग, घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी--गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं सुरं च मज्जं च मंसं च सीधुं च पसन्नं च सुबहुं पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारं च वासुदेवपामोक्खाणं रायसहस्साणं आवासेसु साहरह । तेवि साहरंति ।।

१५२. तए णं ते वासुदेवपामोक्खा तं विपुलं असण[1]-•पाण-खाइम-साइमं सुरं च मज्जं च मंसं च सीधुं च° पसन्नं च आसाएमाणा विसादेमाणा परिभाएमाणा परिभुंजेमाणा विहरंति । जिमियभुत्तुत्तरागया वि य णं समाणा आयंता चोक्खा[2] •परमसुइभूया° सुहासणवरगया बहूहिं गंधव्वेहि य[3] •नाडएहि य उवगिज्जमाणा य उवनच्चिज्जमाणा य° विहरंति ।।

दोवईए सयंवर-पदं

१५३. तए णं से दुवए राया पच्चावरण्ह[4]-कालसमयंसि कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! कंपिल्लपुरे सिंघाडग[5]-•तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापह°-पहेसु वासुदेवपामोक्खाणं रायसहस्साणं आवासेसु हत्थिखंधवरगया महया-महया सद्देणं उग्घोसेमाणा एवं वयह—एवं खलु देवाणुप्पिया ! कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए[6] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते दुवयस्स रण्णो धूयाए, चुलणीए देवीए अत्तियाए, धट्ठज्जुणस्स भगिणीए, दोवईए रायवरकण्णाए सयंवरे भविस्सइ । तं तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! दुवयं रायाणं अणुगिण्हेमाणा ण्हाया जाव[7] सव्वालंकारविभूसिया हत्थिखंधवरगया सकोरेंट[8]•मल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं सेयवरचामराहिं वीइज्जमाणा हय-गय-रह-पवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडा महयाभड-चडगर-रह-पहकर-विंद°परिक्खित्ता जेणेव सयंवरामंडवे तेणेव उवागच्छह, उवागच्छित्ता पत्तेयं-पत्तेयं नामंकिएसु[9] आसणेसु निसीयह, निसीइत्ता दोवइं रायवरकण्णं पडिवालेमाणा-पडिवालेमाणा चिट्ठह त्ति[10] घोसणं घोसेह, घोसेत्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ।।

१५४. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा तहेव जाव[11] पच्चप्पिणंति ।।

---

१. सं० पा०—असण जाव पसन्नं ।
२. सं० पा०—चोक्खा जाव सुहासणवरगया ।
३. सं० पा०—गंधव्वेहि य जाव विहरंति ।
४. पुव्वावरण्ह (ख, ग, घ) ।
५. सं० पा०—सिंघाडग जाव पहेसु ।
६. पू०—ना० १।१।२४ ।
७. ना० १।१४७ ।
८. सं० पा०—सकोरेंट° सेयचामर हय-गय-रह-महयाभडचडगरेण जाव परिक्खित्ता ।
९. नामंकेसु (क, ख, ग, घ) ।
१०. × (क, ख, ग) ।
११. ना० १।१६।१५३ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१५५. तए णं से दुवए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! सयंवरमंडवं आसिय-संमज्जिओवलित्तं पंचवण्ण[1]-पुप्फोवयारकलियं कालागरु-पवरकुंदुरुक्क-तुरुक्क[2]-•धूव-डज्झंत-सुरभि-मघमघेंत-गंधुद्धयाभिरामं सुगंधवरगंधगंधियं° गंधवट्टिभूयं मंचाइमंचकलियं करेह कारवेह, करेत्ता कारवेत्ता वासुदेवपामोक्खाणं बहूणं रायसहस्साणं पत्तेयं-पत्तेयं नामंकियाइं[3] आसणाइं अत्थुयपच्चत्थुयाइं रएह, रएत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह। तेवि जाव पच्चप्पिणंति॥

१५६. तए णं ते वासुदेवपामोक्खा बहवे रायसहस्सा कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए[4] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते ण्हाया जाव[5] सव्वालंकारविभूसिया हत्थिखंधवरगया सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं सेयवरचामराहिं वीइज्जमाणा हय-गय[6]-•रह-पवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडा महयाभड-चडगर-रह-पहकर-विंदपरिक्खित्ता° सव्विड्ढीए जाव[7] दुंदुहि-निग्घोस-नाइयरवेणं जेणेव सयंवरामंडवे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता अणुप्पविसंति, अणुप्पविसित्ता पत्तेयं-पत्तेयं नामंकिएसु[8] आसणेसु निसीयंति दोवइं रायवरकण्णं पडिवालेमाणा-पडिवालेमाणा चिट्ठंति॥

१५७. तए णं से दुवए राया कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए[9] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते ण्हाए जाव[10] सव्वालंकारविभूसिए हत्थिखंधवरगए सकोरेंट[11]•मल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं सेयवरचामराहिं वीइज्जमाणे हय-गय-रह-पवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडे महयाभड-चडगर-रह-पहकर-विंदपरिक्खित्ते° कंपिल्लपुरं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, जेणेव सयंवरामंडवे जेणेव वासुदेवपामोक्खा बहवे रायसहस्सा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तेसिं वासुदेवपामोक्खाणं करयल[12]-•परिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ°, वद्धावेत्ता कण्हस्स वासुदेवस्स सेयवरचामरं गहाय उववीयमाणे चिट्ठइ॥

१५८. तए णं सा दोवई रायवरकण्णा कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए[13] उट्ठियम्मि सूरे

---

१. सुगंध-वरगंधियं पंचवण्ण (क, ख, ग, घ)।
२. सं० पा०—तुरुक्क जाव गंधवट्टिभूयं।
३. नामंकाइं (क, ख, ग, घ)।
४. पू०—ना० १।१।२४।
५. ना० १।१।१४७।
६. सं० पा०—हयगय जाव परिवुडा।
७. ना० १।१।३३।
८. नामंकेसु (ख, घ)।
९. पू०—ना० १।१।२४।
१०. ना० १।१।४७।
११. सं० पा०—सकोरेंट हयगय।
१२. सं० पा०—करयल वद्धावेत्ता।
१३. पू०—ना० १।१।२४।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते जेणेव मज्जणघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मज्जणघरं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता ण्हाया कयबलिकम्मा कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ता सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिया मज्जणघराओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव जिणघरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जिणघरं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता जिणपडिमाणं अच्चणं करेइ, करेत्ता[1] जिणघराओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव अंतेउरे तेणेव उवागच्छइ ॥

१५९. तए णं तं दोवइं रायवरकण्णं अंतेउरियाओ सव्वालंकारविभूसियं करेंति । 'किं ते'[2] ? वरपायपत्तनेउरा जाव[3] चेडिया-चक्कवाल-'महयरग-विंद'[4]-परिक्खित्ता अंतेउराओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता किड्डावियाए लेहियाए सद्धिं चाउग्घंटं आसरहं दुरूहइ ॥

१६०. तए णं से धट्ठज्जुणे कुमारे दोवईए रायवरकण्णाए सारत्थं करेइ ॥

१६१. तए णं सा दोवई रायवरकण्णा कंपिल्लपुरं नयरं मज्झंमज्झेणं जेणेव सयंवरामंडवे[5] तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता रहं ठवेइ, रहाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता किड्डावियाए लेहियाए सद्धिं सयंवरामडवं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता करयल[6]•परिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु• तेसिं वासुदेवपामोक्खाणं बहूणं रायवरसहस्साणं पणामं करेइ ॥

१६२. तए णं सा दोवई रायवरकण्णा एगं महं सिरिदामगंडं—किं ते ? पाडल-

---

१. जिणपडिमाणं अच्चणं करेइ त्ति एकस्यां वाचनायामेतावदेव दृश्यते (वृ) । वाचनान्तरे तु—ण्हाया जाव सव्वालंकारविभूसिया मज्जणघराओ पडिनिक्खमइ जेणामेव जिणघरे तेणामेव उवागच्छति जिणघरं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता जिणपडिमाणं आलोए पणामं करेइ, करेत्ता लोमहत्थगं परामुसइ, परामुसित्ता एवं जहा सूरियाभे जिणपडिमाओ अच्चेति तहेव भाणियव्वं जाव धूवं डहइ २ वामं जाणुं अंचेइ, दाहिणं जाणुं धरणितलंसि निहट्टु तिक्खुत्तो मुद्धाणं धरणितलंसि निवेसइ [निमेइ (क, ग); निसीयइ (घ); निवाडेइ (राय० सू० २९२)] ईसिं पच्चुण्णमइ पच्चुण्णमित्ता करयलपरिग्गहियं अंजलिं मत्थए कट्टु एवं वयासी—नमोत्थु णं अरहंताणं जाव संपत्ताणं वंदइ नमंसइ नमंसित्ता जिणघराओ पडिनिक्खमइ (वृपा, क, ख, ग, घ) ।

२. किं तत् 'यत् करोति' इति शेषः ।

३. ना० १।१।३३ ।

४. मयहरिग° (क); मयहरम° (ख, घ); मयहरयंद (ग); यद्यपि पाठसंशोधन-प्रयुक्तेषु आदर्शेषु 'मयहरग' ° इतिपाठो लभ्यते किन्तु 'ओवाइयं' ७० सूत्रे 'महत्तरवंद' इति पाठोस्ति, तदनुसारेण 'महयरगवंद' इति पाठोऽस्माभिः स्वीकृतः । लिपिदोषेण यकार-हकारयोर्विपर्ययः संजातः इति संभाव्यते ।

५. सयवरमंडवे (क, ख, ग, घ) ।

६. सं० पा०—करयल° ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मल्लिय-चंपय जाव[1] सत्तच्छयाईहिं[2] गंधद्धणिं मुयंतं परमसुहफासं दरिसणिज्जं — गेण्हइ ।।

१६३. तए णं सा किड्डाविया सुरूवा[3] •साभावियघंसं वोद्दहजणस्स उस्सुयकरं विचित्त-मणि-रयण-बद्धच्छरुहं° वामहत्थेणं चिल्लगं दप्पणं गहेऊण सललियं दप्पण-संकंतबिंब[4]-संदंसिए[5] य से दाहिणेणं हत्थेणं दरिसए[6] पवररायसीहे । फुडविसय-विसुद्ध-रिभिय-गंभीर-महुरभणिया सा तेसिं सव्वेसिं[7] पत्थिवाणं अम्मापिउ-वंस-सत्त-सामत्थ-गोत्त-विक्कंति-कंति[8]-बहुविहआगम-माहप्प-रूव-कुलसीलजा-णिया कित्तणं करेइ । पढमं ताव वण्हिपुंगवाणं दसारवर[9]-वीरपुरिस-तेलोक्क-बलवगाणं[10], सत्तु[11]-सयसहस्स-माणावमद्दगाणं[12] 'भवसिद्धिय-वरपुंडरीयाणं'[13] चिल्लगाणं बल-वीरिय-रूव-जोव्वण-गुण-लावण्णकित्तिया कित्तणं करेइ ।

तओ पुणो उग्गसेणमाईणं[14] जायवाणं भणइ—सोहग्गरूवकलिए वरेहि वरपुरिसगंधहत्थीणं जो हु ते होइ हियय-दइओ ।।

दोवईए पंडव-वरण-पदं

१६४. तए णं सा दोवई रायावरकण्णगा बहूणं रायवरसहस्साणं मज्झंमज्झेणं समइच्छमाणी-समइच्छमाणी[15] पुव्वकयनियाणेणं चोइज्जमाणी-चोइज्जमाणी जेणेव पंच पंडवा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ते पंच पंडवे तेणं दसद्ध-वण्णेणं कुसुमदामेणं आवेढियपरिवेढिए करेइ, करेत्ता एवं वयासी—एए णं मए पंच पंडवा वरिया ।।

१६५. तए णं ताइं वासुदेवपामोक्खाइं बहूणि रायसहस्साणि महया-महया सद्देणं उग्घोसेमाणाइं-उग्घोसेमाणाइं एवं वयंति—सुवरियं खलु भो ! दोवईए रायवरकण्णाए त्ति कट्टु सयंवरमंडवाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव सया-सया आवासा तेणेव उवागच्छंति ।।

१६६. तए णं धट्ठज्जुणे कुमारे पंच पंडवे दोवइं च[16] रायवरकण्णं चाउग्घंटं आसरहं

---

१. ना० १।८।३० ।
२. १।८।३० सूत्रे 'सत्तच्छयाईहिं' इति पाठो नोपलभ्यते तथा येषां पदानामपि क्रमभेदो वर्तते ।
३. सं० पा०—सुरूवा जाव वामहत्थेणं ।
४. °बिंबं (ख, ग) ।
५. दंसिए (घ) ।
६. दरिसीएइ (ख); दरसिए (घ) ।
७. सव्व (क, ख, ग) ।
८. कित्ति (वृपा) ।
९. दसदसार (ग) । पूर्णपाठः अस्याध्ययनस्य १३२ सूत्रे द्रष्टव्यः ।
१०. तिल्लोक° (क) ।
११. सक्क (घ) ।
१२. माणोवमद्दगाणं (ख, घ) ।
१३. भवसिद्धिपवर° (ख) ।
१४. °माइयाणं (क) ।
१५. समतिच्छमाणी (ख, ग, घ) ।
१६. × (ग) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'दुरुहावेइ, दुरुहावेत्ता'[१] कंपिल्लपुरं नयरं मज्झंमज्झेणं[२] •उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ° सयं भवणं अणुपविसइ ।।

पाणिग्गहण-पदं

१६७. तए णं से दुवए राया पंच पंडवे दोवइं च[३] रायवरकण्णं पट्टयं 'दुरुहावेइ, दुरुहावेत्ता'[४] सेयापीयएहिं कलसेहिं मज्जावेइ, मज्जावेत्ता अग्गिहोमं करावेइ[५], पंचण्हं पंडवाणं दोवईए य पाणिग्गहणं कारावेइ[६] ।।

१६८. तए णं से दुवए राया दोवईए रायवरकण्णाए इमं एयारूवं पीइदाणं दलयइ, तं जहा—अट्ठ हिरण्णकोडीओ जाव[७] पेसणकारीओ दासचेडीओ, अण्णं च विपुलं धण-कणग[८]-•रयण-मणि-मोत्तिय-संख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-संत-सार-सावएज्जं अलाहि जाव आसत्तमाओ कुलवंसाओ पकामं दाउं पकामं भोत्तुं पकामं परिभाएउं ° दलयइ ।।

१६९. तए णं से दुवए राया ताइं वासुदेवपामोक्खाइं बहूइं रायसहस्साइं विपुलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पुप्फ-वत्थ-गंध[९]-•मल्लालंकारेणं सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता ° पडिविसज्जेइ ।।

पंडुरायस्स निमंतण-पदं

१७०. तए णं से पंडू राया तेसिं वासुदेवपामोक्खाणं बहूणं रायसहस्साणं करयल[१०]-•परिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु ° एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउरे नयरे पंचण्हं पंडवाणं दोवईए य देवीए कल्लाणकारे[११] भविस्सइ । तं तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! ममं अणुगिण्हमाणा अकालपरिहीणं चेव समोसरह ।।

१७१. तए णं ते वासुदेवपामोक्खा बहवे रायसहस्सा पत्तेयं-पत्तेयं[१२] •ण्हाया सण्णद्ध-बद्ध-वम्मिय-कवया[१३] हत्थिखंधवरगया जाव[१४] जेणेव हत्थिणाउरे नयरे तेणेव• पहारेत्थ गमणाए ।।

---

१. दुरुहेइ २ (क, ख, ग, घ) । अस्मिन्नर्थप्रसंगे प्रेरणार्थकं क्रियापदं युज्यते । आदर्शेषु तथा नोपलभ्यते । १।१६।५१ सूत्रस्य संदर्भेण एतत् क्रियापदं मूलपाठे स्वीकृतम् ।
२. सं० पा०—मज्झंमज्झेणं जाव सयं ।
३. × (ख, ग) ।
४. दुरुहेइ २ (क, ख, ग, घ)। द्रष्टव्यम्—१६६ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।
५. करेइ (ख, घ); कारवेइ (ग) ।
६. कारेइ (क, घ); करेइ (ग) ।
७. ना० १।१।९१ टिप्पणगाथा ।
८. सं० पा०—कणग जाव दलयइ ।
९. सं० पा०—गंध जाव पडिविसज्जेइ ।
१०. सं० पा०—करयल जाव एवं ।
११. कल्लाणकारी (क); कल्लाणकरे (घ) ।
१२. सं० पा०—पत्तेयं जाव पहारेत्थ ।
१३. पू०—ना० १।१६।१३४ ।
१४. ना० १।१६।१४६ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पंडुरायस्स आतित्थ-पदं

१७२. तए णं से पंडू राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया। हत्थिणाउरे नयरे पंचण्हं पंडवाणं पंच पासायवडिंसए कारेह—अब्भुग्गयमूसिय जाव[1] पडिरूवे ।।

१७३. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा पडिसुणेंति जाव कारवेंति ।।

१७४. तए ण से पंडू राया पंचहिं पंडवेहिं दोवईए देवीए सद्धिं हय-गय[2]-°रह-पवर-जोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडे महयाभडचडगर-रह-पहकर-विंदपरिक्खित्ते° कंपिल्लपुराओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव हत्थिणाउरे तेणेव उवागए ।।

१७५. तए णं से पंडू राया तेसिं वासुदेवपामोक्खाणं आगमणं जाणित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउरस्स नयरस्स वहिया वासुदेवपामोक्खाणं बहूणं रायसहस्साणं आवासे—अणेगखंभ-सयसण्णिविट्ठे[3] कारेह, कारेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह । तेवि तहेव पच्चप्पिणंति ।।

१७६. तए णं ते वासुदेवपामोक्खा बहवे रायसहस्सा जेणेव हत्थिणाउरे तेणेव उवागए ।।

१७७. तए णं से पंडू राया ते वासुदेवपामोक्खे[4] °बहवे रायसहस्से° उवागए[5] जाणित्ता हट्ठतुट्ठे ण्हाए कयबलिकम्मे जहा दुवए जाव[6] जहारिहं आवासे दलयइ ।।

१७८. तए णं ते वासुदेवपामोक्खा बहवे रायसहस्सा जेणेव सया-सया आवासा तेणेव उवागच्छंति तहेव जाव[7] विहरंति ।।

१७९. तए णं से पंडू राया हत्थिणाउरं नयरं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता कोडुंबिय-पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं[8] आवासेसु उवणेह । तेवि तहेव उवणेंति ।।

१८०. तए णं ते वासुदेवपामोक्खा बहवे रायसहस्सा ण्हाया कयबलिकम्मा कय-कोउय-मंगल-पायच्छित्ता तं विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं आसाएमाणा तहेव जाव[9] विहरंति ।।

कल्लाणकार-पदं

१८१. तए णं से पंडू राया ते पंच पंडवे दोवइं च देविं पट्टयं 'दुरुहावेइ, दुरुहावेत्ता'[10] सेया-

---

१. वण्णओ जाव(क, ख, ग, घ);ना० १।१।८६।
२. सं० पा०—हयगय संपरिवुडे ।
३. पू०—ना० १।१।८६ ।
४. सं० पा०—वासुदेवपामोक्खे जाव उवागए ।
५. आगए (ग) ।
६. ना० १।१६।१४६ ।
७. ना० १।१६।१५० ।
८. पू०—ना० १।१६।१५१ ।
९. ना० १।१६।१५२ ।
१०. दुरुहेइ २(क, ख, ग, घ)। द्रष्टव्यम्—१६६ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पीएहिं[1] कलसेहिं ण्हावेइ,ण्हावेत्ता कल्लाणकारं[2] करेइ[3],करेत्ता ते वासुदेवपामोक्खे बहवे रायसहस्से विपुलेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्ला-लंकारेण य सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ ।।

१८२. तए णं ताइं वासुदेवपामोक्खाइं बहूइं[4] °रायसहस्साइं पंडूएणं रण्णा विसज्जिया समाणा जेणेव साइं-साइं रज्जाइं जेणेव साइं-साइं नगराइं तेणेव° पडिगयाइं[5] ।।

१८३. तए णं ते पंच पंडवा दोवईए देवीए सद्धिं कल्लाकल्लिं वारंवारेणं उरालाइं भोगभोगाइं[6] °भुंजमाणा° विहरंति ।।

नारदस्स आगमण-पदं

१८४. तए णं से पंडू राया अण्णया कयाइं पंचहिं पंडवेहिं कोंतीए[7] देवीए दोवईए य सद्धिं अंतोअंतेउरपरियालसद्धिं संपरिवुडे सीहासणवरगए यावि विहरइ ।।

१८५. इमं च णं 'कच्छुल्लनारए—दंसणेणं अइभद्दए विणीए अंतो-अंतो य कलुस हियए 'मज्झत्थ-उवत्थिए'[8] य अल्लीण-सोमपियदंसणे सुरूवे अमइल-सगल-परिहिए कालमियचम्म-उत्तरासंग-रइयवच्छे दंड-कमंडलु-हत्थे जडामउड-दित्तसिरए जन्नोवइय-गणेत्तिय-मुंजमेहला-वागलधरे हत्थकय-कच्छभीए[9] पियगंधव्वे धरणिगोयरप्पहाणे संवरणावरणि-ओवयणुप्पयणि-लेसणीसु य संकामणि-आभिओगि[10]-पण्णत्ति-गमणि[11]-थंभिणीसु य बहूसु विज्जाहसुरी[12] विज्जासु विस्सुयजसे इट्ठे रामस्स य केसवस्स य पज्जुन्न-पईव-संब-अनिरुद्ध-निसढ-उम्मुय-सारण-गय-सुमुह-दुम्मुहाईणं[13] जायवाणं अद्धुट्ठाण य कुमारकोडीणं हियय-दइए संथवए कलह-जुद्ध-कोलाहलप्पिए[14] भंडणाभिलासी बहूसु य समर-सयसंपराएसु दंसणरए समंतओ कलहं सदक्खिणं अणुगवेसमाणे असमाहिकरे दसारवर[15]-वीरपुरिस-तेलोक्कबलवगाणं आमंतेऊण तं भगवइं पक्कमणिं गगण-गमणदच्छं उप्पइओ गगणमभिलंघयंतो गामागर-नगर-खेड-कब्बड-मडंब-दोणमुह-पट्टण-संवाह-सहस्समंडियं थिमियमेइणीयं[16] निब्भर[17]-जणपदं वसुहं

---

१. सीया° (क, ख, ग)।
२. कल्लाणालंकारं (क) कल्लाणलंकारं (ख); कल्लाणकरं (घ)।
३. कारेइ (ख)।
४. सं० पा०—बहूइं जाव पडिगयाइं।
५. परिगयाइं (क)।
६. सं० पा०—भोगभोगाइं जाव विहरंति।
७. कुंतीए (ख)।
८. मज्झत्थोवत्थिए (ग)।
९. एकस्यां हस्तलिखितवृत्तौ 'कच्छवीए' इति पाठोऽपि लभ्यते।
१०. अभिओग (क, ख, ग, घ)।
११. गमण (ख); गमणी (घ)।
१२. × (ख)।
१३. दुमुहा° (घ)।
१४. कोउहल° (ख)।
१५. पूर्णपाठः अस्याध्ययनस्य १३२ सूत्रे द्रष्टव्यः।
१६. थिमियमेयणीतलं (ग)।
१७. निभय (ख)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ओलोइंते रम्मं हत्थिणाउरं उवागए पंडुरायभवणंसि[1] 'झत्ति-वेगेण'[2] समोवइए ॥

१८६. तए णं से पंडू राया कच्छुल्लनारयं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता पंचहिं पंडवेहिं कुंतीए य देवीए सद्धिं आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता कच्छुल्लनारयं सत्तट्ठपयाइं पच्चुग्गच्छइ, पच्चुग्गच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता महरिहेणं 'अग्घेणं पज्जेणं'[3] आसणेण य उवनिमंतेइ ॥

१८७. तए णं से कच्छुल्लनारए उदगपरिफोसियाए दब्भोवरिपच्चत्थुयाए भिसियाए निसीयइ, निसीइत्ता पंडुरायं रज्जे य[4] •रट्ठे य कोसे य कोट्ठागारे य बले य वाहणे य पुरे य° अंतेउरे य कुसलोदंतं पुच्छइ ॥

१८८. तए णं से पंडू राया कोंती देवी पंच य पंडवा कच्छुल्लनारयं आढंति[5] •परियाणंति अब्भुट्ठेंति° पज्जुवासंति।

१८९. तए णं सा दोवई देवी कच्छुल्लनारयं 'अस्संजयं अविरयं अप्पडिहयपच्चक्खायपावकम्मंति'[6] कट्टु नो आढाइ नो परियाणइ नो अब्भुट्ठेइ नो पज्जुवासइ ॥

१९०. तए णं तस्स कच्छुल्लनारयस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था--अहो णं दोवई देवी रूवेण य[7] •जोव्वणेण य° लावण्णेण य पंचहिं पंडवेहिं अवत्थद्धा[8] समाणी ममं नो आढाइ[9] •नो परियाणइ नो अब्भुट्ठेइ° नो पज्जुवासइ। तं सेयं खलु मम दोवईए देवीए विप्पियं करेत्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता पंडुरायं आपुच्छइ, आपुच्छित्ता उप्पयणिं[10] विज्जं आवाहेइ, आवाहेत्ता ताए उक्किट्ठाए[11] •तुरियाए चवलाए चंडाए सिग्घाए उद्धुयाए जइणाए छेयाए° विज्जाहरगईए लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं पुरत्थाभिमुहे वीईवइउं पयत्ते यावि होत्था।

नारदस्स अवरकंका-गमण-पदं

१९१. तेणं कालेणं तेणं समएणं धायइसंडे दीवे पुरत्थिमद्ध-दाहिणड्ढ-भरहवासे अवरकंका नामं रायहाणी होत्था ॥

---

१. कच्छुल्लनारए जाव पंडुस्स रण्णो भवणंसि (क) अस्य संक्षिप्तपाठस्य परम्पराया उल्लेखो वृत्तावपि लभ्यते, यथा—इह क्वचिद् यावत् करणादिदं दृश्यम् (वृ)।
२. झडवेगेणं (ख, ग, घ)।
३. × (ग, घ)।
४. सं० पा०—रज्जे य जाव अंतेउरे।
५. सं० पा०—आढंति जाव पज्जुवासंति।
६. अस्संजय-अविरय-अप्पडिहयअपच्चक्खायपावकम्मंति (क, ग)।
७. सं० पा०—रूवेण य जाव लावण्णेण।
८. अट्ठुद्धा (ख)।
९. सं० पा०—आढाइ जाव नो पज्जुवासइ।
१०. उप्पणि (ख, ग)।
११. सं० पा०—उक्किट्ठाए जाव विज्जाहरगईए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१९२. तत्थ णं अवरकंकाए रायहाणीए पउमनाभे नामं राया होत्था--महयाहिमवंत-महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे वण्णओ[1] ॥

१९३. तस्स णं पउमनाभस्स रण्णो सत्त देवीसयाइं ओरोहे होत्था ॥

१९४. तस्स णं पउमनाभस्स रण्णो सुनाभे नामं पुत्ते जुवरायावि होत्था ॥

१९५. तए णं से पउमनाभे राया अंतोअंतेउरंसि ओरोह-संपरिवुडे सीहासणवरगए विहरइ ॥

१९६. तए णं से कच्छुल्लनारए जेणेव अवरकंका रायहाणी जेणेव पउमनाभस्स भवणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पउमनाभस्स रण्णो भवणंसि झत्ति-वेगेण समोवइए ॥

१९७. तए णं से पउमनाभे राया कच्छुल्लनारयं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता अग्घेणं[2] •पज्जेणं° आसणेणं उवनिमंतेइ ॥

१९८. तए णं से कच्छुल्लनारए उदगपरिफोसियाए दब्भोवरिपच्चत्थुयाए भिसियाए निसीयइ[3], •निसीइत्ता पउमनाभं रायं रज्जे य रट्ठे य कोसे य कोट्ठागारे य बले य वाहणे य पुरे य अंतेउरे य° कुसलोदंतं आपुच्छइ ।

१९९. तए णं से पउमनाभे राया नियगओरोहे जायविम्हए कच्छुल्लनारयं एवं वयासी --तुमं देवाणुप्पिया ! बहूणि[4] •गामागर-नगर-खेड-कब्बड-दोणमुह-मडंब-पट्टण-आसम-निगम-संवाह-सण्णिवेसाइं आहिंडसि, बहूण य राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहपभिईणं° गिहाइं अणुपविससि, तं अत्थि-याइं ते कहिंचि देवाणुप्पिया ! एरिसए ओरोहे दिट्ठपुव्वे, जारिसए णं मम ओरोहे ?

२००. तए णं से कच्छुल्लनारए पउमनाभेणं एवं वुत्ते समाणे ईसिं विहसियं करेइ, करेत्ता एवं वयासी--सरिसे णं तुमं पउमनाभा ! तस्स अगडददुरस्स ।
के णं देवाणुप्पिया ! से अगडददुरे ?
[5]•पउमनाभा ! से जहानामए अगडददुरे सिया । सेणं तत्थ जाए तत्थेव वुड्ढे अण्णं अगडं वा तलागं वा दहं वा सरं वा सागरं वा अपासमाणे मण्णइ-- अयं चेव अगडे वा तलागे वा दहे वा सरे वा सागरे वा । तए णं तं कूवं अण्णे सामुद्दए ददुरे हव्वमागए । तए णं से कूवददुरे तं सामुद्दयं ददुरं एव वयासी--से के तुमं देवाणुप्पिया ! कत्तो वा इह हव्वमागए ?
तए णं से सामुद्दए ददुरे तं कूवददुरं एवं वयासी---एवं खलु देवाणुप्पिया ! अहं सामुद्दए ददुरे ।

---

१. ओ० सू० १४ ।
२. सं० पा०--अग्घेणं जाव आसणेणं ।
३. सं० पा०--निसीयइ जाव कुसलोदंतं ।
४. सं० पा०--बहूणि गामाणि जाव गिहाइं ।
५. सं० पा०--एवं जहा मल्लिणाए ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तए णं से कूवदद्दुरे तं सामुद्दयं दद्दुरं एवं वयासी—केमहालए णं देवाणुप्पिया! से समुद्दे ?

तए णं से सामुद्दए दद्दुरे तं कूवदद्दुरं एवं वयासी—महालए णं देवाणुप्पिया! समुद्दे।

तए णं से कूवदद्दुरे पाएणं लीहं कड्ढेइ, कड्ढेत्ता एवं वयासी—एमहालए णं देवाणुप्पिया! से समुद्दे ?

नो इणट्ठे समट्ठे। महालए णं से समुद्दे।

तए णं से कूवदद्दुरे पुरत्थिमिल्लाओ तीराओ उप्फिडित्ता णं पच्चत्थिमिल्लं तीरं गच्छइ, गच्छित्ता एवं वयासी—एमहालए णं देवाणुप्पिया! से समुद्दे ?

नो इणट्ठे समट्ठे। एवामेव तुमं पि पउमनाभा! अण्णेसिं बहूणं राईसर जाव[1] सत्थवाहप्पभिईणं भज्जं वा भगिणिं वा धूयं वा सुण्हं वा अपासमाणे जाणसि जारिसए मम चेव णं ओरोहे, तारिसए णो अण्णेसिं°।

एवं खलु देवाणुप्पिया! जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे हत्थिणाउरे नयरे दुपयस्स रण्णो धूया चुलणीए देवीए अत्तया पंडुस्स सुण्हा पंचण्हं पंडवाणं भारिया दोवई नामं देवी रूवेण य[2] •जोव्वणेण य लावण्णेण य उक्किट्ठा° उक्किट्ठ-सरीरा। दोवईए णं देवीए छिन्नस्सवि पायंगुट्ठस्स अयं तव ओरोहे सयंपि कलं न अग्घइ त्ति कट्टु पउमनाभं आपुच्छइ[3], •आपुच्छित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं° पडिगए॥

दोवईए साहरण-पदं

२०१. तए णं से पउमनाभे राया कच्छुल्लनारयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म दोवईए देवीए रूवे य जोव्वणे य लावण्णे य मुच्छिए गढिए गिद्धे अज्झोववण्णे जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसालं[4] •अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता पुव्वसंगइयं देवं मणसीकरेमाणे-मणसीकरेमाणे चिट्ठइ॥

२०२. तए णं पउमनाभस्स रण्णो अट्ठमभत्तंसि परिणममाणंसि पुव्वसंगइओ देवो जाव[5] आगओ।

भणंतु णं देवाणुप्पिया! जं मए कायव्वं॥

२०३. तए णं से पउमनाभे° पुव्वसंगइयं देवं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे हत्थिणाउरे[6] •नयरे दुपयस्स रण्णो धूया चुलणीए देवीए अत्तया पंडुस्स सुण्हा पंचण्हं पंडवाणं भारिया दोवई नामं देवी रूवेण य

---

१. ना० १।५।६।
२. सं० पा०—रूवेण य जाव उक्किट्ठसरीरा।
३. सं० पा०—आपुच्छइ जाव पडिगए।
४. सं० पा०—पोसहसालं जाव पुव्वसंगइयं।
५. ना० १।१।५४-५७।
६. सं० पा०—हत्थिणाउरे जाव सरीरा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जोव्वणेण य लावण्णेण य उक्किट्ठा उक्किट्ठ°सरीरा। तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया! दोवइं देविं 'इह हव्वमाणीयं'[1]॥

२०४. तए णं से पुव्वसंगइए देवे पउमनाभं एवं वयासी—नो खलु देवाणुप्पिया! एवं भूयं वा भव्वं वा भविस्सं वा जण्णं दोवई देवी पंच पंडवे मोत्तूणं अण्णेणं पुरिसेणं सद्धिं उरालाइं[2] •माणुस्सगाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी° विहरिस्सइ। तहावि य णं अहं तव पियट्ठयाए दोवइं देविं इहं हव्वमाणेमि त्ति कट्टु पउमनाभं आपुच्छइ, आपुच्छित्ता ताए उक्किट्ठाए[3] •तुरियाए चवलाए चंडाए जवणाए सिग्घाए उद्धुयाए दिव्वाए° देवगईए लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं जेणेव हत्थिणाउरे नयरे तेणेव पहारेत्थ गमणाए॥

२०५. तेणं कालेणं तेणं समएणं हत्थिणाउरे नयरे जुहिट्ठिल्ले राया दोवईए देवीए सद्धिं उप्पिं आगासतलगंसि सुहप्पसुत्ते यावि होत्था॥

२०६. तए णं से पुव्वसंगइए देवे जेणेव जुहिट्ठिल्ले राया जेणेव दोवई देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता दोवईए देवीए ओसोवणिं[4] दलयइ, दलइत्ता दोवइं देविं गिण्हइ, गिण्हित्ता ताए उक्किट्ठाए[5] •तुरियाए चवलाए चंडाए जवणाए सिग्घाए उद्धुयाए दिव्वाए° देवगईए जेणेव अवरकंका[6] जेणेव पउमनाभस्स भवणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पउमनाभस्स भवणंसि असोगवणियाए दोवइं देविं ठावेइ, ठावेत्ता ओसोवणिं अवहरइ, अवहरित्ता जेणेव पउमनाभे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एवं वयासी—एस णं देवाणुप्पिया! मए हत्थिणाउराओ दोवई देवी इहं हव्वमाणीया तव असोगवणियाए चिट्ठइ। अओ परं तुमं जाणसि त्ति कट्टु जामेव दिसिं[7] पाउब्भूए तामेव दिसिं[8] पडिगए॥

दोवईए चिंता-पदं

२०७. तए णं सा दोवइ देवी तओ मुहुत्तंतरस्स पडिबुद्धा समाणी तं भवणं असोगवणियं च अपच्चभिजाणमाणी एवं वयासी—नो खलु अम्हं 'एसे सए भवणे'[9] नो खलु एसा अम्हं सगा असोगवणिया। तं न नज्जइ णं अहं केणइ देवेण वा दाणवेण वा किण्णरेण वा किंपुरिसेण वा महोरगेण वा गंधव्वेण वा अण्णस्स रण्णो असोगवणियं साहरिय त्ति कट्टु ओहयमणसंकप्पा[10] •करतलपल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया° झियायइ॥

---

१. माणीयं (क, ख, ग)।
२. सं० पा०—उरालाइं जाव विहरिस्सइ।
३. सं० पा०—उक्किट्ठाए जाव देवगईए।
४. ओसोवणियं (ख)।
५. सं० पा०—उक्किट्ठाए जाव देवगईए।
६. अमरकंका (ख, ग, घ)।
७,८. दिसं (क)।
९. इमे सए पासाए (घ)।
१०. सं० पा०—ओहयमणसंकप्पा जाव झियायइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पउमनाभस्स आसासण-पदं

२०८. तए णं से पउमनाभे राया ण्हाए जाव[1] सव्वालंकारविभूसिए अंतेउर-परियाल-संपरिवुडे जेणेव असोगवणिया जेणेव दोवई देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता दोवइं देविं ओहयमणसंकप्पं[2] •करतलपल्हत्थमुहिं अट्टज्झाणोवगयं° झियायमाणिं पासइ, पासित्ता एवं वयासी—किन्नं तुमं देवाणुप्पिए! ओहयमणसंकप्पा[3] •करतलपल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया° झियाहि[4] ? एवं खलु तुमं देवाणुप्पिए! मम पुव्वसंगइएणं देवेणं जंबुद्दीवाओ दीवाओ भारहाओ वासाओ हत्थिणाउराओ नयराओ जुहिट्ठिलस्स रण्णो भवणाओ साहरिया। तं मा णं तुमं देवाणुप्पिया! ओहयमणसंकप्पा[5] •करतलपल्हत्थमुही अट्टज्झाणोवगया° झियाहि। तुमं णं मए सद्धिं विपुलाइं भोगभोगाइं[6] •भुंजमाणी° विहराहि॥

२०९. तए णं सा दोवई देवी पउमनाभं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे बारवईए नयरीए कण्हे नामं वासुदेवे मम पियभाउए परिवसइ। तं जइ णं से छण्हं मासाणं मम कूवं नो हव्वमागच्छइ, तए णं अहं[7] देवाणुप्पिया! जं तुमं वदसि, तस्स आणा-ओवाय-वयणनिद्देसे चिट्ठिस्सामि॥

२१०. तए णं से पउमनाभे दोवईए देवीए एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता दोवइं देविं कण्णंतेउरे[8] ठवेइ[9]॥

२११. तए णं सा दोवई देवी छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं आयंबिल-परिग्गहिएणं[10] तवोकम्मेणं अप्पाणं भावेमाणी विहरइ॥

दोवईए गवेसणा-पदं

२१२. तए णं से जुहिट्ठिल्ले राया तओ मुहुत्तंतरस्स पडिबुद्धे समाणे दोवइं देविं पासे अपासमाणे सयणिज्जाओ उट्ठेइ, उट्ठेत्ता दोवईए देवीए सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करेइ, करेत्ता दोवईए देवीए कत्थइ सुइं वा खुइं वा पवत्तिं वा अलभमाणे जेणेव पंडू राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पंडुं रायं एवं वयासी—एवं खलु ताओ! मम आगासतलगंसि सुहपसुत्तस्स पासाओ दोवई देवी न नज्जइ केणइ देवेण वा दाणवेण वा 'किण्णरेण वा किंपुरिसेण'[11] वा महोरगेण

---

१. ना० १।१।४७।
२. सं० पा०—ओहयमणसंकप्पं जाव झियायमाणिं।
३. सं० पा०—ओहयमणसंकप्पा जाव झियाहि।
४. झियासि (क)।
५. सं० पा०—ओहयमणसंकप्पा जाव झियाहि।
६. सं० पा०—भोगभोगाइं जाव विहराहि।
७. हं (क, ख)।
८. कण्णतेउरंसि (क)।
९. ठावेइ (ग)।
१०. पग्गहिएणं (ग)।
११. किंपुरिसेण वा किन्नरेण (ख, ग, घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वा गंधव्वेण वा हिया वा निया वा अवक्खित्ता वा । तं इच्छामि णं ताओ ! दोवईए देवीए सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करित्तए[1] ।।

२१३. तए णं से पंडू राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउरे नयरे सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु महया-महया सद्देणं उग्घोसेमाणा-उग्घोसेमाणा एवं वयह—एवं खलु देवाणुप्पिया ! जुहिट्ठिलस्स[2] रण्णो आगासतलगंसि सुहपसुत्तस्स पासाओ दोवई देवी न नज्जइ केणइ देवेण वा दाणवेण वा किण्णरेण[3] वा किंपुरिसेण वा महोरगेण वा गंधव्वेण वा हिया वा निया वा अवक्खित्ता[4] वा । तं जो णं देवाणुप्पिया ! दोवईए देवीए सुइं वा खुइं वा पवत्तिं वा परिकहेइ, तस्स णं पंडू राया विउलं अत्थसंपयाणं दलयइ त्ति कट्टु घोसणं घोसावेह, घोसावेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ।।

२१४. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव[5] पच्चप्पिणंति ।।

२१५. तए णं से पंडू राया दोवईए देवीए कत्थइ सुइं वा[6] •खुइं वा पवत्तिं वा° अलभमाणे कोंतिं देविं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिए ! बारवइं नयरिं कण्हस्स वासुदेवस्स एयमट्ठं निवेदेहि—कण्हे णं[7] वासुदेवे दोवईए मग्गण-गवेसणं करेज्जा, अण्णहा न नज्जइ दोवईए देवीए 'सुई वा खुई वा पवत्ती वा'[8] ।।

२१६. तए णं सा कोंती देवी पंडुणा एवं वुत्ता समाणी जाव[9] पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता ण्हाया कयबलिकम्मा हत्थिखंधवरगया हत्थिणाउरं[10] नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता कुरुजणवयस्स[11] मज्झंमज्झेणं जेणेव सुरट्ठाजणवए जेणेव बारवई नयरी जेणेव अग्गुज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता हत्थिखंधाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! बारवइं नयरिं[12], •जेणेव कण्हस्स वासुदेवस्स गिहे तेणेव° अणुपविसह, अणुपविसित्ता कण्हं वासुदेवं करयल[13]•परिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु° एवं वयह—एवं खलु सामी ! तुब्भं

---

१. कयं (ख, ग) ।
२. जुहिट्ठिल्लस्स (घ) ।
३. किंनरेण (ग, घ) ।
४. अक्खित्ता (क, ख, ग, घ) । २२० सूत्रानुसारी पाठः स्वीकृतः ।
५. ना० १।१६।२१३ ।
६. सं० पा०—सुइं वा जाव अलभमाणे ।
७. णं परं (क, ग, घ) ।
८. सुइं वा खुइं वा पवत्तिं वा उवलभेज्जा (क, ख, घ) ।
९. ना० १।५।१३ ।
१०. हत्थिणउरं (घ) ।
११. कुरुजणवयं (ग, घ) ।
१२. सं० पा०—नयरिं अणुपविसह ।
१३. सं० पा०—करयल° ।

पिउच्छा कोंती देवी हत्थिणाउराओ नयराओ इहं हव्वमागया तुब्भं दंसणं कंखइ ॥

२१७. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव[1] कहेंति ॥

२१८. तए णं कण्हे वासुदेवे कोडुंबियपुरिसाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे हत्थिखंधवरगए[2] बारवईए नयरीए मज्झंमज्झेणं जेणेव कोंती देवी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता हत्थिखंधाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता कोंतीए देवीए पायग्गहणं करेइ, करेत्ता कोंतीए देवीए सद्धिं हत्थिखंधं दुरुहइ, दुरुहित्ता बारवईए नयरीए मज्झंमज्झेणं जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सयं गिहं अणुप्पविसइ ॥

२१९. तए णं से कण्हे वासुदेवे कोंतिं देविं ण्हायं कयबलिकम्मं जिमियभुत्तुत्तरागयं[3] •वि य णं समाणिं आयंतं चोक्खं परमसुइभूयं° सुहासणवरगयं एवं वयासी—संदिसउ णं पिउच्छा ! किमागमणपओयणं ?

२२०. तए णं सा कोंती देवी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—एवं खलु पुत्ता ! हत्थिणाउरे नयरे जुहिट्ठिलस्स रण्णो आगासतलए सुहप्पसुत्तस्स पासाओ दोवई देवी न नज्जइ केणइ अवहिया[4] •निया° अवक्खित्ता वा । तं इच्छामि णं पुत्ता ! दोवईए देवीए सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं कयं ॥

२२१. तए णं से कण्हे वासुदेवे कोंतिं पिउच्छं एवं वयासी—जं नवरं—पिउच्छा ! दोवईए देवीए कत्थइ सुइं वा[5] •खुइं वा पवत्तिं वा° लभामि, तो णं अहं पायालाओ वा भवणाओ वा अद्धभरहाओ वा समंतओ दोवइं देविं साहत्थिं उवणेमि त्ति कट्टु कोंतिं पिउच्छं सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ ॥

२२२. तए णं सा कोंती देवी कण्हेणं वासुदेवेणं पडिविसज्जिया समाणी जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया ॥

२२३. तए णं से कण्हे वासुदेवे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! बारवईए[6] •नयरीए सिंघाडग-तिग-चउक्क-चच्चर-चउम्मुह-महापहपहेसु महया-महया सद्देणं उग्घोसेमाणा-उग्घोसेमाणा एवं वयह—एवं खलु देवाणुप्पिया ! जुहिट्ठिलस्स रण्णो आगासतलगंसि

---

१. ना० १।१६।२१६ ।

२. °वरगए हयगय (क); °वरगए हयगय जाव (ख, घ)। पूर्णपाठः अस्याध्ययनस्य १५७ सूत्रे द्रष्टव्यः ।

३. सं० पा०—जिमियभुत्तुत्तरागयं जाव सुहासण° ।

४. सं० पा०—अवहिया वा जाव अवक्खित्ता ।

५. सं० पा०—सुइं वा जाव लभामि ।

६. सं० पा०—बारवइं एवं जहा पंडू तहा घोसणं घोसावेइ जाव पच्चप्पिणंति पंडुस्स जहा ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुहपसुत्तस्स पासाओ दोवई देवी न नज्जइ केणइ देवेण वा दाणवेण वा किण्णरेण वा किंपुरिसेण वा महोरगेण वा गंधव्वेण वा हिया वा निया वा अवक्खित्ता वा। तं जो णं देवाणुप्पिया! दोवईए देवीए सुइं वा खुइं वा पवत्तिं वा परिकहेइ, तस्स णं कण्हे वासुदेवे विउलं अत्थसंपयाणं दलयइ त्ति कट्टु घोसणं घोसावेह, घोसावेत्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह ॥

२२४. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव[1] पच्चप्पिणंति ॥

२२५. तए णं से कण्हे वासुदेवे अण्णया अंतोअंतेउरगए ओरोह[2]-•संपरिवुडे सीहासण-वरगए° विहरइ ॥

दोवईए उवलद्धि-पदं

२२६. इमं च णं कच्छुल्लनारए जाव[3] झत्ति-वेगेण समोवइए[4] ॥

२२७. •तए णं से कण्हे वासुदेवे कच्छुल्लनारयं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता आसणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता अग्घेणं पज्जेणं आसणेणं उवनिमंतेइ ॥

२२८. तए णं कच्छुल्लनारए उदगपरिफोसियाए दब्भोवरिपच्चत्थुयाए भिसियाए निसीयइ°, निसीइत्ता कण्हं वासुदेवं कुसलोदंतं पुच्छइ ॥

२२९. तए णं से कण्हे वासुदेवे कच्छुल्लनारयं एवं वयासी—तुमं णं देवाणुप्पिया! बहूणि गामागर[5]-•नगर-खेड-कब्बड-दोणमुह-मडंब-पट्टण-आसम-निगम-संबाह-सण्णिवेसाइं आहिंडसि, बहूण य राईसर-तलवर-माडंबिय-कोडुंबिय-इब्भ-सेट्ठि-सेणावइ-सत्थवाहपभिईणं गिहाइं° अणुपविससि, तं अत्थियाइं ते कहिंचि दोवईए देवीए सुई वा[6] •खुई वा पवित्ती वा° उवलद्धा?

२३०. तए णं से कच्छुल्लनारए कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! अण्णया धायइसंडदीवे पुरत्थिमद्धं दाहिणड्ढ-भरहवासं अवरकंका[7]-रायहाणिं गए। तत्थ णं मए पउमनाभस्स रण्णो भवणंसि दोवई-देवी-जारिसिया दिट्ठपुव्वा यावि होत्था ॥

२३१. तए णं कण्हे वासुदेवे कच्छुल्लनारयं एवं वयासी—तुब्भं चेव णं देवाणुप्पिया! एयं पुव्वकम्मं ॥

२३२. तए णं से कच्छुल्लनारए कण्हेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ते समाणे उप्पयणिं विज्जं आवाहेइ, आवाहेत्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ॥

---

१. ना० १।१६।२२३।
२. सं० पा०—ओरोह जाव विहरइ।
३. ना० १।१६।१८५।
४. सं० पा०—समोवइए जाव निसीइत्ता।
५. सं० पा०—गामागर जाव अणुपविससि।
६. सं० पा०—सुई वा जाव उवलद्धा।
७. अवरकंकं (ग)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सपंडवस्स कण्हस्स पयाण-पदं

२३३. तए णं से कण्हे वासुदेवे दूयं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! हत्थिणाउरं नयरं पंडुस्स रण्णो एयमट्ठं निवेएहि—एवं खलु देवाणुप्पिया ! धायइसंडदीवे पुरत्थिमद्धे दाहिणड्ढ-भरहवासे अवरकंकाए रायहाणीए पउमनाभभवणंसि दोवईए देवीए पउत्ती उवलद्धा, तं गच्छंतु पंच पंडवा चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडा पुरत्थिम-वेयालीए ममं पडिवालेमाणा चिट्ठंतु ।।

२३४. तए णं से दूए भणइ जाव[1] पडिवालेमाणा चिट्ठह । तेवि जाव[2] चिट्ठंति ।।

२३५. तए णं से कण्हे वासुदेवे कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! सन्नाहियं भेरिं तालेह । तेवि तालेंति ।।

२३६. तए णं तीए सन्नाहियाए भेरीए सद्दं सोच्चा समुद्दविजयपामोक्खा दस दसारा जाव[3] छप्पन्नं बलवगसाहस्सीओ सण्णद्ध-बद्ध[4]-•वम्मिय-कवया उप्पीलिय-सरासण-पट्टिया पिणद्ध-गेविज्जा आविद्ध-विमल-वरचिंध-पट्टा° गहियाउह-पहरणा अप्पेगइया हयगया अप्पेगइया गयगया जाव[5] पुरिसवग्गुरापरिक्खित्ता जेणेव सभा सुहम्मा जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल[6]•परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं° वद्धावेंति ।।

कण्हस्स देवाराधण-पदं

२३७. तए णं से कण्हे वासुदेवे हत्थिखंधवरगए सकोरेंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं सेयवर[7]•चामराहिं वीइज्जमाणे हय-गय-रह-पवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडे महयाभड-चडगर-रह-पहकर-विंदपरिक्खित्ते° बारवईए नयरीए मज्झंमज्झेणं निगच्छइ, निगच्छित्ता जेणेव पुरत्थिमवेयाली तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पंचहिं पंडवेहिं सद्धिं एगयओ मिलइ, मिलित्ता खंधावारनिवेसं करेइ, करेत्ता पोसहसालं[8] अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता सुट्ठियं देवं मणसीकरेमाणे-मणसीकरेमाणे चिट्ठइ ।।

२३८. तए णं कण्हस्स वासुदेवस्स अट्ठमभत्तंसि परिणममाणंसि सुट्ठिओ जाव[9] आगओ । 'भणंतु णं'[10] देवाणुप्पिया ! जं मए कायव्वं ।।

१,२. ना० १।१६।२३३ ।

३. ना० १।१६।१३२ ।

४. सं० पा०—सण्णद्धबद्ध जाव गहियाउह ।

५. ओ० सू० ५२ ।

६. सं० पा०—करयल जाव वद्धावेंति ।

७. सं० पा०—सेयवर हयगय महया भडचडगर-पहकरेणं ।

८. पोसहसालं करेइ, करेत्ता पोसहसालं (ग,घ) ।

९. ना० १।१।५४-५७ ।

१०. भण (ख, ग, घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कण्हस्स मग्गजायणा-पदं

२३९. तए णं से कण्हे वासुदेवे सुट्ठियं देवं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया! दोवई देवी[1] •धायईसंडदीवे पुरत्थिमद्धे दाहिणड्ढ-भरहवासे अवरकंकाए रायहाणीए° पउमनाभभवणंसि[2] साहिया[3] तण्णं तुमं देवाणुप्पिया! मम पंचहिं पंडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठस्स छण्हं रहाणं लवणसमुद्दे मग्गं वियराहि, जेणाहं[4] 'अवरकंकं रायहाणिं'[5] दोवईए कूवं गच्छामि ॥

२४०. तए णं से सुट्ठिए देवे कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—किण्णं देवाणुप्पिया! जहा चेव पउमनाभस्स रण्णो पुव्वसंगइएणं देवेणं दोवई देवी[6] •जंबुद्दीवाओ दीवाओ भारहाओ वासाओ हत्थिणाउराओ नयराओ जुहिट्ठिलस्स रण्णो भवणाओ° साहिया, तहा चेव दोवइं देविं धायईसंडाओ दीवाओ भारहाओ[7] •वासाओ अवरकंकाओ रायहाणीओ पउमनाभस्स रण्णो भवणाओ° हत्थिणाउरं साहरामि? उदाहु—पउमनाभं रायं सपुरबलवाहणं लवणसमुद्दे पक्खिवामि?

२४१. तए णं से कण्हे वासुदेवे सुट्ठियं देवं एवं वयासी—मा णं तुमं देवाणुप्पिया[8]! •जहा चेव पउमनाभस्स रण्णो पुव्वसंगइएणं देवेणं दोवई देवी जंबुद्दीवाओ दीवाओ भारहाओ वासाओ हत्थिणाउराओ नयराओ जुहिट्ठिलस्स रण्णो भवणाओ साहिया, तहा चेव दोवइं देविं धायईसंडाओ दीवाओ भारहाओ वासाओ अवरकंकाओ रायहाणीओ पउमनाभस्स रण्णो भवणाओ हत्थिणाउरं° साहराहि। तुमं णं देवाणुप्पिया! मम लवणसमुद्दे पंचहिं पंडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठस्स छण्हं रहाणं मग्गं वियराहि। सयमेव णं अहं दोवईए कूवं गच्छामि[9] ॥

२४२. तए णं से सुट्ठिए देवे कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—एवं होउ। पंचहिं पंडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठस्स छण्हं रहाणं लवणसमुद्दे मग्गं वियरइ ॥

कण्हेण दूयपेसण-पदं

२४३. तए णं से कण्हे वासुदेवे चाउरंगिणिं सेणं पडिविसज्जेइ, पडिविसज्जेत्ता पंचहिं पंडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे छहिं रहेहिं लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीईवयइ, वीईवइत्ता जेणेव अवरकंका रायहाणी जेणेव अवरकंकाए रायहाणीए अग्गुज्जाणे

---

१. सं० पा०—देवी जाव पउमनाभ°।
२. नाभस्स भवणंसि (ख, ग, घ)।
३. साहरिया (घ)।
४. जेण अहं (ख) जाणं हं (ग); जण्णं अहं (घ)।
५. अवरकंक° (क); अवरकंका रायहाणी (ख)।
६. सं० पा०—देवी जाव साहिया।
७. सं० पा०—भारहाओ जाव हत्थिणाउरं।
८. सं० पा०—देवाणुप्पिया जाव साहराहि।
९. गच्छिस्सामि (ख)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता रहं ठवेइ, ठवेत्ता दारुयं सारहिं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिया ! अवरकंकं रायहाणिं अणुप्पविसाहि, अणुप्पविसित्ता पउमनाभस्स रण्णो वामेणं पाएणं पायपीढं अवक्कमित्ता[1] कुंतग्गेणं लेहं पणामेहि, पणामेत्ता तिवलियं भिउडिं निडाले साहट्टु आसुरुत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसेमाणे एवं वयाहि—हंभो पउमनाभा ! अपत्थियपत्थिया ! दुरंतपंतलक्खणा ! हीणपुण्णचाउद्दसा ! सिरि-हिरि-धिइ-कित्ति-परिवज्जिया ! अज्ज न भवसि । किण्णं तुमं न याणसि[2] कण्हस्स वासुदेवस्स भगिणिं दोवइं देविं इहं हव्वमाणेमाणे[3] ? तं 'एवमवि गए'[4] पच्चप्पिणाहि णं तुमं दोवइं देविं कण्हस्स वासुदेवस्स अहव णं जुद्धसज्जे निग्गच्छाहि । एस णं कण्हे वासुदेवे पंचहिं पंडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे दोवईए देवीए कूवं हव्वमागए ॥

२४४. तए णं से दारुए सारही कण्हेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठे[5] पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता अवरकंकं रायहाणिं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता जेणेव पउमनाभे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल[6]°परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ,° वद्धावेत्ता एवं वयासी—एस णं सामी ! मम विणयपडिवत्ती, इमा अण्णा मम सामिस्स समुहाणत्ति[7] त्ति कट्टु आसुरुत्ते[8] वामपाएणं पायपीढं अक्कमइ[9], अक्कमित्ता कुंतग्गेणं लेहं पणामेइ, पणामेत्ता[10] °तिवलियं भिउडिं निडाले साहट्टु आसुरुत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसेमाणे एवं वयासी—हंभो पउमनाभा ! अपत्थियपत्थिया ! दुरंतपंतलक्खणा ! हीणपुण्णचाउद्दसा ! सिरि-हिरि-धिइ-कित्ति-परिवज्जिया ! अज्ज न भवसि । किण्णं तुमं न याणासि कण्हस्स वासुदेवस्स भगिणिं दोवइं देविं इहं हव्वमाणमाणे ? तं एवमवि गए पच्चप्पिणाहि णं तुमं दोवइं देविं कण्हस्स वासुदेवस्स अहव णं जुद्धसज्जे निग्गच्छाहि । एस णं कण्हे वासुदेवे पंचहिं पंडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे दोवईए देवीए° कूवं हव्वमागए ॥

पउमनाभेण दूयस्स अवमाण-पदं

२४५. तए णं से पउमनाभे दारुएणं सारहिणा एवं वुत्ते समाणे आसुरुत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसेमाणे तिवलिं भिउडिं निडाले साहट्टु एवं वयासी—

---

१. अइक्कमित्ता (ख); अवक्कमित्ता (घ) ।
२. याणासि (ख, घ) ।
३. हव्वमाणभाणे (क, ख); हव्वमाणीते (घ) ।
४. द्रष्टव्यम्—६८ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।
५. हट्ठजाव (क) ।
६. सं० पा०—करयल जाव वद्धावेत्ता ।
७. स्वमुखाऽऽज्ञप्तिः (वृ) ।
८. आसुरुत्ते ५ (क) ।
९. अवक्कमइ (ख, घ) ।
१०. सं० पा०—पणामेत्ता जाव कूवं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णप्पिणामि[1] णं अहं देवाणुप्पिया ! कण्हस्स वासुदेवस्स दोवइं । एस णं अहं सयमेव जुज्झसज्जे निग्गच्छामि त्ति कट्टु दारुयं सारहिं एवं वयासी—केवलं भो ! रायसत्थेसु दूए अवज्झे त्ति कट्टु असक्कारिय असम्माणिय अवदारेणं निच्छुभावेइ ॥

दूयस्स पुणो आगमण-पदं

२४६. तए णं से दारुए सारही पउमनाभेणं रण्णा असक्कारिय[2] •असम्माणिय अवदारेणं॰ निच्छूढे समाणे जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल[3]•परिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ, वद्धावेत्ता॰ कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—एवं खलु अहं सामी ! तुब्भं वयणेणं अवरकंकं रायहाणिं गए जाव[4] अवदारेणं निच्छुभावेइ ॥

पउमनाभस्स पंडवेहिं जुद्ध-पदं

२४७. तए णं से पउमनाभे बलवाउयं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! आभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेह ।
तयाणंतरं च णं छेयायरिय-उवदेस-मइ[5]-•कप्पणा-विकप्पेहिं सुणिउणेहिं उज्जलणेवत्थि-हत्थ-परिवत्थियं सुसज्जं जाव[6] आभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेइ, पडिकप्पेत्ता॰ उवणेति ॥

२४८. तए णं से पउमनाहे सण्णद्ध[7]-•बद्ध-वम्मिय-कवए उप्पीलिय-सरासण-पट्टिए पिणद्ध-गेविज्जे आविद्ध-विमल-वरचिंध-पट्टे गहियाउह-पहरणे॰ 'आभिसेक्कं हत्थिरयणं'[8], दुरुहइ[9], दुरुहित्ता हय-गय[10]-•रह-पवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडे महयाभड-चडगर-रह-पहकर-विंदपरिक्खित्ते॰ जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

२४९. तए णं से कण्हे वासुदेवे पउमनाभं रायं[11] एज्जमाणं पासइ, पासित्ता ते पंच

---

१. अप्पिणामि (ख, ग, घ) ।
२. सं॰ पा॰—असक्कारिय जाव निच्छूढे ।
३. सं॰ पा॰—करयल॰ ।
४. ना॰ १।१६।२४४-२४६ ।
५. सं॰ पा॰—मइविकप्पणाहिं जाव उवणेंति । आदर्शेषु 'मइविकप्पणाहिं' इति पाठो लभ्यते । वृत्तौ 'मइविगप्पणाविगप्पेहिं' इति पाठ उल्लिखितोस्ति, किन्तु व्याख्यायां 'कल्पना-विकल्पैः' इति दृश्यते, तेन कप्पणा-विकप्पेहिं, इति स्वीकृतः पाठः समीचीनः प्रतिभाति ।
६. ओ॰ सू॰ ५७ ।
७. सं॰ पा॰—सण्णद्ध॰ ।
८. अभिसेयं (क, ख, ग, घ) ।
९. दुरुहइ (ग) ।
१०. सं॰ पा॰—हय गय॰ ।
११. रायाणं (ख, ग) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पंडवे एवं वयासी—हंभो दारगा ! किण्णं तुब्भे पउमनाभेणं सद्धिं जुज्झिहिह[1] उदाहु[2] पेच्छिहिह[3] ?

२५०. तए णं ते पंच पंडवा कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—अम्हे णं सामी ! जुज्झामो, तुब्भे पेच्छह ॥

२५१. तए णं ते पंच पंडवा सण्णद्ध[4]-•बद्ध-वम्मिय-कवया उप्पीलिय-सरासण-पट्टिया पिणद्ध-गेविज्जा आविद्ध-विमल-वरचिंधपट्टा गहियाउह°-पहरणा रहे दुरुहंति, दुरुहित्ता जेणेव पउमनाभे राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता एवं वयासी—अम्हे वा पउमनाभे वा राय त्ति कट्टु पउमनाभेणं सद्धिं संपलग्गा यावि होत्था ॥

पंडवाणं पराजय-पदं

२५२. तए णं से पउमनाभे राया ते पंच पंडवे खिप्पामेव हय-महिय-पवरवीर-घाइय-विवडियचिंध-धय[5]-पडागे[6] •किच्छोवगयपाणे° दिसोदिसिं पडिसेहेइ ॥

२५३. तए णं ते पंच पंडवा पउमनाभेणं रण्णा हय-महिय-पवर[7]•वीर-घाइय-विवडिय-चिंध-धय-पडागा किच्छोवगयपाणा दिसोदिसिं° पडिसेहिया समाणा अत्थामा[8] •अबला अवीरिया अपुरिसक्कारपरक्कमा° अधारणिज्जमित्ति कट्टु जेणेव कण्हे वासुदेवे तेणेव उवागच्छंति ॥

कण्हेण पराजय-हेउ-कहणपुव्वं जुज्झ-पदं

२५४. तए णं से कण्हे वासुदेवे ते पंच-पंडवे एवं वयासी—कहण्णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! पउमनाभेणं रण्णा सद्धिं संपलग्गा ?

२५५. तए णं ते पंच पंडवा कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणा सण्णद्ध-बद्ध-वम्मिय-कवया[9] रहे दुरुहामो, दुरुहेत्ता जेणेव पउमनाभे तेणेव उवागच्छामो, उवागच्छित्ता एवं वयामो—अम्हे वा पउमनाभे वा रायत्ति कट्टु[10] •पउमनाभेणं सद्धिं संपलग्गा । तए णं

---

१. जुज्झहह (क, ख); जुज्झिह (ग); जुज्झेहह (घ)।

२. उयाहु (ग, घ)।

३. पेच्छहह(क);पिच्छिहह(ख);पच्छिहिह (घ)।

४. सं० पा०—सण्णद्ध जाव पहरणा।

५. पवरपवडियवरचिंध (क); पवरविडिय° (ख, ग, घ)। असौ लेखनपद्धतौ पाठसंक्षेपः कृतोस्ति। १।८।१६५ सूत्रे असौ पूर्णः पाठः उपलभ्यते। अत्रासौ तमनुसृत्य पूर्णतां नीतः वृत्तिकारेण अष्टमाध्ययने पूर्णः पाठो व्याख्यातः। अत्र च आदर्शेषु यथा पाठसंक्षेपो लब्धस्तथैव व्याख्यातः।

६. सं० पा०—पडागे जाव दिसोदिसिं।

७. सं० पा०—पवरविवडिय जाव पडिसेहिया।

८. सं० पा०—अत्थामा जाव अधारणिज्ज°। अयामा° (ग, घ)।

९. पूर्णपाठः अस्याध्ययनस्य २५१ सूत्रे द्रष्टव्यः।

१०. सं० पा०—कट्टु जाव पडिसेहेइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

से पउमनाभे राया अम्हं खिप्पामेव हय-महिय-पवरवीर-घाइय-विवडियचिंध-
धय-पडागे किच्छोवगयपाणे दिसोदिसिं° पडिसेहेइ ॥

२५६. तए णं से कण्हे वासुदेवे ते पंच पंडवे एवं वयासी —जइ णं तुब्भे देवाणुप्पिया !
एवं वयंता—'अम्हे' णो पउमनाभे रायत्ति कट्टु पउमनाभेणं सद्धिं संपलग्गंता
तो णं तुब्भे नो पउमनाभे हय-महिय-पवर[1]•वीर-घाइय-विवडियचिंध-धय-
पडागे किच्छोवगयपाणे दिसोदिसिं° पडिसेहित्था । तं पेच्छह[2] णं तुब्भे
देवाणुप्पिया ! 'अहं' णो पउमनाभे रायत्ति कट्टु पउमनाभेणं रण्णा सद्धिं
जुज्झामि [त्ति ?] रहं दुरुहइ, दुरुहित्ता जेणेव पउमनाभे राया तेणेव उवा-
गच्छइ, उवागच्छित्ता सेयं[3] गोखीरहार-धवलं तणसोल्लिय-सिंदुवार-कुंदेंदु-
सण्णिगासं निययस्स बलस्स हरिस-जणणं रिउसेण्ण-विणासणकरं पंचजण्णं[4]
संखं परामुसइ, परामुसित्ता मुहवायपूरियं करेइ ॥

२५७. तए णं तस्स पउमनाभस्स तेणं संखसद्देणं बल-तिभाए हय[5]-•महिय-पवरवीर-
घाइय-विवडियचिंध-धय-पडागे किच्छोवगयपाणे दिसोदिसिं°पडिसेहिए ॥

२५८. तए णं से कण्हे वासुदेवे[6]
•अइरुग्गयबालचंद-इंदधणु-सण्णिगासं,
वरमहिस-दरिय-दप्पिय-दढघणसिंगग्गरइयसारं,
उरगवर-पवरगवल-पवरपरहुय-भमरकुल-नीलि-निद्ध-धंत-धोय-पट्टं,
निउणोविय-मिसिमिसिंत-मणिरयण-घंटियाजालपरिक्खित्तं,
तडितरुणकिरण-तवणिज्जबद्धचिंधं,
दद्दरमलयगिरिसिहर-केसरचामरवाल-अद्धचंदचिंधं,
काल-हरिय-रत्त-पीय-सुक्किल-बहुण्हारुणि-संपिणद्धजीवं,
जीवियंतकरं° धणुं परामुसइ, परामुसित्ता धणुं पूरेइ, पूरेत्ता धणुसद्दं करेइ ॥

२५९. तए णं तस्स पउमनाभस्स दोच्चे बल-तिभाए तेणं धणुसद्देणं हय-महिय[7]

१. सं० पा०—पवर जाव पडिसेहित्था ।
२. पेच्छंतु (क) ।
३. वृत्तौ शङ्खविशेषणानि पाठान्तरत्वेन उल्लिखितानि सन्ति, यथा--शङ्खविशेषणानि क्वचिद् दृश्यन्ते—'सेयं'° ।
४. पंचयण्णं (क, ख); पंचजण्ण (ग) ।
५. सं० पा०—हए जाव पडिसेहिए ।
६. सं० पा०—वासुदेवे धणुं परामुसइ वेढो । विस्तृतः पाठो वृत्त्यनुसारेण स्वीकृतः । मूलपाठे अस्य सूचना 'वेढो' इति पदेन प्रदत्तास्ति । वृत्तिकारेणापि सूचितमिदम्, यथा—वेष्टन एकवस्तुविषय पदपद्धतिः । स चेह धनुर्विषयो जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तिप्रसिद्धोऽध्येतव्यः, तद्यथा--अइरुग्गय° (वृ) । जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तेस्तृतीये वक्षस्कारे मागधतीर्थकुमारसाधने वृत्तिकारसूचितः पाठो लभ्यते । सोपि वृत्तिव्याख्यातपाठसंवादी एव ।
७. सं० पा०—हयमहिय जाव पडिसेहिए ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

•पवरवीर-घाइय-विवडियचिंध-धय-पडागे किच्छोवगयपाणे दिसोदिसिं° पडिसेहिए ॥

पउमनाभस्स पलायण-पदं

२६०. तए णं से पउमनाभे राया तिभागबलावसेसे अत्थामे[1] अबले अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे अधारणिज्जमिति कट्टु सिग्घं तुरियं चवलं चडं जइणं वेइयं जेणेव अवरकंका[2] तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अवरकंकं रायहाणिं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता बाराइं[3] पिहेइ, पिहेत्ता रोहासज्जे चिट्ठइ ॥

कण्हस्स नरसिंहरूव-पदं

२६१. तए णं से कण्हे वासुदेवे जेणेव अवरकंका तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता रहं ठवेइ, ठवेत्ता रहाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णइ[4] एगं महं नरसीह-रूवं विउव्वइ, विउव्वित्ता महया-महया सद्देणं पायदद्दरियं करेइ ॥

२६२. तए णं कण्हेणं वासुदेवेणं महया-महया सद्देणं पायदद्दरएणं कएणं समाणेणं अवरकंका रायहाणी संभग्ग-पागार[5]-गोउराट्टालय-चरिय-तोरण-पल्हत्थिय-पवरभवण-सिरिघरा सरसरस्स धरणियले सण्णिवइया ॥

पउमनाभस्स सरण-पदं

२६३. तए णं से पउमनाभे राया अवरकंकं रायहाणिं संभग्ग[6]-•पागार-गोउराट्टालय-चरिय-तोरण-पल्हत्थियपवरभवण-सिरिघरं सरसरस्स धरणियले सण्णिवइयं° पासित्ता भीए दोवइं देविं सरणं उवेइ ॥

२६४. तए णं सा दोवई देवी पउमनाभं रायं एवं वयासी—किण्णं तुमं देवाणुप्पिया ! न[7] जाणसि कण्हस्स वासुदेवस्स उत्तमपुरिसस्स विप्पियं करेमाणे ? 'मम इहं हव्वमाणेमाणे'[8] तं 'एवमवि गए'[9] गच्छ[10] णं तुमं देवाणुप्पिया ! ण्हाए उल्लपडसाडए ओचूलगवत्थनियत्थे अंतेउर-परियालसंपरिवुडे[11] अग्गाइं वराइं रयणाइं गहाय ममं पुरओकाउं कण्हं वासुदेवं करयल[12]•परिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु° पायवडिए सरणं उवेहि । पणिवइय-वच्छला णं देवाणुप्पिया ! उत्तमपुरिसा ॥

---

१. अथामे (ग, घ) ।
२. अमरकंका (क) ।
३. दाराइं (ख) ।
४. समोहणइ (क, ख, घ) ।
५. पायार (क, ध); पगार (ख) ।
६. सं० पा०—संभग्गं जाव पासित्ता ।
७. × (क, ख, ग) ।
८. × (ख, ग, घ) ।
९. द्रष्टव्यम्—६८ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।
१०. गच्छह (ग, घ) ।
११. परियाल° (क) ।
१२. सं० पा०—करयल° ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२६५. तए णं से पउमनाभे दोवईए देवीए 'एवं वुत्ते समाणे'[1] ण्हाए[2] •उल्लपडसाडए ओचूलगवत्थनियत्थे अंतेउर-परियालसंपरिवुडे अग्गाइं वराइं रयणाइं गहाय दोवइं देविं पुरओकाउं कण्हं वासुदेवं करयलपरिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु पायवडिए सरणं उवेइ, उवेत्ता° एवं वयासी—दिट्ठा णं देवाणुप्पियाणं इड्ढी[3] •जुई जसो बलं वीरियं पुरिसक्कार°-परक्कमे। तं खामेमि णं देवाणुप्पिया! खमंतु णं देवाणुप्पिया![4] •खंतुमरहंति णं देवाणुप्पिया!° नाइं[5] भुज्जो एवंकरणयाए त्ति कट्टु पंजलिउडे पायवडिए कण्हस्स वासुदेवस्स दोवइं देविं साहत्थिं उवणेइ॥

सदोवई-पंडवस्स कण्हस्स पच्चावट्टण-पदं

२६६. तए णं से कण्हे वासुदेवे पउमनाभं एवं वयासी—हंभो पउमनाभा! अपत्थिय-पत्थिया! दुरंतपंतलक्खणा! हीणपुण्णचाउद्दसा! सिरि-हिरि-धिइ-कित्ति-परिवज्जिया! किण्णं तुमं न[6] जाणसि मम भगिणिं दोवइं देविं इहं हव्वमाणे-माणे[7]? तं 'एवमवि गए'[8] नत्थि? ते ममाहितो इयाणिं भयमत्थि[9]? त्ति कट्टु पउमनाभं पडिविसज्जेइ, दोवइं देविं गेण्हइ, गेण्हित्ता रहं दुरुहेइ, दुरुहित्ता जेणेव पंच पंडवा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पंचण्हं पंडवाणं दोवइं देविं साहत्थिं उवणेइ॥

२६७. तए णं से कण्हे वासुदेवे पंचहिं पंडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे छहिं रहेहिं लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं जेणेव जंबुद्दीवे दीवे जेणेव भारहे वासे तेणेव पहारेत्थ गमणाए॥

वासुदेव-जुयलस्स संखसद्देण मिलण-पदं

२६८. तेणं कालेणं तेणं समएणं धायइसंडे दीवे पुरत्थिमद्धे भारहे वासे चंपा नामं नयरी होत्था। पुण्णभद्दे चेइए॥

२६९. तत्थ णं चंपाए नयरीए कविले नामं वासुदेवे राया होत्था—महताहिमवंत-महंत-मलय-मंदर-महिंदसारे वण्णओ[10]॥

२७०. तेणं कालेणं तेणं समएणं मुणिसुव्वए अरहा[11] चंपाए पुण्णभद्दे समोसढे। कविले वासुदेवे धम्मं सुणेइ॥

---

१. एयमट्ठं पडिसुणेइ २ (ख, ग, घ)।
२. सं० पा०—ण्हाए जाव सरणं उवेइ २ करयल एवं व।
३. सं० पा०—इड्ढी जाव परक्कमे।
४. सं० पा०—देवाणुप्पिया जाव नाइ।
५. नाहं (क, ख, ग, घ)। एतत् पदं १।५।१२३ सूत्रस्याधारेण स्वीकृतम्।
६. × (ग, घ)।
७. हव्वमाणे (ख, ग, घ)।
८. द्रष्टव्यम्—६८ सूत्रस्य पादटिप्पणम्।
९. अभयमत्थि (घ)।
१०. ओ० सू० १४।
११. अरिहा (क)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२७१. तए णं से कविले वासुदेवे मुणिसुव्वयस्स अरहओ अंतिए धम्मं सुणेमाणे कण्हस्स वासुदेवस्स संखसद्दं सुणेइ ॥

२७२. तए णं तस्स कविलस्स वासुदेवस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—किमण्णे धायइसंडे दीवे भारहे वासे दोच्चे वासुदेवे समुप्पण्णे, जस्स णं अयं संखसद्दे ममं पिव मुहवायपूरिए वियंभइ[1] ? कविला वासुदेवा भद्दाइ[2] ! मुणिसुव्वए अरहा कविलं वासुदेवं एवं वयासी—से नूणं कविला वासुदेवा ! ममं अंतिए धम्मं निसामेमाणस्स (ते ?) संखसद्दं आकण्णित्ता[3] इमेयारूवे अज्झत्थिए[4] •चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था—किमण्णे धायइसंडे दीवे भारहे वासे दोच्चे वासुदेवे समुप्पण्णे, जस्स णं अयं संखसद्दे ममं पिव मुहवायपूरिए° वियंभइ ? से नूणं कविला वासुदेवा ! अट्ठे समट्ठे ?

हंता ! अत्थि । तं नो खलु कविला ! एवं भूयं वा भव्वं वा भविस्सं वा जण्णं एगखेत्ते एगजुगे एगसमए णं दुवे अरहंता वा चक्कवट्टी वा बलदेवा वा वासुदेवा वा उप्पज्जिंसु वा उप्पज्जंति वा उप्पज्जिस्संति वा ।

एवं खलु वासुदेवा ! जंबुद्दीवाओ दीवाओ भारहाओ वासाओ हत्थिणाउराओ नयराओ पंडुस्स रण्णो सुण्हा पंचण्हं पंडवाणं भारिया दोवई देवी तव पउमनाभस्स रण्णो पुव्वसंगइएणं देवेणं अवरकंकं नयरिं साहरिया । तए णं से कण्हे वासुदेवे पंचहिं पंडवेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे छहिं रहेहिं अवरकंकं रायहाणिं दोवईए देवीए कूवं हव्वमागए । तए णं तस्स कण्हस्स वासुदेवस्स पउमनाभेणं रण्णा सद्धिं संगामं संगामेमाणस्स अयं संखसद्दे तव 'मुहवायपूरिए इव'[5] वियंभइ ॥

२७३. तए णं से कविले वासुदेवे मुणिसुव्वयं अरहं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—गच्छामि णं अहं भंते ! कण्हं वासुदेवं उत्तमपुरिसं सरिसपुरिसं[6] पासामि ॥

२७४. तए णं मुणिसुव्वए अरहा कविलं वासुदेवं एवं वयासी—नो खलु देवाणुप्पिया ! एवं भूयं वा भव्वं वा भविस्सं वा जण्णं अरहंता वा अरहंतं पासंति, चक्कवट्टी वा चक्कवट्टिं पासंति, बलदेवा वा बलदेवं पासंति, वासुदेवा वा वासुदेवं

---

१. वियंभेइ (क) ।
२. सद्दाति (ख); सद्दाइ सुणेइ (घ) ।
३. अकिण्णित्ता (ख) ।
४. सं० पा०—अज्झत्थिए किमण्णे जाव वियंभइ ।
५. मुहवायाइट्ठे इव (क); मुहवायइट्ठे एवं (ख); मुहवायइट्ठे कते इहेव (ग); मुहवाया इव (घ); अस्मिन्नेव सूत्रे कपिलवासुदेवचिंतनसमये 'ममं पिव मुहवायपूरिए' इति पाठोस्ति । तस्याधारेणैवासौ पाठः स्वीकृतः ।
६. × (क) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पासंति। तहवि य णं तुमं कण्हस्स वासुदेवस्स लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीईवयमाणस्स सेयापीयाइं धयग्गाइं[1] पासिहिसि ।।

२७५. तए णं से कविले वासुदेवे मुणिसुव्वयं अरहं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता हत्थिखंधं दुरुहइ, दुरुहित्ता 'सिग्घं तुरियं चवलं चंडं जइणं वेइयं'[2] जेणेव वेलाउले[3] तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कण्हस्स वासुदेवस्स लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीईवयमाणस्स सेयापीयाइं धयग्गाइं पासइ, पासित्ता एवं वयइ— एस णं मम सरिसपुरिसे उत्तमपुरिसे कण्हे वासुदेवे लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं वीईवयइ त्ति कट्टु पंचयण्णं संखं परामुसइ, परामुसित्ता मुहवायपूरियं करेइ ।।

२७६. तए णं से कण्हे वासुदेवे कविलस्स वासुदेवस्स संखसद्दं 'आयण्णेइ, आयण्णेत्ता'[4] पंचयण्णं[5] •संखं परामुसइ, परामुसित्ता मुहवाय°पूरियं करेइ ।।

२७७. तए णं दोवि वासुदेवा संखसद्द-सामायारिं[6] करेंति ।।

कविलेण पउमनाभस्स निव्वासण-पदं

२७८. तए णं से कविले वासुदेवे जेणेव अवरकंका रायहाणी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अवरकंकं रायहाणिं संभग्ग[7]-•पागार-गोउराट्टालय-चरिय-तोरण-पल्हत्थियपवरभवण-सिरिघरं सरसरस्स धरणियले सण्णिवइयं° पासइ, पासित्ता पउमनाभं एवं वयासी—किण्णं देवाणुप्पिया ! एसा अवरकंका रायहाणी संभग्ग[8]-•पागार-गोउराट्टालय-चरिय-तोरण-पल्हत्थियपवरभवण-सिरिघरा सरसरस्स धरणियले° सण्णिवइया ?

२७९. तए णं से पउमनाभे कविलं वासुदेवं एवं वयासी—एवं खलु सामी ! जंबुद्दीवाओ दीवाओ भारहाओ वासाओ इहं हव्वमागम्म कण्हेणं वासुदेवेणं तुब्भे परिभूय अवरकंका[9] •रायहाणी संभग्ग-गोउराट्टालय-चरिय-तोरण-पल्हत्थियपवरभवण-सिरिघरा सरसरस्स धरणियले° सण्णिवाडिया[10] ।।

२८०. तए णं से कविले वासुदेवे पउमनाभस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा पउमनाभं एवं वयासी—हंभो पउमनाभा ! अपत्थियपत्थिया ! दुरंतपंतलक्खणा ! हीणपुण्णचाउद्दसा ! सिरि-हिरि-धिइ-कित्ति-परिवज्जिया ! किण्णं तुमं न[11] जाणसि मम सरिसपुरिसस्स कण्हस्स वासुदेवस्स विप्पियं करेमाणे ?—आसुरुत्ते[12] •रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसेमाणे तिवलियं भिउडिं निलाडे साहट्टु°

---

१. धयाइं (घ)।
२. सिग्घं (क, घ)।
३. वेलाकूले (ख)।
४. आकण्णेइ २ (क)।
५. सं० पा०—पंचयण्णं जाव पूरियं।
६. समायारिं (ख, ग)।
७. सं० पा०—संभग्ग तोरण जाव पासइ।
८. सं० पा०—संभग्ग जाव सण्णिवइया।
९. सं० पा०—अवरकंका जाव सण्णिवाडिया।
१०. सण्णिवाइया (घ)।
११. × (क, ग, घ)।
१२. सं० पा०—आसुरुत्ते जाव पउमनाभं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पउमनाभं निव्विसयं आणवेइ, पउमनाभस्स पुत्तं अवरकंकाए रायहाणीए महया-महया रायाभिसेएणं अभिसिंचइ[1], •अभिसिंचित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं° पडिगए ॥

अपरिक्खणीयपरिक्खा-पदं

२८१. तए णं से कण्हे वासुदेवे लवणसमुद्दं मज्झंमज्झेणं 'वीईवयमाणे-वीईवयमाणे गंगं उवागए'[2] [उवागम्म ?] ते पंच पंडवे एवं वयासी - गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! गंगं महानइं उत्तरह जाव ताव अहं सुट्ठियं लवणाहिवइं पासामि ॥

२८२. तए णं ते पंच पंडवा कण्हेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ता समाणा जेणेव गंगा महानदी तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता एगट्ठियाए[3] मग्गण-गवेसणं करेंति, करेत्ता एगट्ठियाए गंगं महानइं उत्तरंति, उत्तरित्ता अण्णमण्णं एवं वयंति—पहू णं देवाणुप्पिया ! कण्हे वासुदेवे गंगं महानइं बाहाहिं उत्तरित्तए, उदाहू नो पहू उत्तरित्तए ? त्ति कट्टु एगट्ठियं[4] 'णूमेंति, णूमेत्ता'[5] कण्हं वासुदेवं पडिवाले-माणा-पडिवालेमाणा चिट्ठंति ॥

२८३. तए णं से कण्हे वासुदेवे सुट्ठियं लवणाहिवइं पासइ, पासित्ता जेणेव गंगा महानई तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एगट्ठियाए सव्वओ समंता मग्गण-गवेसणं करेइ, करेत्ता एगट्ठियं अपासमाणे एगाए बाहाए रहं सतुरगं ससारहिं गेण्हइ, एगाए बाहाए गंगं महानइं बासट्ठिं जोयणाइं अद्धजोयणं च वित्थिण्णं उत्तरिउं पयत्ते यावि होत्था ॥

२८४. तए णं से कण्हे वासुदेवे गंगाए महानईए बहुमज्झदेसभाए संपत्ते समाणे संते तंते परितंते बद्धसेए जाए यावि होत्था ॥

२८५. तए णं तस्स कण्हस्स वासुदेवस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए[6] •चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—अहो णं पंच पंडवा महाबलवगा जेहिं गंगा महानई बासट्ठिं[7] जोयणाइं अद्धजोयणं च वित्थिण्णा बाहाहिं उत्तिण्णा ।

---

१. सं० पा०—अभिसिंचइ जाव पडिगए ।

२. वीईवयइ २ (क, ख, ग); वीईवयइ गंग° (घ) ।

३. एगट्ठियाए नावाए (क, ख, ग, घ) । वृत्तौ 'एगट्ठियंति नौः' इति व्याख्यातमस्ति । अस्यानुसारेण 'एगट्ठिया' पदं नौ वाचकमस्ति । प्रतिषु 'नावाए' इति पदस्यापि उल्लेखो लभ्यते । स च बहुषु स्थानेषु सारल्यार्थं परिवर्तितपदवद् विद्यते ।

४. एगट्ठियाओ (ग) ।

५. ण मुयंति (क); ण मुचंति (ख); मुस्संति २ (घ) ।

६. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था ।

७. बावट्ठि (क, ग) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इच्छंतएहिं[1] ण पंचहिं पंडवेहिं पउमनाभे हय-महिय[2]-•पवरवीर-घाइय-विवडिय-चिंध-धय-पडागे किच्छोवगयपाणे दिसोदिसिं° नो पडिसेहिए ।।

२८६. तए णं गंगादेवी कण्हस्स वासुदेवस्स इमं एयारूवं अज्झत्थियं[3] •चिंतियं पत्थियं मणोगयं संकप्पं° जाणित्ता थाहं वियरइ ।।

२८७. तए णं से कण्हे वासुदेवे मुहुत्तंतरं समासासेइ, समासासेत्ता गंगं महानदिं बासट्ठिं[4] •जोयणाइं अद्धजोयणं च वित्थिण्णं बाहाए° उत्तरइ,उत्तरित्ता जेणेव पंच पंडवा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पंच पंडवे एवं वयासी—अहो णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! महाबलवगा, जेहिं णं तुब्भेहिं गंगा महानई बासट्ठिं[5] •जोयणाइं अद्धजोयणं च वित्थिण्णा बाहाहिं° उत्तिण्णा । इच्छंतएहिं णं तुब्भेहिं पउमनाहे[6] •हय-महिय-पवरवीर-घाइय-विवडियचिंध-धय-पडागे किच्छोवगयपाणे दिसोदिसिं° नो पडिसेहिए ।।

२८८. तए णं ते पंच पंडवा कण्हेणं वासुदेवेणं एवं वुत्ता समाणा कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हे तुब्भेहिं विसज्जिया समाणा जेणेव गंगा महानई तेणेव उवागच्छामो, उवागच्छित्ता एगट्ठियाए मग्गण-गवेसणं करेमो,[7] •करेत्ता एगट्ठियाए गंगं महानइं उत्तरेमो, उत्तरेत्ता अण्णमण्णं एवं वयामो—पहू णं देवाणुप्पिया ! कण्हे वासुदेवे गंगं महानइं बाहाहिं उत्तरित्तए, उदाहु नो पहू उत्तरित्तए ? त्ति कट्टु एगट्ठियं° णूमेमो, तुब्भे पडिवालेमाणा चिट्ठामो ।।

कण्हेण पंडवाणं निव्वासण-पदं

२८९. तए णं से कण्हे वासुदेवे तेसिं पंचपंडवाणं एयमट्ठं सोच्चा निसम्म आसुरुत्ते[8] •रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसेमाणे तिवलियं भिउडिं निडाले साहट्टु° एवं वयासी—अहो णं जया मए लवणसमुद्दं दुवे जोयणसयसहस्सवित्थिण्णं वीईवइत्ता पउमनाभं हय-महिय[9]-•पवरवीर-घाइय-विवडियचिंध-धय-पडागं किच्छोवगयपाणं दिसोदिसिं° पडिसेहित्ता अवरकंका संभग्गा, दोवई साहत्थिं उवणीया, तया णं तुब्भेहिं मम माहप्पं न विण्णायं, इयाणिं जाणिस्सह त्ति कट्टु लोहदंडं परामुसइ, पंचण्हं पंडवाणं रहे सुसूरेइ[10], सुसूरेत्ता [पंच पंडवे ?] निव्विसए आणवेइ । तत्थ णं रहमद्दणे नामं कोट्टे निविट्ठे ।।

---

१. इत्थंतएहिं (ख, घ); एत्थंतएहिं (ग) ।
२. सं० पा०—हयमहिय जाव नो पडिसेहिए ।
३. सं० पा०—अज्झत्थियं जाव जाणित्ता ।
४. सं० पा०—बासट्ठिं जाव उत्तरइ ।
५. सं० पा०—बासट्ठिं जाव उत्तिण्णा ।
६. सं० पा०—पउमनाहे जाव नो पडिसेहिए ।
७. सं० पा०—करेमो तं चेव जाव णूमेमो ।
८. सं० पा०—आसुरुत्ते जाव तिवलियं एवं ।
९. सं० पा०—हयमहिय जाव पडिसेहित्ता ।
१०. सुमुचूरेइ (ख); सुसुसूरेइ (ग) चूरेइ (घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२६०. तए णं से कण्हे वासुदेवे जेणेव सए खंधावारे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सएणं खंधावारेणं सद्धिं अभिसमण्णागए यावि होत्था ।।

२६१. तए णं से कण्हे वासुदेवे जेणेव बारवई नयरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता [सयं भवणं ?][1] अणुप्पविसइ ।।

२६२. तए णं ते पंच पंडवा जेणेव हत्थिणाउरे नयरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता जेणेव पंडू राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल[2] •परिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु° एवं वयासी—एवं खलु ताओ ! अम्हे कण्हेणं निव्विसया आणत्ता ।।

२६३. तए णं पंडू राया ते पंच पंडवे एवं वयासी—कहण्णं पुत्ता ! तुब्भे कण्हेणं वासुदेवेणं निव्विसया आणत्ता ?

२६४. तए णं ते पंच पंडवा पंडुं रायं एवं वयासी—एवं खलु ताओ ! अम्हे अवरकंकाओ पडिनियत्ता लवणसमुद्दं दोण्णि जोयणसयसहस्साइं वीईवइत्था । तए णं से कण्हे वासुदेवे अम्हे एवं वयइ—गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! गंगं महानइं उत्तरह जाव ताव अहं सुट्ठियं लवणाहिवइं पासामि, एवं तहेव जाव[3] चिट्ठामो ।।

२६५. तए ण से कण्हे वासुदेवे सुट्ठियं लवणाहिवइं दट्ठूण जेणेव गंगा महानई तेणेव उवागच्छइ, तं चेवं सव्वं नवरं कण्हस्स चिंता न वुज्झइ[4] जाव[5] निव्विसए आणवेइ ।।

२६६. तए णं से पंडू राया ते पंच पंडवे एवं वयासी—दुट्ठु णं[6] पुत्ता ! कयं कण्हस्स वासुदेवस्स विप्पियं करेमाणेहिं ।।

२६७. तए णं से पंडू राया कोंतिं देविं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुमं देवाणुप्पिए ! बारवइं नयरिं कण्हस्स वासुदेवस्स एवं[7] निवेएहि—एवं खलु देवाणुप्पिया ! तुमे पंच पंडवा निव्विसया आणत्ता । तुमं च णं देवाणुप्पिया ! दाहिणड्ढभरहस्स सामी । तं संदिसंतु णं देवाणुप्पिया । ते पंच पंडवा कयरं देसं वा दिसं वा 'विदिसं वा'[8] गच्छंतु ?

२६८. तए णं सा कोंती पंडुणा एवं वुत्ता समाणी हत्थिखंधं दुरुहइ, जहा हेट्ठा जाव[9] संदिसंतु णं पिउच्छा ! किमागमणपओयणं ?

२६९. तए णं सा कोंती देवी कण्हं वासुदेवं एवं वयासी—एवं खलु तुमे पुत्ता ! पंचपंडवा निव्विसया आणत्ता । तुमं च णं दाहिणड्ढभरहस्स[10] •सामी । तं

१. द्रष्टव्यम्—अस्यैवाध्ययनस्य १६६ सूत्रम् ।
२. सं० पा०—करयल जाव एवं ।
३. ना० १।१६।२८२ ।
४. वुच्चइ (घ) ।
५. ना० १।१६।२८३, २८४, २८६-२९० ।
६. ण तुमं (ख) ।
७. × (क, ग, घ) ।
८. × (क, ख, ग) ।
९. ना० १।१६।२१६-२१९ ।
१०. सं० पा०—दाहिणड्ढभरहस्स जाव दिसं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संदिसंतु णं देवाणुप्पिया ! ते पंच पंडवा कयरं देसं वा° दिसं वा विदिसिं वा गच्छंतु ?

३००. तए णं से कण्हे वासुदेवे कोंतिं देविं एवं वयासी—अपूइवयणा[1] णं पिउच्छा ! उत्तमपुरिसा—वासुदेवा बलदेवा चक्कवट्टी। तं गच्छंतु णं पंच पंडवा दाहिणिल्लं वेयालिं तत्थ पंडुमहुरं निवेसंतु, ममं अदिट्ठसेवगा भवंतु त्ति कट्टु कोंतिं देविं सक्कारेइ सम्माणेइ[2], •सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता° पडिविसज्जेइ ।।

३०१. तए णं सा कोंती देवी[3] •जेणेव हत्थिणाउरे नयरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता° पंडुस्स एयमट्ठं निवेएइ ।।

३०२. तए णं पंडू राया पंच पंडवे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—गच्छह णं तुब्भे पुत्ता ! दाहिणिल्लं वेयालिं। तत्थ णं तुब्भे पंडुमहुरं निवेसेह ।।

पंडुमहुरा-निवेसण-पदं

३०३. तए णं ते पंच पंडवा पंडुस्स रण्णो[4] •एयमट्ठं° तहत्ति पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता सबलवाहणा हय-गय[5]-•रह-पवरजोहकलियाए चाउरंगिणीए सेणाए सद्धिं संपरिवुडा महयाभड-चडगर-रह-पहकर-विंदपरिक्खित्ता° हत्थिणाउराओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव दक्खिणिल्ले वेयाली तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पंडुमहुरं नगरिं[6] निवेसंति। तत्थवि[7] णं ते विपुलभोग-समिति-समण्णागया यावि होत्था ।।

पंडुसेण-जम्म-पदं

३०४. तए णं सा दोवई देवी अण्णया कयाइ आवण्णसत्ता जाया यावि[8] होत्था ।।

३०५. तए णं सा दोवई देवी नवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं जाव[9] सुरूवं दारगं पयाया—सूमाल[10]•कोमलयं गयतालुयसमाणं ।।

३०६. तए णं तस्स णं दारगस्स निव्वत्तबारसाहस्स अम्मापियरो इमं एयारूवं गोण्णं गुणनिप्फण्णं नामधेज्जं करेंति° जम्हा णं अम्हं एस दारए पंचण्हं पंडवाणं पुत्ते दोवईए देवीए अत्तए, तं होउ णं इमस्स दारगस्स नामधेज्जं 'पंडुसेणे-पंडुसेणे'[11] ।।

---

१. अपूईवयणा (ख, ग)।
२. सं० पा०—सम्माणेइ जाव पडिविसज्जेइ।
३. सं० पा०—देवी जाव पंडुस्स।
४. सं० पा०—रण्णो जाव तहत्ति।
५. सं० पा०—हयगय जाव हत्थिणाउराओ।
६. नगरं (ख)।
७. तत्थ (ग, घ)।
८. वि (ख, घ)।
९. ओ० सू० १४३।
१०. सं० पा०—सूमालं निव्वत्तबारसाहस्स इमं एयारूवं। सर्वास्वपि प्रतिषु एतावानेव पाठो विद्यते, किन्तु १।१६।३३,३४ सूत्रानुसारेण अस्य पूर्तिः कृता।
११. पंडुसेणे (ग)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३०७. तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो नामधेज्जं करेंति[1] पंडुसेणत्ति ।।

३०८. [2]•तए णं तं पंडुसेणं दारयं अम्मापियरो साइरेगट्ठवासजायगं चेव सोहणंसि तिहि-करण-मुहुत्तंसि कलायरियस्स उवणेंति ।।

३०९. तए णं से कलायरिए पंडुसेणं कुमारं लेहाइयाओ गणियप्पहाणाओ सउणरुय-पज्जवसाणाओ बावत्तरिं कलाओ सुत्तओ य अत्थओ य करणओ य सेहावेइ सिक्खावेइ° जाव[3] अलंभोगसमत्थे जाए । जुवराया जाव[4] विहरइ ।।

पंडवाणं दोवईए य पव्वज्जा-पदं

३१०. थेरा समोसढा । परिसा निग्गया । पंडवा निग्गया । धम्मं सोच्चा एवं वयासी - जं नवरं— देवाणुप्पिया ! दोवइं देविं आपुच्छामो । पंडुसेणं च कुमारं रज्जे ठावेमो । तओ पच्छा देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडे भवित्ता[5] •णं अगाराओ अणगारियं° पव्वयामो[6] ।

अहासुहं देवाणुप्पिया !

३११. तए णं ते पंच पंडवा जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता दोवइं देविं सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एवं वयासी— एवं खलु देवाणुप्पिए ! अम्हेहिं थेराणं अंतिए धम्मे निसंते जाव[7] पव्वयामो । तुमं णं देवाणुप्पिए ! किं करेसि ?

३१२. तए णं सा दोवई ते पंच पंडवे एवं वयासी—जइ णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! संसार-भउव्विग्गा जाव[8] पव्वयह, मम के अण्णे आलंबे वा[9] •आहारे वा पडिबंधे वा° भविस्सइ ? अहं पि य णं संसारभउव्विग्गा देवाणुप्पिएहिं सद्धिं पव्वइस्सामि ।।

३१३. तए णं ते पंच पंडवा[10] •कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! पंडुसेणस्स कुमारस्स महत्थं महग्घं महरिहं विउलं रायाभिसेहं उवट्ठवेह° । पंडुसेणस्स अभिसेओ जाव[11] राया जाए जाव[12] रज्जं पसाहेमाणे विहरइ ।।

३१४. तए णं ते पंच पंडवा दोवई य देवी अण्णया कयाइ पंडुसेणं रायाणं आपुच्छंति ।।

३१५. तए णं से पंडुसेणे राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—

---

१. कयं (क); × (ख, ग) ।
२. सं० पा०—बावत्तरिं कलाओ जाव अलंभोग-समत्थे ।
३. ना० १।१।८५-८८ ।
४. राय० सू० ६७४ ।
५. सं० पा०—भवित्ता जाव पव्वयामो ।
६. पव्वामो (क, ग) ।
७. ना० १।५।८९ ।
८. ना० १।५।९० ।
९. सं० पा०—आलंबे वा जाव भविस्सइ ।
१०. सं० पा०—पंडवा° ।
११. ना० १।१।११७-११९ ।
१२. ओ० सू० १४ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खिप्पामेव भो ! देवाणुप्पिया ! निक्खमणाभिसेयं करेह जाव[1] पुरिससहस्स-वाहिणीओ सिवियाओ उवट्ठवेह जाव[2] सिबियाओ पच्चोरुहंति[3], जेणेव थेरा[4] •भगवंतो तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता थेरे भगवंते तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेंति, करेत्ता वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी°— आलित्ते णं भंते ! लोए जाव[5] समणा जाया, चोद्दस्स पुव्वाइं अहिज्जंति, अहिज्जित्ता बहूणि वासाणि छट्ठट्ठम-दसम-दुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं अप्पाणं भावेमाणा विहरंति ।।

३१६. तए णं सा दोवई देवी सीयाओ पच्चोरुहइ जाव[6] पव्वइया । सुव्वयाए अज्जाए सिस्सिणियत्ताए दलयंति,[7] एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, बहूणि वासाणि छट्ठट्ठम-दसम-दुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं अप्पाणं भावेमाणी विहरइ ।।

३१७. तए णं ते थेरा भगवंतो अण्णया कयाइ पंडुमहुराओ नयरीओ सहस्संबवणाओ[8] उज्जाणाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरंति ।।

अरिट्ठनेमिस्स निव्वाण-पदं

३१८. तेणं कालेणं तेणं समएणं अरहा अरिट्ठनेमी जेणेव सुरट्ठाजणवए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुरट्ठाजणवयंसि संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ।।

३१९. तए णं बहुजणो अण्णमण्णस्स एवमाइक्खइ, भासइ पण्णवेइ परूवेइ—एवं खलु देवाणुप्पिया ! अरहा अरिट्ठनेमी सुरट्ठाजणवए[9] •संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे° विहरइ ।।

३२०. तए णं ते जुहिट्ठिलपामोक्खा पंच अणगारा बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा अण्णमण्णं सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! अरहा अरिट्ठनेमी पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे[10] •सुहंसुहेणं विहरमाणे सुरट्ठाजणवए संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे° विहरइ । तं सेयं खलु अम्हं [थेरे भगवंते ?] आपुच्छित्ता अरहं अरिट्ठनेमिं वंदणाए गमित्तए, अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता थेरे भगवंते वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—

---

१. ना० १।१।१२१-१२९ ।
२. ना० १।१।१३०-१४४ ।
३. द्रष्टव्यम्—ना० १।१।१४५-१४८ सूत्रम् ।
४. सं० पा०—थेरा जाव आलित्ते ।
५. ना० १।१।१४९ ।
६. ना० १।१६।३१५ ।
७. दलयइ (क, ख, ग, घ) ।
८. सहसंब° (ख, ग) ।
९. सं० पा०—सुरट्ठाजणवए जाव विहरइ ।
१०. सं० पा०—दूइज्जमाणे जाव विहरइ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इच्छामो णं तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणा अरहं अरिट्ठनेमिं[1] •वंदणाए° गमित्तए।

अहासुहं देवाणुप्पिया!

३२१. तए ण ते जुहिट्ठिलपामोक्खा पंच अणगारा थेरेहिं अब्भणुण्णाया समाणा थेरे भगवंते वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता थेराणं अंतियाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता मासंमासेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं गामाणुगामं दूइज्जमाणा[2] •सुहंसुहेणं विहरमाणा° जेणेव हत्थकप्पे[3] नयरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता हत्थकप्पस्स बहिया सहस्संबवणे उज्जाणे[4] •संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा° विहरंति॥

३२२. तए णं ते जुहिट्ठिलवज्जा चत्तारि अणगारा मासक्खमणपारणए पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेंति, बीयाए झाणं झायंति एवं जहा गोयमसामी[5], नवरं— जुहिट्ठिलं आपुच्छंति जाव[6] अडमाणा बहुजणसद्दं निसामेंति -एवं खलु देवाणुप्पिया! अरहा अरिट्ठनेमी उज्जंतसेलसिहरे मासिएणं भत्तेणं अपाणएणं पंचहिं छत्तीसेहिं अणगारसएहिं सद्धिं कालगए[7] •सिद्धे बुद्धे मुत्ते अंतगडे परिनिव्वुडे सव्वदुक्ख°प्पहीणे॥

पंडवाणं निव्वाण-पदं

३२३. तए णं ते जुहिट्ठिलवज्जा चत्तारि अणगारा बहुजणस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हत्थकप्पाओ नयराओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव सहस्संबवणे उज्जाणे जेणेव जुहिट्ठिले अणगारे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता भत्तपाणं पच्चुवेक्खंति[8], पच्चुवेक्खित्ता गमणागमणस्स पडिक्कमंति, पडिक्कमित्ता एसणमणेसणं आलोएंति, आलोएत्ता भत्तपाणं पडिदंसेंति, पडिदंसेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया[9]! •अरहा अरिट्ठनेमी उज्जंतसेलसिहरे मासिएणं भत्तेणं अपाणएणं पंचहिं छत्तीसेहिं अणगारसएहिं सद्धिं° कालगए। तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया! इमं पुव्वगहियं भत्तपाणं परिट्ठवेत्ता सेत्तुज्जं पव्वयं सणियं-सणियं दुरुहित्तए, संलेहणा-झूसणा-झोसियाणं कालं अणवकंखमाणाणं[10] विहरित्तए त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता तं पुव्वगहियं भत्तपाणं एगंते परिट्ठवेंति, परिट्ठवेत्ता जेणेव सेत्तुज्जे[11] पव्वए तेणेव

---

१. सं० पा०—अरिट्ठनेमिं जाव गमित्तए।
२. सं० पा०—दूइज्जमाणा जाव जेणेव।
३. हत्थीकप्पे (क)।
४. सं० पा०—उज्जाणे जाव विहरंति।
५. भ० २।१०७।
६. भ० २।१०८, १०९।
७. सं० पा०—कालगए जाव प्पहीणे।
८. पचुवेक्खइंति (ख); पच्चक्खंति (घ)।
९. सं० पा०—देवाणुप्पिया जाव कालगए।
१०. अणवकंखमाणाणं (घ)।
११. सेत्तुंजे (क्व)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सेत्तुज्जं पव्वयं सणियं-सणियं दुरुहंति[1], •दुरुहित्ता संलेहणा-झूसणा-झोसिया° कालं अणवकंखमाणा विहरंति ॥

३२४. तए णं ते जुहिट्ठिलपामोक्खा पंच अणगारा सामाइयमाइयाइं चोद्दसपुव्वाइं अहिज्जित्ता, बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणित्ता, दोमासियाए संलेहणाए अत्ताणं झोसेत्ता जस्सट्ठाए कीरइ नग्गभावे जाव[2] तमट्ठमाराहेंति, आराहेत्ता अणंते[3] •केवलवरनाणदंसणं समुप्पाडेत्ता तओ पच्छा सिद्धा बुद्धा मुत्ता अंतगडा परिनिव्वुडा सव्वदुक्खप्पहीणा° ॥

दोवईए देवत्त-पदं

३२५. तए णं सा दोवई अज्जा सुव्वयाणं अज्जियाणं अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जित्ता[4] बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणित्ता मासियाए संलेहणाए [अत्ताणं झोसेत्ता ?] आलोइय-पडिक्कंता कालमासे कालं किच्चा बंभलोए उववण्णा। तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं दस सागरोवमाइं ठिई पण्णत्ता। तत्थ णं दुवयस्स वि देवस्स दससागरोवमाइं ठिई ॥

३२६. से णं भंते ! दुवए देवे ताओ[5] •देवलोगाओ आउक्खएणं ठिइक्खएणं भवक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता जाव[6] महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ परिनिव्वाहिइ सव्वदुक्खाण°मंतं काहिइ ॥

निक्खेव-पदं

३२७. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं आइगरेणं तित्थगरेणं जाव[7] सिद्धिगइणामधेज्जं ठाणं संपत्तेणं सोलसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते।

त्ति बेमि ॥

वृत्तिकृता समुद्धृता निगमनगाथा—

सुबहू वि तव-किलेसो, नियाण-दोसेण दूसिओ संतो।
न सिवाय दोवईए, जह किल सूमालिया-जम्मे ॥१॥

अथवा—

अमणुण्णमभत्तीए, पत्ते दाणं भवे अणत्थाय।
जह कडुय-तुंब-दाणं, नागसिरि-भवम्मि दोवईए ॥२॥

---

१. सं० पा०— दुरुहंति जाव कालं।
२. ओ० सू० १५४।
३. सं० पा०—अणंते णाणे समुप्पण्णे जाव सिद्धा।
४. अहिज्जइ २ (क, ख, ग, घ)।
५. सं० पा०—ताओ जाव विदेहे वासे जाव अंतं
६. ना० १।१।२१२।
७. ना० १।१।७।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सत्तरसमं अज्झयणं

आइण्णे

उक्खेव-पदं

१. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[1] संपत्तेणं सोलसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, सत्तरसमस्स णं भंते ! नायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?

२. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं हत्थिसीसे नामं नयरे होत्था—वण्णओ[2] ।।

३. तत्थ णं कणगकेऊ नामं राया होत्था—वण्णओ[3] ।।

४. तत्थ णं हत्थिसीसे नयरे बहवे संजत्ता[4]-नावावाणियगा परिवसंति—अड्ढा जाव[5] बहुजणस्स अपरिभूया यावि होत्था ।।

कालियदीव-जत्ता-पदं

५. तए णं तेसिं 'संजत्ता-नावावाणियगाणं'[6] अण्णया कयाइ एगयओ[7] °सहियाणं इमेयारूवे मिहोकहा-समुल्लावे समुप्पज्जित्था—सेयं खलु अम्हं गणिमं च धरिमं च मेज्जं च परिच्छेज्जं च भंडगं गहाय लवणसमुद्दं पोयवहणेणं ओगाहेत्तए त्ति कट्टु° जहा अरहन्नए जाव[8] लवणसमुद्दं अणेगाइं जोयणसयाइं ओगाढा यावि होत्था ।।

६. तए णं तेसिं[9] °संजत्ता-नावावाणियगाणं लवणसमुद्दं अणेगाइं जोयणसयाइं

---

१. ना० १।१।७ ।
२. ओ० सू० १ ।
३. ओ० सू० १४ ।
४. संजुत्ता (ग) ।
५. ना० १।५।७ ।
६. संजुत्ता वाणियगाणं (ख, ग) ।
७. सं० पा०—एगयओ जहा अरहन्नए जाव लवणसमुद्दं ।
८. ना० १।८।६६-७० ।
९. सं० पा०—तेसिं जाव बहूणि ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ओगाढाणं समाणाणं° बहूणि उप्पाइयसयाइं [१]•पाउब्भूयाइं, तं जहा—अकाले गज्जिए अकाले विज्जुए अकाले थणियसद्दे° कालियवाए य[२] समुत्थिए ।।

७. तए णं सा नावा तेणं कालियवाएणं आहुणिज्जमाणी[३]-आहुणिज्जमाणी संचालिज्जमाणी-संचालिज्जमाणी संखोहिज्जमाणी-संखोहिज्जमाणी[४] तत्थेव परिभमइ ।।

८. तए णं से निज्जामए नट्ठमईए नट्ठसुईए नट्ठसण्णे मूढदिसाभाए जाए यावि होत्था—न जाणइ कयरं देसं वा दिसं वा 'विदिसं वा'[५] पोयवहणे 'अवहिए त्ति'[६] कट्टु ओहयमणसंकप्पे[७] •करतलपल्हत्थमुहे अट्टज्झाणोवगए° झियायइ ।।

९. तए णं ते बहवे कुच्छिधारा य कण्णधारा य गब्भेल्लगा य संजत्ता-नावावाणियगा य जेणेव से निज्जामए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता एवं वयासी—किण्णं तुमं देवाणुप्पिया ! ओहयमणसंकप्पे[८] •करतलपल्हत्थमुहे अट्टज्झाणोवगए° झियायसि ?

१०. तए णं से निज्जामए ते बहवे कुच्छिधारा य कण्णधारा य गब्भेल्लगा य संजत्ता-नावावाणियगा य एवं वयासी—एवं खलु अहं देवाणुप्पिया ! नट्ठमईए[९] •नट्ठसुईए नट्ठसण्णे मूढदिसाभाए जाए यावि होत्था—न जाणइ कयरं देसं वा दिसं वा विदिसं वा पोयवहणे° अवहिए त्ति कट्टु तओ ओहयमणसंकप्पे[१०] •करतलपल्हत्थमुहे अट्टज्झाणोवगए° झियामि ।।

११. तए णं ते कुच्छिधारा य कण्णधारा य गब्भेल्लगा य संजत्ता-नावावाणियगा य तस्स निज्जामयस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म भीया तत्था उव्विग्गा उव्विग्गमणा ण्हाया कयबलिकम्मा करयल[११]•परिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु° बहूणं इंदाण य खंधाण य [१२]•रुद्दाण य सिवाण य वेसमणाण य नागाण य भूयाण य जक्खाण य अज्ज-कोट्टकिरियाण य बहूणि उवाइय-सयाणि° उवायमाणा[१३]-उवायमाणा चिट्ठंति ।।

१२. तए णं से निज्जामए तओ मुहुत्तंतरस्स लद्धमईए लद्धसुईए लद्धसण्णे अमूढदिसाभाए जाए यावि होत्था ।।

---

१. सं० पा०—जहा मार्कंदियदारगाणं जाव कालियवाए ।
२. यत्थ (ग, घ) ।
३. अणुत्तिज्जमाणी (ख); आघुलिज्जमाणी (ग); आहुणियमाणी (घ) ।
४. संखोभेज्जमाणी (क) ।
५. × (क) ।
६. अवहित्ति (क); अवहिति त्ति (ख) ।
७. सं० पा०—ओहयमणसंकप्पे जाव झियायइ ।
८. सं० पा०—ओहयमणसंकप्पे जाव झियायसि ।
९. सं० पा०—नट्ठमईए जाव अवहिए ।
१०. सं० पा०—ओहयमणसंकप्पे जाव झियामि ।
११. सं० पा०—करयल° ।
१२. सं० पा०—जहा मल्लिनाए जाव उवायमाणा ।
१३. उवाइमाणा (१।८।७२)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१३. तए ण स निज्जामए ते वहवे कुच्छिधारा य कण्णधारा य गब्भेल्लगा य संजत्ता-नावावाणियगा य एवं वयासी—एवं खलु अहं देवाणुप्पिया ! लद्धमईए[1] •लद्धसुईए लद्धसण्णे° अमूढदिसाभाए जाए। अम्हे णं देवाणुप्पिया ! कालिय-दीवंतेणं संछूढा[2]। एस णं कालियदीवे आलोक्कइ[3]॥

कालियदीवे आस-पेच्छण-पदं

१४. तए णं ते कुच्छिधारा य कण्णधारा य गब्भेल्लगा य संजत्ता-नावावाणियगा य तस्स निज्जामगस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा हट्ठतुट्ठा पयक्खिणाणुकूलेणं वाएणं जेणेव कालियदीवे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पोयवहणं लंबेंति, लंबेत्ता एगट्ठियाहिं कालियदीवं उत्तरंति। तत्थ णं बहवे हिरण्णागरे य सुवण्णागरे य रयणागरे य वइरागरे य, बहवे तत्थ आसे पासंति, किं ते ?—

हरिरेणु-सोणिसुत्तग-[4]•सकविल-मज्जार-पायकुक्कुड-वोंडसमुग्गयसामवण्णा।
गोहूमगोरंग-गोरपाडल-गोरा, पवालवण्णा य धूमवण्णा य केइ॥१॥
तलपत्त - रिट्ठवण्णा य, सालिवण्णा य भासवण्णा य केइ।
जंपिय-तिल-कीडगा य, सोलोय-रिट्ठगा य पुंड-पइया य कणग पिट्ठा य केइ॥२॥
चक्कागपिट्ठवण्णा, सारसवण्णा य हंसवण्णा य केइ।
केइत्थ अब्भवण्णा, पक्कतल[5] - मेघवण्णा य बाहुवण्णा[6] केइ॥३॥
संझाणुरागसरिसा, सुयमुह - गुंजद्धराग- सरिसत्थ केइ।
एलापाडल - गोरा, सामलया - गवलसामला पुणो केइ॥४॥
बहवे अण्णे अणिद्देसा, सामा कासीसरत्तपीया, अच्चंतविसुद्धा वि य णं आइण्णग-जाइ-कुल-विणीय-गयमच्छरा।
हयवरा जहोवएस-कम्मवाहिणो वि य णं।
सिक्खा विणीयविणया,
लंघण-वग्गण-धावण-धोरण-तिवई जईण-सिक्खिय-गई।
किं ते ? मणसा वि उव्विहंताइं अणेगाइं आससयाइं पासंति° ॥

१५. तए णं ते आसा[7] वाणियए पासंति, तेसिं गंधं आघायंति[8], आघाइत्ता भीया

---

१. सं० पा०—लद्धमईए जाव अमूढदिसायाए।
२. संतूढा (ख); संबूढा (ग)।
३. ओलोक्किज्जइ (घ)।
४. सं० पा०—आइण्णवेढो। विस्तृतः पाठो वृत्यनुसारेण स्वीकृतः। मूलपाठे अस्य सूचना 'आइण्णवेढो' इति पदेन प्रदत्तास्ति। वृत्तिकारेणापि सूचितमिदम् यथा—वेढो त्ति वर्णनार्थो वाक्यपद्धतिः (वृ)।
५. पविरल (वृपा)।
६. बहु° (वृपा)।
७. आसा ते(क, घ); आसाए(ग); आसाओ(क्व)।
८. अग्घायंति (ख, ग)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तत्था उव्विग्गा उव्विग्गमणा तओ अणेगाइं जोयणाइं उब्भमंति । ते णं तत्थ पउर-गोयरा पउर-तणपाणिया निब्भया[1] निरुव्विग्गा[2] सुहंसुहेणं विहरंति ।।

संजत्तियाणं पुणरागमण-पदं

१६. तए णं ते संजत्ता-नावावाणियगा अण्णमण्णं एवं वयासी—किण्णं अम्हं देवाणुप्पिया ! आसेहिं ? इमे णं बहवे हिरण्णागरा य सुवण्णागरा य रयणागरा य वइरागरा य । तं सेयं खलु अम्हं हिरण्णस्स य सुवण्णस्स य रयणस्स य वइरस्स य पोयवहणं भरित्तए त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता हिरण्णस्स य सुवण्णस्स य रयणस्स य वइरस्स य तणस्स य कट्ठस्स य अन्नस्स य पाणियस्स य पोयवहणं भरेंति, भरेत्ता पयक्खिणाणुकूलेणं[3] वाएणं जेणेव गंभीरए[4] पोयपट्टणे[5] तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पोयवहणं लंबेंति, लंबेत्ता सगडी-सागडं सज्जेंति, सज्जेत्ता तं हिरण्णं[6] •च सुवण्णं च रयणं च° वइरं च एगट्ठियाहिं पोयवहणाओ संचारेंति, संचारेत्ता सगडी-सागडं संजोएंति[7], जेणेव हत्थिसीसए[8] नयरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता हत्थिसीसयस्स नयरस्स बहिया अग्गुज्जाणे सत्थनिवेसं करेंति, करेत्ता सगडी-सागडं मोएंति, मोएत्ता महत्थं[9] •महग्घं महरिहं विउलं रायारिहं° पाहुडं गेण्हंति, गेण्हित्ता हत्थिसीसयं नयरं अणुप्पविसंति, अणुप्पविसित्ता जेणेव से कणगकेऊ राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तं महत्थं[10] •महग्घं महरिहं विउलं रायारिहं° पाहुडं उवणेंति ।।

आसाण आणयण-पदं

१७. तए णं से कणगकेऊ राया तेसिं संजत्ता-नावावाणियगाणं तं महत्थं[11] •महग्घं महरिहं विउलं रायारिहं पाहुडं° पडिच्छइ, पडिच्छित्ता ते संजत्ता-नावावाणियगे एवं वयासी—तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! गामागर[12]-•नगर-खेड-कब्बड-दोणमुह-मडंब-पट्टण-आसम-निगम-संबाह-सण्णिवेसाइं° आहिंडह, लवणसमुद्दं च अभिक्खणं-अभिक्खणं पोयवहणेणं ओगाहेह । तं अत्थियाइं च केइ भे[13] कहिंचि अच्छेरए दिट्ठपुव्वे ?

---

१. निब्भया निब्भेया (ग) ।
२. निउव्विग्गा (ख) ।
३. दक्खिणाणु° (ख, ग) ।
४. गंभीर (ख, ग, घ) ।
५. पोयवहणपट्टणे (ग) ।
६. सं० पा०—हिरण्णं जाव वइरं ।
७. जोएंति (क, ख, घ) ।
८. हत्थिसीसे (घ) ।
९. सं० पा०—महत्थं जाव पाहुडं ।
१०. सं० पा०—महत्थं जाव पाहुडं ।
११. सं० पा०—महत्थ जाव पडिच्छइ ।
१२. सं० पा०—गामागर जाव आहिंडह ।
१३. हे (ग) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१८. तए णं ते संजत्ता-नावावाणियगा कणगकेउं एवं वयासी--एवं खलु अम्हे देवाणुप्पिया ! इहेव हत्थिसीसे नयरे परिवसामो तं चेव जाव[1] कालियदीवंतेणं संछूढा। तत्थ णं बहवे हिरण्णागरे य[2] •सुवण्णागरे य रयणागरे य वइरागरे य°, बहवे तत्थ[3] आसे पासामो[4]।
किं ते ? हरिरेणु जाव[5] अम्हं गंधं आघायंति, आघाइत्ता भीया तत्था उव्विग्गा उव्विग्गमणा तओ अणेगाइं जोयणाइं उब्भमंति। तए णं सामी ! अम्हेहिं कालियदीवे 'ते आसा' अच्छेरए दिट्ठपुव्वे ।।

१९. तए णं से कणगकेऊ तेसिं संजत्ता-नावावाणियगाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म ते संजत्ता-नावावाणियए एवं वयासी--गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! मम कोडुंबियपुरिसेहिं सद्धिं कालियदीवाओ ते आसे आणेह ।।

२०. तए णं ते संजत्ता-नावावाणियगा[6] एवं सामि ! त्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेंति ।।

२१. तए णं से कणगकेऊ कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी--गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! संजत्ता-नावावाणियएहिं सद्धिं कालियदीवाओ मम आसे आणेह। तेवि पडिसुणेंति ।।

२२. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा सगडी-सागडं सज्जेंति, सज्जेत्ता तत्थ णं बहूणं वीणाण य वल्लकीण य भामरीण य कच्छभीण य भंभाण य छब्भामरीण य चित्तवीणाण य अण्णेसिं च बहूण सोइंदिय-पाउग्गाणं दव्वाणं सगडी-सागडं भरेंति। बहूणं किण्हाण य[7] •नीलाण य लोहियाण य हालिद्दाण य° सुक्किलाण य कट्ठकम्माण य चित्तकम्माण य पोत्थकम्माण य लेप्पकम्माण य गंथिमाण य वेढिमाण य पूरिमाण य संघाइमाण य अण्णेसिं च बहूणं चक्खिदिय-पाउग्गाणं दव्वाणं सगडी-सागडं भरेंति। बहूणं कोट्ठपुडाण य[8] •पत्तपुडाण य चोयपुडाण य तगरपुडाण य एलापुडाण य हिरिवेरपुडाण य उसीरपुडाण य चंपगपुडाण य मरुयगपुडाण य दमणगपुडाण य जातिपुडाण य जुहियापुडाण य मल्लियापुडाण य वासंतियापुडाण य केयइपुडाण य कप्पूरपुडाण य पाडलपुडाण य° अण्णेसिं च बहूणं घाणिंदिय-पाउग्गाणं दव्वाणं सगडी-सागडं

१. ना० १।१७।४-१३।
२. सं० पा०—हिरण्णागरे य जाव बहवे; हिरण्णागरा° (ख, ग)।
३. यत्थ (ख); अत्थि (घ)।
४. एतत् क्रियापदं १४ सूत्रानुसारेण स्वीकृतम्।
५. ना० १।१७:१४,१५।
६. नावावाणियगा कणगकेउं एवं वयासी (क, ख, ग, घ)। यद्यपि सर्वेष्वपि आदर्शेषु असौ पाठो विद्यते, तथापि अर्थमीमांसया नासौ समगच्छते। एतादृशप्रसंगे तथा अदर्शनात्। द्रष्टव्यम्--१।८।१०४ सूत्रम्। तेनासौ पाठः पाठान्तरत्वेन स्वीकृतः।
७. सं० पा०—किण्हाण य जाव सुक्किलाण।
८. सं० पा०—कोट्ठपुडाण य जाव अण्णेसिं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भरेंति। बहुस्स खंडस्स य गुलस्स य 'सक्कराए य मच्छंडियाए य'[1] पुप्फुत्तर-पउमुत्तराए अण्णेसिं च जिब्भिंदिय-पाउग्गाणं दव्वाणं सगडी-सागडं भरेंति। बहूणं कोयवाण[2] य कंबलाण य पावाराण य नवतयाण य 'मलयाण य'[3] मसूराण य 'सिलावट्टाण य जाव हंसगब्भाण य'[4] अण्णेसिं च फासिंदिय-पाउग्गाणं दव्वाणं सगडी-सागडं भरेंति, भरेत्ता सगडी-सागडं जोयंति, जोइत्ता जेणेव गंभीरए पोयट्ठाणे तेणेव उवागच्छंति, सगडी-सागडं मोएंति, मोएत्ता पोयवहणं सज्जेंति, सज्जेत्ता तेसिं उक्किट्ठाणं सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधाणं कट्ठस्स य 'तणस्स य'[5] पाणियस्स य तंदुलाण य समियस्स य गोरसस्स य जाव[6] अण्णेसिं च बहूणं पोयवहणपाउग्गाणं पोयवहणं भरेंति, भरेत्ता दक्खिणाणुकूलेणं वाएणं जेणेव कालियदीवे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पोयवहणं लंबेंति, लंबेत्ता ताइं उक्किट्ठाइं सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधाइं, एगट्ठियाहिं कालियदीवं उत्तरेंति।

जहिं-जहिं च णं ते आसा आसयंति वा सयंति वा चिट्ठंति वा तुयट्टंति वा तहिं-तहिं च णं ते कोडुंबियपुरिसा ताओ वीणाओ य जाव चित्तवीणाओ य अण्णाणि य बहूणि सोइंदिय-पाउग्गाणि य[7] दव्वाणि समुदीरेमाणा-समुदीरेमाणा ठवेंति, तेसिं च परिपेरंतेणं पासए[8] ठवेंति, ठवेत्ता निच्चला निप्फंदा तुसिणीया चिट्ठंति।

जत्थ-जत्थ ते आसा आसयंति वा[9] °सयंति वा चिट्ठंति वा° तुयट्टंति वा तत्थ-तत्थ णं ते कोडुंबियपुरिसा बहूणि किण्हाणि य नीलाणि य लोहियाणि य हालिद्दाणि य सुक्किलाणि य कट्ठकम्माणि य जाव संघाइमाणि य अण्णाणि य बहूणि चक्खिंदिय-पाउग्गाणि य दव्वाणि ठवेंति, तेसिं परिपेरंतेणं पासए ठवेंति, ठवेत्ता निच्चला निप्फंदा तुसिणीया चिट्ठंति।

जत्थ-जत्थ ते आसा आसयंति वा सयंति वा चिट्ठंति वा तुयट्टंति वा तत्थ-तत्थ णं ते कोडुंबियपुरिसा तेसिं बहूणं कोट्ठपुडाण य जाव पाडलपुडाण य अण्णेसिं

---

१. सक्करा तणस्स य पाणियस्स य गोरसस्स य तंदुलाण य समियस्स य जाव अण्णेसिं च पोयवहणपाओग्गाण य (क); °मुच्छंडियाए य तणस्स य पाणियस्स य गोरसस्स य तंदुलाण य समियस्स य जाव अण्णेसिं च पोयवहण-पाओग्गाण य (ख)।

२. कोयगाण (वृ); कोयवा (वा ?) णि (आयारचूला ५।१४)।

३. मसगाण य (वृपा)।

४. 'सिलावट्टाण य जाव हंसगब्भाण य' अस्य पूर्तिस्थलं नोपलभ्यते। प्रज्ञापनायाः प्रथमपदे 'हंसगब्भ' इति पदं मध्यवर्ति विद्यते। अन्तिमं पदं 'सूरकंते' अस्ति। उत्तराध्ययनस्य ३६ अध्ययनेपि एवमेव।

५. × (ख, ग, घ)।

६. ना० १।८।६६।

७. × (ख, घ)।

८. पासे (ख, घ)।

९. सं० पा०—आसयंति वा जाव तुयट्टंति

च बहूणं घाणिंदिय-पाउग्गाणं दव्वाणं पुंजे य नियरे य करेंति, करेत्ता तेसिं परिपेरंतेणं[1] •पासए ठवेंति, ठवेत्ता निच्चला निप्फंदा तुसिणीया° चिट्ठंति।
जत्थ-जत्थ ते आसा आसयंति वा सयंति वा चिट्ठंति वा तुयट्टंति वा तत्थ-तत्थ णं ते कोडुंबियपुरिसा गुलस्स जाव पुप्फुत्तर-पउमुत्तराए अण्णेसिं च बहूणं जिब्भिंदिय-पाउग्गाणं दव्वाणं पुंजे य नियरे य करेंति, करेत्ता वियरए खणंति, खणित्ता गुलपाणगस्स 'खंडपाणगस्स बोरपाणगस्स'[2] अण्णेसिं च बहूणं पाणगाणं वियरए भरेंति, भरेत्ता तेसिं परिपेरंतेणं पासए ठवेंति[3], •ठवेत्ता निच्चला निप्फंदा तुसिणीया° चिट्ठंति।
जहिं-जहिं च णं ते आसा आसयंति वा सयंति वा चिट्ठंति वा तुयट्टंति वा तहिं-तहिं च णं ते कोडुंबियपुरिसा बहवे 'कोयवया जाव सिलावट्टया'[4] अण्णाणि य फासिंदिय-पाउग्गाइं अत्थुय-पच्चत्थुयाइं ठवेंति, ठवेत्ता तेसिं परिपेरंतेणं[5] •पासए ठवेंति, ठवेत्ता निच्चला निप्फंदा तुसिणीया° चिट्ठंति॥

२३. तए णं ते आसा जेणेव ते उक्किट्ठा सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधा तेणेव उवागच्छंति॥

अमुच्छिय-आसाणं सायत्त-विहार-पदं

२४. तत्थ णं अत्थेगइया आसा अपुव्वा णं इमे सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधत्ति[6] कट्टु तेसु उक्किट्ठेसु सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधेसु अमुच्छिया अगढिया अगिद्धा अणज्झोववण्णा तेसिं उक्किट्ठाणं सद्द[7]-•फरिस-रस-रूव°-गंधाणं दूरंदूरेणं अवक्कमंति। ते णं तत्थ पउर-गोयरा पउर-तणपाणिया निब्भया निरुव्विग्गा सुहंसुहेणं विहरंति॥

निगमण-पदं

२५. एवामेव समणाउसो! जो अम्हं निग्गंथो वा[8] •निग्गंथी वा आयरिय-उवज्झायाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए समाणे° सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधेसु नो सज्जइ नो रज्जइ नो गिज्झइ नो मुज्झइ नो अज्झोववज्जइ, से णं इहलोए चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावयाणं बहूणं सावियाण य अच्चणिज्जे जाव[9] चाउरंतं संसारकंतारं वीईवइस्सइ॥

---

१. सं० पा०—परिपेरंतेणं जाव चिट्ठंति।
२. खंडपाणगस्स पोरपाणगस्स (क); बोरपाणगस्स य खंडपाणगस्स य (ख): खडपाणगस्स (ग)।
३. सं० पा०—ठवेंति जाव चिट्ठंति।
४. अस्य सूत्रस्य पूर्वपाठापेक्षया 'कोयवया जाव हंसगब्भा' एवं पाठो युज्यते। संभवतः संक्षेपीकरणेऽस्य विपर्ययो जातः।
५. सं० पा०—परिपेरंतेण जाव चिट्ठंति।
६. गंधाति (ख, घ)।
७. सं० पा०—सद्द जाव गंधाणं।
८. सं० पा०—निग्गंथो वा°।
९. ना० १।२।७६।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुच्छिय-आसाणं परायत्त-पदं

२६. तत्थ णं अत्थेगइया आसा जेणेव उक्किट्ठा सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधा तेणेव उवागच्छंति। तेसु उक्किट्ठेसु सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधेसु मुच्छिया गढिया गिद्धा अज्झोववण्णा आसेविउं पयत्ता यावि होत्था ।।

२७. तए णं ते आसा ते उक्किट्ठे सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधे आसेवमाणा तेहिं बहूहिं कूडेहि य पासेहि य गलएसु य पाएसु य बज्झंति ।।

२८. तए णं ते कोडुंबियपुरिसा ते आसे गिण्हंति, गिण्हित्ता एगट्ठियाहिं पोयवहणे संचारेंति, कट्ठस्स य[1] °तणस्स य पाणियस्स य तंदुलाण य समियस्स य गोरसस्स य जाव[2] अण्णेसिं च बहूणं पोयवहणपाउग्गाणं पोयवहणं° भरेंति ।।

२६. तए णं ते संजत्ता-नावावाणियगा दक्खिणाणुकूलेणं वाएणं जेणेव गंभीरए पोयपट्टणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पोयवहणं लंबेंति, लंबेत्ता ते आसे उत्तारेंति, उत्तारेत्ता जेणेव हत्थिसीसे नयरे जेणेव कणगकेऊ राया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता करयल[3] °परिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं° वद्धावेंति ते आसे उवणेंति ।।

३०. तए णं से कणगकेऊ राया तेसिं संजत्ता-नावावाणियगाणं उस्सुक्कं[4] वियरइ, सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ ।।

३१. तए णं से कणगकेऊ राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ ।।

३२. तए णं से कणगकेऊ राया आसमद्दए सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—तुब्भे णं देवाणुप्पिया ! मम आसे विणएह ।।

३३. तए णं ते आसमद्दगा तहत्ति पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता ते आसे बहूहिं मुहबंधेहि य कण्णबंधेहि य नासाबंधेहि य वालबंधेहि य खुरबंधेहि य 'कडगबंधेहि य खलिणबंधेहि य'[5] ओवीलणाहि[6] य 'पडयाणेहि य'[7] अंकणाहि य वेत्तप्पहारेहि[8] य लयप्पहारेहि[9] य कसप्पहारेहि य छिवप्पहारेहि य विणयंति, विणइत्ता कणगकेउस्स रण्णो उवणेंति ।।

३४. तए णं से कणगकेऊ राया ते आसमद्दए सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता पडिविसज्जेइ ।।

---

१. सं० पा०—कट्ठस्स य जाव भरेंति ।
२. ना० १।८।६६ ।
३. स० पा०—करयल जाव वद्धावेंति ।
४. उस्सुक्कं (क, ग, घ) ।
५. × (क); °खलीण° (ख, ग) ।
६. अधिलाणेहि (क); आवलणेहि (ख); अहिलाणबंधेहि (ग); अहिलाणेहि (घ, वृपा) ।
७. × (क); पलियाणेही य (ख) ।
८. वित्त° (ख, ग, घ) ।
९. × (ख, ग) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३५. तए णं ते आसा बहूहिं मुहबंधेहि य जाव[1] छिवप्पहारेहि य बहूणि सारीर-माणसाइं दुक्खाइं पावेंति ॥

निगमण-पदं

३६. एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गंथो वा[2] •निग्गंथी वा आयरिय-उवज्झायाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइए समाणे इट्ठेसु सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधेसु सज्जइ रज्जइ गिज्झइ मुज्झइ अज्झोववज्जइ, से णं इहलोए चेव बहूणं समणाणं[3] •बहूणं समणीणं बहूणं सावगाणं बहूणं° सावियाण य हीलणिज्जे जाव[4] चाउरंतं संसारकंतारं भुज्जो-भुज्जो अणुपरियट्टिस्सइ ।

गाहा —

कल-रिभिय-महुर-तंती-तल-ताल-वंस-कउहाभिरामेसु[5] ।
सद्देसु रज्जमाणा[6], रमंति सोइंदिय - वसट्टा ॥१॥
सोइंदिय-दुद्दंतत्तणस्स अह 'एत्तिओ हवइ'[7] दोसो ।
दीविग-रुयमसहंतो,[8] वहबंधं तित्तिरो पत्तो ॥२॥
थण-जहण-वयण-कर-चरण-नयण-गव्विय-विलासियगईसु[9] ।
रूवेसु रज्जमाणा, रमंति चक्खिंदिय-वसट्टा ॥३॥
चक्खिंदिय-दुद्दंतत्तणस्स अह एत्तिओ हवइ दोसो ।
जं[10] जलणंमि जलंते, पडइ पयंगो अबुद्धीओ ॥४॥
अगरुवर-पवरधूवण - उउयमल्लाणुलेवणविहीसु ।
गंधेसु रज्जमाणा, रमंति घाणिंदिय-वसट्टा ॥५॥
घाणिंदिय-दुद्दंतत्तणस्स अह एत्तिओ हवइ दोसो ।
जं ओसहिगंधेणं, बिलाओ निद्धावई उरगो ॥६॥
तित्त-कडुयं[11] कसायं, महुरं[12] बहुखज्ज-पेज्ज-लेज्झेसु ।
आसायंमि[13] उ गिद्धा, रमंति जिब्भिंदिय-वसट्टा ॥७॥
जिब्भिंदिय-दुद्दंतत्तणस्स अह एत्तिओ हवइ दोसो ।
जं गललग्गुक्खित्तो, फुरइ थलविरेल्लिओ[14] मच्छो ॥८॥

---

१. ना० १।१७।३३ ।
२. सं० पा०—निग्गंथो वा पव्वइए ।
३. सं० पा०—समणाणं जाव सावियाण ।
४. ना० १।३।२४ ।
५. कदुहा° (क); ककुहा° (ख); ककुदा° (घ, वृ) ।
६. रयमाणा (ख) ।
७. तत्तियो हवति (क, ग);हवइ एत्तिओ (ख) ।
८. भयमसहंतो (ग); खमसहंतो (घ, वृ) ।
९. °मईसु (क) ।
१०. सं (क) ।
११. कटुय (घ) ।
१२. अंबिलमहुरं (घ) ।
१३. आसायंति (ख) ।
१४. °विरिल्लिओ (क,ख,ग); °विरल्लिओ(घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उउ-भयमाणसुहेसु[1] य, सविभव[2]-हियमण-निव्वुइकरेसु[3] ।
फासेसु रज्जमाणा, रमंति फासिंदिय-वसट्टा ।।९।।
फासिंदिय-दुद्दंतत्तणस्स अह एत्तिओ हवइ दोसो ।
जं खणइ मत्थयं कुंजरस्स लोहंकुसो तिक्खो ।।१०।।
कल-रिभिय-महुर-तंती-तल-ताल-वंस-कउहाभिरामेसु ।
सद्देसु जे न गिद्धा, वसट्टमरणं न ते मरए ।।११।।
थण-जहण-वयण-कर-चरण-नयण-गव्विय-विलासियगईसु[4] ।
रूवेसु जे न रत्ता, वसट्टमरणं न ते मरए ।।१२।।
अगरुवर - पवर - धूवण - उउयमल्लाणुलेवणविहीसु ।
गंधेसु[5] जे न गिद्धा, वसट्टमरणं न ते मरए ।।१३।।
तित्त-कडुयं, कसायं, महुरं बहुखज्ज-पेज्ज-लेज्झेसु ।
आसायंमि 'न गिद्धा',[6] वसट्टमरणं न ते मरए ।।१४।।
उउ-भयमाणसुहेसु य, सविभव हियमण-निव्वुइकरेसु[7] ।
फासेसु जे न गिद्धा, वसट्टमरणं न ते मरए ।।१५।।
सद्देसु य भद्दय[8]-पावएसु सोयविसयमुवगएसु ।
तुट्ठेण व रुट्ठेण व, समणेण सया न होयव्वं ।।१६।।
रूवेसु य भद्दय[9] - पावएसु चक्खुविसयमुवगएसु ।
तुट्ठेण व रुट्ठेण व, समणेण सया न होयव्वं ।।१७।।
गंधेसु य भद्दय-पावएसु घाणविसयमुवगएसु ।
तुट्ठेण व रुट्ठेण व, समणेण सया न होयव्वं[10] ।।१८।।
रसेसु य भद्दय-पावएसु जिब्भविसयमुवगएसु ।
तुट्ठेण व रुट्ठेण व, समणेण सया न होयव्वं ।।१९।।
फासेसु य भद्दय-पावएसु कायविसयमुवगएसु ।
तुट्ठेण व रुट्ठेण व, समणेण सया न होयव्वं[11] ।।२०।।

---

१. °सुहेहिं (क, ख) ।
२. सविहव (क, ग) ।
३. °करेहिं (क, ख, ग) ।
४. °गईसु (ग) ।
५. घाणेसु (ख) ।
६. अगिद्धा (क, ख, ग) ।
७. णेव्वुय° (क) ।
८. भद्देसु य (ख) ।
९. भद्दग (क, ग) ।
१०. होउव्वं (ग) ।
११. एतद् गाथा-विंशतिकं वृत्तिकृता प्रस्तुतवाचनायां न स्वीक्रियते—यथा—अथेन्द्रियासंवृतानां स्वरूपस्य इन्द्रियासंवरदोषस्य चाभिधायकं गाथाकदंबकं वाचनान्तरेऽधिकमुपलभ्यते ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३७. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[1] संपत्तेणं सत्तरसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।

—त्ति बेमि ॥

वृत्तिकृता समुद्धृता निगमनगाथा—

जह सो कालियदीवो, अणुवमसोक्खो तहेव जइ-धम्मो ।
जह आसा तह साहू, वणियव्व अणुकूलकारिजणा ॥१॥
जह सद्दाइ-अगिद्धा, पत्ता नो पासबंधणं आसा ।
तह विसएसु अगिद्धा, बज्झंति न कम्मणा साहू ॥२॥
जह सच्छंदविहारो, आसाणं तह इहं वरमुणीणं ।
जर-मरणाइ-विवज्जिय, सायत्ताणंदनिव्वाणं ॥३॥
जह सद्दाइसु गिद्धा, बद्धा आसा तहेव विसयरया ।
पावेंति कम्मबंधं, परमासुह-कारणं घोरं ॥४॥
जह ते कालियदीवा, णीया अण्णत्थ दुहगणं पत्ता ।
तह धम्म-परिब्भट्ठा, अधम्मपत्ता इहं जीवा ॥५॥
पावेंति कम्म-नरवइ-वसया संसारवाहियालीए[2] ।
आसप्पमद्दएहिं व, नेरइयाईहिं दुक्खाइं ॥६॥

———

१. ना० १।१।७ ।
२. °वाहयालीए (घ) ।

अट्ठारसमं अज्झयणं

संसुमा

उक्खेव-पदं

१. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[1] संपत्तेणं सत्तरसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, अट्ठारसमस्स णं भंते नायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?

२. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नयरे होत्था—वण्णओ[2] ।।

३. तत्थ णं धणे नामं सत्थवाहे । भद्दा भारिया ।।

४. तस्स णं धणस्स सत्थवाहस्स पुत्ता भद्दाए अत्तया पंच सत्थवाहदारगा होत्था, तं जहा—धणे धणपाले[3] धणदेवे धणगोवे धणरक्खिए ।।

५. तस्स णं धणस्स सत्थवाहस्स धूया भद्दाए अत्तया पंचण्हं पुत्ताणं अणुमग्गजाइया संसुमा नामं दारिया होत्था—सूमालपाणिपाया ।।

चिलाय-दासचेडस्स विग्गह-पदं

६. तस्स णं धणस्स सत्थवाहस्स चिलाए नामं दासचेडे होत्था—अहीणपंचिंदिय-सरीरे मंसोवचिए बालकीलावणकुसले यावि होत्था[4] ।।

७. तए णं से दासचेडे संसुमाए दारियाए बालग्गाहे जाए यावि होत्था, संसुमं दारियं कडीए गिण्हइ, गिण्हित्ता बहूहिं दारएहिं य दारियाहिं य डिंभएहिं य डिंभियाहिं य कुमारएहि य कुमारियाहिं य सद्धिं अभिरममाणे-अभिरममाणे विहरइ ।।

८. तए णं से चिलाए दासचेडे तेसिं बहूणं दारयाण य दारियाण य डिंभयाण य

---

१. ना० १।१।७ ।

२. ओ० सू० १ ।

३. धणवाले (क, ख) ।

४. होत्था सूमालपाणिपाया (ख, ग) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

डिंभियाण य कुमारयाण य कुमारियाण य अप्पेगइयाणं खुल्लए[1] अवहरइ[2], •अप्पेगइयाणं वट्टए अवहरइ, अप्पेगइयाणं आडोलियाओ[3] अवहरइ, अप्पेगइयाणं तिंदूसए अवहरइ, अप्पेगइयाणं पोत्तुल्लए अवहरइ, अप्पेगइयाणं साडोल्लए अवहरइ,° अप्पेगइयाणं आभरणमल्लालंकारं अवहरइ, अप्पेगइए आउसइ अवहसइ निच्छोडेइ निब्भच्छेइ तज्जेइ तालेइ ॥

९. तए णं ते बहवे दारगा य दारिया य डिंभया य डिंभिया य कुमारया य कुमारिया य रोयमाणा य कंदमाणा य सोयमाणा य तिप्पमाणा य विलवमाणा य साणं-साणं अम्मापिऊणं निवेदेंति ॥

चिलायस्स गिहाओ निक्कासण-पदं

१०. तए णं तेसिं बहूणं दारयाण य दारियाण य डिंभयाण य डिंभियाण य कुमारयाण य कुमारियाण य अम्मापियरो जेणेव धणे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता धणं सत्थवाहं बहूहिं खिज्जणियाहि य रुंटणाहि य उवलंभणाहि[4] य खिज्जमाणा य रुंटमाणा य उवलंभमाणा[5] य धणस्स सत्थवाहस्स एयमट्ठं निवेदेंति ॥

११. तए णं से धणे सत्थवाहे चिलायं दासचेडं एयमट्ठं भुज्जो-भुज्जो निवारेइ, नो चेव णं चिलाए दासचेडे उवरमइ ॥

१२. तए णं से चिलाए दासचेडे तेसिं बहूणं दारयाण य दारियाण य डिंभयाण य डिंभियाण य कुमारयाण य कुमारियाण य अप्पेगइयाणं खुल्लए अवहरइ[6] अप्पेगइयाणं वट्टए अवहरइ, अप्पेगइयाणं आडोलियाओ अवहरइ, अप्पेगइयाणं तिंदूसए अवहरइ, अप्पेगयाणं पोत्तुल्लए अवहरइ, अप्पेगइयाणं साडोल्लए अवहरइ, अप्पेगइयाणं आभरणमल्लालंकारं अवहरइ, अप्पेगइए आउसइ अवहसइ निच्छोडेइ निब्भच्छेइ तज्जेइ° तालेइ ॥

१३. तए णं ते बहवे दारगा य दारिया य डिंभया य डिंभिया य कुमारया य कुमारिया य रोयमाणा य[7] •कंदमाणा य सोयमाणा य तिप्पमाणा य विलवमाणा य साणं-साणं° अम्मापिऊणं निवेदेंति ॥

१४. तए णं ते आसुरुत्ता रुट्ठा कुविया चंडिक्किया मिसिमिसेमाणा जेणेव धणे सत्थवाहे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता बहूहिं खिज्जणाहि य[8] •रुंटणाहि य

---

१. खल्लए (ग)।
२. सं० पा० --एवं वट्टए आडोलियाओ तिंदूसए पोत्तुल्लए साडोल्लए।
३. अप्पोडियाओ (ख) आलोडियाओ (क्व)।
४. उवलंभणियाहि (ख); उवलभणायाहि (ग)।
५. उवालभमाणा (क); उवलभमाणा (ख, ग)।
६. सं० पा०—अवहरइ जाव तालेइ।
७. सं० पा०—रोयमाणा य जाव अम्मापिऊणं।
८. सं० पा०—खिज्जणाहि य जाव एयमट्ठं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उवलंभणाहि य खिज्जमाणा य रुंटमाणा य उवलंभमाणा य धणस्स सत्थवाहस्स॰ एयमट्ठं निवेदेंति ।।

१५. तए णं से धणे सत्थवाहे बहूणं दारगाणं दारियाणं डिंभयाणं डिंभियाणं कुमारयाणं कुमारियाणं अम्मापिऊण अंतिए एयमट्ठं सोच्चा आसुरुत्ते रुट्ठे कुविए चंडिक्किए मिसिमिसेमाणे चिलायं दासचेडं उच्चावयाहिं आउसणाहिं आउसइ उद्धंसइ निब्भच्छेइ निच्छोडेइ तज्जेइ उच्चावयाहिं तालणाहिं तालेइ साओ गिहाओ निच्छुभइ ।।

चिलायस्स दुव्वसण-पवत्ति-पदं

१६. तए णं से चिलाए दासचेडे साओ गिहाओ निच्छूढे समाणे रायगिहे नयरे सिंघाडग[1]-•तिग-चउक्क चच्चर-चउम्मुह-महापह॰पहेसु देवकुलेसु य सभासु य पवासु य जूयखलएसु य वेसाघरएसु य पाणघरएसु य सुहंसुहेणं परिवट्टइ[3] ।।

१७. तए णं से चिलाए दासचेडे अणोहट्टिए[4] अणिवारिए सच्छंदमई सइरप्पयारी 'मज्जप्पसंगी चोज्जप्पसंगी'[5] जूयप्पसंगी वेसप्पसंगी परदारप्पसंगी जाए यावि होत्था ।।

चोरपल्ली-पदं

१८. तए णं रायगिहस्स नयरस्स अदूरसामंते दाहिणपुरत्थिमे दिसीभाए सीहगुहा नामं चोरपल्ली होत्था—विसम-गिरिकडग-कोलंब[6]-सण्णिविट्ठा 'वंसीकलंक-पागार'[7]-परिक्खित्ता छिण्णसेल-विसमप्पवाय[8]-फरिहोवगूढा एगदुवारा अणेगखंडी विदितजण-निग्गमप्पवेसा अब्भिंतरपाणिया सुदुल्लभजल-पेरंता सुबहुस्सवि कूवियबलस्स आगयस्स दुप्पहंसा यावि होत्था[9] ।।

१६. तत्थ णं सीहगुहाए चोरपल्लीए विजए नामं चोरसेणावई परिवसई—अहम्मिए[10] •अहम्मिट्ठे अहम्मक्खाई अहम्माणुए अहम्मपलोई अहम्मपलज्जणे अहम्मसील-समुदायारे अहम्मेण चेव वित्तिं कप्पेमाणे विहरइ । हण-छिंद-भिंद-वियत्तए लोहियपाणी चंडे रुद्दे खुद्दे साहस्सिए उक्कंचण-वंचण-माया-नियडि-कवड-कूड-साइ-संपओग-बहुले निस्सीले निव्वए निग्गुणे निप्पच्चक्खाणपोसहोववासे बहूणं

---

१. × (ख, ग, घ) ।
२. सं॰ पा॰—सिंघाडग जाव पहेसु ।
३. परिवड्ढइ (घ) ।
४. अणोहट्टुए (ख); अणाहट्टिए (घ); अणोहट्टए (वृ) ।
५. चोज्जप्पसंगी मंसप्पसंगी (घ) ।
६. कोडंब (ग) ।
७. वंशीकृतप्राकाराः (वृपा) ।
८. ॰प्पवेस (ख) ।
९. वाचनान्तरे पुनरेवं पठ्यते—जत्थ चउरंग-बलनिउत्तावि कुविय-बलाहय-महिय-पवर-वीरघाइय-विवडिय-चिंधज्झयपडागा कीरंति (वृ) ।
१०. सं॰ पा॰—अहम्मिए जाव अहम्मकेऊ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दुप्पय-चउप्पय-मिय-पसु-पक्खि-सरिसिवाणं घायाए वहाए उच्छायणयाए° अहम्मकेऊ समुट्ठिए बहुनगर-निग्गय-जसे सूरे दढप्पहारी साहसिए सद्दवेही ॥

२०. से णं तत्थ सीहगुहाए चोरपल्लीए पंचण्हं चोरसयाणं आहेवच्चं[1] °पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणा-ईसर-सेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे° विहरइ ॥

२१. तए णं से विजए 'तक्कर-सेणावई'[2] बहूणं चोराण य पारदारियाण य गंठिभेयगाण य संधिच्छेयगाण य खत्तखणगाण य रायावगारीण य अणधारगाण य बालघायगाण य वीसंभघायगाण य जूयकाराण य खंडरक्खाण य अण्णेसिं च बहूणं छिण्ण-भिण्ण-बाहिराहयाणं कुडंगे यावि होत्था ॥

२२. तए णं से विजए चोरसेणावई[3] रायगिहस्स दाहिणपुरत्थिमं जणवयं बहूहिं गामघाएहि य नगरघाएहि य गोग्गहणेहि य बंदिग्गहणेहि[4] य पंथकुट्टणेहि[5] य खत्तखणणेहि य उवीलेमाणे-उवीलेमाणे विद्धंसेमाणे-विद्धंसेमाणे नित्थाणं[6] निद्धणं करेमाणे विहरइ ॥

चिलायस्स चोरपल्ली-गमण-पदं

२३. तए णं से चिलाए दासचेडए रायगिहे बहूहिं अत्थाभिसंकीहि य चोज्जाभिसंकीहि[7] य दाराभिसंकीहि य धणिएहि[8] य जूयकरेहि[9] य परब्भवमाणे-परब्भवमाणे रायगिहाओ नगराओ निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव सीहगुहा चोरपल्ली तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता विजयं चोरसेणावइं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ ॥

२४. तए णं से चिलाए दासचेडे विजयस्स चोरसेणावइस्स अग्ग-असिलट्ठिग्गाहे जाए यावि होत्था। जाहे वि य णं से विजए चोरसेणावई गामघायं वा[10] °नगरघायं वा गोग्गहणं वा बंदिग्गहणं वा° पंथकोट्टिं वा काउं वच्चइ[11] ताहे वि य णं से चिलाए दासचेडे सुबहुंपि कूवियबलं हय-महिय[12]-°पवर वीर-घाइय-विवडियचिंध-धय-पडागं किच्छोवगयपाणं दिसोदिसिं° पडिसेहेइ, पडिसेहेत्ता पुणरवि लद्धट्ठे कयकज्जे अणहसमग्गे सीहगुहं चोरपल्लिं हव्वमागच्छइ ॥

---

१. सं० पा०—आहेवच्चं जाव विहरइ।
२. तक्करे चोरसेणावइ (घ)।
३. तक्करसेणावइ (क)।
४. × (ग)।
५. कोट्टणेहि (क)।
६. निद्धाणं (क)।
७. चोरा° (घ)।
८. धणएहि (ख)।
९. जुइ° (ख, ग)।
१०. सं० पा०—गामघायं वा जाव पंथकोट्टिं।
११. वयइ (घ)।
१२. सं० पा०—हयमहिय जाव पडिसेहेइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२५. तए णं से विजए चोरसेणावई चिलायं तक्करं बहूओ चोरविज्जाओ य चोरमंते य चोरमायाओ य चोरनिगडीओ य सिक्खावेइ ।।

विजयस्स मच्चु-पदं

२६. तए णं से विजए चोरसेणावई अण्णया कयाइ कालधम्मुणा संजुत्ते यावि होत्था ।।

२७. तए णं ताइं पंचचोरसयाइं विजयस्स चोरसेणावइस्स महया-महया इड्ढी-सक्कार-समुदएणं नीहरणं करेंति, करेत्ता बहूइं लोइयाइं मयकिच्चाइं करेंति, करेत्ता[1] •कालेणं° विगयसोया जाया यावि होत्था ।।

चिलायस्स चोरसेणावइत्त-पदं

२८. तए णं ताइं पंचचोरसयाइं अण्णमण्णं सद्दावेंति, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु अम्हं देवाणुप्पिया ! विजए चोरसेणावई कालधम्मुणा संजुत्ते । अयं च णं चिलाए तक्करे विजएणं चोरसेणावइणा बहूओ चोरविज्जाओ य[2] •चोरमंते य चोरमायाओ य चोरनिगडीओ य° सिक्खाविए । तं सेयं खलु अम्हं देवाणुप्पिया ! चिलायं तक्करं सीहगुहाए चोरपल्लीए चोरसेणावइत्ताए अभिसिंचित्तए त्ति कट्टु अण्णमण्णस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता चिलायं सीहगुहाए चोरपल्लीए चोरसेणावइत्ताए अभिसिंचंति ।।

२९. तए णं से चिलाए चोरसेणावई जाए—अहम्मिए[3] •अहम्मिट्ठे अहम्मक्खाई अहम्माणुए अहम्मपलोइ अहम्मपलज्जणे अहम्मसीलसमुदायारे अहम्मेण चेव वित्तिं कप्पेमाणे° विहरइ ।।

३०. तए णं से चिलाए चोरसेणावई चोरनायगे[4] •बहूणं चोराण य पारदारियाण य गंठिभेयगाण य संधिच्छेयगाण य खत्तखणगाण य रायावगारीण य अणधारगाण य बालघायगाण य वीसंभघायगाण य जूयकाराण य खंडरक्खाण य अण्णेसिं च बहूणं छिण्ण-भिण्ण-बाहिराहयाणं° कुडंगे यावि होत्था ।।

३१. से णं तत्थ सीहगुहाए चोरपल्लीए पंचण्हं चोरसयाणं [5]•आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणा-ईसर-सेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे विहरइ ।।

३२. तए णं से चिलाए चोरसेणावई° रायगिहस्स नयरस्स दाहिणपुरत्थिमिल्लं जणवयं[6] •बहूहिं गामघाएहि य नगरघाएहि य गोगहणेहि य बंदिग्गहणेहि य

---

१. सं० पा०—करेत्ता जाव विगयसोया ।

२. सं० पा०—चोरविज्जाओ य जाव सिक्खाविए ।

३. सं० पा०—अहम्मिए जाव विहरइ ।

४. सं० पा०—चोरनायगे जाव कुडंगे ।

५. सं० पा०—एवं जहा विजओ तहेव सव्व जाव रायगिहस्स ।

६. सं० पा०—जणवयं जाव नित्थाणं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पंथकुट्टणेहि य खत्तखणणेहि य उवीलेमाणे-उवीलेमाणे विद्धंसेमाणे-विद्धंसेमाणे ° नित्थाणं निद्धणं करेमाणे विहरइ ।।

चिलायस्स धणस्स गिहे चोरिय-पदं

३३. तए णं से चिलाए चोरसेणावई अण्णया कयाइ विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडावेत्ता ते पंच चोरसए आमंतेइ तओ पच्छा ण्हाए कयबलिकम्मे भोयणमंडवंसि तेहिं पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं सुरं च[1] •मज्जं च मंसं च सीधुं च ° पसन्नं च आसाएमाणे विसाएमाणे परिभाएमाणे परिभुंजेमाणे विहरइ, जिमियभुत्तुत्तरागए ते पंच चोरसए विपुलेणं धूव-पुप्फ-गंध-मल्लालंकारेणं[2] सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! रायगिहे नयरे धणे नामं सत्थवाहे अड्ढे । तस्स णं धूया भद्दाए अत्तया पंचण्हं पुत्ताणं अणुमग्गजाइया सुंसुमा नामं दारिया[3]—अहीणा जाव[4] सुरूवा । तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया ! धणस्स सत्थवाहस्स गिहं विलुंपामो । तुब्भं विपुले धण-कणग[5]-•रयण-मणि-मोत्तिय-संख °-सिल-प्पवाले ममं सुंसुमा दारिया ।।

३४. तए णं ते पंच चोरसया चिलायस्स [एयमट्ठं ?] पडिसुणेंति ।।

३५. तए णं ते चिलाए चोरसेणावई तेहिं पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं अल्लं[6] चम्मं दुरुहइ, दुरुहित्ता पच्चावरण्ह[7]-कालसमयंसि पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं सण्णद्ध[8]-•बद्ध-वम्मिय-कवए उप्पीलिय-सरासणपट्टिए पिणद्ध-गेविज्जे आविद्ध-विमल-वरचिंधपट्टे° गहियाउह-पहरणे माइय-गोमुहिएहिं फलएहिं, निक्किट्ठाहिं असिलट्ठीहिं[9], अंसगएहिं[10] तोणेहिं, सज्जीवेहिं धणूहिं, समुक्खित्तेहिं सरेहिं, समुल्लालियाहिं दाहाहिं[11], ओसारियाहिं ऊरुघंटियाहिं, छिप्पतूरेहिं[12] वज्जमाणेहिं महया-महया उक्किट्ठ-सीहनाय[13]-•बोल-कलकलरवेणं पक्खुभिय-महा°समुद्द-रवभूयं पिव करेमाणा सीहगुहाओ चोरपल्लीओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता जेणेव रायगिहे नयरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता रायगिहस्स अदूरसामंते

---

१. सं० पा०—सुरं च जाव पसन्नं ।
२. द्रष्टव्यम्—१।७।६ सूत्रम् ।
३. दारिया होत्था (क, ख, ग, घ) ।
४. ना० १।१।१७ ।
५. सं० पा० कणग जाव सिलप्पवाले । अस्याध्ययनस्य ३८ सूत्रे 'कणग जाव सावएज्जं' इति पाठोस्ति । अत्रापि तथैव युज्यते, किन्तु संक्षेपीकरणे संभवतः पदभिन्नता जाता ।
६. अल्ल (ख, ग, घ) ।
७. पुव्वावरण्ह (ग, घ) ।
८. सं० पा०—सण्णद्ध जाव गहिया० ।
९. असीहिं (क); असिलट्ठेहिं (ख) ।
१०. अंसागएहिं (क); अंसं गएहिं (ग) ।
११. दावाहिं (क) एतत् प्रहरणं बंगभाषायां 'दाव' इति उच्यते ।
१२. छिप्पंतरेहिं (क); छिप्पत्तरेहि (ग) ।
१३. सं० पा०—सीहनाय जाव समुद्दरवभूयं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एगं महं गहणं अणुप्पविसंति, अणुप्पविसित्ता दिवसं खवेमाणा चिट्ठंति ॥

३६. तए णं से चिलाए चोरसेणावई अद्धरत्त-कालसमयंसि 'निसंत-पडिनिसंतंसि'[1] पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं माइय-गोमुहिएहिं फलएहिं जाव[2] मूइयाहिं ऊरुघंटियाहिं जेणेव रायगिहे नयरे पुरत्थिमिल्ले दुवारे तेणेव उवागच्छइ, उदगवत्थिं परामुसइ आयंते चोक्खे परमसुइभूए तालुग्घाडणि विज्जं आवाहेइ, आवाहेत्ता रायगिहस्स दुवारकवाडे उदएणं अच्छोडेइ, अच्छोडेत्ता कवाडं विहाडेइ, विहाडेत्ता रायगिहं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता महया-महया सद्देणं उग्घोसेमाणे-उग्घोसेमाणे एवं वयासी—एवं खलु अहं देवाणुप्पिया ! चिलाए नामं चोरसेणावई पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं सीहगुहाओ चोरपल्लीओ इहं हव्वमागए धणस्स सत्थवाहस्स गिहं घाउकामे। तं जे णं नवियाए माउयाए दुद्धं पाउकामे, से णं निगच्छउ त्ति कट्टु जेणेव धणस्स सत्थवाहस्स गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धणस्स गिहं विहाडेइ ॥

३७. तए णं से धणे चिलाएणं चोरसेणावइणा पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं गिहं घाइज्जमाणं पासइ, पासित्ता भीए तत्थे तसिए उव्विग्गे संजायभए पंचहिं पुत्तेहिं सद्धिं एगंतं अवक्कमइ ॥

३८. तए णं से चिलाए चोरसेणावई धणस्स सत्थवाहस्स गिहं घाएइ, घाएत्ता सुबहुं धण-कणग[3]-•रयण-मणि-मोत्तिय-संख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-संत-सार°-सावएज्जं सुंसुमं च दारियं गेण्हइ, गेण्हित्ता रायगिहाओ पडिनिक्खमई, पडिनिक्खमित्ता जेणेव सीहगुहा तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥

नगरगुत्तिएहिं चोरनिग्गह-पदं

३९. तए णं से धणे सत्थवाहे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुबहुं धण-कणगं[4] सुंसुमं च दारियं अवहरियं जाणित्ता महत्थं महग्घं महरिहं पाहुडं गहाय जेणेव नगरगुत्तिया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं महत्थं महग्घं महरिहं पाहुडं उवणेइ, उवणेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! चिलाए चोरसेणावई[5] सीहगुहाओ चोरपल्लीओ इहं हव्वमागम्म पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं मम गिहं घाएत्ता सुबहुं धण-कणगं[6] सुंसुमं च दारियं गहाय[7] •रायगिहाओ पडिनिक्खमित्ता जेणेव सीहगुहा तेणेव° पडिगए। तं इच्छामो

---

१. निसण्णपडिनिसण्णंसि (क)।

२. ना० १।१८।३५।

३. सं० पा०—कणग जाव सावएज्जं।

४. असौ पाठः ३८ सूत्रस्य संक्षेपोस्ति।

५. चोरसेणावई ५ (ख, ग)।

६. असौ पाठः ३८ सूत्रस्य संक्षेपोस्ति।

७. सं० पा०—गहाय जाव पडिगए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णं देवाणुप्पिया ! सुंसुमाए दारियाए कूवं गमित्तए। तुब्भं णं देवाणुप्पिया ! से विपुले धण-कणगे, ममं सुंसुमा दारिया ।।

४०. तए णं ते नगरगुत्तिया धणस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति, पडिसुणेत्ता सण्णद्ध-बद्ध-वम्मिय-कवया जाव[1] गहियाउहपहरणा महया-महया उक्किट्ठ[2]-•सीहनाय-बोल-कलकलरवेण पक्खुभिय-महा°समुद्द-रवभूयं पिव करेमाणा रायगिहाओ निग्गच्छंति, निग्गच्छित्ता जेणेव चिलाए चोरसेणावई तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता चिलाएणं चोरसेणावइणा सद्धिं संपलग्गा यावि होत्था ।।

४१. तए णं ते नगरगुत्तिया चिलायं चोरसेणावइं हय-महिय[3]-•पवरवीर-घाइय-विवडियचिंध-धय-पडागं किच्छोवगयपाणं दिसोदिसिं° पडिसेहेंति ।।

४२. तए णं ते पंच चोरसया नगरगुत्तिएहिं हय-महिय[4]-•पवरवीर-घाइय-विवडिय-चिंध-धय-पडागा किच्छोवगयपाणा दिसोदिसिं° पडिसेहिया समाणा तं विपुलं धण-कणगं विच्छड्डमाणा य विप्पकिरमाणा य सव्वओ समंता विप्पलाइत्था ।।

४३. तए णं ते नगरगुत्तिया तं विपुलं धण-कणगं गेण्हंति, गेण्हित्ता जेणेव रायगिहे नगरे तेणेव उवागच्छंति ।।

चिलायस्स चोरपल्लीतो पलायण-पदं

४४. तए णं से चिलाए तं चोरसेन्नं तेहिं नगरगुत्तिएहिं हय-महिय-पवर[5]•वीर-घाइय-विवडियचिंध-धय-पडागं किच्छोवगयपाणं दिसोदिसिं पडिसेहियं [पासित्ता ?]° भीए तत्थे[6] सुंसुमं दारियं गहाय एगं महं अगामियं[7] दीहमद्धं अडविं अणुप्पविट्ठे ।।

४५. तए णं से धणे सत्थवाहे सुंसुमं दारियं चिलाएणं अडवीमुहिं[8] अवहीरमाणिं पासित्ता णं पंचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अप्पछट्ठे सण्णद्ध-बद्ध-वम्मिय-कवए[9] चिलायस्स पयमग्गविहिं 'अणुगच्छमाणे अभिगज्जंते'[10] हक्कारेमाणे पुक्कारेमाणे अभितज्जे-माणे अभितासेमाणे पिट्ठओ अणुगच्छइ ।।

४६. तए णं से चिलाए तं धणं सत्थवाहं पंचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अप्पछट्ठं सण्णद्ध-बद्ध-वम्मिय-कवयं[11] समणुगच्छमाणं पासइ, पासित्ता अत्थामे अबले अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे जाहे नो संचाएइ सुंसुमं दारियं निव्वाहित्तए ताहे संते

---

१. ना० १।१८।३५ ।
२. सं० पा०—उक्किट्ठ जाव समुद्दरवभूयं ।
३. सं० पा०—हयमहिय जाव पडिसेहेंति ।
४. सं० पा०—हयमहिय जाव पडिसेहिया ।
५. सं० पा०—पवर जाव भीए ।
६. द्रष्टव्यम्—अस्याध्ययनस्य ३७ सूत्रम ।
७. आगामियं (ख, ग, घ) ।
८. अडवीमुहं (घ) ।
९. द्रष्टव्यम्—अस्याध्ययनस्य ३५ सूत्रम् ।
१०. अभिगच्छंते अणुगिज्जमाणे (ख, ग) ।
११. द्रष्टव्यम्—अस्याध्ययनस्य ३५ सूत्रम् ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तंते परितंते[1] नीलुप्पल[2]-•गवलगुलिय-अयसिकुसुमप्पगासं खुरधारं° असिं परामुसइ, परामुसित्ता सुंसुमाए दारियाए उत्तमंगं छिंदइ, छिंदित्ता तं गहाय तं अगामियं[3] अडविं अणुप्पविट्ठे ॥

४७. तए णं से चिलाए तीसे अगामियाए अडवीए तण्हाए [छुहाए ?] अभिभूए समाणे पम्हट्ठ-दिसाभाए सीहगुहं चोरपल्लिं असंपत्ते अंतरा चेव कालगए ॥

निगमण-पदं

४८. एवामेव समणाउसो[4] ! •जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा आयरिय-उवज्झायाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइए समाणे इमस्स ओरालियसरीरस्स वंतासवस्स पित्तासवस्स खेलासवस्स सुक्कासवस्स सोणियासवस्स[5] •दुरुय-उस्सास-निस्सासस्स दुरुय-मुत्त-पुरीस-पूय-बहुपडिपुण्णस्स उच्चार-पासवण-खेल-सिंघाणग-वंत-पित्त-सुक्क-सोणियसंभवस्स अधुवस्स अणितियस्स असासयस्स सडण-पडण-विद्धंसणधम्मस्स पच्छा पुरं च णं अवस्स-विप्पजहणिज्जस्स° वण्णहेउं वा[6] •रूवहेउं वा बलहेउं वा विसयहेउं वा आहारं° आहारेइ, से णं इहलोए चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावयाणं बहूणं सावियाण य हीलणिज्जे जाव[7] चाउरंतं संसारकंतारं अणुपरियट्टिस्सइ—जहा व से चिलाए तक्करे ॥

धणस्स सुंसुमाकए कंदण-पदं

४९. तए णं से धणे सत्थवाहे पंचहिं पुत्तेहिं [सद्धिं ?] अप्पछट्ठे चिलायं तीसे अगामियाए अडवीए सव्वओ समंता परिधाडेमाणे-परिधाडेमाणे संते तंते परितंते नो संचाएइ चिलायं चोरसेणावइं साहत्थिं गिण्हित्तए। से णं तओ पडिनियत्तइ, पडिनियत्तित्ता जेणेव सा सुंसुमा चिलाएणं जीवियाओ ववरोविया[8] तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सुंसुमं दारियं चिलाएणं जीवियाओ ववरोवियं पासइ, पासित्ता परसुनियत्ते व्व चंपगपायवे[9] •निव्वत्तमहे व्व इंदलट्ठी विमुक्क-संधिबंधणे धरणितलंसि सव्वंगेहिं धसत्ति पडिए° ॥

५०. तए णं से धणे सत्थवाहे [पंचहिं पुत्तेहिं सद्धिं ?] अप्पछट्ठे आसत्थे कूवमाणे कंदमाणे विलवमाणे महया-महया सद्देणं कुहुकुहुस्स परुन्ने सुचिरकालं बाहप्पमोक्खं[10] करेइ ॥

---

१. परिसंते (ख, ग)।
२. सं० पा०—नीलुप्पल°।
३. आगामियं (ख, ग, घ)।
४. सं० पा०—समणाउसो जाव पव्वइए।
५. सं० पा०—सोणियासवस्स जाव विद्धंसण-धम्मस्स।
६. सं० पा०—वण्णहेउं वा जाव आहारेइ।
७. ना० १।३।२४।
८. ववरोविएल्लिया (ग, घ)।
९. सं० पा०—चंपगपायवे°।
१०. बाहमोक्ख (क, ग, घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धणेणं अडवि-लंघणट्ठं सुया-मंससोणियाहार-पदं

५१. तए णं से धणे सत्थवाहे पंचहिं पुत्तेहिं [सद्धिं ?] अप्पछट्ठे चिलायं तीसे अगामियाए अडवीए सव्वओ समंता परिधाडेमाणे[1] तण्हाए छुहाए य परब्भाहते[2] समाणे तीसे अगामियाए अडवीए सव्वओ समंता उदगस्स मग्गण-गवेसणं करेमाणे[3] संते तंते परितंते निव्विण्णे तीसे अगामियाए अडवीए[4] उदगं अणासाएमाणे जेणेव सुंसुमा जीवियाओ ववरोविएल्लिया[5] तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जेट्ठं पुत्तं धणं[6] सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु पुत्ता ! सुंसुमाए दारियाए अट्ठाए चिलायं तक्करं सव्वओ समंता परिधाडेमाणा तण्हाए छुहाए य अभिभूया समाणा इमीसे अगामियाए अडवीए उदगस्स मग्गण-गवेसणं करेमाणा नो चेव णं उदगं आसादेमो। तए णं उदगं अणासाएमाणा नो संचाएमो रायगिहं संपावित्तए। तण्णं तुब्भे ममं देवाणुप्पिया ! जीवियाओ ववरोवेह, मम मंसं च सोणियं च आहारेह, तेणं आहारेणं अवथद्धा[7] समाणा तओ पच्छा इमं अगामियं अडविं नित्थरिहिह[8], रायगिहं च संपावेहिह[9], मित्त-नाइ[10]-•नियग-सयण-संबंधि-परियणं° अभिसमागच्छिहिह[11], अत्थस्स य धम्मस्स य पुण्णस्स य आभागी भविस्सह ।।

५२. तए णं से जेट्ठे पुत्ते धणेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ते समाणे धणं सत्थवाहं एवं वयासी—तुब्भे णं ताओ ! अम्हं पिया गुरुजणया देवयभूया ठवका पइट्ठवका संरक्खगा संगोवगा। तं कहण्णं अम्हे ताओ ! तुब्भे जीवियाओ ववरोवेमो, तुब्भं णं मंसं च सोणियं च आहारेमो ? तं तुब्भे णं ताओ ! 'ममं जीवियाओ ववरोवेह, मंसं च सोणियं च आहारेह, अगामियं'[12] अडविं नित्थरिहिह,[13] •रायगिहं च संपावेहिह, मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं अभिसमागच्छिहिह°, अत्थस्स य धम्मस्स य पुण्णस्स य आभागी भविस्सह ।।

---

१. परिधामेमाणे (घ)।
२. परिब्भमते (क); परब्भने (ख, घ); परब्भए (घ)। द्रष्टव्यम्—१।१।१८४।
३ करेइ (क, ख, ग, घ) !
४. × (क, ख, ग); अडवीए उदगस्स मग्गण-गवेसणं करेमाणे नो चेव णं उदग आसाएइ तए णं (घ)।
५. ववरोविया (घ)।
६. धणे (क, ख, ग, घ); यद्यपि सर्वासु प्रतिषु 'धणे' इति पाठः उपलभ्यते, परं ज्येष्ठपुत्रस्य विशेषणत्वेन 'धणं' इत्येव उपयुज्यते। लिपि-दोषात् 'धणे' इति जातमिति संभाव्यते।
७. अवबद्धा (ख)।
८. नित्थरिहह (क); नित्थरेहिह (ग)।
९. संपावेहह (क)।
१०. सं० पा०—नाइ°।
११. अभिसमागच्छिहह (क, ख, घ)।
१२. चिन्हाङ्कितपाठः ५१ सूत्रात् किञ्चित् संक्षिप्तोऽस्ति।
१३. नित्थरेह (क); नित्थरह (ख, ग)। सं० पा०—तं चेव सव्वं भणइ जाव अत्थस्स।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५३. तए णं धणं सत्थवाहं दोच्चे पुत्ते एवं वयासी—मा णं ताओ अम्हे जेट्ठं भायरं गुरुदेवयं जीवियाओ ववरोवेमो, तस्स णं मंसं च सोणियं च आहारेमो। तं तुब्भे णं ताओ! ममं जीवियाओ ववरोवेह[1], •मंसं च सोणियं च आहारेह, अगामियं अडविं नित्थरिहिह, रायगिहं च संपावेहिह, मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं अभिसमागच्छिहिह, अत्थस्स य धम्मस्स य पुण्णस्स य° आभागी भविस्सह। एवं जाव पंचमे पुत्ते॥

५४. तए णं से धणे सत्थवाहे पंचपुत्ताणं हियइच्छियं जाणित्ता ते पंचपुत्ते एवं वयासी—मा णं अम्हे पुत्ता! एगमवि जीवियाओ ववरोवेमो। एस णं सुंसुमाए दारियाए सरीरे निप्पाणे[2] •निच्चेट्ठे° जीवविप्पजढे। तं सेयं खलु पुत्ता! अम्हं सुंसुमाए दारियाए मंसं च सोणियं च आहारेत्तए। तए णं अम्हे तेणं आहारेणं अवथद्धा समाणा रायगिहं संपाउणिस्सामो॥

५५. तए णं ते पंचपुत्ता धणेणं सत्थवाहेणं एवं वुत्ता समाणा एयमट्ठं पडिसुणेंति॥

५६. तए णं धणे सत्थवाहे पंचहिं पुत्तेहिं सद्धिं अरणिं करेइ, करेत्ता सरगं करेइ, करेत्ता सरएणं अरणिं महेइ, महेत्ता अग्गिं पाडेइ, पाडेत्ता अग्गिं संधुक्केइ[3] संधुक्केत्ता दारुयाइं पक्खिवइ, पक्खिवित्ता अग्गिं पज्जालेइ, सुंसुमाए दारियाए मंसं च सोणियं च आहारेइ। तेणं आहारेणं अवथद्धा समाणा रायगिहं नयरं संपत्ता मित्त-नाइ[4]-•नियग-सयण-संबंधि-परियण° अभिसमण्णागया, तस्स य विउलस्स धण-कणग-रयण[5]-•मणि-मोत्तिय-संख-सिल-प्पवाल-रत्तरयण-संत-सार-सावएज्जस्स° आभागी जाया[6]॥

५७. तए णं से धणे सत्थवाहे सुंसुमाए दारियाए बहूइं लोइयाइं[7] •मयकिच्चाइं करेइ, करेत्ता कालेणं° विगयसोए जाए यावि होत्था॥

५८. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे रायगिहे नयरे गुणसिलए चेइए समोसढे॥

५९. तए णं धणे सत्थवाहे सपुत्ते धम्मं सोच्चा पव्वइए। एक्कारसंगवी। मासियाए संलेहणाए सोहम्मे कप्पे उववण्णे। महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ॥

निगमण-पदं

६०. जहा वि य णं जंबू! धणेणं सत्थवाहेणं नो वण्णहेउं वा नो रूवहेउं वा नो

---

१. सं० पा०—ववरोवेह जाव आभागी।
२. सं० पा०—निप्पाणे जाव जीवविप्पजढे।
३. संधुक्खेइ २ (क)।
४. सं० पा०—नाइ°।
५. सं० पा०—रयण जाव आभागी।
६. जाया यावि होत्था (ख, ग)।
७. सं० पा०—लोइयाइं जाव विगयसोए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बलहेउं वा नो विसयहेउं वा सुंसुमाए दारियाए मंससोणिए आहारिए, नन्नत्थ[1] एगाए रायगिह[2]-संपावणट्ठयाए ।।

६१. एवामेव समणाउसो ! जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा[3] •आयरिय-उवज्झायाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए समाणे॰ इमस्स ओरालियसरीरस्स वंतासवस्स पित्तासवस्स [खेलासवस्स ?] सुक्कासवस्स सोणियासवस्स[4] •दुरुय-उस्सास-निस्सासस्स दुरुय-मुत्त-पुरीस-पूय-बहुपडिपुण्णस्स उच्चार-पासवण-खेल-सिंघाणग-वंत-पित्त-सुक्क-सोणियसंभवस्स अधुवस्स[5] अणितियस्स असासयस्स सडण-पडण-विद्धंसणधम्मस्स पच्छा पुरं च णं॰ अवस्सविप्पजहियव्वस्स नो वण्णहेउं वा नो रूवहेउं वा नो बलहेउं वा नो विसयहेउं वा आहारं आहारेइ, नन्नत्थ एगाए सिद्धिगमण-संपावणट्ठयाए, से णं इहभवे चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावयाणं बहूणं सावियाण य अच्चणिज्जे जाव[6] चाउरंतं संसारकंतारं वीईवइस्सइ - जहा व से सपुत्ते धणे सत्थवाहे ।।

६२. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[5] संपत्तेणं अट्ठारसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।

--त्ति बेमि ।।

वृत्तिकृता समुद्धृता निगमनगाथा—

जह सो चिलाइपुत्तो सुंसुमगिद्धो अकज्ज-पडिबद्धो ।
धण-पारद्धो पत्तो, महाडविं वसण-सयकलियं ।।१।।
तह जीवो विसय-सुहे, लुद्धो काऊण पावकिरियाओ ।
कम्मवसेणं पावइ, भवाडवीए महादुक्खं ।।२।।
धणसेट्ठी विव गुरुणो, पुत्ता इव साहवो भवो अडवी ।
सुयमंसमिवाहारो, रायगिहं इह सिवं नेयं ।।३।।
जह अडवि-नियर-नित्थरण-पावणत्थं तएहिं सुयमंसं ।
भुत्तं तहेह साहू, गुरूण आणाइ आहारं ।।४।।
भव-लंघण-सिव-साहणहेउं भुंजंति ण गेहीए ।
वण्ण-बल-रूव-हेउं, च भावियप्पा महासत्ता ।।५।।

---

१. अण्णत्थ (ख, ग) ।
२. रायगिहं (क्व) ।
३. सं० पा०—निग्गंथी वा ।
४. सं० पा०—सोणियासवस्स जाव अवस्स॰ ।
५. ना० १।२।७६ ।
६. ना० १।१।७ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एगूणवीसइमं अज्झयणं

पुंडरीए

उक्खेव-पदं

१. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[1] संपत्तेणं अट्ठारसमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, एगूणवीसइमस्स णं भंते ! नायज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?

२. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे पुव्वविदेहे, सीयाए महानईए उत्तरिल्ले कूले, नीलवंतस्स [वासहरपव्वयस्स ?] दाहिणेणं, उत्तरिल्लस्स सीयामुहवणसंडस्स पच्चत्थिमेणं, एगसेलगस्स वक्खारपव्वयस्स पुरत्थिमेणं, एत्थ णं पुक्खलावई नामं विजए पण्णत्ते ।।

३. तत्थ णं पुंडरीगिणी[2] नामं रायहाणी पण्णत्ता--नवजोयणवित्थिण्णा दुवालस जोयणायामा जाव[3] पच्चक्खं देवलोगभूया पासाईया दरिसणीया अभिरूवा पडिरूवा ।।

४. तीसे णं पुंडरीगिणीए नयरीए उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए नलिणिवणे नामं उज्जाणे ।।

५. तत्थ णं पुंडरीगिणीए रायहाणीए महापउमे नामं राया होत्था ।।

६. तस्स णं पउमावई नामं देवी होत्था ।।

७. तस्स णं महापउमस्स रण्णो पुत्ता पउमावईए देवीए अत्तया दुवे कुमारा होत्था, तं जहा--पुंडरीए य कंडरीए य--सुकुमालपाणिपाया[4] । पुंडरीए जुवराया ।।

कंडरीयस्स पव्वज्जा-पदं

८. तेणं कालेणं तेणं समएणं थेरागमणं । महापउमे राया निग्गए । धम्मं सोच्चा

---

१. ना० १।१।७ ।

२. पुंडरिगिणी (क, ख, ग) ।

३. ना० १।५।२ ।

४. पू०—ओ० सू० १४३ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुंडरीयं रज्जे ठवेत्ता पव्वइए। पुंडरीए राया जाए, कंडरीए जुवराया। महापउमे अणगारे चोद्दसपुव्वाइं अहिज्जइ।।

९. तए णं थेरा बहिया जणवयविहारं विहरंति।।

१०. तए णं से महापउमे बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणित्ता जाव[1] सिद्धे।।

११. तए णं थेरा अण्णया कयाइ पुणरवि पुंडरीगिणीए[2] रायहाणीए नलिण [णि ?] वणे उज्जाणे समोसढा। पुंडरीए राया निग्गए। कंडरीए महाजणसद्दं सोच्चा जहा महाबलो जाव[3] पज्जुवासइ। थेरा धम्मं परिकहेंति। पुंडरीए समणोवासए जाए जाव[4] पडिगए।।

१२. तए णं कंडरीए[5] •थेराणं अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता थेरे तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—सद्दहामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं जाव[6] से जहेयं तुब्भे वयह। जं नवरं—पुंडरीयं रायं आपुच्छामि[7]। •तओ पच्छा मुंडे भवित्ता णं अगाराओ अणगारियं° पव्वयामि।
अहासुहं देवाणुप्पिया !

१३. तए णं से कंडरीए[8] थेरे वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता थेराणं अंतियाओ पडिनिक्खमइ, तमेव चाउग्घंटं आसरहं दुरुहइ[9] •महयाभड-चडगर-पहकरेण पुंडरीगिणीए नयरीए मज्झंमज्झेणं जेणामेव सए भवणे तेणामेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चाउग्घंटाओ आसरहाओ° पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता जेणेव पुंडरीए राया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल[10]•परिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु° एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! मए थेराणं अंतिए धम्मे निसंते, से[11] •वि य मे धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए। तं इच्छामि णं देवाणुप्पिया ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे थेराणं अंतिए मुंडे भवित्ता णं अगाराओ अणगारियं° पव्वइत्तए।।

१४. तए णं से पुंडरीए राया कंडरीयं एवं वयासी—मा णं तुमं भाउया ! इयाणिं

---

१. ना० १।५।८४।
२. पुंडरगिणीए (ग)।
३. भग० ११।१६४-१६६।
४. उवा० १।५२।
५. सं० पा०—कंडरीए उट्ठाए उट्ठेइ उट्ठेत्ता जाव से जहेयं।
६. ना० १।१।१०१।
७. सं० पा०—आपुच्छामि तए णं जाव पव्वयामि।
८. कंडरीए जाव [क, ख, ग, घ]।
९. सं० पा०—दुरुहइ जाव पच्चोरुहइ।
१०. सं० पा०—करयल जाव एव।
११. सं० पा०—से धम्मे अभिरुइए। तए णं देवा जाव पव्वइत्तए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुंडे[1] •भवित्ता णं अगाराओ अणगारियं° पव्वयाहि। 'अहं णं'[2] तुमं महारायाभिसेएणं[3] अभिसिंचामि ।।

१५. तए णं से कंडरीए पुंडरीयस्स रण्णो एयमट्ठं नो आढाइ[4] •नो परियाणाइ[5]° तुसिणीए संचिट्ठइ ।।

१६. तए णं से पुंडरीए राया कंडरीयं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी[6]—•मा णं तुमं भाउया ! इयाणिं मुंडे भवित्ता णं अगाराओ अणगारियं पव्वयाहि। अहं णं तुमं महारायाभिसेएणं अभिसिंचामि ।।

१७. तए णं से कंडरीए पुंडरीयस्स रण्णो एयमट्ठं नो आढाइ नो परियाणाइ° तुसिणीए संचिट्ठइ ।।

१८. तए णं पुंडरीए कंडरीयं कुमारं जाहे नो संचाएइ बहूहिं आघवणाहि य पण्णवणाहि य सण्णवणाहि य विण्णवणाहि य आघवित्तए वा पण्णवित्तए वा सण्णवित्तए वा विण्णवित्तए वा ताहे अकामए चेव एयमट्ठं अणुमन्नित्था जाव[7] निक्खमणाभिसेएणं अभिसिंचइ जाव[8] •थेराणं सीसभिक्खं दलयइ। पव्वइए। अणगारे जाए। एक्कारसंगवी ।।

१९. तए णं थेरा भगवंतो अण्णया कयाइ पुंडरीगिणीओ नयरीओ नलिणिवणाओ उज्जाणाओ पडिनिक्खमंति, बहिया जणवयविहारं विहरंति ।।

कंडरीयस्स वेयणा-पदं

२०. तए णं तस्स कंडरीयस्स अणगारस्स तेहिं अंतेहि य पंतेहि य[9] •तुच्छेहि य लूहेहि य अरसेहि य विरसेहि य सीएहि य उण्हेहि य कालाइक्कंतेहि य पमाणाइक्कंतेहि य निच्चं पाणभोयणेहि य पयइसुकुमालस्स सुहोचियस्स सरीरगंसि वेयणा पाउब्भूया—उज्जला विउला कक्खडा पगाढा चंडा दुक्खा दुरहियासा। पित्तज्जर-परिगयसरीरे° दाहवक्कंतीए[10] यावि विहरइ ।।

२१. तए णं थेरा अण्णया कयाइ जेणेव पोंडरीगिणी नयरी तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता नलिणीवणे समोसढा। पुंडरीए निग्गए। धम्मं सुणेइ ।।

कंडरीयस्स तिगिच्छा-पदं

२२. तए णं पुंडरीए राया धम्मं सोच्चा जेणेव कंडरीए अणगारे तेणेव उवागच्छइ,

---

१. सं० पा०—मुंडे जाव पव्वयाहि।
२. अहण्णं (ग)।
३. महयामहया रायाभिसेएण (ख, ग)।
४. सं० पा०—आढाइ जाव तुसिणीए।
५. द्रष्टव्यम्—१।१।३६ सूत्रम्।
६. सं० पा०—वयासी जाव तुसिणीए।
७. ना० १।५।२८।
८. ना० १।५।३०।
९. सं० पा०—जहा सेलगस्स जाव दाहवक्कंतीए।
१०. शेलकाध्ययने 'कंडु-दाह-पितज्जर-परिगय-सरीरे' इति पाठो लभ्यते।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उवागच्छित्ता कंडरीयं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता कंडरीयस्स अणगारस्स सरीरगं सव्वाबाहं सरोगं पासइ, पासित्ता जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता थेरे भगवंते वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—अहण्णं भंते ! कंडरीयस्स अणगारस्स अहापवत्तेहिं[1] ओसह-भेसज्ज[2]-•भत्त-पाणेहिं° तेगिच्छं आउंटामि । तं तुब्भे णं भंते ! मम जाणसालासु समोसरह ।।

२३. तए णं थेरा भगवंतो पुंडरीयस्स [एयमट्ठं ?] पडिसुणेंति[3], •पडिसुणेत्ता जेणेव पुंडरीयस्स रण्णो जाणसाला तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता फासु-एसणिज्जं पीढ-फलग-सेज्जा-संथारगं° उवसंपज्जित्ता णं विहरंति ।।

२४. तए णं पुंडरीए राया •तेगिच्छिए सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—तुब्भेणं देवाणुप्पिया ! कंडरीयस्स फासु-एसणिज्जेणं ओसह-भेसज्ज-भत्त-पाणेणं तेगिच्छं आउट्टेह ।।

२५. तए णं ते तेगिच्छिया पुंडरीएणं रण्णा एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा कंडरीयस्स अहापवत्तेहिं ओसह-भेसज्ज-भत्त-पाणेहिं तेगिच्छं आउट्टेंति, मज्जपाणगं च से उवदिसंति ।।

२६. तए णं तस्स कंडरीयस्स अहापवत्तेहिं ओसह-भेसज्ज-भत्त-पाणेहिं मज्जपाणएण य से रोगायंके उवसंते यावि होत्था—हट्ठे बलियसरीरे[4] जाए ववगयरोगायंके°।।

कंडरीयस्स पमत्तविहार-पदं

२७. तए णं थेरा भगवंतो 'पुंडरीयं रायं आपुच्छंति, आपुच्छित्ता'[6] बहिया जणवय-विहारं विहरंति ।।

२८. तए णं से कंडरीए ताओ रोयायंकाओ विप्पमुक्के समाणे तंसि मणुण्णंसि असण-पाण-खाइम-साइमंसि मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे नो संचाएइ पुंडरीयं आपुच्छित्ता बहिया अब्भुज्जएणं[7] •जणवयविहारेणं° विहरित्तए तत्थेव ओसन्ने जाए ।।

पुंडरीएण पडिबोह-पदं

२९. तए णं से पुंडरीए इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे ण्हाए अंतेउर-परियाल[8]-संपरिवुडे जेणेव कंडरीए अणगारे तेणेव उवाच्छइ, उवागच्छित्ता

---

१. अहापत्तेहिं (ख); अहावत्तेहिं (ग); अहा-पवित्तेहिं (घ)।

२. सं० पा०—भेसज्जेहिं जाव तेगिच्छं ।

३. सं० पा०—पडिसुणेंति जाव उवसंपज्जित्ता ।

४. सं० पा०—जहा मंडुए सेलगस्स जाव बलियसरीरे जाए ।

५. १।५।११६ सूत्रे 'गल्लसरीरे' इति पाठोस्ति ।

६. पोंडरीयं पुच्छंति २ (ख, ग) ।

७. सं० पा०—अब्भुज्जएणं जाव विह-रित्तए ।

८. परियाल सद्धिं (क, घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कंडरीयं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ, नमंसइ, वंदित्ता, नमंसित्ता एवं वयासी —धन्नेसि णं तुमं देवाणुप्पिया ! कयत्थे कयपुण्णे कय-लक्खणे। सुलद्धे णं देवाणुप्पिया ! तव माणुस्सए जम्म-जीवियफले जे णं तुमं रज्जं च[1] •रट्ठं च कोसं च कोट्ठागारं च बलं च वाहणं च पुरं च• अंतेउरं च विछड्डेत्ता विगोवइत्ता,[2] •दाणं च दाइयाणं परिभाइत्ता, मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं• पव्वइए, अहण्णं अधन्ने अकयत्थे अकयपुण्णे अकयलक्खणे रज्जे य[3] •रट्ठे य कोसे य कोट्ठागारे य बले य वाहणे य पुरे य• अंतेउरे य माणुस्सएसु य कामभोगेसु मुच्छिए[4] •गिद्धे गढिए• अज्झोववण्णे नो संचाएमि जाव[5] पव्वइत्तए। तं धन्नेसि णं तुमं देवाणुप्पिया[6] ! •कयत्थे कयपुण्णे कयलक्खणे•। सुलद्धे णं देवाणुप्पिया ! तव माणुस्सए जम्मजीवियफले ॥

३०. तए णं से कंडरीए अणगारे पुंडरीयस्स एयमट्ठं नो आढाइ[7] •नो परियाणाइ[8] तुसिणीए• संचिट्ठइ ॥

३१. तए णं से कंडरीए अणगारे पोंडरीएणं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्ते समाणे-अकामए अवसवसे[9] लज्जाए गारवण य पुंडरीयं आपुच्छइ, आपुच्छित्ता थेरेहिं सद्धिं बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

कंडरीयस्स पव्वज्जा-परिच्चाय-पदं

३२. तए णं से कंडरीए थेरेहिं सद्धिं कंचि कालं उग्गंउग्गेणं विहरित्ता तओ पच्छा समणत्तण-परितंते समणत्तण-निव्विण्णे समणत्तण-निब्भच्छिए समणगुण-मुक्क-जोगी थेराणं अंतियाओ सणियं-सणियं पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कित्ता जेणेव पुंडरीगिणी नयरी जेणेव पुंडरीयस्स भवणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता असोगवणियाए असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलापट्टगंसि निसीयइ, नीसी-इत्ता ओहयमणसंकप्पे[10] •करतलपल्हत्थमुहे अट्टज्झाणोवगए• झियायमाणे संचिट्ठइ ॥

३३. तए णं तस्स पोंडरीयस्स अम्मधाई जेणेव असोगवणिया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कंडरीयं अणगारं असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलापट्टगंसि ओहयमणसंकप्पं जाव[11] झियायमाणं पासइ, पासित्ता जेणेव पुंडरीए राया

---

१. सं० पा०— रज्जं च जाव अंतेउरं।
२. सं० पा०—विगोवइत्ता जाव पव्वइए।
३. सं० पा०—रज्जे य जाव अंतेउरे।
४. सं० पा०—मुच्छिए जाव अज्झोववण्णे।
५. राय० सू० ६६५।
६. सं० पा० - देवाणुप्पिया जाव सुलद्धे।
७. सं० पा०— आढाइ जाव संचिट्ठइ।
८. द्रष्टव्यम्—१।१।३६ सूत्रम्।
९. अवसव्वसे (ग)।
१०. सं० पा०—ओहयमणसंकप्पे जाव झियायमाणे।
११. ना० १।१६।३२।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पुंडरीयं रायं एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! तव पियभाउए[1] कंडरीए अणगारे असोगवणियाए असोगवर-पायवस्स अहे पुढविसिलापट्टे ओहयमणसंकप्पे जाव झियायइ ।।

३४. तए णं से पुंडरीए अम्मधाईए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म तहेव संभंते समाणे उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता अंतेउर-परियालसंपरिवुडे जेणेव असोगवणिया[2] •तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता° कंडरीयं अणगारं तिक्खुत्तो[3] •आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता° एवं वयासी—धन्नेसि णं तुमं देवाणुप्पिया[4] ! •कयत्थे कयपुण्णे कयलक्खणे सुलद्धे णं देवाणुप्पिया ! तव माणुस्सए जम्म-जीवियफले जाव[5] अगाराओ अणगारियं° पव्वइए, अहं णं अधन्ने अकयत्थे अकयपुण्णे अकयलक्खणे जाव[6] नो संचाएमि[7] पव्वइत्तए । तं धन्नेसि णं तुमं देवाणुप्पिया ! जाव[8] सुलद्धे णं देवाणुप्पिया ! तव माणुस्सए जम्म-जीवियफले ।।

३५. तए णं कंडरीए पुंडरीएणं एवं वुत्ते समाणे तुसिणीए संचिट्ठइ । दोच्चंपि तच्चंपि[9] •पुंडरीएणं एवं वुत्ते समाणे तुसिणीए° संचिट्ठइ ।।

३६. तए णं पुंडरीए कंडरीयं एवं वयासी—अट्ठो भंते[10] ! भोगेहिं ?
हंता ! अट्ठो ।।

३७. तए णं से पुंडरीए राया कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! कंडरीयस्स महत्थं[11] •महग्घं महरिहं विउलं° रायाभिसेयं उवट्ठवेह जाव[12] रायाभिसेएणं अभिसिंचति ।।

पुंडरीयस्स पव्वज्जा-पदं

३८. तए णं से पुंडरीए सयमेव पंचमुट्ठियं लोयं करेइ, सयमेव चाउज्जामं धम्मं पडिवज्जइ, पडिवज्जित्ता कंडरीयस्स संतियं आयारभंडगं गेण्हइ, गेण्हित्ता इमं एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हइ—कप्पइ मे थेरे वंदित्ता नमंसित्ता थेराणं अंतिए चाउज्जामं धम्मं उवसंपज्जित्ता णं तओ पच्छा आहारं आहारित्तए त्ति कट्टु इमं एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हित्ता णं पुंडरीगिणीए[13] पडिणिक्खमइ, पडि-णिक्खमित्ता पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे जेणेव थेरा भग-वंतो तेणेव पहारेत्थ गमणाए ।।

---

१. पिउभाउए (ख, ग); भाउए (घ) ।
२. सं० पा०—असोगवणिया जाव कंडरीयं ।
३. सं० पा०—तिक्खुत्तो जाव एवं ।
४. सं० पा०—देवाणुप्पिया जाव पव्वतिए ।
५,६. ना० १।१६।२६ ।
७. द्रष्टव्यम्—२६ सूत्रम् ।
८. ना० १।१६।२६ ।
९. सं० पा०—तच्चं पि जाव संचिट्ठइ ।
१०. हंते (ग) ।
११. सं० पा०—महत्थं जाव रायाभिसेयं ।
१२. ना० १।१।११७,११८ ।
१३. पोंडरिगिणीए (क, ख) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कंडरीयस्स मच्चु-पदं

३९. तए णं तस्स कंडरीयस्स रण्णो तं पणीयं पाणभोयणं आहारियस्स समाणस्स अइजागरएण य अइभोय[1]-प्पसंगेण य से आहारे नो सम्मं परिणमइ[2] ॥

४०. तए णं तस्स कंडरीयस्स रण्णो तंसि आहारंसि अपरिणममाणंसि पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि सरीरगंसि वेयणा पाउब्भूया—उज्जला विउला[3] •कक्खडा पगाढा चंडा दुक्खा॰ दुरहियासा। पित्तज्जर-परिगय-सरीरे दाहवक्कंतीए यावि विहरइ ॥

४१. तए णं से कंडरीए राया रज्जे य रट्ठे य अंतेउरे य[4] •माणुस्सएसु य कामभोगेसु मुच्छिए गिद्धे गढिए॰ अज्झोववण्णे अट्टदुहट्टवसट्टे अकामए अवसवसे कालमासे कालं किच्चा अहेसत्तमाए पुढवीए उक्कोसकालट्ठिइयंसि नरयंसि नेरइयत्ताए उववण्णे ॥

निगमण-पदं

४२. एवामेव समणाउसो[5]! •जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा आयरिय-उवज्झायाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं॰ पव्वइए समाणे पुणरवि माणुस्सए कामभोए आसाएइ[6] •पत्थयइ पीहेइ अभिलसइ, से णं इह भवे चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावयाणं बहूणं सावियाण य हीलणिज्जे निंदणिज्जे खिंसणिज्जे गरहणिज्जे परिभवणिज्जे, परलोए वि य णं आगच्छइ बहूणि दंडणाणि य मुंडणाणि य तज्जणाणि य तालणाणि य जाव[7] चाउरंतं संसार-कंतारं भुज्जो-भुज्जो॰ अणुपरियट्टिस्सइ जहा व से कंडरीए राया ॥

पुंडरीयस्स आराहणा-पदं

४३. तए णं से पुंडरीए अणगारे जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता थेरे भगवंते वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता थेराणं अंतिए दोच्चंपि चाउज्जामं धम्मं पडिवज्जइ, छट्ठक्खमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेइ, बीयाए पोरिसीए झाणं झियाइ, तइयाए पोरिसीए जाव[8] उच्च-नीय-मज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियं अडमाणे सीयलुक्खं पाणभोयणं पडिगाहेइ, पडिगाहेत्ता अहापज्जत्तमित्ति कट्टु पडिनियत्तेइ, जेणेव थेरा भगवंतो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता भत्तपाणं पडिदंसेइ, पडिदंसेत्ता थेरेहिं भगवंतेहिं अब्भणुण्णाए समाणे अमुच्छिए अगिद्धे अगढिए अणज्झोववण्णे

---

१. भोय (ख, ग)।
२. परिणए (ख, ग, घ)।
३. सं॰ पा॰—विउला पगाढा जाव दुरहियासा।
४. सं॰ पा॰—अंतेउरे य जाव अज्झोववण्णे।
५. सं॰ पा॰—समणाउसो जाव पव्वइए।
६. सं॰ पा॰—आसाएइ जाव अणुपरियट्टिस्सइ।
७. ना॰—१।३।२४।
८. ना॰ १।१६।१३।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बिलमिव पण्णगभूएणं अप्पाणेणं[1] तं फासु-एसणिज्जं असण-पाण-खाइम-साइमं सरीरकोट्ठगंसि पक्खिवइ ।।

४४. तए णं तस्स पुंडरीयस्स अणगारस्स तं कालाइक्कंतं अरसं विरसं सीयलुक्खं पाणभोयणं आहारियस्स समाणस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स से आहारे नो सम्मं परिणमइ ।।

४५. तए णं तस्स पुंडरीयस्स अणगारस्स सरीरगंसि वेयणा पाउब्भूया-उज्जला[2] •विउला कक्खडा पगाढा चंडा दुक्खा° दुरहियासा । पित्तज्जर-परिगय-सरीरे दाहवक्कंतीए विहरइ ।।

४६. तए णं से पुंडरीए अणगारे अत्थामे अबले अवीरिए अपुरिसक्कारपरक्कमे करयल[3]•परिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु° एवं वयासी— नमोत्थु णं अरहंताणं भगवंताणं जाव[4] सिद्धिगइणामधेज्जं ठाणं संपत्ताणं । नमोत्थु णं थेराणं भगवंताणं मम धम्मायरियाणं धम्मोवएसयाणं । पुव्विं पि य णं मए थेराणं अंतिए सव्वे पाणाइवाए पच्चक्खाए जाव[5] बहिद्धादाणे[6] पच्चक्खाए[7], •इयाणिं पि णं अहं तेसिं चेव अंतिए सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि जाव बहिद्धादाणं पच्चक्खामि । सव्वं असण-पाण-खाइम-साइमं पच्चक्खामि चउव्विहं पि आहारं पच्चक्खामि जावज्जीवाए । जंपि य इमं सरीरं इट्ठं कंतं[8] तं पि य णं चरिमेहिं उस्सास-नीसासेहिं वोसिरामि त्ति कट्टु° आलोइय-पडिक्कंते कालमासे कालं किच्चा सव्वट्ठसिद्धे उववण्णे । तओ अणंतरं उव्वट्टित्ता महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ[9] •बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ परिनिव्वाहिइ° सव्वदुक्खाणमंतं काहिइ ।।

निगमण-पदं

४७. एवामेव समणाउसो[10] ! •जो अम्हं निग्गंथो वा निग्गंथी वा आयरिय-उवज्झायाणं अंतिए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं° पव्वइए समाणे माणुस्सएहिं

---

१. अत्तणेणं (ख) ।
२. सं० पा०—उज्जला जाव दुरहियासा ।
३. सं० पा०—करयल जाव एवं ।
४. ओ० सू० २१ ।
५. ना० १।५।५६ ।
६. मिच्छादंसणसल्ले (क, ख, ग, घ) अस्याध्ययनस्य ३८,४३ सूत्रे 'चाउज्जामं धम्मं पडिवज्जइ' इति पाठोस्ति । उपलब्धपाठश्च अस्य विसंवादी वर्तते । मेघकुमाराधिकारात् पूरितोसौ पाठः तेनात्रापि विसंवादो जातः । द्रष्टव्यम्—१।५।५६ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।
७. सं० पा०—पच्चक्खाए जाव आलोइय० । चिह्नांकितः पाठः १।१।२०६ सूत्रेण पूरितः ।
८. पू०—ना० १।१।२०६ ।
९. सं० पा०—सिज्झिहिइ जाव सव्वदुक्खाण ।
१०. सं० पा०—समणाउसो जाव पव्वइए ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कामभोगेहिं नो सज्जइ नो रज्जइ[1] •नो गिज्झइ नो मुज्झइ नो अज्झोवज्झइ° नो विप्पडिघायमावज्जइ[2], से णं इहभवे चेव बहूणं समणाणं बहूणं समणीणं बहूणं सावगाणं बहूणं सावियाण य अच्चणिज्जे वंदणिज्जे [नमंसणिज्जे ?] पूयणिज्जे सक्कारणिज्जे सम्माणणिज्जे कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं [विणएणं ?] पज्जुवासणिज्जे[3] भवइ,

परलोए वि य णं नो आगच्छइ बहूणि दंडणाणि य मुंडणाणि य तज्जणाणि य तालणाणि य जाव[4] चाउरंतं संसारकंतारं वीईवइस्सइ—जहा व से पुंडरीए अणगारे ॥

निक्खेव-पदं

४८. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं आइगरेणं तित्थगरेणं सयंसंबुद्धेणं जाव[5] सिद्धिगइनामधेज्जं ठाणं संपत्तेणं एगूणवीसइमस्स नायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ॥

वृत्तिकृता समुद्धृता निगमनगाथा—

वाससहस्संपि जइ, काऊणं संजमं सुविउलंपि ।
अंते किलिट्ठभावो, न विसुज्झइ कंडरीउ व्व ॥१॥
अप्पेण वि कालेणं, केइ जहा गहिय-सील-सामण्णा ।
साहंति नियय-कज्जं, पुंडरीय-महारिसि व्व जहा ॥२॥

४९. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[6] संपत्तेणं छट्ठस्स अंगस्स पढमस्स सुयखंधस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।

—त्ति बेमि ।

परिसेसो

एयस्स[7] सुयखंधस्स एगूणवीसं अज्झयणाणि[8] एक्कासरगाणि[9] एगूणवीसाए दिवसेसु समप्पंति ।

---

१. सं० पा०—रज्जइ जाव नो विप्पडिघाय० ।
२. विणिग्घाय° (क) ।
३. 'पज्जुवासणिज्जे' इति पदानन्तरं सर्वासु प्रतिषु 'त्ति कट्टु' इति पाठोस्ति, किन्तु [१।२।७३] सूत्रानुसारं अत्र 'भवइ' इति पाठो युज्यते ।
४. ना० १।३।२४ ।
५. ना० १।१।७ ।
६. ना० १।१।७ ।
७. तस्स णं (ख, ग) ।
८. नायज्झयणाणि (क) ।
९. एक्कारसाणि (ख), एक्करसगाणि (ग) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बीओ सुयक्खंधो

पढमो वग्गो

पढमं अज्झयणं

काली

उक्खेव-पदं

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नामं नयरे होत्था—वण्णओ[1] ।।

२. तस्स णं रायगिहस्स नयरस्स बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए, एत्थ[2] णं गुणसिलए नामं चेइए होत्था—वण्णओ[3] ।

३. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतेवासी अज्जसुहम्मा नामं थेरा भगवंतो जाइसंपण्णा कुलसंपण्णा जाव[4] चोद्दसपुव्वी चउनाणोवगया पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं संपरिवुडा पुव्वाणुपुव्विं चरमाणा गामाणुगामं दूइज्जमाणा सुहंसुहेणं विहरमाणा जेणेव रायगिहे नयरे जेणेव गुणसिलए चेइए[5] •तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता॰ संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणा विहरंति । परिसा निग्गया । धम्मो कहिओ । परिसा जामेव दिसिं पाउब्भूया, तामेव दिसिं पडिगया ।।

४. तेणं कालेणं तेणं समएणं अज्जसुहम्मस्स अणगारस्स [जेट्ठे ?] अंतेवासी अज्जजंबू नामं अणगारे[6] जाव[7] •अज्जसुहम्मस्स थेरस्स नच्चासण्णे नाइदूरे

---

१. ओ॰ सू॰ १ ।
२. तत्थ (ख, ग) ।
३. ओ॰ सू॰ २-१३ ।
४. ना॰ १।१।४ ।
५. सं॰ पा॰—चेइए जाव संजमेणं ।
६. सं॰ पा॰—अणगारे जाव पज्जुवासमाणे ।
७. ना॰ १।१।६,७ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुस्सूसमाणे नमंसमाणे अभिमुहे पंजलिउडे विणएणं॰ पज्जुवासमाणे एवं वयासी—जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[1] संपत्तेणं छट्ठस्स अंगस्स पढमस्स सुयक्खंधस्स नायाणं अयमट्ठे पण्णत्ते, दोच्चस्स णं भंते ! सुयक्खंधस्स धम्मकहाणं समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[2] संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

५. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[3] संपत्तेणं धम्मकहाणं दस वग्गा पण्णत्ता तं जहा—

१. चमरस्स अग्गमहिसीणं पढमे वग्गे ।

२. बलिस्स वइरोयणिंदस्स[4] वइरोयणरण्णो अग्गमहिसीणं बीए वग्गे ।

३. असुरिंदवज्जियाणं दाहिणिल्लाणं 'इंदाणं अग्गमहिसीणं'[5] तईए वग्गे ।

४. उत्तरिल्लाणं असुरिंदवज्जियाणं भवणवासि[6]-इंदाणं अग्गमहिसीणं चउत्थे वग्गे ।

५. दाहिणिल्लाणं वाणमंतराणं इंदाणं अग्गमहिसीणं पंचमे वग्गे ।

६. उत्तरिल्लाणं वाणमंतराणं इंदाणं अग्गमहिसीणं छट्ठे वग्गे ।

७. चंदस्स अग्गमहिसीणं सत्तमे वग्गे ।

८. सूरस्स अग्गमहिसीणं अट्ठमे वग्गे ।

९. सक्कस्स अग्गमहिसीणं नवमे वग्गे ।

१०. ईसाणस्स य अग्गमहिसीणं दसमे वग्गे ।

६. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[7] संपत्तेणं धम्मकहाणं दस वग्गा पण्णत्ता, पढमस्स णं भंते ! वग्गस्स समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[8] संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

७. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[9] संपत्तेणं पढमस्स वग्गस्स पंच अज्झयणा पण्णत्ता तंजहा—काली, राई, रयणी, विज्जू[10], मेहा ॥

८. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[11] संपत्तेणं पढमस्स वग्गस्स पंच अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[12] संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

९. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे गुणसिलए चेइए । सेणिए राया । चेल्लणा देवी । सामी समोसढे । परिसा निग्गया जाव[13] परिसा पज्जुवासइ ॥

१, २, ३. ना० १।१।७ ।
४. × (क, ख, ग) ।
५. × (क, ख, ग) ।
६. भवणवइ (क) ।
७, ८, ९. ना० १।१।७ ।
१०. विज्जा (क, ग) ।
११, १२. ना० १।१।७
१३. ओ० सू० ५२ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कालीदेवी-पदं

१०. तेणं कालेणं तेणं समएणं काली देवी चमरचंचाए रायहाणीए कालिवडेंसगभवणे कालंसि सीहासणंसि चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं चउहिं महयरियाहिं[1] सपरिवाराहिं, तिहिं परिसाहिं सत्तहिं अणिएहिं सत्तहिं अणियाहिवईहिं सोलसहिं आयरक्खदेवसाहस्सीहिं अण्णेहि य बहूहिं कालिवडिंसय[2]-भवणवासीहिं असुरकुमारेहिं देवेहिं देवीहि य सद्धिं संपरिवुडा महयाहय[3]-•नट्ट-गीय-वाइय-तंती-तल-ताल-तुडिय-घण-मुइंग-पडुप्पवादियरवेणं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणी° विहरइ। इमं च णं केवलकप्पं जंबुद्दीवं दीवं विउलेणं ओहिणा 'आभोएमाणी-आभोएमाणी'[4] पासइ॥

कालीए भगवओ वंदण-पदं

११. एत्थ[5] समणं भगवं महावीरं जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे रायगिहे नयरे गुणसिलए चेइए अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणं पासइ, पासित्ता हट्ठतुट्ठ-चित्तमाणंदिया पीइमणा[6] •परमसोमणस्सिया हरिस-वस-विसप्पमाण°-हियया सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ, अब्भुट्ठेत्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता पाउयाओ ओमुयइ, ओमुइत्ता तित्थगराभिमुही सत्तट्ठ पयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता वामं जाणुं अंचेइ, अंचेत्ता दाहिणं जाणुं धरणियलंसि निहट्टु तिक्खुत्तो मुद्धाणं धरणियलंसि निवेसेइ[7], ईसिं पच्चुन्नमइ, पच्चुन्नमित्ता कडग-तुडिय-थंभियाओ भुयाओ साहरइ, साहरित्ता करयल[8] •परिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं° कट्टु एवं वयासी—नमोत्थु णं अरहंताणं भगवंताणं जाव[9] सिद्धिगइनामधेज्जं ठाणं संपत्ताणं। नमोत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स जाव[10] सिद्धिगइनामधेज्जं ठाणं संपाविउकामस्स। वंदामि णं भगवंतं तत्थगयं इहगया, पासउ मे समणे भगवं महावीरे तत्थगए इहगयं ति कट्टु वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता सीहासणवरंसि पुरत्थाभिमुहा निसण्णा॥

१२. तए णं तीसे कालीए देवीए इमेयारूवे[11] •अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—सेयं खलु मे समणं भगवं महावीरं वंदित्तए[12]

---

१. मयहरियाहिं (क,ख,ग,घ); महरियाहिं (वृ)। द्रष्टव्यम्—१।१६।१५६ सूत्रस्य पादटिप्पणम्।
२. °वडेंसय (ख, ग)।
३. सं० पा०—महयाहय जाव विहरइ।
४. आभोएमाणी (क, ख, ग, घ)।
५. जत्थ (क, घ); यत्थ (ग)।
६. सं० पा० पीइमणा जाव हियया।
७. निमेइ (क, ग)।
८. सं० पा०—करयल जाव कट्टु।
९,१०. ओ० सू० २१।
११. सं० पा०—इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था।
१२. वंदित्ता (क, ख, ग, घ); सं० पा०—वंदित्तए जाव पज्जुवासित्तए। असौ पाठः 'रायपसेणइय' सूत्रस्य वृत्त्यनुसारेण पूरितः। द्रष्टव्यम्—'रायपसेणइय' वृत्ति पृ० ५१,५२।

Jain Education International　　For Private & Personal Use Only　　www.jainelibrary.org

•नमंसित्तए सक्कारित्तए सम्माणित्तए कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं° पज्जुवासित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता आभिओगिए देवे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगवं महावीरे[1] विहरइ एवं जहा सूरियाभो तहेव आणत्तियं देइ जाव[2] दिव्वं सुरवराभिगमण-जोग्गं करेह[3] •य कारवेह य करेत्ता य कारवेत्ता य खिप्पामेव एवमाणत्तियं° पच्चप्पिणह। ते वि तहेव करेत्ता जाव[4] पच्चप्पिणंति, नवरं—जोयणसहस्स-वित्थिण्णं जाणं। सेसं तहेव। तहेव नामगोयं साहेइ, तहेव नट्टविहिं उवदंसेइ जाव[5] पडिगया ॥

गोयमस्स पसिण-पदं

१३. भंतेति ! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—कालीए णं भंते ! देवीए सा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभाए कहिं गए ? कहिं अणुप्पविट्ठे ?

गोयमा ! सरीरं गए सरीरं अणुप्पविट्ठे। कूडागारसाला दिट्ठंतो[6]।

अहो णं भंते ! काली देवी महिड्ढिया महज्जुइया महब्बला महायसा महासोक्खा महाणुभागा ॥

१४. कालीए णं भंते ! देवीए सा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभागे किण्णा लद्धे ? किण्णा पत्ते ? किण्णा अभिसमण्णागए[7] ?

भगवओ उत्तरे काली-पदं

१५. •गोयमाति ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं आमंतेत्ता एवं वयासी—एवं° खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे आमलकप्पा नामं नयरी होत्था—वण्णओ[8]। अंबसालवणे चेइए। जियसत्तू राया ॥

१६. तत्थ णं आमलकप्पाए नयरीए काले नामं गाहावई होत्था—अड्ढे जाव[9] अपरिभूए ॥

१७. तस्स णं कालस्स गाहावइस्स कालसिरी नामं भारिया होत्था—सुकुमाल-पाणिपाया जाव[10] सुरूवा ॥

१८. तस्स णं कालस्स गाहावइस्स धूया कालसिरीए भारियाए अत्तया काली नामं

---

१. पू०—राय० सू० ८।
२. राय० सू० ६।
३. सं० पा०—करेह करेत्ता जाव पच्चप्पिणह।
४. राय० सू० १०-४६।
५. राय० सू० ४७-१२०।
६. राय० सू० १२३।
७. पू०—राय० सू० ६६७।
स० पा०—एवं जहा सूरियाभस्स जाव एवं।
८. ओ० सू० १।
९. ना० १।५।७।
१०. ना० १।१।१७।

दारिया होत्था—वड्डा वड्डकुमारी जुण्णा जुण्णकुमारी पडियपुयत्थणी[1] निव्विण्णवरा वरगपरिवज्जिया[2] वि होत्था ।।

कालीए पव्वज्जा-पदं

१९. तेणं कालेणं तेणं समएणं पासे अरहा पुरिसादाणीए आइगरे[3] •तित्थगरे सहसंबुद्धे पुरिसोत्तमे पुरिससीहे पुरिसवरपुंडरीए पुरिसवरगंधहत्थी अभयदए चक्खुदए मग्गदए सरणदए जीवदए दीवो ताणं सरणं गई पइट्ठा धम्मवरचाउरंत-चक्कवट्टी अप्पडिहय-वरनाणदंसणधरे वियट्टच्छउमे अरहा जिणे केवली जिणे जाणए तिण्णे तारए मुत्ते मोयए बुद्धे बोहए सव्वण्णू सव्व-दरिसी नवहत्थुस्सेहे समचउरंससंठाणसंठिए वज्जरिसहनारायसंघयणे जल्ल-मल्लकलंकसेयरहियसरीरे सिवमयलमरुयमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावत्तगं सिद्धिगइणामधेज्जं ठाणं संपाविउकामे[4] सोलसहिं समणसाहस्सीहिं अट्ठत्तीसाए अज्जियासाहस्सीहिं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे आमलकप्पाए नयरीए बहिया° अंबसालवणे समोसढे । परिसा निग्गया जाव[5] पज्जुवासइ ।।

२०. तए णं सा काली दारिया इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणी हट्ठ[6]•तुट्ठ-चित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाण°हियया जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयल[7]•परिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु° एवं वयासी—एवं खलु अम्मयाओ ! पासे अरहा पुरिसादाणीए आइगरे[8] •तित्थगरे इहमागए इह संपत्ते इह समोसढे इह चेव आमलकप्पाए नयरीए अंबसालवणे अहापडिरूवं ओग्गहं ओगिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे° विहरइ । तं इच्छामि णं अम्मयाओ ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाया समाणी पासस्स णं अरहओ पुरिसादाणीयस्स पायवंदिया गमित्तए ।

अहासुहं देवाणुप्पिए ! मा पडिबंधं करेहि ।।

२१. तए णं सा काली दारिया अम्मापिईहिं अब्भणुण्णाया समाणी हट्ठ[9]•तुट्ठ-चित्त-माणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाण°हियया ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउय-मंगल-पायच्छित्ता सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं

---

१. °पुतत्थणी (ग) ।
२. वरपरिवज्जिया (घ); वरवज्जिया (वृ) ।
३. सं० पा०—जहा वद्धमाणसामी नवरं नव-हत्थुस्सेहे° (क, ख, ग, घ) ।
४. पू०—ओ० सू० १६ ।
५. ओ० सू० ५२ ।
६. सं० पा० – हट्ठ जाव हियया ।
७. सं० पा०—करयल जाव एवं ।
८. सं० पा०—आइगरे जाव विहरइ ।
९. सं० पा०—हट्ठ जाव हियया ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पवर परिहिया अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरा चेडिया-चक्कवाल-परिकिण्णा साओ गिहाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव धम्मिए जाणप्पवरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मियं जाणपवरं दुरूढा ।।

२२. तए णं सा काली दारिया धम्मियं जाणप्पवरं दुरूढा समाणी एवं जहा देवई[1] तहा[2] पज्जुवासइ ।।

२३. तए णं पासे अरहा पुरिसादाणीए कालीए दारियाए तीसे य महइमहालियाए परिसाए धम्मं कहेइ ।।

२४. तए णं सा काली दारिया पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठ[3]•तुट्ठ-चित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाण°हियया पासं अरहं पुरिसादाणीयं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—सद्दहामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं, जाव[4] से जहेयं तुब्भे वयह । जं नवरं—देवाणुप्पिया ! अम्मापियरो आपुच्छामि, तए णं अहं देवाणुप्पियाणं अंतिए[5] •मुंडे भवित्ता णं अगाराओ अणगारियं° पव्वयामि ।

अहासुहं देवाणुप्पिए !

२५. तए णं सा काली दारिया पासेणं अरहया पुरिसादाणीएणं एवं वुत्ता समाणी हट्ठ[6]•तुट्ठ-चित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवस-विसप्पमाण°-हियया पासं अरहं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता तमेव धम्मियं जाणप्पवरं दुरुहइ, दुरुहित्ता पासस्स अरहओ पुरिसादाणीयस्स अंतियाओ अंबसालवणाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव आमलकप्पा नयरी तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता आमलकप्पं नयरिं मज्झंमज्झेणं जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मियं जाणप्पवरं ठवेइ, ठवेत्ता धम्मियाओ जाणप्पवराओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता जेणेव अम्मापियरो तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता करयलपरिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी—एवं खलु अम्मयाओ ! मए पासस्स अरहओ अंतिए धम्मे निसंते । से वि य धम्मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए[7] । तए णं अहं अम्मयाओ[8] ! संसारभउव्विग्गा भीया जम्मण-मरणाणं इच्छामि णं तुब्भेहिं

---

१. दोवइ (क, घ) ।
२. अंत° ३।८।१५ ।
३. सं० पा०—हट्ठ जाव हियया ।
४. ना० १।१।१०१ ।
५. सं० पा०—अंतिए जाव पव्वयामि ।
६. सं० पा०—हट्ठ जाव हियया ।
७. अभिरुतिए (ख); अभिरुतिते (ग); अभिरुचिए (घ) ।
८. अम्मापियातो (ग) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अब्भणुण्णाया समाणी पासस्स अरहओ अंतिए मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए।

अहासुहं देवाणुप्पिए ! मा पडिबंधं करेहि ॥

२६. तए णं से काले गाहावई विउलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडावेइ, उवक्खडावेत्ता मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणं आमंतेइ, आमंतेत्ता तओ पच्छा ण्हाए जाव[1] विपुलेणं पुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकारेणं सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारेत्ता सम्माणेत्ता तस्सेव मित्त-नाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणस्स पुरओ कालिं दारियं सेयापीएहिं कलसेहिं ण्हावेइ, ण्हावेत्ता सव्वालंकार-विभूसियं करेइ, करेत्ता पुरिससहस्सवाहिणिं सीयं दुरूहेइ, दुरूहेत्ता मित्तनाइ-नियग-सयण-संबंधि-परियणेणं सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए जाव[2] दुंदुहि-निग्घोस-नाइयरवेणं आमलकप्पं नयरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव अंबसालवणे चेइए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता छत्ताईए तित्थगराइसए पासइ, पासित्ता सीयं ठवेइ, ठवेत्ता कालिं दारियं सीयाओ पच्चोरुहेइ[3] ॥

२७. तए णं तं कालिं दारियं अम्मापियरो पुरओ काउं जेणेव पासे अरहा पुरिसादाणीए तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—एवं खलु देवाणुप्पिया ! काली दारिया अम्हं धूया इट्ठा कंता जाव[4] उंबरपुप्फं पिव दुल्लहा सवणयाए, किमंग पुण पासणयाए ? एस णं देवाणुप्पिया ! संसारभउव्विग्गा इच्छइ देवाणुप्पियाणं अंतिए मुंडा भवित्ता[5] •णं अगाराओ अणगारियं° पव्वइत्तए। तं एयं णं देवाणुप्पियाणं सिस्सिणिभिक्खं दलयामो। पडिच्छंतु णं देवाणुप्पिया ! सिस्सिणिभिक्खं।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेहि ॥

२८. तए णं सा काली कुमारी पासं अरहं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमइ, अवक्कमित्ता सयमेव आभरणमल्लालंकारं ओमुयइ, ओमुइत्ता सयमेव लोयं करेइ, करेत्ता जेणेव पासे अरहा पुरिसादाणीए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पासं अरहं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ, करेत्ता वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी—आलित्ते णं भंते ! लोए[6]

---

१. ना० १।७।६।
२. ना० १।१।३३।
३. पच्चोरुहइ (क, ख, ग, घ)।
४. ना० १।१।१४५।
५. सं० पा०—भवित्ता जाव पव्वइत्तए।
६. 'लोए' अतोग्रे "एवं जहा देवाणंदा जाव" समर्पणवाक्यमस्ति, किन्तु भगवतीसूत्रे (९।१५२) देवाणंदा-प्रकरणे समर्पितः पाठः संक्षिप्तोस्ति, तेन एतद्वाक्यं पाठान्तररूपेण स्वीकृतमस्माभिः। अस्य पूर्तिस्थलनिर्देशः प्रस्तुतसूत्रादेव कृतः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जाव[1] तं इच्छामि णं देवाणुप्पिएहिं सयमेव पव्वावियं[2] जाव[3] धम्ममाइक्खियं ॥

२९. तए णं पासे अरहा पुरिसादाणीए कालिं सयमेव पुप्फचूलाए अज्जाए सिस्सिणियत्ताए दलयइ ॥

३०. तए णं सा पुप्फचूला अज्जा कालिं कुमारिं सयमेव पव्वावेइ[4] जाव[5] •धम्ममाइक्खइ ॥

३१. तए णं सा काली पुप्फचूलाए अज्जाए अंतिए इमं एयारूवं धम्मियं उवएसं सम्मं° उवसंपज्जित्ता णं विहरइ ॥

३२. तए णं सा काली अज्जा जाया—इरियासमिया जाव[6] गुत्तबंभयारिणी ॥

३३. तए णं सा काली अज्जा पुप्फचूलाए अज्जाए अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ, बहूहिं चउत्थ[7]-•छट्ठट्ठम-दसम-दुवालसेहिं मासद्धमासखमणेहिं अप्पाणं भावेमाणी° विहरइ ॥

कालीए बाउसियत्त-पदं

३४. तए णं सा काली अज्जा अण्णया कयाइ सरीरबाउसिया जाया यावि[8] होत्था । अभिक्खणं-अभिक्खणं हत्थे धोवेइ, पाए धोवेइ, सीसं धोवेइ, मुहं धोवेइ, थणंतराणि धोवेइ, कक्खतराणि धोवेइ, गुज्झतराणि धोवेइ, जत्थ-जत्थ वि य णं ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेएइ, तं पुव्वामेव अब्भुक्खित्ता तओ पच्छा आसयइ वा सयइ वा ॥

३५. तए णं सा पुप्फचूला अज्जा कालिं अज्जं एवं वयासी—नो खलु कप्पइ देवाणुप्पिए ! समणीण निग्गंथीणं सरीरबाउसियाणं होत्तए । तुमं च णं देवाणुप्पिए ! सरीरबाउसिया[9] जाया अभिक्खणं-अभिक्खणं हत्थे धोवसि[10], •पाए धोवसि, सीसं धोवसि, मुहं धोवसि, थणंतराणि धोवसि, कक्खंतराणि धोवसि, गुज्झंतराणि धोवसि, जत्थ-जत्थ वि य णं ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेएसि, तं पुव्वामेव अब्भुक्खित्ता तओ पच्छा° 'आसयसि वा सयसि'[11] वा । तं तुमं देवाणुप्पिए ! एयस्स ठाणस्स आलोएहि जाव[12] पायच्छित्तं पडिवज्जाहि[13] ॥

---

१. ना० १।१।१४९ ।
२. पव्वाविउ (ख, ग) ।
३. ना० १।१।१४९ ।
४. सं० पा०—पव्वावेइ जाव उवसंपज्जित्ता ।
५. ना० १।१।१५० ।
६. ना० १।१४।४० ।
७. सं० पा०—चउत्थ जाव विहरइ ।
८. × (ख) ।
९. °पाउसिया (ख, ग, घ) ।
१०. सं० पा—धोवसि जाव आसयसि ।
११. आसयाहि वा सयाहि (क, ख, ग, घ); आदर्शेषु तुबाद्यर्थवाचकं क्रियापदमस्ति, किन्तु प्रसंगापातेनात्र तिबाद्यर्थवाचकं क्रियापदं युज्यते, तेन तथा परिगृहीतम् ।
१२. ना० १।१६।११५ ।
१३. पडिवज्जेहि (ख); पडिवज्जिहि (ग)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३६. तए णं सा काली अज्जा पुप्फचूलाए अज्जाए एयमट्ठं नो आढाइ[1] •नो परियाणाइ° तुसिणीया संचिट्ठइ ।।

३७. तए णं ताओ पुप्फचूलाओ अज्जाओ कालिं अज्जं अभिक्खणं-अभिक्खणं हीलेंति निंदंति खिसंति गरहंति अवमन्नंति अभिक्खणं-अभिक्खणं एयमट्ठं निवारेंति ।।

कालीए पुढोविहार-पदं

३८. तए णं तीसे कालीए अज्जाए समणीहिं निग्गंथीहिं अभिक्खणं-अभिक्खणं हीलिज्जमाणीए जाव[2] निवारिज्जमाणीए इमेयारूवे अज्झत्थिए[3] •चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे° समुप्पज्जित्था—जया णं अहं अगारमज्झे[4] वसित्था तया णं अहं सयंवसा, जप्पभिइं च णं अहं मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया तप्पभिइं च णं अहं परवासा[5] जाया। तं सेयं खलु मम कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए[6] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते पाडिक्कयं[7] उवस्सयं उवसंपज्जित्ता णं विहरित्तए त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, संपेहेत्ता कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए[8] उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते पाडिक्कं उवस्सयं गेण्हइ। तत्थ णं अणिवारिया अणोहट्टिया सच्छंदमई अभिक्खणं-अभिक्खणं हत्थे धोवेइ[9], •पाए धोवेइ, सीसं धोवेइ, मुहं धोवेइ, थणंतराणि धोवेइ, कक्खंतराणि धोवेइ, गुज्झंतराणि धोवेइ, जत्थ-जत्थ वि य णं ठाणं वा सेज्जं वा निसीहियं वा चेएइ, तं पुव्वामेव अब्भुक्खित्ता तओ पच्छा° आसयइ वा सयइ वा ।।

कालीए मच्चु-पदं

३६. तए णं सा काली अज्जा पासत्था पासत्थविहारी ओसन्ना ओसन्नविहारी कुसीला कुसीलविहारी अहाछंदा अहाछंदविहारी संसत्ता संसत्तविहारी बहूणि वासाणि सामण्णपरियागं पाउणइ, पाउणित्ता अद्धमासियाए संलेहणाए अप्पाणं भूसेइ, भूसेत्ता तीसं भत्ताइं अणसणाए छेएइ, छेएत्ता तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंता[10] कालमासे कालं किच्चा चमरचंचाए रायहाणीए कालिवडिंसए भवणे उववायसभाए देवसयणिज्जंसि देवदूसंतरिया अंगुलस्स 'असंखेज्जाए भागमेत्ताए'[11] ओगाहणाए कालीदेवित्ताए उववण्णा ।।

---

१. सं० पा०—आढाइ जाव तुसिणीया।

२. ना० २।१।३७।

३. सं० पा०—अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।

४. अगारवास° (ख, ग, घ)।

५. परव्वसा (क, ख, घ)।

६. पू०—ना० १।१।२४।

७. पाडिक्कं (क); पडिक्कयं (ख, ग); पाडिएक्कयं (घ)।

८. पू०—ना० १।१।२४।

६. सं० पा०—धोवेइ जाव आसयइ।

१०. अपडिक्कंता (ख)।

११. असंखेज्जए० (ख); असंखेज्जए भागमेत्तए (ग); असंखेज्जइ° (घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४०. तए णं सा काली देवी अहुणोववण्णा समाणी पंचविहाए पज्जत्तीए[1] °पज्जत्तभावं गच्छति [तं जहा—आहारपज्जत्तीए सरीरपज्जत्तीए इंदियपज्जत्तीए आणपाण-पज्जत्तीए° भासमणपज्जत्तीए[2]] ।।

४१. तए णं सा काली देवी चउण्हं सामाणिय-साहस्सीणं जाव[3] सोलसण्हं आयरक्ख-देवसाहस्सीणं अण्णेसिं च बहूणं कालिवडेंसगभवणवासीणं असुरकुमाराणं देवाण य देवीण य आहेवच्चं[4] कारेमाणी जाव[5] विहरइ ।।

४२. एवं खलु गोयमा ! कालीए देवीए सा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते अभिसमण्णागए ।।

४३. कालीए णं भंते ! देवीए केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ?
गोयमा ! अड्ढाइज्जाइं पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता ।।

४४. काली णं भंते ! देवी ताओ देवलोगाओ अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छिहिइ ? कहिं उववज्जिहिइ ?
गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ बुज्झिहिइ मुच्चिहिइ परिनिव्वाहिइ सव्वदुक्खाणं अंतं काहिइ ।।

निक्खेव-पदं

४५. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[6] संपत्तेणं पढमस्स वग्गस्स पढमज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।

—त्ति बेमि ।।

---

१. सं० पा०—जहा सूरियाभो जाव भासमण-पज्जत्तीए ।
२. असौ कोष्ठकवर्त्तिपाठः व्याख्यांशः प्रतीयते ।
३. ना० २।१।१० ।
४. द्रष्टव्यम्—१।१।११८ सूत्रम् ।
५. ना० १।१।११८ ।
६. ना० १।१।७ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बीअं अज्झयणं

राई

४६. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[1] संपत्तेणं धम्मकहाणं पढमस्स वग्गस्स पढमज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, बिइयस्स णं भंते ! अज्झयणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[2] संपत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

४७. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे गुणसिलए चेइए। सामी समोसढे। परिसा निग्गया जाव[3] पज्जुवासइ ॥

४८. तेणं कालेणं तेणं समएणं राई देवी चमरचंचाए रायहाणीए एवं जहा काली तहेव[4] आगया, नट्टविहिं उवदंसित्ता पडिगया ॥

४९. भंतेति ! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता पुव्वभवपुच्छा[5] ॥

५०. •गोयमाति ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं आमंतेत्ता एवं वयासी° — एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं आमलकप्पा नयरी अंबसालवणे चेइए। जियसत्तू राया। राई गाहावई। राइसिरी भारिया। राई दारिया। पासस्स समोसरणं। राई दारिया जहेव काली तहेव[6] निक्खंता ॥

५१. [7]•तए णं सा राई अज्जा जाया[8] ॥

५२. तए णं सा राई अज्जा पुप्फचूलाए अज्जाए अंतिए सामाइयमाइयाइं एक्कारस अंगाइं अहिज्जइ[9] ॥

१,२. ना० १।१।७।

३. ओ० सू० ५२।

४. ना० २।१।१०-१२।

५. सं० पा०—पुव्वभवपुच्छा एवं। पू०—ना० २।१।१३,१४।

६. ना० २।१।१८-३१।

७. सं० पा०—तहेव सरीरबाउसिया तं चेव सव्वं जाव अंतं।

८. पू०—ना० २।१।३२।

९. पू०—ना० २।१।३३।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५३. तए णं सा राई अज्जा अण्णया कयाइ सरीरबाउसिया जाया या वि होत्था[1] ।।

५४. तए णं सा राई अज्जा पासत्था[2] तस्स ठाणस्स अणालोइयपडिक्कंता कालमासे कालं किच्चा चमरचंचाए रायहाणीए रायवंडिसए भवणे उववायसभाए देवसयणिज्जंसि देवदूसंतरिया अंगुलस्स असंखेज्जाए भागमेत्ताए ओगाहणाए राईदेवित्ताए उववण्णा जाव[3]° अंतं काहिइ ।।

५५. एवं खलु जंबू ! [4]°समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[5] संपत्तेणं पढमस्स वग्गस्स बिइयज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।

—त्ति बेमि ।।

तइयं अज्झयणं

रयणी

५६. जइ णं भंते ! [6]°समणेणं भगवया महावीरेणं धम्मकहाणं पढमस्स वग्गस्स बिइयज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, तइयस्स णं भंते ! अज्झयणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?°

५७. एवं खलु जंबू ! रायगिहे नयरे । गुणसिलए चेइए । [7]°सामी समोसढे[8] ।।

५८. तेणं कालेणं तेणं समएणं रयणी देवी चमरचंचाए रायहाणीए आगया[9] ।।

५९. भंतेति ! भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता पुव्वभवपुच्छा[10] ।।

६०. गोयमाति ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं आमंतेत्ता एवं वयासी—एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं° आमलकप्पा नयरी । अंबसालवणे चेइए । जियसत्तू राया । रयणे गाहावई । रयणसिरी भारिया । रयणी दारिया । सेसं तहेव जाव[11] अंतं काहिइ ।।

---

१. पू०—ना० २।१।३४-३८ ।
२. पू०—ना० १।१।३९ ।
३. ना० २।१।४०-४४ ।
४. सं० पा०—बिइयज्झयणस्स निक्खेवओ ।
५. ना० १।१।७ ।
६. सं० पा—तइयज्झयणस्स उक्खेवओ ।
७. सं० पा०—एवं जहेव राई तहेव रयणी वि ।
८. पू०—ना० २।१।४७ ।
९. पू०—ना० २।१।४८ ।
१०. पू०—ना० २।१।४९ ।
११. ना० २।१।५०-५४ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चउत्थं अज्झयणं

विज्जू

६१. एवं विज्जू वि—आमलकप्पा नयरी। विज्जू गाहावई। विज्जूसिरी भारिया। विज्जू दारिया। सेसं तहेव[1]॥

पंचमं अज्झयणं

मेहा

६२. एवं मेहा वि—आमलकप्पाए नयरीए मेहे गाहावई। मेहसिरी भारिया। मेहा दारिया। सेसं तहेव[2]॥

६३. एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव[3] संपत्तेणं धम्मकहाणं पढमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते॥

---

१. ना० २।१।४६-५४।

२. ना० २।१।४६-५४।

३. ना० १।१।७।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बीओ वग्गो

पढमं अज्झयणं

सुंभा

१. जइ णं भंते ! समणेणं [1]•भगवया महावीरेणं धम्मकहाणं पढमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, दोच्चस्स णं भंते ! वग्गस्स समणेणं भगवया महावीरेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?°

२. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं दोच्चस्स वग्गस्स पंच अज्झयणा पण्णत्ता, तंजहा—सुंभा, निसुंभा, रंभा, निरंभा, मदणा ॥

३. जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं धम्मकहाणं दोच्चस्स वग्गस्स पंच अज्झयणा पण्णत्ता, दोच्चस्स णं भंते ! वग्गस्स पढमज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ?

४. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे। गुणसिलए चेइए। सामी समोसढे। परिसा निग्गया जाव[2] पज्जुवासइ ॥

५. तेणं कालेणं तेणं समएणं सुंभा देवी बलिचंचाए रायहाणीए सुंभवडेंसए भवणे सुंभंसि सीहासणंसि[3] विहरइ। काली गमएणं जाव[4] नट्टविहिं उवदंसेत्ता पडिगया ॥

६. पुव्वभवपुच्छा ॥

७. सावत्थी नयरी। कोट्ठए चेइए। जियसत्तू राया। सुंभे गाहावई। सुंभसिरी भारिया। सुंभा दारिया। सेसं जहा कालीए[5] नवरं अद्धट्ठाइं पलिओवमाइं ठिई ॥

८. एवं खलु जंबू ! [6]•समणेणं भगवया महावीरेणं दोच्चस्स वग्गस्स पढमज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते° ॥

२-५ अज्झयणाणि

९. एवं[7]—सेसा वि चत्तारि अज्झयणा। सावत्थीए। नवरं—माया पिया धूया-सरिनामया।

१०. एवं खलु जंबू ! [8]•समणेणं भगवया महावीरेणं धम्मकहाणं बिइयस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ॥°

---

१. सं० पा०—दोच्चस्स वग्गस्स उक्खेवओ।
२. ओ० सू० ५२।
३. पू०—ना० २।१।१०।
४. ना० २।१।११,१२।
५. ना० २।१।१८-४४।
६. सं० पा०—निक्खेवओ अज्झयणस्स।
७. ना० २।२।१-८।
८. सं० पा०—निक्खेवओ बिइयवग्गस्स।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तइयो वग्गो

पढमं अज्झयणं

अला

१. [1]•जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं धम्मकहाणं बिइयस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, तइयस्स णं भंते ! वग्गस्स समणेणं भगवया महावीरेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?०

२. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं तइयस्स वग्गस्स चउपण्णं अज्झयणा पण्णत्ता तंजहा—पढमे अज्झयणे जाव चउपण्णइमे अज्झयणे ॥

३. जइ णं भंते समणेणं भगवया महावीरेणं धम्मकहाणं तइयस्स वग्गस्स चउपण्णं अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

४. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे गुणसिलए चेइए सामी समोसढे परिसा निग्गया जाव[2] पज्जुवासइ ॥

५. तेणं कालेणं तेणं समएणं अला देवी धरणाए रायहाणीए अलावडेंसए भवणे अलंसि सीहासणंसि एवं कालीगमएणं जाव[3] नट्टविहिं उवदंसेत्ता पडिगया ॥

६. पुव्वभवपुच्छा ॥

७. वाणारसीए नयरीए काममहावणे चेइए । अले गाहावई । अलसिरी भारिया । अला दारिया । सेसं जहा कालीए[4], नवरं—धरणअग्गमहिसित्ताए उववाओ । साइरेगं अद्धपलिओवमं ठिई सेसं तहेव ॥

८. एवं खलु जंबू ! [5]•समणेणं भगवया महावीरेणं तइयस्स वग्गस्स पढमज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते० ।

---

१. सं० पा०—उक्खेवओ तइयवग्गस्स ।
२. ओ० सू० ५२ ।
३ ना० २।१।१०-१२ ।
४. ना० २।१।१८-४४ ।
५. सं० पा०—निक्खेवओ पढमज्झयणस्स ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२-६ अज्झयणाणि

९. एवं[1]—कमा[2], सतेरा, सोयामणी[3], इंदा, घणविज्जुया वि सव्वाओ एयाओ धरणस्स अग्गमहिसीओ।

७-१२ अज्झयणाणि

१०. एए[4] छ अज्झयणा वेणुदेवस्स वि अविसेसिया भाणियव्वा।

१३-५४ अज्झयणाणि

११. एवं[5]—•हरिस्स अग्गिसिहस्स पुण्णस्स जलकंतस्स अमियगतिस्स वेलंबस्स० घोसस्स वि एए[6] चेव छ-छ अज्झयणा। एवमेते दाहिणिल्लाणं चउपण्णं अज्झयणा भवंति। सव्वाओ वि वाणारसीए काममहावणे चेइए।

१२. [7]•एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं धम्मकहाणं तइयस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते• ॥

---

१. ना० २।३।१-८।

२. सक्का (ठाणं ६।५५, भ० १०।७६)।

३. सोयमणी (क, ख); सोयमाणी (ग, घ); सोतामणी (ठाणं ६।५५)।

४. ना० २।३।१-८।

५. सं० पा०—एवं जाव घोसस्स।

६. ना० २।३।१-८।

७. सं० पा०—तइयवग्गस्स निक्खेवओ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चउत्थो वग्गो

पढमं अज्झयणं

रूया

१. [1]•जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं धम्मकहाणं तइयस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, चउत्थस्स णं भंते ! वग्गस्स समणेणं भगवया महावीरेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?०

२. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं धम्मकहाणं चउत्थस्स वग्गस्स चउप्पण्णं अज्झयणा पण्णत्ता, तंजहा—पढमे अज्झयणे जाव चउप्पण्णइमे अज्झयणे ।।

३. 'जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं धम्मकहाणं चउत्थस्स वग्गस्स चउपण्णं अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स णं भंते ! अज्झयणस्स समणेणं भगवया महावीरेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?'[2]

४. एवं खलु जंबू ! तेण कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरणं जाव[3] परिसा पज्जुवासइ ।।

५. तेणं कालेणं तेणं समएणं रूया देवी भूयाणंदा रायहाणी रूयगवडेंसए भवणे रूयगंसि सीहासणंसि जहा कालीए[4] तहा, नवरं—पुव्वभवे चंपाए पुण्णभद्दे चेइए रूयगगाहावई रूयगसिरी भारिया रूया दारिया । सेसं तहेव, नवरं—भूयाणंद-अग्गमहिसित्ताए उववाओ । देसूणं पलिओवमं ठिई ।।

६. [5]•एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं चउत्थस्स वग्गस्स पढमज्झय-णस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।

—त्ति बेमि० ।।

---

१. सं० पा०—चउत्थस्स उक्खेवओ ।

२. × (क, ख, ग, घ) । पूर्वक्रमेण एतद् सूत्रं युज्यते ।

३. ओ० सू० ५२ ।

४. ना० २।१।१०-४४ ।

५. सं० पा०—निक्खेवओ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२-६ अज्झयणाणि

७. एवं[1]— सुरूयावि, रूयंसावि, रूयगावईवि, रूयकंतावि, रूयप्पभावि ॥

७-५४ अज्झयणाणि

८. एयाओ[2] चेव उत्तरिल्लाणं इंदाणं[3]—°वेणुदालिस्स हरिस्सहस्स अग्गिमाणवस्स विसिट्ठस्स जलप्पभस्स अमितवाहणस्स पभंजणस्स महाघोसस्स भाणियव्वाओ।°

९. [4]°एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेण धम्मकहाणं चउत्थस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते° ॥

---

१. एवं खलु (क, ख, ग, घ) । ना० २।४।१-६ ।
२. ना० २।४।१-६ ।
३. सं० पा०—भाणियव्वाओ जाव महाघोसस्स ।
४. सं० पा०—निक्खेवओ चउत्थवग्गस्स ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पंचमो वग्गो

पढमं अज्झयणं

कमला

१. [1]•जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं धम्मकहाणं चउत्थस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, पंचमस्स णं भंते ! वग्गस्स समणेणं भगवया महावीरेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

२. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं पंचमस्स वग्गस्स° बत्तीसं अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—

१. कमला २. कमलप्पभा चेव, ३. उप्पला य ४. सुदंसणा ।
५. रूववई ६. बहुरूवा, ७. सुरूवा ८. सुभगावि य ॥१॥
९. पुण्णा १०. बहुपुत्तिया[2] चेव, ११. उत्तमा १२. तारयावि[3] य ।
१३. पउमा १४. वसुमई चेव, १५. कणगा १६. कणगप्पभा[4] ॥२॥
१७. वडेंसा १८. केउमई चेव, १९. [5]वइरसेणा २०. रइप्पिया[5] ।
२१. रोहिणी २२. नवमिया चेव, २३. हिरी २४. पुप्फवईवि य ॥३॥
२५. [6]भुयगा २६. भुयगावई[6] चेव, २७ महाकच्छा २८. फुडा इय ।
२९. सुघोसा ३०. विमला चेव, ३१. सुस्सरा य ३२. सरस्सई ॥४॥

३. [7]•जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं धम्मकहाणं पंचमस्स वग्गस्स बत्तीसं अज्झयणा पण्णत्ता, पंचमस्स णं भंते ! वग्गस्स पढमज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ? °

४. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरणं जाव[8] परिसा पज्जुवासइ ॥

---

१. सं० पा०—पंचम वग्गस्स उक्खेवओ । एवं खलु जंबू ! जाव बत्तीसं ।
२. बहूपुण्णिया (क, ख, घ) ।
३. भारियावि (क, घ) ।
४. रतणप्पभा (ठाणं ४।१६५) ।
५. रतिसेणा रतिप्पभा (ठाणं ४।१६७); रतिसेणा रइप्पिया (भ० १०।८६) ।
६. सुभगा सुभगावती (ख) ।
७. सं० पा०—उक्खेवेओ पढमज्झयणस्स ।
८. ओ० सू० ५२ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५. तेणं कालेणं तेणं समएणं कमला देवी कमलाए रायहाणीए कमलवडेंसए भवणे कमलंसि सीहासणंसि सेसं जहा कालीए तहेव[1], नवरं - पुव्वभवे नागपुरे नयरे सहसंबवणे उज्जाणे कमलस्स गाहावइस्स कमलसिरीए भारियाए कमला दारिया पासस्स अंतिए निक्खंता। कालस्स पिसायकुमारिंदस्स अग्गमहिसी। अद्धपलिओवमं ठिई।

२-३२ अज्झयणाणि

६. एवं सेसा वि अज्झयणा दाहिणिल्लाणं इंदाणं[2] भाणियव्वाओ। नागपुरे सहसंबवणे उज्जाणे। मायापियरो धूया—सरिनामया। ठिई अद्धपलिओवमं।

छट्ठो वग्गो

१-३२ अज्झयणाणि

१. छट्ठो वि वग्गो पंचमवग्ग-सरिसो, नवरं—महाकालाईणं[3] उत्तरिल्लाणं इंदाणं[4] अग्गमहिसीओ। पुव्वभवे सागेए नगरे। उत्तरकुरु-उज्जाणे। मायापियरो धूया—सरिनामया। सेसं तं चेव॥

सत्तमो वग्गो

पढमं अज्झयणं

सूरप्पभा

१. [5]•जइ णं भंते! समणेणं भगवया महावीरेणं धम्मकहाणं छट्ठस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, सत्तमस्स णं भंते! वग्गस्स समणेणं भगवया महावीरेणं के अट्ठे पण्णत्ते?

२. एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं सत्तमस्स वग्गस्स॰ चत्तारि अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा - सूरप्पभा, आयवा, अच्चिमाली, पभंकरा॥

३. [6]•जइ णं भंते! समणेणं भगवया महावीरेणं धम्मकहाणं सत्तमस्स वग्गस्स चत्तारि अज्झयणा पण्णत्ता, सत्तमस्स णं भंते! वग्गस्स पढमज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते?॰

---

१. ना० २।१।१०-४४।
२. ठाणं २।३६४-३७०।
३. महाकायाई णं (ख)।
४. ठाणं २।३६४-३७०।
५. सं० पा०—सत्तमस्स वग्गस्स उक्खेवओ एवं खलु जंबू जाव चत्तारि।
६. सं० पा० - पढमज्झयणस्स उक्खेवओ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरणं जाव[1] परिसा पज्जुवासइ ॥

५. तेणं कालेणं तेणं समएणं सूरप्पभा देवी सूरंसि[2] विमाणंसि सूरप्पभंसि सीहासणंसि। सेसं जहा कालीए तहा[3], नवरं—पुव्वभवो अरक्खुरीए नयरीए सूरप्पभस्स गाहावइस्स सूरसिरीए भारियाए सूरप्पभा दारिया। सूरस्स अग्गमहिसी। ठिई अद्धपलिओवमं पंचहिं वाससएहिं अब्भहियं। सेसं जहा कालीए ॥

२-४ अज्झयणाणि

६. एवं[4]—•आयवा, अच्चिमाली, पभंकरा °। सव्वाओ अरक्खुरीए नयरीए ॥

अट्ठमो वग्गो

पढमं अज्झयणं

चंदप्पभा

१. •[5]जइ णं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं धम्मकहाणं सत्तमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, अट्ठमस्स णं भंते ! वग्गस्स समणेणं भगवया महावीरेणं के अट्ठे पण्णत्ते ?

२. एवं खलु जंबू ! समणेणं भगवया महावीरेणं अट्ठमस्स वग्गस्स° चत्तारि अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—चंदप्पभा, दोसिणाभा, अच्चिमाली, पभंकरा ॥

३. [6]•जइणं भंते ! समणेणं भगवया महावीरेणं धम्मकहाणं अट्ठमस्स वग्गस्स चत्तारि अज्झयणा पण्णत्ता, अट्ठमस्स णं भंते ! वग्गस्स पढमज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ? °

४. एवं खलु जंबू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरणं जाव[7] परिसा पज्जुवासइ ॥

५. तेणं कालेणं तेणं समएणं चंदप्पभा देवी चंदप्पभंसि विमाणंसि चंदप्पभंसि सीहासणंसि। सेसं जहा कालीए[8], नवरं—पुव्वभवो महुराए नयरीए भंडिवडेंसए

---

१. ओ० सू० ५२।

२. २।८।५ सूत्रपद्धत्या अत्रापि 'सूरप्पभंसि' इति पाठो युज्यते।

३. ना० २।१।१०-४४।

४. सं० पा०—एवं सेसाओवि।

५. सं० पा०—अट्ठमस्स उक्खेवओ। एवं खलु जंबू जाव चत्तारि।

६. सं० पा०—पढमज्झयणस्स उक्खेवओ।

७. ओ० सू० ५२।

८. ना० २।१।१०-४४।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उज्जाणे। चंदप्पभे गाहावई। चंदसिरी भारिया। चंदप्पभा दारिया। चंदस्स अग्गमहिसी। ठिई अद्धपलिओवमं पण्णासवाससहस्सेहिं अब्भहियं॥

२-४ अज्झयणाणि

६. एवं[1]—•दोसिणाभा, अच्चिमाली, पभंकरा°, महुराए नयरीए। मायापियरो धूया-सरिसनामा॥

नवमो वग्गो

१-८ अज्झयणाणि

१. [2]•जइ णं भंते! समणेणं भगवया महावीरेणं धम्मकहाणं अट्ठमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, नवमस्स णं भंते! वग्गस्स समणेणं भगवया महावीरेणं के अट्ठे पण्णत्ते?

२. एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं नवमस्स वग्गस्स° अट्ठ अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—

गाहा -

१. पउमा २. सिवा[3] ३. सई[4] ४. अंजू,
५. रोहिणी ६. नवमिया[5] इ य।
७. अयला[6] ८. अच्छरा॥

३. [7]•जइ णं भंते! समणेणं भगवया महावीरेणं धम्मकहाणं नवमस्स वग्गस्स अट्ठ अज्झयणा पण्णत्ता, नवमस्स णं भंते! वग्गस्स पढमज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते?°

४. एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरणं जाव[8] परिसा पज्जुवासइ॥

५. तेणं कालेणं तेणं समएणं पउमावई देवी सोहम्मे कप्पे पउमवडेंसए विमाणे सभाए सुहम्माए पउमंसि सीहासणंसि जहा कालीए[9]॥

---

१. सं० पा०—एवं सेसाओवि।
२. सं० पा०—नवमस्स उक्खेवओ। एवं खलु जंबू! जाव अट्ठ।
३. सिया (क, ग)।
४. सुती (क, ख, ग); सची (ठाणं ८।२७)।
५. नमिया (घ)।
६. अमला (ठाणं ८।२७; भ० १०।९२)।
७. सं० पा०—पढमज्झयणस्स उक्खेवओ।
८. ओ० सू० ५२।
९. ना० २।१।१०-४४।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६. एवं अट्ठ वि अज्झयणा काली-गमएणं नायव्वा, नवरं—सावत्थीए दोजणीओ। हत्थिणाउरे दोजणीओ। कंपिल्लपुरे दोजणीओ। साएए दोजणीओ। पउमे पियरो विजया मायराओ। सव्वाओ वि पासस्स अंतियं पव्वइयाओ। सक्कस्स अग्गमहिसीओ। ठिई सत्त पलिओवमाइं। महाविदेहे वासे अंतं काहिंति ॥

दसमो वग्गो

१-८ अज्झयणाणि

१. [1]•जइ णं भंते! समणेणं भगवया महावीरेणं धम्मकहाणं नवमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, दसमस्स णं भंते! वग्गस्स समणेणं भगवया महावीरेणं के अट्ठे पण्णत्ते?

२. एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं दसमस्स वग्गस्स° अट्ठ अज्झयणा पण्णत्ता, तं जहा—

संगहणी-गाहा

१. कण्हा य २. कण्हराई, ३. रामा तह ४. रामरक्खिया।
५. वसू या ६. वसुगुत्ता ७. वसुमित्ता ८. वसुंधरा चेव ईसाणे ॥१॥

३. [2]•जइ णं भंते! समणेणं भगवया महावीरेणं धम्मकहाणं दसमस्स वग्गस्स अट्ठ अज्झयणा पण्णत्ता, दसमस्स णं भंते! वग्गस्स पढमज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते?°

४. एवं खलु जंबू! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे समोसरणं जाव[3] परिसा पज्जुवासइ ॥

५. तेणं कालेणं तेणं समएणं कण्हा देवी ईसाणे कप्पे कण्हवडेंसए विमाणे सभाए सुहम्माए कण्हंसि सीहासणंसि, सेसं जहा कालीए ॥

६. एवं अट्ठ वि अज्झयणा काली-गमएणं नायव्वा, नवरं—पुव्वभवो वाणारसीए नयरीए दोजणीओ। रायगिहे नयरे दोजणीओ। सावत्थीए नयरीए दोजणीओ। कोसंबीए नयरीए दोजणीओ। रामे पिया धम्मा माया। सव्वाओ वि पासस्स अरहओ अंतिए पव्वइयाओ। पुप्फचूलाए अज्जाए सिस्सिणियत्ताए। ईसाणस्स

---

१. सं० पा०—दसमस्स उक्खेवओ। एवं खलु जंबू जाव अट्ठ।
२. सं० पा०—पढमस्स उक्खेवओ।
३. ओ० सू० ५२।

Jain Education International   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

अग्गमहिसीओ। ठिई नवपलिओवमाइं। महाविदेहे वासे सिज्झिहिति बुज्झिहिति मुच्चिहिति सव्वदुक्खाणं अंतं काहिति॥

७. एवं खलु जंबू! [1]°समणेणं भगवया महावीरेणं धम्मकहाणं दसमस्स वग्गस्स अयमट्ठे पण्णत्ते°॥

८. एवं खलु जंबू! समणेणं भगवया महावीरेणं आइगरेणं तित्थगरेणं सयंसंबुद्धेणं पुरिसोत्तमेणं पुरिससीहेणं जाव[2] सिद्धिगइ नामधेज्जं ठाणं संपत्तेणं धम्मकहाणं अयमट्ठे पण्णत्ते।

परिसेसो

धम्मकहा-सुयक्खंधो सम्मत्तो।
दसहिं वग्गेहिं नायाधम्मकहाओ समत्ताओ॥

ग्रन्थ-परिमाण

कुल अक्षर—२२६९४३।
अनुष्टुप् श्लोक—७०९१, अक्षर ३१।

---

१. सं० पा०—निक्खेवओ दसमवग्गस्स।   २. ना० १।१।७।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उवासगदसाओ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिशिष्ट—१

संक्षिप्त-पाठ, पूर्त-स्थल और पूर्ति आधार-स्थल

नायाधम्मकहाओ

संक्षिप्त-पाठ	पूर्त-स्थल	पूर्ति आधार-स्थल
अंतिए जाव पव्वयामि	२।१।२५	१।१।१०१
अंतेउरे य जाव अज्झोववण्णे	१।१६।४१	१।१६।२८
अगडे वा जाव सागरे	१।८।१५४	१।८।१५४
अग्गिसामण्णे जाव मच्चुसामण्णे	१।१।१११	१।१।१११
अग्घेणं जाव आसणेणं	१।१६।१९७	१।१६।१८६
अच्चणिज्जे जाव पज्जुवासणिज्जे	१।२।७६	ओ० सू० २
अज्जग जाव परिभाएत्तए	१।६।५	१।१।११०
अज्जाओ तहेव भणंति तहेव साविया जाया तहेव चिंता तहेव सागरदत्तं आपुच्छति	१।१६।९८-१०४	१।१४।४४-५०
अज्झत्थिए०	१।८।७९	१।१।४८
अज्झत्थिए किमण्णे जाव वियंभइ	१।१६।२७२	१।१६।२७२
अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था	१।१।५३,५६,१५४,१५५,१६९,२०४,२०५; १।२।१२,७१;१।५।११८,१२४;१।७।२५; १।१६।११८,२८५;२।१।३८	१।१।४८
अज्झत्थिय जाव जाणित्ता	१।१६।२८६	१।१।४८
अट्टदुहट्टवसट्टमाणसगए जाव रयणि	१।१।१५५	१।१।१५४
अट्ठमस्स उक्खेवओ एवं खलु जंबू जाव चत्तारि	२।८।१,२	२।२।१,२
अट्ठाइं जाव नो वागरेइ	१।५।६९	१।५।६९
अट्ठाइं जाव वागरेइ	१।५।६९	१।५।६९
अट्ठाहियं महानंदीसरं जामेव दिसं पाउ जाव पडिगए	१।८।२२६	१।८।२२४
अड्ढा जाव अपरिभूया	१।५।७	ओ० सू० १४१
अड्ढा जाव भत्तपाणा	१।३।८	ओ० सू० १४१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अणंते जाव समुप्पण्णे	१।८।२२५	वृत्ति
अणंते णाणे समुप्पण्णे जाव सिद्धा	१।१६।३२४	१।५।८४
अणगारवण्णओ भाणियव्वो	१।१।१६४	ओ० सू० १६४
अणगारे जाव इहमागए	१।५।६८	ओ० सू० ५२
अणगारे जाव पज्जवासमाणे	२।१।४	१।१।७
अणिट्ठतराए चेव जाव गंधेणं	१।१२।३	१।८।४२
अणिट्ठा जाव अमणामा	१।१६।६७	१।१।४६
अणिट्ठा जाव दंसणं	१।१४।४३	१।१४।३६
अणिट्ठा जाव परिभोगं	१।१४।५०	१।१४।३६
अणुत्तरे पुणरवि तं चेव जाव तओ पच्छा भुत्तभोगी समणस्स भगवओ जाव पव्वइस्ससि	१।१।११३	१।१।११२
अण्णं च तं विउलं	१।८।२०७	१।८।२०५
अण्णमण्णं जाव समणे	१।१३।३८	१।५।५३
अत्थत्थिया जाव ताहिं इट्ठाहिं जाव अणवरयं	१।१।१४३	ओ० सू० ६८
अत्थामा जाव अधारणिज्ज०	१।१६।२५३	१।१६।२१
अपत्थिय जाव परिवज्जिए	१।८।१२८	१।५।१२२
अपत्थियपत्थए जाव वज्जिए	१।५।१२२	उवा०।२।२२
अपत्थियपत्थया जाव परिवज्जिया	१।८।७४	१।५।१२२
अपुण्णाए जाव निंबोलियाए	१।१६।२५	१।१६।८
अब्भणुण्णाए जाव पव्वइत्तए	१।१२।३६	१।१।१०४
अब्भुज्जएणं जाव विहरित्तए	१।५।११८;१।१६।२८	१।५।१२४
अब्भुट्ठेसि जाव वंदसि	१।५।६७	१।५।६६
अभिसिंचइ जाव पडिगए	१।१६।२८०	१।१।१६१
अभिसिंचइ जाव राया जाए विहरइ	१।५।६३-६५	१।१।११७-११६
अमच्चे जाव तुसिणीए	१।१२।१५	१।१२।७
अम्मयाओ जाव पव्वइत्तए	१।१।१०६	१।१।१०७
अम्मयाओ जाव सुलद्धे	१।१।१२	१।१।३३
अयमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था	१।५।६५	१।१।४८
अरहण्णग जाव वाणियगाणं	१।८।६७	१।८।६४
अरहण्णग संज्जत्तगा	१।८।८४	१।८।६६
अरिट्ठनेमिं जाव गमित्तए	१।१६।३२०	१।१६।३३४
अरिट्ठनेमिस्स जाव पव्वइत्तए	१।५।२०	१।१।१०६
अवंगुणेइ जाव पडिगए	१।१६।६५	१।१६।६१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अवरकंका जाव सण्णिवाडिया	१।१६।२७६	१।१६।२६२
अवसेसं तहेव जाव सामाइयमाइयाइं	१।५।६६-१०१	१।५।३४-३८
अवहरइ जाव तालेइ	१।१८।१२	१।१८।८
अवहिया जाव अवक्खित्ता	१।१६।२२०	१।१६।२१६
अवीरिए जाव अधारणिज्ज०	१।८।१६६	१।१६।२१
असक्कारिय जाव निच्छूढे	१।१६।२४६	१।१६।२४५
असक्कारिया जाव निच्छूढा	१।८।१७२	१।८।१५६
असणं जाव अणुवड्ढेमि	१।२।१२	१।२।१२
असणं जाव दवावेमाणी	१।१४।३६	१।१४।३८
असणं जाव परिभुंजेमाणी	१।२।२०	१।२।१४
असणं जाव परिवेसेइ	१।२।५२,५३	१।२।३७,३८
असणं जाव विहरइ	१।१२।४	१।२।१४
असणं मित्तनाइ चउण्ह य सुण्हाणं कुलघर जाव सम्माणित्ता	१।७।२२	१।७।६
असण जाव पसन्नं	१।१६।१५२	१।१६।१५१
असिपत्ते इ वा जाव मुम्मुरे इ वा एत्तो अणिट्ठतराए चेव	१।१६।५२	वृत्ति
असोगवणिया जाव कंडरीयं	१।१६।३४	१।१६।३३
अहं जाव अणेगभूयभावभविए	१।५।७६	१।५।७६
अहं जाव सुया	१।५।७६	१।५।७६
अहं रज्जं च जाव ओसन्न जाव उउबद्ध पीढ० विहरामि	१।५।१२४	१।५।११७,११८
अहम्मिए जाव अहम्मकेऊ	१।१८।१६	वृत्ति
अहम्मिए जाव विहरइ	१।१८।१६	१।१८।१६
अहाकप्पं जाव किट्टेत्ता	१।१।२०१	१।१।१६८
अहापडिरूवं जाव विहरइ (ति)	१।१।६७;१।१६।११	१।१।४
अहापवत्तेहिं जाव मज्जपाणएण	१।५।११६	१।५।११५
अहासुत्तं जाव सम्मं	१।१।२०१	१।१।१६८
अहिमडे इ वा जाव अणिट्ठतराए अमणामतराए	१।८।४२	वृत्ति
अहीण जाव सुरूवे	१।१।१६	ओ० सू० १५
अहो णं तं चेव	१।१२।१६	१।१२।१३
आइगरे जाव विहरइ	२।१।२०	१।१।६५
आइण्ण वेढो	१।१७।१४	वृत्ति

आएहि य जाव परिणामेमाणा	१।८।१०४	१।८।१६८
आउक्खएणं जाव चइत्ता	१।१६।१२३	१।१।२१२
आढंति जाव पज्जुवासंति	१।१६।१८८	१।१६।१८९
आढाइ जाव तुसिणीए	१।१२।७;१।१६।१५	१।८।१७०
आढाइ जाव तुसिणीया	२।१।३६	१।८।१७०
आढाइ जाव नो पज्जुवासइ	१।१६।१९०	१।१६।१८९
आढाइ जाव भोगं	१।१४।६१	१।१४।६०
आढाइ जाव संचिट्ठइ	१।१९।३०	१।८।१७०
आढायंति ०	१।१।१५५	१।१।१५४
आढायंति जाव संलवेंति	१।१।१५४	१।१।१५४
आपुच्छइ जाव पडिगए	१।१६।२००	१।१।१६१
आपुच्छणिज्जं जाव वड्ढावियं	१।७।४२	१।७।६
आपुच्छामि जाव पव्वयामि	१।१२।३८	१।१।१०१
आपुच्छामि तएणं जाव पव्वयामि	१।१९।१२	१।१।१०१
आरोग्गतुट्ठी जाव दिट्ठे	१।१।२९	१।१।२०
आलंबे वा जाव भविस्सइ	१।१६।३१२	१।८।१८६
आलिघरएसु य जाव कुसुमघरएसु	१।३।१६	वृत्ति
आलोएहि जाव पडिवज्जाहि	१।१६।११५	वृत्ति
आसयंति वा जाव तुयट्टंति	१।१७।२२	१।१७।२२
आसाएइ जाव अणुपरियट्टिस्सइ	१।१९।४२	१।९।४४
आसाएमाणीओ जाव परिभुंजेमाणीओ	१।२।१७	१।१।८१
आसाएमाणी जाव विहरइ	१।२।१४	१।१।८१
आसाएमाणे जाव विहरइ	१।१२।२२	१।१।८१
आसायणिज्जं जाव सव्विंदिय०	१।१२।२०	१।१२।४
आसायणिज्जे जाव सव्विंदिय०	१।१२।१९	१।१२।४
आसिय जाव गंधवट्टिभूयं	१।५।९७	१।१।३३
आसिय जाव परिगीयं	१।१।७६	वृत्ति
आसुरुत्ता जाव मिसिमिसेमाणा	१।१६।२८	१।१।१६१
आसुरुत्ते जाव तिवलियं	५।८।१५९	१।८।१०६
आसुरुत्ते जाव तिवलियं एवं	१।१६।२८९	१।८।१०६
आसुरुत्ते जाव पउमनाभं	१।१६।२८०	१।८।१०६
आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे	१।५।१२२	१।१।१६१
आहारे वा जाव पव्वयामो	१।८।१३	१।५।९०
आहेवच्चं जाव अभिरमेत्था	१।१।१६७	१।१।१५७
आहेवच्चं जाव पालेमाणे	१।५।६	१।१।११८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आहेवच्चं जाव विहरइ	१।३।८	१।१।११८
आहेवच्चं जाव विहरइ	१।१८।२०	१।५।६
आहेवच्चं जाव विहरसि	१।१।१५७	१।५।६
इट्ठा जाव मणामा	१।१६।७०	१।१।४६
इट्ठा तं चेव	१।१६।४८	१।१६।४७
इट्ठाहिं जाव आसासेइ	१।१६।१३१	१।१।४६
इट्ठाहिं जाव एवं	१।८।२०३	१।१।४६
इट्ठाहिं जाव वग्गूहिं	१।८।६७	१।१।४८
इट्ठाहिं जाव समासासेइ	१।१।५०	१।१।४६
इट्ठे जाव से णं	१।५।२०	१।१।१४५
इड्ढी जाव परक्कमे	१।८।७९;१।१६।२६५	उवा० २।४०
इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था	१।७।६;२।१।१२	१।१।४८
इरियासमियाओ जाव गुत्तबंभचारिणीओ	१।१४।४०	१।१।१९४
इहमागए जाव विहरइ	१।५।५३	१।१।९७;१।५।५२
ईसर जाव नीहरणं	१।१४।५६	१।५।६;१।२।३४
ईसर जाव पभितीणं	१।७।६	१।५।६
ईहामिय जाव भत्तिचित्तं	१।१।८९;१।८।४९	१।१।२५
उक्किट्ठ जाव समुद्दरवभूयं	१।१८।४०	१।८।६७
उक्किट्ठाए जाव देवगईए	१।१६।२०४,२०६	राय० सू० १०
उक्किट्ठाए जाए विज्जाहरगईए	१।१६।१९०	१।४।२१
उक्किट्ठाए प्फ कुम्मगईए	१।४।२१	वृत्ति
उक्खेवओ तइयवग्गस्स	२।३।१	२।२।१
उक्खेवओ पढमज्झयणस्स	२।५।३	२।२।३
उज्जलंजाव दुरहियासं	१।१।१६३	१।१।१६२
उज्जला जाव दाहवक्कंतीए	१।१।१८७	१।१।१६२
उज्जला जाव दुरहियासा	१।५।१०६;१।१६।२०;१।१९।४५	१।१।१६२
उज्जाणे जाव विहरइ	१।१६।३२१	१।१६।३१९
उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए तिदंडयं जाव धाउरत्ताओ	१।५।८०	भ० २।५२;१।५।५२
उत्तरिज्जेहिं जाव चिट्ठामो	१।८।१७९	१।८।१७७
उत्तरिज्जेहिं जाव परम्मुहा	१।८।१७८	१।८।१७७
उदगपरिफोसिया जाव भिसियाए	१।८।१५१	१।८।१४१
उप्पलाइं जाव सहस्सपत्ताइं	१।२।१४	राय० सू० ९७
उम्मुक्कबालभावा जाव उक्किट्ठसरीरा	१।१६।१२८	१।१६।३७
उम्मुक्कबालभावा जाव रूवेण	१।८।३८;१।१६।३७	वि० १।४।३६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उम्मुक्कबालभावे जाव जोव्वणग०	१।१४।२२	१।१।२०
उरालस्स क सि ध मं जाव सुमिणस्स	१।१।१६	१।१।१६
उरालाइं जाव भुंजमाणा	१।१२।४०	१।१६।११३
उरालाइं जाव विहरइ	१।१४।२०	१।१२।४०
उरालाइं जाव विहरिज्जामि	१।१६।११३	१।१६।११३
उरालाइं जाव विहरिस्सइ	१।१६।२०४	१।१६।११३
उराले जाव तेयलेस्से	१।१६।१२	१।१।६
उरालेणं तहेव जाव भासं	१।१।२०४	१।१।२०२
उववेए जाव फासेणं	१।१२।४	१।१२।३
उव्वत्तिज्जमाणे जाव टिट्टियावेज्जमाणे	१।३।२२	१।३।२१
उव्वत्तेइ जाव टिट्टियावेइ	१।३।२६	१।३।२१
उव्वत्तेंति जाव दंतेहिं निक्खुडेंति जाव करेत्तए	१।४।१६	१।४।११
उव्वत्तेंति जाव नो चेव णं संचाएंति करेत्तए	१।४।१२	१।४।११
एगदिसिं जाव वाणियगा	१।८।६७	१।८।६२
एगयओ जहा अरहन्नए जाव लवणसमुद्दं	१।१७।५	१।८।६६
एज्जमाणिं जाव निवेसेह	१।८।१७१	१।१।४८;१।१६।१३१
एवं अत्थेणं दारेणं दासेहिं पेसेहिं परियणेणं	१।१४।७७	१।१४।७७
एवं कुलत्था वि भाणियव्वा। नवरं इमं नाणत्तं—इत्थिकुलत्था य धन्नकुलत्था य। इत्थिकुलत्था तिविहा पण्णत्ता, तं जहा— कुलवहुयाइ य कुलमाउयाइ य कुलधूयाइ य। धन्नकुलत्था तहेव	१।५।७४	१।५।७३
एवं जहा मल्लिणाए	१।१६।२००	१।८।१५४
एवं जहा विजओ तहेव सव्वं जाव रायगिहस्स	१।१८।३१,३२	१।१८।२०,२२
एवं जहा सूरियाभस्स जाव एवं	२।१।१५	राय० सू० ६६८
एवं जहेव तेयलिणाए सुव्वयाओ तहेव समोसढाओ तहेव संघाडओ जाव अणुपविट्ठे तहेव जाव सूमालिया	१।१६।६४-६७	१।१४।४०-४३
एवं जहेव राई तहेव रयणी वि	२।१।५७-६०	२।१।४७-५०
एवं जाव घोसस्स	२।३।११	ठाणं २।३५६-३६२
एवं जाव सागरदत्तस्स	१।१६।८८-९१	१।१६।६३-६६
एवं पत्तियामि णं रोएमि णं	१।१।१०१	१।१।१०१
एवं पाएहिं सीसे पोट्टे कायंसि	१।१।१५३	१।१।१५३
एवं पायंगुलियाओ पायंगुट्ठए वि कण्णसक्कुलीओ वि नासापुडाइं	१।१४।२१	१।१४।२१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवं पासत्थे कुसीले पमत्ते	१।५।११७	१।५।११७
एवं मासा वि । नवरं इमं नाणत्तं—मासा तिविहा पण्णत्ता, तं जहा—कालमासा य अत्थमासा य धन्नमासा य । तत्थ णं जे ते कालमासा ते णं दुवालस तं जहा—सावणे जाव आसाढे । तेणं अभक्खेया । अत्थमासा दुविहा हिरण्णमासा य सुवण्णमासा य तेणं अभक्खेया । धन्नमासा तहेव	१।५।७५	१।५।७३; भ० १८।२१५-२१६
एवं वट्टए आडोलियाओ तिंदूसए पोचुल्लए साडोल्लए	१।१८।८	१।१८।८
एवं सेसाओ वि	२।७।६	२।७।२
एवं सेसाओ वि	२।८।६	२।८।२
ओरोह जाव विहरइ	१।१६।२२५	१।१६।१६५
ओसन्ने जाव संथारए	१।५।१२५	१।५।११७
ओहय जाव झियायह	१।८।१७१	१।१।३४
ओहयमण जाव झियायइ	१।३।२३	१।१।३४
ओहयमणसंकप्पं जाव झियायमाणिं	१।१४।३८;१।१६।२०८	१।१।३४
ओहयमणसंकप्पा०	१।१४।३८	१।१।३४
ओहयमणसंकप्पा जाव झियाइ	१।१।३४	वृत्ति
ओहयमणसंकप्पा जाव झियायइ	१।१४।३७;१।१६।६२,८७,२०७	१।१।३४
ओहयमणसंकप्पा जाव झियायंति	१।६।१५	१।१।३४
ओहयमणसंकप्पा जाव झियायह	१।८।१७३	१।१।३४
ओहयमणसंकप्पा जाव झियायामि	१।१६।६५	१।१।३४
ओहयमणसंकप्पा जाव झियाहि	१।१६।६४,६२,२०८	१।१।३४
ओहयमणसंकप्पे जाव झियामि	१।१७।१०	१।१।३४
ओहयमणसंकप्पे जाव झियायइ	१।८।१६८;१।१४।७७;१।१७।८	१।१।३४
ओहयमणसंकप्पे जाव झियायमाणे	१।१६।३२	१।१।३४
ओहयमणसंकप्पे जाव झियायसि	१।१७।६	१।१।३४
कंडरीए उट्ठाए उट्ठेइ उठेत्ता जाव से जहेयं	१।१६।१२	१।१।१०१
कंता जाव भवेज्जामि	१।१६।६७	१।१४।४३
कंते जाव जीवियऊसासए	१।१।१४५	१।१।१०६
कक्खडा जाव दुरहियासा	१।१।१६२	वृत्ति
कज्जेसु य जाव रहस्सेसु	१।७।४२	१।५।६०
कट्टु जाव पडिसहेइ	१।१६।२५५	१।१६।२५१,२५२
कट्टुस्स य जाव भरेंति	१।१७।२८	१।१७।२२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कणग जाव दलयइ	१।१६।१६८	१।१।६१
कणग जाव पडिमाए	१।८।१८०	१।८।४१
कणग जाव सावएज्जं	१।१८।३८	१।१।६१
कणग जाव सिलप्पवाले	१।१८।३३	१।१।६१
कयकोउय जाव सव्वालंकारविभूसिया	१।१।८१	१।२।२६
कयत्थे जाव जम्म०	१।१३।२५	१।१३।२५
कयवलिकम्मं जाव सव्वालंकारविभूसियं	१।१६।७३	१।१।८१
कयवलिकम्मा जाव पायच्छित्ता	१।१।२७	१।१।३३
कयबलिकम्मा जाव विपुलाइं जाव विहरइ	१।१।३२	१।२।६६
कयवलिकम्मे जाव रायगिहं	१।२।५८	१।१।८१
कयवलिकम्मे जाव सरीरे	१।१।६६	१।१।२७
कयवलिकम्मे जाव सव्वालंकार०	१।१।४७	१।१।८१
करयल०	१।५।६८,१२३;१।८।७३,८१,६८, १५८,१६०;१।६।३१;१।१४।३१,५०	१।१।१६
करयल०	१।८।२०३,२०४;१।१६।१३७,१६१, २१६,२६४;१।१७।११	१।१।२६
करयल०	१।१६।२४६	१।१।३६
करयल अंजलिं	१।१।५८,६०	१।१।१६
करयल जाव एवं	१।१।३०;१।१६।१७०,२६२; १।१६।१३,४६;२।१।२०	१।१।२६
करयल जाव एवं	१।६।१७;१।१४।२७,२८;१।१६।४३	१।१।२१
करयल जाव कट्टु	१।१।११८;१।१६।१३३;२।१।११	१।१।२६
करयल जाव कट्टु तहेव जाव समोसरह	१।१६।१४२	१।१६।१३२
करयल जाव कण्हं	१।१६।१३८	१।१६।१३७
करयल जाव पच्चप्पिणंति	१।८।१६६	१।८।१६५
करयल जाव पडिसुणेइ	१।८।१६५	१।१।२६
करयल जाव वद्धावेइ	१।१५।१८	१।१।४८
करयल जाव वद्धावेंति	१।१६।२३६	१।१।४८
करयल जाव वद्धावेंति	१।१७।२६	१।१।३६
करयल जाव वद्धावेत्ता	१।८।१३१;१।१६।२४४	१।१।४८
करयल जाव वद्धावेहि	१।८।१०७	१।१।४८
करयल तं चेव जाव समासोरह	१।१६।१३४	१।१६।१३२
करयल तहत्ति जेणेव	१।१४।१३	१।५।१३
करयलपरिग्गहियं जाव अंजलिं	१।१।२१	१।१।१६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

करयलपरिग्गहियं जाव कट्टु	१।१।३९	१।१।२६
करयलपरिग्गहियं जाव वद्धावेत्ता	१।८।१२९	१।१।४८
करयल वद्धावेइ	१।५।२०	१।१।४८
करयल वद्धावेत्ता	१।८।१०५	१।१।४८
करयल वद्धावेत्ता	१।१६।१५७	१।१।३९
करेइ जाव अडमाणीओ	१।१४।४१,४२	वृत्ति
करेंति जाव पच्चुत्तरंति	१।९।१५	१।२।१४
करेत्ता जाव विगयसोया	१।१८।२७	१।९।४८
करेमो तं चेव जाव णूमेमो	१।१६।२८८	१।१६।२८२
करेह करेत्ता जाव पच्चप्पिणह	२।१।१२	राय० सू० ६
करेह जाव पच्चप्पिणंति	१।८।४०	१।८।५१
कल्लं	१।८।५१	१।१।२४
कल्लं जाव विहरइ	१।५।१२४	१।५।१२४
कसप्पहारे य जाव निवाएमाणा	१।२।३३	१।२।३३
कसप्पहारेहि य जाव तण्हाए	१।२।६७	१।२।३३
कसप्पहारेहि य जाव लयाप्पहारेहि	१।२।४५	१।२।३३
कारणेसु य जाव तहा	१।५।९०	१।१।१६
कालगए जाव प्पहीणे	१।१६।३२२	१।५।८४
कालोभासे जाव वेयणं	१।२।६७	वृत्ति
कासे जोणिसूले जाव कोढे	१।१६।३०	१।१३।२८
किण्हाण य जाव सुक्किलाण	१।१७।२२	१।१७।२३
किण्हाणि य जाव सुक्किलाणि	१।१३।२०	१।१७।२३
किण्होभासा जाव निउरंबभूया	१।७।१३	ओ० सू० ४
कुंभए एवं तं चेव जाव पवेसेइ रोहासज्जे	१।८।१७४	१।८।१७३
कुडवा जाव एगदेसंसि	१।७।१७,१८	१।७।१५,१६
के जाव गमणाए	१।१।१११	१।१।१०७
कोट्टपुडाण य जाव अण्णेसिं	१।१७।२२	वृत्ति
कोट्ठागारंसि सकम्म सं	१।७।२५	१।७।७
कोडुंबिय जाव खिप्पामेव लहुकरणजुत्तं जाव जुत्तामेव उवट्ठवेंति	१।८।५२	उवा० १।४७;१।८।५१
कोडुंबियपुरिसा जाव एवं	१।१५।७	१।१५।६
कोडुंबियपुरिसा जाव ते वि तहेव	१।१।११७	१।१।११६
कोडुंबियपुरिसा जाव पच्चप्पिणंति	१।१।६२	१।१।२३
खंड जाव एडेह	१।१६।७८	१।१६।७४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खंतीए जाव बंभचेरवासेणं	१।१०।५	१।१०।३
खिज्जणाहि य जाव एयमट्ठं	१।१८।१४	१।१८।१०
खीरधाईए जाव गिरिकंदरमल्लीणा	१।१६।३६	आयारचूला १५।१४
गंध जाव उस्सुक्कं	१।८।८४	१।१।३०
गंध जाव पडिविसज्जेइ	१।१६।१६९	१।८।१९०
गंध जाव सक्कारेत्ता	१।७।६	१।१।३०
गंधव्वेहि य जाव विहरंति	१।१६।१५२	१।१६।१५०
गज्जियं जाव थणियसद्दे	१।९।९	१।८।७१
गणनायग जाव आमंतेंति	१।१।८१	१।१।२४
गणिमस्स जाव चउव्विहभंडगस्स	१।८।६६	१।८।६६
गब्भस्स जाव विणेंति	१।२।१७	१।२।१७
गय०	१।८।६३	१।१।६७
गवलगुलिय जाव खुरधारेणं	१।९।१६	उवा० २।२२
गवल जाव एडेमि	१।९।३७	१।९।१६
गहाय जाव पडिगए	१।१८।३९	१।१८।३८
गामघायं वा जाव पंथकोट्टिं	१।१८।२४	१।१८।२२
गामागर जाव अणुपविससि	१।१६।२२९	१।८।५८
गामागर जाव आहिंडह	१।१४।४३;१।१७।१७	१।८।५८
गिण्हामि जाव मग्गणगवेसणं	१।२।२९	१।२।२७,२९
गुणे० किं चालेइ जाव नो परिच्चयइ	१।८।७९	१।८।७४
घडएसु जाव संवसावेइ	१।१२।१९	१।१२।१९
चउत्थ जाव भावेमाणे	१।८।१६	१।१।१९५
चउत्थ जाव विहरइ	१।५।१०१;२।१।३३	१।१।१९५
चउत्थ जाव विहरंति	१।८।१७,२५	१।१।१९५
चउत्थस्स उक्खेवओ	२।४।१	२।२।१
चंपगपायवे०	१।१८।४९	१।१।१०५
चच्चर जाव महापहपहेसु	१।१।६७	१।१।३३
चरगा वा जाव पच्चप्पिणंति	१।१५।७	१।१५।६
चरमाणा जाव जेणेव	१।२।६९	१।१।४
चरमाणे जाव जेणेव	१।५।१०	१।१।४
चरमाणे जाव जेणेव सुभूमिभागे जाव विहरइ	१।५।१०८	१।१।४
चवलं० नहेहिं	१।४।१७	१।४।१४
चारगसोहणं जाव ठिइपडियं	१।१४।३३,३४	१।१।७६-७९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चारुवेसा जाव पडिरूवा	१।२।८	१।१।१७
चालित्तए जाव विप्परिणामित्तए	१।८।७६	१।८।७६
चिट्ठइ जाव उट्ठाए	१।१।१५१	१।१।१५०
चिट्ठइ जाव संजमेणं	१।१।१६३	१।१।१५१
चित्तेहि जाव पच्चप्पिणह	१।८।११७	१।१।२३
चेइए जाव अहापडिरूवं	१।२।६६	१।१।४
चेइए जाव विहरइ	१।१।६४	१।१।४
चेइए जाव संजमेणं	२।१।३	१।१।४
चोक्खा जाव सुहासणवरगया	१।१६।१५२	१।२।१४
चोरनायगं जाव कुडंगे	१।१८।३०	१।१८।२१
चोरविज्जाओ य जाव सिक्खाविए	१।१८।२८	१।१८।२५
छट्ठंछट्ठेणं जाव विहरइ	१।१३।३६	१।१३।३६
छट्ठंछट्ठेणं जाव विहरइ	१।१६।१०८	१।१६।१०६
छट्ठंछट्ठेणं जाव विहरित्तए	१।१६।१०७	१।१६।१०६
छट्ठट्ठम जाव विहरइ	१।१६।१०५	१।१।१६५
जणवयं जाव नित्थाणं	१।१८।३२	१।१८।२२
जहा पोट्टिला जाव परिभाएमाणी	१।१६।६२	१।१४।३८
जहा मंडुए सेलगस्स जाव बलियसरीरे जाए	१।१६।२४-२६	१।५।११४-११६
जहा मल्लिनाए जाव उवायमाणा	१।१७।११	१।८।७२
जहा महब्बले जाव परिवड्ढिया	१।८।३७	राय० सू० ८०४
जहा मागंदियदारगाणं जाव कालियवाए	१।१७।६	१।६।६
जहा वद्धमाणसामी नवरं नवहत्थुस्सेहे०	२।१।१६	आ० सू० १६;वाचनान्तर पृ० १४०
जहा सूरियाभो जाव भासमणपज्जत्तीए	२।१।४०	राय० सू० ७६७
जहा सेलगस्स जाव दाहवक्कंतीए	१।१६।२०	१।५।१०६
जायं च जाव अणुवड्ढेमि	१।२।१४	१।२।१२
जाया जाव पडिलाभेमाणी	१।१४।४६	१।५।४७
जाव एवं चेव पल्हायणिज्जे	१।१२।२३	१।१२।२२
जाव जहा	१।४।२२	१।२।७६
जाव पज्जुवासइ	१।५।१७	१।१।६६
जाव सणियं	१।४।१६	१।४।१३
जाव समणोवासए जाए अभिगयजीवाजीवे जाव पडिलाभेमाणे	१।५।६३,६४	राय० सू० ६६३;१।५।४७
जाव हावभावं	१।८।१२१	१।८।११७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जिमिय जाव सूइभूया	१।२।१४	१।१।८१
जिमियभुत्तुत्तरागयं जाव सुहासण०	१।१६।२१६	१।२।१४
जोव्वणेण य जाव नो खलु	१।८।१५४	१।८।६०
झोडा जाव मिलायमाणा	१।११।४	१।११।२
ठवेंति जाव चिट्ठंति	१।१७।२२	१।१७।२२
डिंभएहि य जाव कुमारियाहि	१।२।२७	१।२।२५
ण्हाए जाव पायच्छित्ते	१।१४।६४	१।१।२७
ण्हाए जाव सरणं उवेइ २ करयल एवं व	१।१६।२६५	१।१६।२६४
ण्हाए जाव सुद्धप्पावेसाइं	१।२।७१	१।१।१२४
ण्हायं जाव पुरिससहस्सवाहिणीयं	१।१४।५३	१।१४।१८
ण्हाया जाव पायच्छित्ता	१।२।६६;१।८।१७६	१।१।२७
ण्हाया जाव बहूहिं	१।८।१६८	१।८।१७६
ण्हाया जाव सरीरा	१।३।११	१।१।२७
ण्हायाणं जाव सुहासण०	१।१६।८	१।७।६
तइयज्झयणस्स उक्खेवओ	२।१।५६	२।१।४६
तइयवग्गस्स निक्खेवओ	२।३।१२	२।१।६३
तएणं से दूए एवं वयासी जहा वासुदेवे नवरं भेरी नत्थि जाव जेणेव	१।१६।१४३,१४४	१।१६।१३४-१४१
तं इच्छामि णं जाव पव्वइत्तए	१।१।१११	१।१।१०४
तं चेव जाव निरावयक्खे समणस्स जाव पव्वइस्ससि	१।१।१०७	१।१।१०६
तं चेव सव्वं भणइ जाव अत्थस्स	१।१८।५२	१।१८।५१
तं रयणिं च णं चोद्दस महासुमिणा वण्णओ	१।८।२६	कल्पसूत्र ४
तक्करे जाव गिद्धे विव आमिसभक्खी	१।२।३३	१।२।११
तच्चं दूयं चंपं नयरिं। तत्थ णं तुम कण्णं अंगरायं सल्लं नंदिरायं करयल तहेव जाव समोसरह। चउत्थं दूयं सोत्तिमइं नयरिं। तत्थ णं तुमं सिसुपालं दमघोससुयं पंचभाइसय-संपरिवुडं करयल तहेव जाव समोसरह। पंचमं दूयं हत्थिसीसं नयरिं। तत्थ णं तुमं दमदंतरायं करयल जाव समोसरह। छट्ठं दूयं महुरं नयरिं। तत्थ णं तुमं		

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

घरं रायं करयल जाव समोसरह। सत्तमं दूयं रायगिहं नयरं। तत्थ णं तुमं सहदेवं जरासंधसुयं करयल जाव समोसरह। अट्ठमं दूयं कोडिण्णं नयरं। तत्थ णं तुमं रुप्पिं भेसगसुयं करयल तहेव जाव समोसरह। नवमं दूयं विराटं नयरिं। तत्थ णं तुमं कीयगं भाउसयसमग्गं करयल जाव समोसरह। दसमं दूयं अवसेसेसु गामागरनगरेसु अणेगाइं रायसहस्साइं जाव समोसरह। तए णं से दूए तहेव निग्गच्छइ जेणेव गामागर तहेव जाव समोसरह।	१।१६।१४५	१।१६।१३२-१३४
तच्चं पि जाव संचिट्ठइ	१।१६।३५	१।१६।३५
तच्चा जाव सब्भूया	१।१२।३१	१।१२।१६
तणकूडे०	१।१४।७७	१।१४।७६
तत्थे जाव संजायभए	१।१।१६८	१।१।१६०
तयावर ईहापूह जाव सण्णिजाइसरणे	१।८।१८१	१।१।१६०
तलवर जाव पभितओ	१।१४।६५	१।५।६
तलवर जाव सत्थवाह	१।५।६	ओ० सू० ५२
तहत्ति जाव पडिसुणेंति	१।५।१३	१।१।२६
तहारूवेहिं जाव विपुलं	१।१।२१५	१।१।२०६
तहेव जाव पहारेत्थ	१।८।१३६,१३७	१।८।६६,१००
तहेव सरीरवाउसिया तं चेव सव्वं जाव अंतं	२।१।५१-५४	२।१।३२-४४
तहेव सेयापीएहिं कलसेहिं ण्हावेइ जाव अरहओ अरिट्ठनेमिस्स छत्ताइछत्तं पडागाइपडाग पासइ २ त्ता विज्जाहरचारणे जाव पासित्ता	१।५।२८,२६	१।१।१२६,१४४,६६
ताओ जाव विदेहे वासे जाव अंतं	१।१६।३२६	१।१।२१२
तिक्खुत्तो जाव एवं	१।१६।३४	१।१६।२६
तिग जाव पहेसु	१।५।२६	१।१।३३
तिग जाव बहुजणस्स	१।१६।२६	१।५।५३
तित्तेसु जाव विमुक्कबंधणे	१।६।४	१।६।४
तुट्ठी वा जाव आणंदो	१।२।६४	१।२।६३
तुब्भण्णं जाव पव्वयामि	१।१२।४३	१।१।१०४
तुरियं जाव वेइय	१।८।१६६	१।४।१४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तुरुक्क जाव गंधवट्टिभूयं	१।१६।१५५	१।१।२२
तेसिं जाव बहूणि	१।१७।६	१।८।७१
थलय०	१।८।४६	१।८।३०
थलय जाव दसद्धवण्णं	१।८।३१	१।८।३०
थलय जाव मल्लेणं	१।८।३२	१।८।३०
थावच्चापुत्ते जाव मुंडे	१।५।८०	१।५।३४
थेरागमणं इंदकुंभे उज्जाणे समोसढा	१।८।८	१।८।१२
थेरा जाव आलित्ते	१।१६।३१५	१।१।१४६
दंडणाणि जाव अणुपरियट्टइ	१।४।१८	सूय० २।२।७८
दंडणाणि य जाव अणुपरियट्टइ	१।३।२४	१।३।२४
दसमस्स उक्खेवओ एवं खलु जंबू जाव अट्ठ	२।१०।१,२	२।२।१,२
दाणधम्मं च जाव विहरइ	१।८।१४१ १५२	१।८।१४०
दारियं जाव झियायमाणिं	१।१६।६४	१।१६।६२
दासचेडियाहिं जाव गरहिज्जमाणी	१।८।१४७	१।८।१४६
दाहिणड्ढभरहस्स जाव दिसं	१।१६।२६६	१।१६।२६७
दिट्ठे जाव आरोग्ग	१।१।२०	१।१।२०
दित्ते जाव विउलभत्तपाणे	१।२।७	वृत्ति
दीहमद्धं जाव वीईवइस्सइ	१।२।७६	१।२।६७
दुपयस्स वा जाव निव्वत्तेइ	१।८।१२६	१।८।११६
दुरुहइ जाव पच्चोरुहइ	१।१७।१३	१।१।१०२
दुरुहंति जाव कालं	१।१६।३२३	१।१६।३२३
दुरूढा जाव पाउब्भवंति	१।८।१४	१।५।६१
दूइज्जमाणा जाव जेणेव	१।१६।३२१	१।१।४
दूइज्जमाणे जाव विहरइ	१।१६।३२०	१।१।४;१।१६।३१६
देवकन्ना	१।८।१५४	१।८।८६
देवकन्ना वा जाव जारिसिया	१।८।८६,१११	वृत्ति
देवयभूयाए जाव निव्वत्तिए	१।८।१२८	१।८।१२६
देवलोगाओ जाव महाविदेहे	१।१६।२४	१।१।२१२
देवाणुप्पिया जाव कालगए	१।१६।३२३	१।१६।३२२
देवाणुप्पिया जाव जीवियफले	१।८।७६	उवा० २।४०
देवाणुप्पिया जाव नाइ	१।१६।२६५	१।५।१२३
देवाणुप्पिया जाव पव्वतिए	१।१६।३४	१।१६।२६
देवाणुप्पिया जाव साहराहि	१।१६।२४२	१।१६।२४०
देवाणुप्पिया जाव सुलद्धे	१।१६।२६	१।१६।२६
देवी जाव पंडुस्स	१।१६।३०१	१।१६।२६२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

देवी जाव पउमनाभ०	१।१६।२३६	१।१६।२३३
देवी जाव साहिया	१।१६।२४०	१।१६।२०८
देवेण वा जाव निग्गंथाओ	१।८।७५	उवा० २।४५
देवेण वा जाव मल्लीए	१।८।१३५	१।८।७५
दोच्चस्स वग्गस्स उक्खेवओ	२।२।१	२।१।६
धण कणग जाव परिभाएउं	१।१।९२	१।१।९१
धण जाव सावएज्जस्स	१।७।३४	१।१।९१
धण जाव सावएज्जे	१।१६।६	१।१।९१
धण्णा णं ते जाव ईसरपभियओ	१।१३।१५	१।१।३३
धम्मं सोच्चा जं नवरं	१।५।८७	१।१।१०१
धम्मं सोच्चा जहा णं देवाणुप्पियाणं, अंतिए बहवे उग्गा भोगा जाव चइत्ता हिरण्णं जाव पव्वइया तहा णं अहं णो संचाएमि पव्वइए	१।५।४५	राय० सू० ६९५
धम्मकहा भाणियव्वा	१।५।७८	१।५।६३
धम्मोत्ति वा जाव विजयस्स	१।२।७५	१।२।६४
धोवसि जाव आसयसि	२।१।३५	२।१।३४
धोवेइ जाव आसयइ	२।१।३८	२।१।३४
धोवेइ जाव चेएइ	१।१६।११९	१।१६।११४
धोवेसि जाव चेएसि	१।१६।११५	१।१६।११४
नंदीसरे अट्ठाहियं करेंति जाव पडिगया	१।८।२२४	जंबू० वक्ष० ५
नगरगिहाणि	१।८।९७	१।८।५८
नगर जाव सण्णिवेसाणं आहेवच्चं जाव विहराहि	१।१।११८	ओ० सू० ६८
नच्चासन्ने जाव पज्जुवासइ	१।१४।८५	१।१।९९
नट्टा य जाव दिन्न०	१।१३।२०	ओ० सू० १
नट्ठमईए जाव अवहिए	१।१७।१०	१।१७।८
नयरिं अणुपविसह	१।१६।२१६	१।१६।२१८
नवमस्स उक्खेवओ एवं खलु जंबू जाव अट्ठ	२।९।१,२	२।२।१,२
नवरं तस्स	१।७।२८,२९	१।७।८,२५,२६
नाइ०	१।५।२६;१।७।६,९,२२,२६,४२;१।१५।११;१।१६।५०,५४;१।१८,५१,५६	१।१।८१
नाइ०	१।१४।१८;१।१५।१६	१।५।२०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नाइ चउण्ह य कुल जाव विहराहि	१।७।२५	१।७।६
नाइ जाव आमंतेइ	१।१४।५३	१।७।६
नाइ जाव नगरमहिलाओ	१।२।१९	१।२।१२
नाइ जाव परियणं	१।१४।१९	१।१।८१
नाइ जाव परियणेण	१।९।४८	१।१।८१
नाइ जाव परिवुडे	१।१६।५०	१।५।२०
नाइ जाव संपरिवुडे	१।१३।१५;१।१४।५३	१।५।२०
नामं वा जाव परिभोगं	१।१६।९७	१।१४।३६
नाम जाव परिभोगं	१।१४।३७	१।१४।३६
नासानीसासवायवोज्झं जाव		
हंसलक्खणं	१।१।१२८	आयारचूला १५।२८
निक्खेवओ	२।४।६	२।१।४५
निक्खेवओ अज्झयणस्स	२।२।८	२।१।४५
निक्खेवओ चउत्थवग्गस्स	२।४।९	२।१।६३
निक्खेवओ दसमवग्गस्स	२।१०।७	२।१।६३
निक्खेवओ पढमज्झयणस्स	२।३।८	२।१।४५
निक्खेवओ बिइयवग्गस्स	२।२।१०	२।१।६३
निग्गंथा जाव पडिसुणेंति	१।१६।२३	१।१।२६
निग्गंथाणं जाव विहरित्तए	१।५।१२४	१।५।११४
निग्गंथी वा	१।१८।६१	१।२।६८
निग्गंथी वा जाव पव्वइए	१।७।२७;१।१०।३;१।११।३,५	१।२।६८
निग्गंथे वा जाव पव्वइए	१।२।७६	१।२।६८
निग्गंथो वा	१।१७।२५,३६	१।२।६८
निग्गंथी वा जाव पंचसु	१।१५।१४	१।३।२४
निग्गंथो वा २ जाव विहरिस्सइ	१।५।१२९	१।२।७६
निद्धियं जाव विज्झायं	१।१।१८४	१।१।१८३
निप्पाणे जाव जीवविप्पजढे	१।१८।५४	१।२।३२
नियग०	१।७।६	१।१।८१
निव्वत्तियनामधेज्जे जाव चाउदंते	१।१।१६७	१।१।१५६
निव्वाघायंसि जाव परिवड्ढइ	१।१६।३६	राय० सू० ८०४
निसंते जाव अब्भणुण्णाया	१।१४।५०	१।१।१०४
निसम्म जं नवरं महब्बलं कुमारं		
रज्जे ठावेमि	१।८।८	१।५।८७
निसीयइ जाव कुसलोदंतं	१।१६।१९८	१।१६।१८७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निस्संचारं जाव चिट्ठंति	१।८।१७२	१।८।१६७
नीलुप्पल०	१।१८।४६	१।६।१६
नीलुप्पल जाव असि	१।१४।७३	१।६।१६
नीलुप्पल जाव खंधंसि	१।१४।७७	१।१४।७३
पउमनाहे जाव नो पडिसेहिए	१।१६।२८७	१।१६।२८५
पंचअणगारसया बहूणि वासाणि सामण्ण-परियागं पाउणित्ता जेणेव पुंडरीए पव्वए तेणेव उवागच्छंति जहेव थावच्चापुत्ते तहेव सिद्धा०	१।५।१२७,१२८	१।५।८३,८४
पंचमवग्गस्स उक्खेवओ एवं खलु जंबू जाव बत्तीसं	२।५।१,२	२।२।१,२
पंचमे जाव भवियव्वं	१।७।३३	१।७।२५,६
पंचयण्णं जाव पूरियं	१।१६।२७६	१।१६।२७५
पंचाणुव्वइयं जाव समणोवासए जाए अहिगयजीवाजीवे जाव अप्पाणं	१।५।४५-४७	वृत्ति; ओ० सू० १२०,१६२
पंडवा०	१।१६।३१३	१।१।११६
पंथएणं जाव विहरइ	१।५।१२६	१।५।१२४
पगइभद्दए जाव विणीए	१।१।२०६;१।१६।२४	ओ०सू०११६
पच्चक्खाए जाव आलोइय०	१।१६।४६	१।१।२०६
पच्चक्खाए जाव थूलए	१।१३।४२	१।१।२०६
पज्जग जाव तओ पच्छा अणुभूयकल्लाणे पव्वइस्ससि	१।१।१११	१।१।११०
पच्चप्पिणह जाव पच्चप्पिणंति	१।१।७७	१।१।२३
पट्टिया जाव गहियाउहपहरणा	१।२।३२	राय०सू० ६६४
पडागे जाव दिसोदिसिं	१।१६।२५२	वृत्ति
पडिबुद्धा जाव विहाडिय	१।१६।६५	१।१६।६२
पडिबुद्धि जाव जियसत्तुं	१।८।३६	१।८।२७
पडिबुद्धी० करयल०	१।८।४७	१।१।३६
पडिलाभेमाणे जाव विहरइ	१।५।५६	१।५।५२
पडिसुणेंति जाव उवसंपज्जित्ता	१।१६।२३	१।५।११३
पढमज्झयणस्स उक्खेवओ	२।७।३;२।८।३;२।६।३	२।२।३
पढमस्स उक्खेवओ	२।१०।३	२।२।३
पणामेत्ता जाव कूवं	१।१६।२४४	१।१६।२४३
पण्णत्ते जाव सग्गं	१।५।६०	१।५।५५

पतिवया जाव अपासमाणी	१।१६।६२	१।१६।५९
पत्तिए जाव सल्लइयपत्तइए	१।७।१५	१।७।१४
पत्तिया जाव चिट्ठंति	१।११।२	१।११।२
पत्तेयं जाव पहारेत्थ	१।१६।१७१	१।१६।१४६
पमाएयव्वं जाव जामेव	१।५।३३	१।१।१४८
परलोए नो आगच्छइ जाव वीईवइस्सइ	१।१५।१४	१।२।७६
परिग्गहिए जाव परिवसित्तए	१।८।१३१	१।८।१०७
परिणमंति तं चेव	१।१२।१७	१।१२।९
परिणममाणा जाव ववरोवेंति	१।१५।१५	१।१५।११
परिणामेणं जाव जाईसरणे	१।१३।३५	१।१।९०
परिणामेणं जाव तयावरणिज्जाणं	१।१४।८३	१।१।१९०
परितंता जाव पडिगया	१।१३।३१	१।४।१९
परिपेरंतेणं जाव चिट्ठंति	१।१७।२२	१।१७।२२
परियागए जाव पासित्ता	१।३।१९	१।३।५
परियाणह जाव मत्थयंसि	१।१।४८	१।१।४८
पल्लंसि जाव विहरंति	१।७।२०	१।७।१६
पवर जाव पडिसेहित्था	१।१६।२५६	१।८।१६५
पवर जाव भीए	१।१८।४४	१।१८।४२
पवरविवडिय जाव पडिसेहिया	१।१६।२५३	१।८।१६५
पव्वए जाव सिद्धे	१।५।१०४,१०५	१।५।८३,८४
पव्वावेइ जाव उवसंपज्जित्ता	२।१।३०,३१	१।१।१५०,१५१
पव्वावेइ जाव जायामायाउत्तियं	१।१।१९२	१।१।१५०
पसत्थदोहला जाव विहरइ	१।८।३३	१।१।६८,६९
पाणाइवाएणं जाव मिच्छदंसणसल्लेणं	१।६।४	१।१।२०६
पाणाणुकंपयाए जाव अंतरा	१।१।१८९	१।१।१८१
पाणाणुकंपयाए जाव सत्ताणुकंपयाए	१।१।१८२	१।१।१८१
°पामोक्खा जाव वाणियगा	१।८।८१	१।८।६६
°पामोक्खे जाव वाणियगे	१।८।८३	१।८।६६
पायसंघट्टाणाणि य जाव रयरेणुगुंडणाणि	१।१।१८९	१।१।१५३
पावयणं जाव पव्वइए	१।२।७३	१।१।१०१;भ० ९।१५०,१५१
पावयणं जाव से जहेयं	१।१२।३५	१।१।१०१
पासाईए जाव पडिरूवे	१।१।८९	१।१।८९
पासित्ता जाव नो वंदसि	१।५।६७	१।५।६६
पियं जाव विविहा	१।१।२०६	भ० २।५२

पीइदाणं जाव पडिविसज्जेइ	१।३।३१	१।१।३०
पीइमणा जाव हियया	२।१।११	१।१।१६
पीढं	१।५।११७	१।५।११०
पुच्छगाए जाव एमहालियं	१।१।१५४,१५५	१।८।१५३
पुढवि जाव पाओवगमणं	१।५।८३	१।१।२०६
पुत्तधायगस्स जाव पच्चामित्तस्स	१।२।५६,६४	१।२।४०
पुप्फ जाव मल्लालंकार	१।२।१४	१।२।१२
पुप्फिया जाव उवसोभेमाणा	१।१३।१६	१।११।२
पुरापोराणं जाव पच्चणुब्भवमाणी	१।१६।६२	वृत्ति
पुरापोराणं जाव विहरइ	१।१६।११३	१।१६।६२
पुव्वभवपुच्छा एवं	२।१।५०	२।१।१५
पोक्खरिणीओ जाव सरसरपंतियाओ	१।१३।१५	राय०सू० १७४
पोसहसालं जाव पुव्वसंगइयं	१।१६।२०१-२०३	१।१६।२३७-२३६
पोसहसालाए जाव विहरइ	१।१३।१४	१।१।५३
फलिया जाव उवसोभेमाणा	१।११।४	१।११।२
फासुएसणिज्जेणं जाव तेगिच्छं	१।५।११४	१।५।११०
फासुयं पीढ जाव विहरइ	१।५।११३	१।५।११०
बंधित्ता जाव रज्जू	१।१४।७७	१।१४।७३
बहिया जाव खणावेत्तए	१।१३।१५	१।१३।१५
बहिया जाव विहरंति	१।५।११८	१।१।१६६
बहिया जाव विहरित्तए	१।५।११७	१।१।१६६
बहुनायओ एवं जहा पोट्टिला जाव उव्वलद्धे	१।१६।६७	१।१४।४३
बहूइं जाव पडिगयाइं	१।१६।१८२	१।८।१६१
बहूणि गामाणि जाव गिहाइं	१।१६।१६६	१।८।५८
बहूहिं जाव चउत्थ विहरइ	१।५।३८	१।१।१६५
बहूसु जाव विहरेज्जाह	१।६।२०	१।६।२०
बारवइं एवं जहा पंडू तहा घोसणं घोसावेइ जाव पच्चप्पिणंति पंडुस्स जहा	१।१६।२२३,२२४	१।१६।२१३,२१४
बावत्तरिं कलाओ जाव अलंभोगसमत्थे	१।१६।३०८,३०६	१।१।८४,८५
बासट्ठि जाव उत्तरइ	१।१६।२८७	१।१६।२८५
बासट्ठि जाव उत्तिण्णा	१।१६।२८७	१।१६।२८५
बिइयज्झयणस्स निक्खेवओ	२।१।५५	२।१।४५
बुज्झिहिइ जाव अंतं	१।१३।४४	१।१।२१२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भगवओ जाव पव्वइत्तए	१।१।११३	१।१।१०४
भड०	१।८।६४	१।८।५७
भवणवइ० तित्थयर०	१।८।३६	कल्पसूत्र महावीरजन्म प्रकरण
भवित्ता जाव चोद्दसपुव्वाइं	१।१४।८२	१।५।८०
भवित्ता जाव पव्वइत्तए	१।८।२०४;२।१।२७	१।१।१०४
भवित्ता जाव पव्वइस्सामो	१।१२।४०	१।१।१०१
भवित्ता जाव पव्वयामो	१।८।१८६;१।१६।३१०	१।१।१०१
भाणियव्वाओ जाव महाघोसस्स	२।४।८	ठाणं० २।३५५-३६२
भारहाओ जाव हत्थिणाउरं	१।१६।२४०	१।१६।२५४
भाव जाव चित्तेउं	१।८।११८	१।८।११७
भासासमिए जाव विहरइ	१।५।३५-३७	वृत्ति
भीए जाव इच्छामि	१।१२।३९	१।५।२१
भीए जाव संजायभए	१।१४।६९	१।१।१६०
भीया जाव संजायभया	१।९।२५,२७	१।१।१६०
भीया वा	१।८।७९	१।८।७३
भीया संजायभया	१।८।७२	१।१।१६०
भुंजावेंति जाव आपुच्छंति	१।८।६६	१।८।६६
०भुलुत्तरागए जाव सुइभूए	१।१२।४	१।२।१४
भेसज्जेहिं जाव तेगिच्छं	१।१३।२२	१।५।११०
भोगभोगाइं जाव विहरइ	१।१।६९	१।१।१७
भोगभोगाइं जाव विहरति	१।१६।१८३	१।१।३२
भोगभोगाइं जाव विहराहि	१।१६।२०८	१।१।३२
मइविकप्पणाहिं जाव उवणेंति	१।१६।२४७	ओ० सू० ५७
मज्झमज्झेणं जाव सयं	१।१६।१६६	१।१६।२१८
मट्टियाए जाव अविरघेणं	१।८।१४३	१।५।६०
मट्टियालेवे जाव उप्पतित्ता	१।६।४	१।६।४
मणुण्णे तं चेव जाव पल्हायणिज्जे	१।१२।८	१।१२।४
मत्थयछिड्डाए जाव पडिमाए	१।८।४१,४२	१।८।४१
मयूरपोयगं जाव नदुल्लगं	१।३।२८	१।३।२७
महत्थं०	१।८।८१	१।८।८१
महत्थं जाव उवणेंति	१।८।८४	१।८।८१
महत्थं जाव तित्थयराभिसेयं	१।८।२०५	१।१।११६
महत्थं जाव निक्खमणाभिसेय	१।५।९८	१।१।११६
महत्थं जाव पडिच्छइ	१।१७।१७	१।८।८२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महत्थं जाव पाहुडं	१।१७।१६	१।५।२०
महत्थं जाव पाहुडं रायारिहं	१।१३।१५	१।५।२०
महत्थं जाव रायाभिसेयं	१।५।६२;१।१६।३७	१।१।११६
महब्बले जाव महया	१।८।१६	१।५।३४
महयाहय जाव विहरइ	२।१।१०	राय० सू० ८
महालियं जाव बंधित्ता अत्थाह जाव उदगंसि	१।१४।७७	१।१४।७५
महावीरस्स जाव पव्वइस्ससि	१।१।११०	१।१।१०६
महिड्ढीए जाव महासोक्खे	१।१।५३	सूय०२।२।७३
महुरालाउयं जाव नेहावगाढं	१।१६।८	१।१६।८
माणुस्सगाइं जाव विहरइ	१।१५।१६	१।१।६७
माया इ वा जाव सुण्हा	१।१४।७१	सूय० २।२।७
मासाणं जाव दारियं	१।१६।१२४	१।२।२०
माहण जाव वणीमगाण	१।१४।३८	आयारचूला १।१६
माहणी जाव निसिरइ	१।१६।२४	१।१६।१४
मित्त	१।७।२२	१।१।८१
मित्त जाव चउत्थ	१।७।१०	१।७।६
मित्त जाव बहवे	१।७।३८	१।७।२५,११
मित्त जाव संपरिवुडा	१।५।२०	१।२।१२
मित्तनाइ गणनायग जाव सद्धिं	१।१।८१	१।१।८१
मित्तपक्खं जाव भरहो	१।१।११८	वृत्ति
मुडावियं जाव सयमेव	१।१।१६१	१।१।१४६
मुंडे जाव पव्वयाहि	१।१६।१४	१।१।१०१
मुच्छिए जाव अज्झोववण्णे	१।१६।२६	१।१६।२८
मेहे जाव सवणाए	१।१।१५४	१।१।१०६
य णं जाव परमसुइभूए	१।१२।२२	१।१।८१
रज्जइ जाव नो विप्पडिघाय०	१।१६।४६	१।१७।२५
रज्जं च जाव अंतेउरं	१।१६।२६	१।१।१६
रज्जे जाव अंतेउरे	१।१४।६०	१।१४।२१
रज्जे य जाव अंतेउरे	१।८।१५१;१।१६।१८७;१।१६।२६	१।१।१६
रज्जे य जाव वियंगेइ जाव अंगमगाइ	१।१४।२२	१।१४।२१
रज्जे य जाव वियत्तेइ	१।१४।२२	१।१४।२१
रण्णो जाव तहत्ति	१।१६।३०३	१।८।१०४
रण्णो वा जाव एरिसए	१।८।१५३	१।८।६७
रयण जाव आभागी	१।१८।५६	१।१।६१;१।१८।५१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रहमहया	१।१६।१४७	१।८।५७
राईसर जाव गिहाइं	१।१४।४३	१।८।५८
राईसर जाव विहरइ	१।८।१४६	१।८।१४०
रायाहीणा जाव रायाहीणकज्जा	१।१४।५६	१।१४।५६
रिउव्वेय जाव परिणिट्ठिया	१।८।१३६	ओ० सू० ६७
रुट्ठा जाव मिसिमिसेमाणी	१।२।५७	१।१।१६१
रूवेण य जाव उक्किट्ठसरीरा	१।१६।२००	१।८।६०
रूवेण य जाव लावण्णेण	१।१६।१६०	१।८।३८
रूवेण य जाव सरीरा	१।१४।११	१।८।६०
रोयमाणा य जाव अम्मापिऊण	१।१८।१३	१।१८।६
रोयमाणि जाव नावयक्खसि	१।६।४०	१।६।४०
रोयमाणे जाव विलवमाणे	१।२।३४	१।२।२६
रोयमाणे जाव विलवमाणे	१।६।४७	१।६।४०
लद्धमईए जाव अमूढदिसाभाए	१।१७।१३	१।१७।१२
लवण जाव ओगाहित्तए	१।६।६	१।६।४
लवण जाव ओगाहेह	१।६।५	१।६।४
लवणसमुद्दे जाव एडेमि	१।६।२०	१।६।१६
लोइयाइं जाव विगयसोए	१।१८।५७	१।६।४८
वंदामो जाव पज्जुवासामो	१।१३।३८	ओ० सू० ५२
वंदित्तए जाव पज्जवासित्तए	२।१।१२	राय० सू० ६ वृत्ति
वण्णहेउं वा जाव आहारेइ	१।१८।४८	१।१८,६१
वण्णेणं जाव अहिए	१।१०।४	१।१०।२
वण्णेणं जाव फासेणं	१।१२।३	१।१२।१२
वत्थ जाव पडिविसज्जेइ	१।१४।१६	१।८।१६०
वत्थ जाव सम्माणेत्ता	१।१६।५४	१।७।६
वत्थस्स जाव सुद्धेणं	१।५।६१	१।५।६१
वत्थे जाव तिसंझं	१।७।३३	१।७।६
वयासी जाव के अन्ने आहारे जाव पव्वयामि	१।१२।४५	१।५।६०
वयासी जाव तुसिणीए	१।१६।१६,१७	१।१६।१४,१५
वरतरुणी जाव सुरूवा	१।१।१३७	१।१।१३४
ववरोवेह जाव आभागी	१।१८।५३	१।१८।५२
वाइय जाव रवेणं	१।८।२०२	१।१।११८
वाणियगाणं जाव परियणा	१।८।६७	१।८।६६
वाबाहं वा जाव छविच्छेयं	१।४।२०	१।४।११

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वायणाए जाव धम्माणुओगचिंताए	१।१।१८९	१।१।१५३
वाराओ तं चेव जाव नियघरं	१।९।४	१।९।४
वावीसु य जाव विहरेज्जाह	१।९।२०	१।९।२०
वासाइं जाव देंति	१।२।१२	१।२।१२
वासुदेवपामोक्खे जाव उवागए	१।१६।१७७	१।१६।१७६
वासुदेवे धणुं परामुसइ वेढो	१।१६।२५८	वृत्ति
वासे जाव असीइं च सयसहस्सा दलइत्तए	१।८।१९४	१।८।१९४
विउला पगाढा जाव दुरहियासा	१।१९।४०	१।१।१६२
विगोवइत्ता जाव पव्वइए	१।१९।२९	ओ० सू० ५२
विजया जाव अवक्कमामो	१।२।४७	१।२।४४
विणिम्मुयमाणी २ एवं	१।५।३३	१।१।१४८
वेज्जा य जाव कुसलपुत्ता	१।१३।३०	१।१३।२९
सइं वा जाव अलभमाणा	१।९।२२,२४	१।९।२१
सइं वा जाव जेणेव	१।९।२३	१।९।२१
संकामेत्ता जाव महत्थं पाहुडं	१।८।८४	१।८।८१
संकिए जाव कलुससमावण्णे	१।३।२४	१।३।२१
संगयगयहसिय०	१।३।८	१।१।१३४
संचाएइ जाव विहरित्तए	१।५ ११८	१।५।११७
संचाएंति० करेत्तए ताहे दोच्चं पि अवक्कमंति	१।४।१४,१५	१।४।११,१२
संजत्तगाणं जाव पडिच्छइ	१।८।८२	१।८।८१
संता जाव भावा	१।१२।३२	१।१२।३१
संताणं जाव सब्भूयाणं	१।१२।२९	१।१२।१९
संते जाव निविण्णे	१।८।७९	१।४।१२
संते जाव भावे	१।१२।२९	१।१२।१९
संपरिवुडे एवं जाव विहरइ	१।८।१४७	१।१६।१७८
संभग्गं जाव पासित्ता	१।१६।२६३	१।१६।२६२
संभग्गं जाव सण्णिवइया	१।१६।२७८	१।१६।२६२
संभग्गं तोरण जाव पासइ	१।१६।२७८	१।१६।२६२
संसारभउव्विग्गा जाव पव्वइत्तए	१।१४।५३	१।१।१४५
संसारभउव्विग्गे जाव पव्वयामि	१।५।८९	१।१।१४५
सकोरेंट जाव सेयवर०	१।८।५७	१।१।६६
सकोरेंटमल्लदाम जाव सेयवरचामराहिं महया	१।८।१६१	१।८।५७
सकोरेंट० सेयचामर हयगयरहमहया-भडचडगरेण जाव परिक्खित्ता	१।१६।१५३	१।८।५७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सकोरेंट हयगय	१।१६।१५७	१।८।५७
सक्का जाव नन्नत्थ	१।५।२५	१।५।२४
सखिखिणियाइं जाव वत्थाइं	१।८।२०३	१।८।७६
सगज्जिया जाव पाउससिरी	१।१।६४	१।१।५६
सज्जइ जाव अणुपरियट्टिस्सइ	१।१५।१६	१।३।२४
सण्णद्ध०	१।१६।२४८	१।२।३२
सण्णद्ध जाव गहिया	१।१६।१३४;१।१८।३५	१।२।३२
सण्णद्ध जाव पहरणा	१।१६।२५१	१।२।३२
सण्णद्धबद्ध जाव गहियाउह०	१।१६।२३६	१।२।३२
सत्तट्ठ जाव उप्पयइ	१।६।३७	१।६।३६
सत्तट्ठतलाइं जाव ग्ररहन्नगं	१।८।७७	१।८।७३
सत्तमस्स वग्गस्स उक्खेवओ एवं खलु जंबू जाव चत्तारि	२।७।१,२	२।२।१,२
सत्तुस्सेहे जाव अज्जसुहम्मस्स	१।१।६	ओ० सू० ८२
सत्थवज्झा जाव कालमासे	१।१६।३१	१।१६।३१
सद्द जाव गंधाणं	४।१।१७।२	१।१७।२२
सद्दफरिसरसरूवगंधे जाव भुंजमाणे	१।५।६	ओ० सू० १५
सद्दहंति जाव रोएंति	१।१५।१३	१।१।१०१
सद्दावेइ जाव जेणेव	१।८।६६,१००	१।८।६२,६३
सद्दावेइ जाव तं	१।७।१०	१।७।६,७,६
सद्दावेइ जाव तहेव पहारेत्थ	१।८।११२,११३	१।८।६६,१००
सद्दावेइ जाव पहारेत्थ	१।८।१५५,१५६	१।८।६६,१००
सद्दावेइ जाव सद्दावेंति	१।१।१३६	१।१।१३८
सद्देणं जाव अम्हे	१।३।१६	१।३।१८
समणस्स जाव पव्वइत्तए	१।१।१०७	१।१।१०४
समणस्स जाव पव्वइस्ससि	१।१।१०८,११२	१।१।१०६
समणाउसो जाव पंच	१।७।३५,४३	१।७।२७
समणाउसो जाव पव्वइए	१।१०।५;१।१८।४८;१।१६।४२,४७	१।३।२४
समणाउसो जाव माणुस्सए	१।६।५३	१।६।४४
समणाणं जाव पमत्ताणं	१।५।११८	१।५।११७
समणाणं जाव वीईवइस्सइ	१।३।३४	१।२।७६
समणाणं जाव सावियाण	१।१७।३६	१।२।७६
समणाण य जाव परिवेसिज्जइ	१।८।२००	१।८।१६६,१६७
समत्तजालाकुलाभिरामे जाव अंजणगिरि०	१।१६।१४०	ओ० सू० ६३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समाणा जाव चिट्ठंति	१।१५।१०	१।१५।९
समाणी जाव विहरित्तए	१।२।१७	१।२।१७
समोवइए जाव निसीइत्ता	१।१६।२२७,२२८	१।१६।१९७,१९८
समोसरणं	१।५।८५	१।१।४
सम्मज्जिओवलित्तं जाव सुगंधवरगंधियं	१।१।३३	'१।१।२२
सम्मज्जिओवलित्तं सुगंध जाव कलियं	१।३।९	१।१।२२
सम्माणेइ जाव पडिविसज्जेइ	१।१६।३००	१।१४।१६
सयमेव० आयार जाव धम्ममाइक्खइ	१।१।१५०	१।१।१४९
सरिसगं जाव गुणोववेयं	१।८।१२०	१।८।४१
सरिसियाओ जाव समणस्स पव्वइस्ससि	१।१।१०९	१।१।१०८
सव्वओ जाव करेमाणा	१।१६।२३	१।१६।२३
सव्वं तं चेव आभरणं	१।५।३०-३२	१।१।१४५-१४७
सव्वज्जुईए जाव निग्घोसनाइयरवेणं	१।१।३३	ओ० सू० ६७
सव्वट्ठाणेसु जाव रज्जधुराचिंतए	१।१४।५६	१।१४।५६;१।१।१६
सहइ जाव अहियासेइ	१।११।३	१।११।५
सहजायया जाव समेच्चा	१।८।१०,११	१।३।६,७
सहियाणं जाव पुव्वरत्ता०	१।५।११८	१।३।७
साइमं जाव परिभाएमाणी	१।१६।९३	१।१६।९२
सामदंड०	१।८।४५;१।१४।४	१।१।१६
सालइएणं जाव नेहावगाढेणं	१।१६।२५,२६	१।१६।८
सालइयं जाव आहारेसि	१।१६।१६	१।१६।१६
सालइयं जाव गोवेइ	१।१६।८	१।१६।८
सालइयं जाव नेहावगाढं	१।१६।१६;१९,२०	१।१६।८
सालइयस्स जाव नेहावगाढस्स	१।१६।२२	१।१६।८
सालइयस्स जाव एगंमि	१।१६।१९	१।१६।१६
साहरह जाव ओलयंति	१।८।९२	१।८।४८
सिंगारा जाव कुसला	१।१।१३६	१।१।१३४
सिंगारागारचारूवेसाओ जाव कुसलाओ	१।१।१३५	१।१।१३४
सिंघाडग०	१।५।५३	१।१।३३
सिंघाडग जाव पहेसु	१।३।३३;१।१३।२९;१।१६।१५३;१।१८।१६	१।१।३३
सिंघाडग जाव बहुजणो	१।७।४१;१।८।२००;१।१३।२६	१।५।५३
सिंघाडग जाव महया	१।१।९५	ओ० सू० ५२
सिक्खावइए जाव पडिवण्ण	१।१३।३६	उवा० १।४५
सिज्झिहिइ जाव मंतं	१।१५।२१	१।१।२१२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सिज्झिहिइ जाव सव्वदुक्खाण०	१।१६।४६	१।१।२१२
सिद्धे जाव प्पहीणे	१।५।८४	ठाणं १।२४६
सीलव्वय जाव न परिच्चयसि	१।८।७४	१।८।७४
सीलव्व तहेव जाव धम्मज्झाणोवगए	१।८।७७,७८	१।८।७४,७५
सीहनाय जाव रवेणं	१।८।६७	ओ०सू० ५२
सीहनाय जाव समुद्दरवभूयं	१।१८।३५	१।८।६७
सुइं वा०	१।६।३७	१।२।२६
सुइं वा जाव अलभमाणे	१।१६।२१५	१।१६।२१२
सुइं वा जाव लभामि	१।१६।२२१	१।१६।२१२
सुई वा जाव उवलद्धा	१।१६।२२६	१।१६।२१२
सुकुमालपाणिपाए जाव सुरूवे	१।५।८	ओ०सू० १४३
सुभरूवत्ताए	१।१५।१३	१।१५।११
सुमिणपाढगपुच्छा जाव विहरइ	१।८।२६	१।१।३२
सुमिणा जाव भुज्जो २ अणुवूहति	१।१।३१	१।१।२६
सुरं च जाव पसन्नं	१।१८।३३	१।१६।१४६
सुरट्ठाजणवए जाव विहरइ	१।१६।३१६	१।१६।३१८
सुरूवा जाव वामहत्थेणं	१।१६।१६३	वृत्ति
सूमालं निव्वत्तवारसाहस्स इमं एयारूवं	१।१६।३०५,३०६	१।१६।३३,३४
सूमालिया जाव गए	१।१६।८७	१।१६।६२
से धम्मे अभिरुइए तए णं देवा पव्वइत्तए	१।१६।१३	१।१।१०४
सेयवर हयगय महया भडचडगरपहकरेणं	१।१६।२३७	१।८।५७
सेसं जहा सागरस्स जाव सयणिज्जाओ	१।१६।८१-८६	१।१६।५६-६१
सोणियासवस्स जाव अवस्स०	१।१८।६१	१।१।१०६
सोणियासवस्स जाव विद्धंसणधम्मस्स	१।१८।४८	१।१।१०६
हए जाव पडिसेहिए	१।१६।२५७	१।८।१६५
हट्ठ जाव हियया	२।१।२०,२१,२४,२५	१।१।१६
हट्ठतुट्ठ जाव पच्चप्पिणंति	१।१।२३	१।१।१६,२२
हट्ठतुट्ठ जाव मत्थए	१।५।१३	१।१।२६
हट्ठतुट्ठ जाव हियए	१।१।२०;१।१६।१३५	१।१।१६
हत्थाओ जाव पडिनिज्जाएज्जासि	१।७।६	१।७।६
हत्थिखंध जाव परिवुडे	१।१६।१४६	१।१६।१४६
हत्थिखंधवरगए जाव सेयवरचामराहिं	१।८।१६३	१।८।५७
हत्थिणाउरे जाव सरीरा	१।१६।२०३	१।१६।२००
हत्थी जाव छुहाए	१।१।१८५	१।१।१५७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हत्थीहि य जाव कलभियाहि	१।१।१६८	१।१।१५७
हत्थीहि य जाव संपरिवुडे	१।१।१५८	१।१।१५७
हयगय०	१।१६।२४८	१।८।५७
हयगय जाव पच्चप्पिणंति	१।१६।१३९	ओ०सू० ५६
हयगय जाव परिवुडा	१।१६।१५६	१।८।५७
हयगय जाव रवेणं	१।१।६९	१।१।६७
हयगय जाव हत्थिणाउराओ	१।१६।३०३	१।८।५७
हयगय संपरिवुडे	१।१६।१७४	१।८।५७
हयगया जाव अप्पेगइया	१।१६।१३८	१।५।१५
हय जाव सेणं	१।८।१६२	१।८।५७
हयमहिय जाव नो पडिसेहिए	१।१६।२८५	१।८।१६५
हयमहिय जाव पडिसेहिए	१।८।१६६;१।१६।२५९	१।८।१६५
हयमहिय जाव पडिसेहित्ता	१।१६।२८९	१।८।१६५
हयमहिय जाव पडिसेहिया	१।१८।४२	१।८।१६५
हयमहिय जाव पडिसेहेइ	१।१८।२४	१।८।१६५
हयमहिय जाव पडिसेहेंति	१।१८।४१	१।८।१६५
हरिसवस०	१।१।१९१	वृत्ति
हियए जाव पडिसुणेइ	१।१।१२६	ओ०सू० ५६
हियाए जाव आणुगामियत्ताए	१।१३।३८	ओ०सू० ५२
हिरण्णं जाव वइरं	१।१७।१६	१।१७।१६
हिरण्णागरे य जाव बहवे	१।१७।१८	१।१७।१४
हीलणिज्जे०	१।४।१८	१।३।२४
हीलणिज्जे संसारो भाणियव्वो	१।५।१२५	१।३।२४
हीलिज्जमाणीए जाव निवारिज्जमाणीए	१।१६।११८	१।६।११७
हीलेंति जाव परिभवंति	१।१६।११७	१।३।२४
होत्था जाव सेणियस्स रण्णो		
इड्ढा जाव विहरइ	१।१।१७	वृत्ति

उवासगदसाओ

अंतलिक्खपडिवण्णे एवं वयासी	७।१७	७।१०
अंतियं जाव असिं	५।२,२१	३।२०,२१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अग्गिमित्ताए वा जाव विहरइ	७।२६	७।२६
अज्ज जाव ववरोविज्जसि	३।४४	२।२२
अज्भवसाणेणं जाव खओवसमेणं	८।३७	१।६६
अट्ठेहि य जाव वागरणेहि	७।४८	६।२८
अट्ठेहि य जाव निप्पट्ठ०	६।२८	६।२८
अड्ढे चत्तारि	६।३,४;१०।३,४	२।३,४
अड्ढे जहा आणंदो नवरं अट्ठहिरण्णको-डीओ सकंसाओ निहाणपउत्ताओ अट्ठहि वड्ढि अट्ठहि सकंसाओ पवि अट्ठवया दस गो साहस्सिएणं वएणं	८।३-५	१।११-१३
अड्ढे जाव अपरिभूए	१।११	ओ०सू० १४१
अणारिए जहा चुलणीपिया तहा चिंतेइ जाव कणीयसं जाव आइंचइ	५।४२	३।४२
अणारिए जाव समाचरति	३।४४;४।४२	३।४२
अणुट्ठाणेणं जाव अपुरिसक्कारपरक्कमेणं	६।२१,२२,२३;७।२३,२४	६।२०
अण्णदा कदाइ बहिया जाव विहरइ	१।५४	ना० १।१।१८६
अपच्छिम जाव अणवकंखमाणे	१।७२	१।६५
अपच्छिम जाव भत्तपाण	८।४६	१।६५
अपच्छिम जाव झूसियस्स	८।४६	१।६५
अपच्छिम जाव वागरित्तए	८।४६	८।४६
अब्भणुण्णाए तं चेव सव्वं कहेइ जाव	१।७६	१।७१-७८
अभिगयजीवाजीवे जाव पडिलाभेमाणे	१।५५	ओ० सू० १६२
अभिगयजीवाजीवे जाव विहरइ	८।१६	ओ० सू० १६२
अभिगयजीवेजी णं जाव अणइक्कमणिज्जेणं	१।३१	ओ० सू० १६२
अभीए जाव विहरइ	२।२६,३५; ३।२२	२।२३
अभीयं जाव धम्मज्भाणोवगयं	२।२४	२।२३
अभीयं जाव पासइ	२।४०;३।२३	२।२४
अभीयं जाव विहरमाणं	२।२८,३०	२।२४
अवहरइ वा जाव परिट्ठवेइ	७।२६	७।२५
अस्सिणी भारिया। सामी सामासढे जहा आणंदो तहेव गिहिधम्मं पडिवज्जइ। सामी बहिया विहरइ	६।५-१५	२।५-१५
असोगवणिया जाव विहरसि	७।१७	७।८
अहीण जाव सुरूवा	१।१४	ओ० सू० १५
अहीण जाव सुरूवाओ	८।६	ओ० सू० १५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आओसेसि वा जाव ववरोवेसि	७।२६	७।२५
आपुच्छित्ता जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ, २ त्ता जहा आणंदो जाव समणस्स	२।१९	१।६०
आलोइज्जइ जाव तवोकम्मं	१।७८	ठा० ३।३४८
आलोइज्जइ जाव पडिवज्जिज्जइ	१।७८	वृत्ति अ० ३
आलोएइ जाव जहारिहं	८।५०	वृत्ति अ० ३
आलोएइ जाव पडिवज्जइ	३।४६	वृत्ति अ० ३
आलोएयव्वं जाव पडिवज्जेयव्वं	१।८०	वृत्ति अ० ३
आलोएह जाव पडिवज्जेह	१।७८	वृत्ति अ० ३
आलोएहि जाव अहारिहं	८।४६	वृत्ति अ० ३
आलोएहि जाव तवोकम्मं	१।७७	वृत्ति अ० ३
आलोएहि जाव पडिवज्जाहि	१।१८;३।४५;८।४९	वत्ति अ० ३
इड्ढी जाव पंचविहे	१।१४	ओ० सू० १५
इड्ढी जाव अभिसमण्णागए	२।४०	२।४०
इमेणं जाव धम्मणिसंतए	१।६५	१।६४
इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था	३।४२	१।७३
उक्खेवो	३।१;४।१;५।१;६।१;७।१;८।१;९।१;१०।१	२।१
उज्जलं जाव अहियासेइ	२।३३,३९;३।२६	वृत्ति
उज्जलं जाव अहियासेमि	३।४४	वृत्ति
उज्जलं जाव दुरहियासं	२।२७	वृत्ति
उट्ठाणे इ वा जाव अणियना	६।२१,२३	६।२०
उट्ठाणे इ वा जाव नियना	६।२१,२३;७।२६	६।२०
उट्ठाणे इ वा जाव परक्कमे	६।२०,२३;७।२६	६।२०
उट्ठाणे इ वा जाव पुरिसक्कार०	७।२४	६।२०
उट्ठाणेणं जाव परक्कमेणं	६।२३	६।२०
उट्ठाणेणं जाव पुरिसक्कारपरक्कमेणं	६।२१;७।२३	६।२०
उद्धाविए जहा चुलणीपिया तहेव सव्वं भाणियव्वं । नवरं अग्गिमित्ता भारिया कोलाहलं सुणित्ता भणइ । सेसं जहा चुलणीपिया वत्तव्वया सव्वा नवरं अरुणच्चए विमाणे उववाओ जाव महाविदेहे	७।७८-८८	३।४२-५२
उद्धाविए जहा सुरादेवो । तहेव भारिया पुच्छइ, तहेव कहेइ । सेसं जहा चुलणीपियस्स जाव सोहम्मे	५।४२-५२	३।४२-५२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उप्पण्णणाणदंसणधरे जाव तच्चकम्मसंपया	७।११,१८	७।१०
उप्पण्णनाणदंसणधरे जाव महियपूइए जाव तच्च०	७।४५	७।१०
उरालाइं जाव भुंजमाणे	८।२७	८।१९
उरालाइं जाव विहरित्तए	८।१८	८।१८
उरालेणं जहा कामदेवे जाव सोहम्मे	३।५०-५२	२।५३-५५
उरालेणं जाव किसे	८।३५	१।६४
उरालेणं तवोकम्मेणं जहा आणंदो तहेव अपच्छिम०	८।३६	१।६५
एक्कारसमं जाव आराहेइ	१।६३	१।६२
एवं एक्कारस उवासगपडिमाओ तहेव जाव सोहम्मे कप्पे अरुणज्झए विमाणे जाव अंतं काहिइ	६।३५-४१	२।५०-५६
एवं तहेव उच्चारेयव्वं सव्वं जाव कणीयसं जाव आइंचइ। अहं तं उज्जलं जाव अहियासेमि	३।४४	३।२७-३८
एवं दक्खिणेणं पच्चत्थिमेणं च	१।६६;८।३७	१।६६
एवं देवो दोच्चं पि तच्चं पि भणइ जाव ववरोविज्जसि	४।४१	४।३९
एवं मज्झिमयं, कणीयसं, एक्केक्के पंच सोल्लया। तहेव करेइ, जहा चुलणीपियस्स, नवरं एक्केक्के पंच सोल्लया	४।२२-३८	३।२२-३८
एवं वण्णगरहिया तिण्णि वि उवसग्गा तहेव पडिउच्चारेयव्वा जाव देवो पडिगओ	२।४५	२।२४-४०
ओहयमणसंकप्पा जाव झियाइ	८।४२	रा० सू० ७६५
कज्जेसु य आपुच्छउ	१।५९	१।१३
कदाइ जहा कामदेवो तहा जेट्ठपुत्तं ठवेत्ता तहा पोसहसालाए जाव धम्मपण्णत्ति	६।३३,३४	२।१८,१९
करएहि य जाव उट्टियाहि	७।७	७।७
करगा य जाव उट्टियाओ	७।२२	७।७
करेइ। सेसं जहा चुलणीपियस्स तहा भद्दा भणइ। एवं सेसं जहा चुलणीपियस्स निरवसेसं जाव सोहम्मे	४।४५-५२	३।४५-५२
कल्लं जाव जलंते	१।५७;७।१२	ओ० सू० २२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कल्लं विउलं	१।५७	१।५७
कामदेवा जाव जीवियाओ	२।४५	२।२२
कामदेवा तहेव जाव सो वि विहरइ	२।३०,३१	२।२२,२३
कामदेवे गाहावई । भद्दा भारिया । छ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ छ वड्ढिपउत्ताओ छ पवित्थरपउत्ताओ छ व्वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं	२।३-६	१।११-१४
कासे जाव कोढे	४।३९	वृत्ति
कुंडकोलिए गाहावई । पूसा भारिया छ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ छ वड्ढिपउत्ताओ छ पवित्थरपउत्ताओ छ व्वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं	६।३-६	२।३-६
कुडुंब जाव इमेयारूवे	८।१८	१।६५
कुडुंबस्स जाव आधारे	१।५७	१।१३
केणट्ठेणं एवं	७।४९	७।४८
कोडुंबिय पुरिसा जाव पच्चप्पिणंति	७।३४	१।४८
गिहाओ जाव सोणिएण	३।४२	३।४२
गिहाओ तहेव जाव आइंचइ	३।४२	३।४२
गिहाओ तहेव जाव कणीयसं जाव आइंचइ	३।४४	३।४२
गिहिणो जाव समुप्पज्जइ	१।७६,७७	१।७६
गुण जाव भावेमाणस्स	९।१८	२।१८
गुरु जाव ववरोविज्जसि	३।४४	३।४१
घाएत्ता जहा कयं तहा चिंचिणेइ जाव गायं	३।४२	३।२१
घाएत्ता जहा जेट्ठपुत्तं तहेव भणइ, तहेव करेइ । एवं कणीयंसि पि जाव अहियासेइ	३।२७-३८	३।२१-२६
चत्तारि पलिओवमाइं ठिई । सेसं तहेव जाव सिज्झिहिति	५।५२	२।५५,५६
चुल्लसयए गाहावई अड्ढे जाव छ हिरण्णकोडीओ जाव छ व्वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं । बहुला भारिया	५।३-६	४।३-६
चेइए जहा संखे जाव पज्जुवासइ	२।४३	भ० १२।१
जहा आणंदो तहा निग्गच्छइ तहेव सावयधम्मं पडिवज्जइ	८।१०-१५	१।१९-२४
जाए जाव विहरइ	९।१६,१७	२।१६,१७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जाया जाव पडिलाभेमाणी	१।५६	१।५५
जाव पज्जुवासइ	७।१४	१।१६
जुगवं जाव निउणसिप्पोवगए	७।५०	राय० सू० १२
जेट्ठपुत्तं जाव कणीयसं जाव आइंचइ	४।४२	३।४२
ठावेत्ता जाव विहरित्तए।	१।५७	१।५७
णमंसइ जाव पज्जुवासइ	१।२	ओ० सू० ५२
णमंसित्ता जाव पज्जुवासइ	७।१५	ओ० सू० ५२
णाइदूरे जाव पंजलियडा	७।३५	१।२०
ण्हाए जाव अप्पमहग्घा०	१।५७	ओ० सू० २०
ण्हाए जाव पायच्छित्ते	७।१५	ओ० सू० २०
ण्हाए सुद्धप्पावेस अप्प०	१।२०	ओ० सू० २०
ण्हाया जाव पायच्छित्ता	७।३५	ओ० सू० २०
तं मित्त जाव विउलेणं पुप्फ ५ सक्कारेइ सम्माणेइ, २ त्ता तस्सेव मित्त जाव पुरओ	१।५७	१।५७
तच्चं पि तहेव भणइ जाव ववरोविज्जसि	५।४१	५।४०
तत्थ णं बाणारसीए चुलणीपिया नामं गाहावई परिवसई अड्ढे सामा भारिया अट्ठ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ अट्ठ वड्ढिप० अट्ठपवित्थरप० । अट्ठ वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं जहा आणंदो ईसर जाव सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था	३।३-६	२।३-६
तव जाव कणीयसं	३।४५	३।४४
तिक्खुत्तो जाव वंदइ	७।३५	१।२०
तीसे य जाव धम्मकहा सम्मत्ता	२।४४	२।११
तुमं जाव ववरोविज्जसि	३।४४	२।२२
दुहट्ट जाव ववरोविज्जसि	७।७५	२।२२
देवराया जाव सक्कंसि	२।४०	वृत्ति
देवाणुप्पिए समणे भगवं महावीरे जाव समोसढे तं	७।३१	१।४५
देवाणुप्पिया जाव महागोवे	७।४६	७।४४
धम्मायरिएणं जाव महावीरेणं	७।५०	७।५०
धम्मायरियस्स जाव महावीरस्स	७।५१	७।५०
नाममुद्दगं च तहेव जाव पडिगए	६।२८	६।२०-२४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निक्खेवो	२।५७;३।५३;४।५३;५।५४; ६।४१;७।८६;८।५४;६।२७	१।८५
निक्खेवो पढमस्स	१।८५	वृत्ति
नीणेमि एवं जहा चुलणीपिय, नवरं एक्केक्के सत्त मंससोल्लया जाव कणीयसं जाव आइंचामि	५।२१-३७	३।२१-३७
नीलुप्पल एवं जहा चुलणीपियस्स तहेव देवो उवसग्गं करेइ जाव कणीयसं घाएइ, २ त्ता जाव आइंचइ	७।५७-७३	३।२१-३८
नीलुप्पल जाव असि	२।४५;३।२१,४४;४२१	२।२२
नीलुप्पल जाव असिणा	२।२२,२६	२।२२
पंचजोयणसयाइं जाव लोलुयच्चुयं	१।७६	१।६६
पढमं अहासुत्तं जाव एक्कारस वि	८।३३,३४	१।६२,६३
पढमं उवासगपडिमं अहासुत्तं ४ जहा आणंदो जाव एक्कारस वि	३।४८,४६	१।६२-६३
पाउणित्ता जाव सोहम्मे	१।५३	१।८४
पाडिहारिएणं जाव उवनिमंतिस्सामि	७।११	१।४५
पावयणं जाव जहेयं	७।३७	१।२३
पीढ जाव ओगिण्हित्ता	७।५२	१।४५
पीढ जाव संथारएणं	७।५१	१।४५
पीढ जाव संथारयं	७।१८	१।४५
पीढ-फलग जाव उवनिमंतेत्तए	७।१८	१।४५
पुण्णे कयत्थे कयलक्खणे सुलद्धे	२।४०	२।४०
पुत्तं जाव आइंचइ	७।७८	३।४२
पुरिसे तहेव कहेइ जहा चुलणीपिया धन्ना वि पडिभणइ जाव कणीयसं	४।४४	३।४४
पुव्वरत्ता जाव धम्मजागरियं	१।६५	१।५७
पुव्वरत्तावरत्तकाले जाव पोसहसालाए समणस्स	७।५४	२।१८
पोसहिए०	१।६०	ना० १।१।५३
फग्गुणी भारिया। सामी समोसढे जहा आणंदो तहेव गिहिधम्मं पडिवज्जइ जहा कामदेवो तहा जेट्ठपुत्तं ठवेत्ता पोसहसालाए। समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्मपण्णत्ति उवसंपज्जित्ता णं		

विहरइ । नवरं निरुवसग्गो एक्कारस्स वि उवासगपडिमाओ तहेव भाणियव्वाओ एवं कामदेवगमेणं नेयव्वं जाव सोहम्मे	१०।५-२५	२।५-१६,५०-५५
फलग जाव ओगिण्हित्ता	७।५१	१।४५
फलग जाव संथारयं	७।१६	१।४५
बंभयारी जाव दब्भसंथारोवगए	२।४०	१।६०
बंभयारी समणस्स	३।१६	१।६०
बहूहिं जाव भावेत्ता	२।५५	१।८४
बहूणं राईसर जहा चिंतियं जाव विहरित्तए	१।५७	१।५७
बहूहिं जाव भावेमाणस्स	६।३३	२।१८
भवित्ता जाव अहं	७।३७	१।२३
भारिया जाव सम०	७।७८	७।७५
भोगा जाव पव्वइया	७।३७	ओ० सू० ५२
मंसमुच्छिया जाव अज्झोववण्णा	८।२०	वृत्ति
मत्ता जाव उत्तरिज्जयं	८।३८	८।२७
मत्ता जाव विकड्ढमाणी	८।४६	८।२७
महइ जाव धम्मकहा समत्ता	७।१६	२।११
महावीरे जाव विहरइ	२।४२	१।१७
महावीरे जाव विहरइ	२।४३;७।१५	१।२०
महावीरे जाव समोसरिए	१।१७;७।१२	ओ० सू० १६-२२
महासतयं तहेव भणइ जाव दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी—हंभो तहेव	८।३८-४०	८।२७-२६
मारणंतिय जाव कालं	१।६५	१।६५
मित्त जाव जेट्ठपुत्तं	१।५७	१।५७
मित्त जाव पुरओ	१।५६	१।५७
मुंडे जाव पव्वइत्तए	१।२३,५३	ओ० सू० ५२
मोहुम्माय जाव एवं वयासी तहेव जाव दोच्चं पि	८।४६	८।२७-२६
राईसर जाव सत्थवाहाणं	१।१३	१।२३
राईसर जाव सयस्स	१।५७	१।१३
लद्धट्ठे जहा कामदेवो तहा निग्गच्छइ जाव पज्जुवासइ । धम्मकहा ।	६।२६,२७	२।४३,४४
वदणिज्जे जाव पज्जुवासणिज्जे	७।१०	ओ० सू० २
वंदामि जाव पज्जुवासामि	७।१५	ओ० सू० ५२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वदाहि जाव पज्जुवासाहि	१।४५;७।३१	ओ० सू० ५२
वंदिस्सामि जाव पज्जुवासिस्सामि	७।११	ओ० सू० ५२
वंदेज्जाहि जाव पज्जुवासेज्जाहि	७।१०	ओ० सू० ५२
वयासी जाव उववज्जिहिसि	८।४६	८।४१
वाताहतं वा जाव परिट्ठवेइ	७।२६	७।२५
विणस्समाणे जाव विलुप्पमाणे	७।४७,४९	७।४६
विहरइ। तए णं	२।५१-५४	१।६२-६५
वीइक्कंताइं तहेव जेट्ठपुत्तं ठवेइ।		
धम्मपण्णत्ति। वीसं वासाइं परियागं नाणत्त		
अरुणगवे विमाणे उववाओ महाविदेहे		
वासे सिज्झिहिइ	९।१८-२६	२।१८,१९,५०-५६
वीइक्कंता एवं तहेव जेट्ठपुत्तं ठवेइ		
जाव पोसहसालाए धम्मपण्णत्ति	८।२५,२६	२।१८,१९
संचाएइ जाव सणियं	२।३४	२।२८
संताणं जाव भावाणं	१।७८	१।७८
संतेहिं जाव वागरित्तए	८।४६	८।४६
संतेहिं जाव वागरिया	८।४९	८।४९
सखिंखिणियाइं जाव परिहिए	७।१०	२।४०
सद्दहामि णं जाव से जहेयं	१।२३	रा० सू० ६९५
सद्दालपुत्ता तं चेव सव्वं जाव पज्जुवासिस्सामि	७।१७	७।१०,११
समएणं अज्जसुहम्मे समोसरिए जाव		
जंबू पज्जुवासमाणे	१।३-५	रा० सू० ६८६; ओ० सू० ८२,८३
समणे जाव विहरइ तं महाफलं		
गच्छामि णं जाव पज्जुवासामि	१।२०	ओ० सू० ५२
समणोवासए जाव अहियासेइ	५।३८	२।२७
समणोवासए जाव विहरइ	४।४०;५।३८	३।२२
समणोवासया ! अप्पत्थियपत्थिया		
जाव न भंजेसि	३।४४;७।७५	२।२२
समणोवासया ! जहा कामदेवो जाव न भंजेसि	३।२१	२।२२
समणोवासया ! जाव न भंजेसि	२।३४;५।२१,३९	२।२२
समणोवासया ! तं चेव भणइ	७।७७	७।७४
समणोवासया ! तं चेव भणइ सो		
जाव विहरइ	३।२३,२४	३।२१,२२
समणोवासया ! तहेव जाव गायं आइंचइ	३।४४	३।२३-२५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समणोवासया ! तहेव जाव ववरोविज्जसि	३।४१	३।३६
समणोवासया ! तहेव भणइ जाव न भंजेसि	२।२८	२।२२
समुप्पज्जित्था एवं जहा चुलणीपिया तहेव चिंतेइ	७।७८	३।४२
समोसरणं जहा आणंदो तहा निग्गओ । तहेव सावयधम्मं पडिवज्जइ । साचेव वत्तव्वया जाव जेट्ठपुत्तं	२।७-१६	१।१७-२३,५४-६०
सहइ जाव अहियासेइ	२।२७	वृत्ति
सहंति जाव अहियासेंति	२।४६	२।२७
सहित्तए जाव अहियासित्तए	२।४६	२।२७
साइमं जहा पूरणो जाव जेट्ठपुत्तं	१।५७	भ० ३।१०२
सामी समोसढे । चुलणीपिया वि जहा आणंदो तहा निग्गओ । तहेव गिहिधम्मं पडिवज्जइ । गोयम पुच्छा । तहेव सेसं जहा कामदेवस्स जाव पोसहसालाए	३।७-१६	२।७-१६
सामी समोसढे जहा आणंदो तहा गिहिधम्मं पडिवज्जइ । सेसं जहा कामदेवो जाव धम्मपण्णत्ति	५।७-१६	२।७-१६
सामी समोसढे जहा कामदेवो तहा सावयधम्मं पडिवज्जइ । सा सव्वेव वत्तव्वया जाव पडिलाभेमाणी विहरइ	६।७-१७	२।७-१७
साहस्सीणं जाव अण्णेसिं	२।४०	वृत्ति
सिंघाडग जाव पहेसु	५।३६	ओ० सू० ५२
सिंघाडग जाव विप्पइरित्तए	५।४२	५।३६
सीलव्वय-गुणेहिं जाव भावेत्ता	८।५३	१।८४
सील जाव भावेमाणस्स	७।५४	१।५७
सीलव्वय जाव भावेमाणस्स	८।२५	१।५७
सीलाइं जाव न भंजेसि	४।२१	२।२२
सीलाइं जाव पोसहोववासाइं	२।२२	२।२२
सीलाइं वयाइं न छड्डेसि तो जीवियाओ	२।२४	२।२२
सुक्के जाव किसे	१।६४	भ० २।६४
सुद्धप्पावेसाइं जाव अप्पमहग्घा	७।१५,३५	१।४६
सुरादेवे गाहावइ अड्ढे छ हिरण्णकोडीओ जाव छ व्वया दस गोसाहस्सिएणं वएणं		

तस्स धन्नाभारिया। सामी समोसढो जहा आणंदो तहेव पडिवज्जइ गिहिधम्मं जहा कामदेवो जाव समणस्स	४।३-१६	१।११-१४;२।७-१६
सो वि दोच्चं पि तच्चं पि भणइ, कामदेवो वि जाव विहरइ	२।३६,३७	२।३४,३५
हंभो ! तं चेव भणइ सो वि तहेव जाव अणाढायमाणे	८।२६,३०	८।२७,२८
हट्ठतुट्ठ जाव एवं वयासी	१।२३	ओ० सू० ८०
हट्ठतुट्ठ जाव गिहिधम्मं	१।५१,५२	१।२३,२४
हट्ठतुट्ठ जाव समणं	२।४८	१।२३
हट्ठतुट्ठ जाव हियए	१।७४;८।४८	१।२३
हट्ठतुट्ठ जाव हियए जहा आणंदो तहा गिहिधम्म पडिवज्जइ, नवरं एगा-हिरण्णकोडी निहाणपउत्ता एगा-हिरण्णकोडी वड्ढिपउत्ता एगाहिरण्ण-कोडी पवित्थरपउत्ता एगे वए दसगोसाहस्सिएणं जाव समणं	७।३०,३१	१।२३,२४
हट्ठतुट्ठा कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, २ त्ता एवं वयासी खिप्पामेव लहुकरण जाव पज्जुवासइ	१।४६-४६	ओ० सू० ८०; भ० ६।१४१-१४३; उवा० ७।३३
हट्ठतुट्ठा समणं	७।३७	१।५१
हणेसि वा जाव अकाले	७।२६	७।२५
हारविराइयवच्छं जाव दसदिसाओ	२।४०	ओ० सू० ४७
हेऊहि य जाव वागरणेहि	७।५०	६।२८

अंतगडदसाओ

अंतिए जाव पव्वइत्तए	३।७६	३।२०
अज्जा जाव इच्छामि	८।२०	८।७
अणगारे जाए जाव विहरइ	६।५२	ना० १।५।३५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अणुत्तरे जाव केवल०	३।९२	वृत्ति
अतुरियं जाव अडंति	३।२३	भ० २।१०८
अपत्थिय जाव परिवज्जिए	३।८९	उवा० २।२२
अपत्थियपत्थिए जाव परिवज्जिए	३।१०२	३।८९
अरहओ मुंडे जाव पव्वाहि	३।७४	३।७०
अरिट्ठनेमिस्स जाव पव्वइत्तए	५।११	३।७६
अहासुत्तं जाव आराहिया	८।८	ठा० ७।१३
आघवणाहिं०	६।९५	नाभ १।१।११४
आपुच्छामि देवाणुप्पियाणं	१।१९	ना० १।५।८७
आसुरुत्ते जाव सिद्धे	३।१०१	३।८९-९२
आहेवच्चं जाव विहरइ	१।१४	ना० १।५।६
इच्छामि णं जाव उवसंपज्जित्ता	३।१०१	३।८७,८८
ईसर जाव सत्थवाहाणं	१।१४	ना० १।५।६
उच्च जाव अडइ	६।७६	भ० २।१०८
उच्च जाव अडमाणं	६।५५	भ० २।१०९
उच्च जाव अडमाणा	३।२९,३०	३।२४
उच्च जाव अडमाणे	६।७८	२।२४
उच्च जाव अडामो	६।८०	३।२३
उच्च जाव पडिलाभेइ	३।२८,२९	३।२४,२५
उज्जाणे जाव पज्जुवासइ	३।६१	ना० १।१।९९
उज्जला जाव दुरहियासा	३।९०	ना० १।१।१६२
उत्तर०	६।५२	५।२६
उम्मुक्क जाव अणुप्पत्ते	३।५०	ना० १।१।२०
उरालेणं जाव धमणिसंतया	८।१३	भ० २।६४
उवागए जाव पडिदंसेइ	६।८७	६।५७
उवागच्छित्ता जाव वंदइ	३।९८	३।६१
ओहय जाव झियाइ	५।१७	३।४३
ओहय जाव झियायइ	३।४३	ना० १।१।३४
करयल०	५।२२;६।३५,४१	ना० १।१।२६
करेइ जहा गोयमसामी जाव अडइ	६।५४	भ० २।१०७,१०८
काएणं जाव दो वि पाए	३।८८	वृत्ति
कामा खेलासवा जाव विप्पजहियव्वा	३।७६	ना० १।१।१०९
कुमारस्स	१।१९	राय० सू० ६८८
चउत्थ जाव अप्पाणं	८।६	५।३१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चउत्थ जाव भावेमाणी	८।३३	५।३१
चउत्थ जाव भावेमाणे	१।२१	५।३१
चउत्थस्स वग्गस्स निक्खेवग्रो	४।७	१।२५
छट्ठंछट्ठेणं जाव विहरंति	३।२१	३।२०
जइ उक्खेवओ अट्ठमस्स	३।१७	३।३
जइ छट्ठस्स उक्खेवओ नवरं सोलस	६।१,२	१।५,६
जइ णं भंते अट्ठमस्स वग्गस्स उक्खेवओ जाव दस	८।१७,१८	१।५,६
जइ णं भंते तेरस	७।३	१।७
जइ णं भंते सत्तमस्स वग्गस्स उक्खेवओ जाव तेरस	७।१,२	१।५,६
जइ तच्चस्स उक्खेवओ	३।१	१।५
जइ दस	८।१९	१।७
जइ दोच्चस्स वग्गस्स उक्खेवओ	२।१,२	१।५,६
जहा अभओ नवरं हरिणेगमेसिस्स अट्ठमभत्तं पगेण्हइ जाव अंजलिं	३।४७-४९	ना० १।१।५३-५८
जहा गोयम सामी तहा पडिदंसेइ	६।५७	भ० २।११०
जहा गोयमो जाव इच्छामो	३।२२	भ० २।१०७
जावज्जीवाए जाव विहरइ	६।५३	६।५३
जाव संलेहणाकालं	८।३६	८।१५
ण्हाए जाव विभूसिए	३।४४	ओ० सू० ७०
ण्हाया जाव पायच्छित्ता	३।३६	ओ० सू० २०
तं महा जहा गोयमे तहा	३।१३	१।१९,२०
तीसे य धम्मकहा	३।६२	राय० सू० ६९३
तीसे य धम्मकहा	६।५०,८८	ना० १।१।१००
देहं जाव किलंतं	३।९५	वृत्ति
धारिणी सीहं सुमिणे	३।११६	१।१७
नमंसामि जाव पज्जुवासामि	६।३५	ओ० सू० ५२
नयरीए जाव अडित्तए	३।२२	भ० २।१०७
नवमस्स उक्खेवओ	३।११२	३।३
निग्गया जाव पडिगया	१।२	ना० १।१।५
निक्खमणं जहा महब्बलस्स जाव तमाणाए तहा जाव संजमइ	३।७८-८५	भ०११।१६८;ना०१।१।११५-१५१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नेरइय जाव उववज्जंति	६।६४	६।६४
पउमावईए य धम्मकहा	५।८	राय०सू० ६६३
पव्वावेइ जाव संजमियव्वं	५।२८	ना० १।१।१५०
पारेइ जाव आराहिया	८।६	८।८
पावयणं जाव अब्भुट्ठेमि	६।५१	ना० १।१।१०१
पुरिसं पाससि जाव अणुपवेसिए	३।१०४	३।६५
पोरिसीए जाव अडमाणा	३।३०	३।२२,२३
बहुयाहिं अणुलोमाहिं जाव आघवित्तए	३।७७	ना० १।१।११४
बारवईए उच्च जाव पडिविसज्जेइ	३।२६,२७	३।२४,२५
भगवं जाव समोसढे विहरइ	६।३३	ना० १।१।६४
भूतं जाव पव्वइस्संति	५।१४	५।१२
भूतं वा जाव पव्वइस्संति	५।१३	५।१२
मालागारे जाव घाएमाणे	६।३६	६।२८
मासियाए संलेहणाए बारस वासाइं		
परियाए जाव सिद्धे	१।२४	ना० १।५।८४
मुंडा जाव पव्वइया	३।३०;५।११	३।२०
मुंडा जाव पव्वयामि	५।२१,२२	३।२०
मुंडे जाव पव्वइए	६।५३	३।२०
मुंडे जाव पव्वइत्तए	५।१६	३।२०
मुंडे जाव पव्वइस्सइ	३।५०	३।२०
रज्जे य जाव अंतेउरे	५।११	ना० १।१।१६
रूवेणं जाव लावण्णेणं	३।५७	३।६०
लहुकरणजाणपवरं जाव उवट्ठवेंति	३।३१	ना० १।१६।१३३
विण्णवणाहिं जाव पन्नवेत्तए	६।४५	६।४५
संजमेणं जाव भावेमाणे	६।८४	६।३३
संलेहणा जाव विहरित्तए	८।१४	८।१४
संलेहणाए जाव सिद्धे	३।१३	१।२४
समणेणं जाव छट्ठस्स	६।१०२	४।७
समाणा जाव अहासुहं	३।३०	३।२०
समोसढे सिरिवणे उज्जाणे अहा जाव विहरइ	३।१२	ना० १।५।१०
सरिसया जाव नलकूबरसमाणा	३।३०	३।१६
सरिसियाणं जाव बत्तीसाए	३।१०	ना० १।१।६०
सिंघाडग जाव उग्घोसेमाणा	५।१६	ना० १।५।२६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सिंघाडग जाव महापहपहेसु	६।२८	५।१६
सिद्धे जाव प्पहीणे	३।६२	वृत्ति
सिरिवण्णे विहरइ	६।७५	६।३३
सुद्धप्पावेसाइं जाव सरीरे	६।३६	ओ० सू० ५३
सोच्चा	१।१६	ना० १।१।६६
सोच्चा जं नवरं अम्मापियरो आपुच्छामि जहा मेहो महेलियावज्जं जाव वड्ढियकुले	३।६३-७३	ना० १।१।१०१-१०७;११०-११३
हट्ठ	६।५१	ना० १।१।१०१
हट्ठ जाव हियया	३।२५	ओ०सू०२०
हट्ठतुट्ठ जाव हियया	३।४२	३।२५

अणुत्तरोववाइयदसाओ

अंबगठिया इ वा एवामेव	३।४५	३।३१; वृत्ति
अमुच्छिए जाव अणज्झोववण्णे	३।२७	अं०६।५७
आयंबिलं नो अणायंबिलं जाव नावकंखति	३।२४	३।२२
इमासि जाव साहस्सीणं	३।५६	३।५५
इ वा जाव नो सोणियत्ताए	३।३३	३।३१
इ वा जाव सोणियत्ताए	३।३६	३।३१
उच्च जाव अडमाणे	३।२४	भ० २।१०६
उण्हे जाव चिट्ठइ	३।३५	३।३४
उरालेणं जहा खंदओ जाव सुहुय चिट्ठइ	३।३०	भ० २।६४
ऊरू जाव सोणियत्ताए	३।३५	३।३१
एवं जाव सोणियत्ताए	३।३४	३।३१
एवामेव०	३।३६-४४,४६,४७,४६,५०	३।३१
गोयमे जाव एवं	१।१०	भ० २।७१
चंदिम जाव नवय०	३।५६	१।८
जहा खंधओ तहा जाव हुयासणे	३।५२	भ०२।६४; ना०१।१।२०२
जहा जमाली तहा निग्गओ। नवरं पायचारेणं। जाव जं नवरं अम्मयं भद्दं सत्थवाहिं आपुच्छामि। तए णं अहं देवाणुप्पियाणं अंतिए पव्वयामि।		

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जाव जहा जमाली तहा आपुच्छइ । मुच्छिया । वुत्तपडिवुत्तया जहा महब्बले जाव जाहे नो संचाएइ जहा थावच्चापुत्तस्स जियसत्तुं आपुच्चइ । छत्तचामराओ । सयमेव जियसत्तू निक्खमणं करेति जहा थावच्चापुत्तस्स कण्हो जाव पव्वइए अणगारे जाए—इरियासमिए जाव गुत्तबंभयारी	३।११-२१	भ० ९।३३,११,११; ना० १।१,१।५
जाव उप्पि पासा विहरइ	१।७	ना० १।१।९३
तरुणए जाव चिट्ठइ	३।५१	३।४३
तरुणिया एवामेव	३।४८	३।४३
बिलमिव जाव आहारेइ	३।५७	३।२७
मुंडावली इ वा	३।३८	३।३१
मुंडे जाव पव्वइए	३।६९	३।२२
सजमेणं जाव विहरइ	३।६९	३।२७
संजमेणं जाव विहरामि	३।५७	३।२७
सुक्कं०	३।३७	३।३१
सुक्काओ जाव सोणियत्ताए	३।३२	३।३१
सुपुण्णे सुकयत्थे कयलक्खणे	३।५८	३।५८
सोहम्मीसाण जाव आरणच्चुए	१।८	ना० १।१।२११

पण्हावागरणाइं

अंतरप्पा जाव चरेज्ज	१०।१५	१०।१४
एवं जाव इमस्स	५।१०	५।१
एवं जाव चिरपरिगत०	३।२६	३।१
एवं जाव परियट्टंति	५।८	४।१३
पत्थणिज्जं एवं चिरपरि०	४।१५	४।१
रूसियव्वं जाव चरेज्ज	१०।१७	१०।१४
रूसियव्वं जाव न	१०।१५	१०।१४
सज्जियव्वं जाव न सइं	१०।१७	१०।१४
सज्जियव्वं जाव न सतिं	१०।१६	१०।१४
हीलियव्वं जाव पणिहिंदिए	१०।१६	१०।१४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विवागसुयं

अट्ठमस्स उक्खेवओ	१।८।१,२	१।२।१,२
अट्ठि जाव महियगत्तं	१।४।२८	१।२।६४
अतुरिय जाव सोहेमाणे	१।१।२८	वृत्ति
अद्धहारं जाव पट्टं मउडं	१।६।८	वृत्ति
अब्भणुण्णाए जाव बिलमिव	१।७।७	अं० ६।५७
अम्मयाओ जाव सुलद्धे जाओ	१।२।२४	ना० १।१।३३
अवओडय जाव उग्घोसिज्जमाणं	१।३।१३	१।२।१४
अविणिज्जमाणंसि जाव झियामि	१।२।२६	१।२।२४
असिपत्तेहि य जाव कलंबचीरपत्तेहि	१।६।२३	१।६।१९
अहम्मिए जाव दुप्पडियाणंदे	१।१।४७;१।३।१९	वृत्ति
अहम्मिए जाव लोहियपाणी	१।३।७	वृत्ति
अहम्मिए जाव साहस्सिए	१।१।७०	वृत्ति
अहापडिरूवं जाव विहरइ	१।१।२	ओ० सू० २२
अहिमडे इ वा जाव तत्तो वि अणिट्ठतराए चेव जाव गंधे	१।१।३९	ना० १।८।४२
अहीण जाव जुवराया	१।६।२	१।५।४
अहीण जाव सुरूवा	१।२।७	ओ० सू० १५
अहीण जाव सुरूवे	१।२।१०	ओ० सू० १४३
आसि जाव पच्चणुभवमाणे	१।२।१६	१।१।४२
आसी जाव विहरइ	१।३।१६	१।१।४२
आसुरुत्ते जाव मिसिमिसेमाणे	१।३।४१	१।२।६४
आसुरुत्ते जाव साहट्टु	१।६।३५	१।२।६४
आहेवच्चं जाव विहरइ	१।२।७;१।३।७	वृत्ति
इंदमहे इ वा जाव निग्गच्छंति	१।१।१९	ना० १।१।९६
इंदमहे इ वा जाव निग्गच्छंति	१।१।२०	ना० १।१।९७
इट्ठरूवे जाव सुरूवे	२।१।१५	२।१।१५
इमेयारूवे जाव समुप्पज्जित्था	१।६।३४	१।१।४१
इरियासमिए जाव बंभयारी	१।१।७०	ओ० सू० २७
इहमागच्छेज्जा जाव विहरेज्जा	२।१।३१	ओ०सू० २१
उंबरदत्ते निच्छूढे जहा उज्झियए	१।७।३४	१।२।५६
उक्किट्ठि जाव करेमाणे	१।३।४३	१।३।२४
उक्किट्ठि जाव समुद्द०	१।३।२४	ओ०सू० ५२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उक्कोस नेरइएसु	१।३।६५	१।१।७०
उक्खित्त जाव सूले०	१।६।६	१।२।१४
उक्खेवओ नवमस्स	१।६।१,२	१।२।१,२
उक्खेवओ सत्तमस्स	१।७।१,२	१।२।१,२
उग्घोसिज्जमाणं जाव चिंता	१।४।१२,१३	१।२।१४,१५
उज्जला जाव दुरहियासा	१।१।५६	वृत्ति
उम्मुक्क जाव जोव्वणग०	१।१।७०	वृत्ति
उम्मुक्कबालभावा जोव्वणेण रूवेण		
लावण्णेण य जाव अईव	१।६।३४	१।४।३६
उम्मुक्कबालभावे जाव विहरइ	१।६।२६	१।४।३५
उराले जाव लेस्से	२।१।२०	ओ० सू० ८२
उवगिज्जमाणे जाव विहरइ	१।६।४८	ना० १।१।६३
उस्सुक्कं जाव दसरत्तं	१।३।५२	वृत्ति
एवं पस्समाणे भासमाणे गेण्हमाणे जाणमाणे	१।१।५०	१।१।५०
ओहय०	१।२।२७	१।२।२४
ओहय जाव झियाइ	१।२।२४;१।६।१६	वृत्ति
ओहय जाव झियासि	१।२।२५;१।६।१७	१।२।२४
ओहय जाव पासइ	१।२।२५;१।६।१७	१।२।२४
करयल०	१।३।४०,५५,५६;१।६।३८	१।१।६६
करयल०	१।३।५०	१।३।४०
करयल जाव एवं	१।३।४४;१।४।२८	१।३।४०
करयल जाव एवं	१।३।५२,५३;१।६।३४	१।१।६६
करयल जाव पडिसुणेंति	१।३।५३,६२;१।६।३४;१।६।२०,४०	ओ० सू० ५६
करयल जाव वद्धावेइ	१।६।४५	१।३।५५
करेइ जाव सत्थोवाडिए	१।६।२३	वृत्ति
कुमारे जाव विहरइ	१।६।३६	१।१।६६
०खुत्तो०	१।१।७०	१।१।७०
गंगदत्ता वि	१।७।३३	१।२।५५
गामागर जाव सण्णिवेसा	२।१।३१	ओ० सू० ८६
गाहावई जाव तं धण्णे	२।१।२३	वृत्ति
गिण्हावेइ जाव एएणं	१।५।२७	१।२।६४
घाएंति २	१।३।१४	१।३।१४
चउत्थं छट्ठ उत्तरेणं इमेयारूवे	१।७।१०,११	१।७।६;१।२।१५
चउत्थस्स उक्खेवओ	१।४।१,२	१।२।१,२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छट्ठंछट्ठेणं जहा पण्णत्तीए पढम जाव जेणेव	१।२।१२-१४	भ० २।१०६-१०८
छट्ठस्स उक्खेवओ	१।६।१,२	१।२।१,२
छिंदइ जाव अप्पेगइयाणं	१।२।२८	१।२।२४
जणसद्दं च जाव सुणेत्ता	१।१।१६	ओ० सू० ५२
जहा विजयमित्ते जाव कालमासे कालं किच्चा	१।७।३१,३२	१।२।५०,५१
जातिअंधे जाव आगितिमेत्ते	१।१।६४	१।१।१४
जायसड्ढे जाव एवं	१।१।२५	ओ० सू० ८३
जाव पुढवी	१।३।६५;१।४।३६	१।१।७०
०ट्ठिइएसु जाव उववज्जिहिइ	१।१।७०	१।१।५७
ण्हाए जाव पायच्छित्ते	१।३।४७,५५;१।६।४५	१।२।६४
ण्हायाए जाव पायच्छित्ताए	१।६।५०	१।२।६४
ण्हायाओ जाव पायच्छित्ताओ	१।७।२०	१।२।६४
ण्हाया जाव पायच्छित्ता	१।३।२४	१।२।६४
तं चेव जाव से णं	१।३।१५	१।२।१५
तंतीहि य जाव सुत्तरुज्जुहि	१।६।२३	१।६।१८
तं महया जहा पढमं तहा	२।१।३२	२।१।१२; भ० ६।१५८
तच्चस्स उक्खेवो	१।३।१,२	१।२।१,२
तह त्ति जाव पडिसुणेंति	१।३।४६	१।१।६६
ताओ जाव फले	१।७।२३	१।७।१६
तीसे य०	१।१।२३	ना० १।१।१००
तेगिच्छियपुत्तो वा जाव उग्घोसेंति	१।१०।१३,१४	१।८।२१,२२
तो णं जाव ओवाइणइ	१।७।२१	१।७।१६
दसमस्स उक्खेवओ	१।१०।१,२	१।२।१,२
दारगस्स जाव आगितिमित्ते	१।१।२६	१।१।१४
नगरगोरूवा जाव भीया	१।२।३४	१।२।३३
नगरगोरूवा जाव वसभा	१।२।३३	१।२।२४
नगरगोरूवाणं जाव वसभाण	१।२।२८	१।२।२४
नगर जाव विणिज्जामि	१।२।२४	१।२।२४
निक्खेवओ	१।३।६६	१।१।७१
निक्खेवो	१।२।७४;१।४।४०, १।५।३०;१।६।३८;१।७।३६;१।८।२८;१।६।६०	१।१।७१
निच्छुभेमाणे अन्नत्थ कत्थइ सुइं वा अलभ अण्णया कयाइ रहस्सियं सुदरिसणाए गिहं	१।४।२६,२७	१।२।६२,६३
नीय जाव अडइ	१।७।७	१।२।१५
पंचमस्स अज्झयणस्स उक्खेवओ	१।५।१,२	१।२।१,२
पंचाणुव्वइयं जाव गिहिधम्मं	२।१।३१	२।१।१३
पज्जेइ जाव एलमुत्तं	१।६।२३	१।६।१४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पम्हल०	१।७।२१	वृत्ति
पावं जाव समज्जिणइ	१।१।७०	१।१।५१
पुढवीए संसारो तहेव पुढवी	१।५।२६	१।३।६५
पुप्फ जाव गहाय	१।७।२३	१।७।२१
पुरा जाव विहरइ	१।१।४१,४२;१।२।६५	१।१।४१
पुरिसे जाव निरयपडिरूवियं	१।२।१५	१।१।४१
पुव्वभवपुच्छा वागरेइ	१।७।१२,१३	१।१।४२,४३
पुव्वभवे जाव अभिसमण्णागया	२।१।१५	वृत्ति
पुव्वाणुपुव्वि जाव जेणेव	१।१।२	ना० १।१।४
पुव्वाणुपुव्वि जाव दूइज्जमाणे	२।१।३२	२।१।३१
पोराणाणं जाव एवं	१।७।११	१।२।१५
पोराणाणं जाव पच्चणुभवमाणे	१।१।६६	१।१।४१
पोराणाणं जाव विहरइ	१।३।६४।१।४।६१;१।५।२८;१।७।३७;१।८।८,२६;१।६।५८; १।१०।१८	१।१।४१
फलएहिं जाव छिप्पतूरेणं	१।३।४३	१।३।२४
फुट्टमाणेहिं जाव विहरइ	२।१।११	ना० १।१।६३
बहूणं गोरूवाणं ऊहे जाव लावणेहि	१।२।२६	१।२।२४
बहूहिं चुण्णप्पओगेहि य जाव आभिओगित्ता	१।१०।७	१।२।७२
बहूहिं जाव ण्हाया	१।७।२५	१।७।२३
भगवं जाव जओ णं	१।१।३४	१।१।३३
भगवं जाव पज्जुवासामो	१।१।२१	ओ०सू० ५२
भवित्ता जाव पव्वइस्सइ	२।१।३५	२।१।१३
भवित्ता जाव पव्वएज्जा	२।१।३१	२।१।१३
मज्झंमज्झेणं जाव पडिदंसेइ	१।२।१५	भ० २।११०
महत्थं जाव पडिच्छइ	१।३।५६	१।३।४०
महत्थं जाव पाहुडं	१।३।५५	१।३।४०
महावीरे जाव समोसरिए	१।१।१७	वृत्ति
महिय जाव पडिसेहेति	१।३।४६	वृत्ति
मासाणं जाव आगितिमेत्ते	१।१।६६	१।१।६४
मासाण जाव दारियं	१।६।३१	१।२।३१
मासाणं जाव पयाया	१।७।२६	१।२।३१
मित्त०	१।३।६०;१।८।१७	१।२।३७
मित्त०	१।७।२७	१।७।१६
मित्त जाव अण्णाहि	१।३।२८	१।३।२४
मित्त जाव परियणं	१।६।४७	१।२।३७
मित्त जाव परियणेण	१।६।५७	१।२।३७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मित्त जाव परिवुडा	१।२।५४	१।२।३७
मित्त जाव परिवुडाओ	१।७।२३	१।७।१९
मित्त जाव परिवुडे	१।३।५५	१।२।३७
मित्त जाव महिलाओ	१।७।२६	१।७।१९
मित्त जाव सद्धि	१।७।२३	१।७।१९
मित्त जाव सद्धि	१।९।४५	१।२।३७
मियादेवी जाव पडिजागरमाणी	१।१।२६	१।१।१५
मुंडा जाव पव्वयंति	२।१।३१	२।१।१३
रट्ठं च	१।१।५७	१।१।५७
रट्ठे य जाव अंतेउरे	१।१।५७	वृत्ति
राईसर जाव नो खलु अहं	२।१।१३	वृत्ति
राईसर जाव पभियओ	१।२।७२	१।१।५०
राईसर जाव प्पभियओ	१।१०।७	१।१।५०
राईसर जाव सत्थवाह०	१।५।२२,२३	१।१।५०
राईसर जाव सत्थवाहाण	१।१।५०	ओ०सू० ५२
राईसर जाव सत्थवाहेहिं	१।९।५७	१।१।५०
राया जाव शीईवयमाणे	१।९।३७	१।९।३६
वेणुलयाहि य जाव वायरासीहि	१।६।२३	१।६।१६
संगयगय०	१।२।७	वृत्ति
सणाहाण य जाव वसमाण	१।२।२४	१।२।२०
सण्णद्ध जाव पहरणे	१।२।२८	१।२।१४
सण्णद्धबद्ध जाव पहरणेहिं	१।३।४७	१।२।१४
सण्णद्धबद्ध जाव प्पहरणा०	१।३।२४	१।२।१४
सत्थेहि य जाव नहच्छेयणेहि	१।६।२३	१।६।२२
समणे जाव विहरइ	१।१।२०	ना० १।१।९७
समाणे सिंघाडग तहेव जाव सुदरिसणाए	१।४।२२-२४	१।२।५७-५९
समुप्पण्णे जाव तहेव निग्गए	१।३।१५	१।२।१५
सागरोवम०	१।१।७०	१।१।५७
सिंघाडग जाव एवं	१।१०।१३	१।१।५३
सिंघाडग जाव पहेसु	१।२।५७;१।८।२१;२।१।२३	१।१।५३
सुंदरथण	१।२।७	वृत्ति
सुबहुं जाव समज्जिणित्ता	१।८।१३;१।९।१९;१।१०।८	१।१।५१
सुबाहुकुमारे जाव अलंभोगसमत्थं	२।१।१०,११	ओ०सू० १४८,१४९
हट्ठतुट्ठहियया	१।१।२९	ओ०सू० २०
हय जाव पडिसेहिए	१।३।५०	१।३।४९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शुद्धि-पत्र

मूलपाठ

पृ०	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
८	२०	°मणप्पत्ते	°मणुप्पत्ते
५७	१२	जहेसु	जूहेसु
६०	२२	हीत्थ	हत्थी
१७७	३	कट्ठ	कट्टु
२०६	१०	विप्पइर-माण	विप्पइरमाण
३०६	१६	संकाणि	संकामणि
४२६	१६	वेरमणाइ	वेरमणाइं
४५५	१५	पज्जुवासण्णयाए	पज्जुवासणाए
४६१	७	देवदेसंस	देवसंदेस
५१६	१६	तुम	तुमं
५५१	७	ताइ	ताइं
५७५	१६	°समुदएणं	°समुदएण
५६८	१२	सस्सिरीएण	सस्सिरीएणं
६१६	६	दसं	दस
७३०	२०	खणमाणे	खणमाणे
७३८	७	अप्पेगइयाण	अप्पेगइयाणं
७३६	१२	दुप्पडियाणदे	दुप्पडियाणंदे

पाठान्तर

पृ०	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१६	पा० ६	पटटंसि	पट्टंसि
४८	पा० ४	पिणद्धति	पिणद्धेंति
५२२	पा० २	आसुरुत्त	आसुरुत्ते

परिशिष्ट

पृ०	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२८	२४	अभिगयजीवेजी णं	अभिगयजीवाजीवेणं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org